सूख कर आराम हो जाते हैं। इसमें अङ्गरेज़ी पीली बुकनी की तरह बदबू नहीं आती। दाम ॥) डि०

दादकी मलहम।

यह मलहम दादके लिये बहुत ही अच्छी है। ५।६ वार धीरे-धीरे मलने से दाद साफ़ हो जाते हैं। लगती बिल्कुल ही नहीं। लगाने में भी कुछ दिक़त नहीं। दाम।⁄) शीशी

कर्पूरादि मलहम।।

यह मलहम खुजली पर, जिसमें मोती के समान फुन्सियाँ हो जाती हैं, अमृत है। आज़माकर अनेक बार देख चुके हैं, कि इसके लगाने से गीली खुजली, जले हुए घाव, छाले, कटे हुए घाव, मच्छर आदि ज़हरीले कीड़ों के दाफड़, फोड़े फुन्सी तथा औरतों के गुप्त स्थान की खुजली और फुन्सियाँ निश्चय ही आराम हो जाती हैं। क़लम में ताक़त नहीं है, जो इसके पूरे गुण वर्णन कर सके। दाम १ शीशी का ॥) हर गृहस्थ को पास रखनी चाहिये।

शिरशूल नाशक लेप।

इसको ज़रासे जलमें पीसकर मस्तक पर लेप करनेसे मनभावन सुगन्ध निकलती है और गरमी का सिर-दर्द फ़ौरन आराम हो जाता है। गरमी के बुख़ार और गर्मी से पैदा हुए सिर दर्द में तो यह रामबाण ही है। दाम १ डि० ॥)

असली बङ्गेश्वर।

असली बङ्ग से मनुष्य का बल बढ़ता है, खाना पचता है, भूख खुलती है, भोजन पर रुचि होती है और चेहरे पर कान्ति और तेज छा जाता है। यह भस्म तासीर में शीतल है। मनुष्य के शरीर को आरोग्य रखती है, धातु को गाढ़ा करती, जल्दी बूढ़ा नहीं होने देती और क्षय रोग को नाश करती है। अनुपान और विधि सहित

चिकित्सा चन्द्रोदय

पाँचवाँ भाग

लेखक
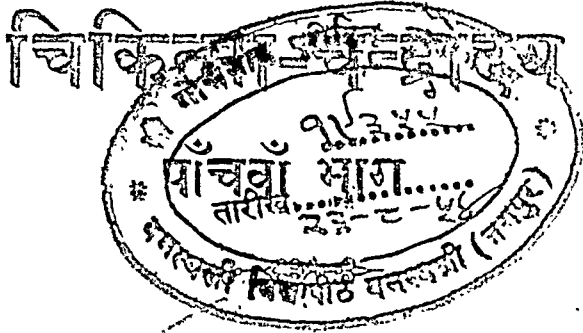
बाबू हरिदास वैद्य

प्रकाशक

हरिदास एण्ड कम्पनी
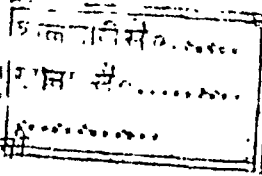
कलकत्ता

२०१ हरिसन रोड के "नरसिंह प्रेस में"

पण्डित काशीनाथ जैन

द्वारा मुद्रित।

दिसम्बर सन् १९२३ ई०

पहलीवार २०००

अजिल्द का मूल्य ५)
सजिल्द का मूल्य ५॥)

निवेदन ।

जगदाधार, जगदात्मा श्रीकृष्णचन्द्र को अनन्त धन्यवाद हैं, कि सैकड़ों विघ्न-बाधा और आपदाओं के होते हुए भी आज "चिकित्सा चन्द्रोदय" पाँचवें भाग को उन्होंने पूरा करा दिया। हिन्दी-प्रेमी पाठकोंको भी हार्दिक धन्यवाद है, जिनकी क़द्रदानी और उत्साहवर्द्धन से हम अपना धन और समय लगा कर इस ग्रन्थ के भाग-पर-भाग निकाल रहे हैं। अगर पबलिक की रुचि न होती, उसे यह ग्रन्थ न रुचता, पसन्द न आता, तो हम इस ग्रन्थ का दूसरा भाग निकाल कर ही रुक जाते। पर पहले और दूसरे भाग के, बारह महीनों मे ही, नवीन संस्करण छप जाने से मालूम होता है कि, पबलिकने इस ग्रन्थ को पसन्द किया है। अगर सर्वसाधारण की ऐसी ही कृपा रही, तो इसके शेष तीन भाग भी शीघ्रही निकल जायँगे।

इस भागमें हमारा विचार, आयुर्वेदके और ग्रन्थों की तरह, क्रम से श्वास, खाँसी, हिचकी आदि लिखने का था, पर हज़ारों ग्राहकों में से कितनों ही ने लिखा कि, पाँचवें भागमें स्थावर और जंगम विष-चिकित्सा लिखिये। हमारे युक्तप्रान्तमें ही और ज़हरीले जानवरोंके अलावः केवल सर्पके काटने से गतवर्ष प्रायः सत्तावन हज़ार आदमी काल के कराल गाल में समा गये। कितने ही गाँवोंके लोग बिच्छुओं, कनखजूरों और मैंडक, छिपकली आदि के काटने से कष्ट भोगते और बहुधा मर भी जाते हैं। कितने ही ग्राहकोंने लिखा, कि आप इस भागमें स्त्रियोंके रोगों की चिकित्सा लिखिये। आजकल जिस तरह ९९ फी सदी पुरुषों को

प्रमेह-राक्षस ने अपने भयानक चंगुलों में फँसा रखा है; उसी तरह स्त्रियाँ प्रदर रोग, सोम रोग और बहुमूत्र आदि रोगों की शिकार हो रही हैं। अनेकों स्त्रियों को मासिक धर्म समय पर और ठीक नहीं होता, अनेक रमणियाँ गर्भाशय में दोष हो जानेसे सन्तानके लिये तरसतीं और ठगों को ठगाकर घरका धन और इज्जत-हुर्मत नष्ट करती हैं और अनेकों स्त्रियाँ प्रदर आदि रोगों से ग्रसित होने और आयुर्वेद के नियम न पालने की वजह से क्षय रोग के फन्दे में फँस कर, छोटी उम्र में ही परमधाम की यात्रा करती हैं।

यद्यपि इस भागमें स्थावर जंगम विष-चिकित्सा और स्त्री रोग-चिकित्सा लिखनेसे हमारा क्रम विगड़ता था, पर हमें ग्राहकों की सलाह पसन्द आगई। मनमें सोचा, ज़िन्दगी का भरोसा नहीं, आज है कल न रहे। श्वास, खाँसी,वातरोग आदिक की चिकित्साके लिए तो बहुतसे वैद्य-डाक्टर मिल जायेंगे; पर सर्प आदिसे जान बचाने के लिए ग़रीबों को सद्वैद्य कहाँ मिलेंगे? ग़रीब ग्रामीणों की स्त्रियाँ जो प्रदर आदि रोगों और यक्ष्मा या क्षय आदि से असमय या भर-जवानी में ही मर जाती हैं, अपनी निर्धनता के मारे किन वैद्य-डाक्टरों से इलाज कराकर जान बचायेंगी? अतः इन्हीं रोगों पर लिखना उचित होगा।

हमने इस भाग के तीन खण्ड किये हैं। पहले खण्ड में "स्थावर विष-चिकित्सा" लिखा है। दूसरे खण्डमें "जंगम विष-चिकित्सा" लिखी है। उसमें अफीम, संखिया आदि नाना प्रकार के विषों के नाश करने की तरकीबें मय उनकी पहचान आदि के लिखी गई हैं और इसमें सर्प, बिच्छू, कनखजूरे, मैंडक, छिपकली, बर्र, ततैया, मक्खी, मच्छर आदि प्रायः सभी ज़हरीले जीवों के काटनेकी चिकित्सा लिखी है। जो लोग थोड़ी भी हिन्दी जानते होंगे, वे इन खण्डों को पढ़-समझ कर अनेकों प्राणियों को अकाल मृत्यु से बचा सकेंगे। अगर प्रत्येक गाँव में इस भाग की एक-एक प्रति भी होगी, तो बहुतोंकी जीवन-रक्षा होगी। हमने विष-चिकित्सा पर समस्त प्राचीन और अर्वाचीन ग्रन्थों को मथ कर,

कौड़ियों में तैयार होनेवाले और समय पर अक्सीर का काम करने वाले अचूक नुसख़े लिखे हैं। दिहाती लोग, बिना एक पैसा भी ख़र्च किये, सब तरह के विषैले जानवरों से अपनी जीवन-रक्षा कर सकेंगे।

तीसरे खण्ड में स्त्रियों के प्रायः सभी रोगों के निदान-कारण, लक्षण और चिकित्सा खूब समझा-समझा कर विस्तार से लिखी है। एक-एक बात आगे पीछे तीन-तीन जगह लिखनेकी भी दरकार समझी है, तो तीन ही जगह लिखी है; विद्वान् लोग पुनरुक्ति-दोष बतलायेंगे, इसकी परवा नहीं की है। पाठकों को सुभीता हो, वही काम किया है। इस खण्डमें पहले प्रदर रोग और सोम रोगके निदान लक्षण और चिकित्सा लिखी है। उसके बाद योनिरोगों और मासिक धर्मकी चिकिसा लिखी हे। उसके भी बाद बाँझ के दोष नष्ट होकर, बन्ध्याके पुत्र होने की अपूर्व्व तरकीबें लिखी हैं और गर्भ गिराने या मरा बच्चा पेट से निकालने, योनिदोष निवारण करने, मूढ़गर्भ निकालने, प्रसूताकी चिकित्सा करने, धायका दूध शुद्ध करने और बढ़ानेके अत्युत्तम उपाय लिखे हैं। जो लोग ज़रा भी ध्यान देंगे, वे आसानीसे स्त्रियोंको रोगमुक्त करके उनके आशीर्व्वाद-भाजन होंगे। जिनके सन्तान नहीं होती, जो पुत्र पाने के लिए मारे मारे फिरते हैं, उनके सहजमें पुत्र होंगे। स्त्रियाँ सहज में, बिना बहुत तकलीफ के बच्चे जन सकेंगी।

इसी खण्ड में हमने राजयक्ष्माके भी निदान, लक्षण और चिकित्सा विस्तार से लिखी है, क्योंकि इस मूंजी रोग से हमारे देश के लाखों स्त्री पुरुष बे-मौत मरते हैं। जब यह रोग बढ़ जाता है, करोड़ों ख़र्च करने वाले सेठ साहूकार और राजा महाराजा भी अपने प्यारों को बचा नहीं सकते। जो लोग इस खण्ड को पढ़ेंगे, वे रोग के कारण जान जाने से सावधान हो जायँगे और जिन्हें यह रोग होगा, वे सहज में अपना इलाज आप कर सकेंगे। यद्यपि इस रोग का इलाज सद्-वैद्य से ही कराना चाहिये, पर जो वैद्य-डाक्टर को बुला नहीं सकते, दवा के लिए चार पैसे भी ख़र्च कर नहीं सकते, वे कौड़ियों की दवा,

जंगल की जड़ी बूटी, घर का दूध, घी और शहद मात्र सेवन कर के अपने तईं रोगमुक्त कर सकेंगे।

इस भाग में रोगों का सिलसिला ठीक नहीं है एवं अवकाश न मिलने और आफ़त में फँसे रहने के कारण अनेकों दोषभी रह गये हैं, उनके लिए पाठक हमें क्षमा प्रदान करेंगे। अगर हम अपनी ज़िन्दगी में इस ग्रन्थ को पूरा कर सके, तो शेषमें हम इस की एक कुञ्जी(Key) भी बनायेंगे। जो बातें इन भागों में छूट गई हैं, उन सब पर उस में लिखा जायगा। उस कुञ्जी के होने से जो ज़रा-बहुत संशय खड़ा हो जाता है, वह भी मिट जायगा। यद्यपि वह कुञ्जी तीन चार सौ पृष्ठों से कम की न होगी, पर उसे हम ग्राहकों को धेली आठ आना लागत-ख़र्च लेकर ही दे देंगे। उस में एक कौड़ी भी नफा न लेंगे।

यद्यपि यह ग्रन्थ पूर्ण वैद्यों के लिए नहीं है, फिर भी सैकड़ों वैद्यशास्त्री और आयुर्वेद केसरी आदि इसे बड़े शौक से ख़रीद रहे हैं। उन्हें ऐसे 'भाषा' के ग्रन्थ देखनेकी ज़रूरत नहीं। हम समझते हैं, वे साधारण लोगोंके उपकारके लिए या हमारा उत्साह बढ़ानेके लिए ही इसे ख़रीद रहे हैं। अतः हम उन्हें धन्यवाद देकर, उनसे सविनय प्रार्थना करते हैं कि, वे जहाँ कोई त्रुटि देखें, उसे दयाकर हमें लिख भेजें। क्योंकि एक आदमी के जल्दी के किये काम में अनेकों दोष रह जाते हैं और इस ग्रन्थ में भी अनेकों दोष होंगे। कितनी ही जगह तो अर्थ का अनर्थ हुआ होगा। यद्यपि इस ग्रन्थकी आय को हम खाते हैं, तथापि उदारहृदय सज्जन इस बात की पर्वा न करके, इस ग्रन्थ के दोष दूर कराने में हमारी सहायता करके अक्षय पुण्य और धन्यवाद के पात्र होंगे। दोषपूर्ण होने पर भी, इस ग्रन्थ से पब्लिक का बड़ा उपकार हो रहा है और होगा, यह जान कर हमें बड़ी खुशी है, पर यदि यह ग्रन्थ परोपकार-परायण विद्वानों की सहायता से निर्दोष या दोषरहित हो जायगा, तो कितना उपकार होगा और हमारी खुशी का टेम्परेचर कितना ऊँचा चढ़ जायगा, यह लिख कर बता नहीं सकते।

इस भाग में सैकडों नये-पुराने ग्रन्थों के सिवा, "वैद्यकल्पतरु" अहमदाबाद और "हमारी शरीर रचना" से दो एक जगह काम लिया गया है। अतः हम उनके लेखक और प्रकाशक दोनों का तहेदिल से शुक्रिया अदा करते हैं।

जो लोग यह समझते हैं कि, इस ग्रन्थके प्रकाशक इस के भाग-पर-भाग निकाल कर मालामाल होना चाहते हैं, उनकी ग़लती है। हम यह नहीं कह सकते, कि हम इसकी आमदनी से अपना काम नहीं चलाते। ऐसा कहना, वृथा असत्य भाषण करना है। "एक पन्थ दो काज" की कहावत अनुसार, हमारा उद्देश पब्लिककी सेवा करना, आयुर्वेद-प्रेम बढ़ाना, देश का पैसा बचवाना और साथ ही अपनी गुज़र करना है। काम हम यह करेंगे, तो खायेंगे किस के घर ? भाग-पर-भाग हम अपनी आमदनी बढ़ानेके लिए नहीं निकाल रहे हैं। यह विषय ही ऐसा है, कि इसे जितनाही बढ़ाओ बढ़ सकता है और जितनाही विस्तार से लिखा जाता है, उतनाही लाभदायक सिद्ध होता है। हम क्या लिख रहे हैं, होमियोपैथी में एक-एक रोग के निदान लक्षण और चिकित्सा सैंकड़ों ही पेजों में है। अगर पाठक आफ़त ही कटवाना चाहते हैं, तो फिर हमसे इसके लिखवाने की क्या दरकार ? क्या ग्रन्थोंका अभाव है ? इस ग्रन्थ में कुछ भी नूतनता और सरलता तो होनी चाहिये।

निन्यानवे फी सदी ग्राहक "चिकित्सा चन्द्रोदय" की क़ीमत पर ज़रा भी आपत्ति नहीं करते, पर चन्द मिहरबान ऐसे भी हैं जो लिखा करते हैं, कि आपने क़ीमत ज़ियादा रक्खी है। हमारे ऐसे समझदार ग्राहकों को समझना चाहिये, कि इस राजनगरी में सब तरह के ख़र्च बहुत ज़ियादा हैं। अगर हम इतनी क़ीमत भी न रखें, जोश में आकर, अख़बारी प्रशंसा लाभ करने के लिए, हिन्दी के सच्चे सेवक की पदवी प्राप्त करने के लिये, एकदम कम मूल्य रखें, तो अन्त में हमें फेल होना पड़ेगा, काम बन्द कर देना होगा। जिन लोगों ने ऐसा किया है, वे हिन्दी-सेवा से रिटायर हो गये और जो ऐसा कर रहे हैं, उनको भी

एक न एक दिन टाट उलटना ही पड़ेगा। परमात्मा हमें इन बातों से बचावे ; हमारी इज़्ज़त-आवरु बनाये रक्खे !

बहुत से पाठक, उकताकर लिखते हैं—"आपने यह ग्रन्थ लिखकर बड़ा उपकार किया है। ग्रन्थ निस्सन्देह सर्वाङ्ग सुन्दर है। हमने इससे बहुत लाभ उठाया है। इसके नुसख़ोंने अच्छा चमत्कार दिखाया है। पर एक-एक भाग निकलना और उसके लिए चातक की तरह टकटकी लगाये राह देखना अखरताहै। मूल्य की परवा नहीं, आप जल्दी ही सब भाग ख़तम कीजिये इत्यादि।" हमारे ऐसे प्रेमी और उतावले ग्राहकों को यह समझ कर, कि जल्दीमें काम ख़राब होता है और आयुर्वेद बड़ा कठिन विषय है ; इस का लिखना बालकों का खेल नहीं, ज़रा धैर्य रखना चाहिये और देर के लिए हमें कोसना न चाहिये।

अगले छठे भाग में हम रक्तपित्त, खाँसी, श्वास, उदररोग, वायु-रोग आदि समस्त रोगों के निदान, लक्षण और चिकित्सा विस्तार से लिखेंगे और जगदीश कृपा करें, तो प्रायः सभी रोगों को उस भाग में ख़तम करेंगे। सातवें और आठवें भागों में औषधियों के गुण रूप वगैरः मय चित्रोंके लिखेंगे। यह भाग चाहे ग्राहकोंको पसन्द आ जाय और निश्चय ही पसन्द होगा, इससे उनका काम भी खूब निकलेगा और हज़ारों प्राणी कष्ट और असमय की मौत से बचेंगे, इसमें शक नहीं; पर हमें इसमें अनेकों त्रुटियाँ दीखती हैं। अतः आयन्दः हम जल्दी से काम न लेंगे। पाठकों से भी कर जोड़ विनय है कि, छठे भाग के लिये धैर्य्य धरें ; अगर इस दफा की तरह विघ्न-बाधायें उपस्थित न हुईं, ईश्वरने कुशल रक्खी और वह सानुकूल रहे तो छठा भाग पाँच-छै महीनों में ही निकल जायगा। एवमस्तु।

विनीत—

हरिदास।

अपने दोष-अदोषों,अपने गुण-अवगुणों,अपनी कमज़ोरियों और ख़ामियों, अपनी अल्पज्ञता और बहुज्ञता एवं अपनी विद्वत्ता और अविद्वत्ता प्रभृतिके सम्बन्धमें मनुष्य जितना ख़ुद जानता और जान सकता है, उतना दूसरा कोई न तो जानता ही है और न जान ही सकता है। मैं जब-जब अपने सम्बन्धमें विचार करता हूँ,अपने गुण-दोषोंकी स्वयं अलोचना करता हूँ,तब-तब इस नतीजे पर पहुँचता हूँ,कि मैं प्रथम श्रेणीका अज्ञानी हूँ ।मुझमें कुछभी योग्यता और विद्वत्ता नहीं। जब मुझे अपनी अयोग्यता का पूर्ण रूप से निश्चय हो जाता है, तब मुझे अपनी "चिकित्साचन्द्रोदय" जैसे उत्तरदायित्व-पूर्ण ग्रन्थ लिखने की धृष्टता पर सख़्त अफ़सोस और घर-घरमें उसका प्रचार होते देखकर बड़ा आश्चर्य होता है। मेरी समझ में नहीं आता,कि मुझ जैसे प्रथम श्रेणी के अयोग्य लेखक और आयुर्वेदके मर्मको न समझनेवाले की क़लमसे लिखी हुइ पुस्तकों का अधिकांश हिन्दी-भाषाभाषी जनता इतना आदर क्यों करती है; अङ्गरेज़ी विद्याके धुरन्धर पण्डित—आजकलके बाबू और बड़े-बड़े जज, मुन्सिफ, वकील और प्रोफेसर प्रभृति, जो हिन्दी के नामसे भी चिढ़ते हैं, हिन्दी को गन्दी और ख़ासकर वैद्यक-विद्या को जंगलियों की अधूरी विद्या समझते हैं, इस आयुर्वेद-सम्बन्धी ग्रन्थ को इतने शौक़ से क्यों अपनाते और अगले भागों के लिए क्यों लालायित रहते हैं। मैं घण्टों इसी उलझनमें उलझा रहता हूँ, पर यह उलझन सुलझती नहीं; समस्या हल होती नहीं। पाठक! आपही विचारिये, अगर पंखहीन उड़ने लगे, पंगु दौड़ने लगे, नेत्रहीन देखने लगे, बहरा सुनने लगे, गूँगा

बोलने लगे, मूक व्याख्यान फटकारने लगे और निरक्षर लिखने लगे, तो क्या आप को अचम्भा न होगा?

मेरे जैसे आयुर्वेद की ए बी सी डी भी न जानने वाले, विद्या-बुद्धि-हीन धीठ लेखक की लिखी हुई "स्वास्थ्यरक्षा" और "चिकित्साचन्द्रोदय" आदि पुस्तकों को पबलिक इतने चाव से क्यों पढ़ती है? इस नगण्य लेखक की लिखी हुई पुस्तकों का प्रचार भारत के घर-घर में रामायण की तरह क्यों होता जा रहा है? हिन्दी और आयुर्वेद को नफ़रत की नज़र से देखने वाले आधुनिक बाबू, जज, डिप्टी कलक्टर, तहसीलदार, मुन्सिफ, सदर आला, स्टेशनमाष्टर और एम० ए०, बी० ए०, की डिग्रियों वाले ग्रेजुएट प्रभृति इस तुच्छ लेखक की लिखी हुई "चिकित्साचन्द्रोदय" और "स्वास्थ्यरक्षा" को बड़े आदर-सम्मान और इज़्ज़त की नज़र से क्यों देखते हैं? इन प्रश्नों का सही उत्तर निकालने की कोशिश में, मैं कोई बात उठा नहीं रखता, पर फिर भी जब मैं इन सवालों का ठीक जवाब निकाल नहीं सकता, इन सवालों को हल कर नहीं सकता, तब मेरा अन्तरात्मा—कॉन्शैन्स कहता है—इन ग्रन्थों की इतनी प्रसिद्धि, इतनी लोक-प्रियता और इज़्ज़त का कारण तेरी योग्यता और विद्वत्ता नहीं, वरन जगदीश की कृपामात्र है।

अन्तरात्मा का यह जवाब मेरे दिल में जँच जाता है, मेरी उलझन सुलझ जाती है और मुझे राई भर भी संशय नहीं रहता। अगर मैं विद्वान् होता, शास्त्री या आचार्य्य-परीक्षा पास होता, आयुर्वेद मार्त्तण्ड या आयुर्वेद पञ्चानन प्रभृति पदवियों को धारण करनेवाला होता, तो कदाचित् मुझे अन्तरात्मा की बात पर सन्देह होता। इस लम्बी-चौड़ी प्रसिद्धि और लोकप्रियता को अपनी ही योग्यता और विद्वत्ता का फल समझता, पर चूँकि मैं अपनी अयोग्यता को अच्छी तरह जानता हूँ, इसलिये मुझे मानना पड़ता है, कि यह सब उन्हीं अनाथनाथ, असहायों के सहाय, निरवलम्बों के अवलम्ब, दीनबन्धु, दयासिन्धु, भक्तवत्सल, जगदीश—कृष्ण की ही दया का नतीजा है, जो नेत्रहीन को सनेत्र, गूँगे

को वाचाल,मूर्खको विद्वान्, अल्पज्ञ को बहुज्ञ,असमर्थ को समर्थ, कायर को शूर, निर्धन को धनी, रङ्क को राव और फ़क़ीर को अमीर बनाने की सामर्थ्य रखते हैं।

हमारे जिन भारतीय भाइयों और अंगरेज़ी-शिक्षा-प्राप्त बाबुओं को देवकीनन्दन, कंसनिकन्दन, गोपीवल्लभ, व्रजविहारी, मुरारि, गिरवर-धारी, परम मनोहर, आनन्दकन्द श्रीकृष्णचन्द्र पर विश्वास न हो, जो उन्हें महज़ एक ज़बर्दस्त आदमी अथवा एक शक्तिशाली पुरुष॰ मात्र समझते हों, उनके सर्वशक्तिमान जगदीश होने में सन्देह करते हों, वे अब से उन पर विश्वास ले आवें, उन्हें जगदात्मा परमात्मा समझें, उनकी सच्चे और साफ दिल से भक्ति करें और हाथों-हाथ पुरष्कार लूटें। कम-से-कम मेरे ऊपर घटनेवाली घटनाओं से तो शिक्षा लाभ करें। मैं नकटों की तरह अपना दल बढ़ाने की ग़रज़ से नहीं, वरन अपने भाइयों के सुख-शान्ति से जीवन का बेड़ा पार करने की सदिच्छा से अपबीती सच्ची बातें यदाकदा कहा करता हूँ। जो शुद्ध अशुद्ध मंत्र मुझे आता है, जिस से मुझे स्वयं लाभ होता है, उसे अपने भाइयों को बता देना मैं बड़ा पुण्य-कार्य समझता हूँ। पाठको! मैं आप से अपनी सच्ची और इस जीवन में अनुभव की हुई बातें कहता हूँ। जो सरल, शुद्ध और संशय-रहित चित्तसे जगदात्मा कृष्णको जपते हैं, उनकी भक्ति करते हैं, उन को हर समय अपने पास समझ कर निर्भय रहते हैं, अभिमान से कोसों दूर भागते हैं, किसी का भी अनिष्ट नहीं चाहते, अपने सभी कामों को उनका किया हुआ मानते हैं, अपने तईं कुछ भी नहीं समझते, घोर संकट काल में उनको ही पुकारते और उनसे साहाय्य-प्रार्थना करते हैं, भक्तभयहारी कृष्ण मुरारि उनको क्षण भर के लिये भी नहीं त्यागते, उनको प्रत्येक संकट से बचाते हैं, उनके विपद् के बादलों को हवाकी तरह उड़ा देते हैं, उनकी मदद के लिए, लक्ष्मी को त्याग कर क्षीर सागरसे नङ्गे पैरों दौड़े आते हैं। मैंने जो बातें कही हैं, वे राई-रत्ती सच हैं। इन में ज़रा

भी संशय नहीं। अगर दो और दो के चार होने में सन्देह हो सकता है, तो मेरी इन बातों में भी सन्देह हो सकता है।

एक घटना के सम्बन्धमें, मैं "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग में लिख ही चुका हूँ। उसी घटना को बारम्बार दुहराना, पिसे को पीसना और विद्वानों को अप्रसन्न करना है; पर क्या करूँ जिस घटना से कृष्ण का सम्बन्ध है, उसे एक बार, दो बार, हज़ार बार और लाखों-करोड़ों बार सुनाने से भी मनको सन्तोष नहीं होता। इसके सिवा, उन्हीं कृष्ण की प्रेरणा से मेरे साथ अभूतपूर्व्व भलाई करने वाले, मुझे अभयदान देनेवाले सज्जनों को बारम्बार धन्यवाद दिये बिना भी मेरी आत्मा को शान्ति नहीं मिलती, इसी से अपनी लिखी हर पुस्तक में मैं इस गान को गाया करता हूँ। सुनिये पाठक! भारतके भूतपूर्व्व वायसराय और गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफर्ड महोदय जैसे प्रसिद्ध सङ्गदिल बड़े लाटने जो मेरे जैसे एक तुच्छ जीव पर अभूतपूर्व्व कृपाकी, वह सब क्या था? वह उन्हीं कृष्णकी कृपा का फल था। उन्हीं जगदात्मा की इच्छा से वायसराय मेरे लिये मोम से भी नर्म हुए। उन्हीं की मर्ज़ी से वे मुझ पर सदय हुए। उन्हीं की इच्छा से उन्होंने मुझे घोर संकट से बड़ी ही आसानी से बचा दिया। इसके लिए मैं जगदीशका तो कृतज्ञ हूँ ही, पर साथ ही वायसराय महोदय की दयालुता को भी भूल नहीं सकता। परमात्मा करें, हमारे भूतपूर्व्व वायसराय लार्ड चेम्सफर्ड महोदय और बंगाल के लाट के भू० पू० प्राईवेट सेक्रेटेरी मिस्टर गोरले महोदय एम० ए०, सी० आई० ई०, आई० सी० ऐस० चिरजीवन लाभ करते हुए जगदीश की उत्तम से उत्तम न्यामतों को भोगें।

यह घटना तो अब पुरानी हो चली, इसे हुए दो साल बीत गये। पाठक! अब एक नयी घटना की बात भी सुनें और उसे पागलों का प्रलाप या मूर्ख बकवादी की थोथी बकवाद न समझ कर, उस पर ग़ौर भी करें:—

अभी गत नवम्बर में, जब मैं इस पञ्चम भाग का प्रायः आधा काम कर चुका था, मेरी घरवाली सख्त बीमार हो गयी। इधर बच्चा हुआ, उधर महीनों से आने वाले पुराने ज्वर ने ज़ोर किया। आँव और खून के दस्तों ने नम्बर लगा दिया। मरीज़ा की ज़िन्दगी ख़तरे में पड़ गई। मित्रों ने डाक्टरी इलाज की राय दी। कलकत्ते के नामी-नामी तजुर्बेकार डाक्टर बुलाये गये। इलाज होने लगा। घण्टे-घण्टे और दो-दो घण्टे में नुसखे बदले जाने लगे। पैसा पानी की तरह बिखेरा जाने लगा; पर नतीजा कुछ नहीं—सब व्यर्थ। "ज्यों-ज्यों दवा की, मर्ज़ बढ़ता गया" वाली कहावत चरितार्थ होने लगी। न किसी से बुख़ार कम होता था और न दस्त ही बन्द होते थे। अच्छे-अच्छे एम० डी० डिग्रीधारी वलायत और अमेरिका से पास करके आये हुए पुराने डाक्टर दवाओं पर दवाएँ बदल-बदल कर किं कर्त्तव्य विमूढ़ हो गये। उनका दिमाग़ चक्कर खाने लगा। किसी ने माथा खुजलाते हुए कहा—"अजी! पुराना बुख़ार है, ज्वर हड्डियों में प्रविष्ट हो गया है, यकृत में सूजन आ गई है। हमने अच्छी-से-अच्छी दवाएँ तजवीज कीं, ऐक्सपर्टों से सलाहें भी लीं, पर कोई दवा लगती ही नहीं, समझ में नहीं आता क्या करें।" किसी ने कहा—"अजी! अब समझे, यह तो एनीमिया है, रोगी में खून का नाम भी नहीं, नेत्र सफेद हो गये हैं, हालत नाजुक है, ज़िन्दगी ख़तरे में है। खैर, हम उद्योग करते हैं, पर सफलता की आशा नहीं—अगर जगदीश को रोगिणी को जिलाना मंजूर है अथवा मरीज़ा की जिन्दगी के दिन बाकी हैं, तो शायद दवा लग जाय।" बस, कहाँ तक लिखें, बड़े-बड़े डाक्टर आकर मरीज़ा की नब्ज़ देखते, स्टेथसकोप से लंगज़ वगैरः की जाँच करते, नुसख़ा लिखते और आठ-आठ, सोलह-सोलह एवं बत्तीस-बत्तीस रूपराम जेब के हवाले करके चलते बनते। यह तमाशा देख हमारी नाकों दम आ गया। एक तरफ तो अनापशनाप रुपया व्यर्थ व्यय होने लगा; दूसरी ओर गृहिणीके चल बसने से घर की क्या दशा होगी; छोटे-छोटे चार बच्चे किस तरह पलेंगे, इस चिन्ता ने

हमें चूर कर दिया। हम ख़ुद भी मरीज़ बन गये। बीच-बीच में, जब कभी हम निराश होकर डाक्टरी इलाज त्याग कर अपना इलाज करना चाहते, हमारे ही आदमी हम पर फबतियाँ उड़ाते, हमें अव्वल नम्बर का माइज़र या कंजूस मक्खीचूस कहते। इसी लिहाज़ से हम डाक्टरों को न छोड़ सके। अन्त में होमियोपैथी के एक सुप्रसिद्ध और अद्वितीय चिकित्सक भी आये। उन्होंने भी अपने सब तीर चला लिये। जब उनके तरकश में कोई भी तीर रह न गया तब, एक दिन सन्ध्या समय वह भी सिर पकड़ कर बैठ गये। उस दिन रोगी की हालत अब-तब हो रही थी।

हमारी, मरीज़ा की या छोटे-छोटे बच्चों की ख़ुशक़िस्मतीसे, उसी दिन हमारे पूज्यपाद माननीय वयोवृद्ध पण्डितवर कन्हैयालाल जी वैद्य, सिरसा वाले, रोगिणी की ख़बर पूछने के लिए तशरीफ़ ले आये। आप रोगिणी को देख-भाल कर इस प्रकार कहने लगे—"बेशक मामला करारा है, ज्वर पुराना है, अतिसार भी साथ है, ज्वर धातुगत हो गया है, शरीर में पहले ही बल और मांस नहीं है, फिर अभी १० दिन की ज़च्चा होने से कमज़ोरी और भी बढ़ गई है। ईश्वर चाहता है, तो ज़मीन में लिया हुआ मनुष्य भी बच जाता है, पर मुझे आप पर सख्त गुस्सा आता है। अफसोस है कि, आप आयुर्वेद में इतनी गति रख कर भी, डाक्टरों के जाल में बुरी तरह फँस रहे हो! मालूम होता है आपके पास रुपया फालतू है, इसीसे निर्दयता के साथ उसे फेंक रहे हो। डाक्टर तो जवाब दे ही चुके। कहिये, और कोई नामी ग्रामी डाक्टर बाक़ी है? अगर है, तो उसे भी बुला लीजिये। मगर अब देर करना सिर पर जोखिम लेना है। अगर आप हमारी बात मानें, तो मरीज़ा का इलाज बतौर ट्रायल के तीन दिन स्वयँ करें, नहीं तो हमारे हाथ में सौंपे। मैं आप की इस कारवाई से मन-ही-मन बहुत कुढ़ता हूँ। आप तो आजकल कई दिनसे कटरे में आते ही नहीं। मैं नित्य आपके आफिस में जाकर, बाबू बद्रीप्रसाद जी से समाचार पूछा करता हूँ।

वह कहते हैं, आज सवेरे फलाँ डाक्टर आया था, दोपहर को फलाँ आया और अब बाबू राम प्रताप जी अमुक को लेने गये हैं, तब मेरे शरीर का खून खौल उठता है। आज मैं बहुत ही दुखी होकर यहाँ आया हूँ। मित्रवर! अपने आयुर्वेद में क्या नहीं है? आप काञ्चन को त्याग कर काँच के पीछे भटक रहे हैं!" पण्डितजी का तत्वपूर्ण उपदेश काम कर गया, सबके दिलों में उनकी बात ज़ँच गई। रोगिणी ने हमारी चिकित्सा के लिये इशारा किया। बस, फिर क्या था, हम जगदीश का नाम लेकर, इष्टदेव कृष्ण के सुपरविज़न में, चिकित्सा करने लगे।

अब हम अपने वैद्य-विद्या सीखने के अभिलाषियों के लाभार्थ यह बता देना अनुचित नहीं समझते, कि मरीज़ा को मर्ज़ क्या था और उन्हें किन-किन मामूली दवाओं से आराम हुआ। यद्यपि जो आयुर्वेद के धुरन्धर विद्वान्, प्राणाचार्य या भिषक्श्रेष्ठ हैं, उन्हें इन पंक्तियों से कोई लाभ होने की सम्भावना नहीं, उनका अमूल्य समय वृथा नष्ट होगा, पर चूँकि हमारा यह ग्रन्थ बिल्कुल नौसिखियोंके लिये, आयुर्वेद का ककहरा भी न जानने वालों के लिये लिखा जा रहा है; अतः इस अनूभूत चिकित्सा से उन्हें लाभ की सम्भावना है, क्योंकि ऐसे ही इलझे हुए रोगियों या पेचीदा केसों को देखने-सुनने से चिकित्सा सीखने वाले अनुभवी बनते हैं। ये बातें कहीं-कहीं पर बड़ा काम दे जाती हैं।

रोगिणी को गर्भावस्था में ही ज्वर होता था। वह होमियोपैथी दवा पसन्द करती हैं,अतः उन्हें वही दवा दी जाती और ज्वर दब जाता था। महीने में चार बार ज्वर आता और आराम हो जाता। मरीज़ा खाने-पीने के कष्ट के मारे, हलका-हलका ज्वर होने पर भी उसे छिपातीं और जब ज्वर का ज़ोर होता तब दवा खा लेतीं और फिर अपनी इच्छा से छोड़ देतीं। वह कहतीं, कि ज्वर चला गया, पर वास्तव में वह जाता नहीं था, भीतर बना रहता था। इस तरह दो तीन महीनोंमें वह पुराना हो गया, धातुओं में प्रवेश कर गया। इस समय

वह दिन-रात चौवीसों घण्टों वना रहने लगा। महीने भर तक एक क्षण को भी कम न हुआ। ज्वर ने शरीर की सब धातुएँ चर लीं। वल और मांस नाममात्र को रह गये। अतिसार भी आ धमका। दम-दम पर आँव और खून के दस्त होने लगे। अग्नि मन्द हो गयी। भोजन का नाम भी वुरा लगने लगा। हमने सबसे पहले अतिसारको दूर करना उचित समझा, क्योंकि दस्तों के मारे रोगी की हालत ख़तरनाक होती जा रही थी। सोचा गया "कर्पूरादिवटी," जो चिकित्साचन्द्रोदय तीसरे भागके पृष्ठ ३४० में लिखी हैं, इस मौके पर अच्छा काम करेंगी। उनसे अतिसार तो नाश होगा ही, पर ज्वर भी कम होगा, क्योंकि ऐसे हठीले ज्वरों में, ख़ासकर सिल या उरःक्षत के ज्वरों में, जब ज्वर सैकड़ों उपायों से ज़रा भी टससे मस न होता था, हम कपूर के योग से बनी हुई दवाएँ देकर, उनका अपूर्व चमत्कार देख चुके थे। निदान, छे-छे घण्टोंके अन्तरसे "कर्पूरादिवटी" दी जाने लगीं। पहली ही गोलीने अपना आश्चर्यजनक फल दिखाया। चौवीस घण्टों में ज्वर कुछ देर को हटा। दस्त भी कुछ कम आये। दूसरे दिन आँव और खून का आना बन्द हो गया। ज्वर १८ घण्टे से कम रहा। तीसरे दिन ८।१० पतले दस्त हुए, जिनमें आँव और खून नहीं था और ज्वर बारह घण्टे रहा। उस दिन हमने हर चार-चार घण्टे पर दो दो और तीन तीन माशे विल्वादि चूर्ण, जो तीसरे भाग के पृ० २७० में लिखा है, अर्क सौंफ और अर्क़ गुलावके साथ दिया। चौथे दिन दस्त एक दम वँधकर आया, ज्वर ३।४ घण्टे रहा और उतर गया। पाँचवें दिन ज्वर और अतिसार दोनों विदा हो गये।

पाठक! जब कभी आपको ज्वर और अतिसार या ज्वरातिसार का रोगी मिले, उसे चाहे वड़े-वड़े चिकित्सक न आराम कर सके हों, आप ऊपर की विधि से दवा दें, निश्चय ही आराम होगा और लोगोंको आश्चर्य्य होगा। जिसे केवल ज्वर हो, अतिसार न हो, उसे ये गोलियाँ न देनी चाहिये। हाँ, जिसे केवल आमातिसार या रक्तातिसार हो,

ज्वर न हो, उसे भी ये गोलियाँ दी जा सकती हैं। हाँ, मरीज़ाके हाथ पैरों और मुख पर वरम या सूजन भी आ गई थी, अतः शरीर के शोथ या सूजन नाश करने के लिये, हमने "नारायण तेल" की मालिश कराई और आगे छठे दिन से, पहले की दवाएँ बन्द करके, "सितोपलादि चूर्ण," जो दूसरे भागके पृष्ठ ४४० में लिखा है, खानेको देते रहे और भोजन के साथ हिंगाष्टक चूर्ण सेवन कराते रहे। पर एक तरह ज्वर के चले जाने पर भी, मरीज़ा की ज़बान का ज़ायका न सुधरा, मुह का स्वाद ख़राब रहने लगा, भूख लगने पर भी खानेके पदार्थ अरुचि के मारे अच्छे न लगते थे। हमने समझ लिया कि अभी ज्वरांश शेष हैं, अतः तीन माशे चिरायता रातको दो तोले पानी में भिगो कर, सवेरे ही उसे छान कर, उसमें दो रत्ती कपूर और दो रत्ती शुद्ध शिलाजीत मिला कर पिलाना शुरू किया। सात दिन में रोगिणी ने पूर्ण आरोग्य लाभ किया। इस नुसख़ेने हमारे एक ज्योतिषी-मित्र की घर वाली को चार ही दिन में चंगा कर दिया। वह कोई चार महीने से ज्वर पीड़ित थीं। कई डाक्टर-वैद्यों का इलाज हो चुका था।

इसमें कृष्णकी कृपा का क्या फल देखा गया, यह हमने नहीं कहा। क्योंकि रोगी तो और भी अनेक हर दिन असाध्य अवस्था में पहुँच जाने पर भी आरोग्य लाभ करते हैं। बात यह है, कि जिस दिन रात को दस्तों का नम्बर लग गया, ज्वर धीमा न पड़ा, अवस्था और भी निराशाजनक हो गई, डाक्टर हताश होकर जवाब दे गये, हमने कृष्णसे प्रार्थना की कि, रोगीका जीवन है तो रोगी दस पाँच दिनमें या महीने दो महीने में आराम हो ही जायगा। अगर साँस पूरे हो गये हैं, तो किसी तरह बचेगा नहीं और बचने की कोई उम्मीद बाक़ी भी नहीं है। ऐसी निराशाजनक अवस्था होने पर भी, रोगीकी हालत अगर ठीक कल सवेरे सुधर जायगी और चार पाँच दिन में रोगी निरोग हो जायगा, तो हमारा आप पर जमा हुआ विश्वास और भी दृढ़ हो जायगा। नाथ! हमने आपके कई करिश्मे पहले तो देखे ही हैं, पर आज फिर

देखने की इच्छा है।' हमारी प्रार्थना स्वीकार हुई। हमारी केवल एक गोली खाने के बाद, सवेरे ही मरीज़ा ने कहा,—"आज मेरी तबियत कुछ ठीक जान पड़ती है। इसके बद मरीज़ा जैसे चंगी हुई, हम लिख ही चुके हैं। पाठक! इस चमत्कार को देखकर, हम तो उस मोहन पर मोहित हो गये—सब तरह उसके हो गये। कहिये, आप भी उसके होंगे या नहीं?

विनीत—

हरिदास।

पहला अध्याय ।

दूसरा अध्याय ।

तीसरा अध्याय ।

चौथा अध्याय।

दूसरा खण्ड

जंगमविष-चिकित्सा।

तीसरा खण्ड

स्त्री-रोगोंकी चिकित्सा।

विष-वर्णन ।

विष की उत्पत्ति ।

प्राचीन कालमें, अमृत के लिये, देवता और राक्षसों ने समुद्र मथा । उस समय, अमृत निकलने से पहले, एक घोरदर्शन, भयावने नेत्रोंवाला, चार दाढ़ोंवाला, हरे हरे बालों वाला और आगके समान दीप्ततेजा पुरुष निकला । उसे देख कर जगत्‌को विषाद हुआ—उसे देखते ही जगत्‌के प्राणी उदास हो गये । चूँकि उस भयङ्कर पुरुष के देखने से दुनिया को विषाद हुआ था, इस लिये उसका नाम "विष" हुआ । ब्रह्माजीने उस विष को अपनी स्थावर और जंगम—दोनों तरह की—सृष्टि में स्थापन कर दिया, इसलिये विष स्थावर और जंगम दो तरहका हो गया। चूँकि विष समुद्र या पानीसे पैदा हुआ और आग

के समान तीक्ष्ण था, इसीलिये वर्षाकाल में—पानी के समय में—विष का क्लेद बढ़ता है और वह गोले गुड़ की तरह फैलता है ; यानी बरसात में विष का बड़ा ज़ोर रहता है। किन्तु वर्षा ऋतु के अन्त में, अगस्त-मुनि विष को नष्ट करते हैं, इसलिये वर्षाकाल के बाद विष हीनवीर्य—कमज़ोर—हो जाता है। इस विष में आठ वेग और दश गुण होते हैं। इस की चिकित्सा बीस प्रकार से होती है। विष के सम्बन्ध में "चरक" में यही सब बातें लिखी हैं। सुश्रुत में थोड़ा भेद है।

सुश्रुत में लिखा है, पृथ्वी के आदि काल में, जब ब्रह्माजी इस जगत् की रचना करने लगे, तब कैटभ नामका दैत्य, मद से माता होकर, उन के कामों में विघ्न करने लगा। इस से तेजनिधान ब्रह्माजी को क्रोध हुआ। उस क्रोधने दारुण शरीर धारण करके, उस कैटभ दैत्य को मार डाला। उस क्रोध से पैदा हुए, कैटभ के मारनेवाले को देख कर, देवताओं को विषाद हुआ—रंज हुआ, इसी से उस का नाम "विष" पड़ गया। ब्रह्मा जी ने उस विष को अपनी स्थावर और जंगम सृष्टि में स्थान दे दिया ; यानी न चलने-फिरने वाले वृक्ष, लता-पता आदि स्थावर सृष्टि और चलने-फिरने वाले साँप, बिच्छू, कुत्ते, बिल्ली आदि जंगम सृष्टि में उसे रहने की आज्ञा देदी। इसी से विष स्थावर और जंगम—दो तरह का हो गया।

नोट—विष नाम पड़ने का कारण तो दोनों ग्रन्थों में एक ही लिखा है ; पर "चरक"में उसकी पैदायश समुद्र या पानी से लिखी है और सुश्रुत में ब्रह्मा के क्रोध से। चरक और सुश्रुत—दोनों के मत से ही विष अग्नि के समान गरम और तीक्ष्ण है। सुश्रुत में तो विष की पैदायश क्रोध से लिखी ही है। क्रोध से पित्त होता है और पित्त गरम तथा तीक्ष्ण होता है। चरक ने विष को अम्बुसम्भव—पानी से पैदा हुआ—लिख कर भी, अग्निवत्तीक्ष्ण लिखा है। मतलब यह; विष के गरम और तेज़ होने में कोई मत-भेद नहीं। चरक मुनि उसे जल से पैदा हुआ कह कर, यह दिखाते हैं, कि जल से पैदा होने के कारण ही विष वर्षा ऋतुमें बहुत ज़ोर करता है और यह बात देखने में भी आती है। बरसात में सांप का ज़हर बड़ी तेज़ी पर होता है। बादल देखते ही बावले कुत्ते का ज़हर दबा हुआ भी—कुपित हो उठता है इत्यादि।

विषकी उत्पत्ति क्रोध से है। इसी पर भगवान् धन्वन्तरि कहते हैं, कि जिस तरह पुरुषों का वीर्य सारे शरीर में फैला रहता है, और स्त्री आदिक के देखने के हर्ष से, वह सारे शरीर से चल कर, वीर्यवाहिनी नसों में आ जाता है और अत्यन्त आनन्द के समय स्त्री की योनि में गिर पड़ता है ; उसी तरह क्रोध आने से साँप का विष भी, सारे शरीरसे चलकर, सर्पकी दाढ़ों में आ जाता है और सर्प जिसे काटता है, उसके घाव में गिर जाता है। जब तक साँप को क्रोध नहीं आता, उसका विष नहीं निकलता। यही वजह है, जो साँप बिना क्रोध किये, बहुधा, किसी को नहीं काटते। साँपों को जितना ही अधिक क्रोध होता है; उन का दंश भी उतना ही सांघातिक या मारक होता है।

सुश्रुत में लिखा है, चूँकि विष की उत्पत्ति क्रोध से है, अतः विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण होता है। इसलिये सब तरह के विषों में प्रायः शीतल परिषेक करना; यानी शीतल जलके छींटे वगैरः देना उचित है। 'प्रायः' शब्द इसलिये लिखा है, कि कितने ही मौकों पर गरम सेक करना ही हितकारक होता है। जैसे कीड़ों का विष बहुत तेज़ नहीं होता, प्रायः मन्दा होता है। उनके विष में वायु और कफ जियादा होते हैं। इसलिये कीड़ों के काटने पर, बहुधा, गरम सेक करना अच्छा होता है, क्योंकि वात-कफ की अधिकता में, गरम सेक करके, पसीने निकालना लाभदायक है। बहुधा, वात कफ के विषसे सूजन आ जाती है, और वह वात-कफ की सूजन पसीने निकालने से नष्ट हो जाती है। पर, यद्यपि कीड़ों के विष में गरम सेक की मनाही नहीं है, तथापि ऐसे भी कई कीड़े होते हैं, जिनमें गरम सेक हानि करता है।

दो एक बात और भी ध्यानमें जमा लीजिये। पहली बात यह कि, विषमें समस्त गुण प्रायः तीक्ष्ण होते हैं ; इसलिये वह समस्त दोषों—वात, पित्त, कफ और रक्त—को प्रकुपित कर देता है। विष से सताये हुये वात आदि दोष अपने-अपने स्वाभाविक कामों को छोड़ बैठते हैं—अपने-अपने नित्य कर्मों को नहीं करते—अपने कर्त्तव्यों का पालन नहीं करते और विष स्वयं पचता भी नहीं—इसलिये वह प्राणों को रोक देता है। यही वजह है कि, कफसे राह रुक जानेके कारण, विष वाले प्राणीका श्वास रुक जाता है। कफके आड़े आ जानेसे, वायु या हवाके आने-जाने को राह नहीं मिलती, इस से मनुष्य का साँस आना-जाना बन्द हो जाता है। चूँकि राह न पाने से साँस का आवागमन बन्द हो जाता है ; इसलिये वह आदमी या और कोई जीव—न मरने पर भी—भीतर जीवात्माके मौजूद रहने पर भी—बेहोश होकर, मुर्देकी तरह पड़ा रहता है। उसके जिन्दा होने पर भी—

उस की ऊपरी हालत बेहोशी आदि देखकर—लोग उसे मुर्दा समझ लेते हैं और अनेक नासमझ उसे शीघ्र ही मरघट या श्मशान पर ले जाकर जला देते या कब्र में दफना देते हैं। इस तरह, अज्ञानता से, अनेक बार, बच सकने वाले आदमी भी, बिना मौत मरते हैं। चतुर आदमी ऐसे मौकों पर काकपद करके या उसकी आँख की पुतलियों में अपनी या दीपक की लौ की परछाँही आदि देखकर, उसके मरने या जिन्दा होने का फैसला करते हैं। मूर्च्छा रोग, मृगी रोग और विषकी दशा में अक्सर ऐसा धोखा होता है। हमने ऐसे अवसर की परीक्षा-विधि इसी भाग में आगे लिखी है। पाठक उस से अवश्य काम लें ; क्योंकि मनुष्य-देह बड़ी दुर्लभ है।

विषके मुख्य दो भेद ।

सुश्रुत में लिखा है—

स्थावरं जंगमं चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानं आद्यं तु द्वितीयं षोडशाश्रयम् ॥

विष दो तरह के होते हैं:—(१) स्थावर, और (२) जंगम। स्थावर विषके रहने के दश स्थान हैं और जंगम के सोलह। अथवा यों समझिये कि, स्थान-भेद से, स्थावर विष दश तरह का होता है और जंगम सोलह तरहका।

नोट—स्थिरता से एक ही जगह रहने वाले—फिरने-डोलने या चलने की शक्ति न रखने वाले—वृक्ष, लता-पता और पत्थर आदि जड़ पदार्थों में रहने वाले विष को "स्थावर" विष कहते हैं। चलने फिरने वाले—चैतन्य जीवों—साँप, बिच्छू, चूहा, मकड़ी आदि में रहने वाले विष को "जंगम" विष कहते हैं। ईश्वर की सृष्टि भी दो ही तरह की हैं:—(१) स्थावर, और (२) जंगम। उसी तरह विष भी दो तरह के होते हैं—(१) स्थावर, और (२) जंगम। मतलब यह कि, जगदीश ने दो तरह की सृष्टि-रचना की और अपनी दोनों तरह की सृष्टि में ही विष की स्थापना भी की।

जंगम विषके रहनेके स्थान ।

जंगम विषके सोलह अधिष्ठान या रहने के स्थान ये हैं:—

(१) दृष्टि, (२) श्वास, (३) दाढ़, (४) नख, (५) मूत्र,

(६) विष्ठा, (७) वीर्य, (८) आर्तव, (९) राल, (१०) मुँहकी पकड़, (११) अपानवायु, (१२) गुदा, (१३) हड्डी, (१४) पित्ता, (१५) शूक ,और (१६) लाश।

नोट—शूक का अर्थ है— डंक, काँटा या रोम। जैसे ; बिच्छू, मक्खी और ततये आदिके डंकोंमें विष रहता है और कनखजूरे के काँटों में।

चरकमें लिखा है, साँप, कीड़ा, चूहा, मकड़ी, बिच्छू, छिपकिली, गिरगट, जौंक, मछली, मैंडक, भौंरा, वर्र, मक्खी, किरकेंटा, कुत्ता, सिंह, स्यार, चीता, तेंदुआ, जरख और नौला वगैरः की दाढ़ों में विष रहता है। इनकी दाढ़ों से पैदा हुए विष को "जंगम विष" कहते हैं। पर भगवान् धन्वन्तरि दाढ़ोंमें ही नहीं, अनेक जीवोंके मल, मूत्र, श्वास आदि में भी विष का होना बतलाते हैं और यह बात है भी ठीक। वे कहते हैं :—

(१) दिव्य सर्पों की दृष्टि और श्वास में विष होता है।

(२) पार्थिव या दुनिया के साँपों की दाढ़ों में विष होता है।

(३) सिंह और बिलाव प्रभृति के पञ्जों और दाँतोंमें विषहोता है।

(४) चिपिट आदि कीड़ों के मल और मूत्रमें विष रहता है।

(५) ज़हरीले चूहों के वीर्य में भी विष रहता है।

(६) मकड़ी की लार और चेपादि में विष रहता है।

(७) बिच्छू के पिछले डंक में विष रहता है।

(८) चित्रशिर आदि की मुँह की पकड़में विष होता है।

(९) विष से मरे हुए जीवों की हड्डियों में विष रहता है।

(१०) कनखजूरे के काँटों में विष होता है।

(११) भौंरे, ततैये और मक्खीके डंक में विष रहता है।

(१२) विषैली जौंक की मुँह की पकड़ में विष होता है।

(१३) सर्प या ज़हरीले कीड़ोंकी लाशों में भी विष होता है।

नोट (१)—कितने ही लोग सभी मरे हुए जीवोंके शरीर में विषका होना मानते हैं।

नोट (२)—मकड़ियाँ बहुत तरह की होती हैं। सुनते हैं, कि कितनी ही प्रकारकी मकड़ियोंके नाखुन तक होते हैं। नाखून वाली मकड़ी कितनी बड़ी होती होंगी! इस देशमें, घरों में तो ऐसी मकड़ियाँ नहीं देखी जातीं ; शायद अन्य देशों और वनोंमें ऐसी भयानक मकड़ियाँ होती हों। लार में तो सभी प्रकार की मकड़ियों के विष होता है। कितनीही मकड़ियों के मल, मूत्र, नाखून, वीर्य, आर्त्तव और मुँह की पकड़ में भी विष होता है। ज़हरीले चूहोंके दाँतों और वीर्य—दोनों में विष होता है। चार पैर वाले जानवरों की दाढ़ों और नाखूनों दोनों में विष होता है। मक्खी और कणभ आदिकी मुँह की पकड़ में भी विष होता है। विषसे मरे हुए साँप, कंटक और वरही मछली की हड्डियों में विष होता है। चींटी, कनखजूरा, कातरा और भौंरी या भौंरेके डंक और मुँह दोनों में विष होता है।

जंगम विषके सामान्य कार्य ।

भावप्रकाशमें लिखा है:—

निद्रां तन्द्रां क्लमं दाहं, सम्पाकं लोमहर्षणम् ।
शोथं चैवातिसारं च कुरुते जंगमं विषम् ॥

जंगम विष निद्रा, तन्द्रा, ग्लानि, दाह, पाक, रोमाञ्च, सूजन और अतिसार करता हैं।

स्थावर विषके रहने के स्थान ।

सुश्रुत में लिखा है:—

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीरं सार एव च ।
निर्यासोधातवश्चैव कन्दश्च दशमः स्मृतः ॥

स्थावर विष जड़, पत्ते, छाल, फल, फूल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द— इन दसों में रहता है।

नोट—किसीकी जड़ में विष रहता है, किसीके पत्तों में, किसी के फलमें, किसीके फूल में, किसीकी छालमें, किसीके दूध में, किसीके गोंद में और किसी के कन्द में विष रहता है। वृक्षों के सिवाय, विष खानोंसे निकलने वाली धातुओंमें भी रहता है। हरताल और संखिया अथवा फेनाश्म भस्म—ये दो विष धातु-विष माने जाते हैं। कनेर और चिरमिटी आदि की जड़ में विष होता है। थूहर आदिके

दूधमें विष होता है। सुश्रुतने जड़, पत्ते, फल, फूल, दूध, गोंद और सार आदि में कुल मिला कर पचपन प्रकार के स्थावर विष लिखे हैं, पर बहुत से नाम आजकल की भाषा में नहीं मिलते; किसी कोष में भी उनका पता नहीं लगता; इस लिये हम उन्हें छोड़ देते हैं। जब कोई समझेगा ही नहीं, तब लिखनेसे क्या लाभ? हाँ, कन्दविषोंका संक्षिप्त वर्णन किये देते हैं।

कन्द-विष।

सुश्रुत ने नीचे लिखे तेरह कन्द-विष लिखे हैं:—

(१) कालकूट, (२) वत्सनाभ, (३) सर्षप, (४) पालक, (५) कर्दमक, (६) वैराटक, (७) मुस्तक, (८) शृंगीविष, (९) प्रपौंडरीक, (१०) मूलक, (११) हालाहल, (१२) महाविष, और (१३) कर्कटक।

इनमें भी वत्सनाभ विष चार तरह का, मुस्तक दो तरह का, सर्षप छे तरहका और बाक़ी सब एक-एक तरह के लिखे हैं।

भावप्रकाशमें विष नौ तरह के लिखे हैं। जैसे,—

(१) वत्सनाभ, (२) हारिद्र, (३) सक्तुक, (४) प्रदीपन, (५) सौराष्ट्रिक, (६) शृंगिक, (७) कालकूट, (८) हालाहल, और (९) ब्रह्मपुत्र।

कन्द-विषों की पहचान।

वत्सनाभ विष— जिसके पत्ते सम्हालूके समान हों, जिसकी आकृति बछड़े की नाभिके जैसी हो और जिसके पास दूसरे वृक्ष न लग सकें, उसे "वत्सनाभ विष" कहते हैं।

(२) हारिद्र विष— जिसकी जड़ हलदी के वृक्ष के सदृश हो, वह "हारिद्र विष है।"

(३) सक्तुक विष— जिसकी गाँठ में सत्तूके जैसा चूरा भरा हो, वह "सक्तुक विष" है।

(४) प्रदीपन विष—जिसका रंग लाल हो, जिसकी कान्ति अग्नि के समान हो, जो दीप्त और अत्यन्त दाहकारक हो, वह "प्रदीपन विष" है।

(५) सौराष्ट्रिक विष—जो विष सौराष्ट्र देशमें पैदा होता है, उसे "सौराष्ट्रिक विष" कहते हैं।

(६) शृंगिक विष— जिस विषको गाय के सींग के बाँधने से दूध लाल हो जाय, उसे "शृङ्गिक" या "सींगिया विष" कहते हैं।

(७) कालकूट विष—पीपल के जैसे वृक्ष का गोंद होता है। यह शृंगवेर, कोंकन और मलयाचल में पैदा होता है।

(८) हालाहल विष— इस के फल दाखोंके गुच्छों के जैसे और पत्ते ताड़के जैसे होते हैं। इसके तेज से आस-पास के वृक्ष मुर्झा जाते हैं। यह विष हिमालय, किष्किन्धा, कोंकन देश और दक्षिण महासागर के तट पर होता है।

(६) ब्रह्मपुत्र विष— इस का रङ्ग पीला होता है और यह मलयाचल पर्वत पर पैदा होता है।

कन्द-विषों के उपद्रव ।

सुश्रुत में लिखा है:—

(१) कालकूट विषसे स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता, कम्प और शरीर-स्तम्भ होता है।

(२) वत्सनाभ विषसे ग्रीवा-स्तम्भ होता है तथा मल-मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं।

(३) सर्षप से तालू में विगुणता, अफारा और गाँठ होती है।

(४) पालक से गर्दन पतली पड़ जाती और बोली बन्द हो जाती है।

(५) कर्दमकसे मल फट जाता और नेत्र पीले हो जाते हैं।

(६) वैराटक से अंगमें दुःख और शिरमें दर्द होता है।

(७) मुस्तक से शरीर अकड़ जाता और कम्प होता है।

(८) शृंगी विष से शरीर ढीला हो जाता, दाह होता और पेट फूल जाता है।

(६) प्रपौंडरीक विष से नेत्र लाल होते और पेट फूल जाता है।

(१०) मूलक से शरीर का रङ्ग बिगड़ जाता, कय होतीं, हिच-कियाँ चलतीं तथा सूजन और मूढ़ता होती है ।

(११) हालाहल से श्वास रुक-रुक कर आता और आदमी काला हो जाता है ।

(१२) महाविषसे हृदय में गाँठ होती और भयानक शूल होता है ।

(१३) कर्कटक से आदमी ऊपरको उछलता और हँस-हँस कर दाँत चबाने लगता है ।

भावप्रकाश में लिखा है:—

कन्दजान्युग्र वीर्याणि यान्युक्तानि त्रयोदश: ।

सुश्रुतादि ग्रन्थोंमें लिखे हुए तेरह विष बड़ी उग्र शक्तिवाले होते हैं; यानी तत्काल प्राणनाश करते हैं ।

आजकल काममें आनेवाले कन्दविष ।

आजकल सुश्रुत के तेरह और भावप्रकाश के नौ विष बहुत कम मिलते हैं। इस समय,इनमें से "वत्सनाभ विष"और "सींगिया विष" ही अधिक काम में आते हैं । अगर ये युक्तिके साथ काममें लाये जाते हैं, तो रसायन, प्राणदायक, योगवाही, त्रिदोषनाशक, पुष्टिकारक और वीर्यवर्द्धक सिद्ध होते हैं। अगर ये बेक़ायदे सेवन किये जाते हैं,तो प्राण-नाश करते हैं ।

अशुद्ध विष हानिकारक ।

अशुद्ध विषके दुर्गुण उसके शोधन करने से दूर हो जाते हैं; इस-लिये दवाओं के काममें विषों को शोधकर लेना चाहिये । कहा है—

ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात् ।
तस्माद् विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत ॥

विषमात्र के दश गुण ।

कुशल वैद्योंको विषोंकी परीक्षा नीचे लिखे हुए दश गुणोंसे करनी

चाहिये। अगर स्थावर,जंगम और कृत्रिम विषोंमें ये दशों गुण होते हैं,तो वे मनुष्यको तत्काल मार डालते हैं। सुश्रुतादिक ग्रन्थोंमें लिखा है:—

रुक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च।
विकाशि विषदञ्चैव लघ्वपाकि च ततमतम्॥

(१) रुक्ष, (२) उष्ण, (३) सूक्ष्म, (४) आशु, (५) व्यवायी, (६) विकाशी, (७) विषद, (८) लघु, (९) तीक्ष्ण, और (१०) अपाकी,—ये दश गुण विषोंमें होते हैं।

दश गुणों के कार्य।

ऊपर के रुक्ष, उष्ण आदि दश गुणों के कार्य इस भाँति होते हैं:—

(१) विष बहुत ही रूखा होता है, इसलिये वह वायु को कुपित करता है।

(२) विष उष्ण यानी गरम होता है, इसलिये पित्त और खूनको कुपित करता है।

(३) विष तीक्ष्ण— तेज़ होता है, इसलिये बुद्धिको मोहित करता, बेहोशी लाता और शरीर के मर्म या बन्धनों को तोड़ डालता है।

(४) विष सूक्ष्म होता है, इसलिये शरीर के बारीक छेदों और अवयवों में घुसकर उन्हें बिगाड़ देता है।

(५) विष आशु होता है; यानी बहुत जल्दी-जल्दी चलता है, इस-लिये इस का प्रभाव शरीर में बहुत जल्दी होता है और इस से यह तत्काल फैलकर प्राणनाश कर देता है।

(६) विष व्यवायी होता है। पहले सारे शरीर में फैलता और पीछे पकता है, अतः सब शरीर की प्रकृति को बदल देता या अपनी सी कर देता है।

(७) विष विकाशी होता है, इसलिये दोषों, धातुओं और मल को नष्ट कर देता है।

(८) विष विशद होता है, इसलिये शरीर को शक्तिहीन कर देता या दस्त लगा देता है।

(९) विष लघु होता है, इसलिये इसको चिकित्सामें कठिनाई होती है। यह शीघ्र ही असाध्य हो जाता है।

(१०) विष अपाकी होता है, इसलिये बड़ी कठिन से पचता या नहीं पचता है ; अतः बहुत समय तक दुःख देता है।

नोट—चरक में लिखा है, त्रिदोष में जिस दोष की अधिकता होती है, विष उसी दोष के स्थान और प्रकृति को प्राप्त होकर, उसी दोष को उदीरण करता है; यानी वातिक व्यक्तिके वात-स्थानमें जाकर बादीकी प्यास, बेहोशी, अरुचि, मोह, गलग्रह, वमि और झाग वगैरः उत्पन्न करता है। उस समय कफ-पित्तके लक्षण बहुतही थोड़े दीखते हैं। इसी तरह विष पित्तस्थान में जाकर प्यास, खाँसी, ज्वर, वमन, क्लम, तम, दाह और अतिसार आदि पैदा करता है। उस समय कफ-वातके लक्षण कम होते हैं। इसी तरह विष जब कफ-स्थल में जाता है; तब श्वास, गलग्रह, खुजली, लार और वमन आदि करता है। उस समय पित्त-वात के लक्षण कम होते हैं। दूषी विष खूनको बिगाड़ कर, कोठ प्रभृति खूनके रोग करता है। इस प्रकार विष एक-एक दोष को दूषित करके जीवन नाश करता है। विष के तेज से खून गिरता है। सब छेदों का रोक कर, विष प्राणियोंको मार डालता है। पिया हुआ विष मरनेवाले के हृदय में जम जाता है। साँप बिच्छू आदिका और जहरके बुझे हुए तीर आदिका विष डसे हुए या लगे हुए स्थान में रहता है।

दूषी विषके लक्षण

जो विष अत्यन्त पुराना हो गया हो, विष नाशक दवाओं से हीन-वीर्य या कमज़ोर हो गया हो अथवा दावाग्नि, वायु या धूपसे सूख गया हो अथवा स्वाभाविक दश गुणों में से एक, दो, तीन या चार गुणोंसे रहित हो गया हो, उसको "दूषी विष" कहते हैं।

खुलासा यह है, कि चाहे स्थावर विष हो, चाहे जंगम और चाहे कृत्रिम— जो किसी तरह कमज़ोर हो जाता है, उसे "दूषी विष" कहते हैं। मान लो, किसी ने विष खाया, वैद्य की चिकित्सा से वह विष निकल गया, पर कुछ रह गया, पुराना पड़ गया या पच गया—वह विष "दूषी विष" कहलावेगा; क्योंकि उसमें अब उतना बलवीर्य नहीं—पहले से वह हीनवीर्य या कमज़ोर है। इसी तरह जो विष धूप, आग या वायु

से सूख गया हो और इस तरह कमज़ोर हो गया हो, वह भी "दूषी विष" कहलावेगा। इसी तरह जो विष स्वभाव से ही—अपने-आप ही—कमज़ोर हो, उसमें विष के पूरे गुण न हों, उसे भी "दूषी विष" ही कहेंगे। मतलब यह कि, स्थावर और जंगम विष पुरानेपन प्रभृति कारणों से "दूपी विप" कहलाते हैं। भावप्रकाश में लिखा है:—

स्थावरं जंगमं च विपमेव जीर्णत्व-
मादिभिः कारणैर्दूपीविपसंज्ञां लभते ॥

स्थावर और जंगम विष— जीर्णता आदि कारणों से "दूषी विष" कहे जाते हैं।

दूपी विष क्या मृत्युकारक नहीं होता ?

दूपी विष कमज़ोर होता है, इसलिये मृत्यु नहीं कर सकता, पर कफसे ढककर वरसों शरीर में रहा आता है। सुश्रुत में लिखा है:—

वीर्याल्प भावान्न निपातयेत्तत कफावृतं वर्पगणानुवन्धि ॥

दूषी विप वीर्य या वल कम होने की वजह से प्राणीको मारता नहीं, पर कफसे ढका रह होकर, वरसों शरीरमें रहा आता है।

दूपी विषकी निरुक्ति ।

सुश्रुतमें लिखा है:—

दूपितं देशकालान्न दिवास्वप्नैरभीदणशः ।
यस्माद्दूपयते धातून्तस्माद्दूपी विपंस्मृतम् ॥

यह हीनवीर्य विष अगर शरीरमें रह जाता है, तो देश-काल और खाने-पीने की गड़वड़ी तथा दिनके अधिक सोने वगैरः कारणों से दूपित होकर धातुओं को दूषित करता है, इसीसे इसे "दूपी विष" कहते हैं।

दूपी विप क्या करता है ?

दूपी विष हीन-वीर्य—कमज़ोर होने की वजह से प्राणी को मारता तो नहीं है, लेकिन वरसों तक शरीर में रहा आता है। क्यों रहा आता

है ? इस विष में उष्णता आदि गुण कम होने से, कफ इसे ढके रहता है और कफ की वजह से अग्नि मन्दी रहती है; इससे यह पचता भी नहीं—बस, इसी से यह शरीर में बरसों तक रहा आता है।

जिसके शरीर में दूपी विष होता है, उसको पतले दस्त लगते हैं, शरीरका रंग बदल जाता है, चेष्टायें विरुद्ध होने लगती हैं, चैन नहीं मिलता तथा मूर्छा, भ्रम, वाणीका गद्गदपना और वमन ये रोग घेरे रहते हैं।

स्थान विशेष के कारण दूषी विष के लक्षण।

अगर दूषी विष आमाशयमें होता है, तो वात और कफ-सम्बन्धी रोग पैदा करता है।

अगर दूषी विष पक्वाशय में होता है, तो वात और पित्त-सम्बन्धी रोग पैदा करता है।

अगर दूषी विष बालों और रोमों में होता है, तो मनुष्य को पंख-हीन पक्षी-जैसा कर देता है।

अगर दूषी विष रसादि धातुओं में होता है; तो रसदोष, रक्तदोष, मांसदोष, मेददोष, अस्थिदोष, मज्जादोष और शुक्र-दोप से होने वाले रोग पैदा करता है:—

दूषी विष रस में होने से अरुचि, अजीर्ण, अङ्गमर्द; ज्वर, उबकी, भारीपन, हृद्रोग, चमड़ेमें गुलझट, बाल सफेद होना, मुँहका स्वाद बिगड़ना और थकान आदि करता है।

रक्त में होनेसे कोढ़, विसर्प, फोड़े-फुन्सी, मस्से, नीलिका, तिल, चकत्ते, झाँई, गंज, तिल्ली, विद्रधि, गोला, वातरक्त, बवासीर, रसौली, शरीर टूटना, ज़रा खुजलाने से खून निकलना या चमड़ा लाल हो जाना और रक्तपित्त आदि करता है।

मांस में होने से अधिमांस, अर्बुद, अर्श, अधिजिह्व, उपजिह्व, दन्त-रोग, तालूरोग, होठ पकना, गलगण्ड और गण्डमाला आदि करता है।

मेद में होने से गाँठ, अण्डवृद्धि, गलगंड, अर्बुद, मधुमेह, शरीर का बहुत मोटा हो जाना और बहुत पसीना आना आदि करता है।

हड्डी में होने से कहीं हाड़ का बढ़ जाना, दाँत की जड़ में और दाँत निकलना तथा नाखून ख़राब होना वग़ैरः करता है।

मज्जा में होने से अँधेरी आना, मूर्च्छा, भ्रम, जोड़ मोटे होना, जाँघ या उसकी जड़ का मोटा होना प्रभृति करता है।

शुक्र में होने से नपुंसकता, स्त्री-प्रसंग अच्छा न लगना, वीर्य को पथरी, शुक्रमेह एवं अन्य वीर्य-विकार आदि करता है।

दूषी विष के प्रकोप का समय।

दूषी विष नीचे लिखे हुए समयों में तत्काल प्रकुपित होता है:—

(१) अत्यन्त सर्दी पड़ने के समय।

(२) अत्यन्त हवा चलने के समय।

(३) बादल होने के समय।

प्रकुपित दूषी विष के पूर्व्व रूप।

दूषी विष का कोप होने से पहले ये लक्षण देखने में आते हैं:— अधिक नींद आना, शरीर का भारी होना, अधिक जँभाई आना, अंगों का ढीला होना या टूटना और रोमाञ्च होना।

प्रकुपित दूषी विष के रूप।

जब दूषी विष का कोप होता है, तब वह खाना खाने पर सुपारी का सा मद करता है, भोजन को पचने नहीं देता, भोजन से अरुचि करता है, शरीर में गाँठ और चकत्ते करता है तथा मांसक्षय, हाथ पैरों में सूजन, कभी-कभी बेहोशी, वमन, अतिसार, श्वास, प्यास, विषमज्वर, और जलोदर उत्पन्न करता है; यानी प्यास बहुत बढ़ जाती है और साथ ही पेट भी बढ़ने लगता है तथा शरीर का रंग बिगड़ जाता है।

दूषी विष के भेदों से विकार-भेद।

कोई दूषी विष उन्माद करता है, कोई पेट को फुला देता है, कोई

वीर्य को नष्ट कर देता है, कोई वाणी को गद्गद् करता है, कोई कोढ़ करता है और कोई अनेक प्रकार के विसर्प और विस्फोटकादि रोग करता है।

नोट—दूषी विष अनेक प्रकार के होते हैं, इसलिये उनके काम भी भिन्न-भिन्न होते हैं। दूषी विष मात्र एक ही तरह के काम नहीं करते। कोई दूषी विष कोढ़ करता है, तो कोई वीर्य क्षीण करता है इत्यादि।

दूषी विष क्यों कुपित होता है ?

दिन में बहुत ज़ियादा सोने, कुल्थी, तिल और मसूर प्रभृति अन्न खाने, जल वाले देशों में रहने, अधिक हवा चलने, बादल और वर्षा होने—वगैरः वगैरः कारणों से दूषी विष कुपित होता है।

दूषी विष की साध्यासाध्यता।

पथ्य सेवन करनेवाले जितेन्द्रिय पुरुष का दूषी विष शीघ्र ही साध्य होता है। एक वर्ष के बाद वह याप्य हो जाता है; यानी बड़ी मुश्किल से आराम होता है या दवा सेवन करते तक दबा रहता है और दवा बन्द होते ही फिर उपद्रव करता है। अगर क्षीण और अपथ्य-सेवी पुरुष को यह दूषी विष का रोग होता है, तो वह आराम नहीं होता। ऐसा अजितेन्द्रिय गलगल कर मर जाता है।

कृत्रिम विष भी दूषी विष।

जिस तरह स्थावर और जंगम विष दूषी विष हो जाते हैं; उसी तरह कृत्रिम या मनुष्य का बनाया हुआ विष भी दूषी विष हो जाता है; बशर्ते कि, उसका विष से सम्बन्ध हो। अगर कृत्रिम विष का सम्बन्ध विष से नहीं होता, पर वह विष के से काम करता है, तो उसे "गर-विष" कहते हैं।

खुलासा यह है कि, कई विषों और अन्य द्रव्यों के संयोग से, मनुष्य द्वारा बनाया हुआ विष "कृत्रिम विष" कहलाता है। वह कृत्रिम विष दो तरह का होता है :—

(१) दूषी विष, और (२) गर।

जिस कृत्रिम विष का सम्बन्ध विष से होता है, उसे दूषी विष कह सकते हैं, जब कि वह हीनवीर्य हो गया हो; पर जिसका सम्बन्ध विष से नहीं होता, पर वह विष के से काम करता है, उसे "गरविष" कहते हैं। जैसे; स्त्रियाँ अपने पतियों को वशमें करनेके लिये, उन्हें अपना आर्त्तव—मासिक धर्म का खून, मैल या पसीना प्रभृति खिला देती हैं। वह सब विष का काम करते हैं—धातुक्षीणता, मन्दाग्नि और ज्वर आदि करते हैं। वे विष का सा काम करते हैं, इस लिये उन्हें "गरविष" कहते हैं। पर वे वास्तव में न तो विष हैं और न विष वगैरः कई चीज़ों के मेल से बने हैं, इसलिये उनको किसी हालत में भी "दूषी विष" नहीं कह सकते।

गर विष के लक्षण ।

चरक में लिखा है, संयोजक विष को "गरविष" कहते हैं। वह भी रोग करता है।

"भावप्रकाश" में लिखा है, मूर्खा स्त्रियाँ अपने पतियों को वश में करने के लिये, उन्हें रज, पसीना तथा अनेकानेक मलों को भोजन में मिलाकर खिला देती हैं। दुश्मन भी इसी तरह के पदार्थों को भोजन में खिला देते हैं। ये पसीने और रज प्रभृति मैले पदार्थ "गर" कहलाते हैं।

गर विष के काम ।

पसीना और रज आदि गर पदार्थों से शरीर पीला पड़ जाता है, दुबलापन हो जाता है, भूख बन्द हो जाती है, ज्वर चढ़ आता है, मर्म-स्थानों में पीड़ा होती है तथा अफारा, धातुक्षय और सूजन—ये रोग हो जाते हैं।

नोट—यहाँ तक हमने मुख्य चार तरह के विष लिखे हैं:—(१) स्थावर विष, (२) जंगम विष, (३) दूषी विष, और (४) गरविष। आप इन्हें अच्छी तरह

समझ-समझ कर याद करलें। इनकी उत्पत्ति, इनके लक्षण और इन के गुण-कर्म आदि याद होने से ही आप को "विष चिकित्सा" में सफलता मिलेगी। अगर कोई शख्स हमारी लिखी "विष चिकित्सा" को ही अच्छी तरह याद करले और इसका अभ्यास करे; तो मनमाना यश और धन उपार्जन कर सके। इसके लिये और ग्रन्थ देखने की दरकार न होगी।

स्थावर विष के कार्य।

ऊपर हम जंगम विष के काम लिख आये हैं, अब स्थावर विष के काम लिखते हैं। ज्वर, हिचकी, दन्त-हर्ष, गलग्रह, झाग आना, अरुचि, श्वास और मूर्च्छा स्थावर विष के कार्य या नतीजे हैं; यानी जो आदमी स्थावर विष खाता-पीता है, उसे ऊपर लिखे ज्वर आदि रोग होते हैं।

स्थावर विष के सात वेग।

स्थावर और जंगम दोनों तरह के विषों में सात वेग या दौरे होते हैं। प्रत्येक वेग में विष भिन्न-भिन्न प्रकार के काम करते हैं, इस से प्रत्येक वेग की चिकित्सा भी अलग-अलग होती है। जंगम-विष या सर्प-विष प्रभृति के वेग और उनकी चिकित्सा आगे लिखी है। यहाँ हम "सुश्रुत" से स्थावर विष के सात वेग और अगले अध्यायमें प्रत्येक वेग की चिकित्सा लिखते हैं :—

(१) पहले वेग में,—जीभ काली और कड़ी हो जाती है तथा मूर्च्छा—बेहोशी होती और श्वास चलता है।

(२) दूसरे वेग में,—शरीर काँपता है, पसीने आते हैं, दाह या जलन होती और खुजली चलती है।

(३ तीसरे वेग में,—तालू में खुश्की होती है, आमाशय में दारुण शूल या दर्द होता है तथा दोनों आँखों का रङ्ग और-का-और हो जाता है। वे हरी-हरी और सूजी सी हो जाती हैं।

नोट—याद रक्खो, इन तीनों वेगोंके समय खाया-पीया हुआ विष "आमाशय" में रहता है। इस तीसरे वेगके बाद, विष 'पक्वाशय' में पहुच जाता है। जब विष

पक्काशय में पहुच जाता है, तब पक्वाशय में पीड़ा होती है, आँतें बोलती हैं, हिचकियाँ चलती हैं और खाँसी आती है। मतलब यह है कि पहले तीन वेगों के समय विष 'आमाशय' में और पिछले चारों—चौथे से सातवें तक—वेगोंमें 'पक्काशय' में रहता है।

(४) चौथे वेग में,—सिर बहुत भारी होकर झुक जाता है।

(५) पाँचवें वेग में,—मुँह से कफ गिरने लगता है, शरीर का रङ्ग बिगड़ जाता है और सन्धियों या जोड़ों में फूटनी सी होती है। इस वेग में वात, पित्त, कफ और रक्त—चारों दोष कुपित हो जाते हैं और पक्काशय में दर्द होता है।

(६) छठे वेग में,—बुद्धि का नाश हो जाता है, किसी तरह का होश या ज्ञान नहीं रहता और दस्त पर दस्त होते हैं।

(७) सातवें वेग में,—पीठ, कमर और कन्धे टूट जाते हैं तथा साँस रुक जाता है।

(१) नीचे लिखे हुए उपायों से विष-चिकित्सा की जाती है:—

(१) मंत्र, (२) बन्ध बाँधना, (३) डसी हुई जगह को काट डालना, (४) दबाना, (५) खून-मिला ज़हर चूसना, (६) अग्निकर्म करना या दागना, (७) परिषेक करना, (८) अवगाहन, (९) रक्त-मोक्षण करना यानी फस्द आदि से खून निकालना. (१०) वमन या कय कराना, (११) विरेचन या जुलाब देना, (१२) उपधान (१३) हृदायवरण ; यानी विष से हृदय की रक्षा करने को घी, मांस या ईख-रस आदि पहले ही पिला देना, (१४) अंजन, (१५) नस्य, (१६) धूम, (१७) लेह, (१८) औषध, (१९) प्रशमन, (२०) प्रतिसारण, (२१) प्रतिविष सेवन कराना ; यानी स्थावर विष में जंगम विष का प्रयोग करना और जंगम में स्थावर का, (२२) संज्ञास्थापन, (२३) लेप, और (२४) मृतसञ्जीवन देना।

(२) विष, जिस समय, जिस दोष के स्थान में हो, उस समय, उसी दोष की चिकित्सा करनी चाहिये।

जब विष वातस्थान—पक्वाशय—में होता है; तब वह बादी की प्यास, बेहोशी, अरुचि, मोह, गलग्रह, वमि और झाग आदि उत्पन्न करता है। इस अवस्था में, (१) स्वेद प्रयोग करना चाहिये, और (२) दही के साथ कूट और तगर का कल्क सेवन करना चाहिये।

जब विष पित्त-स्थान—हृदय और ग्रहणी—में होता है; तब वह प्यास खाँसी, ज्वर, वमन, क्लम, तम, दाह, और अतिसार आदि उत्पन्न करता है। इस अवस्था में, (१) घी पीना, (२) शहद चाटना (३) दूध पीना, (४) जल पीना, और (५) अवगाहन करना हितकारी है।

जब विष कफ-स्थान—छाती—में होता है; तब वह श्वास, गलग्रह, खुजली, लार गिरना और वमन होना आदि उपद्रव करता है। इस अवस्था में, (१) क्षारागद सेवन कराना, (२) स्वेद दिलाना, और (३) फस्द खोलना हितकारी है। दूषी विष अगर रक्तगत या खून में हो, तो "पंचविध शिरावेधन" करना चाहिये।

इस तरह वैद्य को सारी अवस्थायें समझ कर, औषधि की कल्पना करनी चाहिये। पहले तो विष के स्थान को जीतना चाहिये; फिर जिस स्थान के जीतने से विष नाश हुआ है, उस पर कोई काम विष-चिकित्सा के विरुद्ध न करना चाहिये।

(३) विष से मार्ग दूषित हो जाते और छेद रुक जाते हैं, इसलिये वायु रुक जाती है, उसे रास्ता नहीं मिलता। वायु के रुकने की वजह से मनुष्य मरने वाले की तरह साँस लेने लगता है। अगर ऐसी हालत हो, पर असाध्य अवस्था के लक्षण न हों, तो उसके मस्तक पर, तेज़ चाकू या छूरी से, चमड़ा छील कर, कव्वेका सा पञ्जा बना कर, उस पर "चर्मकषा" यानी सिकेकाई का लेप करना चाहिये। साथ ही कटभी—हापरमाली, कुटकी और कायफल—इन तीनों को पीस-छान कर, इन की प्रधमन नस्य देनी चाहिये।

अगर आदमी, विष से,सहसा बेहोश हो जाय या मतवाला हो जाय, तो मस्तक पर ऊपरकी लिखी विधिसे काक पद बना कर,उस पर बकरी, गाय, भैंस,मैंढ़ा,मुर्ग़ा या जल-जीवों का मांस पीस कर रखना चाहिये।

अगर नाक, नेत्र, कान, जीभ और कंठ रुक रहे हों,तो जंगली बैंगन, बिजौरा और अपराजिता या माल काँगनी—इन तीनों के रस की नस्य देनी चाहिये।

अगर नेत्र बन्द हो गये हों ; तो दारुहल्दी, त्रिकुटा, हल्दी, कनेर, कंजा, नीम और तुलसी को, बकरी के मूत्र में पीस कर, नेत्रों में आँजना चाहिये।

काली सेम, तुलसी के पत्ते, इन्द्रायण की जड़, पुनर्नवा, काकमाची और सिरस के फल,—इन सब को पीस कर, इन का लेप करने, नस्य देने, अंजन करने और पीने से उस प्राणी को लाभ होता है, जो उद्बंधन विष और जल के द्वारा मुर्दे के जैसा हो रहा हो।

(४) सब विष एक ही स्वभाव के नहीं होते; कोई वातिक, कोई पैतिक और कोई श्लेष्मिक होता है। भिन्न-भिन्न प्रकार के विषों की चिकित्सा भी अलग-अलग होती है, क्योंकि उनके काम भी तो अलग-अलग ही होते हैं।

वातिक विष होने से हृदय में पीड़ा, उर्ध्ववात, स्तंभ, शिरायाम—मस्तक-खिंचना, हड्डियों में वेदना आदि उपद्रव होते हैं और शरीर काला हो जाता है। इस दशा में, (१) खांड का व्रण लेप, (२) तेल की मालिश, (३) नाड़ी स्वेद, (४) पुलक आदि योग से स्वेद और और बृंहण विधि हितकारी हैं।

पैतिक विष होने से संज्ञानाश—होश न रहना, गरम श्वास निकलना, हृदय में जलन, मुँह में कड़वापन, काटी या डसी हुई जगह का फटना, और सूजना तथा लाल या पीला रंग हो जाना—ये उपद्रव होते हैं। इस अवस्था में, शीतल लेप और शीतल सेचन आदि उपचारों से काम लेना हित है।

श्लेष्मिक विष होने से वमन, अरुचि, जी मिचलाना, मुँह से पानी बहना, उत्क्लेश, भारीपन और सरदी लगना तथा मुँह का ज़ायका मीठा होना—ये लक्षण होते हैं। इस अवस्था में, लेखन, छेदन, स्वेदन और वमन—ये चार उपाय हितकारी हैं।

नोट—(१) दर्वीकर या काले फनदार साँपों के काटने से वात का प्रकोप होता है ; मण्डली सर्पके काटने से पित्त का और राजिलके काटने से कफका प्रकोप होता

है। दर्वीकर सर्प का विष वातिक मंडली का पैत्तिक, और राजिल का श्लेष्मिक होता है। इन के काटने से अलग-अलग दोष कुपित होते हैं और ऊपर लिखे अनुसार उन के अलग-अलग उपद्रव होते हैं। जैसे,—

दर्वीकर सर्पों का विष वात प्रधान होता है। उनके काटने से वैसे ही लक्षण होते हैं, जैसे ऊपर वातिक विषके लिखे हैं। दर्वीकर के काटने की जगह सूक्ष्म, काले रंगकी होती है; उस में से खून नहीं निकलता। इसके सिवा वातव्याधि के उर्ध्ववात,शिरायास और अस्थिशूल आदि समस्त लक्षण होते हैं।

मंडली सर्प का विष पित्तप्रधान होता है। उसके काटने से वही लक्षण होते हैं, जो ऊपर पैत्तिक विषके लिखे हैं। मंडली सर्प के काटने की जगह स्थूल—मोटी होती है। उस पर सूजन होती है और उसका रङ्ग लाल-पीला होता है तथा रक्तपित्तके सारे लक्षण प्रकाशित होते हैं। इसलिये उसके काटने की जगह से खन निकलता है।

राजिल सर्प का विष कफप्रधान होता है। उसके काटने से वही लक्षण होते हैं, जो कि ऊपर श्लेष्मिक विषके लिखे हैं। राजिल की काटी हुई जगह लिबलिबी या चिकनी सी, स्थिर और सूजनदार होती है। उसका रङ्ग पाण्डु या सफेदसा होता है। काटे हुए स्थान का खून जम जाता है। इसके सिवा, कफके सब लक्षण अधिकता से नजर आते हैं।

बिच्छू और उच्चिटिंग के विषके सिवा और सब तरह के विषों में, चाहे वे किसी स्थान में क्यों न हों, प्रायः शीतल चिकित्सा हितकारी है। चरक।

सुश्रुतमें लिखा है, चूँकि विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण होता है, इसलिये प्रायः सभी विषोंमें शीतल परिषेक करना या शीतल छिड़के देना हितकारी है। पर कीड़ों का विष बहुत तेज नहीं होता, प्रायः मन्दा होता है और उसमें वायु-कफके अंश अधिक होते हैं, इसलिये कीड़ोंके विष में सेकने या पसीना निकालने की मनाही नहीं है। परन्तु ऐसे भी मौके होते हैं, जहाँ कीड़ों के विष में गरम सेक नहीं किया जाता।

चरक मुनि कहते हैं, बिच्छू के काटने पर, घी और नमक से स्वेदन करना और अभ्यङ्ग हितकारी हैं। इसमें गरम स्वेद,घीके साथ अन्न खाना और घी पीना भी हित है। घी पीने से मतलब यह है कि, घी की मात्रा जियादा हो।

सुश्रुत के कल्पस्थान में लिखा है, उग्र या तेज जहर वाले बिच्छुओं के काटे का इलाज साँपों के इलाज की तरह करो। मन्दे विषवाले बिच्छु के काटे स्थान पर चक्र तैल यानी कच्ची घानी के तेलका तरड़ा दो अथवा विदार्यादि से पकाये

हुए तेलको निवाया करके सेक करो। अथवा विष-नाशक दवाओं की लपरी से उपानह स्वेद करो। अथवा निवाया-निवाया गोबर काटे स्थान पर बाँधो और उसीसे उस जगह को स्वेदित करो।

(५) इस बात को भी ध्यान में रक्खो, कि, विष के साथ काल और प्रकृति की तुल्यता होने से विष का वेग या ज़ोर बढ़ जाता है। जैसे,—दर्वीकर साँप का विष वात-प्रधान होता है। अगर वह वात प्रकृति वाले प्राणी को काटता है, तो "प्रकृति-तुल्यता" होती है; यानी विष की और काटे जाने वाले की प्रकृतियाँ मिल जाती हैं—आदमी का मिज़ाज वादीका होता है और विष भी बादी का ही होता है; तब विष का ज़ोर बढ़ जाता है। अगर उस वात प्रकृति वाले मनुष्य को दर्वीकर सर्प वर्षा काल में काटता है, तो विष का ज़ोर और भी ज़ियादा होता है, क्योंकि वर्षाकाल में वायु का कोप होता है। विष वात-कोपकारक, वर्षाकाल वात-कोपकारक और काटे जाने वाले की प्रकृति वात की—जहाँ ये तीनों मिल जाते हैं, वहाँ जीवन की आशा कहाँ? अगर काटनेवाला दर्वीकर या काला साँप जवान पट्ठा हो, तो औरभी ग़ज़ब समझिये; क्योंकि जवान काला साँप (दर्वीकर), बूढ़ा मण्डली साँप और प्रौढ़ अवस्थाका राजिल साँप आशीविष-सदृश होते हैं। इधर ये काटते हैं और उधर आदमी ख़तम होता है।

(६) अगर काटने वाला सर्पको न देख सका हो या घबराहट में पहचान न सका हो, तो वैद्य को विष के लक्षण देख कर, कैसे साँपने काटा है, इसका निर्णय करना चाहिये। जैसे, दर्वीकर साँप काटेगा तो काटा हुआ स्थान सूक्ष्म और काला होगा और वहाँ से खून न निकलेगा और वह जगह कछुए के जैसी होगी तथा वायुके विकार अधिक होंगे। अगर मण्डलीने काटा होगा, तो काटा हुआ स्थान स्थूल होगा, सूजन होगी, रंग लाल-पीला होगा और काटी हुई जगह से खून निकला होगा तथा रक्तपित्त के और लक्षण होंगे।

स्त्री सर्प—नागन—के काटने से आदमी के अंग नर्म रहते हैं, दृष्टि

नीची रहती है यानी आदमी नीचे की तरफ देखता है, बोला नहीं जाता और शरीर काँपता है : पर अगर इसके विपरीत चिह्न हों, जैसे शरीर के अंग कड़े हों, नज़र ऊपर को हो, स्वर क्षीण न हो और शरीर काँपता न हो, तो समझना होगा, कि पुरुष-सर्प ने काटा है।

नोट—इस तरह की पहचान वही कर सकता है, जिसे समस्त लक्षण कण्ठाग्र हों। वैद्य को ये सब बातें हर समय कंठ में रखनी चाहियें। समय पर पुस्तक काम नहीं देती। हमने सब तरह के साँपोंके काटेके लक्षण आदि, आगे, जंगम-विष-चिकित्सा में खूब-समझा समझा कर लिखे हैं।

(७) आगे लिखा है, कि साँप के चार बड़े दाँत होते हैं। दो दाँत दाहिनी ओर और दो बाईं ओर होते हैं। दाहिनी तरफ के नीचे के दाँतका रंग लाल और ऊपर के दाँत का काला सा होता है। जिस रंग के दाँत से साँप काटता है, काटी हुई जगह का रंग वैसा ही होता है। दाहिनी तरफ के दाँतों में बाईं तरफ के दाँतों से विष ज़ियादा होता है। बाईं तरफ के दाँतों का रंग चरक ने लिखा नहीं है। बाईं तरफ के नीचेके दाँत में जितना विष होता है, उस से बाईं तरफ के ऊपर के दाँत में दूना विष होता है, दाहिनी तरफ के नीचे के दाँत में तिगुना और उसी ओर के ऊपर के दाँत में चौगुना विष होता है। दाहिनी ओर के नीचे-ऊपर के दाँतों में, बाईं तरफ के दाँतों से विष अधिक होता है। दाहिनी ओर के दोनों दाँतों में भी, ऊपर के दाँत में बहुत ही ज़ियादा विष होता है और उस दाँत का रंग भी श्याव या काला सा होता है। अगर हम काटे हुए स्थान पर, साँप के ऊपर के दाहिने दाँत का चिह्न और रंग देखें, तो समझ जायेंगे, कि विष बहुत तेज़ है। अगर दाहिनी ओर के लाल दाँत का रंग और चिह्न देखेंगे, तो विष को उस से कुछ कम समझेंगे। अगर चारों दाँत पूरे बैठे हुए देखेंगे, तो भयानक दंश समझेंगे।

अगर काटा हुआ निशान ऊपर से खूब साफ न हो, पर भीतर से गहरा हो, गोल हो या लम्बा हो अथवा काटने से बैठ गया हो अथवा

एक जगह से फूट कर दूसरी जगह भी जा फूटा हो, तो समझना होगा, यह दंश—काटना सांघातिक या प्राणनाशक है।

इस तरह काटे हुए स्थान की रंगत और आकार-प्रकार आदि से वैद्य विष की तेज़ी-मन्दी और साध्यासाध्यता तथा काटने वाले सर्प की क़िस्म या ज़ात जान सकता है। जो वैद्य ऐसी-ऐसी बातों में निपुण होता है, वही विष-चिकित्सासे यश और धन कमा सकता है।

(८) विष की हालत में, अगर हृदय में पीड़ा और जलन हो और मुँह से पानी गिरता हो, तो अवस्थानुसार तीव्र वमन या विरेचन—क़य या दस्त करानेवाली तेज़ दवा देनी चाहिये। वमन-विरेचन से शरीर को साफ कर के, पेया आदि पथ्य पदार्थ पिलाने चाहियें।

अगर विष सिर में पहुँच गया हो, तो बन्धुजीव—गेजुनिया के फूल, भारंगी और काली तुलसी की जड़ की नस्य देनी चाहिये।

अगर विष का प्रभाव नेत्रों में हो; तो पीपल, मिर्च, जवाखार, बच, सेंधा नमक और सहँजने के बीजों को रोहू मछली के पित्ते में पीस कर आँखों में अञ्जन लगाना चाहिये।

अगर विष कंठगत हो, तो कच्चे कैथ का गूदा चीनी और शहद के साथ चटाना चाहिये।

अगर विष आमाशयगत हो, तो तगर का चार तोले चूर्ण—मिश्री और शहद के साथ पीना चाहिये।

अगर विष पक्वाशय में हो, तो पीपर, हल्दी, दारुहल्दी और मंजीठ को बराबर-बराबर लेकर, गायके पित्ते में पीस कर, पीना चाहिये।

अगर विष रसगत हो, तो गोह का खून और मांस सुखा कर और पीस कर, कच्चे कैथ के रस के साथ पीना चाहिये।

अगर विष रक्तगत हो यानी खून में हो, तो लिहसौड़े की जड़ की छाल, बेर, गूलर और अपराजिता की शाखों के अगले भाग—इन को पानी के साथ पीस कर पीना चाहिये।

अगर विष मांसगत हो—मांस में हो, तो शहद और खदिरारिष्ट मिलाकर पीने चाहियें।

अगर विष सर्वधातुगत हो—सब धातुओं में हो, तो खिरेंटी नागवला, महुआ के फूल, मुलहटी और तगर,—इन सब को जल में पीसकर पीना चाहिये।

अगर विष के कारण से सारे शरीरमें सूजन हो; तो जटामासी, केशर, तेजपात, दालचीनी, हल्दी, तगर, लालचन्दन, मैनसिल, व्याघ्रनख और तुलसी—इनको पानी के साथ पीस कर पीने, इन्हीं का लेप और अञ्जन करने तथा इन्हीं की नस्य देने से सूजन और विष नष्ट हो जाते हैं।

(९) घोर अँधेरे में चींटी आदि के काटने से भी, मनुष्यों को साँप के काटने का वहम हो जाता है। इस वहम या आशंका से ज्वर, वमन, मूर्च्छा, ग्लानि, जलन, मोह और अतिसार तक हो जाते हैं। ऐसे मौक़े पर, रोगी को धीरज देकर उसका झूठा भय दूर करना चाहिये। खाँड, हिंगोट, दाख, क्षीरकाकोली, मुलहटी और शहद का पना बना कर पिलाना चाहिये। इसके साथ ही मंत्र-तंत्र, दिलासा और दिल खुश करने वाली बातों से भी काम लेना चाहिये।

(१०) सब तरह के विषों में, खाने के लिये शालि चाँवल, मुलहटी, कोदों, प्रियंगू, सेंधानोन, चौलाई, जीवन्ती, बैंगन, चौपतिया, परवल, अमलताश के पत्ते, मटर और मूँग का यूष, अनार, आमले, हिरन, लवा, तीतर का मांस और दाह न करने वाले पदार्थ देने चाहियें।

विष-पीड़ित और विषमुक्त प्राणी को विरुद्ध भोजन, भोजन-पर-भोजन, क्रोध, भूख का वेग मारना, भय, मिहनत, मैथुन और दिन में सोना—इन से बचाना चाहिये।

वेगानुसार चिकित्सा।

(१) पहले वेग में,—शीतल जल पिलाकर वमन या कय करानी चाहिये तथा शहद और घी के साथ अगद—विष नाशक दवा—पिलानी चाहिये ; क्योंकि पिया हुआ विष वमन कराने से तत्काल निकल जाता है।

(२) दूसरे वेग में,—पहले वेग की तरह वमन या कय कराकर, विरेचन या जुलाब भी दे सकते हैं।

नोट—चरक की राय में, पहले वेग में वमन करानी और दूसरे वेग में जुलाब देना चाहिये। सुश्रुत कहते हैं, पहले और दूसरे--दोनों वेगों में वमन कराकर, विष को निकाल देना चाहिये, क्योंकि वह इस समय तक आमाशय में ही रहता है। पर, अगर जरूरत समझी जाय, तो चिकित्सक इस वेगमें जुलाब भी दे सकता है। चरकका अभिप्राय यह है, कि विष सामन्यतया शरीर में फैला हो या न फैला हो, दूसरे वेग में जुलाब देकर उसे निकाल देना चाहिये। चरक मुनि इस मौके पर एक बहुत ही जरूरी बात की ओर ध्यान दिलाते हैं। वह कहते हैं:—

पीतं वमनैः सद्योहरेद्विरेकैर्द्वितीयेतु।
आदौ हृदयं रक्ष्यं तस्यावरणं पिबेद्यथालाभम्॥

पीया हुआ विष वमन से तत्काल निकल जाता है, अतः शुरू में किसी वमन-कारी दवा से कय करा देनी चाहिये। विष के दूसरे वेग या दौरे में, जुलाब देकर,

विष को निकाल देना चाहिये। लेकिन विष पीनेवाले प्राणी के हृदय की रक्षा सबसे पहले करनी चाहिये। उसके हृदय को विष से बचाना चाहिये, क्योंकि प्राण हृदय में ही रहते हैं। अगर तुम और उपायों में लगे रहोगे, हृदय-रक्षाकी बात भूल जाओगे, हृदय को विष से न छिपाओगे, तो तुम्हारा सब किया-कराया वृथा हो जायगा ; अतः सबसे पहले हृदयको विषसे छिपाओ,हृदयको विषसे छिपाने के लिये मांस, घी, मज्जा, गेरू, गोबर,ईखका रस, बकरी आदिक का खून, भस्म और मिट्टी—इनमें से जो उस समय मिल जाय, उसी को जहर पीनेवाले को फौरन खिला-पिला दो। इस का यह मतलब है, कि विष इन चीजोंमें लिपट जायगा और उस की कारस्तानी इन्हीं पर होती रहेगी, हृदय को नुकसान न पहुँचेगा। इतने में तो आप वमन कराकर विषको निकाल ही दोगे। अगर आप पहले ही इनमें से कोई चीज न पिलाओगे, तो हृदय पर ही विषका सीधा हमला होगा। यही वजह है, कि अनुभवी वैद्य संखिया या अफीम आदि खाने वाले को सबसे पहले 'घी' पिला देते और फिर वमन कराते हैं। घी पी लेने से हृदय की रक्षा हो जाती है। संखिया आदि विष, घी में मिल कर या लिपट कर, कय द्वारा बाहर आ पड़ते हैं।

(३)तीसरे वेग में,—अगद या विष नाशक दवा पिलानी चाहिये, नाक में नस्य देनी चाहिये और आँखों में विष-नाशक अञ्जन आँजना चाहिये।

(४) चौथे वेग में,—घी मिला कर अगद—विष नाशक दवा—पिलानी चाहिये।

नोट—चरक में लिखा है, चौथे वेग में कैथ का रस, शहद और घी के साथ गोबर का रस पिलाना चाहिये।

(५) पाँचवें वेग में,—शहद और मुलेठी के काढ़े में अगद—विष नाशक दवा—मिला कर पिलानी चाहिये।

(६) छठे वेग में,—दस्त बहुत होते हैं, इसलिये अगर विष बाकी हो,तो वैद्य को उसे निकाल देना चाहिये। अगर न हो, तो अतिसार का इलाज करके दस्तों को बन्द कर देना चाहिये। इसके सिवा, अवपीड़ नस्य को काम में लाना चाहिये ; क्योंकि नस्य देने से होश-हवास ठीक हो सकते हैं।

(७) सातवें वेग में,—कन्धे टूट जाते हैं, पीठ और कमर में वल नहीं रहता और श्वास रुक जाता है, यह अवस्था निराशाजनक है। अतः इस अवस्था में वैद्य को कोई उपाय न करना चाहिये, पर बहुत बार ऐसे भी बच जाते हैं। जब तक 'साँसा तब तक आसा,' इस कहावत के अनुसार अगर उपाय करना हो, तो रोगी के घरवालों से यह कह कर कि, अब आशा तो नहीं है, मामला असाध्य है, पर हम रामभरोसे उपाय करते हैं—वैद्य को अवपीड़ नस्य का प्रयोग करना चाहिये और सिर में कव्वे के पञ्जे का सा चिह्न बना कर, उस पर खूनसमेत ताज़ा माँस रखना चाहिये। इसी को "काक पद करना" कहते हैं। यह आख़िरी उपाय है। इस उपाय से रोगी जीता है या मर गया है, यह भी मालूम हो जाता है और अगर ज़िन्दगी होती है, तो साँस की रुकावट भी खुल जाती है। अगर इस उपाय से साँस आने लगे, तो फिर और उपाय करके रोगी को बचाना चाहिये। अगर "काक पद" से भी कुछ न हो, तो बस मामला ख़तम समझना चाहिये या ऐसी निराश अवस्था में, अगर रोगी जीवित हो, तो ज़हरीले साँप से कटाना चाहिये, क्योंकि "विषस्य विषमौषधम" कहावत के अनुसार, विष से विष के रोगी आराम हो जाते हैं। अगर साँपसे कटा न सको, तो साँप का ज़हर रोगी के शरीर की शिरा या नसमें पेवस्त करो; यानी शरीर में, किसी स्थान पर चीर कर, खून बहाने वाली नस पर साँप के ज़हर को लगा दो। वह विष खून में मिल कर, सारे शरीर में फैल जायगा और खाये-पीये हुए स्थावर विष के प्रभाव को नष्ट करके, रोगी को बचा देगा। इसी को "प्रतिविषचिकित्सा" कहते हैं। स्थावर विष जंगम विष के विपरीत गुणों वाला होता है और जंगम विष स्थावर के विपरीत होता है। स्थावर या मूलज विष ऊपर की ओर दौड़ता है और जंगम नीचे की तरफ दौड़ता है।

अमृताख्य घृत ।

ओंगे के बीज, सिरस के बीज, दोनों श्वेता और मकोय—इन पाँचों को गोमूत्र में पीस कर, लुगदी बनालो। लुगदी से चौगुना घी और घी से चौगुना दूध लेकर, घी की विधि से घी पकालो। इस घी के पीने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष शान्त होते हैं। सुश्रुत में लिखा है, इस घी के पीने से विष से मरे हुए भी जी जाते हैं। सुश्रुत में स्थावर-विष-चिकित्सा में भी इस के सेवन करने की राय दी है और जंगम-विष की चिकित्सा के अध्याय में तो यह लिखा ही है। इस से स्पष्ट मालूम होता है, कि यह घी स्थावर विष के सिवा, सर्प प्रभृति अनेक विषैले जानवरों के विष पर भी दिया जाता है।

नोट—दोनों श्वेताओं का अर्थ किसी टीकाकारने मेदा, महामेदा और किसी ने कटभी—महाकटभी लिखा है और श्वेता स्वयं भी एक दवा है।

महासुगन्धि अगद ।

सफेद चन्दन, लालचन्दन, अगर, कूट, तगर, तिलपर्णी, प्रपौंडरीक, नरसल, सरल, देवदारु, सफेद चन्दन, दूधी, भारंगी, नीली, सुगन्धिका—नाकुली, पीला चन्दन, पद्माख, मुलेठी, सोंठ, जटा—रुद्र-जटा, पुन्नाग, इलायची, एलवालुक, गेरू, ध्यामकतृण, खिरेंटी, नेत्रवाला, राल, जटामांसी, मल्लिका, हरेणुका, तालीसपत्र, छोटी इलायची, प्रियंगु, श्योनाक, पत्थर का फूल, शिलारस, पत्रज, कालानुसारिवा—तगर का भेद, सोंठ, मिर्च, पीपर, कपूर, खँभारी, कुटकी, बाकुची, अतीस, कालाज़ीरा, इन्द्रायण, खस, वरण, मोथा, नख, धनिया, दोनों श्वेता, हल्दी, दारुहल्दी, थुनेरा, लाख, सेंधानोन, संचर नोन, बिड़ नोन, समन्दर नोन और कचिया नोन, कमोदिनी, कमलपद्म, आक के फूल, चम्पा के फूल, अशोक के फूल, तिल-वृक्ष का पञ्चाङ्ग, पाटल, सम्भल,

लिहसौड़ा, सिरस, तुलसी, केतकी और सिंभालू—इन सातों के फूल, धव के फूल, महासर्ज के फूल, तिनिश के फूल, गूगल, केशर, कँदूरी, सर्पाक्षी और गन्धनाकुली—इन ८५ दवाओं को महीन कूट-पीस कर छान लो। फिर गोरोचन, शहद और घी मिला कर, सींग में भर कर, सींग से ही बन्द करके रख दो।

जिस मनुष्य के कन्धे टूट गये हों, नेत्र फट गये हों, मृत्यु-मुख में पतित हो गया हो, उस को भी वैद्य इस श्रेष्ठ अगद से जिला सकता है। यह अगद सब अगदों का राजा है और राजाओं के हाथों में रहने योग्य है। इस के शरीर में लेपन करने से राजा सब मनुष्यों का प्यारा हो सकता है और इन्द्रादि देवताओं के बीच में भी कान्तिमान मालूम हो सकता है। और तो क्या, अग्नि के समान दुर्निवार्य, क्रोधयुक्त, अप्रमित तेजस्वी नागपति वासुकी के विष को भी यह अगद नष्ट कर सकता है।

रोग नाश—इस अगद से स्थावर और जंगम सब तरहके विष नाश होते हैं।

सेवन विधि—घी, शहद या दूध वगैरः में मिलाकर इसे रोगी को पिलाना चाहिये। इस को लेप, अञ्जन और नस्य के काममें भी लाते हैं।

अपथ्य—राब, सोहँजना, काँजी, अजीर्ण, नया धान, भोजन पर-भोजन, दिन में सोना, मैथुन, परिश्रम, कुलथी, क्रोध, धूम, मदिरा और तिल—इन सब को त्यागना चाहिये।

पथ्य—चिकित्सा होते समय, पृष्ठ ३२में लिखी "विषघ्न यवागू" देनी चाहिये। आराम होने पर हितकारी अन्न-पान विचार कर देने चाहिये।

मृत सञ्जीवनी।

स्पृक्का—असवरग, केवटी मोथा, गठोना, फिटकरी, भूरिछरीला, पत्थर-फूल, गोरोचन, तगर, रोहिष तृण—रोहिसघास, केशर, जटामासी, तुलसी की मञ्जरी, बड़ी इलायची, हरताल, पँवार के बीज, बड़ी

कटेरी, सिरस के फूल, सरल का गोंद—गन्दाविरोज़ा, स्थल-कमल, इन्द्रायण, देवदारु, कमल-केशर, सादा लोध, मैनशिल, रेणुका, चमेली के फूलों का रस, आक के फूलों का रस, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, पीपर, लाख, नेत्रबाला, मूँगपर्णी, लाल चन्दन, मैनफल, मुलहटी, निगुण्डी-सम्हालू, अमलताश, लाल लोध, चिरचिरा, प्रियंगू, नाकुली—रास्ना और बायबिडङ्ग—इन ४३ दवाओं को, पुष्य नक्षत्र में लाकर, बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर पानी के साथ खरल कर के गोलियाँ बना लो।

रोग नाश—इस "मृतसञ्जीवनी" के पीने, लेप करने, तमाखू की तरह चिलम में रख कर पीने से सब तरह के विष नष्ट होते हैं। यह विष से मरे हुए के लिये भी जिलाने वाली है। इसके घर में रहने से ही विषैले जीव और भूत-प्रेत, जादू-टोना आदि का भय नहीं रहता और लक्ष्मी आती है। ब्रह्मा ने अमृत-रचना के पहले इसे बनाया था।

नोट—यह मृतसंजीवनी चरक में लिखी है और चक्रदत्त में भी लिखी है। पर चक्रदत्त और चरक में दो चार चीजों का भेद है। इसकी सभी ने बड़ी प्रशंसा की है। इसमें ऐसी कोई दवा नहीं है, जो न मिल सके; अतः वैद्यों को इसे घरमें रखना चाहिये। यह मृतसञ्जीवनी विष की सामान्य चिकित्सा में काम आती है; यानी स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष इससे नष्ट होते हैं। गृहस्थ लोग भी इसे काम में ला सकते हैं।

विषघ्न यवागू ।

जंगली कड़वी तोरई, अजमोद, पाठा, सूर्यवल्ली, गिलोय, हरड़, सिरस, कटभी, लिहसौड़े, श्वेतकन्द, हल्दी, दारुहल्दी, सफेद और लाल पुनर्नवा, हरेणु, सोंठ, मिर्च, पीपर, काला और सफेद सारिवा तथा खिरैंटी—इन २१ दवाओं को लाकर काढ़ा बना लो। फिर इस काढ़े के साथ यवागू पका लो। इस यवागू के पीने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष नाश होते हैं।

पीछे लिखे हुए स्थावर विष के वेगों के बीच में, वेगों का इलाज

करके, घी और शहद के साथ, यह यवागू शीतल करके पिलानी चाहिये। इसी तरह सर्प-विष के वेगों की चिकित्सा के बीच में भी, यही यवागू पिलायी जा सकती है। इस यवागू में शोधन, शमन और विषनाशक चीज़ें हैं।

अजेय घृत।

मुलेठी, तगर, कूट, भद्र दारु, पुन्नाग, एलवालुक, नागकेशर, कमल, मिश्री, वायविडङ्ग, चन्दन, तेजपात, प्रियंगू, ध्यामक, हल्दी, दारुहल्दी, छोटी कटेली, बड़ी कटेरी, काला सारिवा, सफेद सारिवा, शालपर्णी और पृश्नपर्णी—इन सब को सिल पर पीस कर लुगदी या कल्क बनालो। जितना कल्क हो, उससे चौगुना घी लो और घी से चौगुना गाय का दूध लो। पीछे लुगदी, घी और दूध को मिला कर मन्दाग्नि से पकाओ; जब घी मात्र रह जाय, उतार लो और छान कर रख दो।

इस अजेय घृत से सब तरह के विष नष्ट होते हैं। स्थावर विष खाने वालों को इसे अवश्य सेवन करना चाहिये।

महागन्ध हस्ती अगद।

तेजपात, अगर, मोथा, बड़ी इलायची, राल, गूगल, अफीम, शिला-रस, लोबान, चन्दन, स्पृक्का, दालचीनी, जटामसी, नरसल, नीलाकमल, सुगन्धवाला, रेणुक, खस, व्याघ्र-नख, देवदारु, नागकेशर, केशर, गन्ध-तृण, कूट, फूल प्रियंगू, तगर, सिरस का पञ्चाङ्ग, सोंठ, पीपर, मिर्च, हरताल, मैनशिल, काला ज़ीरा, सफेद कोयल, कटभी, करंज, सरसों, सम्हालू, हलदी, तुलसी, रसौत, गेरू, मँजीठ, नीम के पत्ते, नीम का गोंद, बाँस की छाल, असगन्ध, हींग, कैथ, अम्लवेत, अमलताश, मुल-हटी, महुआ के फूल, बावची, बच, मूर्वा, गोरोचन और तगर—इन सब दवाओं को महीन पीस, गाय के पित्ते में मिला, पुष्य नक्षत्र में, गोलियाँ बनानी चाहियें।

रोगनाश—इस दवा को पीने, आँजने और लेप की तरह लगाने से सब तरह के साँपों के विष, चूहों के विष, मकड़ियों के विष और मूल-

ज-काल्हज आदि स्थावर विष आराम होते हैं। इस दवा को सारे शरीर में लगा कर, मनुष्य साँप को पकड़ ले सकता है। जिसका काल आ गया है, वह विष खानेवाला मनुष्य भी इसके प्रभाव से बच सकता है। अगर विष-रोगी बेहोश हो, तो इस दवा को भेरी मृदङ्ग आदि बाजों पर लेप करके, उसके कानों के पास उन बाजों को बजाओ। अगर रोगी देखता हो, तो छत्र और ध्वजा-पताकाओं पर इसको लगा कर रोगी को दिखाओ। इस तरह करने से हर तरह का भयानक-से-भयानक विष वाला रोगी आराम हो सकता है। यह दवा आनाह—पेट-फूलने के रोग में मलद्वार—गुदा में, मूढ़ गर्भवाली स्त्री की योनि में और मूर्च्छावाले के ललाट पर लेप करनी चाहिये। इन रोगों के सिवा, इस दवा से विषमज्वर, अजीर्ण, हैज़ा, सफेद कोढ़, विशूचिका, दाद, खाज, रतौंधी, तिमिर, काँच, अर्बुद और पटल आदि अनेकों रोग नष्ट होते हैं। जहाँ यह दवा रहती है, वहाँ लक्ष्मी अचला होकर निवास करती है; पर पथ्य पालन ज़रूरी है। चरक।

क्षारागद ।

गेरू, हल्दी, दारुहल्दी, मुलेठी, सफेद तुलसी की मञ्जरी, लाख, सेंधानोन, जटामासी, रेणुक, हींग, अनन्तमूल, सारिवा, कूट, सोंठ, मिर्च, पीपर और हींग—इन सब को बराबर-बराबर लेकर पीस लो। फिर इनके वज़न से चौगुना तरुण पलाशके वृक्ष के खार का पानी लो। सबको मिला कर, मन्दाग्नि से पकाओ; जब तक सब चीज़ें आपस में लिपट न जायें, पकाते रहो। जब गोली बनाने योग्य पाक हो जाय, एक-एक तोले की गोलियाँ बना लो और छाया में सुखा लो।

रोग नाश—इन गोलियों के सेवन करने से सब तरह के—स्थावर और जंगम—विष, सूजन, गोला, चमड़े के दोष, बवासीर, भगन्दर, तिल्ली, शोष, मृगी, कृमि, भूत, स्वरभंग, खुजली, पाण्डु रोग, मन्दाग्नि, खाँसी और उन्माद—ये नष्ट होते हैं।

नोट—(१) यह क्षारागद चरक की है। चरक ने विष के तीसरे वेग में

इसको देने की राय दी है और इसे सामान्य विष-चिकित्सा में लिखा है, अतः यह स्थावर और जंगम दोनों तरह के विषोंपर दी जा सकती है।

नोट—(२) तरुण पलाश या नवीन ढाक के खार को चौगुने या छः गुने जल में घोलो और २१ बार छानो। फिर इसमें से, दवाओं से चौगुना, जल ले लो और दवाओं में मिलाकर पकाओ। खार बनाने की विधि हमने इसी भाग में आगे लिखी है। फिर भी संक्षेप से यहाँ लिख देते हैं:— जिसका क्षार बनाना हो, उसे जड़ से उखाड़ कर छाया में सुखालो। फिर उसको जलाकर भस्म कर लो। भस्मको एक बासन में दूना पानी डालकर ६ घण्टे तक भीगने दो। फिर उसमेंके पानी को धीरे-धीरे दूसरे बासन में नितार और छान लो; राख को फेंक दो। एक घण्टे बाद, इस साफ पानी को कड़ाही में नितार कर, चूल्हे पर चढ़ा दो और मन्दी आग लगने दो। जब सब पानी जल जाय, बूँद भी न रहे, कड़ाही को उतार लो। कड़ाही में लगा हुआ पदार्थ ही खार या क्षार है। इसे खुरच कर रख लो।

संक्षिप्त स्थावर-विष-चिकित्सा।

(१) स्थावर विष से रोगी हुए आदमी को, "बलपूर्व्वक" वमन करानी चाहिये ; क्योंकि उसके लिये वमन के समान कोई और दवाई नहीं है। वमन कराना ही उसका सब से अच्छा इलाज है।

नोट—चूँकि विष अत्यन्त गरम और तीक्ष्ण है ; इसलिये सब तरहके विषों में शीतल-सेचन करना चाहिये। विष अपनी उष्णता और तीक्ष्णता—गरमी और तेज़ी—के कारण, विशेषकर, पित्त को कुपित करता है ; अतः वमन कराने के बाद शीतल जल से सेचन करना चाहिये।

(२) विष-नाशक दवाओं अथवा अगदों को घी और शहद के साथ, तत्काल, पिलाना चाहिये।

(३) विष वाले को खट्टे रस खाने को देने चाहियें। शरीर में गोल मिर्च पीस कर मलनी चाहिये। भोजन-योग्य होने पर, लाल शालि चाँवल, साँठी चाँवल, कोदों और काँगनी—पका कर देनी चाहियें।

(४) जिन-जिन दोषों के चिह्न या लक्षण अधिक नज़र आवें, उन-

उन दोषों के गुणों से विपरीत गुणवाली दवायें देकर, स्थावर विषका इलाज करना चाहिये।

(५) सिरस की छाल, जड़, पत्ते, मूल और बीज, इन पाँचों को गोमूत्र में पीस कर, शरीर पर लेप करने से विष नष्ट हो जाता है।

(६) खस, बालछड़, लोध, इलायची, सज्जी, कालीमिर्च, सुगन्धबाला, छोटी इलायची और पीला गेरु—इन नौ दवाओं के काढ़े में शहद मिला कर पीने से दूषी विष नष्ट हो जाता है।

नोट—दूषी विष वाले रोगी को स्निग्ध करके और वमन-विरेचन से शोधन करके, ऊपर का काढ़ा पिलाना चाहिये।

सर्व विष-नाशक नुसखे।

(१) गरम जलसे वमन कराने और बारम्बार घी और दूध पिलाने से ज़हर उतर जाता है।

(२) हरी चौलाई की जड़ १ तोले लेकर और पानी में पीसकर; गाय के घी के साथ खाने से गरम ज़हर उतर जाता है।

नोट—अगर चौलाई की जड़ सूखी हो, तो ६ माशे लेनी चाहिये।

(३) गाय का घी चालीस माशे और लाहौरी नमक ८ माशे —इनको मिला कर पिलाने से सब तरह के ज़हर उतर जाते हैं। यहाँ तक, कि साँप का विष भी शान्त हो जाता है।

(४) छोटी कटाई पीस कर खाने से ज़हर उतर जाता है।

(५) एक माशे दरियाई नारियल पीस कर खिलाने से सब तरह के ज़हर उतर जाते हैं।

(६) बिनौलों की गिरी को कूट-पीस कर और गाय के दूध में औटा कर पिलाने से अनेक प्रकार के ज़हर उतर जाते हैं।

(७) कसेरू खाने से ज़हर उतर जाते हैं।

(८) अजवायन खाने से अनेक प्रकारके ज़हर उतर जाते हैं।

(९) बकरी की मैंगनी जलाकर खाने और लेप करने से अनेक प्रकार के विष नष्ट हो जाते हैं।

(१०) मुर्ग़ की बीट पानी में मिलाकर पिलाते ही, कय होकर, विष निकल जाता है।

(११) काली मिर्च, नीम के पत्ते और सेंधानोन तथा शहद और घी—इन सबको मिलाकर पीने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष शान्त हो जाते हैं।

(१२) शुद्ध वच्छनाभ विष, सुहागा, काली मिर्च और शुद्ध नीला थोथा—इन चारों को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर खरल में डाल, ऊपर से "बन्दाल" का रस दे दे कर घोटो। जब घुट जाय, चार-चार माशे की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को मनुष्य के मूत्र या गोमूत्र के साथ सेवन करने से कन्दादि के विष की पीड़ा तथा और ज़हरों की पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, घोर ज़हरी काले साँप का ज़हर भी इन गोलियों के सेवन करने से उतर जाता है। यह नुसख़ा साँप के ज़हर पर परीक्षित है।

नोट—विष खाये हुए रोगीको शीतल स्थानमें रखने, शीतल सेक और शीतल उपचार करनेसे विष-वेग निश्चय ही शान्त हो जाते हैं। कहा है:—

शीतोपचारा वा सेकाः शीताः शीतस्थलस्थितिः।
विषार्त्त विषवेगानां शान्त्यै स्युरमृतं यथा॥

(१३) कड़वे परवल घिस कर पिलाने से कय होती हैं और विष निकल जाता है।

(१४) कड़वी तूम्बी के पत्ते या जड़ पानी में पीस कर पिलाने से वमन होकर विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१५) कड़वी घिया तोरई की बेल की जड़ अथवा पत्तों का काढ़ा "शहद" मिला कर पिलाने से समस्त विष नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१६) कड़वी तोरई के काढ़े में घी डाल कर पीने से वमन होती और विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१७) करौंदे के पत्ते पानी में पीस कर पिलाने से ज़हर खानेवाले को क़य होती है, पर जिसने ज़हर नहीं खाया होता है, केवल शक होता है, उसे क़य नहीं होतीं।

(१८) सत्यानाशी की जड़ की छाल खाने से साधारण विष उतर जाता है।

(१९) नीम की निबौलियों को गरम जल के साथ पीस कर पीने से संखिया आदि स्थावर विष शान्त हो जाते हैं।

चौथा अध्याय

विष और उपविषों की विशेष चिकित्सा।

जिस तरह अनेक प्रकार के विष होते हैं, उसी तरह मुख्यतया सात प्रकार के उपविष माने गये हैं।

कहा है—

> अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरंलांगली करवीरकः।
> गुञ्जाहिफेनी धत्तूरः ससोपविष जातयः॥

आक का दूध, थूहर का दूध, कलिहारी, कनेर, चिरमिटी, अफीम और धतूरा ये सात उपविष हैं।

ये सातों उपविष बड़े काम की चीज़ हैं और अनेक रोगों को नाश करते हैं ; पर अगर ये बेक़ायदे सेवन किये जाते है, तो मनुष्य को मार देते हैं।

नीचे, हम वत्सनाभ विष प्रभृति विष और उपरोक्त उपविषों तथा अन्य विष माने जाने योग्य पदार्थों का वर्णन, उनकी शान्ति के उपायों-सहित, अलग-अलग लिखते हैं। हम इन विष-उपविषों के चन्द प्रयोग या नुसखे भी साथ-साथ लिखते हैं, जिससे पाठकों को डबल लाभ हो। आशा है, पाठक इनसे अवश्य काम लेंगे और विष-पीड़ित प्राणियों की प्राणरक्षा करके यश, कीर्त्ति और पुण्य के भागी होंगे।

वत्सनाभ विषका वर्णन और उसकी शान्ति के उपाय ।

आजकल सुश्रुतके १३ या भावप्रकाशके ६ कन्द-विषोंमें से वत्सनाभ विष और शृंगी विष का उपयोग ज़ियादा होता है। ये दोनों विष अलग-अलग होते हैं, पर आजकल के पसारी दोनों को एक ही समझते हैं। सींग के आकार की जड़, जो रंग में काली और तोड़ने में कुछ चमकदार होती है, उसे ही दोनों नामों से दे देते हैं। इन को मीठा विष या तेलिया भी कहते हैं।

"भावप्रकाश" में लिखा है, बच्छनाभ विष सम्हालूके से पत्तों वाला और बछड़े की नाभि के समान आकार वाला होता है। इस के वृक्ष के पास और वृक्ष नहीं रह सकते।

"सुश्रुत" में लिखा है, वत्सनाभ विष से ग्रीवा-स्तम्भ होता है तथा मल मूत्र और नेत्र पीले हो जाते हैं। सींगिया विष से शरीर शिथिल हो जाता, जलन होती और पेट फूल जाता है।

बच्छनाभ विष अगर बेक़ायदे या ज़ियादा खाया जाता है, तो सिर घूमने लगता है, चक्कर आते हैं, शरीर सूना हो जाता और सूखने लगता है। अगर विष बहुत ही ज़ियादा खाया जाता है, तो हलक़ में सूनापन, झनझनाहट और रुकावट होती तथा कय और दस्त भी होते हैं। इसका जल्दी ही ठीक इलाज न होने से खानेवाला मर भी जाता है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, बीश—वत्सनाभ विष एक विषैली जड़ है। यह बड़ी तेज़ और मृत्युकारक है। इसके अधिक या अयोग्य रीति से खाने से होठ और जीभ में सूजन, श्वास, मूर्च्छा, घुमरी और मिर्गी रोग तथा बलहानि होती है। इस से मरनेवाले मनुष्य के फेंफड़ों में घाव और विषमज्वर होते हैं।

"वैद्यकल्पतरु" में एक सज्जन लिखते हैं—वच्छनाग को अँगरेज़ी में "एकोनाइट" कहते हैं। इसके खानेसे—होठ, जीभ और मुँह में झन-झनाहट और जलन, मुँह से पानी छूटना और कय होना, शरीर काँपना, नेत्रों के सामने अँधेरा आना, कानों में ज़ोर से सनसनाहट की आवाज़ होना, छूने से मालूम न पड़ना, बेहोश होना, साँस का धीरा पड़ना, नाड़ी का कमज़ोर और छोटी होना, साँस द्वारा निकली हवा का शीतल होना, हाथ पैर ठण्डे हो जाना और अन्त में खिंचाव के साथ मृत्यु हो जाना,—ये लक्षण होते हैं।

शान्ति के उपायः—

(१) कय कराने का उपाय करो।

(२) आध-आध घन्टे में तेज़ काफी पिलाओ।

(३) गुदाकी राह से, पिचकारी द्वारा, साबुन-मिला पानी भरकर आँतें साफ करो।

(४) घी पिलाओ।

यद्यपि विष प्राणनाशक होते हैं, पर वे ही अगर युक्तिपूर्व्वक सेवन किये जाते हैं, तो मनुष्य का बल-पुरुषार्थ बढ़ाते, त्रिदोष नाश करते और साँप वगेरः उग्र विषवाले जीवों के काटने से मरते हुओं की प्राण-रक्षा करते हैं; पर विषों को शोध कर दवा के काम में लेना चाहिये, क्योंकि अशुद्ध विष में जो दुर्गुण होते हैं, वे शोधने से हीन हो जाते हैं।

विष-शोधन-विधि।

विष के छोटे-छोटे टुकड़े करके, तीन दिन तक, गोमूत्र में भिगो रखो। फिर उन्हें साफ़ पानी से धो लो। इस के बाद, लाल सरसों के तेल में भिगोये हुए कपड़े में उन्हें बाँध कर रख दो। यह विधि "भावप्रकाश" में लिखी है।

अथवा

विष के टुकड़े करके, उन्हें तीन दिन तक गोमूत्र में भिगो रखो।

फिर उन्हें साफ पानी से धोकर, एक महीन कपड़े में बाँध लो। फिर एक हाँडी में बकरी का मूत्र या गायका दूध भरदो। हाँडी पर एक आड़ी लकड़ी रख कर, उसी में उस पोटली को लटका दो। पोटली दूध या मूत्र में डूबी रहे। फिर हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा दो और मन्दाग्नि से तीन घण्टे तक पकाओ। पीछे विषको निकाल कर धो लो और सुखाकर रख दो। आजकल इसी विधि से विष शोधा जाता है।

नोट—अगर विष को गाय के दूध में पकाओ, तो जब दूध गाढ़ा हो जाय या फट जाय, विष को निकाल लो और उसे शुद्ध समझो।

मात्रा।

चार जौ भर विष की मात्रा हीन मात्रा है; छै जौ भरकी मध्यम और आठ जौ भरकी उत्कृष्ट मात्रा है। महाघोर व्याधि में उत्कृष्ट मात्रा, मध्यम में मध्यम और हीन में हीन मात्रा दो। उग्र कीट-विष निवारणको दो जौ भर और मन्द विष या बिच्छू के काटने पर एक तिल भर विष काम में लाओ।

विष पर विष क्यों ?

जब तंत्र मंत्र और दवा किसी से भी विष न शान्त हो, तब पाँचवें वेग के पीछे और सातवें वेग के पहले, ईश्वर से निवेदन करके, और किसी से भी न कह कर, घोर विपद् के समय, विष की उचित मात्रा रोगी को सेवन कराओ।

स्थावर विष प्रायः कफके तुल्य गुणवाले होते हैं और ऊपर की ओर जाते हैं; यानी आमाशय वगैरः से खून वगैरः की तरफ जाते हैं और जंगम विष प्रायः पित्त के गुणवाले होते हैं और खून में मिल कर भीतर की तरफ जाते हैं। इस तरह एक विष दूसरे के विपरीत गुण वाला होता है और एक दूसरे को नाश करता है; इसी से साँप आदि के काटने पर जब भयंकर अवस्था हो जाती है, कोई उपाय काम नहीं देता, तब बच्छनाभ या सींगिया विष खिलाते, पिलाते और लगाते हैं।

इसी तरह जब कोई स्थावर विष—बच्छनाभ, अफीम आदि—खा लेता है और किसी उपाय से भी आराम नहीं होता, रोगी अब-तब की हालत में हो जाता है, तब साँप से उसे कटवाते हैं; क्योंकि विष की अत्यन्त असाध्य अवस्था में एक विषको दूसरा प्रतिविष ही नष्ट कर सकता है। कहते भी हैं,—"विषस्य विषमौषधम" अर्थात् विष की दवा विष है।

अनुपान।

तेज़ विष खिला-पिलाकर रोगी को निरन्तर "घी" पिलाना चाहिये। भारङ्गी, दही के मंड से निकाला हुआ मक्खन, सारिवा और चौलाई,—ये सब भी खिलाने चाहियें।

नित्य विष-सेवन-विधि।

घी से स्निग्ध शरीर वाले आदमी को, वमन-विरेचन आदि से शुद्ध करके, रसायन के गुणों की इच्छा से, नित्य, बहुत ही थोड़ी मात्रा में, शुद्ध विष सेवन करा सकते हैं। विष सेवन करनेवाले सात्विक मनुष्य को, शीतकाल और वसन्त ऋतु में, सूर्योदय के समय, विष उचित मात्रा में सेवन कराना चाहिए। अगर बीमारी बहुत भारी हो,तो गरमीके मौसममें भी विष सेवन करा सकते हैं; पर वर्षाकाल या बदली वाले दिनों में तो, किसी हालत में भी, विष सेवन नहीं करा सकते।

विष सेवन के अयोग्य मनुष्य।

नीचे लिखे हुए मनुष्यों को विष न सेवन कराना चाहियेः—

(१) क्रोधी, (२) पित्त दोष का रोगी, (३) जन्म का नामर्द, (४) राजा, (५) ब्राह्मण, (६) भूखा, (७) प्यासा, (८) परिश्रम या राह चलने से थका हुआ, (९) गरमी से पीड़ित, (१०) संकर रोगी, (११) गर्भवती, (१२) बालक, (१३) बूढ़ा, (१४) रूखी देह वाला, और (१५) मर्मस्थान का रोगी।

नोट—मर्मस्थान के रोग में विष न सेवन कराना चाहिये और मर्मस्थानों के ऊपर इसका लेपन आदि भी न करना चाहिये।

विष सेवन पर अपथ्य।

यदि विष खानेका अभ्यास भी हो जाय, तोभी लालमिर्च आदि चरपरे पदार्थ, खट्टे पदार्थ, तेल, नमक, दिन में सोना, धूप में फिरना और आग तापना या आगके सामने बैठना—इन से विष सेवन करने वाले को अलग रहना चाहिये। इन के सिवा, रूखा भोजन और अजीर्ण भी हानिकारक है ; अतः इन से भी बचना उचित है ; क्योंकि जो मनुष्य विष सेवन करता है, पर रूखा भोजन करता है, उस की दृष्टि में भ्रम, कान में दर्द और वायु के दूसरे आक्षेपक आदि रोग हो जाते हैं। इसी तरह विष सेवन पर अजीर्ण होने से मृत्यु हो जाती है।

कुछ रोगों पर विष का उपयोग।

नीचे हम वृद्धवाग्भट्ट आदि ग्रन्थों से ऐसे नुसख़े लिखते हैं, जिन में विष मिलाया जाता है और विष की वजह से उन की शक्ति बहुत ज़ियादा बढ़ जाती है:—

(१) दन्ती, निसोथ, त्रिफला, घी, शहद और शुद्ध वत्सनाभ विष—इन के संयोग से बनाई हुई गोलियाँ जीर्ण-ज्वर, प्रमेह और चर्म-रोगों को नाश करती हैं।

(२) शुद्ध विष, मुलेठी, रास्ना, खस और कमलका कन्द—इनको मिलाकर, चाँवलों के जल के साथ पीने से रक्तपित्त नाश होता है।

(३) शुद्ध सींगिया विष, रसौत, भारङ्गी, वृश्चिकाली और शालि-पर्णी—इन्हें पीसकर, उस दुष्ट व्रण या सड़े हुए घाव पर लगाओ, जिस में बड़ा भारी दर्द हो और जो पकता हो।

(४) मिश्री, शुद्ध सींगिया विष तथा बड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपर—इन दूध वाले वृक्षोंकी कोंपल—इन सबको पीस कर और शहद में मिलाकर चाटने से श्वास और हिचकी रोग नष्ट हो जाते हैं।

(५) शहद, ख़स, मुलेठी, जवाखार, हल्दी और कुड़े की छाल—इन में शुद्ध सींगिया विष मिलाकर चाटने से वमन रोग शान्त हो जाता है।

(६) शुद्ध शिलाजीत में शुद्ध सींगिया विष मिलाकर, गोमूत्र के साथ, सेवन करने से पथरी और उदावर्त्त रोग नाश हो जाते हैं।

(७) बिजौरे नीबू का रस, बच, ब्राह्मीका रस, घी और शुद्ध सींगिया विष—इन सब को मिलाकर, अगर बाँझ स्त्री पीवे तो उसके बहुतसे पुत्र हों। कहा है—

स्वरसं वीजपूरस्य बचा ब्राह्मी रसं घृतं।
वन्ध्या पिबंती सविषं सुपुत्रैः परिवार्यते॥

(८) दाख, कौंच के बीजों की गिरी, बच और शुद्ध सींगिया विष—इन सब को मिलाकर सेवन करने से जिसका वीर्य नष्ट हो जाता है, उस के बहुतसा वीर्य पैदा हो जाता है।

(९) काकोदुम्बर या कठूमर की जड़ के काढ़े के साथ शुद्ध सींगिया विष सेवन करने से कोढ़ जाता रहता है।

(१०) पोहकरमूल, पीपर और शुद्ध सींगिया विष—इन तीनों को गोमूत्र के साथ पीने से शूल रोग नष्ट हो जाता है।

(११) त्रिफला, सज्जीखार और शुद्ध वत्सनाभ विष—इन को मिला कर यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से गुल्म या गोले का रोग नाश हो जाता है।

(१२) शुद्ध सींगिया विष को आमलों के स्वरस की सात भावनायें दो और सुखा लो। फिर उसे शंख के साथ घिस कर आँखों में आँजो। इस से नेत्रों का तिमिर रोग नाश हो जाता है।

(१३) शुद्ध सींगिया विष,हरड़,चीतेकी जड़की छाल,दन्ती,दाख और हल्दी,–इनको मिलाकर सेवन करनेसे मूत्रकृच्छ्र रोग नाश हो जाता है।

(१४) कड़वे तेल में शुद्ध वत्सनाभ विष घोल कर नस्य लेने से पलित रोग और अरुँषिका रोग नष्ट हो जाते हैं।

नोट—असमय में बाल सफेद होने को पलित रोग कहते हैं। कफ, रक्त और कृमि—इनके कोप से सिर में जो बहुत से मुँहवाले और क्लेदयुक्त व्रण हो जाते हैं, उनको अरुँषिका कहते हैं। नं० १४ नुसखे से असमय में बालों का सफेद होना और सिर के अरुँषिका नामक व्रण—ये दोनों रोग नष्ट हो जाते हैं।

(१५) सज्जीखार, सैंधानोन और शुद्ध सींगिया विष—इन्हें सिरके में मिलाकर, कानों में डालनेसे कान की घोर पीड़ा शान्त हो जाती है।

(१६) देवदारु, शुद्ध सींगिया या वत्सनाभ विष, गोमूत्र, घी और कटेहली—इनके पीने से बोलने में रुकना या हकलाना—आराम हो जाता है।

सूचना—पूरे अनुभवी वैद्यों के सिवा, मामूली आदमी ऊपर लिखे नुसखे न स्वयं सेवन करें और न किसी और को दें अथवा बतलावें। अनुभवी वैद्य भी खूब सोच-विचार कर, बहुत ही हल्की मात्रा में, देने योग्य रोगी को उस अवस्था में इन्हें दें, जबकि रोग एकदम से असाध्य हो गया हो और आराम होने की उम्मीद ज़रा भी न हो। विष सेवन कराने में इस बातका बहुत ही ध्यान रहना चाहिये, कि रोग और रोगी के बलाबल से अधिक मात्रा न दी जाय। ज़रा सी भी असावधानी से मौत का सामान हो जा सकता है। विष सेवन करना या कराना आग से खेलना है। अच्छे वैद्य, ऐसे विष-युक्त योगों को बिल्कुल नाउम्मेदी की हालत में देते हैं। साथ ही देश, काल, रोगी की प्रकृति, पथ्यापथ्य आदि का पूरा विचार करके तब देते हैं। वर्षाकाल या बदली के दिनों में भूलकर भी विष न देना चाहिये। मतलब यह है, विषों के देने में बड़ी भारी बुद्धिमानी, तर्क-वितर्क, युक्ति और चतुराई की ज़रूरत है। अगर खूब सोच-समझ कर, घोर असाध्य अवस्था में, विष दिये जाते हैं,तो अनेक बार मरते हुए रोगी भी बच जाते हैं। अतः इन को काम में लाना चाहिये; ख़ाली डर कर ही न रह जाना चाहिये।

(१७) बच्छनाभ विष को पानी के साथ घिसकर बर्र, ततैये, बिच्छू या मक्खी आदि के काटे स्थान पर लगाने से अवश्य लाभ होता है। यह दवा कभी फेल नहीं होती।

(१८) बच्छनाभ विष को पानी के साथ पीसकर पसली के दर्द, हाथ पैर आदि अंगों के दर्द या वायु की अन्य पीड़ाओं और सूजन पर लगाने से अवश्य आराम होता है।

(१९) शुद्ध कछनाग विष, सुहागा, काली मिर्च और शुद्ध नीला थोथा—इन चारों को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर

खरल में डाल, ऊपर से "वन्दाल" का रस दे दे कर खूब घोटो। जब घुट जाय, चार-चार माशे की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को मनुष्य के मूत्र या गोमूत्र के साथ सेवन करने से कन्दादिक विष की पीड़ा एवं और ज़हरों की पीड़ा शान्त हो जाती है। इतना ही नहीं, घोर ज़हरी काले साँप का ज़हर भी इन गोलियों के सेवन करने से उतर जाता है। यह नुसख़ा साँप के ज़हर पर परीक्षित है।

बच्छनाभ विष की शान्ति के उपाय।

आरम्भिक उपाय—

(क) विष खाते ही मालूम हो जाय, तो तत्काल वमन कराओ।

(ख) अगर ज़ियादा देर हो जाय, विष पक्वाशय में चला जाय; तो तेज़ जुलाब दो या साबुन और पानी की पिचकारी से गुदा का मल निकालो। अगर ज़हर खून में हो, तो फ़स्त खोलकर खून निकाल दो। मतलब यह है, वेगों के अनुसार चिकित्सा करो। अगर वैद्य न हो, तो नीचे लिखे हुए उपायों में से कोई सा करोः—

(१) सोंठ को चाहे जिस तरह खाने से बच्छनाभ विष के विकार नष्ट हो जाते हैं।

(२) घर का धूआँसा, मँजीठ और मुलेठी के चूर्ण को शहद और घी के साथ चाटने से विष के उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(३) अर्जुनवृक्ष की छाल का चूर्ण घी और शहद के साथ चाटने से विष के उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

(४) अगर बच्छनाभ विष खाये देर हो जाय, तो दूध के साथ दो माशे निर्विषी पिलाओ। साथ ही घी दूध आदि तर और चिकने पदार्थ भी पिलाओ।

नोट—अगर जहर का जोर कम हो, तो निर्विषी कम देनी चाहिये। अगर बहुत जोर हो, तो दो दो माशे निर्विषी दूधके साथ घण्टे-घण्टे या दो दो घण्टे पर, जैसा मौक़ा हो, विचार कर देनी चाहिए। निर्विषी में विष नाश करने की बड़ी

शक्ति है। अगर असल निर्विषी मिल जाय, तो हाथ में लेने से ही समस्त विष नष्ट हो जायँ; पर याद रखो, स्थावर विष की दवा वमन से बढ़कर और नहीं है। वमन कराने से ज़हर निकल जाता है और रोगी साफ बच जाता है; पर वमन उसी समय लाभदायक हो सकती है, जबकि विष आमाशय में हो।

(५) असली ज़हरमुहरा, पत्थर पर, गुलाबजल में घिस-घिस कर, एक-एक गेहूँ भर चटाओ। इस के चटाने से क़य होती हैं। क़य होते ही फिर चटाओ। इस तरह जब तक क़य होती रहें, इसे हर एक क़य के बाद गेहूँ गेहूँ भर चटाते रहो। जब पेट में ज़हर न रहेगा, तब इसके चटाने से क़य न होगी। बस, फिर मत चटाना। इसकी मात्रा दो रत्ती की है। पर एक बार में एक गेहूँ-भर से ज़ियादा मत चटाना। इसके असली-नक़ली होने की पहचान और इसके इस्तेमाल "बिच्छू-विष की चिकित्सा" में देखें। स्थावर और जंगम सब तरह के विषों पर "ज़हरमुहरा" चटाना और लगाना रामबाण दवा है।

(६) घी के साथ सुहागा पीस कर पिलाने से सब तरह के विष नष्ट हो जाते हैं। संखिया खाने पर तो यह नुसख़ा बड़ा ही काम देता है। असल में, सुहागा सब तरह के विषों को नाश कर देता है।

संखिया-विषका वर्णन और उसकी शान्ति के उपाय।

संखिया का ज़िक्र वैद्यक-ग्रन्थों में प्रायः नहीं के बराबर है। फिर भी, यह एक सुप्रसिद्ध विष है। बच्चा-बच्चा इसका नाम जानता है। यद्यपि संखिया सफ़ेद, लाल, पीला और काला चार रंगका होता है; पर सफ़ेद ही ज़ियादा मिलता है।

सफेद संखिया सुहागे से बिल्कुल मिल जाता है। नवीन संखिया में चमक होती है, पर पुराने में चमक नहीं रहती। इस में किसी तरह का ज़ायका नहीं होता, इसी से यूनानी हिकमत के ग्रन्थों में इस का स्वाद—बेस्वाद लिखा है। असल में, इस का ज़ायका फीका होता है; इसी से अगर यह दही, रायते प्रभृति खाने-पीने के पदार्थों में मिला दिया जाता है, तो खानेवाले को मालूम नहीं होता, वह बेखटके खा लेता है।

संखिया खानों में पाया जाता है। इसे संस्कृत में विष, फ़ारसी में मर्गमूरा, अरबी में सम्बुलफार और करूनुस्सम्बुल कहते हैं। इस की तासीर गरम और रूखी है। यह बहुत तेज़ ज़हर है। ज़रा भी ज़ियादा खाने से मनुष्य को मार डालता है। इस की मात्रा एक रत्ती का सौवाँ भाग है। बहुत से मूर्ख ताक़त बढ़ाने के लिये इसे खाते हैं। कितने ही ज़रा सी भी ज़ियादा मात्रा खा लेने से परमधाम को सिधार जाते हैं। बेक़ायदे थोड़ा-थोड़ा खाने से भी लोग श्वास, कमज़ोरी और क्षीणता आदि रोगों के शिकार होते हैं। इस के अनेक खाने वाले हमने ज़िन्दगीभर दुःख भोगते देखे हैं। अगर धन होता है, तो मन-माना घी दूध खाते और किसी तरह बचे रहते हैं। जिनके पास घी दूध को धन नहीं होता, वे कुत्ते की मौत मरते हैं। अतः यह ज़हर किसी को भी न खाना चाहिये।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है, संखिया दोषों को लय करता और सरदी के घावों को भरता है। इस को तेल में मिला कर मलने से गीली और सूखी खुजली तथा सरदी की सूजन आराम हो जाती है।

डाक्टर लोग इसे बहुत ही थोड़ी मात्रा में बड़ी युक्ति से देते हैं। कहते हैं, इस के सेवन करने से भूख बढ़ती और सरदी के रोग आराम हो जाते हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, संखिया खानेसे कुलंज, श्वासरोध—श्वास रुकना और ख़ुश्की ये रोग पैदा होते हैं।

संखिया ज़ियादा खा लेने से पेट में बड़े ज़ोर से दर्द उठता, जलन होती, जी मिचलाता और क़य होती हैं; गले में खुश्की होती और दस्त लग जाते हैं तथा प्यास बढ़ जाती है। शेष में, श्वास रुक जाता, शरीर शीतल हो जाता और रोगी मौत के मुँह में चला जाता है।

वैद्यकल्पतरु में एक सज्जन लिखते हैं—संखिया या सोमल को अंगरेज़ी में आरसेनिक कहते हैं। संखिया वज़न में थोड़ा होने पर भी बड़ा ज़हर चढ़ाता है। उस में कोई स्वाद नहीं होता, इस से बिना मालूम हुए खा लिया जाता है। अगर कोई इसे खा लेता है, तो यह पेट में जानेके बाद, घण्टे भर के अन्दर, पेट की नली में पीड़ा करता है। फिर उछाल और उल्टी या वमन होती हैं। शरीर ठण्डा हो जाता, पसीने आते और अवयव काँपते हैं। नाक का बाँसा और हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं। आँखों के आस-पास नीले रंग की चकई सी फिरती मालूम होती है। पेट में रह रह कर पीड़ा होती और उस के साथ खूब दस्त होते हैं। पेशाब थोड़ा और जलन के साथ होता है। पेशाब कभी-कभी बन्द भी हो जाता है और कभी-कभी उस में खून भी जाता है। आँखें लाल हो जाती हैं, जलन होती, सिर दुखता, छाती में धड़कन होती, साँस जल्दी-जल्दी और घुटता सा चलता है। भारी जलन होने से रोगी उछलता है। हाथ-पैर अकड़ जाते हैं। चेहरा सूख जाता है। नाड़ी बैठ जाती और रोगी मर जाता है। रोगी को मरने तक चेत रहता है, अचेत नहीं होता। कम-से कम २॥ ग्रेन संखिया मनुष्य को मार सकता है।

हैज़े के मौसम में, जिन की जिन से दुश्मनी होती है, अक्सर वे लोग अपने दुश्मनों को किसी चीज़ में संखिया दे देते हैं; क्योंकि हैज़े के रोगी और संखिया खाने वाले रोगी के लक्षण प्रायः मिल जाते हैं। हैज़े में दस्त और क़य होते हैं; संखिया खाने पर भी कय और दस्त होते हैं। हैज़े वाले का मल चाँवल के धोवन-जैसा होता है और संखिये

वाले का मल भी, अन्तिम अवस्था में, वैसा ही होता है। अतः हम दोनों तरह के रोगियों का फ़र्क़ लिखते हैं:—

हैज़ेवाले और संखिया खानेवाले की पहचान।

हैज़े में प्रायः पहले दस्त और पीछे कय होती हैं; संखिया खाने वाले को पहले कय और पीछे दस्त होते हैं। संखिया खानेवाले के मल के साथ खून गिरता है; पर हैज़े वाले के मल के साथ खून नहीं गिरता। हैज़े वाले का मल चाँवलोंके धोवन-जैसा होता है; पर संखियावाले का मल,अन्तिम अवस्था में ऐसा हो सकता है। हैज़ेमें वमन से पहले गले में दर्द नहीं होता,पर संखिया वाले के गले में दर्द ज़रूर होता है। इन चार भेदोंसे—हैज़ा हुआ है या संखिया खाया है,यह बात जानी जा सकती है।

संखियावाले को अपथ्य।

संखिया खानेवाले रोगी को नीचे लिखी बातों से बचाना चाहिये—

(क) शीतल जल। पैत्तिक विषों पर शीतल जल हितकारक होता है; पर वातिक विषों में अहितकर होता है। संखिया खानेवाले को शीतल जल भूल कर भी न देना चाहिये।

(ख) सिर पर शीतल जल डालना।

(ग) शीतल जल से स्नान करना।

(घ) चाँवल और तरबूज अथवा अन्य शीतल पदार्थ। चाँवल और तरबूज संखिया पर बहुत ही हानिकारक हैं।

(ङ) सोने देना। सोना देना प्रायः सभी विषों में बुरा है।

संखिया का ज़हर नाश करने के उपाय।

आरम्भिक उपाय:—

(क) संखिया खाते ही अगर मालूम हो जाय, तो वमन कर दो। क्योंकि विष खाते ही विष आमाशय में रहता है और वमन से निकल जाता है। सुश्रुत में लिखा है:—

पिप्पली मधुक क्षौद्रशर्करेक्षुरसांबुभिः ।
छर्दयेद्गुप्तहृदयो भक्षितं यदिवा विषम् ॥

अगर किसी ने छिपा कर स्वयं ज़हर खाया हो ; तो वह पीपल, मुलेठी, शहद, चीनी और ईख का रस--इन को पीकर वमन कर दे। अथवा वैद्य उपरोक्त चीज़ें पिला कर वमन द्वारा विष निकाल दे। आरम्भ में, ज़हर खाते ही "वमन" से बढ़ कर विष नाश करने की और दवा नहीं ।

(ख) अगर देर हो गई हो,—विष पक्वाशय में पहुँच गया हो, तो दस्तावर दवा देकर दस्त करा देने चाहियें ।

नोट—बहुधा वमन करा देने से ही रोगी बच जाता है। वमन कराकर आगे लिखी दवाओंमें से कोई एक दवा देनी चाहिये।

(१) दो या तीन तोले पपड़िया कत्था पानी में घोल कर पीने से संखिया का ज़हर उतर जाता है। यह पेट में पहुँचते ही संखिया की कारस्तानी बन्द करता और क़य लाता है।

(२) एक माशे कपूर तीन चार तोले गुलाब-जल में हल करके पीने से संखिया का विष नष्ट हो जाता है।

(३) कड़वे नीम के पत्तों का रस पिलाने से संखिया का विष और कीड़े नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) संखिया खाये हुए आदमी को अगर तत्काल, बिना देर किये, कच्चे बेल का गूदा पेटभर खिला दिया जाय, तो इलाज में बड़ा सुभीता हो। संखिया का विष बेल के गूदे में मिल जाता है, अतः शरीर के अवयवों पर उसका जल्दी असर नहीं होता। बेल का गूदा खिला कर, दूसरी उचित चिकित्सा करनी चाहिये।

(५) करेले कूट कर उनका रस निकाल लो और संखिया खाने वाले को पिलाओ। इस उपाय से वमन होकर, संखिया निकल जायगा। संखिया का ज़हर नाश करने को यह उत्तम उपाय है।

नोट—अगर करेले न मिलें, तो सफेद पपड़िया कत्था महीन पीस कर और

पानी में घोल कर पिला दो। संखिया खाते ही इसके पीलेने से बहुत रोगी बच गये हैं। कत्थे से भी कय होकर ज़हर निकल जाता है।

(६) संखिया के विष पर शहद और अंजीर का पानी मिलाकर पिलाओ। इस से क़य होंगी—अगर न हों, तो उँगली डाल कर क़य कराओ। दस्त कराने को सात रत्ती "सकमूनिया" शहद में मिला कर देना चाहिये।

नोट—सकमूनिया को मेहमूदह भी कहते हैं। यह सफेद और भूरा होता है तथा स्वाद में कड़वा होता है। यह एक दवा का जमा हुआ दूध है। तीसरे दर्जे का गरम और दूसरे दर्जे का रूखा है। हृदय, आमाशय और यकृत को हानिकारक तथा मूर्च्छाकारक है। कतीरा, सेव और बादाम-रोगन इसके दर्प को नाश करते हैं। यह पित्तज मल को दस्तों के द्वारा निकाल देता है। जिस दस्तावर दवा में यह मिला दिया जाता है, उसे खूब ताक़तवर बना देता है। वातज रोगों में यह लाभदायक है, पर अमरूद या बिही में भुलभुलाये बिना इसे न खाना चाहिये।

(७) तिब्बे अकबरी में, सफेदे और संखिये पर मक्खन खाना और शराब पीना लाभदायक लिखा है। पुरानी शराब, शहद का पानी, लहसदार चीज़ें, तर ख़तमी का रस और भुसी का शीरा—ये चीज़ें भी संखिये वाले को मुफीद हैं।

(८) बिनौलों की गरी निवाये दूध के साथ पिलाने से संखिया का विष उतर जाता है।

नोट—बिनौलों की गरी पानी में पीस कर पिलाने से धतूरे का विष भी उतर जाता है। बिनौले और फिटकरी का चूर्ण खाने से अफीम का जहर नाश हो जाता है। बिनौलों की गरी खिला कर दूध पिलाने से भी धतूरे का विष शान्त हो जाता है।

सूचना—धतूरे के विष में जिस तरह सिर पर शीतल जल डालते हैं; उस तरह संखिया खाने वाले के सिर पर शीतल जल डालना, शीतल जल पिलाना, शीतल जल से स्नान कराना या और शीतल पदार्थ खिलाना-पिलाना, चाँवल और तरबूज़ वगैरः खिलाना और सोने देना हानिकारक है। अगर पानी देना ही हो, तो गरम देना चाहिये।

(९) जिस तरह बहुतसा गाय का घी खाने से धतूरे का ज़हर उतर जाता है ; उसी तरह दूध में घी मिला कर पिलाने से संखिये का ज़हर उतर जाता है ।

(१०) घीके साथ सुहागा पीसकर पिलानेसे संखियाका ज़हर साफ नष्ट हो जाता है। सुहागा सभी तरहके विषोंको नाश करता है। अगर संखियाके साथ सुहागा पीसा जाय,तो संखिया का विष नष्ट हो जाय।

(११) वैद्य-कल्पतरु में संखिया के विष पर निम्न-लिखित उपाय लिखे हैं —

(क) वमन कराना सब से अच्छा उपाय है। अगर अपने-आप वमन होती हों, तो वमनकारक दवा देकर वमन मत कराओ।

(ख) घी संखिया में सब से उत्तम दवा है। घी पिला कर वमन कराने से सारा विष घी में लिपट कर बाहर आ जाता है और घी से संखिया की जलन भी मिट जाती है। अतः घी और दही खूब मिला कर पिलाओ। इस से कय होकर रोगी चंगा हो जायगा। अगर कय होने में विलम्ब हो तो पक्षी का पंख गले में फेरो।

थोड़े से पानीमें २० ग्रेन सलफेट आफ ज़िंक (sulphate of zinc) मिला कर पिलाओ। इस से भी कय हो जाती हैं।

राई का पिसा हुआ चूर्ण एक या दो चम्मच पानी में मिला कर पिलाओ। इस से भी कय होती हैं।

इपिकाकुआना का चूर्ण या पौडर १५ ग्रेन लेकर थोड़े से जल में मिला कर पिलाओ। इस से भी कय होती हैं।

नोट—इन चारों में से कोई एक उपाय करके कय कराओ। अगर जोर से कय न होती हों, तो गरम जल या नमक मिला जल ऊपर से पिलाओ। किसी भी कय की दवा पर, इस जलके पिलाने से कय की दवा का बल बढ़ जाता है और खूब कय होती हैं। अफीम या संखिया आदि विषों पर जोर से कय कराना ही हितकारी है।

(ग) थोड़ी-थोड़ी देर में दूध पिलाओ। अगर मिले तो दूध में बरफ भी मिला दो।

(घ) दूध और चूने का नितरा हुआ पानी बराबर-बराबर मिला कर पिलाओ।

(ङ) जलन मिटाने को बर्फ और नीबू का शर्बत पिलाओ अथवा चीनी मिला कर पेठे का रस पिलाओ इत्यादि।

सूचना—अफीम के विष पर भी कय कराने को यही उपाय उत्तम हैं। हरताल और मैनसिल ये दोनों संखिया के क्षार हैं। इसलिये इनका जहर उतारने में संखिया के जहरके उपाय ही करने चाहियें। चूनेका छना हुआ पानी और तेल पिलाओ और वमन की दवा दो तथा राई का चूर्ण दूध और पानी में मिला कर पिलाओ। शेष, वही उपाय करो, जो संखिया में लिखे हैं।

(१२) गर्म घी पीने से संखिया का ज़हर उतर जाता है।

(१३) दूध और मिश्री मिला कर पीने से संखिया का विष शान्त हो जाता है।

नोट—बहुतसा संखिया खा लेने पर वमन और विरेचन कराना चाहिये।

आक का वर्णन और उसके विष की शान्ति के उपाय।
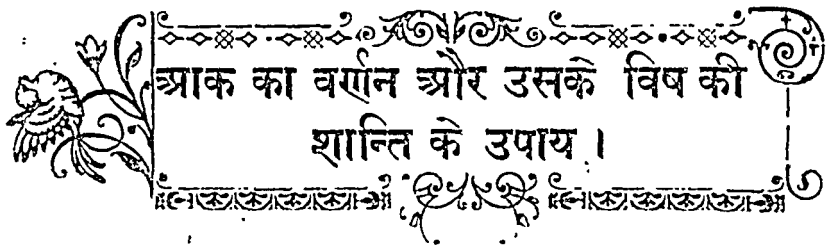
आक के वृक्ष जंगल में बहुत होते हैं। आक दो तरह के होते हैं:—(१) सफेद, और (२) लाल। दोनों तरहके आक दस्तावर, वात, कोढ़, खुजली, विष, व्रण, तिल्ली, गोला, बवासीर, कफ, उदर रोग और मल या पाखानेके कीड़ों को नाश करने वाले हैं।

सफेद आक अत्यन्त गर्म, तिक्त और मलशोधक होता है तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और दारुण कृमिरोग को नाश करता है। राजार्क कफ, मेद, विष, वातज कोढ़, व्रण, सूजन, खुजली और विसर्प को नाश करता है।

सफेद आक के फूल वीर्यवर्द्धक, हलके, दीपन और पाचन होते हैं तथा कफ, बवासीर, खाँसी और श्वास को नष्ट करते हैं। आक के फूलों से कृमिरोग, शूल और पेट के रोग भी नाश होते हैं।

लाल आक के फूल मधुर, कड़वे और ग्राही होते हैं तथा कृमि, कफ, बवासीर, रक्तपित्त रोग और सूजन नाश करते हैं। दीपन-पाचन चूर्ण और गोलियों में आक के फूल मिलाने से उन का बल बहुत बढ़ जाता है। अकेले आक के फूल नमक के साथ खाने से पेट का दर्द और बदहज़मी,—ये रोग आराम हो जाते हैं।

आक की जड़की छाल पसीने लाती है, श्वास नाश करती है, उपदंशको हरती है और तासीर में गरम है। कहते हैं, इससे कफ छूट जाता है और कय भी होती हैं। खाँसी, ज़ुकाम, अतिसार, मरोड़ीके दस्त, रक्तपित्त, शीतपित्त—पित्ती निकलना, रक्तप्रदर, ग्रहणी, कीड़ोंका विष और कफ नाश करने में आककी जड़ अच्छी है।

आकके पत्ते सेक कर बाँधने से वादी की सूजन नाश हो जाती है। कफ और वायुकी सूजन तथा दर्द पर आकके पत्ते रामवाण हैं। शरीर की अकड़न और सूनेपन पर आकके पत्ते घी या तेल से चुपड़ और सेक कर बाँधने से लाभ होता है। इनके सिवा और भी बहुतसे रोग इनसे नाश होते हैं। हरे पत्तोंमें भी थोड़ा विष होता है, अतः खानेमें सावधानी की दरकार है। क्योंकि कच्चे पत्ते खाने से सिर घूमता है, नशा चढ़ता है तथा कय और दस्त होने लगते हैं।

आकका दूध कड़वा, गरम, चिकना, खारी और हलका होता है। कोढ़, गुल्म और उदर रोग पर अत्युत्तम है। दस्त करानेके काममें भी आता है ; पर इसका दूध बहुत ही तेज़ होता है। उससे दस्त बहुत होते हैं। बाज़-बाज़ वक्त ज़ियादा और बेक़ायदे खानेसे आँतें कट जाती हैं और आदमी बेहोश होकर मर भी जाता है।

आकका दूध घावों पर भी लगाया जाता है। अगर बेक़ायदे लगाया जाता है, तो घाव को फैला और सड़ा देता है। उस समय उस

में दर्द भी बहुत होता है। इसका दूध घावों पर दो पहर पीछे लगाना चाहिये। सवेरे ही, चढ़ते दिनमें, लगाने से चढ़ता और हानि करता है; पर ढलते दिन में लगाने से लाभ करता है।

आकके विषकी शान्ति के उपाय ।

आककी शान्ति ढाक से होती है। ढाक या पलाशके वृक्ष जङ्गलमें बहुत होते हैं।

(१) अगर आकका दूध लगाने से घाव बिगड़ गया हो, तो ढाकका काढ़ा बनाकर, उससे घावको धोओ। साथ ही ढाक की सूखी छाल पीस कर, घावों पर बुरको।

(२) अगर आकका दूध, पत्ते या जड़ आदि बेक़ायदे खाये गये हों और उनसे तकलीफ हो, तो ढाकका काढ़ा पिलाना चाहिये।

आक के उपयोगी नुसखे ।

(१) आक की जड़ की छाल बकरी के दूध में घिस कर, मृगी वाले की नाक में दो चार बूँद टपकाने से मृगी जाती रहती है।

(२) पीले आक के पत्तों पर सेंधानोन लगा कर, पुटपाक की रीति से भस्म कर लो। इस में से १ माशे दवा, दही के पानी के साथ, खाने से प्लीहोदर रोग नाश होता है।

(३) मदार की लकड़ी की राख दो तोले और मिश्री दो तोले—दोनों को पीस कर रख लो। इस में से छै छै माशे दवा सवेरे-शाम खाने से गरमी रोग आठ दिन में आराम होता है।

(४) आक की जड़ १७ माशे और कालीमिर्च चार तोले—इन दोनों को पीसकर और गुड़ में खरल करके, मटर-समान गोली बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से उपदंश या गरमी आराम हो जाती है।

नोट—सफेद कनेर की जड़, जल में घिस कर, इन्द्रिय के घावों पर लगाओ; असाध्य गरमी भी नाश हो जायगी ।

(५) मदार के पत्ते पर रेंडी का तेल लगा कर, उसे गरम करो और बद पर बाँध दो । फिर धतूरे के पत्ते आग पर तपा-तपा कर सेक कर दो ; बद फौरन ही नष्ट हो जायगी ।

(६) मदार के पत्तों का रस और सेंहुड़ के पत्तों का रस—दोनों को मिलाकर गरम करो और सुहाता-सुहाता गरम कान में डालो। इस से कान की सब तरह की पीड़ा शान्त हो जायगी ।

(७) मदार के १०० पत्ते, अड़ूसे के १०० पत्ते, शुद्ध कुचला १। तोले, साँभरनोन २॥ तोले, पीपर २॥ तोले, पीपरामूल २॥ तोले, सोंठ २। तोले, अजवायन २ तोले और काली ज़ीरी २। तोले—इन सब दवाओं को एक हाँडी में भर कर, ऊपर से सराई रखकर, मुँह बन्द कर दो और सारी हाँडी पर कपड़-मिट्टी कर दो। फिर गज़भर गहरे चौड़े लम्बे खड्डे में रख कर, आरने कण्डे भर दो और आग देदो। आग शीतल होने पर, हाँडी को निकाल कर दवा निकाल लो और रख लो। इस में से चार-चार रत्ती दवा पान के साथ खाने से श्वास और खाँसी या दमा—ये रोग नाश हो जाते हैं ।

(८) मदार के मुँह-बन्द फूल चार तोले, काली मिर्च चार तोले और काला नोन चार तोले—इन सब को पानी के साथ खरल करके बेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली खाने से पेट का शूल या दर्द और वायुगोला वगैरः अनेक रोग नाश हो जाते हैं।

(९) आक का दूध, हल्दी, सेंधानोन, चीते की छाल, शरपुंखी, मँजीठ और कुड़ा की छाल.—इन सबको पानी से पीस कर लुगदी बना लो। फिर लुगदी से चौगुना तेल और तेल से चौगुना पानी मिलाकर, तेल पका लो। इस तेलको भगन्दर पर लगानेसे फौरन आराम होता है।

(१०) सफेद मदार की राख, सफेद मिर्च और शुद्ध नीलाथोथा, ये तीनों बराबर-बराबर लेकर, जल में घोट कर, एक-एक माशे की

गोलियाँ बना लो। इन में से एक-एक गोली पानी के साथ खाने से साँप प्रभृति जीवों का विष नष्ट हो जाता है।

(११) आक की जड़ और कच्चा नीलाथोथा, दोनों को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस में से छै छै मांशे चूर्ण, साँप के काटे आदमी के दोनों नाक के नथनों में भर दो और फिर एक फूँकनी लगा कर फूँक मारो। ईश्वर चाहेगा, तो फौरन ज़ोर की क़य होगी और रोगी आध घण्टे में भला-चंगा हो जायगा।

नोट—ऊपर के नुसख़े के साथ नीचे लिखे काम भी करो तो क्या कहना?

(१) शुद्ध जमालगोटा एक मटर बराबर खिला दो।

(२) कलौंजी के बीज घिस कर नेत्रों में आँजो।

(३) साँप की काटी जगह पर, एक मोटे-ताजे चूहे का पेट फाड़ कर, पेट की तरफ से रख दो।

(४) बीच-बीच में प्याज़ खिलाते रहो।

(५) सोने मत दो और चकोकी आवाज सुनने मत दो।

(१२) आक की जड़ को बराबर के अदरख के रस में घोट कर, चने-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली, पानी के साथ, थोड़ी-थोड़ी देर में देने से हैज़ा नाश हो जाता है।

(१३) मदार के पीले पत्तों को कोयलों की आगपर जला लो। इस में से ४ रत्ती राख, शहद में मिलाकर, नित्य सवेरे, चाटने से बलग़मी तप, ज़ुकाम, बदहज़मी, दर्द और तमाम बलग़मी रोग नाश होते हैं।

(१४) मदार के फूल और पँवाड के बीज, दोनों को पीस कर और खट्टे दही में मिलाकर दादों पर लगाने से दाद आराम हो जाते हैं।

(१५) मदार के हरे पत्ते २० तोले और हल्दी २१ माशे—दोनों को पीस कर उड़द-समान गोलियाँ बना लो। इन में से चार गोली पहले दिन ताज़ा जल से खाने और दूसरे दिन से एक-एक गोली, सात रोज़ तक, बढ़ा-बढ़ा कर खाने से जलन्धर रोग नाश हो जाता है।

नोट—पहले दिन चार, दूसरे दिन पाँच, तीसरे दिन छै—बस इसी तरह सातवें दिन दस गोली खानी चाहियें।

(१६) मदार का एक पत्ता और काली मिर्च नग २५—दोनों को पीस कर गोल मिर्च-समान गोलियाँ बना लो । इन में से सात गोली रोज़ खाने से दमा या श्वास रोग आराम हो जाता है ।

(१७) आक के पत्ते, वनकपास के पत्ते और करिहारी—तीनों को सिल पर पीस कर रस निचोड़ लो और ज़रा गरम कर लो । इस रस के कान में डालने से कान का दर्द और कान के कीड़े नाश हो जाते हैं।

(१८) आक के सिरे पर की नर्म कोंपल एक नग पहले तीन दिन पान में रख कर खाओ । फिर चौथे दिन से चालीस दिन तक आधी कोंपल या पत्ता नित्य बढ़ाते जाओ । इस उपाय से कैसा ही श्वास रोग हो, नष्ट हो जायगा ।

(१६) आक के पीले-पीले पत्ते जो पेड़ों से आप ही गिर गये हों, चुन लाओ । फिर चूना १ तोले और सेंधानोन १ तोले—दोनों को मिला कर जल के साथ पीस लो । फिर इस पिसी दवा को उन पत्तों पर दोनों ओर ल्हेस दो और पत्तों को छाया में सूखने दो । जब पत्ते सूख जायँ, उन्हें एक हाँडी में भर दो और उस का मुख बन्द कर दो। इस के बाद जंगली कण्डों के बीच में हाँडी को रख कर आग लगा दो और तीन घण्टे तक बराबर आग लगने दो । इस के बाद हाँडी से दवा को निकाल लो । इसमें से १ रत्ती राख, पानमें धर कर, खानेसे दुस्साध्य दमा या श्वास भी आराम हो जाता है ।

(२०) दो रत्ती आक का खार पानमें रख कर या एक माशे शहद में मिला कर खाने से दमा—श्वास आराम हो जाता है । इस दवा से गले और छाती में भरा हुआ कफ भी दूर हो जाता है ।

नोट—अगर आकका क्षार या खार बनाना हो, तो जंगल से दस बीस आक के पेड़ जड़ समेत उखाड़ लाओ और सुखा लो । सूखने पर उनमें आग लगाकर राख कर लो । फिर पहले लिखी तरकीब से क्षार बना लो : यानी उस राखको एक बासन में डालकर, ऊपर से राखसे दूना जल भर कर घोल दो । ६ घण्टे बाद उसमें से पानी नितार लो और राखको फैंक दो । इस पानी को आग पर चढ़ाकर उस वक्त

तक पकाओ, जबतक कि पानीका नाम भी न रहे। कड़ाही में जो सूखा हुआ पदार्थ लगा मिलेगा, उसे खुरच लो, वही खार या क्षार है।

(२१) मदार की जड़ ३ तोले, अजवायन २ तोले और गुड़ ५ तोले—इन्हें पीस कर वेर-समान गोलियाँ बना लो। सवेरे ही, हर रोज़, दो गोली खाने से दमा आराम हो जाता है।

(२२) आक के दूध और थूहर के दूध में, महीन की हुई दारुहल्दी को फिर घोटो ; जब चिकनी हो जाय, उसकी बत्ती बना लो और नासूर के घाव में भर दो। इस उपाय से नासूर बड़ी जल्दी आराम होता है।

नोट—जब फोड़ा आराम हो जाता है, पर वहाँ एक सुराख से मवाद बहा करता है, तब उसे 'नासूर" या 'नाड़ी व्रण" कहते हैं।

(२३) अगर जंगल में साँप काट खाय, तो काटी हुई जगह का खून फौरन थोड़ा सा निकाल दो और फिर उस घाव पर आक का दूध खूब डालो। साथ ही आक के २०।२५ फूल भी खा लो। ईश्वर-कृपा से विष नहीं चढ़ेगा। परीक्षित है।

(२४) अगर शरीर में कहीं वायु के कोप से सूजन और दर्द हो, तो आक के पत्ते गरम करके बाँधो।

(२५) अगर कहीं से शरीर सूना हो गया हो, तो आक के पत्ते घी या तेल से चुपड़ कर सेको और उस स्थान पर बाँध दो।

(२६) आक के फूल के भीतर की फुल्ली या ज़ीरा बहुत थोड़ा सा लेकर और नमक में मिला कर खाने से पेट का दर्द, अजीर्ण और खाँसी आराम हो जाते हैं। एक बारमें ३।४ फुल्ली से ज़ियादा न खानी चाहियें।

(२७) आक के पत्ते तेल से चुपड़ कर और गरम करके बाँधने से नारु या बाला आराम हो जाता है।

(२८) आक का दूध कुत्ते के काटे और बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से अवश्य आराम होता है।

(२९) सन्निपात रोगमें आक की जड़ को पीस कर, घी के साथ खाने से सन्निपात नाश होता है। कहा है—

सन्निपातेऽर्कमूलं स्यात्साज्यं वा लशुनौषणे ।
द्वाविंशल्लंघनं कार्यं चतुर्थांश तथोदकम् ॥

सन्निपात में आक की जड़ पीसकर घी के साथ खावे या लहसन और सोंठ मिलाकर खावे, तथा बाईस लंघन करे और सेरका पाव भर रहा पानी पीवे ।

(३०) मदार की जड़, काली मिर्च और अकरकरा— सब को समान-समान लेकर, खरल में डाल, धतूरे की जड़ के रस के साथ घोटो और चने-समान गोलियाँ बनाकर छाया में सुखा लो । हैज़ेवाले को दिनमें चार पाँच गोली तक देने से अवश्य लाभ होगा । परीक्षित है ।

थूहर या सेंहुड का वर्णन और उसके विषकी शान्तिके उपाय ।

थूहर और सेंहुड़ दोनों एक ही जाति के वृक्ष हैं । सेंहुड़ की डंडी मोटी और काँटेदार होती है और पत्ते नर्म-नर्म पथरचटे के जैसे होते हैं । दूध इसकी शाखा-शाखा और पत्ते-पत्ते में होता है । थूहर की डंडी पतली होती है और पत्ते भी छोटे-छोटे, हरी मिर्च के जैसे होते हैं । इस के सभी अङ्गों में से दूध निकलता है। इसकी बहुत जाति हैं—तिधारा, चौधारा, पचधारा, षटधारा, सप्तधारा, नागफनी, विलायती, आँगुलिया, खुरासानी और काँटेवाली,—ये सब थूहर पहाड़ों में होते हैं ।

थूहर का दूध उष्णवीर्य, चिकना, चरपरा और हलका होता है । इस से वायु-गोला, उदररोग, अफारा और विष नाश होते हैं। कोढ़ और उदर रोग आदि दीर्घ रोगों में इसके दूध से दस्त कराते हैं और लाभ भी होता है; पर थूहर का दूध बहुत ही तेज़ दस्तावर होता है । ज़रा भी ज़ियादा

पीने या बेक़ायदे पीने से दस्तों का नम्बर लग जाता है और वे बन्द नहीं होते। यहाँ तक कि ख़ून के दस्त हो-होकर मनुष्य मर जाता है। चरक के सूत्रस्थान में लिखा है, सुख-पूर्वक दस्त कराने वालों में निशोथ की जड़, मृदु विरेचकोंमें अरण्ड और तीक्ष्ण दस्त करानेवालों में थूहर सर्वश्रेष्ठ है। वास्तव में, थूहर का दूध बहुत ही तीक्ष्ण विरेचन या तेज़ दस्तावर है। आजकल इस के दूध से दस्त नहीं कराये जाते।

गुल्म, कोढ़, उदर रोग एवं और पुराने रोगों में इस को देकर दस्त कराना हित है ; पर आजकलके कमज़ोर रोगी इसको सह नहीं सकते। अत: इसको किसी अड़ियल और पुराने रोग के सिवा और रोगों में न देना ही अच्छा है।

थूहर से तिल्ली, प्रमेह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, उदरव्रण, ज्वर, उन्माद, वायु, विच्छूका विष, दूषी विष, बवासीर और पथरी आराम हो जाने की बात भी निघण्टों में लिखी है।

हिलते हुए दाँत में अगर बड़ी पीड़ा हो, तो थूहर का दूध ज़रा ज़ियादा सा लगा देने से वह गिर पड़ता है। इसके दूध का फाहा दुखती हुई दाढ़ या दाँत में होशियारी से लगाने से दर्द मिट जाता है। दुखती जगह के सिवा, जड़में लग जानेसे यह दाँतको हिला या गिरा देता है।

हिकमत वाले थूहर के दूध को जलोदार, पाण्डुरोग और कोढ़ पर अच्छा लिखते हैं। वे कहते हैं, यह मसाने—वस्तिकी पथरी को तोड़ कर निकाल देता है। जिस अंग पर लगाया जाता है, उसी को आग की तरह फूँक देता है। इस के डंठल और पत्तों की राख करके, उस में से ज़रा-ज़रा सी नमक के साथ खाने से अजीर्ण, तिल्ली और पेटके रोग शान्त हो जाते हैं ; पर लगातार कुछ दिन खानी चाहिये।

थूहर के विकारों की शान्ति के उपाय।

अगर थूहर का दूध ज़ियादा या बेक़ायदे पीने से ख़ून के दस्त

होते हों; तो मक्खन और मिश्री खिलाओ या कच्चा भैंस का दूध मिश्री मिलाकर पिलाओ। हिकमत में "दूध" ही इस का दर्पनाशक लिखा है। शीतल जल में मिश्री मिलाकर पीने से भी थूहर का विष शान्त हो जाता है।

कलिहारी का वर्णन और उसकी विष-शान्तिके उपाय।

कलिहारी का वृक्ष पहले मोटी घास की तरह होता है और फिर बेल की तरह बढ़ता है। इसके पत्ते अदरख के जैसे होते हैं। इसका पेड़ बाढ़ या झाड़ी के सहारे लगता है। पुराना वृक्ष केलेके पेड़ जितना मोटा होता है। गरमी में यह सूख जाता है। फूलों की पंखड़ियाँ लम्बी होती हैं। फूल गुड़हर के फूल जैसे होते हैं। फूलों का रंग लाल, पीला, गेरुआ और सफेद होता है। फूल लगने से वृक्ष बड़ा सुन्दर दीखता है। इस की जड़ या गाँठ बहुत तेज़ और ज़हरीली होती है। संस्कृत में इसको गर्भघातिनी, गर्भनुत, कलिकारी आदि; हिन्दी में कलिहारी; गुजराती में कलगारी; मरहटी में खड्यानाग, बँगला में ईशलांगला और लैटिन में ग्लोरिओसा सुपरबा या एकोनाइटम नेपिलस कहते हैं।

निघण्टु में लिखा है, कलिहारी के क्षुप नागबेल के समान और बड़ के आकार के होते हैं। इसके पत्ते अन्धाहूली के से होते हैं। इस के फूल लाल पीले और सफेद मिले हुए रंग के बड़े सुन्दर होते हैं। इस के फल तीन रेखादार लाल मिर्चके समान होते हैं। इसकी लाल छाल के भीतर इलायची के से बीज होते हैं। इस के नीचे एक गाँठ होती है। उसे वत्सनाभ और तेलिया मीठा कहतेहैं। इस की जड़ दवा के काम

में आती है। मात्रा ६ रत्ती की है। कलिहारी सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रण को दूर करनेवाली है। इस के लेपमात्रसे ही शुष्क-गर्भ और गर्भ गिरजाता है। इस से कृमि, वस्ति शूल, विष, कोढ़, ववासीर, खुजली, व्रण, सूजन, शोष और शूल नष्ट हो जाते हैं। इसकी जड़ का लेप करने से ववासीर के मस्से सूख जाते हैं, सूजन उतर जाती है, व्रण और पीड़ा आराम हो जाती है।

कलिहारी से हानि।

अगर कलिहारी वेक़ायदे या ज़ियादा खा ली जाती है, तो दस्त लग जाते हैं और पेट में बड़े ज़ोर की ऐंठनी और मरोड़ी होती है। जल्दी उपाय न होनेसे मनुष्य वेहोश होकर और मल टूटकर मर जाता है; यानी इतने दस्त होते हैं, कि मनुष्यको होश नहीं रहता और अन्तमें मर जाता है।

विष-शान्ति के उपाय।

(१) अगर कलिहारी से दस्त वगैरः लगते हों; तो विना घी निकाले गाय के माठे में मिश्री मिला कर पिलाओ।

(२) कपड़े में दही रख कर और निचोड़ कर, दही का पानी-पानी निकाल दो। फिर जो गाढ़ा-गाढ़ा दही रहे, उस में शहत और मिश्री मिला कर खिलाओ। इन दोनों में से किसी एक उपाय से कलिहारीके विकार नाश हो जायेंगे।

औषधि-प्रयोग।

(१) करिहारी या कलिहारी की जड़ को पानी में पीस कर, नारु या बाले पर लगाने से नारु या बाला आराम हो जाता है।

(२) कलिहारी की जड़ पानी में पीस कर, ववासीर के मस्सों पर लेप करने से मस्से सूख जाते हैं।

(३) कलिहारी की जड़ के लेप से व्रण, घाव, कंठमाला, अदीठ-

फोड़ा और बद या बाघी,—ये रोग नाश हो जाते हैं ।

(४) कलिहारी की जड़ पानी में पीस कर सूजन और गाँठ प्रभृति पर लगाने से फौरन आराम होता है ।

(५) कलिहारी की जड़ को पानी में पीस कर अपने हाथ पर लेप कर लो । जिस स्त्री को बच्चा होने में तकलीफ होती हो, उसके हाथ को अपने हाथ से छुलाओ—फौरन बच्चा हो जायगा । अथवा कलहारी की जड़ को डोरे में बाँध कर बच्चा जनने वाली के हाथ या पैर में बाँध दो । बच्चा होते ही फौरन उसे खोल लो । इस से बच्चा जनने में बड़ी आसानी होती है । इसका नाम ही गर्भघातिनी है । गृहस्थों के घरों में ऐसे मौक़े पर इसका होना बड़ा लाभदायक है ।

(६) कलिहारी के पत्तों को पीस-छान कर छाछ के साथ खिलाने से पीलिया आराम हो जाता है ।

(७) अगर मासिक धर्म रुक रहा हो, तो कलिहारी की जड़ या ओंगे की जड़ अथवा कड़वे वृन्दावनकी जड़ योनि में रखो ।

(८) अगर योनि में शूल हो, तो कलिहारी या ओंगे की जड़ को योनि में रखो ।

(९) अगर कानमें कीड़े हों,तो कलिहारीकी गाँठका रस कानमें डालो ।

(१०) अगर साँपने काटा हो, तो कलिहारी की जड़ को पानी में पीस कर नास लो ।

(११)अगर गाय बैल आदि को बन्धा हो—दस्त न होता हो, तो उन्हें कलिहारी के पत्ते कूट कर और आटे में मिला कर या दाने सानी में मिलाकर खिला दो ; पेट छूट जायगा ।

(१२) अगर गाय का अंग बाहर निकल आया हो, तो कलिहारी की जड़ का रस दोनों हाथों में लगाकर, दोनों हाथ उस के अंग के सामने लेजाओ । अगर इस तरह अंग भीतर न जाय, तो दोनों हाथ उस अंग पर लगा दो और फिर उन हाथों को गाय के मुँह के सामने करके दिखा दो । फिर वह अंग भीतर ही रहेगा—बाहर न निकलेगा ।

कनेर का वर्णन और उसकी विष-शान्ति के उपाय।

कनेर का पेड़ भारत में मशहूर है। प्रायः सभी बग़ीचों और पहाड़ों पर कनेर के वृक्ष होते हैं। इस की चार क़िस्म हैं—

(१) सफेद, (२) लाल,
(३) गुलाबी, (४) पीली।

दवाओं के काम में सफेद कनेर ज़ियादा आती है। इस की ज़ड़ में विष होता है। इस वृक्ष के पत्ते लम्बे-लम्बे होते हैं। फूलों में गन्ध नहीं होती। जिस पेड़ में सफेद फूल लगते हैं, वह सफेद और जिसमें लाल फूल लगते हैं, वह लाल कनेर कहाती है। इसी तरह गुलाबी और पीली को समझ लो।

सफेद कनेर से प्रमेह, कृमि, कोढ़, व्रण, बवासीर, सूजन और रक्त-विकार आदि रोग नाश होते हैं। यह खाने में विष है और आँखों के रोगों के लिये हितकर है। इस से उपदंश के घाव, विष, विस्फोट, खुजली, कफ और ज्वर भी नाश हो जाते हैं। सफेद कनेर तीखी, कड़वी, कसैली, तेजस्वी, ग्राहक और उष्णवीर्य होती है। कहते हैं, यह घोड़े के प्राणों को नाश कर देती है।

लाल कनेर शोधक, तीखी और खाने में कड़वी है। इस के लेप से कोढ़ नाश हो जाता है।

पीलापन लिये सुर्ख़ कनेर सिरका दर्द, कफ और वायु को नाश करती है।

कनेर के विष से हानि।

कनेर के खाने से गले और आमाशय में जलन होती है, मुँह लाल हो जाता है, पेशाब बन्द हो जाता है, जीभ सूज जाती है, पेट में गुड़-

गुड़ाहट हाती है , अफारा आ जाता है , साँस रुक-रुक कर आता और वेहोशी हो जाती है ।

कनेर की शोधन विधि ।

कनेर की जड़ के टुकडे करके, गायके दूध में, दोलायंत्र की विधिसे पकाने से शुद्ध हो जाती है ।

कनेर के विष की शान्ति के उपाय ।

(१) लिख आये हैं, कि कनेर—ख़ास कर सफेद कनेर विष है । इसके पास साँप नहीं आता । अगर कोई इसे खाले और विष चढ़ जाय, तो भैंस के दही में मिश्री पीस कर मिला दो और उसे खिलाओ; ज़हर उतर जायगा ।

(२) तिब्बे अकबरी में लिखा है:—

(१) वमन कराओ । इस के वाद ताज़ा दूध से कुल्ले कराओ और कच्चा दूध पिलाओ ।

(२) जौ के दलिया में गुल रोग़न मिला कर पिलाओ ।

(३) जुन्देवेदस्तर सिरके और शहद में मिला कर दो ; पर प्रकृति का ख़याल करके ।

(४) दूध और मक्खन खिलाओ । यह हर हालत में मुफीद है ।

(५) शीतल जल सिर पर डालो ।

(६) शीतल जल के टब या हौज़ में रोगी को बिठाओ ।

नोट—इस की जड़ खाने का हाल मालूम होते ही कय करा देना सब से अच्छा उपाय है । इसके बाद कच्चा दूध पिलाना, शीतल जल सिर पर डालना और शीतल जल में बिठाना—ये उपाय करने चाहियें । क्योंकि सफेद कनेर बहुत गरमी करती है । खाते ही शरीर में वेतहाशा गरमी बढ़ती और गला सूखने लगता है । अगर जल्दी ही उपाय नहीं किया जाता, तो आदमी वेहोश हो कर मर जाता है । यह बड़ा तेज जहर है ।

—:o:—

औषधि-प्रयोग ।

(१) सफेद कनेरकी जड़, जायफल, अफीम, इलायची और सेमरका छिलका,--इन सब को छै छै माशे लेकर, पीस कूट कर छान लो। फिर एक तोले तिली के तेल में गरम कर के, सुपारी छोड़, बाक़ी इन्द्रिय पर तीन दिन तक लेप करो। इस दवा से लिंगमें बड़ी ताक़त आ जाती है।

(२) सफेद कनेर की जड़ को पानी के साथ घिस कर साँप बिच्छू आदि के काटे हुए स्थान पर लगाने से अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

(३) आतशक या उपदंश के घावों पर सफेद कनेर की जड़ घिस कर लगाने से असाध्य पीड़ा भी शान्त हो जाती है। परीक्षित है।

(४) रविवार के दिन सफेद कनेर की जड़ कान पर बाँधने से सब तरह के शीत ज्वर भाग जाते हैं। शास्त्र में तो सब ज्वरों का चला जाना लिखा है, पर हमने जूडी ज्वरों पर परीक्षा की है।

(५) सफेद कनेर की जड़ को घिस कर मस्सों पर लगाने से बवासीर जाती रहती है।

(६) लाल कनेर के फूल और चाँवल बराबर-बराबर लेकर, रात को, शीतल जलमें भिगो दो। बर्तन का मुँह खुला रहने दो। सवेरे फूल और चाँवल निकाल कर पीस लो और विसर्प पर लगा दो; अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(७) खरदरे पत्थर पर,सफेद कनेर की जड़ सूखी ही पीस कर, जहाँ सिर में दर्द हो लगाओ; अवश्य लाभ होगा।

(८) सफेद कनेर के सूखे हुए फूल ६ माशे कड़वी तम्बाकू ६ माशे और इलायची १ माशे—तीनों को पीस कर छान लो। इसको सूँघने से साँपका ज़हर नाश हो जाता है।

(९) सफेद कनेर की जड़ का छिलका, सफेद चिरमिटी की दाल और काले धतूरे के पत्ते,—इन सब को समान-समान अट्ठाईस—

अट्ठाईस माशे लेकर, पीस-कूट कर टिकिया बना लो। इस टिकिया को पाव भर जल में डाल कर खूब घोटो। इसके बाद आग पर रख कर पकाओ। जब मसाला जल जाय, तेल को उतार लो और छान कर रख लो। इस तेल के लगाने से अर्द्धाङ्ग वायु और पक्षाघात रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

(१०) सफेद कनेर की जड़ को पीस कर, लेप करने से दर्द—ख़ास कर पीठ का दर्द और रींगन वायु तत्काल शान्त हो जाते हैं।

(११) कनेर के पत्ते लेकर सुखाओ और पीस-छान लो। अगर सिर में कफ रुका हो या कफ का शिरो रोग हो, तो इसे नस्य की तरह नाक में चढ़ाओ ; फौरन आराम होगा।

धतूरे का वर्णन और उसके विष की शान्ति के उपाय।

धतूरे के वृक्ष वनों में, बाग़ों में और जंगलों में बहुत होते हैं। धतूरे के फूलोंके भेद से धतूरा कई प्रकारका माना गया है। काला, नीला, लाल और पीला इस तरह धतूरा चार तरह का होता है। काले और सुनहरी फूलोंका धतूरा पुष्प-वाटिकाओं में होता है। इसके पत्ते पान के या बड़के पत्तेके आकार के ज़रा किंगरेदार होते हैं। फूलोंका आकार मारवाड़ियों की सुलफी चिलम-जैसा अथवा घण्टेके आकार का होता है। फूलों के बीच में और ऊपर सफेद रंग होता है तथा बीचमें नीला, काला और पीला रंग भी होता है। फल छोटे नीबूके समान और काँटेदार होते है। इन गोल-गोल फलोंके भीतर बीज बहुत होते हैं। जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला होता है और जिसकी डंडी, पत्ते, फूल, फल और सर्व्वांग काला होता है, उस धतूरे में विष अधिक होता है। फ़ल सूख कर फूट की तरह खिल जाते हैं। उनके

बीजों को वैद्य दवा के काममें लाते हैं। दवाके काम में धतूरे के पत्ते, फल और बीज आते हैं। इसकी मात्रा १ रत्ती की है। जिस धतूरे के वृक्ष में कलाई लिये फूल होता है, उसे काला धतूरा कहते हैं और जिस के फूल में से दो तीन फूल निकलते हैं, "उसे राज धतूरा" या बड़ा धतूरा कहते हैं।

इस के सभी अंगों—फूल, पत्ते, जड़ और बीज वग़ैरः—में कुछ-न-कुछ विष होताही है। विशेषकरके जड़ और बीजोंमें ज़ियादा ज़हर होता है। धतूरा मादक या नशा लानेवाला होता है। इसके सेवन से कोढ़, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर, विष, कफ ज्वर, जूँआ, लीख, पामा-खुजली, चमड़ेके रोग, कृमि और ज्वर नाश हो जाते हैं। यह शरीर के रंग को उत्तम या लाल करने वाला, वातकारक, गरम, भारी, कसैला, मधुर और कड़वा तथा मूर्च्छाकारक है।

धतूरे के बीज अत्यन्त मदकारक—नशीले होते हैं। चार पाँच बीजों से ही मूर्च्छा हो जाती है। ज़ियादा खाने या बेक़ायदे खाने से ये खुश्की लाते हैं; सिर घूमता है, चक्कर आते हैं, कय होती हैं, गले में जलन होती और प्यास बढ़ जाती है। बहुत ज़ियादा बीज खाने से उपरोक्त विकारों के सिवा नेत्रों की पुतलियाँ चौड़ी होकर बेहोशी होती और आदमी मर जाता है। ठग लोग रेल के मूर्ख मुसाफिरों को इन्हें खिलाकर बेहोश कर देते और उनका माल-मता ले चम्पत होते हैं।

नोट—इसकी शान्ति के उपाय हम आगे लिखेंगे। धतूरा खाया है, यह मालूम होते ही सिर पर शीतल जल गिरवाओ, कय कराओ और बिनौलों की गरी दूधके साथ खिलाओ। अगर बेहोशी हो तों नस्य देकर होश में लाओ। कपास की जढ़, पत्ते, बीज (बिनौले) आदि इसकी सर्व्वोत्तम दवा है।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है:— धतूरे का झाड़ बैंगन के झाड़-जैसा होता है। यह अत्यन्त मादक, चिन्ताजनक और उन्माद-कर्त्ता है। शहद, काली मिर्च और सोंफ—इस के दर्प नाशक हैं। इसके खाने से अवयवों और मस्तिष्क में अत्यन्त शिथिलता होती है। यह अत्यन्त

निद्राप्रद, शिरः पीड़ा को शान्त करने वाला, सूजन के भीतरी मल को पकाने वाला, चिकनाई को सोखनेवाला और स्तम्भन करने वाला है। इस के पत्तों का लेप अवयवों को गुणकारीहै ।

तिब्बे अकबरी में लिखा है, धतूरा खाने से घुमरी, आँखों के सामने अँधेरा और नेत्रों में सुर्खी होती है। जब यह ज़ियादा खाया जाता है, तब मनुष्य बुद्धिहीन हो जाता है। साढ़े चार माशे धतूरा खाने से मृत्यु हो जाती है।

वैद्यकल्पतरु में एक सज्जन लिखते हैं—धतूरे को अँगरेज़ी में स्ट्रेमोनियम कहते हैं। इस के बीज अधिक ज़हरीले होते हैं। कभी-कभी इस के ज़हर से मृत्यु भी हो जाती है। दो चार बीजों से ज़हर नहीं चढ़ता। हाँ, अधिक बीज खाने से ज़हर चढ़ता है। मुख्य लक्षण ये हैं:— सिर घूमना, गले में सूजन, आँखों की पुतलियों का फैल जाना, आँखों से कुछ न दीखना, आँखों और चेहरे का लाल हो जाना, रोगी का बड़-बड़ाना, हाथों को इस तरह चलाना जैसे हवा में से कोई चीज़ पकड़ता हो। अन्त में बेहोश हो जाना और नाड़ी का जल्दी-जल्दी चलना। जब बहुत ही ज़हर चढ़ जाता है, तब शरीर शीतल होकर मृत्यु हो जाती है। हाथों का चलाना धतूरे के विष का मुख्य लक्षण है।

उपाय—वमन और रेचन देकर कय और दस्त कराओ। आध-आध घण्टे में रोगी को काफी पिलाओ और उसे सोने मत दो। तेल मिलाकर गरम पानी पिलाओ।

धतूरा शोधन-विधि ।

धतूरे को गायके मूत्र में दो घण्टे तक भिगो रखो ; धतूरा शुद्ध हो जायगा।

औषधि-प्रयोग ।

चूँकि धतूरा बड़े काम की चीज़ है ; अतः हम इसके चन्द प्रयोग लिखते हैं:—

(१) धतूरे के बीजों का तेल निकाल कर, उसमें से एक सींक भर तेल पान में लगा कर खाने से स्त्री-प्रसंग में रुकावट होती है।

(२) धतूरे की जड़, गाय के माठे में पीसकर, लगाने से विद्रधि नाश हो जाती है।

(३) धतूरे के पत्ते पर तेल चुपड़ कर बाँधने से स्नायु-रोग नष्ट होता है।

(४) धतूरे के शोधे हुए बीज १ मिट्टी के कुल्हड़े में भर कर, मुँह बन्द करके, ऊपर से कपरमिट्टी करके सुखालो। फिर आग में रख कर फूँक दो। पीछे शीतल होने पर राख को निकाल लो। इस राख के खाने से जूड़ी ज्वर और कफ नाश हो जाता है।

(५) धतूरे की जड़ जो उत्तर दिशाको गई हो, ले आओ। फिर उसे सुखाकर कूट-पीस और छानलो। इस चूर्ण को ४ माशे गुड़ और छै तोले घी मिला कर खाने से उन्माद रोग नाश हो जाता है। बलाबल-अनुसार, मात्रा लेने से निश्चय ही सब तरह का उन्माद रोग आराम हो जाता है।

(६) धतूरे के शोधे हुए बीज एक से शुरु करके, रोज़ एक-एक बढ़ाओ और इक्कीसवें दिन इक्कीस बीज खाओ। पीछे ; पहले दिन बीस फिर उन्नीस, अठारह, सत्रह, इस तरह घटा-घटा कर एक पर आ-जाओ। इस तरह इनके सेवन करनेसे कुत्तेका विष शान्त हो जाता है।

(७) धतूरेके शुद्ध किये हुए बीज पहले दिन दो खाओ, दूसरे दिन तीन, तीसरे दिन चार, चौथे दिन पाँच, छठे दिन सात, सातवें दिन आठ, आठवें दिन नौ, नवें दिन दस और दसवें दिन ग्यारह खाओ। इस तरह करने से एक साल का पुराना फीलपाँव या श्लीपद रोग आराम हो जाता है

(८) धतूरे के पाँच पत्तों पर एक तोले कड़वा तेल लगा दो और पत्तों को गरम करके फोड़े पर बाँध दो। ऐसा करने से फोड़े का दर्द मिट जायगा।

(९) काले धतूरे के पत्ते चार तोले, सफेद चिरमिटी चार तोले और सफेद कनेर की जड़ की छाल चार तोले—इन तीनों को महीन पीस कर, सरसों के पाव भर तेल में मिलाकर, तेल को मन्दी-मन्दी आग पर औटाओ। जब ये दवाएँ जल जायँ, इन्हें उसी तेलमें घोटकर मिला दो। इस तेल के रोज़ जोड़ों पर मलने से, पक्षाघात रोग नाश हो कर, कामदेव खूब चैतन्य होता है।

(१०) शुद्ध काले धतूरेके बीज २ रत्ती और शुद्ध कुचला २ रत्ती—इनको पान में रख कर खाने से अपतंत्रक रोग नाश हो जाता है।

(११) काले धतूरे के फल, फूल, पत्ते और जड़—सब को कुचल कर, चिलम में रखकर, तमाखू की तरह पीने से हिचकी और श्वास आराम हो जाते हैं।

(१२) काले धतूरे का फल और कुड़े की छाल बराबर-बराबर लेकर, काँजी या सिरके में पीस कर, नाभि के चारों ओर लगाने से घोर शूल आराम होजाता है।

(१३) काला धतूरा, अरण्ड की जड़, सम्हालू, पुनर्नवा, सहँजने की छाल और राई—इन को बराबर-बराबर लेकर, पानी में पीस कर, गरम करो और हाथी पाँव या श्लीपद पर लेप करो ; अवश्य आराम होगा।

(१४) धतूरे के पत्ते, भाँगरा, हल्दी और सेंधा नोन—बराबर-बराबर लेकर पानी में पीस लो और गरम करके फोड़े पर लगा दो ; फोड़ा फौरन फूट जायगा।

(१५) धतूरे के पत्ते ६ माशे, खाने के पान ६ माशे और गुड़ १ तोले,—इन तीनों को महीन पीस कर पाव भर जलमें छान लो और पी जाओ। इस शर्बत से तिजारी और चौथैया ज्वर नष्ट हो जाते हैं।

(१६) शनिवार की शामको जंगल में जाकर काले धतूरे को न्योत आओ। न्योतने से पहले घी, गुड़, पानी और आग से उस की पूजा करो और कहो—"हे महाराज! कल आकर हम आपको लेजा-

दँगे। आप दुश्मन से हमारा पीछा छुड़ाइयेगा।" यह कह कर पीछे की ओर मत देखो और चले आओ। रविवार के सवेरे ही जाकर, उसी धतूरेको एक छोटी सी डाली तोड़ लाओ और उसे अपनी बाँह पर बाँध लो। परमात्मा की कृपा से फिर चौथैया न आवेगा।

धतूरे की विष-शान्ति के उपाय।

आरम्भिक उपाय।

(क) धतूरा खाते ही, विना देर किये, वमन कराकर आमाशय से विष को निकाल दो।

(ख) अगर विष पक्वाशय में पहुँच गया हो, तो जुलाब दो।

(ग) शिर पर शीतल पानी की धारा छोड़ो।

(घ) विनौलों की गिरी खिलाकर दूध पिलाओ।

(ङ) अगर दिमाग़ी फ़ितूर हो— वेहोशी आदि लक्षण हों, तो नस्य भी दो।

(१) तुषोदक में चाँवलों की जड़ पीस कर और मिश्री मिलाकर पिलाने से धतूरे का विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) शंखाहूली की जड़ पानी में पीसकर पिलाने से धतूरे का ज़हर शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(३) विनौले और कपास के फूलों का काढ़ा पीने से धतूरे का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४) वैंगन के टुकड़े करके पानी में खूब मल लो और पीओ। इस से धतूरे का विष नष्ट हो जायगा।

अगर वैंगन न मिले तो वैंगनके पत्तों और जड़ से भी काम चल सकता है। ये भी इसी तरह पीस-छान कर पीये जाते हैं।

(५) चालीस माशे विनौलों की गिरी पानी में पीस कर पीने से धतूरे का ज़हर उतर जाता है

नोट—किसी-किसी ने छै माशे बिनौलों की गिरी खिलाना लिखा है

(६) नमक पानी में घोल कर पीने से धतूरे का ज़हर उतर जाता है ।

(७) कपास के रस को पीने से धतूरे का मद दूर हो जाता है ।

नोट—धतुरे के बीजों का विष-- कपास के बीज पीस कर पीने से ; धतूरे की डाली का विप—कपास की डाली पीस कर पीने से ; और धतूरे के पत्तों का विष कपास के पत्ते पीस कर पीने स निश्चय ही उतर जाता है ।

(८) पेठे के रस में गुड़ मिलाकर खाने से पिंडालू का मद नाश हो जाता है ।

(६) बहुत सा गायका घी पिलाने से धतूरे और रसकपूर का विष उतर जाता है । परीक्षित है ।

(११) बैंगन के बीजों का रस पीने से धतूरे के विष की शान्ति होती है।

(१२) दूध मिश्री मिलाकर पीने से धतूरे का ज़हर उतर जाता है ।

चिरमिटी का वर्णन और उसकी विष-शान्ति के उपाय

चिरमिटी दो तरह की होती हैं— (१) लाल, और (२) सफेद । निघण्टुमें लिखा है, दोनों तरह की चिरमिटी केशों को हितकारी, वीर्यवर्द्धक, बलदायक तथा वात, पित्त, ज्वर, मुँह सूखना, भ्रम, श्वास, प्यास, मद, नेत्ररोग, खुजली, व्रण, कृमि, गंजरोग और कोढ़ नाशक होती हैं।

और एक ग्रन्थ में लिखा है, दोनों तरह की चिरमिटी स्वादिष्ट,

कड़वी, बलकारी, गरम, कसैली, चमड़े को उत्तम करने वाली, बालों को हितकारी तथा विष, राक्षस ग्रह-पीड़ा, खाज, खुजली, कोढ़, मुँह के रोग, वात, भ्रम और श्वास आदि नाशक हैं। बीज वान्तिकारक और शूल नाशक होते हैं। सफेद चिरमिटी विशेष कर वशीकरण हैं।

सफेद चिरमिटी का अर्क बालों को पैदा करने वाला तथा वात, पित्त और कफनाशक है। लाल चिरमिटी का अर्क मुख-शोष, श्वास, श्रम और ज्वर नाश करता है।

हिन्दी में घुंघुची, चिरमिटी, चोंटली और रत्ती कहते हैं। बँगला में कुंच और सादा कुञ्च, संस्कृत में गुञ्जा और गुजराती में चणोटी कहते हैं। इस के पत्ते, बीज और जड़ दवा के काम आते हैं। मात्रा १ से ३ रत्ती तक।

चिरमिटीके जहर की शान्ति का उपाय।

चौलाई के रस में मिश्री मिला कर पीने और ऊपर से दूध पीने से चिरमिटी का विष नाश हो जाता है।

चिरमिटी-शोधन विधि।

चिरमिटी को काँजी में डाल कर तीन घण्टे तक पकाओ, वह शुद्ध हो जायगी।

औषधि-प्रयोग।

(१) दो रत्ती कच्ची लाल चिरमिटी गाय के आध पाव दूधके साथ पीने से उन्माद रोग चला जाता है।

(२) सफेद चिरमिटी की जड़ या फलों को पानीके साथ पीस कर लुगदी बना लो, जितनी लुगदी हो उस से चौगुना सरसों का तेल और तेल से चौगुना पानी लो। इन को मिला कर मन्दाग्निसे पका लो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार लो। इसका नाम "गुञ्जा तेल" है। इसकी मालिश से गण्डमाला आराम हो जाती है।

(३) सफेद चिरमिटी, उटंगन के बीज, कौंच के बीज और गोखरू—इन्हें बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और फिर बराबर की मिश्री पीस कर मिला दो। इस चूर्ण को रोज़ खाकर ऊपर से दूध पीने से बूढ़ा आदमी भी जवान स्त्रियोंके घमण्डको नाश कर सकता है। अगर जवान खाय, तो कहना ही क्या ?

सफेद चिरमिटी, लौंग और खिरनी के बीज, इनका पाताल-यंत्र की विधिसे तेल निकालकर, एक सींक भर पान में लगाकर खाने और ऊपर से छटाँक भर गाय का घी खाने से कुछ दिनों में खूब कामशक्ति बढ़ती और स्तम्भन होता है।

भिलावे का वर्णन और उसके विकारों की शान्ति के उपाय।

भिलावे का वृक्ष बहुत बड़ा होता है। इस के पत्ते बड़ के जैसे और फूल लाल रंगके बड़े-बड़े होते हैं। इस के फल लम्बाई लिये गोल-गोल करौंदे या दाख के जैसे होते हैं। दाख नर्म होता है, पर भिलावेका फल कड़ा और टोपीदार होता है। फल पहले काले नहीं होते, पर सूख कर काले हो जाते हैं; परन्तु उनका रस नहीं सूखता—फलों के ऊपर से सूख जाने पर भी, भीतर बनाही रहता है। छिलकों के नीचे तेल जैसा पतला पदार्थ होता है, वही मुख्य गुणकारी चीज़ है। उसीका युक्ति-पूर्वक साधन करना, रसायन सेवन करना है। भिलावे के भीतर गुठली होती है। गुठली के भीतर जो गिरी होती है, वह अत्यन्त बलकारक, वाजीकरण, वातपित्त नाशक और कफवर्द्धक होती है।

भिलावे का फल या तेल आग पर डालने से या भिलावे पकाने से जो धूआँ होता है, वह अगर शरीर में लग जाता है, तो सूजन और घाव कर देता है।

भिलावे के भीतर का तरल पदार्थ अगर शरीर की चमड़ी और मुंह में लग जाता है, तो तत्काल फफोले और ज़ख्म हो जाते हैं तथा उपाड़ होता और सूजन आ जाती है।

निघण्टु में लिखा है, तिल और नारियल का गिरी इस के दर्प को नाश करते हैं। हिकमत के निघण्टु में ताज़ा नारियल, सफेद तिल और जौ इस के दर्प-नाशक लिखे हैं। वैद्यक ग्रन्थों में इस के फल की मात्रा चार रत्ती से साढ़े तीन माशे तक लिखी है; पर हिक़मत में सवा माशे लिखी है। "तिब्बे अकबरी" में लिखा हैं, नौ माशे भिलावा खानेसे मृत्यु होती है और बच जाने पर भी चिन्ता बनी ही रहती है।

वैद्यक में भिलावा विष नहीं माना गया है, पर हिकमत में तो साफ विष माना गया है। अगर यह बेक़ायदे सेवन किया जाता है, तो निस्सन्देह विष के से काम करता है। इस के तेल को सन्धिवात और नस हट जाने पर लगाते हैं। अगर इस में दूसरी दवा मिलाकर इस की ताक़त कम न की जाय, तो इस से चमड़ी के ऊपर छाले पड़ कर फफोले हो जायँ।

संस्कृत में भल्लातक, फारसी में बलादुर, अरबी में हब्बुलकम, बँगला में भेला, मरहटीमें भिलावा और बिबवा तथा गुजराती में भिलामाँ कहते हैं। भिलावे का पका फल पाक और रस में मधुर, हलका, कसैला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, मल को छेदने और फोड़नेवाला, मेधाको हितकारी, अग्निकारक तथा कफ, वात, व्रण, पेट के रोग, कोढ़, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, अफारा, ज्वर और कृमियों को नष्ट करता है।

भिलावे की मींगी मधुर, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक तथा वात और पित्त को नष्ट करने वाली है।

हिकमत में लिखा है, भिलावा गरमी पैदा करता, वायु को नाश करता, दोषों को स्वच्छ करता, चमड़े में घाव करता, शीत के रोग— पक्षवध, अर्दित—मुँह टेढ़ा हो जाना और कम्प तथा मूत्रकृच्छ्र में लाभ-दायक है। इस के सेवन से मस्से नाश हो जाते हैं।

भिलावे शोधने की तरकीबें ।

भिलावे को भी शोधकर सेवन करना चाहिये । भिलावों को जल में डाल दो । जो भिलावे डूब जायँ, उन्हें निकाल कर उतने ही पानी में भिगो दो । फिर उन को ईंट के चूर्ण या कूकुआ से खूब घिसो और उन के नीचे की ढिपुनी काट-काट कर फैंक दो । इस के बाद उन्हें फिर जल में धो डालो और सुखा कर काम में लाओ । यही शुद्ध भिलावे हैं ।

भिलावों को एक दिन-भर पानी में पकाओ । फिर उन्हें निकाल कर उन के टुकड़े कर डालो और दूधमें डाल कर पकाओ । इसके बाद उन्हें खरल में डाल कर ऊपर से तोले-तोले भर सोंठ और अजवायन मिला दो और खूब कूटो । ये भिलावे भी शुद्ध होंगे । इनको भी दवाके काम में ले सकते हैं ।

जिसे भिलावे पकाने हों, उसे अपने सारे शरीर को काली तिलों के तेल से तर कर लेना चाहिये और भिलावों से पैदा हुए धूएँ से बचना चाहिये ।

भिलावे सेवन में सावधानी ।

भिलावा खानेवाले अपने हाथों और मुख को घी से चुपड़ कर भिलावा खाते हैं । कितने ही पहले तिल या नारियल की गिरी चबा-कर पीछे इन्हें खाते हैं ।

भिलावा अनेक रोग नाश करता है, बशर्त्ते कि विधि से सेवन किया जाय । इस के युक्ति-पूर्व्वक खाने से कोढ़ निश्चय ही नष्ट हो जाता है और हिलते हुए दाँत पत्थर की तरह जम जाते हैं । पर अगर यही बेक़ायदे या मात्रा से ज़ियादा खाया जाता है, तो अत्यन्त गरमी करता है; मुँह, तालू और दाँतोंकी जड़में सूजन पैदा कर देता और दाँतों को हिला कर गिरा देता तथा ख़ून में ख़राबी कर देता है । इसलिये इस अमृत-समान फल को शास्त्र-विधि से सेवन करना चाहिये ।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, भिलावे खाने से मुख और गले में फफोले हो जाते हैं, तेज़ रोग, चिन्ता, भड़कन और अंगों में तकलीफ होती है। भिलावा किसी को हानि नहीं करता और किसी को हानि करता है। उसके शहद (वही तेल जैसा तरल पदार्थ) या धूएँ के लगने से शरीर सूज जाता है, अत्यन्त खाज चलती है और घाव हो जाते हैं। उन घावों से कितने ही आदमी मर भी जाते हैं।

औषधि-प्रयोग।

शास्त्र में भिलावे के सैकड़ों प्रयोग लिखे हैं, बतौर नमूने के दो चार हम भी नीचे लिखते हैं ;—

(१) भिलावों से एक पाक बनता है, उसे "अमृतभल्लातक पाक" कहते हैं। उस के सेवन करने से बहुधा रोग चला जाता और हिलते हुए दाँत जम कर बल-वृद्धि होती है। यह पाक कोढ़ पर रामबाण है। बनाने की विधि "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे भाग के पृष्ठ २८४ में देखिये।

(२) छोटे-छोटे शुद्ध भिलावों को गुड़ में लपेट कर निगल जाने से कफ और वायु नष्ट हो जाते हैं।

(३) शुद्ध भिलावोंको गुड़के साथ कूट कर गोलियाँ बना लो। पीछे हाथ और मुँह को घी से चुपड़ कर खाओ। इस तरह खाने से शरीर की पीड़ा, अकड़न या शरीर रह जाना, सर्दी, बवासीर, कोढ़ और नारु या बाला—ये सब रोग जाते रहते हैं।

नोट—अपने बलाबल अनुसार एक से सात भिलावे तक खाये जा सकते हैं।

(४) तीन माशे भिलावे की गरी, छै माशे शक्कर के साथ, खाने से पन्द्रह दिन में पक्षाघात—अर्द्धाङ्ग और मृगी रोग नाश हो जाते हैं।

(५) शुद्ध भिलावे, असगन्ध, चीता, बायबिडंग, जमालगोटे की जड़, अमलताश का गूदा और निबौली—इन्हें काँजी में पीस कर लेप करने से कोढ़ जाता रहता है।

भिलावे का विष नाश करने वाले उपाय।

(१) कसौंदी के पत्ते पीस कर लगाने से भिलावों का विकार शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(२) इमली की पत्तियों का रस पीने से भिलावों से हुई खुजली और सूजन नाश हो जाती है।

(३) इमली के बीज पीस कर खाने से भिलावे के विकार—खुजली और सूजन आदि नाश हो जाते है।

(४) चिरौंजी और तिल—भैंस के दूध में पीस कर खाने से भिलावे की खुजली और सूजन नाश हो जाती हैं।

(५) अगर भिलावा खाने से विकार हुआ हो, तो अखरोट खाने चाहियें।

(६) अगर भिलावों की धूआँ लगने से सूजन चढ़ आई हो, तो आमाहल्दी, साँठी चाँवल और दूब को बासी पानी में पीस कर सूजन पर ज़ोर से मलो।

(७) काले तिल पीस कर सिरके और मक्खन में मिला लो। इन के लगाने से भिलावों के धूआँ से हुई सूजन नाश हो जायगी।

(८) घी की मालिश करने से भिलावे की धूआँ या गन्ध आदि से हुई सूजन या विष नष्ट हो जाते हैं।

(९) अगर ज़ियादा भिलावे खाने से गरमी का बहुत ज़ोर हो जाय, तो दही में मिश्री मिला कर खाओ; फौरन गरमी शान्त होगी।

(१०) अगर भिलावे का तेल शरीर पर लगजाने या पकाते समय धूआँ लग जाने से शरीर पर सूजन, फोड़े फन्सी, घाव या फफोले हो जायँ, तो काले तिलों को दूध या दही में पीस कर शरीर पर लेप करो अथवा जहाँ सूजन आदि हों, वहाँ लेप करो।

(११) दही,दूध,तिल,खोपरा और चिरौंजी—भिलावे के विकारोंकी उत्तम दवा हैं। इनके सेवन करने से भिलावे के दोष शान्त हो जाते हैं।

(१२) अखरोट की मींगी, नारियल की गिरी, चिरौंजी और काले तिल, इन सब को महीन पीस कर, भिलावे के विकार—सूजन या घाव वगैरः—पर लेप करो। फिर ४।५ घण्टों बाद लेप को हटाकर, उस जगह को माठे से धो डालो और कुछ देर तक वहाँ कोई लेप वगैरः न करो। घण्टे आध घण्टे बाद, फिर ताज़ा लेप बनाकर लगा दो। इस तरह करने से भिलावे के समस्त विकार नाश हो जायेंगे।

(१३) इमली के साफ पानी में नारियल की गिरी घिस कर लगाने से भिलावे से हुई जलन और गरमी फौरन शान्त हो जाती है।

(१४) सफेद चन्दन और लालचन्दन पत्थर पर घिस कर लेप करने से भी भिलावे की जलन वगैरः शान्त हो जाती है।

(१५) अगर शरीर मवाद से भरा हो और वह मवाद बदबूदार हो तथा सूजन किसी उपाय से नष्ट न होती हो, तो फस्द खोलो और जुलाब दो। फस्द खोलना हर हालत में मुफीद है। इस से सूजन जल्दी ही बैठ जाती है।

नोट—तिब्बे अकबरी में लिखा है—शीतल पदार्थ, बादाम का तेल, लम्बी बिया का तेल और चिकना शोरबा आदि भिलावे के विकार वाले को खिलाना लाभदायक है। अखरोट की मींगी भी—प्रकृति अनुसार—इस के विष को नाश करती है।

(१६) तिल और काली मिट्टी पीस कर लेप करने से भिलावों की सूजन नाश हो जाती है।

(१७) चौलाई का रस मक्खन में मिलाकर भिलावों की सूजन पर लगाने से शान्ति हो जाती है।

भाँगका वर्णन और उसके मदनाशक उपाय ।

संस्कृतमें भंगके गुणावगुण-अनुसार बहुतसे, नाम हैं। नामों सेही भंगके गुण मालूम हो जाते हैं। जैसेः—मादिनी, विजया, जया, त्रैलोक्य-विजया, आनन्दा, हर्षिणी, मोहिनी, मनोहरा, हरा, हरप्रिया, शिवप्रिया, ज्ञानवल्लिका, कामाग्नि, तन्द्रारुचिवर्द्धिनी प्रभृति। संस्कृतमें भाँगको भङ्गा भी कहते हैं। उसीका अपभ्रंश "भंग" है। बँगला में इसे सिद्धि, भंग और गाँजा कहते हैं। मरहटी में भाँग और गाँजा, गुजराती में भाँग और अँगरेज़ी में इण्डियन हैम्प कहते हैं।

भाँग कफनाशक, कड़वी, ग्राही—क़ाबिज़, पाचक, हल्की, तीक्ष्ण, गरम, पित्तकारक तथा मोह, मद, वचन और अग्निको बढ़ानेवाली एवं कोढ़ और कफनाशिनी, बलवर्द्धिनी, बुढ़ापे को नाश करनेवाली, मेधाजनक और अग्निकारिणी है। भंग से अग्नि दीपन होती, रुचि होती, मल रुकता, नींद आती और स्त्री-प्रसंग की इच्छा होती है। किसी-किसी ने इसे कफ और वात जीतनेवाली भी लिखा है।

हिकमतके एक निघण्टु में लिखा हैः—भाँग दूसरे दर्जे की गरम, रूखी और हानि करनेवाली है। इससे सिर में दर्द होता और स्त्री-प्रसंग में स्तम्भन या रुकावट होती है। भाँग पागल करनेवाली, नशा लानेवाली, वीर्यको सोखनेवाली, मस्तिष्क-सम्बन्धी प्राणों को गदला करनेवाली, आमाशय की चिकनाईको खींचनेवाली और सूजन को लय करनेवाली है।

भाँग के बीजों को संस्कृत में भङ्गाबीज, फारसी में तुख़्म बंग और अरबी में बजरुल-कनब कहते हैं। इन की प्रकृति गरम और

रूखी होती है। ये आमाशय के लिये हानिकारक, पेशाब लानेवाले स्तम्भन करनेवाले, वीर्य को सोखनेवाले, आँखों की रोशनी को मन्दी करनेवाले और पेट में विष्टंभताप्रद हैं। बीज निर्विषैल होते हैं। भाँग में भी विष नहीं है; पर कितने ही इसे विष मानते हैं। मानना भी चाहिये; क्योंकि यह अगर बेक़ायदे और बहुत ही ज़ियादा खा ली जाती है, तो आदमी को सदा को पागल बना देती और कितनी ही बार मार भी डालती है। हमने आँखों से देखा है, कि जैपुर में, एक मनुष्य ने एक अमीर जौहरी भंगड़ के बढ़ावे देने से, एक दिन, अनापशनाप भाँग पी ली। बस, उसी दिन से वह पागल होगया। अनेक इलाज होने पर भी उसे आराम न हुआ।

गाँझा भी भाँगकाही एकभेद है। भाँग दो तरह की होती है:—(१) पुरुष के नाम से, और (२) स्त्री के नाम से। पुरुष जाति के क्षुप से भाँग के पत्ते लिये जाते हैं। उन्हें लोग घोट कर पीते और भाँग कहते हैं। स्त्री-जाति के पत्तों से गाँझा होता है। इस गाँझेसे ही चरस बनता है। रात में, ओस पड़ने से जब गाँझे के पत्ते ओस से भीग जाते हैं, सवेरे ही आदमी उनके भीतर होकर घूमते हैं। ओस और पत्तों का मैल शरीर में लग जाता है। उसे वे मल-मल कर उतार लेते हैं। बस, इसी मैलको "चरस" कहते हैं। चरस काबुल और बलख़-बुख़ारे से बहुत आता है। दोनों तरह के वृक्ष एक ही जगह पैदा होते हैं। इसलिये इनकी जटाएँ नहीं बाँधी जा सकतीं। वैद्य लोग भंग और भंग के बीजों के सिवा इसके और किसी अंश को काम में नहीं लेते; पर गाँझा किसी-किसी नुसख़े में पड़ता है। भाँग की मात्रा ४ रत्ती की और गाँझे की आधी रत्ती की है।

हिकमत में लिखा है:—गाँझे को संस्कृत में गंजा, फ़ारसी में बंगदस्ती और अरबी में कतबबरीं कहते हैं। इसे चिलम में रख०

कर पीते हैं। यह तीसरे दर्जे का गरम और रूखा होता है। यह बेहोशी लाता और दिमाग़ को नुक़सान करता है। इसके दर्पनाशक घी और खटाई हैं। गाँझा यों तो सर्व्वाङ्ग को, पर विशेष कर मस्तिष्क-सम्बन्धी अवयवों को ढीले और सुन्न करता है। यह अत्यन्त रूखा है। शिथिलता करने और सुन्न करने में तो यह अफ़ीम का भी बावा है।

चरस को फ़ारसी में शबनम बंग कहते हैं। शबनम ओस को और बंग भाँग को कहते हैं। भाँग की पत्तियों पर ओस के जमने से यह बनता है; इसीसे इसे "शबनम बंग" कहते हैं। यह गरम और रूखा है। दिल और दिमाग़ को ख़राब कर देता है। इसका दर्पनाशक "गायका दूध" है; यानी गायका दूध पीने से इसके विकार नाश हो जाते हैं। यह भी नशा लानेवाला, रुकावट करनेवाला, सूजनको हटानेवाला, शरीरमें रूखापन करनेवाला और आँखों की रोशनी को नाश करने वाला है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, भाँग के बहुतही ज़ियादा खाने-पीने से जीभ में ढीलापन, श्वास में तंगी, बुद्धिहीनता, बकवाद और खुजली होती है।

नोट—भंग के बहुत खाने से उपरोक्त विकार हों, तो फ़ौरन कय कराओ तथा दूध और अन्जीर का काढ़ा पिलाओ अथवा बादाम का तेल और मक्खन खिलाओ। शराब पिलाना भी अच्छा कहा है। बहुत ही तकलीफ़ हो, तो शीतल तिरियोक यानी शीतल अगद सेवन कराओ।

यहाँ तक हमने भाँग, गाँजे और चरस के सम्बन्धमें जो लिखा है, वह अनेक पुस्तकों का मसाला है। अब हम कुछ अपने अनुभव से भी लिखते हैं:—

पहले की बात तो हम नहीं जानते; पर आजकल भारत में भाँग, गाँजे और चरस का इस्तेमाल बहुत बढ़ा हुआ है। भाँग को ऊँचे-नीचे सभी दर्जे के लोग पीते हैं। जो कभी नहीं पीते, वेभी होली के त्यौहार पर स्वयँ घोट या घुटवाकर पीते हैं। जो इसका

उतना शौक़ नहीं रखते; वे भी मित्रों के यहाँ जाकर पीते हैं। ऐसे भी लोग हैं, जो इसे नहीं पीते; पर हिन्दुओं को इस के पीने-में कोई बड़ा ऐतराज़ नहीं। भंग महादेवजी की प्यारी बूटी है, यह बात मशहूर है। जो लोग इसे सदा पीते हैं, वे इसे सहज में छोड़ नहीं सकते; पर अफीम की तरह इसके छोड़ने में बड़ी-बड़ी मुसीबतों का सामना नहीं करना पड़ता। छोड़ते समय, दस पाँच दिन सुस्ती रहती है। समय पर इस की याद आ जाती है। जिनको इसके पीने बाद पाख़ाने जाने की आदत हो जाती है, उन्हें कुछ दिन तक बिना इसके पिये दस्त साफ नहीं होता।

बहुतसे लोग भाँगका घी निकाल कर और घीको चाशनी में डाल कर बरफी सी बना लेते हैं। भाँगको घी में मिलाकर औटाने से भाँग का असर घी में आ जाता है। उस घी को छान लेने से हरे रंग का साफ घी रह जाता है। यह घी पाकों में भी डाला जाता है और उससे माजून भी बनती हैं। बहुत से लोग भाँगमें, चीनी और तिल मिला कर खाते हैं। इस तरह खाई हुई भाँग बहुत गरमी करती है। पर जिन का मिज़ाज बादी का है, जिन को घुटी हुई भाँग नुक़सान करती है, पेट फुलाती या जोड़ों में दर्द करती है, वे अगर इस तरह खाते हैं, तो हानि नहीं करती। जाड़े के मौसम में इस तरह खाना उतना बुरा नहीं, पर गरमी में इस तरह भाँग खाना बेशक बुरा है।

बहुत से लोग भाँग को भिगोकर और कपड़े में रखकर खूब धोते हैं। बारम्बार धोने से भाँग की गरमी और विषैला अंश निश्चय ही कम हो जाता है। इसी लिये कितने ही शौक़ीन इस को पोटली में बाँधकर, कूएँ के पानी के भीतर लटका देते हैं और फिर खींच-कर धोते और सुखा लेते हैं। जो ज़हरी भाँग पीने वाले हैं, वे ताम्बेके बासनमें भाँग और पुरानी चाल के मोटे ताम्बे के पैसे डालकर आग पर उबालते हैं। इस तरह औटाई हुई भाँग बहुत ही तेज़ हो

जाती है। यह भाँग अत्यन्त गरम होती है। जो नशेबाज़ इसकी हानियों को नहीं समझते, वे ही ऐसा करते और नाना प्रकारके रोगों को निमन्त्रण देकर बुलाते हैं।

भाँग अगर ठीक मसाला डाल कर, कम मात्रा में, घोटी-छानी और पीयी जाय; तो उतनी हानि नहीं करती; वरन अनेक लाभ करती है। गरमी के मौसम में, सन्ध्या-समय, मसालों के साथ घोट-छान कर पीयी हुई भाँग, मनुष्य को हैज़े के प्रकोप से बचाती, खूब भूख लगाती और रुचि बढ़ाती है। इस के नशे में सूखा-सर्रा जैसा भी भोजन मिल जाता है, बड़ा स्वाद लगता और जल्दी ही हज़म हो जाता है। इस के शाम को पीने और भोजन में रबड़ी या अधौटा दूध मिश्री मिला हुआ पीनेसे स्त्री-प्रसंग की इच्छा खूब होती है और बेफिक्री या निश्चिन्तता होने से आनन्द भी अधिक आता और स्तम्भन भी मामूल से ज़ियादा होता है; पर अत्यधिक भाँग पीने वालों को इन में से कोई भी आनन्द नहीं आता। वे इस के नशे में बहुत ही ज़ियादा नाक तक ठूँस-ठूँस कर खा लेने से बीमार हो जाते हैं। अगर बीमार नहीं होते, तो खाट पर जाकर इस तरह पड़ जाते हैं, कि लोग उन्हें मुर्दा समझने लगते हैं। वही कहावत चरितार्थ होती है,— "घर के जाने मर गये और आप नशे के बीच।" जो इस तरह अँधाधुन्ध भाँग पीते हैं, वे महामूर्ख होते हैं।

भाँग गरम-बादी या उष्णवात पैदा करती है और सौंफ गरम-बादी को नाश करती है; अतः भाँग पीनेवालों को भाँग के साथ "सौंफ" अवश्य लेनी चाहिये। सौंफ के सिवा, बादाम, छोटी इलायची, गुलाब के फूल, खीरे ककड़ी के बीजों की मींगी, मुलेठी, खस-खस के दाने, धनिया, सफेद चन्दन आदि भी लेने चाहियें। इन के साथ पीस कर और मिश्री या चीनी के साथ छान कर भाँग पीने से, गरमी के मौसम में, बेइन्तहा फायदे होते हैं। पर एक आदमी

के हिस्से में एक या दो तीन रत्ती से ज़ियादा भाँग न आनी चाहिये। भाँग को खूब धुलवाकर, बीज निकाल देने चाहियें। छानते समय थोड़ा सा अर्क़ गुलाब या अर्क़ केवड़ा भी मिला दिया जाय, तो क्या कहना? सफ़ेद चन्दन कड़वा होता है; अत: वह बहुत थोड़ा लेना चाहिये। हमने स्वयं इस तरह भाँग पी कर अनेक लाभ उठाये और बरसों भाँग पीकर भी, रत्ती दो रत्ती से ज़ियादा नहीं बढ़ायी। एक बार, बलूचिस्तान में, जहाँ बर्फ़ पड़ती है, सर्दी के मारे आदमी का करमकल्याण हो जाता है, हमने "विजया पाक" बनाकर खाया था। वहाँ कोई भी जाड़े में भंग पी नहीं सकता। पानी के बदले लोग चाय पीते हैं। हाँ, उस विजयापाक ने हमारा बल-पुरुषार्थ खूब बढ़ाया। सच पूछो तो ज़िन्दगी का मज़ा दिखाया। विजयापाक या भाँग के साथ तैयार होने वाले अनेकों अमृत-समान नुसखे हमने "चिकित्साचन्द्रोदय चौथे भाग" में लिखे हैं।

विधिपूर्व्वक और युक्ति के साथ, उचित मात्रा में खाया हुआ विष जिस तरह अमृत का काम करता है: भाँग को भी वैसी ही समझिये। जो लोग बेक़ायदे, गाय भैंस की तरह इसे चरते या खाते हैं, वे निश्चय ही नाना प्रकार के रोगों के पञ्जों में फँसते और अनेक तरह के दिल-दिमाग़-सम्बन्धी उन्मादादि रोगों के शिकार होकर बुरी मौत मरते हैं। इसके बहुत ही ज़ियादा खाने-पीने से सिर में चक्कर आते हैं, जी मिचलाता है, कलेजा धड़कता है, ज़मीन-आस्मान चलते दीखते हैं, कंठ सूखता है, अति निद्रा आती है, होश-हवास नहीं रहते, मनुष्य बेढंगी बकवाद करता और बेहोश हो जाता है। अगर जल्दी ही उचित चिकित्सा नहीं होती, तो उन्माद रोग हो जाता है। अत: समझदार इसे न लगावें और जो लगावें ही तो अल्प मात्रा में सेवन करके ज़िन्दगी का मज़ा उठावें। चूँकि भाँग गरम और रूखी है, अत: इसके सेवन करने वालों को घी, दूध, मलाई, मलाई का हलवा, बादाम का हरीरा,

शीतल शर्बत आदि ज़रूर इस्तेमाल करने चाहियें। जिन्हें ये चीज़ें नसीब न हों, वे भाँग को मुँह न लगावें। इन के बिना भाँग पीनेसे हानि के सिवा कोई लाभ नहीं।

भाँग के चन्द नुसख़े।

(१) भाँग १ तोले और अफ़ीम १ माशे—दोनों को पानी में पीस, कपड़े पर लेपकर, ज़रा गरम करके गुदा-द्वार पर बाँध देने से बवासीर की पीड़ा तत्काल शान्त होती है। परीक्षित है।

(२) भाँग की पत्तियाँ, इमली की पत्तियाँ, नीम के पत्ते, बकायन के पत्ते, सम्हालू के पत्ते और नील की पत्तियाँ—-इन को पाँच-पाँच तोले ले कर, सवा सेर पानी में डाल, हाँडी में काढ़ा करो। जब तीन पाव जल रह जाय, चूल्हे से उतार लो। इस काढ़े का बफारा बवासीर वाले को गुदा को देने से मस्से नाश हो जाते हैं।

(३) भाँग को भूँजकर पीस लो। फिर उसे शहद में मिला कर, रात को, सोते समय, चाट लो। इस उपाय से घोर अतिसार, पतले दस्त, नींद न आना, संग्रहणी और मन्दाग्नि रोग नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(४) भाँग को बकरी के दूध में पीसकर, पाँवों पर लेप करने से निद्रानाश रोग आराम होकर नींद आती है।

(५) छै माशे भाँग और छै माशे कालीमिर्च,—दोनों को सूखी ही पीसकर खाने और इसी दवा को सरसों के तेल में मिलाकर मलने से पक्षाघात रोग नाश हो जाता है।

(६) भाँग को जल में पीस, लुगदी बना, घी में सान कर गरम करो। फिर टिकिया बनाकर गुदा पर बाँध दो और लंगोट कस लो। इस उपाय से बवासीर का दर्द, खुजली और सूजन नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(७) भाँग और अफीम मिलाकर खाने से ज्वरातिसार नाश हो जाता है। कहा है:—

ज्वरस्यैवातिसारे च योगो भंगाहिफेनयोः ॥

(८) वात व्याधि में बच और भाँग को एकत्र मिला कर सेवन करना हितकारक है। पर साथ ही तेल की मालिश और पसीने लेनें की भी दरकार है।

भाँग का नशा या मद नाश करने के उपाय।

आरम्भिक उपाय—:

"वैद्यकल्पतरु" में एक सज्जन लिखते हैं—भाँग या गाँजे का नशा अथवा विष चढ़ने से आँखें और चेहरा लाल हो जाता है, रोगी हँसता, हल्ला करता और गाली देता या मारने दौड़ता है तथा रह-रह कर उन्माद के से लक्षण होते हैं।

उपायः—

(१) क़य और दस्त कराओ।

(२) सिर पर शीतल जल की धारा छोड़ो।

(३) एमोनिया सुँघाओ।

(४) रोगी को सोने मत दो।

(५) दही या माठे के साथ भात खिलाओ।

नोट—हमारे यहाँ भाँग में सोने देने की मनाही नहीं—उलटा सुलाते हैं और अक्सर गहरा नशा उतर भी जाता है। शायद कल्पतरु के लेखक महोदयने न सोने देनेकी बात किसी ऐसे ग्रन्थके आधार पर लिखी हो, जिसे हमने न देखा हो अथवा भाँग से रोगी की मृत्यु होने की संभावना हो, उस समय सोने देना बुरा हो।

(१) भंग का नशा बहुत ही तेज़ हो, रोगी सोना चाहे तो सो जाने दो। सोने से अक्सर नशा उतर जाता है। अगर भाँग खानेवाले के गले में खुश्की बहुत हो, गला सूखा जाता हो; तो उसके गले

पर घी चुपड़ो । अरहर की दाल पानी में धोकर, वही धोवन या पानी पिला दो । परीक्षित है ।

(२) पेड़ा पानी में घोल कर पिलाने से भाँग का नशा उतर जाता है ।

(३) बिनौलों की गिरी दूध के साथ पिलाने से भाँग का नशा उतर जाता है ।

(४) अगर गाँझा पीनेसे बहुत नशा हो गया हो: तो दूध पिलाओ अथवा घी और मिश्री मिलाकर चटाओ । खटाई खिलाने से भी भाँग और गाँझे का नशा उतर जाता है ।

(५) इमली का सत्त खिलाने से भांग का नशा उतर जाता है। कई बार परीक्षा की है ।

(६) कहते हैं, बहुत सा दही खा लेने से भाँग का नशा उतर जाता है । पुराने अचार के नीबू खाने से कई बार नशा उतरते देखा है ।

(७) अगर भाँगकी वजह से गला सूखा जाता हो, तो घी, दूध और मिश्री मिलाकर निवाया-निवाया पिलाओ और गले पर घी चुपड़ो । कई बार फ़ायदा देखा है ।

(८) भाँग के नशे की ग़फ़लत में ऐमोनिया सुँघाना भी लाभ-दायक है । अगर एमोनिया न हो, तो चूना और नौसादर लेकर, ज़रा से जलके साथ हथेलियों में मल कर सुँघाओ । यह घरू एमोनिया है ।

(९) सोंठ का चूर्ण गाय के दही के साथ खाने से भाँग का विष शान्त हो जाता है ।

जमालगोटे का वर्णन और उसकी शान्तिके उपाय।

जमालगोटा विष नहीं है; पर कभी-कभी यह विष का सा काम करता है। यह दो तरह का होता है। एक को छोटी दन्ती और दूसरे को बड़ी दन्ती कहते हैं। इसकी जड़ को दन्ती, फलों को दन्तीबीज या जमालगोटा कहते हैं। ये फल अरण्डी के छोटे बीजों-जैसे होते हैं। ये बहुत ही तेज़ दस्तावर होते हैं। बिना शोधे खाने से भयानक हानि करते और इस दशा में वमन और विरेचन दोनों होते हैं। अतः इन्हें बिना शोधे हरगिज़ न लेना चाहिये।

फलों के बीच में एक दो परती जीभी सी होती है, उसी से क़य होती हैं। मींगियों में तेल सा तरल पदार्थ होता है; इसीसे वैद्य लोग शोध कर, उस चिकनाई को दूर कर देते हैं। जब जीभी निकल जाती है और चिकनाई दूर हो जाती है, तब जमालगोटा खानेके कामका होता है।

जमालगोटा भारी, चिकना, दस्तावर तथा पित्त और कफ नाशक है। किसीने इसे कृमिनाशक, दीपक और उदरामय-शोधक भी लिखा है। किसीने लिखा है, जमालगोटा गरम, तीक्ष्ण, कफनाशक, क्लेद-कारक और दस्तावर होता है।

जमालगोटे का तेल, जिसे अगरेज़ी में, "क्रोटन आयल" कहते हैं, अत्यन्त रेचक या बहुत ही तेज़ दस्तावर होता है। इस से अफ़ारा, उदररोग, संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकांग रोग, आमवात और सूजन नष्ट होते हैं। इस से खाँसी भी जाती है। डाकृर लोग इस का व्यवहार बहुत करते हैं।

वैद्य लोग जमालगोटे को शोधकर, उचित औषधियों के साथ, एक रत्ती अनुमान से देते हैं। इस के द्वारा दस्त कराने से उदर रोग और जीर्णज्वर आदि रोग नाश हो जाते हैं।

शोधन-विधि ।

जमालगोटा शोधने की बहुत सी तरकीबें लिखी हैं:—

(१) जमालगोटे के बीच में जो दोपरती जीभी सी होती है, उसे निकाल डालो । फिर ; उसे दूधमें, दोलायंत्र की विधि से, पकालो । जमालगोटा शुद्ध हो जायगा ।

(२) जमालगोटे को भैंसके गोबर में डालकर ६ घन्टे तक पकाओ । इस के बाद, जमालगोटे के छिलके उतार कर, भीतर की जीभी निकाल फैंको । शेष में, उसे नीबू के रस में दो दिन तक घोटो । बस, अब जमालगोटा कामका हो जायगा ।

जमालगोटे से हानि ।

इसके ज़ियादा खा लेनेसे बहुतही दस्त लगते हैं,मल टूट जाता है,कय होती हैं, ऐंठनी चलती हैं,आँतोंमें घाव हो जाते हैं और पट्ठे खिंचने लगते हैं।

शान्ति के उपाय ।

(१) धनिया, मिश्री और दही—तीनों मिलाकर खाने से जमाल-गोटे के उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

(२) अगर कुछ भी न हो,तो पहले थोड़ा सा गरम पानी पिला दो; फौरन दस्त बन्द हो जायँगे । अगर इस से लाभ न हो—दस्त बन्द न हों, तो दो या चार चाँवल भर अफीम खिला कर, ऊपर से घी-मिला दूध पिला दो । अगर गरमी का मौसम हो, तो दूध शीतल करके पिलाओ और यदि जाड़ा हो तो ज़रा गरम पिलाओ ।

(३) कहते हैं, बिना घी निकाली छाछ पिला देने से भी जमाल-गोटे के उपद्रव शान्त हो जाते हैं ।

औषधि-प्रयोग ।

(१) केवल जमालगोटे को घी में पीस कर खाने और ऊपर से शीतल जल पीने से सर्प-विष तत्काल शान्त होता है । कहा है—

किमत्र बहुनोक्तेन जैपालेनैव तत्क्षणम्।
घृतं शीताम्बुना श्रेष्ठं भंजनं सर्पदंशके ॥

(२) जमालगोटे की जड़, चीते की जड़, थूहर का दूध, आक का दूध, गुड़, भिलावे, हीरा कसीस और सेंधानोन—इन सब का लेप करने से फोड़ा फूट जाता और पीड़ मिट जाती है।

(३) करंजुए के बीज, भिलावा, जमालगोटे की जड़, चीता, कनेर की जड़, कबूतर की बीट, कंक की बीट और गीध की बीट—इन सब का लेप फोड़े को तत्काल फोड़ देता है।

अफीमका वर्णन और उसकी विष-शान्ति के उपाय।

ख़सख़स के दानों को कातिक के महीनें में खेतों में बो देते हैं, १०।१२ दिन में पेड़ उग आते हैं। फूल निकलने तक खेतों की सिंचाई करते हैं। पोस्ते के पेड़ कमर या छाती-भर अथवा दोसे चार हाथ तक ऊँचे होते हैं। पत्ते तीन अँगुल चौड़े और लम्बे होते हैं। अगहन के महीने में सीधी डंडीवाला फूल निकलता है। फूल दो तरह के होते हैं:—(१) लाल, और (२) सफेद। भारत में सफेद फूल का पेड़ बहुत कम बोया जाता है। फूल से असंख्य बीजोंवाला फल होता है। उसे बोंडी या डोडी कहते हैं। फल पकने से पहले माघ-फागुन में, सवेर ही, डोडी के ऊपर तीन नोक के औज़ार से चोंच-जैसा छेद कर देते हैं। उन छेदों से धीरे-धीरे रस बहता है। रस डोडी के बाहर आते ही, हवा लगने से, सफ़ेद

हो जाता है। फिर इस का गुलाबी या किसी क़दर काला रंग हो जाता है। किसान इसको खुरच-खुरच कर इकट्ठा करते और इसी से अफ़ीम बना कर भारत-सरकार के हवाले कर देते हैं। पोस्ता की खेती का पूरा हाल लिखने से अनेक सफ़े भरेंगे। हमें उतना लिखने की यहाँ ज़रूरत नहीं। ये दो चार बातें इसलिये लिख दी हैं, कि अनजान लोग जान जायें, कि अफ़ीम खेती द्वारा पैदा होती है और यह पोस्ते की डोडियों का रस मात्र है। इसीसे अफ़ीम को संस्कृत में ख़सख़स-फल-क्षीर, पोस्त-रस या ख़सख़स-रस भी कहते हैं।

संस्कृत में अफ़ीम के और भी बहुत से नाम हैं। जैसे,—आफ़ूक, अहिफ़ेन, अफ़ेनु, निफ़ेन, नागफेन, भुजङ्गफेन या अहिफेन। अहि साँप को कहते हैं और फेन झागों को कहते हैं। भुजङ्ग का अर्थ सर्प है और फेन का झाग। इन शब्दों से ऐसा मालूम होता है, कि अफ़ीम साँप के झागों से तैयार होती है, पर यह बात बिल्कुल बेजड़ है। ऊपर का पेरा पढ़ने से मालूम हो गया होगा, कि अफ़ीम खेत में पैदा होनेवाले एक वृक्ष के फल का रस है। अब यह सवाल पैदा होता है कि, भारत के लोगों ने इसका नाम अहिफेन, भुजङ्गफेन या नागफेन क्यों रक्खा? मालूम होता है, अफ़ीम के गुण देख कर, गुणों के अनुसार इसका नाम अहिफेन= साँप का फेन रखा गया, क्योंकि साँप के फेन या विष से मृत्यु हो जाती है और इस के अधिक खाने से भी मृत्यु हो जाती है। वास्तव में, यह शब्दार्थ सच्चा नहीं।

असल में, अफ़ीम इस देश की पैदाइश नहीं। आलू और तमाखू जिस तरह दूसरे देशों से भारत में आये; उसी तरह अफ़ीम भी दूसरे देशों से भारत में लाई गयी; यानी दूसरे देशों से पोस्ता के बीज लाकर, भारत में बोये गये और फिर काम की चीज़ समझ कर, इस की खेती होने लगी। वैद्यकल्पतरु में एक सज्जन ने लिखा है कि, ग्रीक भाषा में "ओपियान" शब्द है। उसका अर्थ "नींद"

लाने वाला" है। उसी ओपियान से ओपियम, अफियून, अफून, आफू या अफीम शब्द बन गये जान पड़ते हैं। यह मादक या नशीला पदार्थ है। इससे नींद भी गहरी आती है। इस की गणना उपविषों में है, क्योंकि इस के अधिक परिमाण में खाने से मृत्यु हो जाती है।

अफीम यद्यपि विष या उपविष है; प्राणनाशक या घातक है; फिर भी भारतवर्ष के करोड़ों आदमी इसे नित्य नियमित रूप से खाते हैं। राजपूताने या मारवाड़ देश में इस का प्रचार सब से अधिक है। जिस तरह युक्तप्रान्त में किसी मित्र या मेहमानके आने पर पान, तम्बाकू या शर्बत की ख़ातिर की जाती है, वहाँ इसी तरह अफीम की मनुहार की जाती है। जो जाता है, उसे ही घुली हुई अफीम हथेलियों में डाल कर दी जाती है। महफिलों और विवाह-शादी तथा लड़का होने के समय जो घुली हुई लेता है, उसे घोलकर और जो डली पसन्द करता है, उसे डली देते हैं। खाने वाला पहले तो अपने घर पर अफीम खाता है और फिर दिन-भर में जितनी जगह मिलने जाता है, वहाँ खाता है। मारवाड़ के राजपूत या ओसवाल एवं अन्य लोग इसे खूब पसन्द करते हैं। कोई-कोई ठाकुर या राजपूत दिन-भर में छटाँक-छटाँक भर तक खा जाते हैं और हर समय नशे में झूमते रहते हैं। जैपुर में एक नव्वाब साहब सवेरे-शाम पाव-पाव भर अफीम खाते थे और इस पर भी जब उन्हें नशा कम मालूम होता था, तब साँप मँगवा कर खाते थे। ऐसे-ऐसे भारी अफीमची मारवाड़ या राजपूताने में बहुत देखे जाते हैं। जहाँ देशी राजाओं का राज है, वहाँ अफीम का ठेका नहीं दिया जाता; हर शख्स अपने घर में मनमानी अफीम रख सकता है। वहाँ अफीम खूब सस्ती होती है और यहाँ की अपेक्षा साफ-सुथरी और बेमेल मिलती है। भारतीय ठेकेदार या सरकार—भगवान् जाने कौन—भारतीय अफीम में

कत्था कोयला मिट्टी प्रभृति मिला देते हैं। अफीम शोधने पर दो हिस्से मैला और एक हिस्सा शुद्ध अफीम मिलती है। जो बिना शोधी अफीम खाते हैं, उन्हें अनेक रोग हो जाते हैं।

मुसल्मानी राजत्व काल में, दरबार के समय, अफीम की मनुहार की चाल बहुत हो गई। वहीं से यह चाल देशी रजवाड़ों में भी फैल गई। जहाँ अफीम की मनुहार नहीं की जाती, वहाँ की लोग निन्दा करते हैं। इसलिये ग़रीब-से-ग़रीब भी घर आये को अफीम घोलकर पिलाता है। ये बातें हमने मारवाड़ में आँखों से देखी हैं। पर इतनी ही खैर है कि, यह चाल राजपूतों, चारणों या राज के कारबारियों में ही अधिक है। मामूली लोग या ब्राह्मण बनिये इस से बचे हुए हैं। अगर खाते भी हैं, तो अल्पमात्रा में और नियत समय पर।

अफीम का प्रचार यों तो किसी न किसी रूप में सारी दुनिया-में फैल गया है, पर भारत और ख़ासकर चीन देश में अफीम का प्रचार बहुत है। भारत में इसे घोल कर या योंही खाते हैं। एक विशेष प्रकार की नलीमें रखकर, ऊपर से आग रखकर, तमाखू की तरह भी पीते हैं। इसी को चण्डू पीना कहते हैं। अफीम पिलाने के चण्डूखाने भारत में जहाँ तहाँ देखे जाते हैं। चीन में तो इन की अत्यन्त भरमार है। भारत और चीन में, इसे छोटे-छोटे नवजात शिशुओं को भी उनकी मातायें बालघूँटी में या योंही देती हैं। इस के खिला-पिला देने से बालक नशे में पड़ा रहता है, रोता-झींकता नहीं; माँ अपना घरका काम किया करती है। पर इसका नतीजा ख़राब होता है। अफीम खानेवाले बच्चे और बच्चोंकी तरह हृष्ट-पुष्ट और बलवान नहीं होते।

योरप में अफीम का सत्व निकाला जाता है। इसे मारफिया कहते हैं। इस में एक विचित्र गुण है। शरीर के किसी भाग में असह्य वेदना या दर्द होता हो, उस जगह चमड़े में बहुत ही बारीक

छेद करके; एक सूई के द्वारा उस में मारफिया की एक बूँद डाल देने से, वहाँ का घोर दर्द तत्काल छू मंतर की तरह उड़ जाता है। परन्तु साथ ही एक प्रकार का नशा चढ़ता है और उस से अपूर्व्व आनन्द बोध होता है। इस तरह दो चार बार मारफिया शरीर के भीतर छोड़ने से इसका व्यसन हो जाता है। रह-रह कर उसी आनन्द की इच्छा होती है। तब वहाँ के मर्द और औरत, खास कर मेमें, इसे अपने शरीर में छुड़वाने के लिये, डाक्टरों के पास जाती हैं। फिर जब इस के छोड़ने का तरीका जान जाती हैं, अपने पास हर समय मारफिया से भरी हुई पिचकारी रखती हैं। उस पिचकारी के सूई से मुँह को अपने शरीर के किसी भागमें गड़ाती हैं और मारफिया की एक बूँद उस में डाल देती हैं। इस के शरीर में पहुँचते ही थोड़ी देर के लिये आनन्द की लहरें उठने लगती हैं। जब उस का असर जाता रहता है, तब फिर उसी तरह शरीर में छेद करके फिर एक बूँद मारफिया उसमें डाल देती हैं। इस तरह रोज़ करने से उनके शरीर मारे छेदों या घावों के चलनी हो जाते हैं। फिर भी उनकी यह खोटी लत नहीं छूटती।

हिन्दुस्तान में जिस तरह गुड़ और तमाखू कूट कर गुड़ाखू बनाई जाती है और छोटी सुलफी चिलमों में रखकर पीयी जाती है; उस तरह दक्खन महासागर के सुमात्रा बोर्न्यू आदि टापुओं के रहने वाले अफीम में चीनी और केले मिलाकर गुडाखू बनाते और पीते हैं। तुरकिस्तान के रहने वाले अफीम में गाँजा प्रभृति नशीले पदार्थ मिलाकर या और मसाले मिलाकर माजून बनाकर खाते हैं। कोई-कोई चीनी और अफीम घोल कर शर्बत बनाते और पीते हैं। आसाम, बरमा और चीन देश में तो अफीम से अनेक प्रकार के खाने के पदार्थ बनाकर खाते हैं। मतलब यह है, कि दुनिया के सभी देशों में, तमाखू की तरह, इस का प्रचार किसी-न-किसी रूप में होता ही है।

अफीम में स्तम्भन-शक्ति होती है। भारत में, आजकल, सौ में नब्बे आदमियों को प्रमेह, धातुक्षीणता या धातुदोष का रोग होता है। ऐसे लोग स्त्री-प्रसंग में दो चार मिनट भी नहीं ठहरते; क्योंकि वीर्य के पतले या दोषी होने से स्तम्भन नहीं होता। इसलिये अनेक मूर्ख अफीम, गाँजा या चरस आदि नशीले पदार्थ खाकर प्रसंग करते हैं। कुछ दिनों तक इनके खाने से उन्हें आनन्द आता और कुछ न कुछ अधिक स्तम्भन भी होता है। फिर तो उन्हें इसका व्यसन हो जाता है—आदत पड़ जाती है, रोज़ खाये-पिये बिना नहीं सरता। कुछ दिन इनके लगातार सेवन करते रहने से फिर स्तम्भन भी नहीं होता, नसें ढीली पड़ जातीं और पुरुषत्व जाता रहता है। महीनों स्त्री की इच्छा नहीं होती। इसके सिवा, और भी बहुत सी हानियाँ होती हैं, जिन्हें हम आगे लिखेंगे।

भारत में, अफीम दवाओं में मिलाने या और तरह सेवन कराने की चाल पहले नहीं के समान थी। हिकमत की दवाओं में अफीम का ज़ियादा इस्तेमाल देखा जाता है। हकीमों की देखा-देखी वैद्य भी इसे, मुसल्मानी ज़माने से, दवाओं के काम में लाने लगे हैं। योरप में अफीम का सत्त—मारफिया बहुत बरता जाता है। अफीम हानिकर उपविष होने पर भी, अनेक रोगों में अपूर्व्व चमत्कार दिखाती है। बेमेल और स्वच्छ अफीम दवा की तरह काम में लाई जाय, तो बड़ी गुणकारी साबित होती है। अनेक असाध्य रोग जो और दवाओं से नहीं जाते, इससे चले जाते हैं। चढ़ी उम्र में जब नजले की खाँसी होती है, तब शायद ही किसी दवा से पीछा छोड़ती हो। हमने अनेक नजले की खाँसी वालों को तरह-तरह की दवायें दीं, मगर उनकी खाँसी न गई; अन्त में अफीम खाने की सलाह दी। अल्प मात्रा में शुद्ध अफीम खाने और उस पर दूध अधिक पीने से वह आरोग्य हो गये; खाँसी का नाम भी न रहा। इतनाही नहीं, वह पहले से मोटेताज़े भी होगये। सच पूछो तो चढ़ी उम्र में नजले

की खाँसी की अफीम के सिवा और दवा ही नहीं। बादशाह अकबर को भी बुढ़ापे में नजले की खाँसी होगई थी। बड़े-बड़े नामी दरबारी हकीमों ने लाखों-करोड़ों की दवाएँ बनाकर शाहन्शाहको खिलाईं, पर खाँसी न गई; तब लाचार होकर अफीम का आश्रय लेना पड़ा। अन्तकाल तक बादशाह की ज़िन्दगी की नाव अफीम ने ही खेयी। कहिये, दिल्लीश्वर के यहाँ क्या अभाव था? आकाश के तारे भी तोड़ कर लाये जा सकते थे। दुर्लभ से दुर्लभ दवाएँ आ सकती थीं। हकीम-वैद्य भी अकबर के दरबार से बढ़ कर कहाँ होंगे?

शराब या मदिरा भी यदि थोड़ी और क़ायदे से पीयी जाय, तो मनुष्य को बड़ा लाभ पहुँचाती है, परन्तु उस से शरीर की सन्धियाँ पुष्ट न होकर उलटी ढीली हो जाती हैं; पर अफीम से शरीर के जोड़ पुष्ट होते हैं। सरकारी कमीशन के सामने गवाही देते समय भी भारत के देशी और यूरोपीय चिकित्सकों ने कहा था—"व्यसनके रूपमें भी शराब की अपेक्षा अफीम ज़ियादा गुणकारी है।" सरकार ने अफीम का प्रचार रोकने के लिये कमीशन बिठाया था, पर अन्त में अफीम के सम्बन्ध में ऐसी-ऐसी बातें सुनकर, उसे अपना विचार बदल देना पड़ा।

डाक्टरी पुस्तकों में अफीम के सम्बन्ध में लिखा है:—"अफीम मस्तिष्क में उत्तेजना करने वाली, नींद लाने वाली, दर्द या पीड़ा नाश करने वाली, पसीना लाने वाली, थकान नाश करने वाली और नशीली है। अफीम की हल्की मात्रा लेने से, पहले उस की गरमी सारे शरीर में फैलती है, पीछे सिर में नशा होता है। पूरी मात्रा खाने से १५।२० मिनट में ही नशा आने लगता है। पहले सिर में कुछ भारीपन मालूम होता है। इस के बाद शरीर चैतन्य हो जाता है और बदन में किसी तरह की वेदना होती है, तो वह भी हवा हो जाती है। इससे बुद्धि खिलती है, क्यों

नसें इस से पुष्ट होती हैं। बातें बनाने की अधिक सामर्थ्य हो जाती है एवं हिम्मत-साहस, पराक्रम और चातुरी बढ़ जाती है। शरीर में बल और फुर्त्ती आ जाती है और एक प्रकार का अकथनीय आनन्द आता है। इस अवस्था के थोड़ी देर बाद—घड़ी दो घड़ी या ज़ियादा देर बाद सुख की नींद आती है। अफीम का प्रभाव प्रकृति-भेद से भिन्न-भिन्न प्रकार का होता है। किसी को इस से दस्त साफ़ होता है और किसी को दस्तकब्ज़ होता है। किसी को इस से नशा बहुत होकर ग़फ़लत होती है और किसी के शरीर में उत्तेजना फैलने से चैतन्यता होती है। दर्द की हालत में देने से कम नशा आता है। भरे पेट पर अफीम जल्दी नहीं चढ़ती, पर ख़ाली पेट खाने से जल्दी नशा लाती है। मृत्युकाल नज़दीक होने पर, ज़रा सी भी अफ़ीम की मात्रा शीघ्र ही मृत्यु कर देती है।"

आयुर्वेदीय ग्रन्थों में लिखा है, अफीम शोषक, ग्राही, कफनाशक, वायुकारक, पित्तकारक, वीर्यवर्द्धक, आनन्दकारक, मादक, वीर्य-स्तम्भक तथा सन्निपात, क्रमि, पाण्डु, क्षय, प्रमेह, श्वास, खाँसी, प्लीहा और धातुक्षय रोग नाशक होती है। अफीम के जारण, मारण, धारण और सारण चार भेद होते हैं। सफ़ेद अफीम अन्न को जीर्ण करती है, इसलिये उसे "जारण" कहते हैं। काली मृत्यु करती है, इसलिये उसे "मारण" कहते हैं। पीली जरा-नाशक है, इसलिये उसे "धारण" कहते हैं। चितवर्ण की मल को सारण करती है, इसलिये उसे "सारण" कहते हैं। अफीम के दर्प को नाश करने वाले घी और तबासीर हैं और प्रतिनिधि या बदल आसवच है। मात्रा पाव रत्ती या दो चाँवल-भर की है।

यद्यपि अफीम प्राणनाशक विष या उपविष है; तथापि अनेक भयङ्कर रोगों में अमृत है। इसलिये हम इस के उत्तमोत्तम प्रयोग या नुसख़े पाठकों के उपकारार्थ लिखते हैं। इन में से जो नुसख़े हमारे आज़मूदा हैं; उन के सामने परीक्षित शब्द लिखेंगे। पर जिन

के सामने "परीक्षित" शब्द न हो, उन्हें भी आप काम के समझें—व्यर्थ न समझें। हम ने चिकित्साचन्द्रोदय के पहले के भागों में जो नुसखे लिखे हैं, उन में से अधिक परीक्षित हैं, पर जिन को अनेक बार परीक्षा नहीं की—एकाध बार परीक्षा की है—उन के सामने "परीक्षित" शब्द नहीं लिखे। पाठक परीक्षित और अपरीक्षित दोनों तरह के नुसखों से काम लें। बेकाम नुसखे हम क्यों लिखने लगे? सम्भव है, इतने बड़े संग्रह में, कुछ बे-काम नुसखे भी निकल आवें, पर बहुत कम; क्योंकि हम इस काम को अपनी सामर्थ्य भर विचार-पूर्व्वक कर रहे हैं।

औषधि-प्रयोग।

(१) बलाबल अनुसार, पावरत्ती से दो रत्ती तक, अफीम पान में धर कर खाने से धनुस्तंभ रोग नाश हो जाता है।

(२) शुद्ध अफीम, शुद्ध कुचला और काली मिर्च—तीनों को बराबर-बराबर लेकर, बँगला पानों के रस के साथ घोटकर, एक-एक रत्ती की गोलियाँ बनाकर, छाया में सुखा लो। एक गोली, सवेरे ही, खाकर, ऊपर से पान का बीड़ा या खिल्ली खाने से दण्डापतानक रोग, हैज़ा, सूजन और मृगी रोग नाश हो जाते हैं। इन गोलियों का नाम "समीरगज केसरी बटी" है; क्योंकि ये गोलियाँ समीर यानी वायु के रोगों को नाश करती हैं। वायु-रोगों पर ये गोलियाँ बराबर काम देती हैं। जिस में भी दण्डापतानक रोग पर, जिस में शरीर दण्डे की तरह अचल हो जाता है, खूब काम देती हैं। इसके सिवा हैज़ा वग़ैरः उपरोक्त रोगों पर भी फेल नहीं होतीं। परीक्षित हैं।

नोट—अभी एक ग़रीब ब्राह्मण, एक नीमहकीम के कहने से, बुखार में बोतलों शर्बत गुलबनफशा पी गया। बेचारेका शरीर लकड़ी हो गया। सारे जोड़ों में दर्द और सूजन आ गई। हमारे एक स्नेही मित्र और ज्योतिष-विद्याके धुरन्धर विद्वान् पण्डित मन्नीलाल जी व्यास बीकानेरवाले, दयावश, उसे उठवा कर हमारे

पास ले आये। हमने उसे यही "समीरगजकेशरी वटी" खाने की और नारायण तेल सारे शरीर में मलने की सलाह दी। जगदीश की दया से, पहले दिन ही फायदा नज़र आया और ५।६ दिनमें रोगी अपने बलसे चलने फिरने लगा। आज वह आनन्द से बाजार गया है। ये गोलियाँ गठिया रोग पर भी रामबाण साबित हुई हैं।

(३) अफीम और कुचले को तेल में पीस कर, नसों के दर्द पर मलने और ऊपर से गरम करके धतूरे के पत्ते बाँधने से लँगड़ापन आराम हो जाता है। आदमी अगर आरंभ में ही इस तेल को लगाना आरंभ करदे; तो लँगड़ा न हो। परीक्षित है।

(४) अगर अजीर्ण ज़ोर से हो और दस्त होते हों, तो आप रेंडी के तेल या किसी और दस्तावर दवा में मिलाकर अफीम दीजिये, फौरन लाभ होगा। परीक्षित है।

(५) केशर और अफीम बराबर-बराबर लेकर घोट लो। फिर इस दवा में से चार चाँवल-भर दवा "शहद" में मिला कर चाटो। इस तरह कई दफा चाटने से अतिसार रोग मिट जाता है। परीक्षित है।

(६) एक रत्ती अफीम बकरी के दूध में घोटकर पिलाने से पतले दस्त और मरोड़ी के दस्त आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(७) अगर पित्तज पथरी के नीचे उतर जाने से, यकृत के नीचे, पेट में, बड़े ज़ोरों का दर्द हो, रोगी एकदम घबरा रहा हो, कल न पड़ती हो, तो उसे अफीम का कसूँबा या घोलिया— जलमें घोली हुई अफीम दीजिये; बहुत जल्दी आराम होगा। दर्द से रोता हुआ रोगी हँसने लगेगा।

(८) नीबू के रस में अफीम घिस-घिस कर चटाने से अतिसार आराम हो जाता है।

(९) बहुत से रोग नींद आने से दब जाते हैं। उन में नींद लाने को, बलाबल देख कर, अफीम की उचित मात्रा देनी चाहिये।

नोट—जब किसी रोग के कारण नींद नहीं आती, तब अफीम की हल्की या

वाजिब मात्रा देते हैं। नींद आने से रोग का बल घटता है। ज्वर के सिवा और सभी रोगों में अफीम से नींद आ जाती है। उन्माद रोग में नींद बहुधा नाश हो जाती है और नींद आने से उन्माद रोग आराम होता है। उन्माद रोग के साथ होने वाले निद्रानाश रोग को अफीम फौरन नाश कर देती है। उन्माद में हर बार एक-एक रत्ती अफीम देने से भी कोई हानि नहीं होती। उन्माद-रोगी अफीम की अधिक मात्रा को सह सकता है; पर सभी तरह के उन्माद रोगों में अफीम देना ठीक नहीं। जब उन्माद रोगीका चेहरा फीका हो, नाड़ी मन्दो चलती हो और नींद न आने से शरीर कमजोर होता हो, तब अफीम देना उचित है। किन्तु जब उन्माद रोगी का चेहरा सुर्ख हो अथवा मुँह या सिर की नसों में खून भर गया हो, तब अफीम न देनी चाहिये। इस हालत के सिवा और सब हालतों में—उन्माद रोग में अफीम देना हितकर है। उन्माद के शुरू में अफीम सेवन कराने से उन्माद रोग रुकते भी देखा गया है।

(१०) उन्माद रोग के शुरु होते ही, अगर अफीम की उचित मात्रा दी जाय, तो उन्माद रुक सकता है। जब उन्माद रोग में ज़रा-ज़रा देर में रोगी को जोश आता और उतरता है, उस समय रत्ती-रत्ती भर की मात्रा देने से बड़ा उपकार होता है। रत्ती-रत्ती की मात्रा बारम्बार देने से भी हानि नहीं होती—अफीम का ज़हर नहीं चढ़ता। उन्माद में जो नींद न आने का दोष होता है, वह भी जाता रहता है, नींद आने लगती है और रोग घटने लगता है। पर जब उन्माद रोगी का चेहरा सुर्ख़ हो या सिर की नसों में खून भर गया हो, अफीम देना हानिकर है। परीक्षित है।

(११) अगर नासूर हो गया हो, तो आदमी के नाखुन जलाकर राख कर लो। फिर उस राख में तीन रत्ती अफीम मिला कर, उसे नासूर में भर दो। इस क्रिया के लगातार करने से नासूर आराम हो जाता है।

नोट—यह नुसखा हमारा परीक्षित नहीं है। वैद्यकल्पतरु में जिन सज्जनने लिखा है, उनका आजमाया हुआ जान पड़ता है, इसी से हमने लिखा है।

(१२) छोटे बालक को ज़ुकाम या सरदी हो गई हो, तो

कपाल और नाक पर, अफीम पानी में पीस कर लेप करो। अगर पेट में कोई रोग हो, तो वहाँ भी अफीम का लेप करो।

(१३) अगर शरीर के किसी भाग में दर्द हो, तो आप अफीम का लेप कीजिये अथवा अफीम का तेल लगाइये अथवा अफीम और सोंठ को तेल में पका कर, उस तेल को दर्द की जगह पर मलिये; अवश्य लाभ होगा।

नोट—शरीर के चमड़े पर अफीम लगाते समय, इस बात का ध्यान रखो कि, वहाँ कोई घाव-छाला या फटी हुई जगह न हो। अगर फटी, छिली या घावकी जगह अफीम लगाओगे, तो वह खून में मिल कर नशा या जहर चढ़ा देगी।

(१४) अगर पसली में ज़ोर से दर्द हो, तो आप वहाँ अफीम का लेप कीजिये अथवा सोंठ और अफीम का लेप कीजिये—अवश्य लाभ होगा। परीक्षित है।

(१५) अफीम और कनेर के फूल एकत्र पीस कर, नारु या बाले पर लगाने से नारु आराम हो जाता है।

(१६) अगर रात के समय खाँसी ठहर-ठहर कर बड़े ज़ोर से आती हो, रोगी को सोने न देती हो, तो ज़रासी अफीम देशी तेल के दीपक की लौ पर सेक कर खिला दो; अवश्य खाँसी दब जायगी।

नोट—एक बार एक आदमी को सरदी से ज़ुकाम और खाँसी हुई। मारवाड़ के एक दिहातीने जरासी अफीम एक छप्पर के तिनके पर लगा कर आग पर सेकी और रोगी को खिला दी। ऊपर से बकरी का दूध गरम करके और चीनी मिला कर पिलाया। इस तरह कई दिन करने से उसकी खाँसी नष्ट हो गई। सवेरे ही उसे दस्त भी साफ होने लगा। उसने हमारे सामने कितनी ही डाक्टरी दवायें खाईं, पर खाँसी न मिटी, अन्त में अफीम से इस तरह मिट गई।

(१७) अनेक बार, गर्भवती स्त्री के आस-पास के अवयवों पर गर्भाशय का दबाव पड़ने से ज़ोर की खाँसी उठने लगती है और बारम्बार कय होती हैं। गर्भिणी रात-भर नींद नहीं ले सकती। इस तरह की खाँसी भी, ऊपर के नोट की विधि से अफीम सेक कर खिलाने से; फौरन बन्द हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—गर्भवती स्त्रीको अफ़ीम जब देनी हो बहुत ही अल्पमात्रा में देनी चाहिये; क्योंकि बहुत लोग गर्भवतीकी अफ़ीम की दवा देना बुरा समझते हैं; पर हमने ज्वार या आधी ज्वार भर देने से हानि नहीं, लाभ ही देखा।

(१८) बहुतसे आदमी जब श्वास और खाँसी से तंग आ जाते हैं—खासकर बुढ़ापे में—अफ़ीम खाने लगते हैं। इस तरह उनकी पीड़ा कम हो जाती है। जब तक अफ़ीम का नशा रहता है, श्वास और खाँसी दबे रहते हैं; नशा उतरते ही फिर कष्ट देने लगते हैं। अतः रोगी सवेरे शाम या दिन-रात में तीन-तीन बार अफ़ीम खाते हैं। इस तरह उनकी ज़िन्दगी सुख से कट जाती है।

नोट—ऊपर की बात ठीक और परीक्षित है। हमारी बूढ़ी दादी को श्वास और खाँसी बहुत तंग करते थे। उसने अफीम शुरु कर दी, तब से उसकी पीड़ा शान्त होगई; हाँ, जब अफीम उतर जाती थी, तब वह फिर कष्ट पाती थी, लेकिन समय पर फिर अफीम खा लेती थी।

अगर खाँसी रोग में अफीम देनी हो, तो पहले छाती पर जमा हुआ बलग़म किसी दवा से निकाल देना चाहिये। जब छाती पर कफ न रहे, तब अफीम सेवन करनी चाहिये। इस तरह अच्छा लाभ होता है; क्योंकि छाती पर कफ न जमा होगा, तो खाँसी होगी ही क्यों? महर्षि हारीत ने कहा है:—

न वातेन विना श्वासः कासनिश्लेष्मणाविना।
नरक्तेन विना पित्तं न पित्त-रहितः क्षयः॥

बिना वायु-कोप के श्वास रोग नहीं होता, छाती पर बलगम—कफ—जमे बिना खाँसी नहीं होती, रक्त के विना पित्त नहीं बढ़ता और बिना पित्त-कोपके क्षय रोग नहीं होता।

खाँसी में, अगर बिना कफ निकाले अफीम या कोई गरम दवा खिलाई जाती है, तो कफ सूख कर छाती पर जम जाता है; पीछे रोगी को खाँसने में बड़ी पीड़ा होती है। छाती पर क़फ का घर घर शब्द होता है। सूखा हुआ कफ बड़ी कठिनाई से निकलता है और उसके निकलते समय बड़ा दर्द होता है; अतः खाँसी में पहला इलाज कफ निकाल देना है। जिस में भी, कफ की खाँसी में अफीम देने से कफ छाती पर जम कर बड़ी हानि करता है। कफकी खाँसी हो या छाती पर बलगम जम रहा हो, तो पानी में नमक मिलाकर रोगी को पिला दो और मुख में

पक्षी का पंख फेर कर कय करा दो ; इस तरह सब कफ निकल जायगा। अगर कफ छाती पर सूख गया हो, तो एक तोले अलसी और १ तोले मिश्री दोनों को आध सेर पानी में औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो। इस में से एक-एक चमचो-भर काढ़ा दिन में कई बार पिलाओ। इस से कफ छूट जायगा। पर जब तक छाती साफ न हो, इस नुसखे को पिलाते रहो। इस तरह कफको छुड़ाने वाली बहुत दवाएँ हैं। उन्हें हम खाँसी की चिकित्सा में लिखेंगे।

नोट—कफ की खाँसी और खाँसी के साथ ज्वर चढ़ा हो, तब अफीम मत दो।

(१९) श्वास रोग में अफीम और कस्तूरी मिला कर देने से बड़ा उपकार होता है। रोगी के बलाबल अनुसार मात्रा तजवीज करनी चाहिये। साधारण बलवाले रोगी को—अगर अफीम का अभ्यासी न हो—तो पाव रत्ती अफीम और चाँवल भर कस्तूरी देनी चाहिये। मात्रा ज़ियादा भी दी जा सकती है; पर देश, काल—मौसम और रोगी की प्रकृति आदि का विचार करके।

(२०) अफीम को गुल रोग़न या सिरके में घिस कर, सिर पर लगाने से सिर-दर्द आराम होता है

(२१) अफीम और केसर गुलाब-जल में घिस कर आँखों में आँजने से आँखों की सुर्ख़ी नाश हो जाती है।

(२२) अफीम और केशर जल में घिस कर लेप करनेसे आँखों के घाव दूर हो जाते हैं।

(२३) अफीम, जायफल, लौंग, केशर, कपूर और शुद्ध हिंगलू—इनको बराबर-बराबर लेकर, जलके साथ घोटकर, दो-दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। सवेरे-शाम एक-एक गोली गरम जल के साथ लेने से आमराक्षसी, आमातिसार और हैज़ा रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२४) ज़रा सी अफीम को पान खाने के चूने में लपेट कर, आमातिसार, पेचिश या मरोड़ी के रोगी को देने से ये रोग आराम हो जाते हैं और मज़ा यह कि, दूषित मल भी निकल जाता है। परीक्षित है।

नोट—अफीम और चूना दोनों बराबर हों। गोली को पानी के साथ निगलना चाहिये।

(२५) अफीम, शुद्ध कुचला और सफेद मिर्च,—तीनों को बराबर-बराबर लेकर, अदरखके रस में घोट कर, मिर्च-समान गोलियाँ बना लो। एक-एक गोली सोंठ के चूर्ण और गुड़ के साथ लेने से आमसरोड़ी के दस्त, पुराने से पुराना अतिसार या पेचिश फौरन आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२६) नीबू के रस में अफीम मिलाकर और उसे दूध में डालकर पीने से रक्तातिसार और आमातिसार आराम हो जाते हैं।

(२७) जल संत्रास रोग, हड़कवाय या पागल कुत्ते के काटने पर रोगी को अफीम देने से लाभ होता है

(२८) वातरक्त रोग में होने वाला दाह अफीम से शान्त हो जाता है। वातरक्त रोग को अफीम समूल नाश नहीं कर देती, पर फायदा अवश्य दिखाती है

(२९) अगर सिर में फुन्सियाँ हो कर पकती हों और उनसे मवाद गिरता हो तथा इस से बाल झड़ कर गंज या इन्द्रलुप्त रोग होता हो; तो आप नीबू के रस में अफीम मिलाकर लेप कीजिये; गंज रोग आराम हो जायगा।

(३०) अगर स्त्री को मासिक धर्म के समय पेड़ू में दर्द होता हो, पीठका बाँसा फटा जाता हो अथवा मासिक खून बहुत ज़ियादा निकलता हो, तो आप इस तरह अफीम सेवन कराइये:—

अफीम दो माशे, कस्तूरी दो रत्ती और कपूर दो रत्ती—इन तीनों को पीस-छान कर, पानी के साथ घोटकर एक-एक रत्ती की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों से स्त्रियों के आर्त्तव या मासिक खून का ज़ियादा गिरना, बच्चा जनने के पहले, पीछे या उस समय अधिक आर्त्तव—खून का गिरना, गर्भस्राव में अधिक रक्त गिरना तथा सूतिका-सन्निपात—ये सब रोग आराम होते हैं। परीक्षित हैं।

(२१) अगर किसी स्त्री को गर्भ-स्रावकी आदत हो, तीसरे चौथे महीने गर्भ रहने पर आर्त्तव या मासिक खून दिखाई दे, तो आप उसे थोड़ी अफीम दीजिये।

नोट—नं ३० में लिखी गोलियाँ बना कर दीजिये।

(२२) अगर प्रसूति के समय, प्रसूतिके पहले या प्रसूति के पीछे अत्यन्त खून गिरे, तो अफीम दीजिये, खून बन्द हो जायगा।

नोट—नं० ३० में लिखी गोलियाँ दीजिये।

(२३) अगर आँखें दुखनी आई हों; तो अफीम और अजवायन की पोटली में बाँध कर आँखों को सेकिये। अथवा अफीम और तवे पर फुलाई फिटकरी—दोनों को मिला कर और पानी में पीस कर, एक-एक बूँद दोनों नेत्रों में डालिये।

(२४) अगर कान में दर्द हो, तो अफीम को पानी में पतली करके, दो तीन बूँद कान में डालो।

(२५) अगर दाँतों में दर्द हो, तो ज़रा सी अफीम को तुलसी के पत्तेमें लपेट कर दाँत के नीचे रखो। अगर दाढ़ में गड्ढा पड़ गया हो तो ऊपर की विधि से उसे गढ़े में रख दो; दर्द भी मिट जायगा और गढ़ा भी भर जायगा।

(२६) अगर मुँह आने से या और किसी वजह से बहुत ही लार बहती हो या थूक आता हो, तो अफीम दीजिये। अगर किसीने आतशक रोग में मुँह आनेकी दवा दे दी हो, मुँह फूल गया हो, लार बहती हो; तो अफीम खिलाने से वह रोग मिट कर मुँह पहले जैसा साफ हो जायगा।

(२७) अगर प्रमेह या सोज़ाक में लिंगेन्द्रिय टेढ़ी हो गई हो, बीच में खाँच पड़ गई हो, इन्द्रिय खड़ी होते समय दर्द होता हो, तो आप अफीम और कपूर मिला कर दीजिये। इस से सब पीड़ा शान्त हो कर, इन्द्रिय भी सीधी हो जायगी।

(३८) अगर पुरानी गठिया हो, तो आप अफीम खिलावें और अफीम के तेल की मालिश करावें।

नोट—पुराने गठिया रोग में नं० २ में लिखी समीरगज केसरी बटी अत्यन्त लाभप्रद है।

(३९) अगर सूतिका सन्निपात हो, तो आप अफीम दीजिये; आराम होगा।

नोट—नं० ३० में लिखी गोलियाँ दीजिये।

(४०) अगर कम-उम्र स्त्री को बच्चा होने से उन्माद हो गया हो, तो आप अफीम दीजिये।

(४१) अगर प्रमेह रोग पुराना हो और मधुमेह रोगी बूढ़ा या ज़ियादा बूढ़ा हो, तो आप अफीम सेवन करावें। आधी रत्ती अफीम और एक रत्ती भर माजूफल—पहले माजूफल को पीस लो और अफीम में मिला कर १ गोली बना लो। यह एक मात्रा है। ऐसी-ऐसी एक-एक गोली सवेरे-शाम देने से मधुमेह में बे-इन्तहा फायदा होता है। पेशाब के द्वारा शक्कर जाना कम हो जाता है, कमज़ोरी भी कम होती है, तथा मधुमेही को जो बड़े ज़ोर की प्यास लगती है, वह भी इस गोली से शान्त हो जाती है।

नोट—याद रखो, प्रमेह जितना पुराना होगा और मधुमेह रोगी जितना बूढ़ा होगा, अफीम उतना ही जियादा फायदा करेगी। मधुमेही की प्यास जो किसी तरह न दबती हो, अफीम से दब जाती है। हमने इस की अनेक रोगियों पर परीक्षा की है। गरीब लोग जो वसन्त कुसुमाकर रस, मेह कुलान्तक रस, मेहमिहिर तेल,स्वर्ण वङ्ग आदि बहुमूल्य दवायें न सेवन कर सकते हों, उपरोक्त गोलियों से काम लें। अफीम से गदले गदले पेशाब होना और मूत्रमें वीर्य जाना आदि रोग निस्सन्देह कम हो जाते हैं। पर यह समझना कि अफीम प्रमेह और मधुमेह को जड़ से आराम कर देगी; भूल है। अफीम उनकी तकलीफों को कम जरूर कर देगी।

(४२) अगर किसी को स्वप्नदोष होता हो, तो आप अफीम आधी रत्ती, कपूर दो रत्ती और शीतल मिर्चोंका चूर्ण डेढ़ माशे—तीनों को मिला कर, रोगी को, रात को सोते समय, शहद के साथ,

कुछ दिन लगातार सेवन करावें, अवश्य और जल्दी लाभ होगा । परीक्षित है ।

नोट—अगर किसी को सोज़ाक हो, तो आप रातके समय सोते वक्त इस नुसखे को रोगी को रोज दें । इस से पेशाब साफ होता है, घाव मिटता है, स्वप्नदोष नहीं होता और लिङ्ग में तेजी भी नहीं आती । सोजाक रोग में रातको अकसर स्वप्नदोष होता है या लिङ्गेन्द्रिय खड़ी हो जाती है, उस से दिन-भर में आराम हुआ घाव फिर फट जाता है । इस नुसखे से ये उपद्रव भी नहीं होते और सोजाक भी आराम होता है; पर दिन में और दवा देनी जरूरी है ; यह तो रातकी दवा है । अगर दिनके लिये कोई दवा न हो तो आप शीतल मिर्च १॥ माशे, कलमी शोरा ६ रत्ती और सनाय का चूर्ण ६ रत्ती—तीनों को मिलाकर फँकाओ और ऊपर से औटाया हुआ जल शीतल करके पिलाओ । अगर इस से फायदा तो हो, पर पूरा आराम होता न दीखे, तो चिकित्साचन्द्रोदय तीसरे भागमें से और कोई आजमूदा नुसखा दिन में सेवन कराओ ।

(४३) शुद्ध अफीम ८ तोले, अकरकरा २ तोले, सोंठ २ तोले, नागकेशर २ तोले, शीतल मिर्च २ तोले, छोटी पीपर २ तोले, लौंग २ तोले, जायफल २ तोले और लाल चन्दन २ तोले—अफीम के सिवा और सब दवाओं को कूटपीस कर छान लो, फिर अफीम को भी मिला कर एक-दिल कर लो । इसके बाद २४ तोले यानी सब दवाओं के वज़न के बराबर साफ चीनी भी मिला दो और रख दो । इस चूर्ण में से ३ से ६ रत्ती तक चूर्ण खाकर, ऊपर से गरम दूध मिश्री-मिला हुआ पीओ । इस चूर्ण के कुछ दिन लगातार खाने से गयी हुई शक्ति फिर लौट आती है । नामर्दी नाश करके पुरुषत्व लाने में यह चूर्ण परमोपयोगी है । परीक्षित है ।

नोट—अगर अफीम चूर्ण में न मिले, तो अफीम को पानी में घोलकर चीनी में मिला दो और आग पर रखकर जमने लायक गाढ़ी चाशनी करलो और थाली में जमा दो । जमजाने पर चाशनी को थाली से निकालकर महीन पीसलो और दवाओं के चूर्ण में मिला दो । चाशनी पतली मत रखना, नहीं तो बूरासा न होगा । खूब कढ़ी चाशनी करनेसे अफीम जमकर पिस जायगी ।

(४४) काफी, चाय, सोंठ, मिर्च, पीपर, कोको, खाने का पीला रंग,

शुद्ध पारा, गंधक और अफीम—इन दसों को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीसकर, कपड़-छन कर रख लो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। अनुपान रोगानुसार। इस चूर्ण से कफ, खाँसी, दमा, शीतज्वर, अतिसार, संग्रहणी और हृद्रोग ये निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

(४५) सोंठ, गोलमिर्च, पीपर, लौंग, आककी जड़की छाल और अफीम,—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान कर, शीशीमें रख दो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। यथोचित अनुपानके साथ इस चूर्णके सेवन करने से कफ, खाँसी, दमा, अतिसार, संग्रहणी और कफपित्त के रोग अवश्य नाश होते हैं।

(४६) सोंठ, मिर्च, पीपर, नीमका गोंद, शुद्ध भाँग, ब्रह्मदण्डी यानी ऊँटकटारेके पत्ते, शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक और शुद्ध अफीम—इन सबको एक-एक तोले लेकर, पीस कूट कर छान लो। फिर इस में अठारह रत्ती कस्तूरी भी मिला दो और शीशी में रख दो। मात्रा १ से २ रत्ती तक। इस चूर्ण से सब तरहकी सरदी और दस्तों के रोग नाश हो जाते हैं।

(४७) अफीम चार रत्ती, नीबू का रस १ तोले और मिश्री२ तोले—इन तीनों को पाव भर जल में घोलकर पीनेसे हैज़े के दस्त, कय, जलन और प्यास एवं छाती की धड़कन—ये शान्त हो जाते हैं।

(४८) अफीम ३ माशे, लहसनका रस ३ तोले और हींग १ तोले—इन सबको आध पाव सरसों के तेल में पकाओ; जब दवाएँ जल जायँ, तेलको छान लो। इस तेल को मालिशसे शीताङ्ग वायु आदि सरदी और बादी के सभी रोग नाश हो जाते हैं, परन्तु शीतल जल से बचा रहना बहुत ज़रूरी है।

(४९) अफीम १ माशे, काली मिर्च २ माशे और कीकर के कोयले ६ माशे—सब को महीन पीस कर रखलो। मात्रा १ माशे। बलाबल और प्रकृति-अनुसार कमीवेश भी दे सकते हो।

इस दवा से तप सफरावी आराम होता है। यह तप खफ़ीफ़ रहता

है और एक दिन बीच में देकर ज़ोर करता है। तप चढ़ने से पहले शरीर काँपने लगता है। बुखार चढ़ने से चार घण्टे पहले यह दवा खिलानी चाहिये। रोगी को खाने को कुछ भी न देना चाहिये। दवा खाने के ६ घण्टे बाद भोजन देना चाहिये। परमात्मा चाहेगा, तो १ माला में ही ज्वर जाता रहेगा।

(५०) दो रत्ती अफीम खाने से मुँहसे थूक के साथ खून आना बन्द होता है। ऐसा अक्सर रक्तपित्त में होता है। उस समय अफ़ीम से काम निकल जाता है।

नोट—अड़ूसे का स्वरस ६ माशे, मिश्री ६ माशे और शहद ६ माशे—इन तीनों को मिलाकर नित्य पीनेसे भयानक रक्तपित्त, यक्ष्मा और खाँसी रोग आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(५१) अफीम एक चने भर, फिटकरी दो चने भर और जलाया हुआ भिलावा एक,—इन तीनों को छै नीबूओंके रस में घोटकर गोलियाँ बनालो और छाया में सुखा लो। इन गोलियों को नीबू के ज़रासे रसमें घिस-घिसकर आँजने से फूलो, फेफरा और नेत्रों में पानी आना, ये आँखके रोग अवश्य नाश हो जाते हैं।

नोट—भिलावा जलाते समय उसके धूएँ से बचना ; वरना हानि होगी। अधिक बातें भिलावेके वर्णन में देखिये।

(५२) अफीम ३॥ माशे, अकरकरा ७ माशे, भाऊके फूल १४ माशे, खासक १४ माशे और हुब्बुलास १४ माशे—इन सबको महीन पीसकर, बबूलके गोंद के रस में घोटो और दो-दो माशेकी गोलियाँ बनालो। इन गोलियों में से १ गोली खाने से १ घण्टे में दस्त बन्द हो जाते हैं।

(५३) अफीम, हींग, ज़हरमुहरा खताई और काली मिर्च—इन सबको समान-समान लेकर, पानी के साथ पीस कर, चने-समान गोलियाँ बनालो। नीबूके रसके साथ एक-एक गोली खानेसे संग्रहणी, बादी और सब तरह के उदर रोग नाश हो जाते हैं।

साफ़ अफ़ीम की पहचान।

अफ़ीम का वज़न बढ़ाने के लिये नीच लोग उस में ख़सख़स के पेड़ के पत्ते, कत्था, काला गुड़, सूखे हुए पुराने कण्डों का चूरा, बालू रेत या एलुआ प्रभृति मिला देते हैं। वैद्यों और खानेवालों को अफ़ीम की परीक्षा करके अफ़ीम ख़रीदनी चाहिये; क्योंकि ऐसी अफ़ीम दवामें पूरा गुण नहीं दिखाती और ऐसे ही खानेवालों को नाना प्रकार के रोग करती है। शुद्ध अफ़ीम की पहचान ये हैं :—

(१) साफ अफ़ीम की गंध बहुत तेज़ होती है।

(२) स्वाद कड़वा होता है।

(३) चीरनेसे भीतरका भाग चमकदार और नर्म होता है।

(४) पानी में डालने से जलदी गल जाती है।

(५) साँफ अफ़ीम १०। ५ मिनट सूँघने से नींद आती है।

(६) उसका टुकड़ा धूप में रखने से जल्दी गलने लगता है।

(७) जलाने से जलते समय उसकी ज्वाला साफ होती है, और उस में धूआँ ज़ियादा नहीं होता। अगर जलती हुई अफ़ीम बुझाई जाय, तो उसमें से अत्यन्त तेज़ मादक गंध निकलती है।

जिस अफ़ीम में इस के विपरीत गुण हों, उसे ख़राब समझना चाहिये।

अफ़ीम शोधने की विधि।

अफ़ीम को खरल में डालकर, ऊपर से अदरख का रस इतना डालो, जितने में वह डूब जाय; फिर उसे घोटो। जब रस सूख जाय, फिर रस डालो और घोटो। इस तरह २१ बार अदरख का रस डाल-डाल कर घोटने से अफ़ीम दवा के काम-योग्य शुद्ध हो जाती है।

नोट—हरबार घुटाई से रस सूखने पर उतना ही रस डालो, जितने में अफ़ीम डूब जाय। इस तरह अफ़ीम खूब साफ होती है।

हमेशा अफ़ीम खानेवालों की हालत ।

हमेशा अफ़ीम खाने वालों का शरीर दिन-ब-दिन कमज़ोर होता जाता है। उन की सूरत-शकल पर रौनक़ नहीं रहती, चेहरा फीका पड़ जाता है और आँखें घुस जाती हैं। उनके शरीर के अवयव निकम्मे और बलहीन हो जाते हैं। सदा क़ब्ज़ बना रहता है, पाख़ाना बड़ी मुश्किल से होता है, बहुत काँखने से ऊँट के से मैंगने या बकरीकी सी मैंगनी निकलती हैं। पाख़ाना साफ़ न होने से पेट भारी रहता है, भूख कम लगती है, कभी कभी चौथाई ख़ूराक खाकर ही रह जाना पड़ता है। जो कुछ खाते हैं, हज़म नहीं होता। हाथ पैर गिरे पड़े से रहते हैं। शरीर के स्नायु या नसें शिथिल हो जाती हैं। स्त्री-प्रसंग को मन नहीं करता। रात को अगर ज़रा भी नशा कम हो जाता है, तो हाथ पैर भड़कते हैं। मानसिक शक्ति का ह्रास होता रहता है। शारीरिक या मानसिक परिश्रम की सामर्थ्य नहीं रहती। हर समय आराम करने और पड़े-पड़े हुक्का गुड़गुड़ाने को मन चाहता है। क्योंकि अफ़ीम खानेवाले को तमाखू अच्छी लगती है। बहुत क्या—अफ़ीम के खानेवाले जल्दी ही बूढ़े होकर मृत्यु-मुख में पतित होते हैं।

जो लोग डली निगलते हैं, उन्हें घण्टे भर में पूरा नशा आ जाता है; पर २० मिनट बाद उस का प्रभाव होने लगता है। जो घोलकर पीते हैं, उन को आध घण्टे में नशा चढ़ जाता है और जो चिलम-में धर कर तमाखू की तरह पीते हैं, उन्हें तत्काल नशा आता है। इसे मदक पीना कहते हैं। यह सब से बुरा है। इस के पीने वाला बिल्कुल बे-काम हो जाता है। जो लोग स्तंभन के लालच से मदक पीते हैं, उन्हें कुछ दिन बेशक आनन्द आता है, पर थोड़े दिन बाद ही वे स्त्री के काम के नहीं रहते; धातु सूख कर महाबलहीन हो जाते हैं—बल का नामो निशान नहीं रहता। चेहरा और ही तरह का हो जाता है; गाल पिचक जाते हैं और हड्डियाँ निकल आती हैं। जब

नशा उतर जाता है, तब तो वे मरी-मिट्टी हो जाते हैं। उबासी-पर-उबासी आती हैं, आँखों में पानी भर-भर आता है, नाक से मवाद या जल गिरता और हाथ पैर भड़कने लगते हैं। हाँ, जब वे अफीम खा लेते हैं, तब घड़ी दो घड़ी बाद कुछ देर को मर्द हो जाते हैं। उन में कुछ उत्साह और फुर्त्ती आ जाती है। हर दिन अफीम बढ़ाने की इच्छा रहती है। अगर किसी दिन बाजरे-बराबर भी अफीम कम दी जाती है, तो नशा नहीं आता; इसलिये फिर अफीम खाते हैं। अगले दिन फिर उतनी ही लेनी पड़ती है, इस तरह यह बढ़ती ही चली जाती है। अगर अफीम न बढ़े और बहुत ही थोड़ी मात्रा में खायी जाय तथा इस पर मन-माना दूध पिया जाय, तो हानि नहीं करती; बल्कि कितने ही रोगों को दबाये रखती है। पर यह ऐसा पाजी नशा है, कि बढ़े बिना रहता ही नहीं। अगर यह किसी समय न मिले, तो आदमी मिट्टी हो जाता है, राह चलता हो तो राह में ही बैठ जाता है, चाहे फिर सर्वस्व ही क्यों न नष्ट हो जाय। मारवाड़ में रहते समय, हमने एक अफीमची ठाकुर साहब की सच्ची कहानी सुनी थी। पाठकों के शिक्षालाभार्थ उसे नीचे लिखते हैं:—

एक दिन, रेगिस्तान के जङ्गलों में, एक ठाकुर साहब अपनी नवपरिणीता बहू को ऊँट पर चढ़ाये अपने घर ले जा रहे थे। दैवसंयोग से, राह में उन की अफीम चुक गई। बस, आप ऊँट को बिठा कर, वहीं पड़ गये और लगे ठकुरानी से कहने—"अब जब-तक अफीम न मिलेगी, मैं एक क़दम भी आगे न चल सकूँगा। कहीं-से भी अफीम ला।" स्त्री ने बहुत कुछ समझाया-बुझाया कि, यहाँ अफीम कहाँ? घोर जङ्गल है, बस्ती का नाम निशान नहीं।" पर उन्होंने एक न सुनी, तब वह बेचारी उन्हें वहीं छोड़ कर स्वयं अकेली ऊँट पर चढ़, अफीम की खोज में आगे गई। कोस भर पर एक झोंपड़ी मिली। इसने उस झोंपड़ी में रहने वाले से कहा—"पिताजी! मेरे

पतिदेव अफीम खाते हैं, पर आज अफीम निपट गई। इसलिये वह यहाँ से कोस भर पर पड़े हैं और अफीम बिना आगे नहीं चलते। वहाँ न तो छाया है, न जल है और डाकुओं का भय जुदा है। अगर आप कृपा कर थोड़ी सी अफीम मुझे दें, तो मैं जन्म-भर आप का ऐहसान न भूलूँ।" उस मर्द ने उस बेचारी अबला से कहा—"अगर तू एक घण्टे तक मेरे पास मेरी स्त्री की तरह रहे, तो मैं तुझे अफीम दे सकता हूँ।" स्त्री ने कहा—"पिताजी! मैं पतिव्रता हूँ। आप मुझ से ऐसी बातें न कहें।" पर उसने बारम्बार वही बात कही; तब स्त्री उस से यह कह कर, कि मैं अपने स्वामी से इस बात की आज्ञा ले आऊँ, तब आप की इच्छा पूरी कर सकती हूँ, वहाँ से ठाकुर साहब के पास आई और उन से सारा हाल कहा। ठाकुर ने जवाब दिया—"बेशक, यह बात बहुत बुरी है, पर अफीम बिना तो मेरी जान ही न बचेगी, अतः तू जा और जिस तरह भी वह अफीम दे ले आ।" स्त्री फिर उस झोंपड़ी में गई और उस झोंपड़ी वाले से कहा—"अच्छी बात है, मेरे पति ने आज्ञा दे दी है। आप अपनी इच्छा पूरी करके मुझे अफीम दीजिये। मैं अपने नेत्रों के सामने अपने प्राणाधार को दुःख से मरता नहीं देख सकती। आप से अफीम लेजाकर उन्हें खिलाऊँगी और फिर आत्मघात करके इस अपवित्र देह को त्याग दूँगी।" यह बात सुनते ही उस आदमी ने कहा—"माँ! मैं ऐसा पापी नहीं। मैंने तेरे पति को शिक्षा देने को ही वह बात कही थी। तू चाहे जितनी अफीम लेजा। पर अपने पति की अफीम छुड़ा कर ही दम लीजो।" कहते हैं, वह स्त्री उसी दिन से जब वह अपने पतिको अफीम देती, अफीम की डली से दीवार पर लकीर कर देती। पहले दिन एक, दूसरे दिन दो, तीसरे दिन तीन—इस तरह वह लकीरें रोज़ एक-एक करके बढ़ाती गई। अन्त में एक लकीर भर अफीम रह गई और ठाकुर साहब का पीछा अफीम-राक्षसी से छूट

गया। मतलब यह है, अफीम अनेक गुण वाली होने पर भी बड़ी बुरी है। यह दवा की तरह ही सेवन करने योग्य है। इस की आदत डालना बहुत ही बुरा है। जिन्हें इस की आदत हो, वे इसे छोड़ दें। ऊपर की विधि से रोज़ ज़रा-ज़रा घटाने और घी दूध खूब खाते रहने से यह छूट जाती है। हाँ, मन को कड़ा रखने की ज़रूरत है। नीचे हम यह दिखलाते हैं कि, अफ़ीम छोड़ने वाले की क्या हालत होती है। उस के बाद हम अफ़ीम छोड़ने के चन्द उपाय भी लिखेंगे।

अफ़ीम छोड़ते समय की दशा।

जरा जरा घटानेका नतीजा।

जब आदमी रोज़ ज़रा-ज़रा सी अफीम घटाकर खाता है, तब उसे पीड़ा होती है, हाथ पैर और शरीर में दर्द होता है, जी घबराता है, मन काम-धन्धे में नहीं लगता, पर उतनी ज़ियादा वेदना नहीं होती, जो सही ही न जा सके। अगर अफीम बाजरे के दाने-भर रोज़ घटा-घटाकर खानेवाले को दी जाय, पर उसे यह न मालूम हो कि, मेरी अफीम घटाई जाती है, तो उतनी भी पीड़ा उसे न हो। यों तो बाजरे के दाने का दसवाँ भाग कम होने से भी खाने वाले को नशा कम आता है, पर ज़रा-ज़रा सी नित्य घटाने और खाने वाले को मालूम न होने देने से बहुतों की अफीम छूट गई है। इस दशा में अफीम तोल कर लेनी होती है। रोज़ एक अन्दाज़ से कम करनी पड़ती है; पर इस तरह बड़ी देर लगती है। इसलिये इस का एक दम छोड़ देना ही सब से अच्छा है। एक हफ़्ते घोर कष्ट उठा कर, शीघ्र ही राक्षसी से पीछा छूट जाता है।

एक दमसे छोड देनेका नतीजा।

अगर कोई मनुष्य अपनी अफीम को एकदम से छोड़ देता है, तो उस के शरीर, हाथ पैर, और पीठके बाँसे में बेहद्द पीड़ा होती है।

पीठ का बाँसा फटा पड़ता है, क्षण-भर भी कल नहीं पड़ती। उसे न सोते चैन न बैठे कल। पैरों में ज़रा भी बल नहीं रहता। खड़े होने से गिर पड़ता है। चल फिर तो सकता ही नहीं। उसे हर दम एक तरह का डर सा लगा रहता है। वह हर किसी से अफीम माँगता और कहता है कि, बिना अफीम के मेरी जान न बचेगी। पसीने इतने आते हैं, कि कपड़े तर हो जाते हैं, चाहे माघ पूस के दिन ही क्यों न हों। इन दिनों कब्ज़ तो न जाने कहाँ चला जाता है, उल्टे दस्त पर दस्त लगते हैं। चौबीस घण्टे में तीस-तीस और चालीस-चालीस दस्त तक हो जाते हैं। रात-दिन नींद नहीं आती, कभी लेटता है और कभी भड़भड़ा कर उठ बैठता है। प्यास का ज़ोर बढ़ जाता है। उत्साह का नाम नहीं रहता। बारम्बार पेशाब की हाजत होती है। बीमार को अपना मरजाना निश्चित सा जान पड़ता है; पर अफीम छोड़ने से मृत्यु हो नहीं सकती। यह अफीम छोड़ने वाले के दिल की कमज़ोरी है। लिख चुके हैं कि १०।५ दिन का कष्ट है।

अफीम का ज़हरीला असर।

अफीम स्वाद में कड़वी ज़हर होती है, इसलिये दूसरा आदमी किसी को मार डालने की ग़रज़ से इसे नहीं खिलाता। क्योंकि ऐसी कड़वी चीज़ को कौन खायगा? हत्या करने वाले संखिया देते हैं, क्योंकि उस में कोई स्वाद नहीं होता। वह जिसमें मिलाया जाता है, मिल जाता है। अफीम जिस चीज़ में मिलायी जाती है, वह कड़वी होने के सिवा रङ्ग में भी काली हो जाती है। पर संखिया किसी भी पदार्थ के रूप को नहीं बदलता; अतः अफीम को स्वयं अपनी हत्या करने वालेही खाते हैं। बहुत लोग इसे तेल में मिला कर खा जाते हैं, क्योंकि तेल में मिली अफीम खाने से, कोई उपाय करने से भी खाने वाला बच नहीं सकता। कम-से-कम दो

रत्ती अफ़ीम मनुष्य को मार डालती है। अफ़ीम लेने के समय से एक घण्टे के अन्दर, यह अपना ज़हरीला असर दिखाने लगती है। इस को खाने वाला प्रायः चौबीस घण्टों के अन्दर यमपुर को सिधार जाता है।

ज़ियादा अफ़ीम खाने से पहले तो नींद सी आती जान पड़ती है, फिर चक्कर आते और जी घबराता है। इस के बाद मनुष्य बेहोश हो जाता है और बहुत ही ज़ोर से चीखने-पुकारने पर बोलता है। इस के बाद बोलना भी बन्द हो जाता है। नाड़ी भारी होने पर भी धीमी, मन्दी और अनियमित चलती है। ख़ाली होने से नाड़ी तेज़ चलती है। साँस बड़े ज़ोर से चलता है। दम घुटने लगता है। शरीर किसी क़दर गरम हो जाता है। पसीने खूब आते हैं। नेत्र बन्द रहते हैं; आँखों की पुतलियाँ बहुत ही छोटी यानी सूई की नोक-जितनी दीखती हैं। होठ, जीभ, नाखून और हाथ काले पड़ जाते हैं। चेहरा फीका सा हो जाता है। दस्त रुक जाने से पेट फूल जाता है।

मरने से कुछ पहले शरीर शीतल बर्फ़ सा हो जाता है। आँखों की पुतलियाँ जो पहले सुकड़ कर सूई की नोक जितनी हो गई थीं, इस समय फैल जाती हैं। हाथ पैरों के स्नायु ढीले हो जाते हैं। टटोलने से नब्ज़ या नाड़ी हाथ नहीं आती। थोड़ी देर में दम घुट कर मनुष्य मर जाता है।

कभी-कभी अफ़ीम के ज़हर से शरीर खिंचता है, रोगी आनतान बकता है, क़य होतीं और दस्त लगते हैं। इन के सिवा धनुस्तंभ वग़ैरः विकार भी हो जाते हैं। अगर अफ़ीम बहुत ही अधिक मात्रा में खायी जाती है, तो वान्ति भी होती है।

अगर रोगी बचने वाला होता है, तो उसे होश आने लगता है, क़य होतीं और सिर में दर्द होता है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है—अफ़ीम से गहरी नींद आती है,

जीभ रुकती है, आँखें गड़ जाती हैं, शीतल पसीने आते हैं, हिचकियाँ चलती हैं, श्वास रुक-रुक कर आता और नेत्रों के सामने अँधेरी आती है। सात माशे अफीम से मृत्यु हो जाती है। अगर अफीम तिली के तेल में मिला कर खाई जाती है, तो फिर संसार की कोई दवा रोगी को बचा नहीं सकती।

अफीम खाकर मरने वाले के शरीर पर किसी तरह का ऐसा फेरफार नहीं होता, जिस से समझा जा सके कि, इसने अफीम खाई है। अफीम खाने वाले की क़ाय में अफीम की गन्ध आती है। पोष्ट मार्टम या चीराफाड़ी करने पर, उस के पेट में अफीम पायी जाती है और सिर की खून बहाने वाली नसें खून से भरी मिलती हैं।

ख़ाली पेट अफीम खाने से जल्दी ज़हर चढ़ता है। अफीम खाकर सो जाने से ज़हर का ज़ोर बढ़ जाता है। ज़ियादा अफीम खाने से तीस मिनट बाद ज़हर चढ़ जाता है। सो जाने से ज़हर का ज़ोर बढ़ता है, इसी से ऐसे रोगी को सोने नहीं देते।

अफीम छुड़ाने की तरकीबें।

पहली तरकीब

(१) पहली तरकीब तो यही है कि, नित्य ज़रा-ज़रा सी अफीम कम करें और घी दूध आदि तर पदार्थ खूब खायँ। ज़रा-ज़रा से कष्टों से घबरायें नहीं। कुछ दिनों को अपने तईं बीमार समझ लें। पीछे अफीम छूटने पर जो अनिर्वचनीय आनन्द आवेगा, उसे लिखकर बता नहीं सकते। सारी अफीम एक ही दिन छोड़ने से ८।१० दिन तक घोर कष्ट होते हैं। पर ज़रा-ज़रा घटाने से उस के शतांश भी नहीं। इस दशा में अफीम को तोल कर लो और रोज़ एक नियम से घटाते रहो।

दूसरी तरकीब

(२) अफीम में आप दालचीनी, केशर, इलायची आदि पदार्थ पीसकर मिला लें। पीछे-पीछे इन्हें बढ़ाते जायँ और अफीम कम करते जायं। साथ ही घी दूध आदि तर पदार्थ खूब खाते रहें। अगर आप मोहन भोग, हलवा, मलाई, मक्खन आदि ज़ियादा खाते रहेंगे, तो आप को अफीम छोड़ने से कुछ विशेष कष्ट नहीं होगा। अगर बदन में दर्द बहुत हो, तो आप नारायण तेल या कोई और वात-नाशक तेल मलवाते रहें। अगर नींद न आवे, तो ज़रा-ज़रा सी भाँग तवे पर भूँजकर और शहद में मिलाकर चाटो। पैरों में भी भाँग को बकरी के दूध में पीस कर लेप करो। इस तरह छोड़ने से ज़ियादा दस्त तो होंगे नहीं। अगर किसी को हों, तो उसे दस्त बन्द करने वाली दवा भूल कर भी न लेनी चाहिये। ५।७ दिन में आप ही दस्त बन्द हो जायँगे। अगर शरीर में बहुत ही दर्द हो, तो ज़रासा शुद्ध बचनाभ विष घी में घिस कर चाटो। पर यह घातक विष है, अतः भूल कर भी एक तिल से ज़ियादा न लेना। इस तरह हमने कितनों ही की अफीम छुड़ा दी। इस तरह छुड़ाने में इतने उपद्रव नहीं होते; पर तोभी प्रकृति-भेद से किसी को ज़ियादा तकलीफ़ हो, तो उसे उपरोक्त नारायण तेल, भाँगका चूर्ण, बच्छनाभ विष वगैरः से काम लेना चाहिये। इन उपायों से एक माशे अफीम १५ दिन में छूट जाती है। और भी देर से छोड़ने में तो उपरोक्त कष्ट नाम मात्र को होते हैं।

तीसरी तरकीब

(३) अफीम को अगर एक-दम छोड़ना चाहो तो क्या कहना? कोई हानि आप को न होगी। हाँ, ८।१० दिन सख़्त बीमारकी तरह कष्ट उठाना होगा; फिर कुछ नहीं, सदा आनन्द है। इस दशा में नीम, परवल, गिलोय और पाढ़—इन चारों का काढ़ा दिन में चार

बार पीओ। इस काढ़े से अफीम के कष्ट कम होंगे। दिन में, ८।१० दफा, आध-आध पाव दूध पीओ। हलवा, सोहन भोग और मलाई खाओ। दिल में धीरज रखो। दस्तों के रोकने को कोई भी दवा मत लो। हाँ, नींद और दर्द वगैरः के लिये ऊपर नं० २ में लिखे उपाय करो। काढ़ा ११ दिन पीना चाहिये। अगर सिगरट तमाखू का शौक़ हो, तो इन्हें पी सकते हो। सूखी तली हुई भाँग भी गुड़ में मिला कर खा सकते हो। हमने कई बार केवल गहरी, पर रोगी के बलानुसार, भाँग खिला-खिला कर और गरमी में पिला-पिलाकर अफीम छुड़ा दी। इस में शक नहीं, अफीम छोड़ते समय धीरज, दिल की कड़ाई और दूध घी की भरती रखने की बड़ी ज़रूरत है।

नोट—ये सभी उपाय हमारे अनेक बार के परीक्षित हैं। २५, ३० साल पहले ये सब उत्तम-उत्तम तरीके आयुर्वेदके धुरन्धर विद्वान् स्वर्ग-वासी पण्डितवर शंकर दाजी शास्त्री पदे के मासिक पत्रसे हमें मालूम हुए थे। हमने उनकी सैकड़ों अनमोल युक्तियाँ रट रट कर कंठाग्र कर लीं और उन से बारम्बार लाभ उठाया। दुःख है, महामान्य शास्त्रीजी इस दुनिया में और कुछ दिन न रहे। यों तो भारत में अब भी एक से एक बढ़ कर विद्वान् हैं; पर उन जैसे तो वही थे। हमें इस विद्याका शौक ही उन के पत्र से लगा। भगवान् उन्हें सदा स्वर्ग में रखें।

अफीम-विष नाशक उपाय।

(१) पुराने काग़ज़ों को जला कर, उन की राख पानी में घोल कर पिलाने से, वमन होकर, अफीम का ज़हर उतर जाता है।

(२) कड़वे नीम के पत्तों का यंत्र से निकाला अर्क़ पिलाने से अफीम का विष उतर जाता है

(३) मकोय के पत्तों का रस पिलाने से अफीम का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(४) बिनौले और फिटकरी का चूर्ण खाने से अफीम का विष उतर जाता है।

(५) बाग़ की कपास के पत्तों का रस पिलाने से अफ़ीम का विष उतर जाता है।

नोट—नं० २-५ तक के नुसख़े परीक्षित हैं।

(६) अफ़ीम खाने से अगर पेट फूल जाय, अफ़ीम न पचे, तो फ़ौरन ही नाड़ी के पत्तों के साग का रस निकाल-निकाल कर, दो-तीन बार, आध-आध पाव पिलाओ। इस से क़य होकर, अफ़ीम का विष शीघ्र ही उतर जायगा।

(७) बहुत देर होने की वजह से, अगर अफ़ीम पेट में जाकर पच गई हो, तो आध पाव आमले के पत्ते आध सेर जल में घोट-छान कर तीन चार बार में पिला दो। इस नुसख़े से अफ़ीम के सारे उपद्रव नाश होकर, रोगी अच्छा हो जायगा।

नोट—नं० ६ और नं० ७ नुसखे एक सज्जनके परीक्षित हैं।

(८) अरण्डी की जड़ या कोंपल पानी में पीस कर पीने से अफ़ीम का विष उतर जाता है।

(९) दो माशे हीरा हींग दो तीन बार में खाने से अफ़ीम का विष उतर जाता है।

(१०) गाय का घी और ताज़ा दूध पीने से अफ़ीम का विष उतर जाता है।

(११) अखरोट की गरी खाने से अफ़ीम उतर जाती है।

(१२) तेजबल पानी में पीस कर, १ प्याला पीने से अफ़ीम का विष उतर जाता है।

(१३) कमलगट्टे की गरी १ माशे और शुद्ध तूतिया २ रत्ती—इन दोनों को पीस कर, गरम जल में मिलाकर पीने से क़य होती और अफ़ीम तथा संखिया वग़ैरः हर तरहका विष निकल जाता है।

(१४) दूध पीने से अफ़ीम और भाँग का मद नाश हो जाता है।

(१५) अरीठे का पानी थोड़ा सा पीने से अफ़ीम का मद नाश हो जाता है।

नोट--- पाव भर अफीम पर पांच सात बूँदें अरीठे के पानी की डाली जायँ, तो उतनी अफीम मिट्टी के समान हो जाय ।

(१६) नर्म कपास के पत्तों का स्वरस, इमली के पत्तोंका स्वरस और सीता फल के बीजों की गरी—इन को पानी में पीस कर पिलाने से अफीम का विष निस्सन्देह नाश हो जाता है । परीक्षित है ।

(१७) इमली का भिगोया पानी, घी और राई के चूर्णका पानी —इन के पिलाने से अफीम उतर जाती है ।

(१८) फिटकरी और बिनौलों का चूर्ण मिला कर खिलाने से अफीम का विष नाश हो जाता है ।

(१९) सुहागा घी में मिला कर खिलाने से वमन होती और अफीम निकल जाती है ।

(२१) वैद्य कल्पतरु में एक सज्जन ने अफीम का ज़हर उतारने के नीचे लिखे उपाय लिखे हैं,—अगर जल्दी ही मालूम हो जाय, तो शीघ्र ही पेट में गई हुई अफीम को बाहर निकालने की चेष्टा करो । डाक्टर आजावे, तो ष्टमक पम्प* नामक यंत्र द्वारा पेट खाली करना चाहिये । डाक्टर न हो तो वमन कराओ । वमन कराने के बहुत उपाय हैं:—(क) गरम पानी पिला कर गले में पक्षी का पंख फेर कर वमन कराओ । (ख) २० ग्रेन सलफिट आफ ज़िंक थोड़े से जल में घोल कर पिलाओ । (ग) राई का चूर्ण एक या

---

* स्टमक पम्प (Stomach Pump) घर में मौजूद हो तो हर कोई उस से काम ले सकता है ; अतः उसकी विधि नीचे लिखते हैं—

स्टमक पम्प का लकड़ी वाला भाग दाँतों में रखो । पेट में डालने की नली को तेलसे चुपड़ कर, उस का अगला भाग मोड़ कर या टेढ़ा कर के, गले में छोड़ो । वहाँ से धीरे धीरे पेट में दाखल करो । पम्प के बाहर के सिरे से पिचकारी जोड़ दो । फिर उस में पानी भरकर, ज़रा देर बाद उसे बाहर खींचो । इस तरह बाहर निकलने वाले पानी में जब तक अफीम की गन्ध आवे तब तक, इस तरह पेट को बराबर धोते रहो । जब भीतर से आने वाले पानी में अफीम की गन्ध न आवे, तब इस काम को बन्द कर दो ।

दो चम्मच पानी में मिला कर पिलाओ। (घ) इपिकाकुआना का पौडर १५ ग्रेन थोड़े से पानी में मिला कर पिलाओ। ये सब वमन कराने की दवाएँ हैं। इन में से किसी एक को काम में लाओ। अगर वमन जल्दी और ज़ोर से न हों, तो गरम जल खूब पिलाओ या नमक मिला कर जल पिलाओ। वमन की दवा पर नमक का पानी या गरम पानी पिलाने से बड़ी मदद मिलती है; वमनकारक दवा का बल बढ़ जाता है। यह क़य करने की बात हुई।

घी पिलाओ। घी विष-नाश करने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है। घी में यह गुण है कि, वह क़य में ज़हर को साथ लिपटा कर बाहर ले आता है।

जब अफीम का विष शरीर में फैल जाय, तब वमन कराने से उतना लाभ नहीं। उस समय अफीम का विष नाश करने वाली, और अफीमके गुणके विपरीत गुण वाली दवाएँ दो। जैसे:—

(क) रोगीको सोने मत दो—उसे जागता रखो। सिर पर शीतल जलकी धारा छोड़ो। रोगीको धमकाओ, चिल्लाकर जगाओ और चूँटी से काटो। मतलब यह है, उसे तन्द्रा या ऊँघ मत आने दो; क्योंकि सोने देना बहुत ही बुरा है।

(ख) वमन होने बाद, पन्द्रह-पन्द्रह मिनटमें कड़ी काफी पिलाओ। उसके अभावमें चाय पिलाओ। इससे नींद नहीं आती।

(ग) अगर नाड़ी बैठ जाय, तो लाइकर एमोनिया १० बूँद अथवा स्पिरिट एमोनिया एरोमैटिक २० से ४० बूँद थोड़ेसे जलमें मिला कर पिलाओ।

(घ) चल सके तो थोड़ी-थोड़ी ब्राण्डी पानीमें मिलाकर पिलाओ और दोनों पैरों पर गरम बोतल फेरो।

"सद्वैद्य कौस्तुभ" में भी यही सब उपाय लिखे हैं, जो ऊपर हमने

"वैद्यकल्पतरु" से लिखे हैं। चन्द बातें छूट गई हैं, अतः हम उन्हें लिखते हैं:—

अफीम या और किसी विषैली चीज़ का ज़हर उतारने के मुख्य दो मार्ग हैं:—

(१) विष खाने के बाद तत्काल ख़बर हो जाय, तो वमन करा-कर, पेटमें गया हुआ विष निकाल डालो।

(२) अगर विष खानेके बहुत देर बाद ख़बर मिले और उस समय विषका थोड़ा या बहुत असर ख़ूनमें हो गया हो, तो उस विष को मारने वाली विरुद्ध गुण की दवाएँ दो, जिस से विषका असर नष्ट हो जाय।

डाक्टर लोग वमन कराने के लिये "सलफेट आफ ज़िङ्क" ३० ग्रेन या "इपिकाकुआना पौडर" १५ ग्रेन तक गरम पानी में मिलाकर पिलाते हैं। इन दवाओंके बदले में आककी छालका चूर्ण १५ ग्रेन देने से भी वमन हो जाती हैं।........किसी भी वमन की दवा पर, बहुत सा गरम पानी या नमकका पानी पीने से वमनको उत्तेजना मिलती हैं। अगर वमन से सारा विष निकल जाय, तो फिर किसी दवा या उपचार की ज़रूरत नहीं। अगर वमन होनेके बाद भी पूर्वोक्त विष-चिह्न नज़र आवें, तो समझ लो कि शरीर में विष फैल गया है। इस दशा में रोगीको जागता रखो— सोने मत दो।

जागता रखनेको मुँहपर या शरीर पर गीला कपड़ा रखो। ख़ास कर, मुँह पर गीला कपड़ा मारो। नेत्रों में तेज अंजन लगाओ। नाकके पास एमोनिया या कलीका चूना और पिसी हुई नौसादर रखो। रोगी को पकड़ कर इधर-उधर घुमाओ और उससे बातें करो। बाद में काफी या चाय घण्टे में चार बार पिलाओ। इस भी नींद न आवेगी। पिंडलियों पर राई पीसकर लगाओ। जावित्री, लौंग, दालचीनी, केशर, इलायची आदि गरम और अफीम

के विकार-नाशक पदार्थ खिलाओ। अगर आदमी बेहोश हो, तो स्टमक पम्पसे ज़हर निकालो। अगर एकदम बेहोश हो, तो बिजली लगाओ। अगर इससे भी लाभ न हो, तो कृत्रिम श्वास चलाओ।

(२२) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—

(क) सोया और मूलीके काढ़े में शहद और नमक मिलाकर पिलाओ और कय कराओ।

(ख) तेज़ दस्तावर दवा दो।

(ग) तिरियाक मसरूदीतूस सेवन कराओ।

(घ) हींग और शहद घोले जलमें दालचीनी और कूट मिलाकर पिलाओ।

(ङ) कालीमिर्च, हींग और देवदारु महीन कूटकर एक-एक गोलीके समान खिलाओ।

(च) तिरियाक अरबा, अकरकरा और जुन्देबेदस्तर लाभ-दायक हैं।

(छ) जुन्देबेदस्तर सुँघाओ। कूटका तेल सिर पर लगाओ। हो सके तो शरीर पर भी ज़रूर मालिश करो।

(ज) शराबमें अकरकरा, दालचीनी और जुन्देबेदस्तर—घिसकर पिलाओ। सिर पर गरम सिकताव करो। गरम माजून और कस्तूरी दो। यह हकीम खुजन्दी साहबकी राय है।

(झ) खाने-पीने की चीज़ोंमें केशर और कस्तूरी मिलाकर दो। जुलाब में तिरियाक और निर्विषी मिलाकर खिलाओ। सर्वके फल, राई और अञ्जीर खिलाना भी हितकारी है। यह हकीम बहा-उद्दीन साहबकी राय है।

(झ) अगर अफीम खाने वाला बेहोश हो, तो छींक लानेवाली दवा सुँघाओ, शरीर को मलो और पसीने लाने वाली दवा दो।

(२३) बड़ी कटेरी के रसमें दूध मिलाकर पीनेसे अफीमका विष उतर जाता है।

कुचले का वर्णन और उसकी शान्ति के उपाय ।

कुचले क गुणावगुण प्रभृति ।

कुचले को संस्कृत में कारस्कर, किम्पाक, विषतिन्दु, विष-द्रुम, गरद्रुम, रम्यफल और कालकूटक आदि कहते हैं। इसे हिन्दीमें कुचला, बँगला में कुँचिले, मरहटी में कुचला, गुजराती में झेरकोचला, अँगरेज़ी में पॉइज़ननट और लेटिन में स्ट्रिक-नॉस नक्सवोमिका कहते हैं।

कुचला शीतल, कड़वा, वातकारक, नशा लानेवाला, हलका, पाँव की पीड़ा दूर करने वाला, कफपित्त और रुधिर-विकार नाश करने वाला, कण्डू, कफ, बवासीर और व्रण को दूर करने वाला, पाण्डु और कामला को हरने वाला तथा कोढ़, वातरोग, मलरोध और ज्वर नाशक है।

कुचले के वृक्ष मध्यम आकारके प्रायः वनों में होते हैं। इसके पत्ते पान के समान और फल नारंगी की तरह सुन्दर होते हैं। इन फलों के वीजोंको ही "कुचला" कहते हैं। यह बड़ा तेज़ विष है। ज़रा भी ज़ियादा खाने से आदमी मर जाता है। कुचले की मात्रा दो तीन चाँवल तक होती है। आजकल विलायत में कुचलेका सत्त निकाला जाता है। उसकी मात्रा एक रत्तीका तीसवाँ भाग या चौथाई चाँवल भर होती है। सत्त सेवन करते समय बहुत ही सावधानी की ज़रूरत है, क्योंकि यह बहुत तेज़ होता है।

अधिक कुचला खाने का नतीजा।

इसकी ज़ियादा मात्रा खाने या बेक़ायदे खानेसे पेट में मरोड़ी, ऐंठनी, गलेमें खुश्की, ख़राश और रुकावट होती है तथा शरीर ऐंठता

और नसें खिंचती हैं। शेषमें कम्प होता और फिर मृत्यु हो जाती है।

कुचले के ज़ियादा खा जाने से सामान्यतः पाँच मिनट से लेकर आधे घण्टे के भीतर विषका प्रभाव दिखाई देता है; यानी इतनी देर में—तीस मिनट में—कुचले का ज़हर चढ़ जाता है। कभी-कभी दस बीस मिनट में ही आदमी मर जाता है। ज़ियादा-से-ज़ियादा ६ घण्टे तक कुचले के ज़ियादा खाने वाला जी सकता है। कुचले के बीजोंका चूर्ण डेढ़ माशे, कुचलेका सत्त आधे गेहुँ भर और एक्सट्रैक्ट तीन-चार रत्ती खाने से आदमी मर जाता है।

कुचले की ज़ियादा मात्रा खाने से अधिक-से-अधिक एक या दो घण्टे में उसका ज़हरी प्रभाव नज़र आता है। पहले सिर और हाथ-पैरों के स्नायु खिंचने लगते हैं। थोड़ी देरमें सारा बदन तनने लगता है तथा हाथ-पैर काँपते और अकड़ जाते हैं। दाँती भिंच जाती है, मुँह नहीं खुलता, मुँह सूखता है, प्यास लगती है, मुँह में झाग आते हैं तथा मुँह पर खून जमा होता है, अतः चेहरा लाल हो जाता है। इतनी हालत बिगड़ जाने पर भी, कुचला ज़ियादा खाने वाले की मानसिक शक्ति उतनी कमज़ोर नहीं होती।

"वैद्य कल्पतरु" में एक सज्जन लिखते हैं—कुचले को अँगरेज़ी में "नक्स वोमिका" कहते हैं। वैद्य लोग कुचले को और डाक्टर लोग स्ट्रिकेनिया और नक्सवोमिका—इन दोनों को बनावटी दवा की तरह काम में लाते हैं। अगर कुचला ज़ियादा खा लिया जाता है, तो ज़हर चढ़ जाता है। ज़हरके चिह्न—सारे चिह्न—धनुर्वात के जैसे होते हैं। खानेके बाद थोड़ी देर में या एकाधिक घण्टे में ज़हरका असर मालूम होता है। नसोंका खिंचना कुचले के ज़हर का मुख्य चिह्न है।

उपाय:—

(१) नसें ढीली करने वाली दवाएँ देनी चाहियें। जैसे,—अफ़ीम, कपूर, क्लोरोफार्म या क्लोरल हाइड्रेट आदि।

(२) घी पिलाना मुख्य उपाय है। तुरन्तही घी पिलाकर कय करा देने से ज़हर का असर नहीं होता।

कुचलेके विकार और धनुस्तंभ के लक्षणों का मुकाबला।

ज़ियादा कुचला खा जाने से, जब उसके विषका प्रभाव शरीर पर होता है, तब प्रायः धनुस्तम्भ रोगके से लक्षण होते हैं। पर चन्द बातों में फ़र्क़ होता है, अतः हम धनुस्तम्भ रोग और कुचले के विष के लक्षणोंका मुक़ाबला करके दोनोंका अन्तर बताते हैं:—

(१) कुचले के ज़हरीले लक्षण आरम्भ से ही साफ दिखाई देते हैं और जल्दी-जल्दी बढ़ते जाते हैं;

पर

धनुस्तम्भ के लक्षण आरम्भ में अस्पष्ट होते हैं; यानी साफ दिखाई नहीं देते, किन्तु पीछे धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं।

(२) कुचले के ज़हरीले असर से पहले, सारे शरीर के स्नायु खिंचने लगते हैं और पीछे मुँह और दाँतोंकी कतार भिंचती है;

पर

धनुस्तम्भ रोग होने से, पहले मुँह और दाँतोंकी कतार भिंचती है और पीछे शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गोंके स्नायु खिंचने या तनने लगते हैं।

(३) कुचले से आरम्भ यानी शुरू में ही शरीर धनुष या कमान की तरह नव जाता है;

पर

धनुस्तम्भ रोग होने से शरीर पीछे धीरे-धीरे धनुष या कमान की तरह नवने लगता है।

नोट—कुचले से पहले ही स्नायु या नसें खिंचने लगती हैं, इससे पहले ही—शुरू में ही शरीर धनुष की तरह नव जाता है; क्योंकि नसों के खिचाव या तनाव से ही तो शरीर कमान की तरह झुकता है और नसों या स्नायुओंको संकुचित करने वाला वायु है। इस के विपरीत, धनुस्तंभ रोग में स्नायु पीछे खिचने लगते हैं, इसी से शरीर भी धनुष की तरह पीछे ही नवता है।

(४) कुचला ज़ियादा खा जाने से जो ज़हरीला असर होता है, उस से हर दो दो या तीन-तीन मिनट में वेग आते और जाते हैं। जब वेग आता है, तब शरीर खिंचने लगता है और जब वेग चला जाता है और दूसरा वेग जब तक नहीं आता, इस बीचमें रोगी को चैन हो जाता है— शरीर तनने की पीड़ा नहीं होती। जब दूसरा वेग फिर दो या तीन मिनट में आता है, तब फिर शरीर खिंचने लगता है ;

पर

धनुस्तम्भ रोग होने से, वेग एक-दम चला नहीं जाता। हाँ, उसका ज़ोर कुछ देरके लिये हलका हो जाता है। वेग का ज़ोर हलका होनेसे शरीर का खिंचाव भी हलका होना चाहिये, पर हलका होता नहीं, शरीर ज्योंका त्यों बना रहता है।

खुलासा

कुचले से दो-दो या तीन-तीन मिनट में रह-रह कर शरीर तनता या खिंचता है। जब वेग चला जाता है और जितनी देर तक फिर नहीं आता, रोगी आराम से रहता है; पर धनुस्तम्भ में खींचातानीका वेग केवल ज़रा हलका होता है—साफ नहीं जाता और वेग हलका होने पर भी शरीर जैसे का तैसा बना रहता है।

और भी खुलासा

कुचले के विषैले प्रभाव और धनुस्तम्भ रोग—दोनों में ही वेग होते हैं। कुचले वाले रोगी को दो-दो या तीन-तीन मिनट को चैन मिलता है, पर धनुस्तम्भ वाले को इतनी-इतनी देर को भी आराम नहीं मिलता।

(५) कुचले का बीमार दो चार घण्टों में मर जाता है अथवा आराम हो जाता है ;

पर

धनुस्तम्भ का बीमार दो चार घण्टों में ही मर नहीं जाता—वह एक, दो, चार या पाँच दिन तक जीता रहता है और फिर मरता है या आराम हो जाता है।

खुलासा—कुचले का रोगी एक, दो, चार या पाँच दिन तक बीमार रह कर नहीं मरता। वह अगर मरता है, तो दो चार घण्टों में ही मर जाता है। पर धनुस्तंभ रोग का रोगी घण्टों में नहीं मरता, कम-से-कम एक रोज़ जीता है। धनुस्तंभ रोगी भी १० रात नहीं जीता ; यानी १० दिन के पहले ही मरनेवाला होता है तो मर जाता है। कहा है—"धनुस्तंभे दशरात्रं न जीवति।" यह भी याद रखो कि, कुचले और धनुस्तंभ के रोगी सदा मर ही नहीं जाते ; आरोग्य लाभ भी करते हैं। भेद इतना ही है, कि कुचले वाला या तो दो-चार घण्टों में आराम हो जाता है या मर जाता है ; पर धनुस्तंभवाला एक, चार या पाँच दिनों तक जीता है। फिर या तो मर जाता है या आरोग्य लाभ करता है।

नोट—धनुस्तम्भ रोग के लक्षण लिख देना भी नामुनासिब न होगा। धनुस्तंभ के लक्षण—दूषितवायु नसों को छेड़ कर, शरीर को धनुष की तरह नवा देता है ; इसी से इस रोग को 'धनुस्तम्भ' कहते हैं। इस रोग में रंग बदल जाता है, दाँत जकड़ जाते हैं, अङ्ग शिथिल या ढीले हो जाते हैं, मूर्च्छा होती और पसीने आते हैं। धनुस्तम्भ रोगी दस दिन तक नहीं बचता।

कुचलेका विष उतारने के उपाय।

आरम्भिक उपाय—

(क) अगर कुचला या संखिया वगैरः ज़हर खाते ही मालूम हो जाय, तो फौरन वमन करा कर ज़हर को आमाशय से निकाल दो ; क्योंकि खाते ही विष आमाशय में रहता है। आमाशय से विष के निकल जाते ही रोगी आराम हो जायगा।

(ख) अगर देर से मालूम हो या इलाज में देर हो जाय और विष पक्काशय में पहुँच जाय, तो दस्तों की दवा देकर, गुदा की राह से, विष को निकाल दो।

नोट—ज़हर खाने पर वमन और विरेचन कराना सब से अच्छे उपाय हैं। इस के बाद और उपाय करो। कहा है:—विषभुक्तवतेदद्यादूर्ध्वं वा अधश्च शोधनं। यानी ज़हर खाने वाले को वमन और विरेचन दवा देनी चाहिये। वमन या क़य कराना, इसलिये पहले लिखा है, कि सभी ज़हर पहले आमाशय में रहते हैं। जहाँ तक हो, उन्हें पहले ही वमन द्वारा निकाल देना चाहिये।

(१) वमन-विरेचन कराकर, कुचले के रोगी को कपूर का पानी पिलाना चाहिये, क्योंकि कपूर के पानी से कुचले का ज़हर नष्ट हो जाता है।

नोट—डाक्टर लोग कुचले वाले को क्लोरोफार्म सुंघाकर या क्लोरल हायड्रेट खिला कर नशे में रखते हैं। क्लोरल हायड्रेट कुचले के विष को नाश करता है। किसी-किसी ने अफ़ीम और कपूर को भी राय दी है। उनकी राय है, कि नसें ढीली करनेवाली दवाएं दी जानी चाहियें।

(२) दूध में घी और मिश्री मिला कर पिलाने से कुचले का ज़हर नष्ट हो जाता है।

(३) कपूर १ माशे और घी १ तोले,—दोनों को मिला कर पिलाने से धतूरे वग़ैरः का ज़हर उतर जाता है।

(४) दरियायी नारियल पानी में पीसकर पिलाने से सब तरह के विष नष्ट हो जाते हैं।

(५) कुचले के ज़हर वाले को फौरन ही घी पिलाने और क़य करानेसे कुछ भी हानि नहीं होती। घी इस ज़हरमें सर्वोत्तम उपाय है।

औषधि-प्रयोग।

यद्यपि कुचला प्राणघातक विष है, तथापि यह अगर मात्रा और उत्तम विधि से सेवन किया जाय, तो अनेकों रोग नाश करता है, अतः हम नीचे कुचले के चन्द प्रयोग लिखते हैं:—

(१) कुचले को तेल में पकाकर, उस तेल को छान लो। इस तेल की मालिश करने से पीठका दर्द, वायु की वजह से और स्थानों के दर्द तथा रींगन वायु वगैरः रोग आराम होते हैं।

(२) हरड़, पीपर, कालीमिर्च, सोंठ, हींग, सेंधा नोन, शुद्ध गंधक और शुद्ध कुचला,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर पीस-कूट कर छानलो और खरल में डाल कर अदरख या नीबू का रस ऊपर से देदे कर खूब घोटो। घुट जाने पर दो-दो रत्तीकी गोलियाँ बना लो।

सवेरे-शाम या ज़रूरत के समय एक-एक गोली खाकर, ऊपर से गरम जल पीने से शूल या दर्द आराम होता है। इस के सिवा मन्दाग्नि की यह उत्तम दवा है। इस से खूब भूख लगती और भोजन पचता है। परीक्षित है।

कुचला शोधने की तरकीब। कुचले के बीजों को घी में भून लो, बस वे शुद्ध हो जायँगे। अथवा कुचले को काँजी के पानी में ६ घन्टे तक, दोलायंत्र की विधि से, पकाओ। इस के बाद उसे घी में भून लो। यह शुद्धि और भी अच्छी है।

कुचला शोधने की सब से अच्छी विधि यह है। आध सेर मुलतानी मिट्टी को दो सेर पानी में घोलकर एक हाँडी में भर दो, फिर उसी में एक पाव कुचला भी डाल दो। इस हाँडी को चूल्हे पर रख दो और नीचे से मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब तीन घण्टे तक आग लग चुके, कुचले को निकाल कर, गरम जल से खूब धो लो। फिर छूरी या चाकू से कुचले के ऊपर के छिलके उतार लो और दोनों परतों के बीच की पान-जैसी जीभी निकाल-निकाल कर फेंक दो। इसके बाद उसके महीन-महीन चाँवल-जैसे टुकड़े कतर कर, छाया में सुखा कर, बोतल में भर दो। यह परमोत्तम कुचला है। इस में कड़वापन भी नहीं रहता। इस के सेवन से ८० प्रकार के वात रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। अनुपान-योग से यह जलन्धर, लकवा, पक्षाघात, बदन का रह जाना, गठिया और कोढ़ आदि को नाश कर देता है। नसोंमें ताकत लाने, कामदेवका बल बढ़ाने और कफ के रोग नाश करने में अव्यर्थ महौषधि है। बावले कुत्ते का विष इस के सेवन करने से जड़ से नाश हो जाता है

(३) शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध वच्छनाभ विष, अजवायन, त्रिफला, सज्जी खार, जवाखार, सेंधानोन, चीतेकी जड़ की छाल, सफेद ज़ीरा, कालानोन, बायबिडंग और त्रिकुटा—इन सब को एक-एक तोले लो और इन सबके वज़न के बराबर तेरह तोले शोधे हुए कुचले का चूर्ण भी लो। फिर इन चौदहों चीज़ों को महीन पीस लो। शेष में, इस पिसे चूर्ण को खरल में डालकर, नीबू का रस डाल-डाल कर घोटो। जब मसाला घुट जाय, दो दो रत्ती की गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को यथोचित अनुपान के साथ सेवन करने से मन्दाग्नि, अजीर्ण, आम-विकार, जीर्णज्वर और अनेक वात के रोग नाश होते हैं। परीक्षित हैं।

नोट—पारा और वच्छनाभ विष शोधने की विधि चिकित्साचन्द्रोदय दूसरे

भाग के पृष्ठ ५७६—७७ में देखिये। पारा, गंधक, कुचला और वच्छनाभ विष भूल कर भी बिना शोधे दवा में मत डालना।

(४) बलाबल अनुसार, एक से ६ रत्ती तक कुचला पानी में डाल कर औटाओ और छान लो। इस जलके पीनेसे भोजन अच्छी तरह पचता है। अगर अजीर्ण से बीच-बीचमें कय होती हों, तो यही पानी दो। अगर वात प्रकृति वालों को वात-विकारों से तकलीफ रहती हो, तो उन्हें यही कुचले का पानी पिलाओ। कुचले से वात-विकार फौरन दब जाते हैं। वात प्रकृति वालों को कुचला अमृत है। जिन अफीम खाने वालों के पैरों में थकान या भड़कन रहती हो, वे इस पानी को पिया करें, तो सब तकलीफें रफा होकर आनन्द आवे। इन सब शिकायतों के अलावः कुचले के पानी से मन्दाग्नि, अरुचि, पेटकी मरोड़ी और पेचिश भी आराम होती है।

नोट—धाक में आकर कुचला ज़ियादा न लेना चाहिये। अगर कुचला खाकर गरम पानी पीना हो, तो दो तीन चांवल भर शुद्ध कुचला खाना चाहिये और ऊपर से गरम पानी पीना चाहिये। अगर औटा कर पीना हो, तो बलाबल अनुसार एक से ६ रत्ती तक पानी में डालकर औटाना और छान कर पानी मात्र पीना चाहिये।

(५) कुचले को पानी के साथ पीसकर मुँह पर लगाने से मुँह की श्यामता-कलाई और व्यंग आराम होती है। गीली खुजली और दादों पर इसका लेप करने से वे भी आराम हो जाते हैं।

(६) कुचले की उचित मात्रा खाने और ऊपर से गरम जल पीने से पक्षवध, स्तंभ, आमवात, कमर का दर्द, अर्कुलनिसाँ—चूतड़ से पैर की अँगुली तक की पीड़ा—और वायु-गोला—ये सब रोग आराम होते हैं। स्नायु के समस्त रोगों पर तो यह रामवाण है। यह पथरी को फोड़ता, पेशाब लाता और बन्द रजोधर्म को जारी करता है।

नोट—हिकमत की पुस्तकों में नं० ६ के गुण लिखे हैं। मात्रा २ रत्ती की लिखी है। यह भी लिखा है कि, घी और मिश्री पिलाने और कय कराने से इसका दर्प नाश हो जाता है। यह तीसरे दर्जेका गरम, रूखा, नशा लानेवाला और घातक विष है। स्वाद में कड़वा है। कुचले का तेल लगाकर और कुचला खिला कर,

हमने अनेक कष्टसाध्य वायुरोग आराम किये हैं। पर इस बात को याद रखना चाहिये कि, नये रोगों में कुचला लाभ के बजाय हानि करता है। जब रोग पुराने हो जायँ, कम-से-कम चार छै महीने के हो जायँ, उन रोगों से सम्बन्ध रखनेवाले, वात दोष के सिवा और दोषों की शान्ति हो जाय, तभी इसे देनेसे लाभ होता है। मतलब यह है, पुराने वायु रोग में कुचला देना चाहिये, उठते ही नये रोग में नहीं।

(७) शुद्ध कुचले का चूर्ण गरम जल के साथ लेने से खूब भूख लगती है; साथ ही मन्दाग्नि, अजीर्ण, पेटका दर्द, मरोड़ी, पैरों की पिंडलियों का दर्द या भड़कन, ये सब रोग नाश हो जाते हैं।

(८) किसी रोग से कमज़ोर हुए आदमी को कुचला सेवन कराने से बदन में ताक़त आती है और रोग बढ़ने नहीं पाता। जिन रोगों में कमज़ोरी होती है, उन सब में कुचला लाभदायक है।

(९) जो बालक शारीरिक या मानसिक कमज़ोरी से रातको बिछौनों में पेशाब कर देते हैं, उन्हें उचित मात्रा में कुचला खिलाने से उनकी वह ख़राब आदत छूट जाती है।

(१०) पुराने बादी के रोगों में कुचले की हलकी मात्रा लगातार सेवन करने से जो लाभ होता है, उसकी तारीफ नहीं कर सकते। कमर का दर्द, कमर की जकड़न, गठिया, जोड़ों का दर्द, पक्षाघात—एक तरफ का शरीर मारा जाना, अर्दित रोग—मुँह टेढ़ा हो जाना, चूतड़ से पैर की अँगुली तक का दर्द और झनझनाहट—अगर ये सब रोग पुराने हों, चार छै महीने के या ऊपर के हों—इनके साथ के मूर्च्छा कम्प आदि भयंकर उपद्रव शान्त हो गये हों, तब आप कुचला सेवन कराइये। आप फल देखकर चकित हो जायँगे। भूरि-भूरि प्रशंसा करेंगे। मात्रा हलकी रखिये। नियम से बिला नागा खिलाइये और महीने दो महीने तक उकताइये मत।

(११) जिस मनुष्य का हाथ लिखते समय काँपता हो और क़लम चलाते समय उँगलिया ठिठर जाती हों, उसे आप दो चार महीने कुचला खिलाइये और आश्चर्य फल देखिये।

(१२) अगर अधिक स्त्री-प्रसंग से या हस्तमैथुन से या और कारण से वीर्य क्षय होकर शरीर में कमज़ोरी बहुत ही ज़ियादा होगई हो, शरीर और नसें ढीली पड़ गई हों अथवा वीर्यस्राव होता हो, लिंगेन्द्रिय निकम्मी या कमज़ोर हो गई हो—नामर्दीका रोग हो गया हो, तब आप कुचला सेवन कराइये : आपको यश मिलेगा। कुचला खिलाने से वीर्य पुष्ट होकर शरीर मज़बूत होगा। वीर्यवाहिनी नसों का चैतन्य-स्थान पीठ के बाँसे के ज्ञान-तन्तुओं में है। वह भी कुचले से पुष्ट होता है, अतः वीर्यवाहक नसें जल्दी ही वीर्य को छोड़ नहीं सकतीं, इस-लिये वीर्यस्राव रोग भी आराम हो जायगा। लिंगेन्द्रिय की कमज़ोरी या नामर्दी के लिये तो कुचला बेज़ोड़ दवा है।

(१३) अगर किसी की मानसिक शक्ति वीर्य क्षय होने या ज़ियादा पढ़ने-लिखने आदि कारणों से बहुत ही घट गई हो, चित्त ठिकाने न रहता हो, ज़रा से दिमाग़ी काम से जी घबराता हो, बातें याद न रहती हों, तो आप उसे कुचला सेवन कराइये। कुचले के सेवन करने से उसकी मानसिक शक्ति खूब बढ़ जायगी और रोगी आपको आशीर्व्वाद देगा।

(१४) स्त्रियों को होने वाले वातोन्माद या हिस्टीरिया रोग में भी कुचला बहुत गुण करता है।

(१५) शुद्ध कुचला १ तोले और काली मिर्च १ तोले—दोनोंको पानी के साथ महीन पीसकर, उड़द के बराबर गोलियाँ बनालो और छाया में सुखाकर शीशी में रखलो। एक गोली बँगला पान में रखकर, रोज़ सवेरे खाने से पक्षवध, पक्षाघात, एकान्तवात, अर्द्धाङ्ग या फालिज ,—ये रोग आराम हो जाते हैं।

नोट—जब वायु कुपथ्य से कुपित होकर, शरीर के एक तरफ के हिस्से को या कमर से नीचे के भाग को निकम्मा कर देता है, तब कहते हैं "पक्षाघात" हुआ है। इस रोग में शरीर के बन्धन ढीले हो जाते हैं और चमड़े में स्पर्श-ज्ञान नहीं रहता। वैद्य इसकी पैदायश वात से और हकीम कफ से मानते हैं। हिकमत के

ग्रन्थों में लिखा है, इस रोग में गरम पानी पीने को न देना चाहिये । चने की रोटी कबूतर के मांस या तीतर के मांस के साथ खानी चाहिये ।

(१६) शुद्ध कुचले को आग पर रख दो । जब धूआँ निकल जाय, उसे निकालकर तोलो । जितना कुचला हो, उतनी ही कालीमिर्चें लेलो । दोनों को पानी के साथ पीसकर उड़द-समान गोलियाँ बना लो । इन गोलियों को बँगला पान में रखकर, रोज़ सवेरे खाने से अर्द्धाङ्ग रोग, पक्षवध या पक्षाघात-फालिज आराम होता है । इस के सिवा लकवा—आर्दित रोग, कमर का दर्द, दिमाग़ की कमज़ोरी—ये शिकायतें भी नष्ट हो जाती हैं । अव्वल दर्जे की दवा हैं ।

(१७) शुद्ध कुचला दो रत्ती और शुद्ध काले धतूरे के बीज दो रत्ती—इन को पान में रखकर खाने से अपतंत्रक रोग नाश हो जाता है ।

नोट—वायुके कोप से हृदय में पीड़ा आरंभ होकर ऊपर को चढ़ती है और सिर में पहुँच कर दोनों कनपटियों में दर्द पैदा कर देती है तथा रोगी को धनुष की तरह झुकाकर आक्षेप और मोह पैदा कर देती है । इस रोग वाला बड़ी तकलीफ से ऊँचे-ऊचे साँस लेता है । उसके नेत्र ऊपर को चढ़ जाते हैं, नेत्रों को रोगी बन्द रखता है और कबूतर की तरह बोलता है । रोगी को शरीर का ज्ञान नहीं रहता । इस रोग को "अपतंत्रक" रोग कहते हैं ।

(१८) शुद्ध कुचला, शुद्ध अफीम और काली मिर्च— तीनों बराबर-बराबर लेकर, महीन पीस लो । फिर खरल में डाल कर बँगला पान के रस के साथ घोटो और रत्ती-रत्ती भर की गोलियाँ बना कर छाया में सुखा लो । इन गोलियों का नाम "समीरगज केशरी बटी" है । एक गोली खाकर, ऊपर से पान का बीड़ा खाने से दण्डापतानक रोग नाश होता है । इतना ही नहीं; इन गोलियों से समस्त वायु रोग, हैज़ा और मृगी रोग भी नाश होजाते हैं ।

नोट—जब वायु के साथ कफ भी मिल जाता है, तब सारा शरीर डण्डे की तरह जकड़ जाता और डण्डे की तरह पड़ा रहता है—हिल-चल नहीं सकता, उस समय कहते हैं "दण्डापतानक" रोग हुआ है ।

(१९) शुद्ध कुचला दो रत्ती पान में नित्य खाने से आक्षेप या दण्डाक्षेप नामक वायु रोग नाश होता है।

नोट—जब नसों में वायु घुस कर आक्षेप करता है, तब मनुष्य हाथी पर बैठे आदमी की तरह हिलता है, इसे ही आक्षेप या दण्डाक्षेप कहते हैं।

(२०) शुद्ध कुचला और अफीम दोनों को बराबर-बराबर लेकर तेल में मिला लो और लंगड़ेपन की तकलीफ की जगह मालिश करके, ऊपर से थूहर के या धतूरे के पत्ते गरम करके बाँध दो।

नोट—जब मोटी नसों में वायु घुस जाता है, तब नसों में दर्द और सूजन पैदा करके मनुष्य को लङ्गड़ा, लूला या पागल कर देता है। इस रोग में दर्दस्थान पर जोंकें लगवा कर, खराब खून निकलवा देना चाहिये। पीछे गरम रुई से सेक करना और ऊपर का तेल मल कर गरम धतूरे के पत्ते बांध देने चाहियें।

(२१) शुद्ध कुचला दो रत्ती से आरंभ करके हर रोज़ थोड़ा-थोड़ा बढ़ाकर दो माशे तक लेजाओ। इस तरह कुचला पान में रखकर खाने से अकड़-वात रोग नाश हो जाता है। साथ ही दो तोले कुचले को पाँच तोले सरसों के तेल में जला कर और घोट कर, उस की मालिश करो।

नोट—जब बहुत ही छोटी और पतली नसों में वायु घुस जाता है, तब हाथ-पैरों में फूटनी या दर्द होता है और हाथ पैर कांपते तथा अकड़ जाते हैं। इसी रोग को अकड़वात रोग कहते हैं। ऐसी हालत में कुचला सब से उत्तम दवा है, क्योंकि नसों के भीतर की वायु को बाहर निकालने की सामर्थ्य कुचले से बढ़कर और दवा में नहीं है।

(२२) थोड़ा सा शुद्ध कुचला और काली मिर्च—पीस कर पिलाने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(२३) अगर साँप का काटा आदमी मरा न हो, पर बेहोश हो; तो कुचला पानी में पीसकर उस के गले में उतारो और कुचले को ही पीसकर उस के शरीर पर मलो—अवश्य होश में आ जायगा।

(२४) कुचला सिरके में पीसकर लगाने से दाद नाश हो जाते हैं।

(२५) कुचला २ तोले, अफीम ६ माशे, धतूरे का रस ४ तोले, लहसन का रस ४ तोले, चिरायते का रस ४ तोले, नीबू का रस ४ तोले, टेकारी का रस ४ तोले, तमाखू के पत्तों का रस ४ तोले, दालचीनी ४ तोले, अजवायन ४ तोले, मेथी ४ तोले—कड़वा तेल १ सेर, मीठा तेल १ सेर और रेंडी का तेल आध सेर—इन सब को मिला कर, आग पर रखो और मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब सब दवाएँ जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार लो और छान कर बोतल में भर लो। इस तेल की मालिश से सब तरह की वात-व्याधि और दर्द आराम होता है। यह तेल कभी फेल नहीं होता। परीक्षित है।

(२६) कुचला ३ तोले, दालचीनी ३ तोले, खाने की सुरती ३ तोले, लहसन ४ तोले, भिलावा १ तोले और मीठा तेल २० तोले—सब को मिलाकर पकाओ, जब दवायें जल जायँ, तेल को उतार कर छान लो। इस तेल के लगाने से गठिया और सब तरह का दर्द आराम होता है।

(२७) शुद्ध कुचला, शुद्ध तेलिया विष और शुद्ध चौकिया सुहागा—इन तीनों को समान-समान लेकर खरल करके रख लो। इस में से रत्ती-रत्ती भर दवा रोज़ सवेरे-शाम खिलाने से २१ दिन में बावले कुत्ते का विष निश्चय ही नाश हो जाता है।

नोट—कुत्ते के काटते ही घावका खून निकाल डालो और लहसन सिरकेमें पीस कर घाव पर लगाओ अथवा कुचले को ही आदमी के मूत्र में पीस कर लगा दो।

(२८) कुचले का तेल लगाने से नासूर, सिर की गंज और उकवत रोग आराम हो जाते हैं।

जल-विष नाशक उपाय।

(१) सोंठ, राई और हरड़—इन तीनों को पीस-छान कर रख लो। भोजन से पहले, इस चूर्ण के खाने से अनेक देशों के जल-दोष से हुआ रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२) सोंठ और जवाखार—इन दोनों को पीस-छान कर रख लो। इस चूर्ण को गरम पानी के साथ फाँकने से जल-दोष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) अनेक देशों का जल पीना विष-कारक होता है, इसलिये जल को सोने, मोती और मूंगे आदि की भाफ से शुद्ध करके पीना चाहिये।

(४) बकायन और जवाखार—इन को पीस-छान कर, इस में से थोड़ा सा चूर्ण गरम पानी के साथ पीने से अनेक देशों के जल से हुए विकार नाश हो जाते हैं।

शराबका नशा उतारने के उपाय।

(१) ककड़ी खाने से शराब का नशा उतर जाता है।

(२) वैद्यकल्पतरु में लिखा है :—

(क) सिर पर शीतल जल डालो।

(ख) धनिया पीस कर और शक्कर मिलाकर खिलाओ।

(ग) इमली के पानी में खजूर या गुड़ घोलकर पिलाओ।

(घ) भूरे कुम्हड़े के रस में दही और शक्कर मिलाकर पिलाओ।

(ङ) घी और चीनी चटाओ।

(च) ककड़ी खिलाओ।

(३) बिना कुछ खाये, निहार मुँह, शराब पीने से सिर में दर्द होता

है, गले में सूजन आती है, चिन्ता होती है और बुद्धि हीन हो जाती है। इस दशा में नीचे लिखे उपाय करो :—

(क) फस्द खोलो ।

(ख) कय और दस्त कराओ ।

(ग) खट्टी छाछ पिलाओ ।

(घ) मेवाओं के रस से मिज़ाज ठण्डा करो ।

(१) जवासे को पानी के साथ पीस कर और रस निकाल कर पीओ । इस से पारे और शिंगरफ के दोष नष्ट हो जायँगे ।

(२) रेंडी का तेल ५ माशे आधपाव गाय के दूध में मिला कर पीने से पारे और शिंगरफ के विकार शान्त हो जाते हैं।

(३) सात दिनों तक, अदरख और नोन खाने और हर समय मुख में रखने से सिन्दूर का विष नाश हो जाता है ।

(४) नोन १५० रत्ती, तितली की पत्ती १५० रत्ती, चाँवल ३०० रत्ती और अखरोट की गिरी ६०० रत्ती—सब को अञ्जीरों के साथ कूट-पीस कर खाने से सिन्दूर का ज़हर नाश हो जाता है।

(५) पारे के दोष में शुद्ध गंधक सेवन सेवन करना, सब से अच्छा इलाज है ।

(६) अगर कच्ची हरताल खाई हो, तो तत्काल वमन करा दो। अगर देर से मालूम हो तो हरड़ की छाल, दूध और घी में मिला कर पिलाओ ।

(७) अगर नीलाथोथा ज़ियादा खा लिया हो, तो घी-दूध मिला कर पिलाओ और बीच-बीच में निवाया पानी भी पिलाओ ।

पाँचवाँ अध्याय

शत्रुओं द्वारा भोजन-पान-तेल और सवारी आदि में प्रयोग किये हुए विषों की चिकित्सा।

अमीरों की जान ख़तरेमें।

राजाओं की जान सदा ख़तरे में रहती है,। उनके पुत्र और भाई-भतीजे तथा और लोग उनका राज हथियाने के लिये, उनकी मरण-कामना किया करते हैं। अगर उनकी इच्छा पूरी नहीं होती, राजा जल्दी मर नहीं जाता, तो वे लोग राजाके रसोइये और भोजन परोसने वालों से मिल कर, उनको बड़े-बड़े इनामोंका लालच देकर, राजाके खाने-पीने के पदार्थों में विष मिलवा देते हैं। राजाओंकी तरह धनी लोगोंके नज़दीकी रिश्तेदार बेटे-पोते प्रभृति और दूरके रिश्ते में लगने वाले भाई-बन्धु, उनके माल-मते के वारिस होनेकी ग़रज़ से, उन्हें खाने-पीनेकी चीज़ों में ज़हर दिलवा देते हैं। इतिहास के पन्ने उलटने से मालूम होता है, कि प्राचीन काल से अब तक अनेकों राजा-महाराजा ज़हर देकर मार डाले गये। पाण्डुपुत्र भीमसेन को कौरवोंने खानेमें ज़हर खिला दिया था, मगर वे भाग्यबल से बच गये। एक मुसलमान शाहज़ादे को भाइयोंने भोजन में ज़हर दिया। ज्योंहीं वह खाने बैठा, उसकी बहनने इशारा किया और उसने थालीसे हाथ अलग कर लिया। बस, इस तरह मरता-मरता बच गया। अपने समयके अद्वितीय विद्वान् महर्षि दयानन्द सरस्वती

ने भारतके प्रायः सभी धर्मावलम्बियोंको शास्त्रार्थ में परास्त कर दिया; इसलिये शत्रुओंने उन्हें भोजन में विष दे दिया। इस तरह एक महापुरुष का देहान्त हो गया। ऐसी घटनायें बहुत होती रहती हैं। बाज़-बाज़ बदचलन औरतें अपने ससुर, देवर, जेठ और पतियों को अपनी राहके काँटे समझकर विष खिला दिया करती हैं। अतः सभी लोगोंको, विशेष कर राजाओं और धनियों को बेखटके भोजन नहीं करना चाहिये; सदा शंका रखकर, देख-भाल कर और परीक्षा करके भोजन करना चाहिये। राजा-महाराजाओं और बादशाहों के यहाँ, भोजन-परीक्षा करने के लिये, वैद्य हकीम नौकर रहते हैं। उनके परीक्षा करके पास कर देने पर ही राजा महाराजा खाना खाते हैं।

विष देने की तरकीबें।

ज़हर देनेवाले, भोजन के पदार्थों में ही ज़हर नहीं देते। खाने की चीज़ों के अलावः, वे पीने के पानी, नहाने के जल, शरीर पर लगाने के लेप, अञ्जन और तमाखू प्रभृति अनेक चीज़ों में ज़हर देते हैं। अँगरेज़ी राज्य होने के पहले, भारत में ठगोंका बड़ा ज़ोर था। वे लोग पथिकों को ज़हरीली तम्बाकू पिलाकर, विष-लगी खाटों पर सुलाकर या और तरह विष प्रयोग करके मार डाला करते थे। आजकल भी, अनेक रेल द्वारा सफर करने वाले मुसाफिर विष से बेहोश करके लूटे जाते हैं।

भगवान् धन्वन्तरि कहते हैं, कि नीचे लिखे पदार्थों में बहुधा विष दिया जाता है:—(१) भोजन, (२) पीनेका पानी, (३) नहानेका जल, (४) दाँतुन (५) उबटन, (६) माला, (७) कपड़े, (८) पलँग (९) ज़िरह बख्तर, (१०) गहने, (११) खड़ाऊँ, (१२) आसन, (१३) लगाने या छिड़कनेके चन्दन आदि (१४) अतर, (१५) हुक्का चिलम या तमाखू, (१६) सुरमा या अञ्जन, (१७) घोड़े हाथी की पीठ, (१८) हवा और सड़क प्रभृति।

इस तरह अगर ज़हर देनेका मौक़ा नहीं मिलता था, तो बहुत से लोग अय्याश-तबियत अमीरों के यहाँ विष-कन्यायें भेजते थे। वे

कन्यायें लाजवाब सुन्दरी होती थीं ; पर उनके साथ मैथुन करने से अमीरों का ख़ातमा हो जाता था। आजकल यह चाल है कि नहीं, इसका पता नहीं। अब आगे हम हर तरह के पदार्थों की विष-परीक्षा और साथ ही उनके विषनाशक उपाय लिखते हैं।

विष-मिले भोजन की परीक्षा।

(१) खाने के पदार्थों में से थोड़े-थोड़े पदार्थ कव्वे, बिल्ली और कुत्ते प्रभृति के सामने डालो। अगर उन में विष होगा, तो वे खाते ही मर जायँगे।

(२) विष-मिले पदार्थों की परीक्षा चकोर, जीवजीवक, कोकिला, क्रौंच, मोर, तोता, मैना, हंस और बन्दर प्रभृति पशु-पक्षियों द्वारा, बड़ी आसानी से होती है ; इसीलिये बड़े-बड़े अमीरों और राजा-महाराजाओं के यहाँ उपरोक्त पक्षी पाले जाते हैं। इन का पालना या रखना फ़िज़ूल नहीं है। अमीरों को चाहिये, अपने खाने की चीज़ों में से नित्य थोड़ी-थोड़ी इन्हें खिला कर, तब खाना खावें।

विष-मिले पदार्थ खाने या देख लेने ही से चकोर की आँखें बदल जाती हैं। जीवजीवक पक्षी विष खाते ही मर जाते हैं। कोकिला की कण्ठध्वनि या गले की सुरीली आवाज़ बिगड़ जाती है। क्रौंच पक्षी मदोन्मत्त हो जाता है। मोर उदास सा होकर नाचने लगता है। तोता-मैना पुकारने लगते हैं। हंस बड़े ज़ोर से बोलने लगता है। भौंरे गूँजने लगते हैं। साम्हर आँसू डालने लगता है और बन्दर बारम्बार पाख़ाना फिरने लगता है।

(३) परोसे हुए भोजन में से पहले थोड़ा सा आग पर डालना चाहिये। अगर भोजन के पदार्थों में विष होगा, तो अग्नि चटचट करने लगेगी अथवा उसमें से मोर की गर्दन-जैसी नीली और कठिन से सहने योग्य ज्योति निकलेगी, धूआँ बड़ा तेज़ होगा और जल्दी शान्त न होगा तथा आग की ज्योति छिन्न-भिन्न होगी।

हमारे यहाँ भोजनकी थाली पर बैठकर पहलेही जो वैसन्धर जिमाने की चाल रक्खी गई है, वह इसी ग़रज़ से कि, हर आदमी को भोजनके निर्विष और विषयुक्त होने का हाल मालूम हो जाय और वह अपनी जीवन-रक्षा कर सके। पर, अब इस ज़माने में यह चाल उठती जाती है। लोग इसे व्यर्थ का ढोंग समझते हैं। ऐसी-ही-ऐसी बहुत सी बेवकूफियाँ हमारी समाज में बढ़ रही हैं।

गन्ध या भाफ से विष-परीक्षा।

थाल और थालियों में अगर ज़हर-मिला भोजन परोसा जाता है, तो उस से जो भाफ उठाती है, उस के शरीर में लगने से हृदय में पीड़ा होती है, सिर में दर्द होता है और आँखें चक्कर खाने लगती हैं।

"चरक" में लिखा है, भोजन की गन्ध से मस्तक-शूल, हृदय में पीड़ा और बेहोशी होती है।

विष-मिले पदार्थों के हाथों से छूने से हाथ सूज जाते या सो जाते हैं, उँगलियों में जलन और चोंटनी सी तथा नखभेद होता है; यानी नाखून फटे से हो जाते हैं। अगर ऐसा हो, तो भूल कर भी कौर मुँह में न देना चाहिये।

चिकित्सा।

भाफ के लगने से हुई पीड़ा की शान्ति के लिये, नीचे लिखे उपाय करो:—

(१) कूट, हींग, ख़स और शहद को मिला कर, नाक में नस्य दो और इसी को नेत्रों में आँजो।

(२) सिरस, हल्दी और चन्दन को—पानी में पीस कर सिर पर लेप करो।

(३) सफेद चन्दन को, पत्थर पर पानी के साथ पीसकर, हृदय पर लगाओ।

(४) प्रियंगूफूल, दीरवहुट्टी गिलोय और कमल को पीसकर, हाथों पर लेप करने से उँगलियों की जलन, चोंटनी और नाखूनों के फटने में शान्ति होती है ।

ग्राससे विष-परीक्षा ।

अगर ग़फ़लत से ऊपर लिखे लक्षणों वाला विष-मिला भोजन कर लिया जाय या ग्रास मुँह में दिया जाय, तो जीभ अष्ठीला रोग की तरह कड़ी हो जाती है और उसे रसों का ज्ञान नहीं होता । मतलब यह कि, जीभ पर विष-मिले भोजन के पहुँचने से जीभ को खाने की चीज़ों का ठीक-ठीक स्वाद मालूम नहीं होता और वह किसी क़दर कड़ी या सख़्त भी हो जाती है । जीभ में दर्द और जलन होने लगती है । मुँह से लार बहने लगती है । अगर ऐसा हो, तो भोजन को फौरन ही छोड़ कर अलग हो जाना चाहिये और पीड़ा की शान्ति के लिये नीचे लिखे उपाय करने चाहिये:—

चिकित्सा ।

(१) कूट, हींग, ख़स और शहद को पीस और मिला कर, गोला सा बना लो और उसे मुँह में रख कर कवल की तरह फिराओ, खा मत जाओ ।

(२) जीभ को ज़रा खुरच कर, उस पर धायके फूल, हरड़, और जामुन की गुठली की गरी को महीन पीसकर और शहद में मिला कर रगड़ो । अथवा

(३) अंकोठ की जड़, सातला की छाल और सिरस के बीज शहत में पीस या मिला कर जीभ पर रगड़ो ।

दाँतुन प्रभृति में विष-परीक्षा ।

अगर दाँतुन में विष होता है, तो उसकी कूँची फटी हुई, छोटी या

बिखरी सी होती है। उस दाँतुन के करने से जीभ, दाँत और होठों का मांस सूज जाता है। अगर जीभ साफ करने की जीभीमें विष होता है, तोभी ऊपर लिखे दाँतुन के से लक्षण होते हैं।

चिकित्सा।

(१) पृष्ठ १४६ के ग्रास-परीक्षा में लिखे हुए नं० २ और नं० ३ के उपाय करो।

पीने के पदार्थों में विष-परीक्षा।

अगर दूध, शराब, जल, पने और शर्वत प्रभृति पीने के पदार्थों में विष मिला होता है, तो उन में तरह-तरह की रेखा या लकीरें हो जाती हैं और झाग या बुलबुले उठते हैं। इन पतली चीज़ों में अपनी या किसी चीज़ की छाया नहीं दीखती। अगर दीखती है, तो दो छाया दीखती हैं। छाया में छेद से होते हैं तथा छाया पतली सी और बिगड़ी हुई सी होती है। अगर ऐसा हो, तो समझना चाहिये कि विष मिलाया गया है और ऐसी चीज़ों को भूलकर भी जीभ तक न ले जाना चाहिये।

साग तरकारी में विष-परीक्षा।

अगर साग-भाजी, दाल, तरकारी, भात और मांस में विष मिला होता है, तो उनका स्वाद बिगड़ जाता है। वे पक कर तैयार होते ही—चन्द मिनटों में ही—बासी से या बुसे हुए से हो जाते और उन में बदबू आती है। अच्छे-से-अच्छे पदार्थों में सुगन्ध, रस और रूप नहीं रहता। पके हुए फलों में अगर विष होता है, तो वे फूट जाते या नर्म हो जाते हैं और कच्चे फल पके से हो जाते हैं।

अगर विष आमाशय या मेदे में पहुँच जाता है, तो बेहोशी, क़य, पतले दस्त, पेट फूलना या पेट पर अफारा आना, जलन होना, शरीर काँपना और इन्द्रियों में विकार—ये लक्षण होते हैं।

"चरक" में लिखा है, अगर विष मिले खानेके पदार्थ या पीनेके दूध-जल, शर्बत आदि आमाशय में पहुँच जाते हैं, तो शरीर का रंग और-का-और हो जाता है, पसीने आते हैं तथा अवसाद और उत्क्लेश होता है, दृष्टि और हृदय बन्द हो जाते हैं तथा शरीर पर बूँदों के समान फोड़े हो जाते हैं। अगर ऐसे लक्षण नज़र आवें और विष आमाशय में हो, तो सब से पहले "वमन" करा कर, विष को फौरन निकाल देना चाहिये। क्योंकि विष के आमाशय में होने पर "वमन" से बढ़ कर और दवा नहीं है।

चिकित्सा।

(१) मैनफल, कड़वी तूम्बी, कड़वी तोरई और बिम्बी या कन्दूरी—इनका काढ़ा बनाकर पिलाओ।

(२) एक मात्र कड़वी तूम्बी के पत्ते या जड़ पानी में पीस कर पिलाओ। इस से वमन होकर विष निकल जाता है। यह नुसख़ा हर तरह के विषों पर दिया जा सकता है। परीक्षित है।

(३) कड़वी तोरई लाकर, पानी में काढ़ा बनाओ। फिर उसे छानकर, उस में घी मिला दो और विष खानेवाले को पिला दो। इस उपाय से वमन होकर ज़हर उतर जायगा

नोट—कड़वी तोरई भी हर तरह के विष पर लाभदायक होती है। अगर पागल कुत्ता काट खावे; तो कड़वी तोरई का गूदा-मय रेशे के निकाल कर, पाव भर पानी में आध घण्टे तक भिगो रखो। फिर उसे मसल-छान कर, रोगी की शक्ति अनु-

सार, पाँच दिन सवेरे ही पिलाओ। इस के पिलाने से कय और दस्त होकर सारा ज़हर निकल जाता है और रोगी चंगा हो जाता है। पर आनेवाली बरसात तक पथ्य पालन करना परमावश्यक है। परीक्षित है।

अगर गले में सूजन हो और गला रुका हो, तो कड़वी तोरई को चिलम में रख कर, तमाखू की तरह पीने से लार टपकती है और गला खुल जाता है।

(४) कड़वे परवल घिसकर पिलाने से, कय होकर, विष निकल जाता है।

(५) छोटी पीपर २ माशे, मैनफल ६ माशे, और सैंधानोन ६ माशे—इन तीनों को सेर-भर पानी में जोश दो ; जब तीन पाव पानी रह जाय, मल-छानकर गरम-गरम पिला दो और रोगी को घुटने मोड़ कर बिठा दो; कय हो जायँगी। अगर कय होनेमें देर हो या कय खुलकर न होती हों, तो पखेरुका पंख जीभ या तालू पर फेरो अथवा अरण्डके पत्ते की डंडी गले में घुसाओ अथवा गले में अँगुली डालो। इन उपायों से कय जल्दी और खूब होती हैं। परीक्षित है।

(६) दही; पानी मिले दही और चाँवलों के पानी से भी वमन करा कर ज़हर निकालते हैं।

(७) ज़हरमोहरा गुलाब-जल में घिस-घिस कर, हर कय पर, एक-एक गेहूँ भर देनेसे कय होकर विष निकल जाता है। परीक्षित है।

पक्वाशयगत विष के लक्षण।

जब ज़हर खाये या ज़हर के भोजन-पान खाये देर हो जाती है, विष के आमाशय में रहते-रहते वमन या कय नहीं कराई जाती ; तब विष पक्वाशय में चला जाता है। जब विष पक्वाशय में पहुँच जाता है, तब जलन, बेहोशी, पतले दस्त, इन्द्रियों में विकार, रंग का पीला पड़ जाना और शरीर का दुबला हो जाना—ये लक्षण होते हैं। कितनों ही के शरीर का रंग काला होते भी देखा जाता है।

"चरक" में लिखा है, विषके पक्काशय में होने से मूर्च्छा, दाह, मतवालापन और बलनाश होता है और विष के उदरस्थ होने से तन्द्रा, कृशता और पीलिया—ये विकार होते हैं।

नोट—विष-मिली खाने की चीज़ खाने से पहले कोठे में दाह या जलन होती है। अगर विष-मिली छूने की चीज़ छूई जाती है, तो पहले चमड़े में जलन होती है।

चिकित्सा।

(१) कालादाना पीसकर और घी में मिलाकर पिलाने से दस्त होते और ज़हर निकल जाता है।

(२) दही या शहद के साथ दूषी-विषारि—चौलाई आदि देने से भी दस्त हो जाते हैं।

(३) काला दाना ३ तोले, सनाय तीन तोले, सौंठ ६ माशे और कालानोन डेढ़ तोले—इन सब को पीस-छानकर, फँकाने और ऊपर से गरम जल पिलाने से दस्त हो जाते हैं। विष खाने वाले को पहले थोड़ा घी पिलाकर, तब यह दवा फँकानी चाहिये। मात्रा ६ से ९ माशे तक। परीक्षित है।

(४) नौ माशे काले दाने को घी में भून लो और पीस लो। फिर उस में ६ रत्ती सोंठ भी पीसकर मिला दो। यह एक मात्रा है। इस को फाँक कर, ऊपर से गरम जल पीने से ५।७ दस्त अवश्य हो जाते हैं। अगर दस्त कम कराने हों,तो सोंठ मत मिलाओ। कमज़ोर और नरम कोठेवालोंको कालादाना ६ माशे से अधिक न देना चाहिये।

(५) छोटी पीपर १ माशे, सोंठ २ माशे, सेंधानोन ३ माशे, भिधारा की जड़ की छाल ६ माशे और निशोथ ६ माशे—इन सब को पीस-छानकर और १ तोले शहद में मिलाकर चटाने और ऊपर से थोड़ा गरम जल पिलाने से दस्त हो जाते हैं। यह जवान की १ मात्रा है। बलाबल देखकर, इसे घटा और बढ़ा सकते हो। परीक्षित है।

नोट—वमन विरेचन कराने वाले वैद्य को चिकित्साचन्द्रोदय पहले भाग

के अन्त में लिखे हुए चन्द पृष्ट और दूसरे भाग के १२५-१४२ तक के सफे ध्यान से पढ़ने चाहियें। क्योंकि वमन-विरेचन कराना लड़कों का खेल नहीं है।

मालिश कराने के तेलमें विष-परीक्षा।

अगर शरीर में मलने या मालिश कराने के तेल में विष मिला होता है, तो वह तेल गाढ़ा, गदला और बुरे रंग का हो जाता है। अगर वैसे तेल की मालिश कराई जाती है, तो शरीर में फोड़े या फफोले हो जाते हैं, चमड़ा पक जाता है, दर्द होता है, पसीने आते हैं, ज्वर चढ़ आता है और मांस फट जाता है। अगर ऐसा हो, तो नीचे लिखे उपाय करने चाहियें :—

चिकित्सा।

(१) शीतल जलसे शरीर धोकर या नहाकर, चन्दन, तगर, कूट, ख़स, वंशपत्री, सोमवल्ली, गिलोय, श्वेता, कमल, पीला चन्दन और तज—इन दवाओं को पानी में पीसकर, शरीर पर लेप करना चाहिये। साथ ही इन को पीसकर, कैथ के रस और गोमूत्र के साथ पीना भी चाहिये।

नोट—सोमवल्ली को सोमलता भी कहते हैं। सोमलता थूहर की कई जातियाँ होती हैं। उन में से सोमलता भी एक तरह की बेल है। इस लता का चन्द्रमा से बड़ा प्रेम है। शुक्लपक्ष की पड़वा से हररोज एक-एक पत्ता निकलता है और पूर्णमासी के दिन पूरे १५ पत्ते हो जाते हैं। फिर कृष्ण पक्ष की पड़वा से हर दिन एक-एक पत्ता गिरने लगता है। अमावस के दिन एक भी पत्ता नहीं रहता। इस की मात्रा २ माशे की है। सुश्रुत में इस के सम्बन्ध में बड़ी अद्भुत-अद्भुत बातें लिखी हैं। इस विषय पर फिर कभी लिखेंगे। सुश्रुत में लिखा है, सिन्ध नदी में यह तूम्बी की तरह बहती पाई जाती है। हिमालय, विन्ध्याचल, सह्याद्रि प्रभृति पहाड़ों पर इस का पैदा होना लिखा है। इसके सेवन करने से काया-पलट होती है। मनुष्य-शरीर देवताओं के जैसा रूपवान और बलवान हो जाता

है। हज़ारों वर्ष की उम्र हो जाती है। अष्टसिद्धि और नव निद्धि इसके सेवन करने वाले के सामने हाथ बाँधे खड़ी रहती हैं। पर खेद है कि यह आजकल दुष्प्राप्य है।

सूचना—अगर उबटन, छिड़कने के पदार्थ, काढ़े, लेप, बिछौने, पलँग, कपड़े और जिरह बख्तर या कवच में विष हो, तो ऊपर लिखे विष-मिले मालिश के तेल के जैसे लक्षण होंगे और चिकित्सा भी उसी तरह की जायगी।

अनुलेपन में विषके लक्षण।

केशर, चन्दन, कपूर और कस्तूरी आदि पदार्थों को पीसकर, अमीर लोग बदन में लगवाया करते हैं। इसी को अनुलेप कहते हैं। अगर विष-मिला अनुलेपन शरीर में लगाया जाता है, तो लगायी हुई जगह के बाल या रोएँ गिर जाते हैं, सिर में दर्द होता है, रोमों के छेदों से खून निकलने लगता है और चेहरे पर गाँठें हो जाती हैं।

चिकित्सा

(१) काली मिट्टी को—नीलगाय या रोझ के पित्ते, घी, प्रियंगू, श्यामा निशोथ और चौलाई में कई बार भावना देकर पीसो और लेप करो। अथवा

(२) गोबर के रस का लेप करो। अथवा मालती के रस का लेप करो। अथवा मूषिकपर्णी या मूसाकानी के रसका लेप करो अथवा घर के धूएँ का लेप करो।

नोट—मूषकपर्णी को मूसाकानी भी कहते हैं। इस के क्षुप जमीन पर फैले रहते हैं। दवा के काम में इस का सर्वाङ्ग लेते हैं। इस से विषैले-चूहे का विष नष्ट होता है। मात्रा १ माशे की है। रसोई के स्थानों में जो धूआँ सा जम जाता है, उसे ही घर का धूआँसा कहते हैं। विष-चिकित्सा में यह बहुत काम आता है।

सूचना—अगर सिर में लगाने के तेल, इत्र फुलेल, टोपी, पगड़ी, स्नानके जल और माला में विष होता है, तो अनुलेपन-विष के से लक्षण होते हैं और इसी ऊपर लिखी चिकित्सा से लाभ होता है।

मुखलेपगत विषके लक्षण ।

अगर मुँह पर मलने के पदार्थों में विष होता है, तो उन के मुँह पर लगाने से मुँह स्याह हो जाता है और मुहासे-जैसे छोटे-छोटे दाने पैदा हो जाते हैं, चमड़ी पक जाती है, मांस कट जाता है, पसीने आते हैं, ज्वर होता और फफोले से हो जाते हैं ।

चिकित्सा

(१) घी और शहद—नाबराबर—पिलाओ ।

(२) चन्दन और घी का लेप करो ।

(३) अर्कपुष्पी या अन्धाहुली, मुलेठी, भारंगी, दुपहरिया और साँठी—इन सब को पीस कर लेप करो ।

नोट—अर्क-पुष्पी संस्कृत नाम है । हिन्दी में, अन्धाहुली, अर्कहूली, अर्क-पुष्पी, क्षीरवृक्ष और दधियार कहते हैं । इसमें दूध निकलता है । फूल सूरजमुखी के समान गोल होता है । पत्ते गिलोय के समान छोटे होते हैं । इस की बेल नागर बेल के समान होती है । बँगला में इसे "दड्क्षीरुई" और मरहटी में "पहार-कुटुम्बी" कहते हैं । दुपहरिया को संस्कृत में बन्धूक या बन्धुजीव और बँगला में बान्धुलि फूलेर गाछ कहते हैं । यह दुपहरी के समय खिलता है; इसी से इसे दुपहरिया कहते हैं । माली लोग इसे बागों में लगाते हैं ।

सवारियों पर विषके लक्षण ।

अगर हाथी, घोड़े, ऊँट आदि की पीठों पर विष लगा हुआ होता है, तो हाथी घोड़े आदि की तबियत ख़राब हो जाती है, उन के मुँह से लार गिरती है और उन की आँखें लाल हो जाती हैं । जो कोई ऐसी विष-लगी सवारियों पर चढ़ता है, उस की साथलों—जाँघों, लिंग, गुदा और फोतों में फोड़े या फफोले हो जाते हैं ।

चिकित्सा।

(१) वही इलाज करो जो पृष्ठ १५४ में, विष-मिले मालिश कराने के तेल में लिखा गया है। जानवरों का भी वही इलाज करना चाहिये।

नोट—"चरक" में लिखा है, राजा के फिरने की जगह, खड़ाऊं, जूते, घोड़ा, हाथी, पलङ्ग, सिंहासन या मेज़ कुरसी आदि में विष लगा होता है, तो उन के काम में लाने से सूइयाँ चुभाने की सी पीड़ा, दाह, क्रम और अविपाक होता है।

नस्य, हुक्का तम्बाकू और फूलोंमें विष।

अगर नस्य या तम्बाकू प्रभृति में विष होता है, तो उनको काम में लाने से मुँह, नाक, कान आदि छेदों से खून गिरता है, सिर में पीड़ा होती है, कफ गिरता है और आँख, कान आदि इन्द्रियाँ खराब हो जाती हैं।

चिकित्सा।

(१) पानीके साथ अतीस को पीसकर लुगदी बना लो। लुगदी से चौगुना घी लो और घी से चौगुना गाय का दूध लो। सब को मिला कर, आग पर पकाओ और घीमात्र रहने पर उतार लो। इस घी के पिलाने से ऊपर लिखे रोग नाश हो जाते हैं।

(२) घी में वच और मल्लिका—मोतिया मिलाकर नस्य दो।

अगर फूलों या फूलमालाओं में विष होता है, तो उन की सुगन्ध मारी जाती है, रंग बिगड़ जाता है और वे कुम्हलाये से हो जाते हैं। उन के सूँघने से सिर में दर्द होता और नेत्रों से आँसू गिरते हैं।

चिकित्सा।

(१) मुखलेप गत विष में—पृष्ठ १५६ में—जो चिकित्सा लिखी है, वही करो अथवा पृष्ठ १४८ में गन्ध या भाफ के विष का जो इलाज लिखा है, वह करो।

कान के तेल में विष के लक्षण ।

अगर कानों में डालने के तेलमें विष होता है और वह कानों में डाला जाता है, तो कान बेकाम हो जाते हैं, सूजन चढ़ आती और कान बहने लगते हैं। अगर ऐसा हो, तो शीघ्र ही कर्णपूरण और नीचे का इलाज करना चाहिये:—

चिकित्सा ।

(१) शतावर का स्वरस, घी और शहद मिला कर कानों में डालो ।

(२) कत्थे के शीतल काढ़े से कानों को धोओ ।

अञ्जन में विष के लक्षण ।

अगर सुरमे या अञ्जनमें विष होता है, तो उन के लगाते ही नेत्रों से आँसू आते हैं, जलन और पीड़ा होती है, नेत्र घूमते हैं और बहुधा जाते भी रहते हैं; यानी आदमी अन्धा हो जाता है ।

चिकित्सा ।

(१) ताज़ा घी पीपल मिलाकर पीओ ।

(२) मेढ़ासिंगी और वरणे के वृक्ष के गोंद को मिलाकर और पीसकर आँजो ।

(३ कैथ और मेढ़ासिंगी के फूल मिलाकर आँजो ।

(४) भिलावे के फूल आँजो ।

(५) दुपहरिया के फूल आँजो ।

(६) अंकोट के फूल आँजो ।

(७) मोखा और महासर्ज के निर्यास , समन्दरफेन और गोरोचन—इन सब को पीसकर नेत्रों में आँजो ।

खड़ाऊँ, जूते, आसन और गहनों में विष।

अगर विष-लगी खड़ाउँ पहनी जाती हैं, तो पाँवों में सूजन आ जाती है, पाँव सो जाते हैं—स्पर्शज्ञान नहीं होता, फफोले या फोड़े हो जाते हैं और पीप निकलता है। जूते और आसन अथवा गद्दों में विष होने से भी यही लक्षण होते हैं। गहनों में विष होने से उन की चमक मारी जाती है। वे जहाँ-जहाँ पहने जाते हैं, वहाँ-वहाँ जलन होती और चमड़ी पक और फट जाती है।

चिकित्सा।

(१) पीछे मालिश करने के तेल में जो इलाज लिखा है, वही करना चाहिये अथवा बुद्धि से विचार करके, पीछे लिखी लगाने की दवाओं में से कोई दवा लगानी चाहिये।

विष-दूषित जल।

अगर एक राजा दूसरे राजा पर चढ़ कर जाता था, तो दूसरा राजा या राजा के शत्रु राह के जलाशयों—कूए, तालाब और बावड़ियों में विष घुलवा कर विषदूषित करा दिया करते थे। "थे" शब्द हमने इस लिये लिखा है, कि आजकल भारत में अँगरेज़ी राज्य होने से, किसी राजा को दूसरे राजा पर चढ़ाई करने का काम ही नहीं पड़ता। स्वतंत्र देशों के राजे चढ़ाइयाँ किया करते हैं। सुश्रुत में लिखा है, शत्रु-राजा लोग घास, पानी, राह, अन्न, धूआँ और वायु को विषमय कर देते थे। हमने ये बातें सन १६१४ के विश्वव्यापी महा समर में सुनी थीं। सुनते हैं, जर्मनी ने विषैली गैस छोडी थी। जर्मनी की विषैली गैस की बात सुनकर भारतवासी आश्चर्य करते थे और उसके कितने ही महीनों तक पृथ्वी के प्रायः समस्त नरपालों की नाक में दम कर देने

और उन्हें अपनी उँगलियों पर नचाने के कारण उसे राक्षस कहते थे। यद्यपि ये सब बातें भारतीयों के लिये नयी नहीं हैं। उनके देश में ही ये सब काम होते थे ; पर अब कालके फेर से वे सब विद्याओं को भूल गये और अपनी विद्याओं का दूसरों द्वारा उपयोग होने से चकित और विस्मित होते हैं ! धन्य ! काल तेरी महिमा !

अच्छा, अब फिर मतलब की बात पर आते हैं। अगर जल विष से दूषित होता है, तो वह कुछ गाढ़ा हो जाता है, उसमें तेज़ बू होती है, झाग आते और लकीरें सी दीखती हैं। जलाशयों में रहने वाले मेंडक और मछली उन में मरे हुए देखे जाते हैं और उन के किनारे के पशु-पक्षी पागल से होकर इधर-उधर घूमते हैं। ये विष-दूषित जल के लक्षण हैं। अगर ऐसे जल को मनुष्य और घोड़े, हाथी, ख़च्चर, गधे तथा बैल वगैरः जो पीते हैं या ऐसे जल में नहाते हैं, उन को वमन, मूर्च्छा, ज्वर, दाह और शोथ—सूजन—ये उपद्रव होते हैं। वैद्यको विष-दूषित जल से पीड़ित हुए प्राणियों को निर्विष और पानी को भी शुद्ध और निर्दोष करना चाहिये।

जल-शुद्धि-विधि।

(१) धव, अश्वकर्ण—शालवृक्ष, बिजयसार, फरहद, पाटला, सिन्दुवार, मोखा, किरमाला और सफेद खैर—इन ६ चीज़ों को जलाकर, राख कर लेनी चाहिये। इनकी शीतल भस्म नदी, तालाब, कूएँ, बावड़ी आदि में डाल देने से जल निर्विष हो जाता है। अगर थोड़े से पानी की दरकार हो, तो एक पस्से भर यही राख एक घड़े भर पानी में घोल देनी चाहिये। जब राख नीचे बैठ जाय और पानी साफ हो जाय, तब उसे शुद्ध समझ कर पीना चाहिये।

नोट—(१) धाय या धव के वृक्ष वनों में बहुत बड़े-बड़े होते हैं। इनकी लकड़ी से हल-मूसल बनते हैं। (२) शाल के पेड़ भी वन में बहुत बड़े-बड़े होते हैं। (३) विजयसार के वृक्ष भी वन में बहुत बड़े-बड़े होते हैं। (४) फरहद या पारिभद्र के वृक्ष भी वन में होते हैं। (५) पाटला या पाढर के वृक्ष भी वन में बड़े-बड़

होते हैं। (६) सिन्दुवार के वृक्ष वन में बहुत होते हैं। (७) मोला के वृक्ष भी वन में होते हैं। (८) किरमाला यानी अमलतास के पेड़ भी वन में बड़े-बड़े होते हैं। (९) सफेद खैर के वृक्ष भी वन में बड़े-बड़े होते हैं। मतलब यह कि, ये नौऊ वृक्ष वन में होते हैं और बहुतायत से होते हैं। इन के उपयोगी अङ्ग छाल आदि लेकर रख कर लेनी चाहिये।

विष-दूषित पृथ्वी।

विष दूषित ज़मीन से मनुष्य या हाथी घोड़े आदि का जो अङ्ग छू जाता है, वही सूज जाता या जलने लगता है अथवा वहाँ के बाल झड़ जाते या नाखून फट जाते हैं।

पृथ्वी की शुद्धि का उपाय।

(१) जवासा और सर्वगन्ध की सब दवाओं को शराब में पीस और घोल कर, सड़कों या राहों पर छिड़काव कर देने से पृथ्वी निर्विष हो जाती है।

नोट—तज, तेजपात, बड़ी इलायची, नागकेशर, कपूर, शीतल चीनी, अगर, केशर और लौंग—इन सब को मिलाकर "सर्वगन्ध" कहते हैं। याद रखो, औषधि की गन्ध या विष से हुए ज्वर में, पित्त और विष के नाश करने को, इसी सर्वगन्ध का काढ़ा पिलाते हैं।

विष-मिली धूआँ और हवा।

विषैली धूआँ और विषैली हवा से आकाश के पक्षी व्याकुल होकर ज़मीन पर गिर पड़ते हैं और मनुष्यों को खाँसी, ज़ुकाम, सिर-दर्द, और दारुण नेत्र-रोग होते हैं।

शुद्धि का उपाय।

(१) लाख, हल्दी, अतीस, हरड़, नागरमोथा, हरेणु, इलायची,

तेजपात, दालचीनी, कूट और प्रियंगू—इन को आग में जलाकर, धूआँ करने से धूएँ और हवा की शुद्धि होती है।

(२) चाँदी का बुरादा, पारा और वीरबहुट्टी,—इन तीनों को समान-समान लो। फिर इन तीनों के बराबर मोथा या हिंगलू मिलाओ। इन सब को कपिला के पित्त में पीसकर बाजों पर लेप कर दो। इस लेप को लगाकर नगाड़े और ढोल आदि बजाने से घोर विष के परिमाणु नष्ट हो जाते हैं।

विष-नाशक संक्षिप्त उपाय।

(१) "महासुगन्धि" नाम की अगद के पिलाने, लेप करने, नस्य देने और आँजने से सब तरह के विष नष्ट हो जाते हैं। "सुश्रुत" में लिखा है, महासुगन्धि अगद से वह मनुष्य भी आराम हो जाते हैं, जिन के कन्धे विष से टूट गये हैं, नेत्र फट गये हैं और जो मृत्यु-मुख में गिर गये हैं। इसके सेवन से नागों के राजा वासुकि का डसा हुआ भी आराम हो जाता है। मतलब यह है, इस अगद से स्थावर विष और सर्प-विष निश्चय ही शान्त होते हैं। इस के बनाने की विधि इसी भाग के पृष्ठ ३०-३१ में लिखी है।

(२) अगर विष आमाशय में हो, तो खूब क़य कराकर विष को निकाल दो। अगर विष पक्वाशय में हो, तो तेज़ जुलाब की दवा देकर विष को निकाल दो। अगर विष-खून में हो, तो फस्द खोलकर, सींगी लगा कर या जैसे जँचे खून को निकाल दो। चक्रदत्तजी कहते हैं:—अगर विष खाल में हो, तो लेप और सेक आदि शीतल कर्म करो।

नोट—(१) अगर विष आमाशय में हो, तो चार तोले तगर को शहद और मिश्री में मिला कर चाटो। (२) अगर विष पक्वाशय में हो, तो पीपर, हल्दी, मंजीठ और दारुहल्दी—बराबर-बराबर लेकर और गाय के पित्त में पीस कर मनुष्य को पीने चाहियें।

(३) मूषिका या अजरुहा—असली निर्विसी को हाथ में बाँध देने से खाये-पीये विष मिले पदार्थ निर्विष हो जाते हैं।

(४) मित्रों में बैठ कर दिल खुश करते रहना चाहिये। "अजेय घृत" और "अमृत घृत" नित्य पीना चाहिये। घी, दूध, दही, शहद और शीतल जल—इन को पीना चाहिये। शहद और घी मिला सेम का यूष भी हितकारी है।

नोट—पैत्तिक या पित्त प्रकृति वाले विष पर शीतल जल पीना हित है, पर वातिक या बादी के स्वभाववाले विष पर शीतल जल पीना ठीक नहीं है। जैसे, संखिया खाने वाले को शीतल जल हानिकारक और गरम हितकारी है। हरेक काम विचार कर करना चाहिए।

(५) जिसने चुपचाप विष खा लिया हो, उसे पीपर, मुलेठी, शहद, खाँड और ईख का रस—इन को मिलाकर पीना और वमन कर देना चाहिये।

गर विष-चिकित्सा।

बेहूदा स्त्रियाँ अपने पतियों को वश में करने के लिये, पसीना मासिक धर्म का खून—रज और अपने या पराये शरीर के मैलों को अपने पतियों को भोजन इत्यादिक में मिलाकर खिला देती हैं। इसी तरह शत्रु भी ऐसे ही पदार्थ भोजन में मिलाकर खिला देते हैं। इन पसीना आदि मैले पदार्थों को "गर" कहते हैं।

पसीने और रज प्रभृति गर खाने से शरीर में पाण्डुता होती, बदन कमज़ोर हो जाता, ज्वर आता, मर्मस्थलों में पीड़ा होती तथा धातुक्षय और सूजन होती है।

सुश्रुत में लिखा है:—

योगैर्नानाविधैरेषां चूर्णानि गरमादिशेत्।
दूषी विष प्रकाराणां तथैवाप्यनुलेपनात्॥

विषैले जन्तुओं को पीस कर स्थावर विष आदि नाना प्रकार के

योगों में मिलाते हैं। इस तरह जो विष तैयार हाता है, उसे ही "गर-विष" कहते हैं। दूषी विष के प्रकार का अथवा लेपन का विष पदार्थ भी गरसंज्ञक हो जाता है।

कोई लिखते हैं, बहुत से तेज़ विषों के मिलाने से जो विष बनता है, उसे गर विष (कृत्रिम विष) कहते हैं। ऐसा विष मनुष्य को शीघ्र ही नहीं, वरन कालान्तर में मारता है। इस से शरीर में ग्लानि, आलस्य, अरुचि, श्वास, मन्दाग्नि, कमज़ोरी और बदहज़मी—ये विकार होते हैं।

गर विष नाशक नुसखे।

(१) अड़ूसा, नीम और परवल—इन तीनों के पत्तों के काढ़े में, हरड़ को पानी में पीसकर मिला दो और इन के साथ घी पका लो। इस को "वृषादि घृत" कहते हैं। इस घी के खाने से गर विष निश्चय ही शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हरड़ को पानी के साथ सिल पर पीस कर कल्क या लुगदी बना लो। वज़नमें जितनी लुगदी हो, उससे चौगुना घी लो और घीसे चौगुना अड़ूसादि का काढ़ा तैयार करलो। फिर सब को मिलाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब काढ़ा जल जाय और घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बर्तन में रख दो।

(२) अंकोल की जड़ का काढ़ा बनाकर, उस में राब और घी डाल कर, तेल से स्वेदित किये गर विष वाले को पिलाने से गर-दोष नष्ट हो जाते हैं।

(३) मिश्री, शहद, सोनामक्खी की भस्म और सोना भस्म—इन सब को मिला कर चाटने से, अत्यन्त उग्र अनेक प्रकार के विष मिलाने से बना हुआ गरविष नष्ट हो जाता है।

(४) वच, कालीमिर्च, मैनशिल, देवदारु, करंज, हल्दी, दारुहल्दी, सिरस और पीपर—इन को एकत्र पीस कर नेत्रों में आँजने से गरविष शान्त हो जाता है।

(५) सिरस की जड़ की छाल, सिरस के फूल और सिरस के ही बीज—इन को गोमूत्र में पीस कर व्यवहार करने से विष-बाधा दूर हो जाती है।

दूसरा खण्ड ।
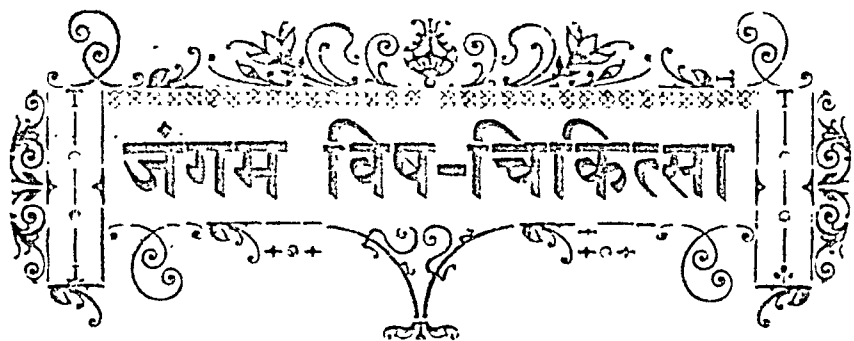
जंगम विष-चिकित्सा

चलने-फिरने वाले साँप, बिच्छू, कनकजूरे, मैंडक, मकड़ी, छिपकली प्रभृति के विष को "जंगम विष" कहते हैं।

पहला अध्याय

सर्प-विष-चिकित्सा।

साँपों के दो भेद।

ऐसे तो साँपों के बहुत से भेद हैं, पर मुख्यतया साँप दो तरह के होते हैं:—(१) दिव्य, (२) पार्थिव।

दिव्य सर्पों के लक्षण।

वासुकि और तक्षक आदि दिव्य सर्प कहलाते हैं। ये असंख्य प्रकार के होते हैं। ये बड़े तेजस्वी, पृथ्वी को धारण करने वाले और नागों के राजा हैं। ये निरन्तर गरजने, विष बरसाने और जगत् को सन्तापित करने वाले हैं। इन्होंने यह पृथ्वी मय समुद्र और द्वीपों के धारण कर रखी है। ये अपनी दृष्टि और साँस से ही जगत् को भस्म कर सकते हैं।

पार्थिव सर्पों के लक्षण ।

पृथ्वी पर रहने वाले साँपों को पार्थिव साँप कहते हैं। मनुष्यों को यही काटते हैं। इन की दाढ़ों में विष रहता है। ये पाँच प्रकार के होते हैं :—

(१) भोगी, (२) मण्डली, (३) राजिल, (४) निर्विष, और (५) दोगले।

ये पाँचों ८० तरह के होते हैं:—

(१) दर्वीकर या भोगी	२६
(२) मण्डली	२२
(३) राजिल	१०
(४) निर्विष	१२
(५) वैकरंज और इन से पैदा हुए	१०
कुल	८०

साँपों की पैदायश ।

साँपों की पैदायश के सम्बन्ध में पुराणों और वैद्यक-ग्रन्थों में बहुत-कुछ लिखा है। उस में से अनेक बातों पर आजकल के विद्याभिमानी बाबू लोग विश्वास नहीं करेंगे, अतः हम समयानुकूल बातेंही लिखते हैं।

वर्षाऋतु के आषाढ़ मास में साँपों को मद आता है। इसी महीने में वे कामोन्मत्त होकर, निहायत ही पोशीदा जगह में, मैथुन करते हैं। यदि इन को कोई देख लेता है, तो ये बहुत ही नाराज़ होते हैं और उसे काट बिना नहीं छोड़ते। कितने ही तेज़ घुड़-सवारों को भी इन्होंने बिना काटे नहीं छोड़ा।

हाँ, असल मतलब की बात यह है कि, आषाढ़ में सर्प मैथुन करते हैं, तब सर्पिणी गर्भवती हो जाती है। वर्षाभर वह गर्भवती रहती है और कातिक के महीने में दो सौ चालीस या कम-ज़ियादा अण्डे देती है। उन में से कितने ही पकते हुए अण्डों को वह स्वयं खा जाती है।

मशहूर है—कि, भूखी नागिन अपने अण्डे खा जाती है। भूखा कौन-सा पाप नहीं करता ? शेष में, उसे अपने अण्डों पर दया आ जाती है, इसलिए कुछ को छोड़ देती और उन्हें छै महीने तक सेया करती है।

सॉंपों के दाढ़ दाँत।

अण्डों से निकलने के सातवें दिन, बच्चों का रंग अपने माँ-बाप के रंग से मिल जाता है। सात दिन के बाद ही दाँत निकलते हैं और इक्कीस दिन के अन्दर तालू में विष पैदा हो जाता है। पच्चीस दिन का बच्चा ज़हरीला हो जाता है और छै महीने के बाद वह काँचली छोड़ने लगता है। जिस समय साँप काटता है, उसका ज़हर निकल जाता है; किन्तु फिर आकर जमा हो जाता है। साँप के दाँतों के ऊपर विष की थैली होती है। जब साँप काटता है, विष थैली में से निकल कर काटे हुए घाव में आ पड़ता है।

कहते हैं, साँपों के एक मुँह, दो जीभ, बत्तीस दाँत और ज़हर से भरी हुई चार दाढ़ें होती हैं। इन दाढ़ों में हर समय ज़हर नहीं रहता। जब साँप क्रोध करता है, तब ज़हर नसों की राह से दाढ़ों में आ जाता है। उन दाढ़ों के नाम मकरी, कराली, काल रात्रि और यमदूती हैं। पिछली दाढ़ यमदूती छोटी और गहरी होती है। जिसे साँप इस दाढ़ से काटता है, वह फिर किसी भी दवा-दारु और यंत्र-मंत्र से नहीं बचता।

कई ग्रन्थों में लिखा है, साँप के चार दाँत और दो दाढ़ होती हैं। विषवाली दाढ़ ऊपर के पेढ़े में रहती है। वह दाढ़ सूई के समान पतली और बीच में से विकसित होती है। उस दाढ़ के बीच में छेद होते हैं और उसी दाढ़ के साथ ज़हर की थैली का सम्बन्ध होता है। यों तो वह दाढ़ मुँह में आड़ी रहती है, पर काटते समय खड़ी हो जाती है। अगर साँप शरीर के मुँह लगावे और उसी समय फैंक दिया जाय, तो मामूली घाव होता है। अगर सामान्य घाव हो और विष

भीतर न घुसा हो, तो भयंकर परिणाम नहीं होता। अच्छी तरह दाढ़ बैठने से मृत्यु होती है। बिच्छू के एक डंक होता है, पर साँप के दो डंक होते हैं। बिच्छू के डंक से तेज़ दर्द होता है, पर साँप के डङ्क से उतना तेज़ दर्द नहीं होता, लेकिन जगह काली पड़ जाती है।

"चरक" में लिखा है, साँप के चार दाँत बड़े होते हैं। दाहनी ओर के, नीचे के दाँत लाल रंग के और ऊपर के श्याम रंग के होते हैं। गाय की भीगी हुई पूँछ के अगले भाग में जितनी बड़ी जल की बूँद होती है, सर्प के बाईं तरफ के नीचे के दाँतों में भी उतना ही विष रहता है। बाईं तरफ के ऊपर के दाँतों में उस से दूना, दाहिनी तरफ के नीचे के दाँतों में उस से तिगुना और दाहनी तरफ के ऊपर के दाँतों में उस से चौगुना विष रहता है। सर्प जिस दाँत से काटता है, उस के डसे हुए स्थान का रंग उसी दाँत के रंग के जैसा होता है। चार तरह के दाँतों में—पहले की अपेक्षा दूसरे का, दूसरे की अपेक्षा तीसरे का और तीसरे की अपेक्षा चौथे का दंशन अधिक भयानक होता है।

साँपों की उम्र और उनके पैर।

पुराणों में सर्प की आयु हज़ार वर्ष तक की लिखी है, पर अनेक ग्रन्थों में सौ या सवा सौ वर्ष की ही लिखी है। कोई कहते हैं, साँप के पैर नहीं होते, वह पेट के बल इतना तेज़ दौड़ता है, कि तेज़-से-तेज़ घुड़सवार उस से बचकर नहीं जा सकता। कोई कहते हैं, साँप के बाल के समान सूक्ष्म २२० पैर होते हैं, पर वह दिखते नहीं। जब साँप चलने लगता है, पैर बाहर निकल आते हैं।

साँपिन तीन तरह के बच्चे जनती है।

साँपिन के अण्डों से तीन तरह के बच्चे निकलते हैं:—

(१) पुरुष, (२) स्त्री, और (३) नपुंसक। जिसका सिर भारी होता है, जीभ मोटी होती है, आँखें बड़ी-बड़ी होती हैं, वह सर्प होता

है। जिस के ये सब छोटे होते हैं, वह साँपिन होती है। जिस में साँप और साँपिन दोनों के चिह्न पाये जाते हैं और जिस में क्रोध नहीं होता, वह नपुंसक या हींजड़ा होता है। नपुंसकों के विष में उतनी तेज़ी नहीं होती; यानी उनका विष नर-मादीन साँपों की अपेक्षा मन्दा होता है।

साँपों की क़िस्में।

"सुश्रुत" में साँपों की बहुत सी क़िस्में लिखी हैं। यद्यपि सभी क़िस्मोंका जानना ज़रूरी है, पर उतनी क़िस्मों के साँपों की पहचान और नाम वग़ैरः सर्पों से दिलचस्पी रखने वालों—उन को पकड़ने-पालने वालों और तंत्र-मंत्र का काम करने वालों के सिवा और सब लोगों को याद नहीं रह सकते, इस से हम सर्पों के मुख्य-मुख्य भेद ही लिखते हैं।

साँपों के पाँच भेद।

यों तो साँप अस्सी प्रकार के होते हैं, पर मुख्यतया तीन या पाँच प्रकार के होते हैं। वाग्भट्ट ने भी तीन प्रकार के सर्पों का ही ज़िक्र किया है। शेष के लिये अनुपयोगी समझ कर छोड़ दिया है। उन्होंने दर्वीकर, मण्डली और राजिल—तीन तरह के साँप लिखे हैं। वंगसेन-ने भोगी, मण्डली और राजिल—ये तीन लिखे हैं। इन के सिवाय, एक जाति का साँप और दूसरी जाति की साँपिन से पैदा होने वाले "दोगले" और लिखे हैं। असल में, सर्पों के मुख्य पाँच भेद हैं:—

(१) भोगी (२) मण्डली
(३) राजिल (४) निर्विष
(५) दोगले।

नोट—भोगी सर्पों को कितने ही वैद्यों ने "दर्वीकर" लिखा है। ये फनवाले भी कहलाते हैं। बोल-चाल की भाषा में इन के पाँच विभाग इस तरह भी कर सकते हैं:—

(१) फनवाले (२) चित्तीदार
(३) धारीदार (४) बिना जहर वाले
(५) दोगले ।

वङ्गसेन ने चार और वाग्भट्ट ने तीन विभाग किये हैं। ये विभाग, चिकित्सा के सुभीते के लिये, वातादिक दोषों के हिसाब से किये हैं। जिस तरह दोष तीन होते हैं; उसी तरह साँपों की प्रकृति भी तीन होती हैं। वात प्रकृति वाले, पित्त प्रकृति वाले, कफ प्रकृति वाले और मिली हुई प्रकृति वाले--इस तरह चार प्रकृतियों वाले साँप होते हैं। जिस की जसी प्रकृति होती है, उसके विष का प्रभाव भी काटने वाले पर वैसा ही होता है। जैसे, अगर वात प्रकृतिवाला साँप काटता है, तो काटे जाने वाले आदमी में वायु का प्रकोप होता है, यानी विष चढ़ने में वायु कोपके लक्षण नज़र आते हैं। अगर पित्त प्रकृतिवाला काटता है, तो पित्तकोप के; कफ प्रकृति वाला काटता है,तो कफ-कोपके और मिली हुई प्रकृतिवाला काटता है, तो दो दोषोंके कोप के लक्षण दृष्टिगत होते हैं। चारों तरह के साँपों की चार प्रकृतियाँ इस तरह होती हैं:—

(१) भोगी ... ... वात प्रकृति ।
(२) मण्डली ... ... पित्त प्रकृति ।
(३) राजिल ... ... कफ प्रकृति ।
(४) दोगले ... ... द्वन्दज प्रकृति ।

सूचना—गारुड़ी ग्रन्थों में साँपों की ९ जाति लिखी हैं—फणीधर, मणीधर, पडोंत्तरा, भोंकोढीआ, जलसांप, गड़ीवा, चित्रा, कालानाग और कन्ता।

साँपों की पहचान ।

भोगी ।

(१) भोगी या फनवाले। इन साँपों को "दर्वीकर" भी कहते हैं। इन के तरह-तरह के आकारों के फन होते हैं, इसी लिये इन्हें फनवाले साँप कहते हैं। ये बड़ी तेज़ी से खूब जल्दी-जल्दी चलते हैं। इन की प्रकृति वायुप्रधान होती है, इसलिये इन के विष में भी वायु की प्रधानता होती है। ये जिस मनुष्य को काटते हैं, उस में वायु के प्रकोप के विशेष लक्षण देखने में आते हैं। इन का विष रूखा होता है। रूखापन

वायु का गुण है। काले साँप, घोर काले साँप और काले पेटवाले साँप इन्हीं में होते हैं। इन की मुख्य पहचान दो हैं:—(१) फन, और (२) जल्दी चलना।

"सुश्रुत" में दर्वीकरों के ये भेद लिखे हैं:—कृष्ण सर्प-काला साँप, महा कृष्ण—घोर काला साँप, कृष्णोदर—काले पेटवाला, श्वेतकपोत-सफेद कपोती, महाकपोत, वलाहक, महासर्प, शंखपाल, लोहिताक्ष, गवेधुक, परिसर्प, खण्डफण, कुकुद, पद्म, महापद्म, दर्भपुष्प, दधिमुख, पुंडरीक, भृकुटीमुख, विष्किर, पुष्पाभिकीर्ण, गिरिसर्प, ऋजुसर्प, श्वेतोदर, महाशिरा, अलगर्द और आशीविष। इन के सिर पर पहिये, हल, छत्र, साथिया और अंकुश के निशान होते हैं और ये जल्दी-जल्दी चलते हैं। दर्वी संस्कृतमें कलछी को कहते हैं। जिनके फन कलछी के जैसे होते हैं, उन्हें दर्वीकर कहते हैं। इन के काटने से वायु का प्रकोप होता है; इसलिये नेत्र, नख, दाँत, मल-मूत्र आदि काले हो जाते हैं, शरीर काँपता है, जँभाई आती है तथा राल बहना, शूल या ऐंठन होना वगैरः-वगैरः वायु-विकार होते हैं। इन के विष के लक्षण हम आगे लिखेंगे।

मण्डली।

(२) मण्डली या चित्तीदार। इन के बदन पर चित्तियाँ होती हैं। इसी से इन्हें चित्तीदार सर्प कहते हैं। ये धीरे-धीरे मन्दी चाल से चलते हैं। इन में से कितनों ही पर लाल, कितनों ही पर काली और कितनों ही पर सफेद चित्तियाँ होती हैं। कितनों ही पर फूलों-जैसी, कितनों ही पर बाँस के पत्तों-जैसी और कितनों ही पर हिरन के खुर-जैसी चित्ती या चकत्ते होते हैं। ये पेट के पास से मोटे और दूसरी जगह से पतले तथा प्रचण्ड अग्नि के समान तीक्ष्ण होते हैं। जिन पर चमकदार चित्तियाँ होती हैं, वे बड़े तेज़ ज़हरवाले होते हैं। इन की प्रकृति पित्त प्रधान होती है, इसलिये इन के विष में भी पित्त की प्रधानता होती है। ये जिसे काटते हैं, उस में पित्त के प्रकोप के लक्षण नज़र आते हैं। इन का विष गरम होता है और गरमी पित्त का लक्षण

है। इन की मुख्य पहचान ये हैं:—(१) चित्ती, चकत्ते या विन्दु ; (२) पेट के पास से मोटापन, और (३) मन्दी चाल।

"सुश्रुत" में मण्डली सर्पों के ये भेद लिखे हैं:—आदर्शमण्डल, श्वेत-मण्डल, रक्तमण्डल, चित्रमण्डल, पृषत, रोध्र, पुष्प, मिलिंदक, गोनस, वृद्ध गोनस, पनस, महापनस, वेणुपत्रक, शिशुक, मदन, पालिंहिर, पिंगल, तंतुक, पुष्प, पाण्डु षडंग, अग्निक:, वभ्रु, कषाय, कलुश, पारा-वत, हस्ताभरण, चित्रक और ऐणीपद। इन के २२ भेद होते हैं, पर ये ज़ियादा हैं, अतः आदर्शमण्डलादि चारों को १, गोनस-वृद्धगोनस को १ और पनस, महापनस को १ समझिये। चूँकि ये पित्तप्रकृति होते हैं, अतः इन के काटने से चमड़ा और नेत्रादि पीले हो जाते हैं, सब चीजें पीली दीखती हैं, काटी कई जगह सड़ने लगती है तथा सर्दी की इच्छा, सन्ताप, दाह, प्यास, ज्वर, मद और मूर्च्छा आदि लक्षण होते और गुदा आदि से खून गिरता है। इन के विष के लक्षण हम आगे लिखेंगे।

राजिल।

(३) राजिल या धारीदार। इन्हें राजिमन्त भी कहते हैं। किसी के शरीर पर आड़ी, किसी के शरीर पर सीधी और किसी के शरीर पर बिन्दियों के साथ रेखा या लकीरें सी होती हैं। इन्हीं की वजह से ये धारीदार और गण्डेदार कहलाते हैं। इन का शरीर खूब साफ, चिकना और देखने में सुन्दर होता है। इन की प्रकृति कफ-प्रधान होती है, इसलिये इनके विष में भी कफकी प्रधानता होती है। ये जिसे काटते हैं, उस में कफ-प्रकोप के लक्षण नज़र आते हैं। इन का विष शीतल होता है और शीतलता कफ का लक्षण है।

"सुश्रुत" में लिखा है, राजिल या राजिमन्तों के ये भेद होते हैं:—पुण्डरीक, राजिचित्रे, अंगुलराजि, विन्दुराजि, कर्दमक, तृणशोषक, सर्षपक, श्वेतहनु, दर्भपुष्पक, चक्रक, गोधूमक और किक्किसाद। इन के दश भेद होते हैं, पर ये अधिक हैं; अतः राजिचित्रे, अंगुलराजि और

बिन्दुराजि, इन तीनों को एक समझिये । चूंकि इन की प्रकृति कफ की होती है, अतः इन के विष से चमड़ा और नेत्र प्रभृति सफेद हो जाते हैं। शीतज्वर, रोमाञ्च, शरीर अकड़ना, काटे स्थान पर सूजन, मुंह से गाढ़ा कफ गिरना, कय होना, बारम्बार नेत्रों में खुजली और श्वास रुकना प्रभृति कफ-विकार देखने में आते हैं। इन के विष के लक्षण भी आगे लिखेंगे । इन की मुख्य पहचान इन के गण्डे, रेखायें या धारियाँ एवं शरीर-सौन्दर्य्य या खूबसूरती है।

निर्विष।

(४) निर्विष या विषरहित। जिन में विष की मात्रा थोड़ी होती है या होती ही नहीं, उन को निर्विष कहते हैं। अजगर, दुमुही या दुम्बी तथा पनिया-साँप इन्हीं में हैं। अजगर मनुष्य या पशुओं को निगल जाता है, काटता नहीं । दुम्बी खेतों में आदमियों के शरीर से या पैरों से लिपट जाती है, पर कोई हानि नहीं करती। पनिया साँप के काटने से या तो विष चढ़ता ही नहीं या बहुत कम चढ़ता है। पानी के साँप नदी तालाब आदि के पानी में रहते हैं। अजगर बड़े-लम्बे-चौड़े मुँहवाले और बोझ में कई मन के होते हैं। साँप चपटा होता है और उस के एक मुंह होता है; पर दुमुही— दुम्बी का शरीर गोल होता है और उस के दोनों ओर दो मुंह होते हैं।

दोगले।

(५) दोगले। इन्हें वैकरंज भी कहते हैं। जब नाग और नागिन दो जाति के मिलते हैं, तब इन की पैदायश होती है। जैसे, राजिल जाति का साँप और भोगी जाति की साँपिन संगम करेंगे, तब दोगला पैदा होगा। उसमें माँ और बाप दोनों के लक्षण पाये जायँगे। वाग्भट्ट ने लिखा है,—राजिल, मण्डली अथवा भोगी प्रभृति के मेल से "व्यन्तर" नामके साँप होते हैं। उन में इन के मिले हुए लक्षण पाये जाते हैं और वे तीनों दोषों को कुपित करते हैं। परन्तु कई आचार्य्यों ने लिखा है कि, दोगले दो दोषों को कुपित करते हैं, क्योंकि उन की प्रकृति ही द्वन्दज होती है।

साँपों के विष की पहचान ।

(१) दर्वीकर—भोगी या फनवाले साँप का काटा हुआ स्थान "काला" पड़ जाता है और वायु के सब विकार देखने में आते हैं। बङ्गसेन में लिखा है—"दर्वीकराणां विषमाशु घातिः" यानी दर्वीकर या फनवाले साँपों का ज़हर शीघ्र ही प्राण नाश कर देता है। काले साँप दर्वीकरों के ही अन्दर हैं। मशहूर है, कि काले का काटा फौरन मर जाता है।

(२) मण्डली या चित्तीदार साँप का काटा हुआ स्थान "पीला" पड़ जाता है। काटी हुई जगह नर्म होती और उस पर सूजन होती है तथा पित्त के सब विकार देखने में आते हैं।

(३) राजिल या धारीदार साँप के काटे हुए स्थान का रंग "पाण्डु वर्ण या भूरा-मटमैला सा" होता है। काटी हुई जगह सख्त, चिकनी, लिबलिबी और सूजनयुक्त होती है तथा वहाँ से अत्यन्त गाढ़ा-गाढ़ा खून निकलता है। इन लक्षणों के सिवा, कफ-विकार के सारे लक्षण नज़र आते हैं।

नोट—भोगी का डसा हुआ स्थान काला, मण्डली का डसा हुआ स्थान पीला और राजिल का डसा हुआ पाण्डु रंग या भूरा—मटमैला होता है। मण्डली की सूजन नर्म और राजिल की सख्त होती है। राजिल के किये घाव से निहायत गाढ़ा खून निकलता है। ये लक्षण हमने बङ्गसेन से लिखे हैं। और कई ग्रन्थों में लिखा है, कि साँपमात्र की काटी हुई जगह 'काली' हो जाती है।

देशकाल के भेदसे साँपोंके विषकी असाध्यता ।

पीपल के पेड़ के नीचे, देवमन्दिर में, श्मशान में, बाँबी में और चौराहे पर अगर साँप काटता है, तो काटा हुआ मनुष्य नहीं जीता।

भरणी, मघा, आर्द्रा, अश्लेषा, मूल और कृत्तिका नक्षत्र में अगर सर्प काटता है, तो काटा हुआ आदमी नहीं बचता। इन के सिवा, पञ्चमी तिथि में काटा हुआ मनुष्य भी मर जाता है,—यह ज्योतिष के ग्रन्थों का मत है।

मघा, आर्द्रा, कृत्तिका, भरणी, पूर्वाफाल्गुनी और पूर्वाभाद्रपदा—इन नक्षत्रों में सर्प का काटा हुआ कदाचित ही कोई बचता है।

नवमी, पञ्चमी, छठ, कृष्णपक्ष की चौदस और चौथ—इन तिथियों में काटा हुआ और सवेरे-शाम,—दोनों सन्धियों या दोनों काल मिलने के समय काटा हुआ तथा मर्मस्थानों में काटा हुआ मनुष्य नहीं बचता है।

एक और ज्योतिष ग्रन्थ में लिखा है:—आर्द्रा, पूर्वाषाढ़ा, कृत्तिका, मूल, अश्लेषा, भरणी और विशाखा—इन सात नक्षत्रों में सर्पका काटा हुआ मनुष्य नहीं बचता। ये मृत्यु-योग हैं।

अजीर्ण-रोगी, बढ़े हुए पित्तवाले, थके हुए, आग या घाम से तपे हुए, बालक, बूढ़े, भूखे, क्षीण, क्षतरोगी, प्रमेह-रोगी, कोढ़ी, रूखे शरीर वाले, कमज़ोर, डरपोक और गर्भवती,—ऐसे मनुष्यों को अगर सर्प काटे तो वैद्य इलाज न करे, क्योंकि इन में सर्प-विष असाध्य हो जाता है।

नोट—ऐसे मनुष्यों में, मालूम होता है, सर्प-विष अधिक जोर करता है। इसी से चिकित्सा की मनाही लिखी है; पर हमारी राय में ऐसे रोगियों को देखते ही त्याग देना ठीक नहीं। अच्छा इलाज होने से, ऐसे मनुष्य भी बचते हुए देखे गये हैं। इस में शक नहीं, ऐसे लोगों की सर्प-दंश-चिकित्सा में वैद्य को बड़ा कष्ट उठाना पड़ता है और सभी रोगी बच भी नहीं जाते; हाँ, अनेक बच जाते हैं।

मर्मस्थानों या शिरागत मर्मस्थानोंमें अगर साँप काटता है, तो केस कष्ट-साध्य या असाध्य हो जाता है। शास्त्रकार तो असाध्य होना ही लिखते हैं।

अगर मौसम गरमी में, गरम मिज़ाज वाले या पित्त-प्रकृति वाले को साँप काटता है, तो सभी साँपों का ज़हर डबल ज़ोर करता है; अतः ऐसा काटा हुआ आदमी असाध्य होता है। वैद्यको ऐसे आदमी का भी इलाज न करना चाहिये।

उस्तरा, छुरी या नश्तर प्रभृति से चीरने पर जिस के शरीर से खून न निकले; चाबुक, कोड़े या कमची आदि से मारने पर भी जिस के शरीर में निशान न हों और निहायत ठण्डा बर्फ-समान पानी डालने पर भी जिसे कँप-कँपी न आवे—रोंएँ खड़े न हों, उसे असाध्य समझ कर वैद्य को त्याग देना चाहिये; यानी उस का इलाज न करना चाहिये।

जिस साँप के काटे हुए आदमी का मुँह टेढ़ा हो जाय, बाल छूते ही टूट-टूटकर गिरें, नाक टेढ़ी हो जाय, गर्दन झुक जाय, स्वरभंग हो जाय, साँप के डसने की जगह पर लाल या काली सूजन और सख्ती हो, तो वैद्य ऐसे साँप के काटे को असाध्य समझ कर त्याग दे।

जिस मनुष्य के मुँह से लार की गाढ़ी-गाढ़ी बत्तियाँ सी गिरें या कफ की गाँठें सी निकलें; मुख, नाक, कान, नेत्र, गुदा, लिंग और योनि प्रभृति से खून गिरे; सब दाँत पीले पड़ जायँ और जिसके बराबर चार दाँत लगे हों, उसको वैद्य असाध्य समझ कर त्याग दे—इलाज न करे।

"हारीत संहिता" में लिखा है, जिस मनुष्य का चलना-फिरना अजीब हो, जिस के सिर में घोर वेदना हो, जिसके हृदय में पीड़ा हो, नाक से खून गिरे, नेत्रों में जल भरा हो, जीभ जड़ हो गई हो, जिस के रोएँ बिखर गये हों, जिस का शरीर पीला हो गया हो और जिसका मस्तक स्थिर न हो यानी जो सिर को हिलाता और घुमाता हो—उत्तम वैद्य ऐसे साँप के काटे हुए मनुष्यों की चिकित्सा न करे। हाँ, जिन सर्प के काटे हुओं में ये लक्षण न हों, उन का इलाज करे।

जो मनुष्य विष के प्रभाव से मतवाला या पागल सा हो जाय, जिस की आवाज़ बैठ जाय, जिसे ज्वर और अतिसार प्रभृति रोग हों, जिसके शरीर का रंग बदल गया हो, जिस में मौत के से लक्षण मौजूद हों, जिस के मलमूत्र या टट्टी-पेशाब बन्द हो गये हों और जिस के शरीर में वेग या लहरें न उठती हों—ऐसे साँप के काटे हुए मनुष्य को वैद्य त्याग दे—इलाज न करे।

सर्प के काटने के कारण।

सर्प बिना किसी वजह या मतलब के नहीं काटते। कोई पाँव से दब कर काटता है, तो कोई पूर्व जन्म के वैर का बदला लेने को काटता है, कोई डर कर काटता है, कोई मद से काटता है, कोई भूख से काटता है, कोई विष का वेग होने से काटता है और कोई अपने

बच्चों की जीवनरक्षा करने के लिये काटता है। वाग्भट्ट में लिखा है:—

> आहारार्थं भयात्पादस्पर्शादतिविषात्क्रुधः।
> पापवृत्तितया वैराद्देवर्षियमचोदनात्।
> पश्यन्ति सर्पास्तेषूक्तं विषाधिक्यं यथोत्तरम्॥

भोजन के लिये, डर के मारे, पैर लग जाने से, विषकी बहुलता से, क्रोधसे, पापवृत्तिसे, वैरसे तथा देवर्षि और यमकी प्रेरणासे साँप मनुष्यों को काटते हैं। इन में पीछे-पीछे के कारणों से काटने में, क्रमशः विष की अधिकता होती है। जैसे,—डर के मारे काटता है, उस की अपेक्षा पैर लगने से काटता है तब ज़हर का ज़ोर ज़ियादा होता है। विष की अधिकता से काटता है, उस की अपेक्षा क्रोध से काटने पर ज़हर की तेज़ी और भी ज़ियादा होती है। जब सर्प देवर्षि या यमराज की प्रेरणा से काटता है, तब और सब कारणों से काटने की अपेक्षा विष का ज़ोर अधिक होता है और इस दशा में काटने से मनुष्य मर ही जाता है।

नोट—किस कारण से काटा है,—यह जानकर यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये। लेकिन साँप ने किस कारण से काटा है, इस बात को मनुष्य देख कर नहीं जान सकता; इसलिये किस कारण से काटा है, इसकी पहचान के लिये प्राचीन आचार्य्योंने तरकीबें बतलाई हैं। उन्हे हम नीचे लिखते हैं—

सर्प के काटने के कारण जानने के तरीके।

(१) अगर सर्प काटते ही पेट की ओर उलट जाय, तो समझो कि उसने दबने या पैर लगने से काटा है।

(२) अगर साँप का काटा हुआ स्थान या घाव अच्छी तरह न दीखे, तो समझो कि भय से काटा है।

(३) अगर काटे हुए स्थान पर डाढ़ से रेखा सी खिंच जाय, तो समझो कि मद से काटा है।

(४) अगर काटे हुए स्थान पर दो डाढ़ों के दाग़ हों, तो समझो कि घबराकर काटा है।

(५) अगर काटे हुए स्थान में दो दाढ़ लगी हों और घाव खून से भर गया हो, तो समझो कि विष-वेग से काटा है ।

सर्पदंश के भेद ।

"सुश्रुत"—कल्पस्थान के चतुर्थ अध्याय में लिखा है:— पैर से दबने से,क्रोध से दुष्ट होकर अथवा खाने या काटने की इच्छासे सर्प महाक्रोध करके प्राणियोंको काटते हैं । उनका वह काटना तीन तरहका होता है:—

(१) सर्पित, (२) रदित, और (३) निर्विष । विष-विद्याके जानने वाले चौथा भेद "सर्पांगाभिहत" और मानते हैं ।

(१) सर्पित का अर्थ पूरे तौर से डसा जाना है। साँप की काटी हुई जगह पर एक, दो या अधिक दाँतों के चिह्न गड़े हुए से दीखते हैं। दाँतों के निकलने पर थोड़ासा खून निकलता और थोड़ी सूजन होती है। दाँतों की पंक्ति पूरे तौर से गड़ जाने के कारण, साँप का विष शरीर के खून में पूर्ण रूपसे घुस जाता और इन्द्रियों में शीघ्र ही विकार हो आता है, तब कहते हैं कि यह "सर्पित" या पूरा डसा हुआ है। ऐसा दंश या काटना बहुत ही तेज़ और प्राणनाशक समझा जाता है ।

(२) रदित का अर्थ खरोंच आना है। जब साँप की काटी जगह पर नीली, पीली, सफेद या लाली लिये हुए लकीर या लकीरें दीखती हैं अथवा खरोंच सी मालूम होती है और उस खरोंच में से कुछ खूनसा निकला जान पड़ता है, तब उस दंश या काटने को "रदित" या खरोंच कहते हैं। इस में ज़हर तो होता है, पर थोड़ा होता है, अतः प्राणनाश का भय नहीं होता ; बशर्त्ते कि उत्तम चिकित्सा की जाय ।

(३) निर्विष का अर्थ विषरहित या विषहीन है। चाहे काटे स्थानपर दाँतों के गड़ने के कुछ चिह्न हों, चाहें वहाँ से खून भी निकला हो; पर वहाँ सूजन न हो तथा इन्द्रियों और शरीर की प्रकृति में विकार न हों, तो उस दंश को "निर्विष" कहते हैं ।

(४) सर्पाङ्गाभिहत । जब डरपोक आदमी के शरीर से सर्प या सर्प का मुँह ख़ाली लग जाता है—सर्प काटता नहीं—खरौंच भी नहीं आती, तोभी मनुष्य भ्रम से अपने तईं सर्प द्वारा डसा हुआ या काटा हुआ समझ लेता है । ऐसा समझने से वह भयभीत होता है। भय के कारण, वायु कुपित होकर कदाचित सूजन सी उत्पन्न कर देता है। इस दशा में भय से मनुष्य बेहोश हो जाता है और प्रकृति भी बिगड़ जाती है। वास्तव में काटा नहीं होता, केवल भय से मूर्च्छा आदि लक्षण नज़र आते हैं, इस से परिणाम में कोई हानि नहीं होती। इसीको "सर्पाङ्गाभिहित" कहते हैं। इस दशामें रोगी को तसल्ली देना, उस को न काटे जाने का विश्वास दिलाकर भय-रहित करना और मन समझाने को यथोचित चिकित्सा करना आवश्यक है।

विचरनेके समय से साँपों की पहचान ।

रात के पिछले पहर में प्रायः राजिल, रात के पहले तीन पहरों में मण्डली और दिन के समय प्रायः दर्वीकर घूमा करते हैं। खुलासा यों समझिये, कि दिन के समय दर्वीकर, सन्ध्या काल से रात के तीन बजे तक मण्डली और रात के तीन बजे से सवेरे तक राजिल सर्प प्रायः फिरा करते हैं।

नोट—काटे जाने का समय मालूम होने से भी, वैद्य काटने वाले सर्प की जाति का कयास कर सकता है। ये सर्प सदा इन्हीं समयों में घूमने नहीं निकलते, पर बहुधा इन्हीं समयों में निकलते हैं।

अवस्था-भेद से साँपोंके ज़हरकी तेजी और मन्दी ।

नौले से डरे हुए, दबे हुए या घबराये हुए, बालक, बूढ़े, बहुत समय तक जल में रहनेवाले, कमज़ोर, काँचली छोड़ते हुए, पीले यानी पुरानी काँचली ओढ़े हुए, काटने से एकाध क्षण पहले दूसरे प्राणी-को काटकर अपनी थैली का विष कम कर देने वाले साँप अगर काटते

हैं, तो उनके विष में अत्यल्प प्रभाव रहता है ; यानी इन हालतोंमें काटनेसे उनका ज़हर विशेष कष्टदायक नहीं होता। वाग्भट्ट ने—रतिसे क्षीण, जल में डूबे हुए ; शीत,वायु, घाम, भूख, प्यास और परिश्रम से पीड़ित, शीघ्रही अन्य देश में प्राप्त हुए, देवता के स्थान के पास बैठे हुए या चलते हुए, ये और लिखे हैं, जिनका विष अल्प होता है और उसमें तेज़ी नहीं होती।

दर्वीकर या फनवाले चढ़ती उम्र या भर जवानी में, मण्डली ढलती अवस्था या बुढ़ापे में और राजिल बीच की या अधेड़ अवस्था में अगर किसी को काटते हैं, तो उस की मृत्यु हो जाती है।

साँपों के विष के लक्षण।
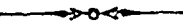
दर्वीकर।

यह हम पहले लिख आये हैं, कि दर्वीकर साँपों की प्रकृति वायु की होती है,इसलिये दर्वीकर—कलछी-जैसे फनवाले काले साँप या घोर काले साँपों के डसने या काटने से चमड़ा, नेत्र, नाखून, दाँत, मल-मूत्र काले हो जाते और शरीर में रूखापन होता है ; इसलिये जोड़ों में वेदना और खिंचाव होता है, सिर भारी हो जाता है ; कमर, पीठ और गर्दन में निहायत कमज़ोरी होती है ; जँभाइयाँ आती हैं ; शरीर काँपता है; आवाज़ बैठ जाती है; कण्ठ में घर-घर आवाज़ होती है, सूखी-सूखी डकारें आती हैं; खाँसी, श्वास, हिचकी, वायु का ऊँचा चढ़ना, शूल, हडफूटन, ऐंठनी, ज़ोर की प्यास, मुँह से लार गिरना, झाग आना और स्रोतों का रुक जाना प्रभृति वातव्याधियों के लक्षण होते हैं।

नोट—जोड़ों में दर्द, जँभाई, चमड़ा और नेत्र आदि का काला हो जाना प्रभृति वायु-विकार हैं। चूँकि दर्वीकरों की प्रकृति वातज होती है, अतः उनके विष में भी वायु ही रहती है। इस से जिसे ये काटते हैं, उस के शरीर में वायु के अनेक विकार होते हैं।

मण्डली।

मण्डली सर्प पित्त-प्रकृति होते हैं, अतः उन के विष से चमड़ा, नेत्र, नख, दाँत, मल और मूत्र ये सब पीले या सुर्ख़ी-माइल पीले हो जाते

हैं। शरीर में दाह—जलन और प्यास का ज़ोर रहता है, शीतल पदार्थ खाने-पीने और लगाने की इच्छा होती है। मद, मूर्च्छा—बेहोशी और बुख़ार भी होते हैं। मुँह, नाक, कान, आँख, गुदा, लिंग और योनि द्वारा ख़ून भी आने लगता है। मांस ढीला होकर लटकने लगता है। सूजन आ जाती है। डसी हुई या साँप की काटी हुई जगह गलने और सड़ने लगती है। उसे सर्वत्र सभी चीज़ें पीली-ही-पीली दीखने लगती हैं। विष जल्दी-जल्दी चढ़ता है। इनके सिवा औरभी पित्त-विकार होते हैं।

राजिल।

राजिल या राजिमन्त सर्पोंकी प्रकृति कफ-प्रधान होती है। इसलिये ये जिसे काटते हैं उसका चमड़ा, नेत्र, नख, मल और मूत्र—ये सब सफ़ेद से हो जाते हैं। जाड़ा देकर बुख़ार चढ़ता है, रोएं खड़े हो जाते हैं, शरीर अकड़ने लगता है, काटी हुई जगह के आस-पास एवं शरीरके और भागों में सूजन आ जाती है, मुँह से गाढ़ा-गाढ़ा कफ गिरता है, कय होती है, आँखों में बारम्बार खुजली चलती है, कण्ठ सूज जाता है और गले में घर-घर घर-घर आवाज़ होती है तथा साँस रुकता और नेत्रों के सामने अँधेरा सा आता है। इन के सिवा, कफ के और विकार भी होते हैं।

नोट—८० तरह के सर्पों के काटे हुए के लक्षण इन्हीं तीन तरह के साँपों के लक्षणों के अन्दर आ जाते हैं; अतः अलग-अलग लिखने की जरूरत नहीं।

विषके लक्षण जानने से लाभ?

ऊपर सर्पों के डसने या विष के लक्षण दंश की शीघ्र मारकता जानने के लिये बताये हैं, क्योंकि विष तीक्ष्ण तलवार की चोट, वज्र और अग्नि के समान शीघ्र ही प्राणी का नाश कर देता है। अगर दो घड़ी भी ग़फ़लत की जाती है, तत्काल इलाज नहीं किया जाता, तो विष मनुष्यको मार डालता है और उसे बातें करने का भी समय नहीं देता।

साँप साँपिन प्रभृति साँपों के डसने के लक्षण।

---

(१) नर-सर्प का काटा हुआ आदमी ऊपर की ओर देखता है।

(२) मादीन सर्प या नागन का डसा हुआ आदमी नीचे की तरफ देखता है और उसके सिर की नसें ऊपर उठी हुई सी हो जाती हैं।

(३) नपुंसक साँपका काटा हुआ टेढ़ी नज़र रखता है।

(४) गर्भवती साँपन का काटा हुआ आदमी पीला पड़ जाता और उसका पेट फूल जाता है।

(५) ब्याई हुई साँपन के काटे हुए आदमी के शूल चलते हैं, पेशाव में खून आता है और उपजिह्विक रोग भी हो जाता है।

(६) भूखे साँप का काटा हुआ आदमी खाने को माँगता है।

(७) बूढ़े सर्प के काटने से वेग मन्दे होते हैं।

(८) बच्चा सर्पके काटने से वेग जल्दी-जल्दी, पर हल्के होते हैं।

(९) निर्विष सर्प के काटने से विष के चिह्न नहीं होते।

(१०) अन्धे साँप के काटने से मनुष्य अन्धा हो जाता है।

(११) अजगर मनुष्य को निगल जाता है, इसलिये शरीर और प्राण नष्ट हो जाते हैं। यह निगलने से ही प्राण नाश करता है, विष से नहीं।

(१२) इन में से सद्यः प्राणहर सर्प का काटा हुआ आदमी ज़मीन पर शस्त्र या बिजली से मारे हुए की तरह गिर पड़ता है। उसका शरीर शिथिल हो जाता और वह लम्बी नींदमें ग़र्क़ हो जाता है।

विषके सात वेग।

"सुश्रुत" में लिखा है, सभी तरह के साँपों के विष के सात-सात वेग होते हैं। बोलचाल की भाषा में वेगों को दौर या मैड़ कहते हैं।

साँपका विष एक कलासे दूसरी में और दूसरी से तीसरी में—इस तरह सातों कलाओं में घुसता है। जब वह एक को पार करके दूसरी कला में जाता है, तब वेगान्तर या एक वेग से दूसरा वेग कहते हैं। इन कलाओंके हिसाब से ही सात वेग माने गये हैं। इस तरह समझिये:—

(१) ज्योंही सर्प काटता है, उसका विष खून में मिल कर ऊपर को चढ़ता है,—यही पहला वेग है

(२) इसके बाद विष खूनको बिगाड़ कर मांस में पहुँचता है,—यह दूसरा वेग हुआ ।

(३) मांस को पार करके विष मेद में जाता है,—यह तीसरा वेग हुआ ।

(४) मेद से विष कोठे में जाता है,—यह चौथा वेग हुआ ।

(५) कोठे से विष हड्डियों में जाता है, यह पाँचवाँ वेग हुआ ।

(६) हड्डियों से विष मज्जा में पहुँचता है, यह छठा वेग हुआ ।

(७) मज्जा से विष वीर्य में पहुँचता है, यह सातवाँ वेग हुआ ।

नोट—सर्पके विषका कौनसा वेग है, इस के जानने की चिकित्सकको जरूरत होती है, इसलिये वेगों की पहचान जानना और याद रखना जरूरी है। नीचे हम यही दिखलाते हैं कि, किस वेग में क्या चिह्न या लक्षण देखने में आते हैं ।

सात वेगों के लक्षण

पहला वेग—साँप के काटते ही, विष खून में मिलकर ऊपर की तरफ चढ़ता है। उस समय शरीर में चींटी सी चलती हैं। फिर विष खून को ख़राब करता हुआ चढ़ता है, इस से खून काला, पीला या सफेद हो जाता है और वही रंगत ऊपर झलकती है।

नोट—दर्वीकर साँपोंके विष के प्रभाव से खून में कालापन; मण्डली के विष से पीलापन और राजिलके विष से सफेदी आ जाती है।

दूसरा वेग—इस वेग मे विष मांस में मिल जाता है, इस से मांस ख़राब हो जाता है और उस में गाँठें सी पड़ी दीखती हैं। शरीर, नेत्र, मुख, नख और दाँत प्रभृति में कालापन, पीलापन या सफेदी ज़ियादा हो जाती है।

नोट—दर्वीकर साँप के विष से कालापन; मण्डली के विष से पीलापन और राजिल के विष से सफेदी होती है।

तीसरा वेग—इस वेग में विष मेद तक जा पहुँचता है, जिस से

मेद ख़राब हो जाती है। उसकी ख़राबी से पसीने आने लगते हैं, काटी जगह पर क्लेद सा होता है और नेत्र मिचे जाते हैं—तन्द्रा घेर लेती है।

चौथा वेग—इस वेग में विष पेट और फैंफड़े प्रभृति में पहुँच जाता है। इस से कोठे का कफ ख़राब हो जाता है, मुँह से लार या कफ गिरता है और सन्धियाँ टूटती हैं; यानी जोड़ों में पीड़ा होती है और घुमेर या चक्कर आते हैं।

नोट—चौथे वेग में-मण्डली सर्पके काटनेसे ज्वर चढ़ आता है और राजिल के काटने से गर्दन अकड़ जाती है।

पाँचवाँ वेग—इस वेग में विष हड्डियों में जा पहुँचता है, इस से शरीर कमज़ोर होकर गिरा जाता है, खड़े होने और चलने-फिरने की सामर्थ्य नहीं रहती और अग्नि भी नष्ट हो जाती है।

नोट—अग्नि नष्ट होने से—अगर दर्वीकर काटता हैं,तो शरीर ठण्ढा हो जाता हैं ; अगर मण्डली काटता है तो शरीर निहायत गर्म हो जाता है और अगर राजिल काटता है तो जाड़े का बुखार चढ़ता और जीभ बँध जाती है

छठा वेग—इस वेग में विष मज्जा में जा पहुँचता है, इस से छठी पित्त-धरा कला, जो अग्निको धारण करती है,निहायत बिगड़ जाती है। ग्रहणी के बिगड़ने से दस्त बहुत आते हैं। शरीर एक दम भारी सा हो जाता है, मनुष्य सिर और हाथ-पाँव आदि अंगों को उठा नहीं सकता। उसके हृदय में पीड़ा होती और वह बेहोश हो जाता है।

सातवाँ वेग—इस वेगमें विष का प्रभाव सातवीं शुक्रधरा या रेतो-धरा कला अथवा वीर्यमें जा पहुँचता है,इससे सारे शरीरमें रहने वाली व्यान वायु कुपित हो जाती है। उसकी वजह से मनुष्य कुछ भी करने योग्य नहीं रहता। मुँह और छोटे-छोटे छेदों से पानी सा गिरने लगता है। मुख और गलेमें कफ की गिलौरियों सी बँधने लगती हैं। कमर और पीठ की हड्डी में ज़रा भी ताक़त नहीं रहती। मुँह से लार बहती है। सारे शरीर में, विशेष कर शरीरके ऊपरी हिस्सोंमें,बहुत ही पसीना आता और साँस रुक जाता है, इस से आदमी बिल्कुल मुर्दा सा हो जाता है।

नोट—एक और ग्रन्थकार आठ वेग मानते हैं और प्रत्येक वेग के लक्षण बहुत ही संक्षेप में लिखते हैं। पाठकों को उनके जानने से भी लाभ ही होगा, इसलिये उन्हें भी लिखे देते हैं :—

(१) पहले वेग में सन्ताप, (२) दूसरे में शरीर काँपना, (३) तीसरेमें दाह या जलन, (४) चौथेमें बेहोश होकर गिर पड़ना, (५) पाँचवें में मुँह से झाग गिरना, (६) छठे में कन्धे टूटना, (७) सातवें में जड़ीभूत होना ये लक्षण होते हैं, और (८) आठवें में मृत्यु हो जाती है।

दर्वीकर या फनदार सर्पों के विषके सात वेग।

दर्वीकर साँपों का विष पहले वेग में खून को दूषित करता है, इस से खून बिगड़ कर "काला" हो जाता है। खून के काले होने से शरीर काला पड़ जाता है और शरीर में चींटी सी चलती जान पड़ती हैं।

दूसरे वेग में—वही विष मांस को बिगाड़ता है, इस से शरीर और भी ज़ियादा काला हो जाता और सूज जाता है तथा गाँठें हो जाती हैं।

तीसरे वेग में—वही विष मेद को ख़राब करता है, जिससे डसी हुई जगह पर क्लेद, सिर में भारीपन और पसीना होता है तथा आँखें मिचने लगती हैं।

चौथे वेग में—वही विष कोठे या पेट में पहुँचकर कफ-प्रधान दोषों—क्लेदन कफ, रस, ओज आदि—को ख़राब करता है, जिससे तन्द्रा आती, मुँह से पानी गिरता और जोड़ों में दर्द होता है।

पाँचवें वेग में—वही विष हड्डियों में घुसता और बल तथा शरीर की अग्नि को दूषित करता है, जिस से जोड़ों में दर्द, हिचकी और दाह ये उपद्रव होते हैं।

छठे वेग में—वही विष मज्जा में घुसता और ग्रहणी को दूषित करता है, जिस से शरीर भारी होता, पतले दस्त लगते, हृदय में पीड़ा और मूर्च्छा होती है।

सातवें वेग में—वही विष वीर्य में जा पहुँचता और सारे शरीर

में रहने वाली 'व्यान वायु' को कुपित कर देता एवं सूक्ष्म छेदों से कफ को भिराने लगता है, जिस से कफ की बत्तियाँ सी बँध जाती हैं, कमर और पीठ टूटने लगती हैं, हिलने-चलने की शक्ति नहीं रहती, मुँह से पानी और शरीर से पसीना बहुत आता और अन्त में साँसका आना-जाना बन्द हो जाता है।

मण्डली या चकत्तेदार साँपों के विष के सात वेग ।

मण्डली साँपों का विष पहले वेग में खून को बिगाड़ता है, तब वह खून "पीला" हो जाता है, जिस से शरीर पीला दीखता और दाह होता है

दूसरे वेग में—वही विष मांस को बिगाड़ता है, जिस से शरीरका पीलापन और दाह बढ़ जाता है तथा काटी हुई जगह में सूजन आ जाती है।

तीसरे वेग में—वही विष मेद को बिगाड़ता है, जिससे नेत्र मिचने लगते हैं, प्यास बढ़ जाती है, पसीने आते हैं और काटे हुए स्थान पर क्लेद होता है।

चौथे वेग में—वही विष कोठे में पहुँच कर ज्वर करता है।

पाँचवें वेग में—वही विष हड्डियों में पहुँच कर, सारे शरीर में खूब तेज़ जलन करता है।

छठे और सातवें वेगों में दर्वीकरों के विष के समान लक्षण होते हैं।

राजिल या गण्डेदार साँपों के विष के सात वेग ।

राजिल साँपों का विष पहले वेग में खून को बिगाड़ता है। इस से बिगड़ा हुआ खून "पाण्डु" वर्ण या सफेद सा हो जाता है, जिस से आदमी सफेद सा दीखने लगता है और रोएं खड़े हो जाते हैं।

दूसरे वेग में—वही विष मांस को बिगड़ता है, जिस से पाण्डुता

या सफेदी औरभी बढ़ जाती, जड़ता होती और सिर में सूजन चढ़ आती है।

तीसरे वेग में—वही विष मेद को ख़राब करता है, जिस से आँखें बन्द सी होतीं, दाँत अमलाते, पसीने आते, नाक और आँखों से पानी आता है।

चौथे वेग में—विष कोठेमें जाकर, मन्यास्तम्भ और सिरका भारी-पन करता है।

पाँचवें वेग में—बोल बन्द हो जाता और जाड़े का ज्वर चढ़ आता है।

छठे और सातवें वेगों में—दर्वीकरों के विष के से लक्षण होते हैं।

पशुओं में विषवेग के लक्षण।

पशुओं को सर्प काटता है, तो चार वेग होते हैं। पहले वेग में पशुका शरीर सूज जाता है। वह दुखित होकर ध्या-ध्या करता अथवा ध्यान-निमग्न हो जाता है। दूसरे वेग में, मुँह से पानी बहता, शरीर काला पड़ जाता और हृदय में पीड़ा होती है। तीसरे वेग में सिर में दुःख होता है तथा कंठ और गर्दन टूटने लगती हैं। चौथे वेग में, पशु मूढ़ होकर काँपने लगता और दाँतों को चबाता हुआ प्राण त्याग देता है।

नोट—कोई-कोई पशुओंके तीन ही वेग बताते हैं।

पक्षियों में विषवेग के लक्षण।

प्रथम वेग में पक्षी ध्यान-मग्न हो जाता है और फिर मोह या मूर्च्छा को प्राप्त होता है। दूसरे वेग में वह बेसुध हो जाता और तीसरे वेग में मर जाता है।

नोट—बिल्ली, नौला और मोर प्रभृति के शरीरों में साँपों के विषका प्रभाव नहीं होता।

मरे हुए और बेहोश हुए की पहचान।

अनेक वार ऐसा होता है, कि मनुष्य एक-दम से वेहोश हो जाता है, नाड़ी नहीं चलती और ज़हर को तेज़ी से साँस का चलना भी वन्द हो जाता है, परन्तु शरीर से आत्मा नहीं निकलता—जीव भीतर रहा आता है। नादान लोग, ऐसी दशा में उसे मरा हुआ समझ कर गाड़ने या जलाने की तैयारी करने लगते हैं, इससे अनेक वार न मरते हुए भी मर जाते हैं। ऐसी हालत में, अगर कोई जानकार भाग्यवल से आ जाता है, तो उसे उचित चिकित्सा करके जिला लेता है। अत: हम सबके जानने के लिये, मरे हुए और जीते हुए की परीक्षा-विधि लिखते हैं:—

(१) उजियालेदार मकान में, वेहोश रोगी की आँख खोल कर देखो। अगर उसकी आँख की पुतली में, देखनेवाले की सूरत की परछाईं दीखे या रोगी की आँख की पुतली में देखने वाले की सूरत का प्रति-विम्ब या अक्स पड़े, तो समझ लो कि रोगी जीता है। इसी तरह अँधेरे मकान में या रात के समय, चिराग़ जलाकर, उसकी आँखोंके सामने रखो। अगर दीपक की लो की परछांही उस की आँखों में दीखे, तो समझो कि रोगी जीता है।

(२) अगर वेहोश आदमी की आँखोंकी पुतलियों में चमक हो, तो समझो कि वह जीता है।

(३) एक बहुत ही हलके बर्तन में पानी भर कर रोगी की छाती पर रख दो और उसे ध्यान से देखो। अगर साँस बाक़ी होगा या चलता होगा, तो पानी हिलता हुआ मालूम होगा।

(४) धुनी हुई ऊन, जो अत्यन्त नर्म हो, अथवा कबूतर का बहुत ही छोटा और हलका पंख, रोगीकी नाकके छेदके सामने रक्खो। अगर इन दोनों में से कोई भी हिलने लगे, तो समझो कि रोगी जीता है।

नोट—यह काम इस तरह करना चाहिये, जिस से लोगों के साँस की हवा या बाहरी हवा से ऊन या पंख के हिलने का वहम न हो।

(५) पेड़ू, चड्डे, लिंगेन्द्रिय, योनि के छेद और गुदा के भीतर, पीछे को झुकी हुई, दिल की एक रग आई है। जब तक रोगी जीता रहता है, वह हिलती रहती है। पूरा नाड़ी-परीक्षक इस रग पर अँगुलियाँ रख कर मालूम कर सकता है, कि यह रग हिलती है या नहीं।

नोट—तजुर्बेकार या जानकार आदमी किसी प्रकारके विषसे मरे हुए और पानी में डूबे हुओं की, मुर्दा मालूम होने पर भी, तीन दिनतक राह देखते हैं और सिद्ध यत्न प्राप्त हो जाने पर जीवन की उम्मीद करते हैं। सकते की बीमारी वाला मुर्दे के समान हो जाता है; लेकिन बहुत से जीते रहते हैं और मुर्दे जान पड़ते हैं। उत्तम चिकित्सा होने से वे ही बच जाते हैं। इसी से हकीम जालीनूस कहता है, कि सकते वाले को ७२ घण्टे या तीन दिन तक न जलाना और न दफनाना चाहिये।
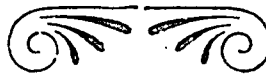
सर्प-विष-चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) अगर साँप के काटते ही, आप रोगी के पास पहुँच जाओ, तो साँप के काटे हुए स्थान से चार अँगुल ऊपर, रेशमी कपड़े, सूत, डोरो या सन की डोरी आदि से बन्ध बाँध दो। एक बन्ध पर भरोसा मत करो। एक बन्ध से चार अङ्गुल की दूरी पर दूसरा और इसी तरह तीसरा बन्ध बाँधो। बन्ध बाँध देने से खून ऊपर को नहीं चढ़ता और आगे की चिकित्सा को समय मिलता है। कहा है—

अम्बुवत्सेतु बन्धेन बन्धेन स्तभ्यते विषम्।
न वहन्ति शिराश्चास्य विषं बन्धाभिपीड़िताः॥

बन्ध बाँधने से विष इस तरह ठहर जाता है, जिस तरह पुल बाँधने से पानी । बन्ध से बँधी हुई नसों में विष नहीं जाता ।

बहुधा साँप हाथ-पैरकी अँगुलियों में ही काटता है । अगर ऐसा हो, तब तो आप का काम बन्ध बाँधने से चल जायगा । हाथ-पैरों में भी आप बन्ध बाँध सकते हैं, पर अगर साँप पेट या पीठ आदि ऐसे स्थानों में काटे जहाँ बन्ध न बँध सके, तब आप क्या करेंगे ? इस का जवाब हम आगे नं० २ में लिखेंगे।

हाँ, बन्ध ऐसा ढीला मत बाँधना कि, उस से खून की चाल न रुके। अगर आप का बन्ध अच्छा होगा ; तो बन्ध के ऊपर का खून, काटकर देखने से, लाल और बन्ध के नीचे का काला होगा । यही अच्छे बन्ध की पहचान है ।

बन्धके सम्बन्ध में दो चार बातें और भी समझ लो। बन्ध बाँधने से पहले यह भी देख लो, कि खून में मिलकर विष कहाँ तक पहुँचा है । ऐसा न हो कि, ज़हर ऊपर चढ़ गया हो और आप बन्ध नीचे बाँधें । इस भूल से रोगी के प्राण जा सकते हैं । अतः हम 'ज़हर कहाँ तक पहुँचा है' इस बातके जानने की चन्द तरकीबें बतलाये देते हैं—

पहले, काटे हुए स्थान से चार अँगुल या ६।७ अँगुल ऊपर आप सूत, रेशम, सन, चमड़ा या डोरी से बन्ध बाँध दो। फिर देखो, बन्ध के आस-पास कहीं के बाल सो तो नहीं गये हैं। जहाँ के बाल आप को सूते दीखें, वहीं आप ज़हर समझें। क्योंकि ज़हर जब बालों की जड़ों में पहुँचता है, तब वे सो जाते हैं और विषके आगे बढ़ते ही पीछे के बाल, जो पहले सो गये थे, खड़े हो जाते हैं और आगे के बाल, जहाँ विष होता है, सो जाते हैं। दूसरी पहचान यह है कि, जहाँ विष नहीं होता, वहाँ चीरने से लाल खून निकलता है; पर जहाँ ज़हर होता है, काला खून निकलता है। ज्यों ज्यों ज़हर चढ़ता है, नसों का रंग नीला होता जाता है। नसों का रंग

नीला करता हुआ विष-मिला खून चढ़ा या नहीं या कहाँ तक चढ़ा,—यह बात बालोंसे साफ जानी जा सकती है। अगर इन परीक्षाओं से भी आपको सन्देह रहे, तो आप निकलते हुए थोड़े से खून को आग पर डाल देखें। अगर खून में ज़हर होगा और खून बदबूदार होगा, तो आग पर डालते ही वह चटचट करेगा। कहा है—

॥ दुर्गन्धं सविषं रक्तमग्नौ चटचटायते ।

अगर आप का बाँधा हुआ बन्ध ठीक हो, तब तो कोई बात ही नहीं—नहीं तो फौरन दूसरा बन्ध उस से ऊपर, जहाँ विष न हो, बाँध दो। बन्ध बाँधने का यही मतलब है कि, ज़हर खून में मिल कर ऊपर न चढ़ सके, अतः बन्ध को ढीला हरगिज़ मत रखना। बन्ध बाँधकर, बन्ध के नीचे चीरा देना भी न भूलना। बन्ध बाँधते ही ज़हर पीछे की तरफ बड़े ज़ोरसे लौटता है। अगर आप पहले ही चीर देंगे, तो ज़ोर से लौटा हुआ ज़हर खून के साथ बाहर निकल जायगा।

(२) अगर साँप की काटी जगह बन्ध बाँधने लायक़ न हो, तो नस में ज़हर घुसने से पहले, फौरन ही, काटी हुई जगह पर जलते हुए अङ्गारे रख कर ज़हर को जला दो। अथवा काटी हुई जगह को छूरी से छीलकर, लोहे की गरम शलाका से दाग दो—जला दो। अगर यह काम, बिना क्षण-भर की भी देर के, उचित समय पर किया जाय, तब तो कहना ही क्या? क्योंकि ऐसी क्या चीज़ है, जो आग से भस्म न हो जाय? वाग्भट्ट ने कहा है:—

दंशं मण्डलिनां मुक्त्वा पित्तलत्वादथा परम्।
प्रतप्तैर्हेमलोहाद्यैर्दहेदाशूल्मुकेन वा।
करोति भस्मसात्सद्योवह्निः किं नाम न क्षणात्॥

अगर मण्डली साँपने काटा हो, तो भूल कर भी मत दागना;

क्योंकि मण्डली साँपके विषकी प्रकृति पित्तकी होती है ; अत: दागने से विष उलटा बढ़ेगा। हाँ, मण्डली के सिवा और साँपोंने काटा हो, तो आप दाग दें ; यानी लोहे या सोने की किसी चीज़ को आग में तपाकर, आग-जैसी लाल करके, उसीसे काटे हुए स्थान को जला दें। आग चणमात्र में सभी को भस्म कर देती है। घाव को भस्म करना कौनसा बड़ा काम है ?

नोट—दागने से पहले, आपको काटने वाले साँपकी किस्म का पता लगा लेना जरूरी है। काटे हुए स्थान यानी घाव और सूजन प्रभृति तथा अन्य लक्षणोंसे, किस प्रकार के सर्पने काटा है, यह बात आसानी से जानी जा सकती है।

अगर उस समय कोई तेज़ाब पास हो, तो उसी से काटी हुई जगह को जला दो। कारबॉलिक ऐसिड या नाइट्रिक ऐसिड़ की २।३ बूँद उस जगह मलनेसे भी काम ठीक होगा। अगर तेज़ाब भी न हो और आग भी न हो,तो दो चार दियासलाई की डिब्बियाँ तोड़ कर काटे हुए स्थान पर रख दो और उनमें आग लगा दो। मौक़े पर चूकना ठीक नहीं ; क्योंकि दंश-स्थान के जल्दी ही जला देने से विषैला रक्त जल जाता है।

(३) बन्ध बाँधना और जलाना जिस तरह हितकर हैं ; उसी तरह ज़हर-मिले खून को मुँह से या एअर-पम्प से चूस लेना या खींच लेना भी हितकर है। ज़हर चूसने का काम स्वयं रोगी भी कर सकता है और कोई दूसरा आदमी भी कर सकता है।

दंश-स्थान या काटी हुई जगह को ज़रा चीर कर, खुरचकर या पछने लगा कर, दाँतों और होठों की सहायता से, खून-मिला ज़हर चूसा जाता है ; और खून मुँहमें आते ही थूक दिया जाता है। इस लिये जो आदमी खून को चूसे, उसके दन्तमूल—मसूढ़े पोले न होने चाहियें। उस के मुख में घाव या चकत्ते भी न होने चाहियें। अगर मसूढ़े पोले होंगे या मुँह में घाव वगैरः होंगे, तो चूसनेवाले को भी हानि पहुँचेगी। घावों की राह से, ज़हर उसके खून में

मिलेगा और उसकी जान भी ख़तरेमें हो जायगी। अतः जिसके मुख में उपरोक्त-घाव आदि न हों, वही दंश-स्थान को चूसे। इसके सिवा, चूसा हुआ खून और ज़हर गलेमें न चला जाय, इसका भी पूरा ख़याल रखना होगा। इस के लिये: अगर मुँहमें कपड़ा, राख, औषध, गोबर या मिट्टी भर ली जाय तो अच्छा हो। ज़हर चूस-चूसकर थूक देना चाहिये। जब काम हो चुके, साफ जलसे कुल्ले कर डालने चाहिएँ।

इस तरह, कभी-कभी ख़तरा भी हो जाता है,अतः बारीक झिल्ली की पिचकारी या एअर-पम्प (Air-Pump) से खून-मिला ज़हर चूसा जाय, तो उत्तम हो। कोई-कोई सींगी पर मकड़ी का जाला लगा कर भी ज़हर चूसते हैं, यह भी उत्तम देशी उपाय है।

(४) अगर साँपने उँगली प्रभृति किसी छोटे अवयव में दाँत मारा हो, तो उसे साफ काट कर फेंक दो। यह उपाय,डसने के साथ ही, एक दो सैकण्डमें ही किया जाय, तब तो पूरा लाभदायक हो सकता है, क्योंकि इतनी देरमें ज़हर ऊपर नहीं चढ़ सकता *। जब ज़हर उस अवयव से ऊपर चढ़ जायगा, तब कोई लाभ नहीं होगा।

अगर विष ऊपर न चढ़ा हो, अवयव छोटा हो, तो वहाँ की जितनी ज़रूरत हो उतनी चमड़ी फौरन काट फेंको। अगर खून में मिलकर ज़हर आगे बढ़ रहा हो, तो साँपके डसे हुए स्थान को तेज़ नश्तर या चाकू-छुरी से चीर दो, ताकि वहाँ का खून गिरने लगे और उसके साथ विष भी गिरने लगे।

अथवा

साँपके डसे हुए स्थानको, दो अँगुलियों से, चिमटी की तरह पकड़ कर, कोई चौथाई इञ्च काट डालो; यानी उतनी खाल उतार कर फेंक दो। काटते ही उस स्थान को गरम जलसे धोओ या गरम जलके तरड़े दो, ताकि खून बहना बन्द न हो और खूनके साथ

* वाग्भट ने कहा है, कि सर्प-विष डसे हुए स्थान में १०० मात्रा काल तक ठहर कर, पीछे खून में मिल कर शरीर में फैलता है।

ज़हर निकल जाय । साँपके काटते ही डसी हुई जगह का खून बहाना और ज़हर को बन्ध से आगे न बढ़ने देना—ये दोनों उपाय परमोत्तम और जान बचाने वाले हैं ।

(५) साँपकी डसी हुई जगह से तीन-चार इञ्च या चार अङ्गल ऊपर रस्सी आदि से बन्ध बाँध कर, डसी हुई जगह को चीर दो और उस पर पिसा हुआ नमक बुरकते या मलते रहो । इस तरह करने से खून बहता रहेगा और ज़हर निकल जायगा । बीच-बीचमें भी कई बार,डसी हुई जगहको चीरो और उस पर गरम पानी डालो। इसके बाद नमक फिर बुरको । ऐसा करने से खूनका बहना बन्द न होगा । जबतक नीले रङ्ग का खून निकले, तबतक ज़हर समझो । जब काला, पीला या सफ़ेद पानी सा खून निकलना बन्द हो जाय और विशुद्ध लाल खून आने लगे, तब समझो कि अब ज़हर नहीं रहा । जब तक विशुद्ध लाल खून न देख लो, तबतक भूल कर भी बन्ध मत खोलना । अगर ऐसी भूल करोगे, तो सब किया-कराया मिट्टी हो जायगा । याद रखो, साँपका विष अत्यन्त कड़वा होता है । वह आदमी के खून को प्रायः काला कर देता है । अगर मण्डली साँप का विष होता है, तो खून पीला हो जाता है; इसी से हमने लिखा है, कि जब तक काला, नीला, पीला या सफ़ेद पानी सा खून गिरता रहे, विष समझो और खून को बराबर निकालते रहो । सविष और निर्विष खून की परीक्षा इसी तरह होती है ।

(६) अगर नसों में ज़हर चढ़ रहा हो, तो उन नसों में जिन में ज़हर न चढ़ा हो अथवा ज़हर से ऊपर की नसों में जहाँ कि ज़हर चढ़ कर जायगा, दो आड़े चीरे लगा दो । फिर नसके ऊपरी भाग को—चीरे से ऊपर—अँगूठे से कस कर दबा लो । जब ज़हर चढ़ कर वहाँ तक आवेगा, तब, उन चीरों की राह से, खून के साथ, बाहर निकल जायगा । यह बहुत ही अच्छा उपाय है ।

(७) साँपकी डसी हुई जगह को रेत की पोटली या गरम जल

की भरी बोतल से लगातार सेकने से ज़हर की चाल धीमी हो जाती है। ज़रूरत के समय इस उपाय से भी काम लेना चाहिये।

(८) अगर साँपका विष बन्धों को न माने, उन्हें लाँघ कर ऊपर चढ़ता ही जाय; जलाने, खून निकालने आदि से कोई लाभ न हो, तब जीवन-रक्षाका एक ही उपाय है। वह यह कि, जिस बन्ध तक ज़हर चढ़ा हो, उसके ऊपर, मोटे छुरे के पिछले भाग से, चीर कर और आग से जलाकर उस डसे हुए अवयव की चारों ओर, पाव इञ्च गहरा और गोल चीरा बना दो। इस तरह जला कर, नसोंका सम्बन्ध या कनेकशन तोड़ देने से, ज़हर चीरे के खड्डे को लाँघकर ऊपर नहीं जा सकेगा। पर इतना खयाल रखना कि, ज्ञानतन्तु न जल जायँ, अन्यथा वे झूठे हो जायँगे—काम न देंगे। जब काम हो जाय, घाव पर गिरीका तेल लगाओ। इसे "बैरी की क्रिया" कहते हैं। इस उपाय से अवश्य जान बच सकती है।

(९) मरण काल के उपाय—जब किसी उपाय से लाभ न हो, तब रोगीको खाट पर महीन रजाई या गद्दा बिछाकर, बड़े तकियेके सहारे बिठा दो और ये उपाय करो:—

(क) रोगी को सोने मत दो। उस से बातें करो।

(ख) चारपाई के नीचे धूनी दो और खाटके नीचे की धूनीवाली आगसे सेक भी करो। रोगीको खूब गर्म कपड़े उढ़ाकर, ऊपर से भी सेक करो। इन उपायोंसे पसीना आवेगा। पसीनों से विष नष्ट होता है, अतः हर तरह पसीने निकालने चाहियें। रोगी को शीतल जल भूल कर भी न देना चाहिए।

(१०) रोगी को—साँप के काटे हुए को—घर के परनाले के नीचे बिठा दो। फिर उस परनाले से सहन हो सके जैसा गरम जल खूब बहाओ। वह जल आकर ठीक रोगी के सिर पर पड़े, ऐसा प्रबन्ध करो। अगर १५। २० मिनट में, रोगी काँपने लगे, उसे कुछ होश हो, तो यह काम करते रहो। जब होश हो जाय, उसे

उठाकर और पोंछकर अन्यत्र बिठा दो और खूब सेक करो। ईश्वर की इच्छा होगी तो रोगी बच जायगा। "वैद्यकल्पतरु"।

(११) जब देखो कि, मंत्र-तंत्र, दवा-दारु और अगद एवं अन्य उपाय सब निष्फल हो गये; रोगी क्षण-क्षण असाध्य होता जाता है—मृत्यु के निकट पहुँचता जाता है; तब, पाँचवें वेग के बाद और सातवें से पहले, उसे "प्रतिविष" सेवन कराओ; यानी जब विष का प्रभाव हड्डियों में पहुँच जाय, शरीर का बल नष्ट हो जाय, उठा-बैठा और चला-फिरा न जाय, शरीर एकदम ठण्ढा हो जाय अथवा एकदम से गरम हो जाय अथवा जाड़ा लगकर शीतज्वर चढ़ आवे, जीभ बँध जाय, शरीर बहुत ही भारी हो जाय और बेहोशी आ जाय—तब "प्रतिविष" सेवन कराओ।

प्रतिविष का अर्थ है, विपरीत गुण वाला विष। स्थावर विष-का प्रतिविष जंगम विष है और जंगम विषका प्रतिविष स्थावर विष है। क्योंकि एककी प्रकृति कफ की है, तो दूसरे की पित्त की। एक विष सर्द है, तो दूसरा गरम। एक बाहर से भीतर जाता है, तो दूसरा भीतर से बाहर आता है। एक नीचे जाता है, तो दूसरा ऊपर। स्थावर विष कफप्रायः और जंगम पित्तप्रायः होते हैं। स्थावर विष आमाशय से खून की ओर जाते हैं और जंगम विष, रुधिर में मिलकर, आमाशय और फेंफड़ों की ओर जाते हैं। इसी से स्थावर विष जंगम का दुश्मन है और जंगम स्थावर का दुश्मन है। स्थावर विष के रोगी को जंगम विष सेवन कराने से और जंगम विषवाले को स्थावर विष सेवन कराने से आराम हो जाता है। साँप—बिच्छू प्रभृति के जंगम विषों पर "वत्सनाभ" आदि स्थावर विष और संखिया,वत्सनाभ आदि स्थावर विषों पर साँप बिच्छू आदि के जंगम विष अमृत का काम कर जाते हैं। अन्त में "विषस्य विष-मौषधम्"ज़हरकी दवा ज़हर है, यह कहावत सच्ची हो जाती है। मतलब यह, साँपके काटे हुए की असाध्य अवस्थामें, किसी तरहका

वत्सनाभ या सींगिया आदि विष देना ही अच्छा है; क्योंकि इस समय विष देने के सिवा और दवा ही नहीं।

पर "प्रतिविष" देना बालकोंका खेल नहीं है। इसके देनेमें बड़े विचार और समझ-बूझ की दरकार है। रोगी की प्रकृति, देश, काल आदि का विचार करके प्रतिविष की मात्रा दो। ऊपर से निरन्तर घी पिलाओ। अगर सर्पविष हीन अवस्था में हो या रोगी निहायत कमज़ोर हो, तो विषकी हीन मात्रा दो; यानी चार जौ भर वत्सनाभ विष सेवन कराओ। अगर विष मध्यावस्था में हो या रोगी मध्यबली हो, तो छै जौ भर विष दो और यदि रोग या ज़हर उग्र यानी तेज़ हो और रोगी भी बलवान हो, तो आठ जौ भर विष—वत्सनाभ विष या शुद्ध सींगिया दो। साथ ही "घी" पिलाना भी मत भूलो; क्योंकि घी विष का अनुपान है। विष अपनी तीक्ष्णता से हृदय को खींचता है; अतः उसी हृदय की रक्षा के लिये, रोगीको घी, घी और शहद मिली अगद अथवा घी-मिली दवा देनी चाहिये। जब संखिया खाने वालेका हृदय विषसे खिंचता है,उसमें भयानक जलन होती है, तब घी पिलाने से ही रोगी को चैन आता है। इसी से विष-चिकित्सा में "घी" पिलाना ज़रूरी समझा गया है। कहा है:—

विषं कर्षति तीक्ष्णत्वाद्धृदयं तस्य गुप्तये।
पिबेद्घृतं घृतक्षौद्रमगदं वा घृतप्लुतम॥

नोट—विष-सम्बन्धी बातों के लिये पीछे वत्सनाभ विष का वर्णन देखिये।

(१२) अगर विष सारे शरीर में फैल गया हो, तो हाथ-पाँव के अगले भाग या ललाट की शिरा वेधनी चाहिये— इन स्थानों की फस्द खोल देनी चाहिये। क्योंकि शिरा वेधन करने या फस्द खोल देने से खून निकलता है और खून के साथ ही, उस में मिला हुआ ज़हर भी निकल जाता है। इस से साँप के काटे की परम क्रिया खून निकाल देना है। सुश्रुत में लिखा है:—

"जिस के शरीर का रंग और-का-और हो गया हो, जिस के अंगों

में दर्द या वेदना हो और खूब ही कड़ी सूजन हो, उस साँप के काटे का खून शीघ्र ही निकाल देना—सब से अच्छा इलाज है।" ठीक यही बात, दूसरे शब्दों में, वाग्भट्ट ने भी कही है—

"विष के फैल जाने पर शिरा बींधना या फस्द खोलना ही परमोत्तम क्रिया है, क्योंकि निकलते हुए खून के साथ विष भी निकल जाता है।"

शिरा या नस न दीखेगी, तो फस्द किस तरह खोली जायगी, इसी से ऐसे मौक़ेपर सींगी लगाकर या जौंक लगा कर खून निकाल देने की आज्ञा दी गई है, क्योंकि खून को किसी तरह भी निकालना परमावश्यक है।

गर्भवती, बालक और बूढ़े को अगर सर्प काटे, तो उनकी शिरा न वेधनी चाहिये—उनकी फस्द न खोलनी चाहिये। उन के लिये मृदु चिकित्सा की आज्ञा है।

(१३) अगर पहले कहे हुए शिराविधन या दाह आदि कर्मों से ज़हर जहाँ का तहाँ ही न रुके, खून के साथ मिल कर, आमाशय में पहुँच जाय—नाभि और स्तनों के बीच की थैली में पहुँच जाय, तो आप फौरन ही वमन कराकर विषको निकाल देने की चेष्टा करें। क्योंकि जब विष आमाशय में पहुँचेगा, तो रोगी को अत्यन्त गौरव, उत्क्लेश या हुल्लास होगा; यानी जी मिचलावे और घबरावेगा—क़य करने की इच्छा होगी। यही विष के आमाशय में पहुँचने की पहचान है। इस समय अगर क़य करानेमें देर की जायगी, तो और भी मुश्किल होगी, क्योंकि विष यहाँ से दूसरे आशय—पक्वाशय में पहुँच जायगा। वमन करा देने से विष निकल जायगा और रोगी चङ्गा हो जायगा—विष को आगे बढ़ने का मौक़ा ही न मिलेगा। कहा है:—

वमनैर्विषहृद्भिश्च नैवं व्याप्नोति तद्वपुः।

वमन करा देने से विष निकल जाता है और सारे शरीर में नहीं फैलता।

स्थावर—संखिया और अफीम प्रभृति के विष में तथा जंगम—साँप-बिच्छू प्रभृति चलने वालों के विष में, वमन सब से अच्छा जान बचाने वाला उपाय है। वमन करा देने से दोनों तरह के विष नष्ट हो जाते हैं। स्थावर विष खाये जाने पर तो वमन ही मुख्य और सब से पहला उपाय है। जंगम विष में यानी साँप आदि के काटने पर, ज़रा ठहर कर वमन करानी पड़ती है और कभी-कभी तत्काल भी करानी पड़ती है, क्योंकि बाज़े साँप के काटते ही ज़हर बिजली की तरह दौड़ता है। अनेक साँपों के काटने से, आदमी काटने के साथ ही गिर पड़ता और ख़तम हो जाता है। ये सब बातें चिकित्सक की बुद्धि पर निर्भर हैं। बुद्धिमान मनुष्य ज़रा सा इशारा पाकर ही ठीक काम कर लेता है और मूढ़ आदमी खोल-खोल कर समझाने से भी कुछ नहीं कर सकता। बहुत से अनाड़ी कहा करते हैं, कि संखिया या अफीम आदि विष खा लेने पर तो वमन कराना उचित है, पर सर्प-बिच्छू प्रभृति के काटने पर वमन की ज़रूरत नहीं। ऐसे अज्ञानियों को समझना चाहिये, कि वमन कराने की दोनों प्रकार के विषों में ही ज़रूरत है।

(१४) अगर किसी वजहसे वमन करानेमें देर हो जाय और विष पक्वाशय में पहुँच जाय, तो फ़ौरन ही तेज़ जुलाब देकर, ज़हर को पाख़ाने की राह से पक्वाशय से निकाल देना चाहिये। जब ज़हर आमाशय में रहता है, तब जी मिचलाने लगता है; किन्तु ज़हर जब पक्वाशय में पहुँचता है, तब रोगी के कोठे में दाह या जलन होती है, पेट पर अफारा आ जाता है, पेट फूल जाता और मल-मूत्र बन्द हो जाते हैं। विष के पक्वाशय में पहुँचे बिना, ये लक्षण नहीं होते; अतः ये लक्षण देखते ही, जुलाब दे देना चाहिये।

(१५) जिस साँप के काटे हुए आदमी के सिर में दर्द हो, आलस्य हो, मन्यास्तंभ हो—गर्दन रह गई हो और गला रुक गया हो, उसे शिरोविरेचन या सिर का जुलाब देकर, सिर की मलामत

निकाल देनी चाहिये। सिर में विष का प्रभाव होने से ही उपरोक्त उपद्रव होते हैं। जब दिमाग़ में विषका ख़लल होता है, तभी मनुष्य बेहोश होता है। इसी से विष के छठे वेग में अत्यन्त तेज़ अञ्जन और अवपीड़ नस्य की शास्त्राज्ञा है। कहा है—

षष्ठेऽञ्जनं तीक्ष्णमवपीडं च योजयेत्॥

मतलब यह है, इस हालत में नेत्रों में तेज़ अञ्जन लगाना और नस्य देनी चाहिये, जिस से रोगी की उपरोक्त शिकायतें रफ़ा हो जायँ।

(१६) बहुत बार ऐसा होता है, कि मनुष्य को सर्प नहीं काटता और कोई जीव काट लेता है; पर उसे साँप के काटने का ख़याल हो जाता है। इस कारण से वह डरता है। डरने से वायु कुपित होकर सूजन वग़ैरः उत्पन्न कर देता है। अनेक बार ऐसा होता है, कि साँप आदमी के काटने को आता है, उसका मुँह शरीर से लगता है, पर वह आदमी उसे झटका देकर फेंक देता है। इस अवस्था में, सर्पका दाँत अगर शरीर के लग भी जाता है, तोभी जल्दी ही हटा देने से दाँत-लगे स्थान में ज़हर डालने का साँप को मौक़ा नहीं मिलता, पर वह आदमी अपने तईं काटा हुआ समझता और डरता है—अगर ऐसे मौक़ा हो, तो आप रोगी को तसल्ली दीजिये। उसके मनमें साँपके न काटने या विष न छोड़ने का विश्वास दिलाइये, जिससे उसका थोथा भय दूर हो जाय। साथ ही मिश्री, वैगन्धिक—इँगुदी, दाख, दूधी, मुलहटी और शहद मिला कर पिलाइये और सतरा हुआ जल दीजिये। यद्यपि इस दशा में, साँपका दाँत लग जाने पर भी, जहर नहीं चढ़ता, क्योंकि घाव में विष छोड़े बिना विष का प्रभाव कैसे हो सकता है? ऐसे दंश को "निर्विष दंश" कहते हैं।

(१७) कर्कोतन, मरकतमणि, हीरा, वैडूर्यमणि, गर्दभमणि, पन्ना, विष-मूषिका, हिमालय की चाँद बेल—सोमराजी, सर्पमणि, द्रोण-

मणि और वीर्यवान विष—इन में से किसी एक को या दो चार को शरीर पर धारण करने से विष की शान्ति होती है; अतः जो अमीर हों, जिनके पास इन में से कोई सी चीज़ हो, उन्हें इनके पास रखने की सलाह दीजिये। इनको व्यर्थ का अमीरी ढकोसला मत समझिये। इनमें विषको हरण करने की शक्ति है। 'सुश्रुत' के कल्प-स्थान में लिखा है, विषमूषिका और अजरुहा में से किसी एक को हाथ में रखने से साँप आदि तेज़ ज़हर वाले प्राणियों का ज़हर उतर जाता है। अजरुहा शायद निर्विषी को कहते हैं। निर्विषी में ऐसी सामर्थ्य है,पर वैसी सच्ची निर्विषी आज-कल मिलनी कठिन है। द्रव्योंमें अचिन्त्य गुण और प्रभाव हैं; पर अफसोस है कि,मनुष्य उनको जानता नहीं। न जाननेसे ही उसे ऐसी-ऐसी बातों पर आश्चर्य या अविश्वास होता है और वह उन्हें झूठी समझता है। एक चिरचिरे को ही लीजिये। इसे रविवार के दिन कान पर बाँधने से शीतज्वर भाग जाता है। जिन्होंने परीक्षा न की हो, कर देखें; पर विधि-पूर्व्वक काम करें। बिच्छूके काटे आदमी को आप चिरचिरा दिखाइये और छिपा लीजिये। २१४ बार ऐसा करनेसे बिच्छूका विष उतर जाता है।

(१८) ऊपर के १८ पैरों में, हमने साँप के काटे की "सामान्य चिकित्सा" लिखी है,क्योंकि "विशेष चिकित्सा" उत्तम और शीघ्र फल देने वाली होने पर भी, सब किसी से बन नहीं आती—ज़रा सी ग़लती से उलटे लेने के देने पड़ जाते हैं। आगे हम विशेष चिकित्सा के सम्बन्ध की चन्द प्रयोजनीय— काम की बातें लिखते हैं। साँप के क़ाटे हुए का इलाज शुरू करने से पहले, वैद्य को बहुत सी बातों का विचार करके, खूब समझ-बूझ कर, पीछे इलाज शुरू करना चाहिये। जो वैद्य बिना समझे-बूझे इलाज शुरू कर देते हैं, उन्हें कदाचित कभी सिद्धि लाभ हो भी जाय, तोभी अधिकांश रोगी उन के हाथों में आकर वृथा मरते और उनकी सदा बदनामी होती है। पर जो वैद्य हरेक बात को समझ-बूझ कर, पीछे इलाज

करते हैं, उन्हें बहुधा सफलता होती रहती है—बिरले ही केसों में असफलता होती है। वागभट्ट में लिखा है:—

> भुजंग दोष प्रकृति स्थान वेग विशेषतः।
> सुसूक्ष्मं सम्यगालोच्य विशिष्ठां वाऽऽचरेत् क्रियाम्॥

साँप, दोष, प्रकृति, स्थान और विशेषकर वेगको सूक्ष्म बुद्धि या बारीकीसे समझ और विचार कर, "विशेष चिकित्सा" करनी चाहिये।

इन पाँचों बातोंका विचार कर लेनेसे ही काम नहीं चल सकता। इनके अलावः, नीचे लिखी चार बातोंका भी विचार करना ज़रूरी है।

(१) देश।

(२) सात्म्य।

(३) ऋतु।

(४) रोगी का बलाबल।

और भी विचारने योग्य बातें।

काटने वाले सर्पों के सम्बन्ध में भी वैद्य को नीचे लिखी बातें मालूम करनी चाहियें:—

(क) किस जाति के सर्प ने काटा है? जैसे:—दर्वीकर और मण्डली इत्यादि।

(ख) किस अवस्थामें काटा है? जैसे,—घबराहटमें या काँचली छोड़ते हुए इत्यादि।

(ग) किस अवस्थाके सर्पने काटा है? जैसे,—बालक या बूढ़ेने।

(घ) साँप नर था या मादीन अथवा नपुंसक इत्यादि?

(ङ) सर्पने क्यों काटा? दबकर, क्रोधसे, पूर्व जन्मके वैरसे अथवा ईश्वर के हुक्म से इत्यादि। वागभट्ट ने कहा है—

> आदिष्टात् कारणं ज्ञात्वा प्रतिकुर्याद्यथायथम्।

किस कारणसे काटा है, यह जानकर यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये।

(च) सर्प ने दिन-रात के किस भाग में काटा ? जैसे,—सवेरे, शाम को, पहली रात को या पिछली रात को।

(छ) सर्पदंश कैसा है ? जैसे,—सर्पित, रदित इत्यादि।

इन बातों के जानने से लाभ।

इन बातों के जान जाने से ही हम अच्छी तरह चिकित्सा कर सकेंगे। अगर हमें मालूम हो कि, दर्वीकरने काटा है, तो हम समझ जायँगे, कि इस साँप का विष वातप्रधान होता है। इसके सिवाय, इस का काटा आदमी तत्काल ही मर जाता है। चूँकि दर्वीकर ने काटा है, अतः हमें वातनाशक चिकित्सा करनी होगी।

इतना ही नहीं, फिर हमें विचारना होगा कि हमारे रोगी के साथ सर्प-विष की प्रकृति-तुल्यता तो नहीं है; यानी सर्प-विष वातप्रधान है और रोगी भी वातप्रधान प्रकृति का तो नहीं है। अगर विष और रोगी दोनों की प्रकृति एक मिल जायँगी, तब तो हमको कठिनाई मालूम होगी। अगर विष और रोगी की प्रकृति जुदी-जुदी होगी, तो हम को उतनी कठिनाई न मालूम होगी।

फिर हम को यह देखना होगा कि, आजकल ऋतु कौनसी है। किस दोष के कोपका समय है। अगर हमारे रोगी को दर्वीकार साँप ने वर्षा-काल में काटा होगा, तो ऋतु-तुल्यता हो जायगी। क्योंकि दर्वीकर साँपका विष वातप्रधान होता ही है और वर्षा ऋतु भी वातकोपकारक होती है। इस दशा में हम कठिनाई को समझ सकेंगे। वर्षाकाल में या बादल होने पर विष स्वभाव से ही कुपित होते हैं, इस से कठिनाई और भी बढ़ी दीखेगी।

फिर हम को देखना होगा, यह कौन देश है, इस की प्रकृति क्या है। अगर हमारे रोगी को वात-प्रधान दर्वीकर सर्प ने बङ्गाल में काटा होगा, तो देशतुल्यता हो जायगी, क्योंकि बङ्गाल देश आनूप

देश है। इस में स्वभाव से ही वात-कफका कोप रहता है। यह भी एक कठिनाई हम को मालूम हो जायगी। आप ही ग़ौर कीजिये; इतनी बातों को समझे बिना वैद्य कैसे उत्तम इलाज कर सकेगा ?

उदाहरण ।

अगर हम से कोई आकर पूछे कि, कलकत्ते में, इस सावनके महीने में, एक वातप्रकृति के आदमी को जवान दर्वीकर या काले साँपने काटा है, वह बचेगा कि नहीं; तो हम यह समझ कर कि सर्प की प्रकृति वातप्रधान है, रोगी भी वातप्रकृति है, ऋतु भी वातकोप की है और देश भी वैसा ही है, कहदेंगे कि, भाई भगवान ही रक्षक है, बचना असम्भव है। पर हमें थोड़ा सन्देह रहेगा, क्योंकि यह नहीं मालूम हुआ कि, सर्प-दंश कैसा है ? सर्पित है, रदित है या निर्विष अथवा क्यों काटा है ? दबकर, क्रोध में भर कर अथवा और किसी वजह से ? अगर इन सवालों के जवाब भी ये मिलें, कि सर्प-दंश सर्पित है—पूरी दाढ़ें बैठी हैं और पैर पड़ जाने से क्रोध में भर कर काटा है, तब तो हमें रोगी के मरने में जो ज़रा सा सन्देह था, वह भी न रहेगा ।

प्रश्नोत्तर के रूपमें दूसरा उदाहरण ।

अगर कोई शख़्स आकर हम से कहे, कि वैद्य जी! जल्दी चलिये, एक आदमी को साँपने काटा है। हम उस से चन्द सवाल करेंगे और वह उनके जवाब देगा। पीछे हम नतीजा बतायेंगे।

वैद्य—कैसे सर्प ने काटा है ?

दूत—मण्डली साँपने।

वैद्य—साँप जवान था कि बूढ़ा ?

दूत—साँप अधेड़ या बूढ़ा सा था।

वैद्य—रोगी की प्रकृति कैसी है ?

दूत—पित्त प्रकृति।

वैद्य—आजकल कौनसा महीना है ?

दूत—महाराज ! वैशाख है।

वैद्य—सर्पदंश कैसा है ?

दूत—सर्पित।

वैद्य—किस समय काटा ?

दूत—रात को १० बजे।

वैद्य—क्यों काटा ?

दूत—पैर से दब कर।

वैद्य—किस जगह साँप मिला ?

दूत—अमुक गाँवके बाहर, पीपल के नीचे।

वैद्य—रोगी का क्या हाल है ?

दूत—बड़ी प्यास है, जला-जला पुकारता है और शीतल पदार्थ माँगता है।

वैद्य—उसके मल-मूत्र, नेत्र और चमड़े का रंग अब कैसा है ?

दूत—सब पीले हो गये हैं। ज्वर भी चढ़ आया है। अब तो होश नहीं है। पसीनों से तर हो रहा है।

वैद्य—भाई ! हमें फुरसत नहीं है और किसी को लेजाओ।

दूत—क्यों महाराज ! क्या रोगी नहीं बचेगा ? अगर नहीं बचेगा तो क्यों ?

वैद्य—अरे भाई ! इन बातों में क्या लोगे ? जाओ, देर मत करो। किसी और को लेजाओ।

दूत—नहीं महाराज ! मैं वैद्य तो नहीं हूँ; तोभी चिकित्सा-ग्रन्थ देखा करता हूँ। कृपया मुझे बताइये कि, वह क्यों न बचेगा ?

वैद्य—भाई ! उसके न बचने के बहुत कारण हैं, (१) उसे बूढ़े मण्डली साँपने काटा है, और बूढ़े मण्डली साँपका काटा

आदमी नहीं जीता। (२) रोगी की प्रकृति पित्त की है और साँप के विष की प्रकृति भी पित्तप्रधान है। फिर मौसम भी गरमी का है। गरमी की ऋतु में गरम मिज़ाज के आदमी को कोई भी साँप काटता है, तो वह नहीं बचता; जिस में साँप की प्रकृति भी गरम है, अतः रोगी डबल-असाध्य है। (३) चारों दाढ़ बराबर बैठी हैं, दंश सर्पित है और दब कर क्रोध से काटा है। ये सब मरने के लक्षण हैं। (४) काटा भी पीपल के नीचे है। पीपल या श्मशान आदि स्थानों पर काटा हुआ आदमी नहीं बचता। (५) इस समय विषका छठा-सातवाँ वेग है। वाग्भट्ट ने पाँचवें वेग के बाद चिकित्सा करने की मनाही की है। उन्होंने कहा है :—

कुर्यात्पञ्चसु वेगेषु चिकित्सां न ततः परम्।

पांच वेगों तक चिकित्सा करो; उस के बाद चिकित्सा न करो।

हमने उदाहरण देकर जितना समझा दिया है, उतने से महा-मूढ़ भी सर्प-विष चिकित्सा का तरीक़ा समझ सकेगा। अब हम स्थानाभाव से ऐसे उदाहरण और न दे सकेंगे।

(१९) बहुत से सर्प के काटे हुए आदमी मुर्दा-जैसे हो जाते हैं, पर वे मरते नहीं। उनका जीवात्मा भीतर रहता है, अतः इसी भाग में पहले लिखी विधियों से परीक्षा अवश्य करो। उस परीक्षा का जो फल निकले, उसे ही ठीक समझो। वैद्यक-शास्त्र में भी लिखा है :—

नस्यैश्चेतनां तीक्ष्णैर्न क्षतात्क्षतजगामः।
दण्डाहतस्य नो राजीप्रयातस्य यमान्तिकम्॥

अगर आप किसी को तेज़-से-तेज़ नस्य सुँघावें, पर उस से भी उसे होश न हो ; अगर आप उसके शरीर में कहीं घाव करें, पर वहाँ खून न निकले और अगर आप उसके शरीर पर बेंत या डण्डा मारें, पर उसके शरीर पर निशान न हों—तो आप समझ लें, कि वह धर्मराज के पास जायगा।

सातवें वेग में,साँपके काटे हुए के सिर पर "काकपद" करते हैं। उसके सिर का चमड़ा छील कर कव्वे का सा पञ्जा बनाते हैं। अगर उस जगह खून नहीं निकलता, तो समझते हैं, कि रोगी मर गया। अगर खून निकलता है, तो समझते हैं,कि रोगी जीता है—मरा नहीं।

(२०) अगर साँप किसी को सामने से आकर काटता है, तब तो रोगी कहता है, कि मुझे साँपने काटा है। परन्तु कितनी ही दफा साँप नींद में सोते हुए को या अँधेरे में काट कर चल देता है; तब पता नहीं लगता, कि किस जानवरने काटा है। ऐसा मौक़ा पड़ने पर,आप दंश-स्थान को देखें; उसी से आपको पता लगेगा। याद रखो, अगर ज़हरीला सर्प काटता है, तो उसकी दो दाढ़ें लगती हैं। अगर काटी हुई जगह पर इकट्ठे दो छेद दीखें, तो समझो कि साँपने दाँत लगाये, पर दाँत ठीक बैठे नहीं और वह ज़ख्ममें ज़हर छोड़ नहीं सका। इस अवस्था में, यथोचित मामूली उपाय करने चाहिएँ।

अगर ज़हरीला साँप काटता है और घावमें विष छोड़ जाता है, तो रोगी के शरीर में झनझनाहट होती और वह बढ़ती चली जाती है, चक्कर आते हैं, शरीर काँपता है, बेचैनी होती है और पैर कमज़ोर हो जाते हैं। पर जब विष और आगे बढ़ता है, तब साँस लेने में कष्ट होता है, गहरा साँस नहीं लिया जाता, नाड़ी जल्दी-जल्दी चलती है ; पर ठहर-ठहर कर। बोली बन्द होने लगती है, जीभ बाहर निकल आती है, मुँह में झाग आते हैं, हाथ-पैर तन जाते हैं, शरीर शीतल हो जाता है और पसीने बहुत आते हैं। अन्त में रोगी बेहोश होकर मर जाता है। मतलब यह है, कि अगर अनजानमें,सोते हुए या अँधेरेमें साँप काटे तो आप दंशस्थान और लक्षणों से जान सकते हैं, कि साँपने काटा या और किसी जीव ने।

(२१) अगर आप साँपके काटेकी चिकित्सा करो, तो दवा सेवन कराने, बन्ध बाँधने, फस्द खोलने, लेप लगाने प्रभृति क्रियाओं पर विश्वास और भरोसा रखो,पर मन्त्रों पर विश्वास न करो। अगर मन्त्र

जानने वाले आवें, बन्ध खोलें और दवा देना बन्द करें, तो भूल कर भी उनकी बातोंमें मत आओ। कई दफा,बन्ध बाँधने से साँपके काटे हुए आदमी आराम होते-होते, दुष्टों के बन्ध खुला देने से, मर गये और मंत्रज्ञ महात्मा अपना सा मुँह लेकर चलते बने।

आजकल मन्त्र-सिद्धि करनेवाले कहाँ मिल सकते हैं, जबकि सुश्रुतके ज़मानेमें ही उनका अभाव सा था। 'सुश्रुत' में लिखा है:—

> मंत्रास्तु विधिना प्रोक्ता हीना वा स्वरवर्णत; ।
> यस्मान्न सिद्धिमायाति तस्माद्योज्योऽगदक्रमः ॥

मन्त्र अगर विधि के विना उच्चारण किये जाते हैं तथा स्वर और वर्ण से हीन होते हैं, तो सिद्ध नहीं होते; अतः साँप के काटे की दवा ही करनी चाहिये।

जब भगवान् धन्वन्तरि ही सुश्रुतसे ऐसा कहते हैं,तब क्या कहा जाय? उस प्राचीन काल में ही जब सच्चे मन्त्रज्ञ नहीं मिलते थे,तब अब तो मिल ही कहाँ सकते हैं? मन्त्र सिद्ध करनेवाले को स्त्री-संग, मांस और मद्य आदि त्यागने होते हैं, जिताहारी और पवित्र होकर कुशासन पर सोना पड़ता है एवं गन्ध, माला और बलिदान से मन्त्र सिद्ध करके देव पूजन करना होता है। कहिये,इस समय कौन इतने कर्म करेगा?

नवनीत या निचोड़।

(२२) सर्प-विष-चिकित्सा में नीचे की बातों को कभी मत भूलो:—

(१) मण्डली सर्प के डसे हुए स्थान को आग से मत जलाओ। ऐसा करने से विष का प्रभाव और बढ़ेगा।

(२) खून निकालने के बाद, जो उत्तम खून बच रहे, उसे शीतल सेकों से रोको।

(३) सर्प के काटे के आराम हो जाने पर भी, डसे हुए स्थान को खुरच कर, विष नाशक लेप करो; क्योंकि अगर ज़रा सा भी विष शेष रह जायगा, तो फिर वेग होंगी।

(४) गरमी के मौसम में, गरम मिज़ाज वाले को साँप काटे, तो आप असाध्य समझो। अगर मण्डली सर्प काटे, तो औरभी असाध्य समझो।

(५) साँप के काटे आदमी को घी, घी और शहद अथवा घी-मिली दवा दो; क्योंकि विष में "घी पिलाना" रोगी को जिलाना है।

(६) तेल, कुल्थी, शराब, काँजी आदि खट्टे पदार्थ सांप के काटे को मत दो। हाँ, कचनार, सिरस, आक और कटभी प्रभृति देना अच्छा है।

(७) अगर आपको साँप की क़िस्म का पता न लगे, तो दंश-स्थान की रङ्गत, सूजन और वातादि दोषों के लक्षणोंसे पता लगा लो।

(८) इलाज करने से पहले पता लगाओ, कि साँप के काटे हुए को प्रमेह, कूबड़ापन, कमज़ोरी आदि रोग तो नहीं हैं, क्योंकि ऐसे लोग असाध्य माने गये हैं।

(९) किस तिथि और किस नक्षत्र में काटा है, यह जान कर साध्यासाध्य का निर्णय कर लो।

(१०) इलाज करने से पहले इस बात को अवश्य मालूम कर लो कि, सर्प ने क्यों काटा? इस से भी आप को साध्यासाध्य का ज्ञान होगा।

(११) सर्प-दंश की जांच करके देखो, वह सर्पित है या रदित वगैरः। इस से भी आप को साध्यासाध्य का ज्ञान होगा।

(१२) दिन-रात में किस समय काटा, इस का भी पता लगा लो। इस से आप को साँप की क़िस्मका अन्दाज़ा मालूम हो जायगा।

(१३) पता लगाओ, साँपने किस हालतमें काटा। जैसे,—घब-राहट में, दूसरे को तत्काल काटकर अथवा कमज़ोरी में। इस से आप को विष की तेज़ी-मन्दी का ज्ञान होगा।

(१४) रोगी को देख कर पता लगाओ कि, किस दोष के विकार हो रहे हैं। इस उपाय से भी आप सर्प की क़िस्म जान सकेंगे।

(१५) इस की भी खोज करो, कि नर ने काटा है या मादीन ने अथवा नपुंसक या गर्भवती, प्रसूता आदि नागिनोंने । इस से विष की मारकता आदि जान सकोगे ।

(१६) अच्छी तरह देख लो, विष का कौनसा वेग है । हालत देखने से वेग को जान सकोगे ।

(१७) याद रखो, अगर दर्वीकर सर्प काटता है, तो चौथे वेग में वमन कराते हैं । अगर मण्डली और राजिल काटते हैं, तो दूसरे वेग में ही वमन कराते हैं ।

(१८) गर्भवती, बालक, बूढ़े और गर्म मिज़ाज वाले को साँप काटे तो फस्द न खोलो ; किन्तु शीतल उपचार करो ।

(१९) अगर जाड़े का मौसम हो, रोगी को जाड़ा लगता हो, राजिल सर्पने काटा हो, बेहोशी और नशा सा हो, तो तेज़ दवा दे कर क़य कराओ ।

(२०) अगर प्यास, दाह, गरमी और बेहोशी आदि हों, तो शीतल उपचार करो—गरम नहीं ।

(२१) अगर रोगी भूखा-भूखा चिल्लाता हो और दर्वीकर या काले साँपने काटा हो तथा वायु के उपद्रव हों, तो घी और शहद, दही या माठा दो ।

(२२) जिस के शरीर में दर्द हो और शरीर का रङ्ग बिगड़ गया हो, उसको फस्द खोल दो ।

(२३) जिस के पेट में जलन, पीड़ा और अफारा हो, मलमूत्र रुके हों और पित्त के उपद्रव हों, उसे जुलाब दो ।

(२४) जिस का सिर भारी हो, ठोड़ी और जावड़े जकड़ गये हों तथा कण्ठ रुका हो, उसे नस्य दो । अगर रोगी बेहोश हो, आँखें फटी सी हो गई हों और गर्दन टूट गई हो, तो प्रधमन नस्य दो ।

(२५) आराम हो जाने पर "उत्तर क्रिया अवश्य करो ।
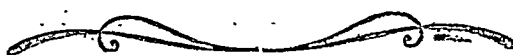
(१) एक साल तक, विधि-सहित "चन्द्रोदय" रस सेवन करने से मनुष्य पर स्थावर और जङ्गम—दोनों प्रकार के विषों का असर नहीं होता । आयुर्वेद में लिखा है:—

> स्थावरं जंगमं विषं विषमं विषवारिवा ।
> न विकाराय भवति साधकेन्द्रस्यवत्सरात् ॥

स्थावर और जङ्गम विष तथा जल का विष एक वर्ष तक "चन्द्रोदय रस"* सेवन करने से नहीं व्यापते ।

सोने के वर्क ४ तोले
शुद्ध पारा ३२ तोले
शुद्ध गंधक ६४ तोले

*(१) इन तीनों को खरल में डालकर खूब घोटो, जब निश्चन्द्र कज्जली हो जाय, (२) नरम कपास के फूलों का रस डाल-डाल कर घोटो । जब यह घुटाई भी हो जाय, तब (३) घीग्वार का रस डाल-डाल कर घोटो । जब यह घुटाई भी हो जाय, मसाले को (४) सुखा लो । जब सूख जाय, उसे एक बड़ी आतिशी शीशी में भर कर, शीशी पर सात कपड़-मिट्टी कर दो और शीशी को सुखालो । (५) सूखी हुई शीशी को वालुका यंत्र में रखकर, वालुका यंत्र को चूल्हे पर चढ़ा दो और नीचे से मन्दी-मन्दी आग लगने दो । पीछे, उस आग को और तेज़ कर दो । शेष में, आग को खूब तेज़ कर दो । क्रम से मन्द, मध्यम और तेज आग लगातार २४ पहर या ७२ घण्टों तक लगनी चाहिये । (६) जब शीशी के मुँह से धूआँ निकल जाय, तब शीशी के मुँह पर एक ईंट का टुकड़ा रख कर, मुँह बन्द कर दो; पर नीचे आग लगती रहे ।

जब चन्द्रोदय सिद्ध हो जायगा, तब शीशी की नली काली स्याह हो जायगी । यही सिद्ध-असिद्ध "चन्द्रोदय" की पहचान है ।

सिद्ध चन्द्रोदय का रंग नये पत्ते की ललाई के समान लाल होता है । ऐसा चन्द्रोदय सर्व रोग नाशक होता है ।

सेवन विधि—चन्द्रोदय ४ तोले, भीमसेनी कपूर १६ तोले, और जायफल, काली मिर्च, लौंग तीनों मिलाकर १६ तोले तथा कस्तूरी ४ माशे—इन सबको

(२) "वैद्य सर्वस्व" में लिखा है, मेष की संक्रान्ति में, मसूर की दाल और नीम के पत्ते मिला कर खाने से एक वर्ष तक विष का भय नहीं होता ।

नोट—दूसरे ग्रन्थों में लिखा है, मेष की संक्रान्ति के आरम्भ में, एक मसूर का दाना और दो नीम के पत्ते खाने से एक वर्ष तक विष का भय नहीं होता।

(३) हरदिन, सवेरे ही, सदा-सर्वदा कड़वे नीम के पत्ते चबाने वाले को साँप के विष का भय नहीं रहता ।

(४) "वैद्यरत्न" में लिखा है, जिस समय वृष राशि के सूर्य्य हों, उस समय सिरस का एक बीज खाने से मनुष्य गरुड़ के समान हो जाता है, अतः सर्प उस के पास भी नहीं आते—काटना तो दूर की बात है।

(५) बंगसेन में लिखा है, आषाढ़ के महीने के शुभ दिन और शुभ नक्षत्र में, सफेद पुनर्नवा या विषखपरे की जड़ चाँवलों के पानी में पीस कर पीने से साँपों का भय नहीं रहता ।

नोट—चक्रदत्तने पुष्य नक्षत्र में इसके पीने की राय दी है ।

(६) "इलाजुलगुर्बा" में लिखा है—बारहसिंगे का सींग, बकरी का खुर और अकरकरा,—इन तीनों को मिला कर, धूनी देने से साँप भाग जाते हैं ।

(७) राई और नौसादर मिलाकर घर में डाल देने से साँप घर को छोड़ कर भाग जाता है और फिर कभी नहीं आता ।

(८) बारहसिंगे का सींग लटका रखने से सर्प प्रभृति ज़हरीले जानवर नहीं काटते ।

(९) गोरखर के सींग, बकरी के खुर, सौसन की जड़, अकरकरा की जड़ और धनिया—इन चीज़ों से साँप डरता है ।

खरल में डाल. खरल करलो और शीशी में भरकर रख दो। इस में से १ माशे रस निकाल कर, पानों के रस के साथ नित्य खाओ। इस तरह एक वर्ष तक इसके सेवन करने से स्थावर और जंगम विष का भय नहीं रहेगा। इसके सिवा, इस रस का खानेवाला अनेकों मदमाती नारियों का मद भञ्जन कर सकेगा।

(१०) साँप की राह में अगर राई डाल दी जाय, तो साँप उस राह से नहीं निकलता। राई और नौसादर साँप के बिल या बाँबी में डाल देने से साँप उन्हें छोड़ भागता है।

नोट—निराहार रहनेवाले मनुष्य का थूक अगर साँप के मुँह में डाल दिया जाय, तो साँप मर जायगा। अगर उस आदमी के मुँह में नौसादर हो, तो उस के थूक से साँप और भी जल्दी मर जायगा। राई भी सर्प को मार डालती है।

(११) हन्द वैद्यने लिखा है:—आषाढ़ के महीने के शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त में, सिरस की जड़ को चाँवलों के पानी के साथ पीने वाले को सर्प का भय कहाँ? अर्थात् साँप का डर नहीं रहता। यदि ऐसे आदमी को कोई साँप दर्प या मोह से काट भी खाता है, तो उसी समय उसका विष, शिवजी की आज्ञानुसार, सिर से मूल स्थान पर जा पहुँचता है; अतः जिसे वह काटता है, उस को कोई हानि नहीं होती। चक्रदत्त लिखते हैं, कि वह सर्प उसी स्थान पर मर जाता है। लिखा है:—

मूलं तण्डुलवारिणा पिबति यः प्रत्यंगिरासंभवम्।
उद्धृत्याऽऽकलितं सुयोगदिवसे तस्याऽहि भीतिः कुतः?"

नोट—सिरस की जड़ को आषाढ़ मास के शुभ दिन और शुभ मुहूर्त्त में ही उखाड़ कर लाना चाहिये; पहले से लाकर रखी हुई जड़ काम की नहीं। हाँ, चक्रदत्त ने लिखा है कि, इस जड़ को बिना पीसे चाँवलों के पानी के साथ पीना चाहिये।

(१२) मसूर और नीम के पत्तों के साथ "सिरस की जड़" को पीस कर, वैशाख के महीने में पीनेवाले को, एक वर्ष तक विष और विषमज्वर का भय नहीं रहता।

चक्रदत्तने लिखा है:—

मसूरं निम्बपत्राभ्यां खादेन्मेषगते रवौ।
अब्दमेकं न भीतिः स्याद्विषार्त्तस्य न संशयः॥

मसूर को नीम के पत्तों के साथ जो आदमी मेष के सूर्य में खाता है, उसे एक साल तक साँपों से भय नहीं होता, इसमें संशय नहीं।

(१३) जो मनुष्य दिन में या मध्याह्न काल में सदा छाता लगाकर चलता है, उसे गरुड़ समझ कर सर्प भाग जाते हैं। उनका विष-वेग शान्त हो जाता है और वे किसी हालत में भी उस के सामने नहीं आते। —वृन्द।

नोट—वर्षा और धूप में तो सभी छाता लगाते हैं, पर इनके न होने पर भी छाता लगाना मुफीद है। छाते से ईंट पत्थर गिरने से मनुष्य बचता है। साँप छातेवाले को गरुड़ समझ कर भाग जाता है। एक बार, एक जंगल में, एक मेम साहिबा अकेली जा रही थीं। सामने से एक चीता आया और उन पर हमला करना चाहा। उनके पास उस समय छाते के सिवा और कोई हथियार न था। उन्होंने झट से छाता खोल दिया। चीता न जाने क्या समझकर नौ दो ग्यारह हो गया और मेम साहिबा के प्राण बच गये। इसी से किसी कविने बहुत सोच-विचार कर ठीक ही कहा है :—

छुरी छड़ी छुतुरी छला, छबडा पाँच छकार।
इन्हें नित्य ढिंग राखिये, अपने अहो कुमार!॥

नोट—इन पाँचों छकारों को यानी छुरी, छड़ी, छत्री, छल्ला और लोटा को सदा अपने पास रखना चाहिये। इन से काम पड़ने पर बड़ा काम निकलता है। अनेक बार जीवन-रक्षा होती है।

(१४) घर को खूब साफ रखो; विशेष कर वर्षा में तो इसका बहुत ही ख़याल रखो। इस ऋतु में साँप ज़ियादा निकलते हैं। इस के सिवा बादल और वर्षा के दिनों में सर्प-विष का प्रभाव भी बहुत होता है। अतः घर के बिले, सुराख या दराज़ बन्द कर दो। अगर साँप का शक हो तो घर में नीचे लिखी धूनी दो :—

(क) घर में गन्धक की धूनी दो।

(ख) साँप की काँचली की धूनी दो। इस से साँप भाग जाता है; बल्कि जहाँ यह होती है, वहाँ नहीं आता।

(ग) कारबोलिक एसिड़ की बू से भी सर्प नहीं रहता; अतः इसे जहाँ-तहाँ छिड़क दो।
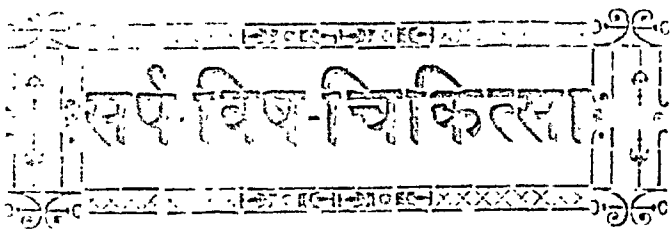
वेगानुरूप चिकित्सा ।
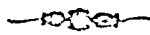
(१) किसी तरह का साँप काटे, पहले वेग में खून निकालना ही सबसे उत्तम उपाय है, क्योंकि खून के साथ ज़हर निकल जाता है ।

(२) दूसरे वेगमें—शहद और घीके साथ अगद पिलानी चाहिये अथवा घी-दूधमें कुछ शहद और विषनाशक दवाएँ मिलाकर पिलानी चाहियें।

(३) तीसरे वेग में—अगर दर्वीकर या फनवाले सर्पने काटा हो, तो विष नाशक नस्य और अँजन सुँघाने और नेत्रों में लगाने चाहिये ।

(४) चौथे वेग में—वमन कराकर, पीछे लिखी विषघ्न यवागू पिलानी चाहिये ।

(५—६) पाँचवें और छठे वेग में शीतल उपचार करके, तीक्ष्ण विरेचन या कड़ा जुलाब देना चाहिये । अगर ऐसा ही मौक़ा हो, तो पिचकारी द्वारा भी दस्त करा सकते हो । जुलाबके बाद, अगर उचित जँचे तो वही यवागू देनी चाहिये ।

(७) सातवें वेग में—तेज़ अवपीड़न नस्य देकर सिर साफ करना चाहिये । साथ ही तेज़ विषनाशक अंजन आँखों में लगाना चाहिये और तेज़ नश्तर से मूर्द्धा या मस्तक में कव्वेके पञ्जे * के आकार का

---

* काकपद करना—सातवें वेग में मूर्द्धा या मस्तक के ऊपर, तेज नश्तर से खुरच-खुरच कर, कव्वे का पञ्जा सा बनाते हैं। उसमें मांस को इस तरह छीलते हैं, कि खून नहीं निकलता और मांस छिल जाता है। फिर उस काकपद या कव्वे के पंजे के निशान पर, खून से तर चमड़ा या किसी जानवर का ताजा मांस रखते हैं। यह मांस सिर में से विष को खींच लेता है।

निशान करके, उस निशान पर खून-मिला चमड़ा या ताज़ा मांस रखना चाहिये ।

नोट—इन तीनों तरहके साँपोंकी वेगानुरूप चिकित्सामें कुछ फर्क है। दर्वीकरकी चिकित्सा में, चौथे वेग में वमन कराते हैं; पर मण्डली और राजिल की चिकित्सा में, दूसरे वेग में ही वमन कराते हैं। क्योंकि मण्डली साँपका विष पित्तप्रधान और राजिल का कफप्रधान होता है। राजिल की चिकित्सा में, दूसरे वेग में वमन कराने के सिवा और सब चिकित्सा २१७ पृष्ठमें लिखी वेगानुरूप चिकित्सा के समान ही करनी चाहिये। मण्डलीकी चिकित्सा करते समय—दूसरे वेगमें वमन करानी, तीसरे वेग में तेज जुलाब देना और छठे वेग में काकोल्यादि गण से पकाया दूध देना और सातवें वेगमें विषनाशक अवपीड़ नस्य देना उचित है। अगर गर्भवती; बालक और बूढ़ेको साँप काटे,तो उनका शिरावेधन न करना चाहिये ; यानी फस्द न खोलनी चाहिये। अगर जरूरत ही हो—काम न चले तो कम खून निकालना चाहिये। इन की फस्द न खोल कर, मृदु उपायों से विष नाश करना अच्छा है। इसके सिवाय, जिनका मिजाज गर्म हो, उन का भी खून न निकालना चाहिये ; बल्कि शीतल उपचार करने चाहियें ।

दर्वीकरों की वेगानुरूप चिकित्सा ।

(१) पहले वेग में—खून निकालो ।

(२) दूसरे वेग में—शहद और घी के साथ अगद दो ।

(३) तीसरे वेग में—विषनाशक नस्य और अंजन दो।

(४) चौथे वेग में—वमन कराकर, विषनाशक यवागू दो ।

(५-६) पाँचवें और छठे वेग में—तेज़ जुलाब देकर, यवागू दो ।

(७) सातवें वेग में—खूब तेज़ अवपीड़ नस्य देकर सिर साफ करो और मस्तक पर, काकपद करके, ताज़ा मांस या खून-आलूदा चमड़ा रखो ।

नोट—गर्भवती, बालक, बूढ़े और गरम मिजाज वाले का खून न निकालो ; निकाले बिना न सरे तो कम निकालो और मृदु उपायों से विष नाश करो। गरम मिजाज वाले को शीतल उपचार करो ।

मण्डली सर्पों की वेगानुरूप चिकित्सा ।

(१) पहले वेग में—खून निकालो ।

(२) दूसरे वेग में—शहद और घीके साथ अगद् पिलाओ और वमन कराकर विषनाशक यवागू दो ।

(३) तीसरे वेग में—तेज़ जुलाब देकर, यवागू दो ।

(४–५) चौथे और पाँचवें वेगमें—दर्वीकरके समान काम करो ।

(६) छठे वेगमें—काकोल्यादि के साथ पकाया हुआ दूध पिलाओ या महाऽगद आदि तेज़ अगद पिलाओ ।

(७) सातवें वेग में—असाध्य समझकर अवपीड नस्य नाक में चढ़ाओ, विषनाशक दवा खिलाओ और सिर पर, काकपद करके, ताज़ा मांस या खून-मिला चमड़ा रखो ।

नोट—गर्भवती, बालक और बूढ़े की फस्द खोलकर खून मत निकालो। अगर निकालो ही तो कम निकालो। मण्डली के जहर में पित्त प्रधान होता है। अगर ऐसा साँप पित्त प्रकृतिवाले—गरम मिजाज वाले को काटता है, तो जहर डबल जोर करता है, अतः खून न निकाल कर खूब शीतल उपचार करो।

राजिल सर्पों की वेगानुरूप चिकित्सा ।

(१) पहले वेग में—खून निकालो और शहद-घी के साथ अगद या विषनाशक दवा पिलाओ ।

(२) दूसरे वेग में—वमन कराकर, विष नाशक अगद शहद और घी के साथ पिलाओ ।

(३-४-५) तीसरे, चौथे और पाँचवें वेग में—सब काम दर्वीकरों के समान करो ।

(६) छठे वेग में—तेज़ अंजन आँखों में आँजो ।

(७) सातवें वेग में—तेज़ अवपीड़ नस्य नाक में चढ़ाओ ।

नोट—गर्भवती, बालक और बूढ़ेका खून मत निकालो; यानी फस्द मत खोलो। जहाँतक हो सके, यथोचित नर्म उपायों से काम करो। कहा है :—

गर्भिणी बालवृद्धानां शिराव्यधविवर्जितम् ।
विषार्त्तानां यथोद्दिष्टं विधानं शस्यतेमृदु ॥

सूचना—दवा सेवन कराते समय—देश, काल, प्रकृति, सात्म्य, विष-वेग और रोगी के बलाबल का विचार करके दवा देना ही चतुराई है।

दोषानुरूप चिकित्सा।

जिस साँप के काटे हुए के शरीर का रंग विषके प्रभाव से विगड़ गया हो, शरीर में वेदना हो और सूजन हो—उसका खून फौरन निकाल दो।

अगर विषार्त्त भूखा हो और वातप्राय: उपद्रव हों, तो उसे शहद और घी, मांसरस, दही या माठा पिलाओ।

अगर प्यास, दाह, गरमी, मूर्च्छा और पित्त के उपद्रव हों तथा पित्तज ही विष हो, तो शीतल पदार्थों का स्पर्श, लेप, स्नान—अवगाहन आदि शीतल क्रिया करो।

अगर सरदी की ऋतु हो, कफके उपद्रव—शीत कम्प आदि हों, कफका ही विष हो और मूर्च्छा तथा मद हो, तो तेज़ वमनकारक दवा देकर वमन कराओ।

नोट—यह ढँग स्थावर और जंगम दोनों विषों की चिकित्सा में चलता है।

उपद्रवों के अनुसार चिकित्सा।

(१) जिस के कोठे में दाह या जलन हो, पीड़ा हो, अफारा हो, मल, मूत्र और अधोवायु रुके हों, पैत्तिक उपद्रवों से पीड़ा हो—तो ऐसे विषार्त्त को विरेचन या जुलाब दो।

(२) जिस के नेत्रों के कोये सूजे हुए हों, नींद बहुत आती हो,

नेत्रों का रंग और-का-और हो गया हो तथा नेत्र गड़ से गये हों, विपरीत रूप दीखते हों यानी कुछ-का-कुछ दीखता हो,—ऐसे विषार्त्त के नेत्रों में विषनाशक अंजन लगाओ।

जिस के सिर में दर्द हो, सिर भारी हो, आलस्य हो, ठोड़ी और जावड़े जकड़ गये हों, गला रुका हुआ हो, गर्दन ऐंठ गई हो—मुड़ती न हो—मन्यास्तंभ हो, तो ऐसे विषार्त्त को तेज़ नस्य देकर उसका सिर साफ करो।

(४) जो रोगी विष के प्रभाव से बेहोश हो, नेत्र फटे से हों, गर्दन टूट गई हो, उसे प्रधमन नस्य दो ; यानी फूँकनी से दवा नाक में फूँको। इधर यह काम हो, उधर विना देर किये ललाटदेश और हाथ पैरों की शिरा वेधन करो—फस्द खोलो। अगर उन में से खून न निकले ,तो झट नश्तर से मूर्द्धा या दिमाग़में कव्वे के पञ्जे-का चिह्न करके ताज़ा मांस या खून-मिला चमड़ा उस पर रख दो। यह विष को खींच लेगा। अगर यह न हो सके, तो भोजपत्र आदि बल्कल वाले वृक्षों का ताज़ा निर्यास या सार अथवा अन्तर छाल रखो। विषनाशक दवाओं से लिपे हुए ढोल-डमरु आदि वाजे रोगी के कानों के पास बजाओ।

(५)जब उपरोक्त उपाय करनेसे चैतन्यता और ज्ञान हो जाय, तब वमन-विरेचन द्वारा नीचे ऊपर से खूब शोधन करो—परम दुर्जय विष को क़तई निकाल दो। अगर विष का कुछ भी अंश शरीर में रह जायगा, तो फिर वेग होने लगेंगे तथा विवर्णता, शिथिलता, ज्वर, खाँसी, सिर-दर्द, रक्तविकार, सूजन, क्षय, जुकाम, अँधेरी आना, अरुचि और पीनस प्रभृति उपद्रव होने लगेंगे।

अगर फिर उपद्रव हों या जो शेष रह जायँ, उनका इलाज विषघ्न दवाओं या उपायों से "दोषानुसार" करो; यानी विषके जो उपद्रव हों, उनका यथायोग्य उपचार करो।

विष की उत्तर क्रिया ।

जब विषके वेगों की शान्ति हो जाय, पूरी तरह से आराम हो जाय, तब बन्द खोल कर, शीघ्र ही डाढ़ लगी या काटी हुई जगह पर पछने लगा—खुरचकर—विषनाशक लेप कर दो, क्योंकि अगर ज़रा भी विष रुका रहेगा, तो फिर वेग होने लगेंगे ।

अगर किसी तरह दोषों के कुछ उपद्रव बाक़ी रह जायँ, तो उनका यथोचित उपचार करो, क्योंकि शेष रहा हुआ विषका अंश फिर उपद्रव और वेग कर उठता है । विष के जो उपद्रव ठहर जाते हैं, सहज में नहीं जाते ।

अगर वातादि दोष कुपित हों, तो बढ़े हुए वायु का स्नेहादि से उपचार करो । वे उपाय—तेल मछली और कुलथी से रहित—वायुनाशक होने चाहियें ।

अगर पित्तप्रधान दोष कुपित हों, तो पित्तज्वर-नाशक काढ़े, स्नेह और बस्तियों से उसे शान्त करो ।

अगर कफ बढ़ा हो, तो आरग्वधादि गण के द्रव्यों में शहद मिला कर उपयोग करो । कफनाशक दवा या अगद और तिक्त-रूखे भोजनों से शान्ति करो ।

विष के घाव और विष-लिपे शस्त्र के घावों के लक्षण ।

कड़ा बन्ध बाँधने, पछने लगाने—खुरचने या ऐसे ही तेज़ लेपों आदि से विष से सूजा हुआ स्थान गल जाता है और विष से सड़ा हुआ मांस कठिनता से अच्छा होता है ।

नश्तर आदि से चीरते ही काला खून निकलता है, स्थान पक जाता है, काला हो जाता है, बहुत ही दाह होता है, घाव में सड़ा-मांस पड़ जाता है, भयंकर दुर्गन्ध आती है, घाव से बारम्बार बिखरा

मांस निकलता है, प्यास, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और ज्वर—ये लक्षण जिस क्षत या घाव में होते हैं, उसे दिग्धविद्ध (विष-लिपे शस्त्रके बिंधनेसे हुआ घाव) घाव कहते हैं ।

जिन घावों में ऊपर के लक्षण हों, विषयुक्त डंक रह गया हो, मकड़ी लड़ के से घाव हों, दिग्धविद्ध घाव हों, विषयुक्त घाव हों और जिन घावों का मांस सड़ गया हो,पहले उनका सड़ा-गला मांस दूर कर दो ; यानी नश्तर से छीलकर फेंक दो । फिर जौंक लगाकर खून निकाल दो; और वमन विरेचन से दोष दूर कर दो ।

फिर दूधवाले वृक्ष—गूलर, पीपर, पाखर आदिके काढ़े से घाव पर तरड़े दो और सौ बार के धुले हुए घी में विषनाशक शीतल द्रव्य मिलाकर, उसे कपढ़े पर लगाकर, मल्हम की तरह, घाव पर रख दो । अगर किसी दुष्ट जन्तु के नख या कंटक आदि से कोई घाव हुआ हो, तो ऊपर लिखे हुए उपाय करो अथवा पित्तज विष में लिखे उपाय करो ।

तार्क्ष्यो अगद ।

पुंडेरिया, देवदारु, नागरमोथा, भूरिछरीला, कुटकी, थुनेर, सुगन्ध रोहिष तृण, गूगल, नागकेशर का वृक्ष, तालीसपत्र, सज्जी, केवटी मोथा, इलायची, सफेद सम्हालू, शैलज गन्धद्रव्य, कूट, तगर, फूलप्रियंगू, लोध, रसौत, पीला गेरू, चन्दन और सेंधानोन—इन सब दवाओं को महीन कूट-पीस और छान कर, "शहद" में मिला कर, गाय के सींग में भर कर, ऊपर से गाय के सींग का ढक्कन देकर, १५

दिन तक रख दो। इस को "तार्च्यागद" कहते हैं। और तो क्या, इस के सेवन से तक्षक साँप का काटा हुआ भी बच जाता है।

नोट—"अगद" ऐसी दवाओं को कहते हैं, जो कितनी ही यथोचित औषधियों के मेल से बनाई जाती हैं और जिन में विष नाश करने की सामर्थ्य होती है। हकीम लोग ऐसी दवाओं को "तिरयाक" कहते हैं

महा अगद ।

निशोथ, इन्द्रायण, मुलेठी, हल्दी, दारुहल्दी, मञ्जिष्ठवर्ग की सब दवाएँ, सेंधानोन, विरियासोंचर नोन, विड़नोन, समुद्र नोन, काला नोन, सोंठ, मिर्च और पीपर—इन सब दवाओं को एकत्र पीस कर और "शहद" में मिला कर, गाय के सींग में भरदो और ऊपर से गाय के सींग का ही ढक्कन लगा कर बन्द कर दो। १५ दिन तक इसे न छेड़ो। इस के बाद काम में लाओ। इसे "महाऽगद" कहते हैं। इस दवा को घी, दूध या शहद प्रभृति में मिलाकर पिलाने, आँजने, काटे हुए स्थान पर लगाने और नस्य देने से अत्यन्त उग्रवीर्य सर्पों का विष, दुर्निवार विष और सब तरह के विष नष्ट हो जाते हैं। यह बड़ी उत्तम दवा है। गृहस्थ और वैद्य सभी को इसे बना कर रखना चाहिये, क्योंकि समय पर यह प्राणरक्षा करती है।

नोट—बंगसेन, चक्रदत्त और वृन्द प्रभृति कितने ही आचार्य्यों ने इसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की है। प्राचीन काल के वैद्य ऐसी-ऐसी दवाएं तैयार रखते थे और उन्हीं के बल से धन और यश उपार्जन करते थे।

दशाङ्ग धूप ।

बेल के फूल, बेल की छाल, बालछड़, फूलप्रियंगू, नागकेशर, सिरस, तगर, कूट, हरताल और मैनसिल—इन सब दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, सिल पर रख, पानी के साथ खूब महीन पीसो और साँप के काटे हुए आदमी के शरीर पर मलो। इसके लगाने या

मालिश करने से अत्यन्त तेज़ विष और गर विष नष्ट हो जाता है। इस धूप को शरीर में लगाकर कन्या के स्वयम्बर, देवासुर युद्ध-समान युद्ध और राजदर्बार में जाने से विजय-लक्ष्मी प्राप्त होती है; अर्थात् फतह होती है। जिस घर में यह धूप रहती है, उस घर में न कभी आग लगती है, न राक्षस-बाधा होती है और न उस घर के बच्चे ही मरते हैं।

अजित अगद।

वायबिडंग, पाठा, अजमोद, हींग, तगर, सोंठ, मिर्च, पीपर, हरड़, बहेड़ा, आमला, सेंधानोन, विरिया नोन, विड़नोन, समन्दर नोन, काला नोन और चीते की जड़ की छाल—इन सब को महीन पीस-छान कर, "शहद" में मिलाकर, गाय के सींग में भर कर, ऊपर से सींग का ही ढकना लगा दो और १५ दिन तक रक्खी रहने दो। जब काम पड़े, इसे काम में लाओ। इस के सेवन करनेसे स्थावर और जङ्गम सब तरह के विष नष्ट होते हैं।

नोट—जब इसे पिलाना, लगाना या आँजना हो, तब इसे घी, दूध या शहद में मिला लो।

चन्द्रोदय अगद।

चन्दन, मैनशिल, कूट, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागरमोथा, सरसों, बालछड़, इन्द्रजौ, केशर, गोरोचन, असवण, हींग, सुगन्धवाला, लामज्जकतृण, सोया और फूलप्रियंगू—इन सब को एकत्र पीस कर रख दो। इस दवा से सब तरह के विष नाश हो जाते हैं।

ऋषभागद।

जटामासी, हरेणु, त्रिफला, सहँजना, मँजीठ, मुलेठी, पद्माख,

बायविडंग, तालीस के पत्ते, नाकुली, इलायची, तज, तेजपात, चन्दन, भारङ्गी, पटोल, किणही, पाठा, इन्द्रायण का फल, गूगल, निशोथ, अशोक, सुपारी, तुलसी की मञ्जरी और भिलावे के फूल—इन सब दवाओं को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इस में सूअर, गोह, मोर, शेर, बिलाव, साबर और न्यौला—इन के "पित्ते" मिला दो। शेष में "शहद" मिला कर, गाय के सींग में भर कर, सींग से ही बन्द करके १५ दिन रक्खी रहने दो। इस के बाद काम में लाओ।

जिस घर में यह अगद होती है, वहाँ कैसे भी भयङ्कर नाग नहीं रह सकते। फिर; बिच्छू वगैरः की तो ताक़त ही क्या, जो घर में रहें। अगर इस दवा को नगाड़े पर लेप करके, साँप के काटे आदमी के सामने उस को बजावें, तो विष नष्ट हो जायगा। अगर इसे ध्वजा-पताकाओं पर लेप कर दें, तो साँप के काटे आदमी उन की हवा-मात्र शरीर में लगने या उन के देखने सेही आराम हो जायँगे।

अमृत घृत ।

चिरचिरे के बीज, सिरस के बीज, मेदा, महामेदा और मकोय—इन को गोमूत्र के साथ महीन पीसकर कल्क या लुगदी बना लो। इस घी से सब तरह के विष नष्ट होते और मरता हुआ भी जी जाता है।

नोट—कल्क के वजन से चौगुना गाय का घी और घी से चौगुना गोमूत्र लेना। फिर सब को चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्नि से घी पका लेना।

नागदन्त्याद्य घृत ।

नागदन्ती, निशोथ, दन्ती और थूहर का दूध—प्रत्येक चार चार तोले, गोमूत्र २५६ तोले और उत्तम गोघृत ६४ तोले,—सब को मिला कर चूल्हे पर चढ़ा दो और मन्दाग्नि से घी पकालो। जब गोमूत्र

आदि जल कर घी मात्र रह जाय उतार लो। इस घी से साँप, बिच्छू और कीड़ों के विष नाश होते हैं।

तण्डुलीय घृत।

चौलाई की जड़ और घर का धूआँ, दोनों समान-समान लेकर पीस लो। फिर इनके वज़न से चौगुना घी और घी से चौगुना दूध मिला कर, घी पकाने की विधि से घी पका लो। इस घी से समस्त विष नाश हो जाते हैं।

मृत्युपाशापह घृत।

लोध, हरड़, कूट, हुलहुल, कमल की डण्डी, बेंत की जड़, सींगिया विष (शुद्ध), तुलसी के पत्ते, पुनर्नवा, मँजीठ, जवासा, शतावर, सिंघाड़े, लजवन्ती और कमल-केशर—इन को बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। फिर सिल पर रख, पानी के साथ पीस कल्क या लुगदी बना लो।

फिर कल्क के वज़न से चौगुना उत्तम गोघृत और घी से चौगुना गाय का दूध लेकर, कल्क, घी और दूध को मिला कर कड़ाही में रक्खो और चूल्हे पर चढ़ा दो। नीचे से मन्दी-मन्दी आग लगने दो। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो। घी को छान कर रख दो। जब वह आप ही शीतल हो जाय, घी के बराबर "शहद" मिला दो और बर्तन में भर कर रख दो।

इस घी को मालिश करने, अंजन लगाने, पिचकारी देने, नस्य देने, भोजन में खिलाने और बिना भोजन पिलाने से सब तरह के अत्यन्त दुस्तर स्थावर और जङ्गम विष नष्ट हो जाते हैं। सब तरह के कृत्रिम गरविष भी इस से दूर होते हैं। बहुत कहने से क्या, इस घी के छूने मात्र से विष नष्ट हो जाते हैं। साँप का विष, कीट, चूहा, मकड़ी और अन्य ज़हरीले जानवरों का विष इस से निश्चय ही नष्ट हो जाता है। यह घी यथानाम तथा गुण है। सचमुच ही मृत्यु-पाश से मनुष्य को छुड़ा लेता है।

सर्प-विष की सामान्य-चिकित्सा

उधर हमने तीनों क़िस्म के साँपों की वेगानुरूप, दोषानुरूप और उपद्रवानुसार अलग-अलग चिकित्साएँ लिखी हैं। उन चिकित्साओं के लिये सर्पों की क़िस्म जानने, उनके वेग पहचानने और दोषों के विकार समझने की ज़रूरत होती है। ऐसी चिकित्सा वेही कर सकते हैं, जिन्हें इन सब बातों का पूरा ज्ञान हो; अतः नीचे हम ऐसे नुसख़े लिखते हैं, जिनसे गँवार आदमी भी सब तरह के साँपों के काटे आदमियोंकी जान बचा सकता है। जिनसे उतना परिश्रम न हो, जो उतना ज्ञान सम्पादन न कर सकें, वे कम-से-कम नीचे लिखे नुसख़ों से काम लें। जगदीश अवश्य प्राणरक्षा करेंगे।

सर्प-विष नाशक नुसखे

(१) घी, शहद, मक्खन, पीपर, अदरख, कालीमिर्च और सेंधा-नोन—इन सातों चीज़ों में जो पीसने लायक़ हों, उन्हें पीस-छान लो। फिर सब को मिला कर, साँपके काटे हुए को पिलाओ। इस नुसख़े के सेवन करने से क्रोध में भरे तक्षक-साँप का काटा हुआ भी आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२) चौलाई की जड़, चाँवलों के पानी के साथ, पीस कर पीने से मनुष्य तत्काल निर्विष होता है; यानी उस पर ज़हर का असर नहीं रहता ।

(३) काकादिनी अर्थात् कुलिका की जड़ की नास लेने से काल का काटा हुआ भी आराम हो जाता है ।

(४) जमालगोटे की मींगियों को नीम की पत्तियों के रस की २१ भावना दो । इन भावना दी हुई मींगियों को, आदमी की लार में घिस कर, आँखों में आँजो । इन के आँजने से साँप का विष नष्ट हो जाता और मरता हुआ मनुष्य भी जी जाता है ।

(५) नीबू के रस में जमालगोटे को घिस कर आँखों में आँजने से साँप का काटा आदमी आराम हो जाता है ।

नोट—इलाजुल गुर्बा में लिखा है—कालीमिर्च सात माशे और जमालगोटे की गिरी सात माशे,—इन दोनों को तीन कागज़ी नीबुओं के रसमें घोट कर, काली-मिर्च-समान गोलियाँ बना लो । इनमें से एक या दो गोली पत्थर पर रख, पानी के साथ पीस लो और साँप के काटे हुए आदमी की आँखों में आँजो और इन्हीं में से २।३ गोलियाँ खिला भी दो । अवश्य आराम होगा ।

(६) अकेले जमालगोटे को "घी" में पीस कर, शीतल जलके साथ, पीने से साँप का काटा हुआ आराम हो जाता है ।

"वैद्यसर्वस्व" में लिखा है:—

किमत्र बहुनोक्तेन जैपालनं नैव तत्क्षणाम् ।
घृतं शीताम्बुना श्रेष्ठं भंजनं सर्पदंशके ॥

बहुत बकवाद से क्या लाभ ? केवल जमालगोटे को घी में पीस कर, शीतल जल के साथ, पीने से साँप का काटा हुआ तत्काल आराम हो जाता है ।

नोट—जमालगोटे को पानी में पीस कर, बिच्छू के काटे स्थान पर लेप करने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है ।

"मुजर्रबात अकबरी" में लिखा है—अगर सांप का काटा आदमी बेहोश हो, तो उस के पेट पर—नाभि के ऊपर—इस तरह उस्तरा लगाओ कि चमड़ा छिल जाय, पर खून न निकले । फिर उस जगह पर, जमालगोटा पानी में पीस कर

लगा दो। इस के लगाने से कय या वमन शुरू होंगी और साँप का काटा आदमी होश में आजायगा। होश में आते ही और उपाय करो।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा हैः—साँप के काटे हुए को दो या तीन जमालगोटे छील कर खिलाओ। साथ ही छिला हुआ जमालगोटा, एक मूँग के बराबर पीस कर, रोगी की आँखों में आँजो। जमालगोटा खिला कर, जहाँ साँपने काटा हो उस जगह सींगी की तरह खूब चूसो, ताकि शरीर में ज़हर का असर न हो। हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा उपाय लिखते हैं।

जमालगोटे का सेवन अनेक हकीम-वैद्यों ने इस मौके पर अच्छा बताया है। यद्यपि हमने परीक्षा नहीं की है, तथापि हमें इस के अक्सीर होने में सन्देह नहीं।

(७) दो या तीन जमालगोटे की मींगियों की गिरी और एक तोले जंगली तोरई—इन दोनों को पानी के साथ पीस कर और पानी में ही घोल कर पिला देने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

नोट—दन्तीके बीजों को जमालगोटा कहते हैं। ये अरराडी के बीज जैसे होते हैं। इनके बीच में जीभी सी होती है, उसी से कय होती हैं। मींगियों में तेल होता है। वैद्यलोग जमालगोटे की चिकनाई दूर कर देते हैं, तब वह शुद्ध और खाने योग्य हो जाता है। दवा के काम में बीज ही लिये जाते हैं। जमालगोटा कोठे को हानि-कारक है, इसीसे हकीम लोग इसके देने को मनाही करते हैं। घी, दूध, माठा या केवल घी पीने से इसका दर्प नाश होता है। इसकी मात्रा १ चाँवल की है। जमाल-गोटा कफ नाशक, तीक्ष्ण, गरम और दस्तावर है। जमालगोटे के शोधने की विधि हमने इसी भाग में लिखी है।

(८) बड़ के अङ्कुर, मँजीठ, जीवक, ऋषभक, मिश्री और कुम्भेर-इन को पानी में पीस कर, पीने से मण्डली सर्प का विष शान्त हो जाता है।

(९) रेणुका, कुट, तगर, त्रिकुटा, मुलेठी, अतीस, घर का धूआँ और शहद—इन सब को मिला कर और पीस कर पीने से साँप का विष नाश हो जाता है।

(१०) बालछड़, चन्दन, सेंधानोन, पीपर, मुलेठी, कालीमिर्च, कमल और गाय का पित्ता—इन सबको एकत्र पीस कर, आँखों में आँजने से विष-प्रभाव से मूर्च्छित या बेहोश हुआ मनुष्य भी होश में आ जाता है।

(११) करंज के बीज, त्रिकुटा, बेलवृक्ष की जड, हल्दी, दारुहल्दी, तुलसी के पत्ते और बकरी का मूत्र—इन सब को एकत्र पीस कर, नेत्रों में आँजने से, विष से बेहोश हुआ मनुष्य होश में आ जाता है।

(१२) सेंधानोन, चिरचिरे के बीज और सिरस के बीज,—इन सब को मिलाकर और पानी के साथ सिल पर पीसकर कल्क या लुगदी बना लो। इस लुगदी को नस्य देने या सुँघाने से विष के कारण से मूर्च्छित हुआ मनुष्य होश में आ जाता है।

(१३) इन्द्रजौ और पाढ़ के बीजों को पीस कर नस्य देने या सुंघाने या नाक में चढ़ाने से बेहोश हुआ मनुष्य चैतन्य हो जाता है।

नोट—नस्यके सम्बन्धमें हमने चिकित्सा चन्द्रोदय, दूसरे भागके पृष्ठ २६७-२७२ में विस्तार से लिखा है। उसे अवश्य पढ़ लेना चाहिये।

(१४) सिरस की छाल, नीम की छाल, करंज की छाल और तोरई—इन को एकत्र, गायके मूत्र में, पीस कर प्रयोग करने से स्थावर और जंगम—दोनों तरह के विष शान्त हो जाते हैं।

नोट—मुख्यतया विष दो प्रकार के होते हैं ;—(१) स्थावर, और (२) जंगम। जो विष जमीन की खानों और वनस्पतियों से पैदा होते हैं, उन्हें स्थावर विष कहते हैं। जसे, संखिया और हरताल वगैरः तथा कुचला, सींगीमोहरा, कनेर और धतूरा प्रभृति। जो विष साँप, बिच्छू, मकड़ी, कनखजूरे प्रभृति चलने फिरने वाले जन्तुओं में होते हैं, उन्हें जंगम विष कहते हैं।

(१५) दाख, असगन्ध, गेरू, सफेद कोयल, तुलसी के पत्ते, कैथ के पत्ते, बेल के पत्ते और अनार के पत्ते—इन सबको एकत्र पीस कर और "शहद" में मिलाकर सेवन करने से "मण्डली" सर्पों का विष नष्ट हो जाता है।

नोट—यह खाने की दवा है। सर्प-विष पर, खासकर मण्डली सर्प के विष पर, अत्युत्तम है। इसमें जो "सफेद कोयल" लिखी है, वह स्वयं सर्प-विष नाशक है। कोयल दो तरह की होती हैं—(१) नीली, और (२) सफेद। हिन्दी में सफेद कोयल और नीली कोयल कहते हैं। संस्कृत में अपराजिता, नील अपराजिता और वि-

व्याक्रान्ता आदि कहते हैं। बँगला में हापरमाली, अपराजिता या नील अपराजिता कहते हैं। मरहटी में गोकर्ण और गुजराती में धोली गरणी कहते हैं। इसके सम्बन्ध में निघण्टु में लिखा है;—

आमं पित्तरुजं चैव शोथं जन्तून्व्रणं कफम्।
ग्रहपीडा शीर्षरोगं विषं सर्पस्य नाशयेत॥

सफेद कोयल—आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, घाव, कफ, ग्रहपीड़ा, मस्तकरोग और साँपके विष को नाश करती है।

(१६) सिरस के पत्तों के रस में सफेद मिर्चों को पीस कर मिला दो और मसलकर सुखा लो। इस तरह सात दिनमें सात बार करो। जब यह काम कर चुको; तब उसे रख दो। साँप के काटे हुए आदमी को इस दवा के पिलाने, इसकी नस्य देने और इसी को आँखों में आँजने से निश्चय ही बड़ा उपकार होता है। परीक्षित है।

नोट—केवल सिरस के पत्तों को पीस कर, साँप के काटे स्थान पर लेप करने से साँप का जहर उतर जाता है। इसको हिन्दी में सिरस, बँगला में शिरीष गाछ, मरहटी में शिरसी और गुजराती में सरसडियो और फारसी में दरख्ते जकरिया कहते हैं। निघण्टु में लिखा है;—

शिरीषो मधुरोऽनुष्णास्तिक्तश्च तुवरो लघु।
दोषशोथ विसर्पघ्नः कासव्रण विषापहः॥

सिरस मधुर, गरम नहीं, कड़वा, कसैला और हल्का है। यह दोष, सूजन, विसर्प, खाँसी, घाव और जहर को नाश करता है।

(१७) बाँझ-ककोड़े की जड़ को बकरी के मूत्र की भावना दो। फिर इसे काँजी में पीस कर, साँप के काटे हुए को इस की नस्य दो। इस नस्य से साँप का विष दूर हो जाता है।

नोट—बाँझ ककोड़े की गाँठ पानी में घिस कर पिलाने और काटे हुए स्थान पर लगाने से साँप, बिच्छू, चूहा और बिल्ली का जहर उतर जाता है। परीक्षित है।

(१८) घर का धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और चौलाई की जड़—इन

चारों को एकत्र पीस कर, दही और घी में मिला कर, पीने से वासुकि साँप का काटा हुआ भी आराम हो जाता है।

(१९) लिहसौड़ा, कायफल, बिजौरा नीबू, सफेद कोयल, सफेद पुनर्नवा और चौलाई की जड़—इन सब को एकत्र पीस लो। इस दवा के सेवन करने से दर्वीकर और राजिल जाति के साँपों का विष नष्ट हो जाता है। यह बड़ी उत्तम दवा है।

(२०) सम्हालू की जड़ के स्वरस में, निर्गुण्डी की भावना देकर पीने से सर्प-विष उतर जाता है।

(२१) सेंधानोन, कालीमिर्च और नीम के बीज—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर, एकत्र पीस कर, फिर शहद और घी में मिला कर, सेवन करने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष नष्ट हो जाते हैं।

(२२) चार तोले कालीमिर्च और एक तोले चाँगेरी का रस—इन दोनों को एकत्र करके और घी में मिला कर पीने और लेप करने से साँप का उग्र विष भी शान्त हो जाता है।

नोट—चाँगेरी को हिन्दी में चूका, बङ्गलामें चूकापालङ, मरहटी में आंबटचुका और फारसी में तुरशक कहते हैं। यह बड़ा खट्टा स्वादिष्ट शाक है। इसके प्रतिनिधि जरश्क और अनार हैं।

(२३) वंगसेन में लिखा है, मनुष्य का मूत्र पीने से घोर सर्प-विष नष्ट हो जाता है।

(२४) परवल की जड़ की नस्य देने से कालरूपी सर्प का डसा हुआ भी बच जाता है।

नोट—इस नुसखे को वृन्द और वङ्गसेन दोनों ने लिखा है।

(२५) पिण्डी तगर को, पुष्य नक्षत्र में, उखाड़ कर, नेत्रों में लगाने से साँप का काटा हुआ आदमी मर कर भी बच जाता है। इस में आश्चर्य की कोई बात नहीं है।

नोट—तगर दो तरह की होती है :—(१) तगर, और (२) पिण्डी तगर। पिण्डी

तगर को नन्दी तगर भी कहते हैं। दोनों तगर गुण में समान हैं। पिण्डी तगर के वृक्ष हिमालय प्रभृति उत्तरीय पर्वतों पर बहुत होते हैं। वृक्ष बड़ा होता है, पत्ते कनेर से लम्बे-लम्बे और फूल छोटे-छोटे, पीले रङ्ग के पाँच पंखड़ीवाले होते हैं। यद्यपि दोनों ही तगर विष नाशक होती हैं, पर-सर्प विष के लिए पिण्डी तगर विशेष गुणकारी है। बँगला में तगर पादुका, गुजराती और मरहटी में पिण्डीतगर और लैटिन में गारडिनियाफ्लोरिबण्डा कहते हैं।

(२६) बाग़ की कपास के पत्तों का चार या पाँच तोले स्वरस साँप के काटे आदमी को पिलाने और उसी को काटे स्थान पर लगाने से ज़हर नष्ट हो जाता है। अगर यही स्वरस पिचकारी द्वारा शरीर के भीतर भी पहुँचाया जाय, तो और भी अच्छा। एक विश्वासी मित्र इसे अपना परीक्षित नुसख़ा बताते हैं। हमें उनकी बात में ज़रा भी शक नहीं।

नोट—कपास के पत्ते और राई—दोनों को एकत्र पीस कर, बिच्छू के काटे-स्थान पर लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। रविवार के दिन खोद कर लाई हुई कपास की जड़ चबाने से भी बिच्छू का जहर उतर जाता है।

(२७) सफ़ेद कनेर के सूखे हुए फूल ६ माशे, कड़वी तम्बाकू ६ माशे और इलायची के बीज २ माशे,—इन तीनों को महीन पीस कर कपड़े में छान लो। इस नस्य को शीशी में रख दो। इस नस्य को सुँघनी तमाखू की तरह सूँघने से साँप का विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(२८) साँप के काटे आदमी को नीमके, ख़ासकर कड़वे नीम के, पत्ते और नमक अथवा कड़वे नीमके पत्ते और काली मिर्च ख़ूब चबवाओ। जबतक ज़हर न उतरे, इनको बराबर चबवाते रहो। जब तक ज़हर न उतरेगा, तब तक इनका स्वाद साँपके काटे हुए को मालूम न होगा, पर ज्योंही ज़हर नष्ट हो जायगा, इनका स्वाद उसे मालूम देने लगेगा। साँपने काटा है या नहीं काटा है, इसकी परीक्षा करने का यही सर्वोत्तम उपाय है। दिहातवालों को जब सन्देह होता है, तब वह नीमके पत्ते चबवाते हैं। अगर ये कड़वे लगते हैं, तब तो समझा जाता है कि

साँपने नहीं काटा, ख़ाली वहम है। अगर कड़वे नहीं लगते, तब निश्चय हो जाता है कि, साँपने काटा है। इन पत्तों से कोरी परीक्षा ही नहीं होती, पर रोगी का विष भी नष्ट होता है। साँपके काटे पर कड़वे नीम के पत्ते रामवाण दवा है। यद्यपि नीमके पत्तों से सभी साँपों के काटे हुए मनुष्य आराम नहीं हो जाते, पर इसमें शक नहीं कि, अनेक आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—नीम के पत्तों का या छाल का रस वारम्वार पिलाने से भी साँपका जहर उतर जाता है। अगर आप यह चाहते हैं, कि साँप का जहर हम पर असर न करे, तो आप नित्य—सवेरे ही—कड़वे नीम के पत्ते सदा चबाया करें।

(२६) सेंधानोन १ भाग, काली मिर्च १ भाग और कड़वे नीमके फल २ भाग,—इन तीनों को पीस कर शहद या घी के साथ खिलाने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष उतर जाते हैं।

(३०) साँपके काटे आदमी को बहुत सा लहसन, प्याज़ और राई खिलाओ। अगर कुछ भी न हो, तो यह घरेलू दवा बड़ी अच्छी है।

नोट—राई से साँप बहुत डरता है। अगर आप साँप की राह में राई के दाने फैला दें, तो वह उस राह से न निकलेगा। अगर आप राई को नौसादर और पानी में घोल कर साँप के विल या बाँबी में डाल दें तो वह बिल छोड़ कर भाग जायगा।

(३१) हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है :—अगर साँपका काटा हुआ वेहोश हो, पर मरा न हो, तो "कुचला" पानी में पीस कर उसके गले में डालो और थोड़ा सा कुचला पीसकर उसकी गर्दन और शरीर पर मलो ; इन उपायों से वह अवश्य होश में आ जायगा।

(३२) एक हकीमी पुस्तक में लिखा है, मदार की तीन कोंपलें गुड़ में लपेट कर खिलाने से साँप का काटा आराम हो जाता है; पर मदार की कोंपलें खिलाकर, ऊपर से घी पिलाना परमावश्यक है।

(३३) मदार की चार कली, सात काली मिर्च और एक माशे इन्द्रायण—इन तीनों को पीसकर खिलाने से साँपका काटा आराम हो जाता है।

(३४) साँपके काटे को मदार की जड़ पीस-पीस कर पिलाने से साँपका ज़हर उतर जाता है

नोट—कोई-कोई मदार की जड़ और मदार की रूई—दोनों ही पीसकर पिलाते हैं। हाँ, अगर यह दवा पिलाई जाय, तो साथ-साथ ही साँपके काटे हुए स्थान पर मदार का दूध टपकाते भी रहो। जबतक टपकाया हुआ दूध न सूखे, दूध टपकाना बन्द मत करो। जब ज़हर का असर न रहेगा या ज़हर उतर जायगा; टपकाया हुआ मदार का दूध सूखने लगेगा।

(३५) गायका घी ४० माशे और लाहौरी नमक ८ माशे—दोनों को मिलाकर खाने से साँप का ज़हर एवं अन्य विष उतर जाते हैं।

(३६) थोड़ा सा कुचला और काली मिर्च पीसकर खाने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(३७) काली मिर्च और जमालगोटे की गरी सात-सात माशे लेकर, तीन कागज़ी नीबुओं के रस में खरल करके, मिर्च-समान गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को पानी में पीस कर आँजने और दो तीन गोली खिलाने से साँप का काटा आदमी निश्चय ही आराम हो जाता है।

(३८) कसौंदी के बीज महीन पीसकर आँखों में आँजने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(३९) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है, एक खटमल निगल जाने से साँपका ज़हर उतर जाता है।

(४०) तेलिया सुहागा २० माशे भूनकर और तेल में मिलाकर पिला देने से साँप का काटा आदमी आराम हो जाता है।

नोट—संखिया के साथ सुहागा पीस लेने से संखिया का विष मारा जाता है, इसीलिये विष खाये हुए आदमी को घी के साथ सुहागा पिलाते हैं। कहते हैं, सुहागा सब तरह के ज़हरों को नष्ट कर देता है।

(४१) चूहे का पेट फाड़कर साँपके काटे स्थान पर बाँध देने से ज़हर नष्ट हो जाता है। कहते हैं, यह ज़हर को सोख लेता है।

(४२) सिरस के पेड़की छाल, सिरस की जड़की छाल, सिरसके बीज और सिरस के फूल चारों,—पाँच-पाँच माशे लेकर महीन पीस लो। इसे एक-एक चम्मच गोमूत्र के साथ दिन में तीन वार पिलाने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

नोट—सिरस की छाल, जो पेड़ में ही काली हो जाती है, बड़ी गुणकारी होती है। सिरस की ८ माशे छाल, हर रोज, तीन दिन तक, साँठी चाँवलों के धोवन के साथ पीने से एक साल तक ज़हरीले जानवरों का विष असर नहीं करता। ऐसे मनुष्य को जो जानवर काटता है, वह खुद ही मर जाता है।

(४३) जामुन की अढ़ाई पत्ती पानी में पीसकर पिला देने से सर्प-विष उतर जाता है।

(४४) दो माशे ताज़ा कैंचुआ पानी में पीसकर पिला देने से सर्प-विष नष्ट हो जाता है।

(४५) साँप या बावले कुत्ते अथवा अन्य ज़हरीले जानवरों के काटे हुए स्थानों पर फौरन पेशाब कर देना बड़ा अच्छा उपाय है। वैद्य और हकीम सभी इस बातको लिखते हैं।

(४६) समन्दर फल महीन पीस कर, दोनों नेत्रों में आँजने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(४७) महुआ और कुचला पानी में पीसकर, काटे हुए स्थान पर इनका लेप करने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(४८) गगन-धूल पीस कर नाक में टपकाने से साँपका ज़हर उतर जाता है।

(४६) कसौंदी की जड़ ४ माशे और काली मिर्च २ माशे—पीस कर खाने से साँप का ज़हर उतर जाता है।

(५०) कमल को कूट पीस और पानी में छान कर पिलाने से क़य होतीं और सर्प-विष उतर जाता है।

(५१) सँभालू का फल और हींग के पेड़ की जड़—इन दोनों के सेवन करने से साँप का ज़हर नष्ट हो जाता है।

(५२) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, तुरन्त की तोड़ी हुई ताज़ा ककड़ी साँपके काटे पर अद्भुत फल दिखाती है ।

(५३) बकरी की मैंगनी सभी ज़हरीले जानवरों के काटने पर लाभदायक हैं ।

(५४) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, लागिया का दूध काले साँप के काटने पर ख़ूब गुण करता है ।

नोट—लागिया एक दुधारी ओषधि का दूध है । इसके पत्ते गोल और पीले तथा फूल भी पीला होता है । यह दूसरे दर्जे का गर्म और रूखा है तथा बलवान रेचक और अत्यन्त वमनप्रद है ; यानी इसके खाने से कय और दस्त बहुत होते हैं । कतीरा इसके दर्प को नाश करता है ।

(५५) नीबू के नौ माशे बीज खाने से समस्त जानवरों का विष उतर जाता है ।

(५६) कलिहारी की गाँठ को पानी में पीसकर नस्य लेने से साँप का ज़हर उतर जाता है ।

(५७) घर का धूआँ, हल्दी, दारुहल्दी और जड़ समेत चौलाई—इन सबको दही में पीस कर और घी मिलाकर पिलाने से साँप का ज़हर उतर जाता है । परीक्षित है ।

(५८) बड़ के अंकुर,मँजीठ, जीवक,ऋषभक, बला—खिरेंटी, गंभारी और मुलहटी,—इन सबको महीन पीस कर पीने से साँप का विष नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—इस नुसखे और नं० ८ नुसखे में यही भेद है,कि उस में बला और मुलहटी के स्थान में "मिश्री" है

(५९) पण्डित मुरलीधर शर्म्मा राजवैद्य अपनी पुस्तक में लिखते हैं, अगर बन्द बाँधने और चीरा देकर ख़ून निकालने से कुछ लाभ दीखे तो ख़ैर; नहीं तो "नागन बेल" की जड़ एक तोले लेकर, आधपाव पानी में पीस कर साँपके काटे हुए को पिला दो । इसके पिलाने से क़य होती हैं और विष नष्ट हो जाता है । अगर इतने पर भी कुछ ज़हर रहजाय

तो ६ माशे यही जड़ पानी के साथ पीस कर और आधपाव पानी में घोल कर फिर पिला दो। इससे फिर वमन होगी और जो कुछ विष बचा होगा, निकल जायगा। अगर एक दफा पिलाने से आराम न हो, तो कमोबेश मात्रा घण्टे-घण्टे में पिलानी चाहिये। इस जड़ी से साँप का काटा हुआ निस्सन्देह आराम हो जाता हैं। राजवैद्यजी लिखते हैं, हमने इस जड़ीको अनेक बार आज़माया और ठीक फल पाया। वह इसे कुत्ते के काटे और अफीम के विष पर भी आज़मा चुके हैं।

सूचना—दर्वीकर या फनवाले साँपके लिए इसकी मात्रा १ तोले की है। कम जहर वाले साँपों के लिये मात्रा घटा कर लेनी चाहिये। १ तोले जड़ को दश तोले पानी काफी होगा। जड़ी को पानी के साथ सिल पर पीस कर, पानी में घोल लेना चाहिये। अगर उम्र पूरी न हुई होगी, तो इस जड़ी के प्रभाव से हर तरह के साँप का काटा हुआ मनुष्य बच जायगा।

नोट—नागन बेल एक तरह की बेल होती है। इसकी जड़ बिल्कुल साँप के आकारकी होती है। यह स्वादमें बहुत ही कड़वी होती है। मालवे में इसे "नागन-बेल" कहते हैं और वहीं के पहाड़ों में यह पाई भी जाती है।

एक निघण्टु में "नागदस" नामकी दवा लिखी है। लिखा है—यह बिल्कुल साँपके समान लकडी है, जिसे हिन्दुस्तान के फ़कीर अपने पास रखते हैं। इसका स्वरूप काला और स्वाद कुछ कड़वा लिखा है। लिखा है—यह साँपके ज़हर को नष्ट करती है। हम नहीं कह सकते, नागन बेल और नागदस—दोनों एक ही चीज के नाम हैं या अलग-अलग। पहचान दोनों की एक ही मिलती है।

नागदमनी, जिसे नागदौन, या नागदमन कहते हैं, इन से अलग होती है। यद्यपि वह भी सर्प-विष, मकड़ी का विष एवं अन्य विष नाशक लिखी है। पर उसके वृक्ष तो अनन्नस के जैसे होते हैं। दवा के काम में नागनबेल की जड़ ली जाती है, पर नागदौन के पत्ते लिये जाते हैं।

नागनबेल के अभाव में सफेद पुनर्नवा से काम लेना बुरा नहीं है। इस से भी अनेक सर्प के काटे आदमी बच गये हैं, पर यह नागनबेल की तरह १०० में १०० को आराम नहीं कर सकता।

(६०) सफेद पुनर्नवा या विषखपरे की जड़ ६ माशे से १ तोले तक पानी में पीस और घोल कर पिलाने से और यही जड़ी हर समय मुँह

में रख कर चूसते रहने तथा इसी जड़ को पीस कर साँप के काटे स्थान पर लेप करने से अनेक रोगी बच जाते हैं ।

नोट—हिन्दी में सफेद पुनर्नवा, विषखपरा और साँठ कहते हैं। बङ्गला में श्वेतपुण्या कहते हैं । इसके सेवन से सूजन, पाण्डु, नेत्ररोग और विष-रोग प्रभृति अनेक रोग नाश होते हैं ।

(६१) आक के फूलों के सेवन करने से हलके ज़हर वाले साँपों का ज़हर नष्ट हो जाता है ।

(६२) अगर जल्दी में कुछ भी न मिले, तो एक तोले फिटकरी पीसकर साँप के काटे को फँकाओ और ऊपर से दूध पिलाओ । इस-से बड़ा उपकार होता है, क्योंकि खून फट जाता है और जल्दी ही सारे शरीर में नहीं फैलता ।

(६३) ज़हरमुहरे को गुलाब-जल के साथ पत्थर पर घिसो और एक दफा में कोई एक रत्ती बराबर साँप के काटे हुए को चटाओ । फिर इसी को काटे स्थान पर भी लगा दो । इसके चटाने से क़य होगी, जब क़यहो जाय, फिर चटाओ । इस तरह बारबार कय होते ही इसे चटाओ । जब इस के चटाने से क़य न हो, तब समझो कि अब ज़हर नहीं रहा ।

नोट—स्थावर और जंगम दोनों तरह के जहरों के नाश करने की सामर्थ्य जसी जहरमुहरे में है वैसी और कम चीजों में है । इसकी मात्रा २ रत्ती की है, पर एक बार में एक गेहूँ से जियादा न चटाना चाहिये । हाँ, क़य होने पर, इसे बारम्बार चटाना चाहिये । जहर नाश करने के लिये क़य और दस्तों का होना परमावश्यक है । इसके चटाने से खूब क़य होती हैं और पेट का सारा विष निकल आता है । जब पेट में जहर नहीं रहता, तब इसके चटाने से क़य नहीं होती ।

जहरमुहरे दो तरह के होते हैं:—(१) हैवानी, और (२) मादनी । हैवानी जहरमुहरा मैंडक वगैरः से निकाला जाता है और मादनी जहरमुहरा खानों में पाया जाता है । यह एक तरह का पत्थर है । इस का रंग ज़र्दी माइल सफेद होता है । नीम की पत्तियों और जहरमुहरे को एक साथ मिलाकर पीसो और फिर चक्खो । अगर नीमका कड़वापन जाता रहे, तो समझो कि जहरमुहरा असली है । वह पसा-रियों और अत्तारों के यहाँ मिलता है । खरीद कर परीक्षा अवश्य कर लो, जिस से समय पर धोखा न हो ।

सूचना—विष खानेवाले और हैजे वाले को जहरमुहरा बड़ी जल्दी आराम करता है। हैजा तो २।३ मात्रा में ही आराम हो जाता है। देने की तरकीब वही, जो ऊपर लिखी है।

(६४) साँप के काटे आदमी को, बिना देर किये, तीन चार माशे नौसादर महीन पीसकर और थोड़े से शीतल जल में घोलकर पिला दो। इसके साथ ही उसे तीन चार आदमी कसकर पकड़ लो और एक आदमी ऐमोनिया सुँघाओ। ईश्वर चाहेगा, तो रोगी फौरन ही आराम हो जायगा। कई मित्र इसे आज़मूदा कहते हैं।

नोट—ऐमोनिया अंगरेजी दवाखानों में तैयार मिलता है। लाकर घर में रख लेना चाहिये। इस से समय पर बड़े काम निकलते हैं। अभी इसी सालकी घटना है। हमारी ज्येष्ठा कन्या चपलादेवी का विवाह था। हमारे एक मित्र मय अपनी सहधर्म्मिणी के लखनौ से आये थे। फेरों के दिन, औरों के साथ, उनकी पत्नी ने भी निराहार व्रत किया। रातके बारह से ऊपर बज गये। सुना गया कि, वह बेहोश हो गई हैं। हमारे वह मित्र और उनके चचा घबरा रहे थे। रोगिणी का साँस बन्द हो गया, शरीर शीतल और लकड़ी हो गया। सब कहने लगे, यह तो खतम हो गईं। हमने कहा, घबराओ मत, हमारे बक्स में से अमुक शीशी निकाल लाओ। शीशी लाई गई, हमने काग खोलकर उनकी नाक के सामने रखी। कोई २ मिनट बाद ही रोगिणी हिली और उठकर बैठ गई। कहाँ तो शरीर की सुध ही नहीं थी; लाज शर्म का खयाल नहीं था; कहाँ दवाका असर पहुँचते ही उठ कर कपड़े ठीक कर लिये। सब कोई आश्चर्य्य में डूब गये। हमने कहा—"आश्चर्य्य की कोई बात नहीं है। "ऐमोनिया" ऐसी ही प्रभावशाली चीज़ है।

कई बार हमने इस से भूतनी लगी हुई ऐसी औरतें आराम की हैं, जिन्हें अनेक स्याने भोंपे और ओझे आराम न कर सके थे। दाँत-डाढ़के दर्द और सिर की भयानक पीड़ा में भी इस के सुँघाने से फौरन शान्ति मिलती है।

अगर समय पर ऐमोनिया न हो, तो आप ६ माशे नौसादर और ६ माशे पान में खाने का चूना—दोनों को मिलाकर एक अच्छी शीशी या कपड़े की पोटली में रखलें और सुँघावें, फौरन चमत्कार दीखेगा। यह भी ऐमोनिया ही है, क्योंकि ऐमोनिया बनता इन्हीं दो चीज़ों से है। फर्क़ इतना ही, कि घर का ऐमोनिया समय पर काम तो उतना ही देता है, पर विलायत वाले की तरह टिकता नहीं। बहुत से आदमी हथेली में पिसा हुआ चूना और नौसादर बराबर-बराबर

लेकर, ज़रासे पानी के साथ हथेलियों में ही रगड़ कर सुँघाते हैं। इस की तैयारी में पाँच मिनट से अधिक नहीं लगते।

(६५) सूखी तमाखू थोड़ी सी पानी में भिगोदो, कुछ देर बाद उसे मलकर साँप के काटे हुए को पिलाओ। इस तरह कई बार पिलाने से साँप का काटा हुआ बच जाता है।

नोट—कहते हैं, ऊपर की विधि से तमाखू भिगोकर और २ घण्टे बाद उसका रस निचोड़कर, उस रस को हाथों में खब लपेट कर, मनुष्य साँपको पकड़ सकता है। अगर यही रस साँप के मुँह में लगा दिया जाय, तो उसकी काटने की शक्ति ही नष्ट हो जाय।

(६६) नीलाथोथा महीन पीस कर और पानी में घोलकर पिलाने से भी साँप का काटा बच जाता है।

(६७) आम की गुठली के भीतर की बिजली को पीस कर, साँपके काटे हुए को फँका दो और ऊपर से गरम पानी पिला दो। इस दवा से क़य होगी। क़य होने से ही विष नष्ट हो जायगा। जब क़य होना बन्द हो जाय, दवा पिलाना बन्द कर दो। जब तक क़य होती रहें, इस दवा को बारम्बार फँकाओ। एक बार फँकाने से ही आराम नहीं हो जायगा। एक मित्र का परीक्षित योग है।

(६८) बानरी घास का रस निकाल कर साँप के काटे हुए आदमी को पिलाओ। इसी रस को उसके नाक और कानों में डालो तथा इसी को साँप के काटे हुए स्थान पर लगाओ। इस तरह करने से साँप का ज़हर फौरन उतर जाता है।

नोट—यह नुसख़ा हमें "वैद्यकल्पतरु" में मिला है। लेखक महोदय इसे अपना परीक्षित कहते हैं। बानरी घास को बँदरिया या कुत्ता घास कहते हैं। इसका पौधा काँगनी के जैसा होता है, और कांगनी के समान ही बाल लगती हैं। यह कपड़ा छूते ही चिपट जाती है और वर्षाकाल में ही पैदा होती है, अतः इस घास का रस निकाल कर शीशी में रख लेना चाहिये।

(६९) "वृन्दवैद्यक" में लिखा है,—लोग कहते हैं, जिसे साँप काटे वह अगर उसी समय उसी साँप को पकड़ कर काट खाय अथवा तत्काल

मिट्टी के ढेले को काट खाय तो साँप का ज़हर नहीं चढ़ता।" किसी-किसी ने उसी समय दाँतों से लोहे को काट लेना यानी दबा लेना भी अच्छा लिखा है।

नोट—सर्प के काटते ही, सर्पको पकड़ कर काट खाना सहज काम नहीं। इस के लिये बड़े साहस और हिम्मत की दरकार है। यह काम सब किसी से हो नहीं सकता। हाँ, जिसे कोई महा भयंकर साँप काट ले, वह यदि यह समझकर कि मैं बचूँगा तो नहीं, फिर इस साँप को पकड़ कर काट लेने से और क्या हानि होगी—हिम्मत करे तो साँप को दाँतों से काट सकता है।

यहाँ यह सवाल पैदा होता है, कि साँपको काटनेसे मनुष्य किस तरह बच सकता है? सुनिये, हमारे ऋषि-मुनियों ने जो कुछ लिखा है, वह उनका परीक्षा किया हुआ है—गंजेड़ियों की सी थोथी बातें नहीं। बात इतनी ही है, कि उन्होंने अपनी लिखी बातें अनेक स्थलों में खूब खुलासा नहीं लिखीं; जो कुछ लिखा है, संक्षेपमें लिख दिया है। मालूम होता है, साँप के खून में विष विनाशक शक्ति है। जो मनुष्य दाँतोंसे साँप को काटेगा, उसके मुख में कुछ न कुछ खून अवश्य जायगा। खून भीतर पहुँचते ही विषके प्रभावको नष्ट कर देगा। आजकल के डाक्टर परीक्षा करके लिखते हैं, कि साँप के काटे स्थान पर साँपके खूनके पछने लगाने से साँप का विष उतर जाता है। बस, यही बात वह भी है। इस तरह भी साँपका खून विषको नष्ट करता है और उस तरह भी। उसी साँपको काटने की बात ऋषियों ने इस लिये लिखी है कि, जैसा जहरी साँप काटेगा, उस साँप के खून में वैसे जहर को नाश करने की शक्ति भी होगी। दूसरे साँप के खून में विष नाशक शक्ति तो होगी, पर कदाचित वैसी न हो। पर साँप को काट खाना,—है बड़ भारी कलेजे का काम। अनेक बार देखा है, जब साँप और नौलेकी लड़ाई होती है, तब साँप भी नौले पर अपना वार करता है और उसे काट खाता है; पर चूँकि नौला साँप से नहीं डरता, इसलिये वह भी उस पर दाँत मारता है; इस तरह साँप का खून, नौले के शरीर में जाकर, साँपके विष को नष्ट कर देता होगा। मतलब यह, कि ऋषियों की साँप को काट खाने की बात फिजूल नहीं।

हाँ, साँप के काटते ही, मिट्टी के ढेले को काट खाना या लोहे को दाँतों से दबा लेना कुछ मुश्किल नहीं। इसे हर कोई कर सकता है। अगर, परमात्मा न करे, ऐसा मौका आ जाय, साँप काट खाय, तो मिट्टी के ढेले या लोहे को काटने से न चूकना चाहिये।

(७०) कालीमिर्चों के साथ गरम-गरम घी पीने से साँपका ज़हर उतर जाता है।

नोट—अगर समय पर और कुछ उपाय जल्दी में न हो सके, तो इस उपाय में तो न चूकना चाहिये। यह उपाय मामूली नहीं, बड़ा अच्छा है और ये दोनों चीजें हर समय गृहस्थ के घर में मौजूद रहती हैं।

(७१)शून्यताका ध्यान करनेसे भी साँपका ज़हर शून्यभावको प्राप्त होता है; यानी ज़रा भी नहीं चढ़ता। यद्यपि इस बात की सचाई में ज़रा भी शक नहीं, पर ऐसा ध्यान—ध्यानके अभ्यासी के सिवा—हर किसी से हो नहीं सकता।

(७२) बाँयें हाथ की अनामिका अँगुली द्वारा कानके मैलका लेप करने से भयङ्कर विष नष्ट हो जाता है। चक्रदत्त ने लिखा है:—

श्लेष्मणः कर्णगूथस्य वामानामिकया कृतः।
लेपो हन्याद्विषं घोरं नृमूत्रासेचनंतथा॥

बाँयें हाथ की अनामिका अँगुली द्वारा कानके मैलका लेप करने और आदमी का पेशाब सींचने से साँप का घोर विष भी नष्ट हो जाता है।

नोट—कान के मैलका लेप करनेकी बात तो नहीं जानते, पर यह बात प्रसिद्ध है कि, साँप वगैरः के काटते ही अगर मनुष्य काटी हुई जगह पर तत्काल पेशाब करदे, तो घोर विष से भी बच जाय। हाँ, एक बात और है,—

वंगसेन में लिखा है:—

श्लेष्मणः कर्णरूढस्य वामानासिक या कृतः।
नृमूत्रं सेवितं घोरं लेपं हन्याद्विषं तथा॥

कानके मैल को नाक की बायीं ओर(?) लेप करने से और मनुष्यका पेशाब सेवन करने से घोर विष नष्ट हो जाता है।

(७३) सिरस के पत्तों के स्वरस में, सहँजने के बीजों को, सात दिन तक भावना देने से साँपके काटेकी उत्तम दवा तैयार हो जाती है। यह दवा नस्य, पान और अञ्जन तीनों कामों में आती है। वृन्द की लिखी हुई इस दवा के उत्तम होने में ज़रा भी शक नहीं।

नोट—सिरसके पत्ते लाकर सिलपर पीस लो और कपड़े में निचोड़ कर स्वरस निकाल लो। फिर इस रसमें सहँजनेके बीजोंको भिगो दो और सुखा लो। इस तरह सात दिन तक नित्य ताजा सिरसके पत्तोंका रस निकाल-निकालकर बीजोंको भिगोओ और सुखाओ। आठवें दिन उठाकर शीशोमें रख लो। इस दवाको पीसकर नाक में सुँघाने या फुँकनीसे चढ़ाने, आँखोंमें आँजने और इसीको पानी में घोलकर पिलाने से साँपका जहर निश्चय ही नष्ट हो जाता है। वैद्यों और गृहस्थों को यह दवा घरमें तैयार रखनी चाहिये, क्योंकि समय पर यह बन नहीं सकती।

(७४) करंजुवे के फल, सोंठ, मिर्च, पीपर, बेल की जड़, हल्दी, दारुहल्दी और सुरसा के फूल,—इन सबको बकरी के मूत्र में पीसकर, आँखों में आँजने से, सर्प-विष से बेहोश हुआ मनुष्य होश में आ जाता है। वृन्द।

(७५) आक के पत्ते में जो सफेदी सी होती है, उसे नाखूनों से खुर्च-खुर्च कर एक जगह जमा कर लो। फिर उसमें आक के पत्तों का दूध मिलाकर घोट लो और चने-समान गोलियाँ बना लो। साँप के काटे हुए को, बीस-बीस या तीस-तीस मिनट पर, एक-एक गोली खिलाओ। छै गोली खाने तक रोगी का मुँह मीठा मालूम होगा, पर सातवीं गोली कड़वी मालूम होगी। जब गोली कड़वी लगे, आप समझ लें कि ज़हर नष्ट हो गया, तब और गोली न दें। परीक्षित है।

(७६) फिटकरी पीसकर और पानी में घोलकर पिलाने से भी साँप के काटे को बड़ा लाभ होता है।

दर्वीकार और राजिल की अगद।

लिहसौड़े, कायफल, बिजौरा नीबू, श्वेतस्पदा (श्वेतगिरिह्वा), किणही (किणिही) मिश्री और चौलाई—इनको मधुयुक्त गाय के सींगमें भर कर, ऊपर से सींगसे वन्द कर, १५ दिन रक्खो और काम में लाओ। इससे दर्वीकर और राजिल का विष शान्त हो जाता है।

मण्डली सर्प के विष की अगद।

मुनक्का, सुगन्धा (नाकुली), शल्लकी (नगवृत्ति)— इन तीनों को पीसकर, इन तीनों के समान मँजीठ मिला दो। फिर दो भाग तुलसी के पत्ते और कैथ, बेल, अनार के पत्तों के भी दो दो भाग मिला दो। फिर सफेद सँभालू, अंकोट की जड़ और गेरू—ये आधे-आधे भाग मिला दो। अन्तमें सबमें शहद मिलाकर, सींग में भर दो और सींग से ही बन्द करके १५ दिन रख दो। इस अगदको घी, शहद और दूध वगैरः में मिला कर पिलाने, सुँघाने, घावपर लगाने और अँजन करने से मण्डली सर्प का विष विशेष कर नष्ट हो जाता है।

नोट—सुश्रुतमें अञ्जन को १ माशे, नस्य को २ माशे, पिलाने को ४ माशे और वमन को ८ माशे दवा की मात्रा लिखी है।

सूचना—पीछे लिखे सर्प-विषनाशक नुसखों में से न० ८ और न० १५ मण्डली सर्प के विष पर अच्छे हैं।
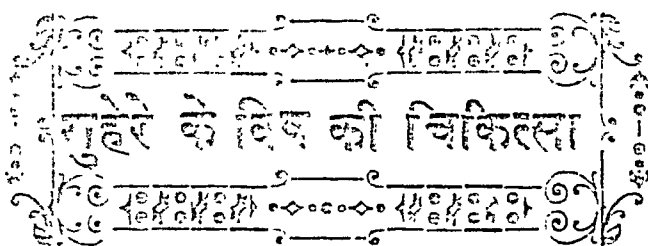
वर्णन।

गुहेरे पाँच तरहके होते हैं। कहते हैं, इसका विष सर्प की अपेक्षा भी मारक होता है। "सुश्रुत" में लिखा है, प्रतिसूर्य, पिंगभास, बहुवर्ण, महाशिरा और निरूपम—इस तरह पाँच प्रकारके गुहेरे होते हैं। गुहेरे के काटनेसे साँप के समान वेग होते तथा नाना प्रकार के रोग और गाँठें या गिल्टियाँ हो जाती हैं।

इसको बहुत कम लोग जानते हैं, क्योंकि यह जीव बहुत कम पैदा होता है। यह घोर वनों में होता है। सुश्रुतके टीकाकार डल्हन मिश्र लिखते हैं :—

> कृष्णसर्पेण गोधायां भवेद्यस्तु चतुष्पदः।
> सर्पो गौधेरको नाम तेन दृष्टो न जीवति॥

काले साँप और गोह के संयोग से गुहेरा पैदा होता है। इसके चार पैर होते हैं। इसका काटा हुआ नहीं जीता।

वाग्भट्ट में लिखा है :—

> गोधासुतस्तु गौधेरो विषे दर्वीकरैः समः।

गोह का पुत्र गुहेरा होता है और विष में वह दर्वीकर साँपों के समान होता है।

गुहेरा गोह के जैसा होता है। गोह पर काली-काली लकीरें नहीं होतीं ; पर इस पर काली-काली धारियाँ होती हैं। इसकी जीभ सर्पके जैसी बीचमें से फटी हुई होती है और यह जीभ भी सर्प की तरह ही निकालता है।

दिहातके लोग कहा करते हैं,यह आदमीको काटते ही पेशाव करता है। पत्थर पर मुँह मारकर आदमी पर झपटता है। कोई-कोई कहते हैं, जब इसे पेशाव की हाजत होती है, तभी यह आदमी को काटता है।

चिकित्सा ।

यद्यपि इसका काटा हुआ आदमी नहीं बचता, तथापि काले साँप वगैरः घोर ज़हरवाले साँपों की तरह ही इसकी चिकित्सा करनी चाहिये ।

कनखजूरेकी चिकित्सा

संस्कृतमें कनखजूरेको शतपदी कहते हैं। कहते हैं,इसके सौ पाँव होते हैं, इसी से इसे "शतपदी" कहते हैं। "सुश्रुत" में इसकी आठ क़िस्में लिखी हैं:- –

(१) परुष, (२) कृष्ण, (३) चितकबरा, (४) कपिल रंगका, (५) पीला, (६) लाल, (७) सफेद, और (८) अग्नि-वर्णका ।

इन आठोंमें से सफेद और अग्निवर्ण या नारञ्जी रंगके कनखजूरे बड़े ज़हरीले होते हैं। इन के दंश से सूजन, पीड़ा, दाह, हृदय में जलन और भारी मूर्च्छा,—ये विकार होते हैं। इन दो के सिवा,—बाक़ी के छहों के डंक मारने या डसने से सूजन, दर्द और जलन होती है, पर हृदय में दाह और मूर्च्छा नहीं होती। हाँ, सफेद और नारञ्जी के दंश से बदन पर सफ़ेद-सफ़ेद फुन्सियाँ भी हो जाती हैं।

कदाचित ये काटते भी हों, पर लोक में तो इनका चिपट जाना मश-

हूर है। कनखजूरा जब शरीर में चिपट जाता है, तब चिमटी वगैरः से खींचने से भी नहीं उतरता। ज्यों ज्यों खींचते हैं, उल्टे पञ्जे जमाता है। गर्मागर्म लोहे से भी नहीं छुटता। जल जाता है, टूट जाता है,पर पञ्जे निकालने की इच्छा नहीं करता। अगर उतरता है, तो सामने ताज़ा मांसका टुकड़ा देखकर, मांस पर जा चिपटता है। इसीलिये लोग, इस दशा में, इसके सामने ताज़ा मांस का टुकड़ा रख देते हैं। यह माँस को देखते ही, आदमीको छोड़ कर, उससे जा चिपटता है। गुड़में कपड़ा भिगो कर उस के मुँह के सामने रखने से भी, वह आदमीको छोड़ कर, उसके जा चिपटता है।

"वंगसेन" में लिखा है, कनखजूरे के काटनेसे काटने की जगह पसीने आते तथा पीड़ा और जलन होती है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, कनखजूरे के चँवालीस पाँव होते हैं। बाईस पाँव आगे की ओर और २२ पीछे की ओर होते हैं। इसी से वह आगे-पीछे दोनों ओर चलता है। वह चार से बारह अंगुल तह लम्बा होता है। उसके काटने से विशेष दर्द, भय, श्वास में तंगी और मिठाई पर रुचि होती है।

कनखजूरेकी पीड़ा नाश करनेवाले नुसखे।

(१) दीपक के तेल का लेप करने से कनखजूरे का विष नष्ट हो जाता है।

नोट—मीठा तेल चिराग में जलाओ। फिर जितना तेल जलने से बचे, उसे कनखजूरे के काटे स्थान पर लगाओ।

(२) हल्दी, दारुहल्दी, गेरू और मैनसिल का लेप करने से कनखजूरे का विष नाश हो जाता है।

(३) हल्दी और दारुहल्दी का लेप कनखजूरे के विष पर अच्छा है।

(४) केशर, तगर, सहँजना, पद्माख, हल्दी और दारुहल्दी—इन

को पानी में पीस कर लेप करने से कनखजूरे का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(५) हल्दी, दारुहल्दी, सेंधानोन और घी,—इन सबको एकत्र पीस कर, लेप करने से कनखजूरे का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—अगर कनखजूरा चिपट गया हो, तो उस पर चीनी डाल दो, छुट जायगा अथवा उसके सामने ताजा मांस का टुकड़ा रख दो।

(६) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, कनखजूरे को ही कूट कर उस की काटी हुई जगह पर रखने से फौरन आराम हो जाता है।

(७) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—जरावन्द, तबील, पाषाणभेद, किब्र की जड़की छाल और मटर का आटा—समान भाग लेकर, शराब या शहद-पानी में मिलाकर कनखजूरे के काटे आदमी को खिलाओ।

(८) तिरियाक, अरवा, दवाउल मिस्क, संजीरनिया, नमक और सिरका,—इनको मिला कर दंशस्थान पर लेप करो। ये सब चीज़ें अत्तारों के यहाँ मिल सकती हैं।

नोट—दवाउल मिस्क किसी एक दवाका नाम नहीं है। यह कई दवायें मिलाने से बनती है।
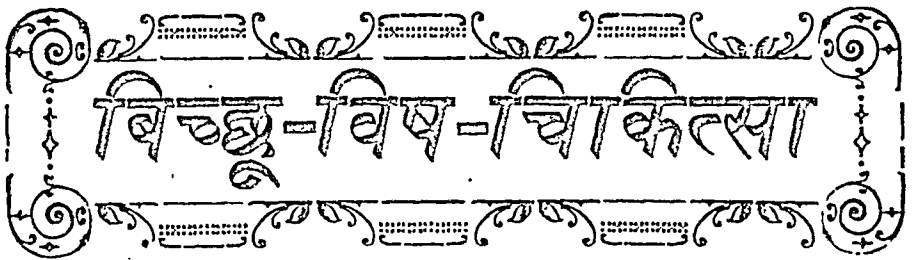
बिच्छू-सम्बन्धी जानने योग्य बातें।

"सुश्रुत" में साँप, बिच्छू प्रभृति ज़हरीले जानवरों के सम्बन्धमें जितना कुछ लिखा है, उतना और किसी भी आचार्यने नहीं लिखा। हमारे आयुर्वेद में तीस प्रकार के बिच्छू लिखे हैं। महर्षि वागभट्ट ने भी उन को तीन क़िस्में मानी हैं:—

(१) मन्द विषवाले।

(२) मध्यम विषवाले।

(३) महा विषवाले।

जो बिच्छू गाय प्रभृति के गोबर, लोद पेशाब और कूड़े-कर्कट-में पैदा होते हैं, उन को मन्द विषवाले कहते हैं। मन्द विषवाले बीछू बारह प्रकार के होते हैं।

जो ईंट, पत्थर, चूना, लकड़ी और साँप वगैरः के मलमूत्र से पैदा होते हैं, वे मध्यम विषवाले होते हैं। वे तीन तरह के होते हैं।

जो साँप के कोथ या साँपके गले-सड़े फन वगैरः से पैदा होते हैं; उन्हें महा विषवाले कहते हैं। वे १५ प्रकार के होते हैं।

मन्द विषवाले बीछू छोटे छोटे और मामूली गोबर के से रंग के होते हैं। वाग्भट्ट ने लिखा है,—पीले, सफ़ेद, रूखे, चित्रवर्ण वाले, रोमवाले, बहुत से पर्ववाले, लोहित रंगवाले और पाण्डु रंग के पेट वाले बीछू मन्द विषवाले होते हैं।

मध्यम विषवाले बीछू लाल, पीले या नारंजी रंग के होते हैं। वाग्भट्ट कहते हैं,—धूएँ के समान पेटवाले, तीन पर्ववाले, पिङ्गल वर्ण, चित्ररूप और सुर्ख़ कान्तिवाले बिच्छू मध्यम विषवाले होते हैं।

महा विषवाले बीच्छू सफ़ेद, काले, काजल के रंग के तथा कुछ लाल और कुछ नीले शरीरवाले होते हैं। वाग्भट्ट कहते हैं, अग्नि के समान कान्तिवाले, दो या एक पर्व वाले, कुछ लाल और कुछ काले पेटवाले बीच्छू महा विषवाले होते हैं।

अगर मन्द विषवाला बिच्छू काटता है, तो शरीर में वेदना होती है, शरीर काँपता है, शरीर अकड़ जाता है, काला खून निकलता है, जलन होती है, सूजन आती है और पसीने निकलते हैं। हाथ-पाँव में काटने से दर्द ऊपर को चढ़ता है।

नोट—यह कायदा है, कि स्थावर विष नीचेको फैलता है; पर जंगम विष—साँप बिच्छू आदि जानवरों का विष—ऊपर को चढ़ता है। कहा है:—

अधोगतिः स्थावरस्य जंगमस्योर्ध्वसंगतिः।

अगर मध्यम विषवाला बिच्छू काटता है, तो शरीर में दर्द, कम्प, अकड़न, काला खून निकलना, जलन होना, सूजन चढ़ना और पसीने आना प्रभृति लक्षण तो होते ही हैं; इनके सिवा जीभ सूज जाती है, खाया-पीया पदार्थ गले से नीचे नहीं जाता और काटा हुआ आदमी बेहोश हो जाता है।

अगर महाविष वाला बिच्छू काटता है, तो जीभ सूज जाती है, अङ्ग स्तब्ध हो जाते हैं, ज्वर चढ़ आता है और मुँह, नाक, कान आदि छिद्रों से काला काला खून निकलता है, इन्द्रियाँ बेकाम हो जाती हैं, पसीने आते हैं, होश नहीं रहता, मुँह रूखा हो जाता है, दर्द का ज़ोर खूब रहता है और मांस फटा हुआ सा हो जाता है। ऐसा आदमी मर जाता है।

बंगसेनने लिखा है, बिच्छू का विष आग के समान दाह करता या जलता है। फिर जल्दी से ऊपर को ओर चढ़कर, अंगों में भेदने या तोड़ने की सी व्यथा—पीड़ा करता है और फिर काटनेके स्थान में आकर स्थिर हो जाता है।

बंगसेन ने ही लिखा है, बीछू जिस मनुष्य के हृदय, नाक और जीभ में डंक मारता है, उस का मांस गल-गल कर गिरने लगता और घोर वेदना या पीड़ा होती है। ऐसा रोगी असाध्य होता है; यानी नहीं बचता।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, बीछू के काटने की जगह पर सूजन, लाली, कठोरता और घोर पीड़ा होती है। अगर डंक रग पर लगता है, तो बेहोशी होती है और यदि पट्ठे पर लगता है तो गरमी मालूम होती और सिर में दर्द होता है।

एक हकीमी ग्रन्थमें लिखा है, कि उग्र विषवाले या महा विष-वाले बिच्छू के काटने से सर्प के से वेग होते हैं, शरीर पर फफोले पड़ जाते हैं, दाह, भ्रम और ज्वर होते हैं तथा मुँह और नाक आदि

से काला खून निकलने लगता है, जिससे शीघ्र ही मृत्यु हो जाती है। यही लक्षण "सुश्रुत" में लिखे हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, एक तरह का बिच्छू और होता है, उसे "जरारा" कहते हैं। जिस समय वह चलता है, उसकी पूँछ धरती पर घिसटती चलती है। उस का ज़हर गरम होता है। जिस दिन वह काटता है, उस दिन दर्द कम होता है; लेकिन दूसरे या तीसरे दिन दर्द बढ़ जाता है, जीभ सूज जाती है, पेशाब की जगह खून आता है, बड़ी पीड़ा होती है, आदमी बेहोश या पागल हो जाता है तथा पीलिया और अजीर्ण के चिह्न देखने में आते हैं। उसके काटने से बहुधा मनुष्य मर भी जाते हैं।

"तिब्ब अकबरी" में "जरारा बिच्छू का इलाज अन्य बिच्छुओं के इलाज से अलग लिखा है। उसमें की कई बातें ध्यान में रखने योग्य हैं। हम उस के सम्बन्ध में आगे लिखेंगे।

"वैद्यकल्पतरु" में लिखा है, अगर बिच्छू काटता है, तो सूई चुभाने का सा दर्द होता है, लेकिन थोड़ी देर बाद दर्द बढ़ जाता है। फिर ऐसा जान पड़ता है; मानो बहुत सी सूइयाँ चुभ रही हों। बीछू के डंक का दर्द सर्प के डंक से भी असह्य होता है और पाँच या दश मिनट में ही चढ़ जाता है। बीछू के काटने से मरने का भय कम रहता है; परन्तु पीड़ा बहुत होती है। अगर बीछू बहुत ही ज़हरीला होता है, तो काटे जाने वालेका शरीर शीतल हो जाता है और पसीने खूब आते हैं। ऐसे समय में, शरीर में गरमी लानेवाली गरम दवाएँ अथवा चाय या काफी पिलाना हित है।

नोटः—बिच्छूके काटनेपर भी, साँप के काटने पर जिस तरह बन्द बाँधे जाते हैं, दंश-स्थान जलाया या काटा जाता है, जहर चूसा जाता है; उसी तरह वही सब उपाय करने चाहिएँ। कास्टिक या कारबोलिक ऐसिड से अगर बिच्छू का काटा स्थान जला दिया जाय, तो जहर नहीं चढ़ता। काटे हुए स्थान पर प्याज काट कर बाँधना भी अच्छा है। ऐमोनिया लगाना और सुंघाना बहुत ही उत्तम है। प्याज और ऐमोनिया के इस्तेमाल से बिच्छू के काटे तो आराम होते ही हैं, इसमें शक नहीं; अनेक साँपों के काटे हुए भी साफ बच गये हैं।

बिच्छू की चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।

(१) मूली का छिलका बिच्छू पर रखने या मूली के पत्तों का स्वरस बिच्छू पर डालने से बिच्छू मर जाता है। खीरे के पत्तों और उस के स्वरस में भी यही गुण हैं। मूली के छिलके बिच्छू के बिल पर रखदेने से बिच्छू बाहर नहीं आता। जो मनुष्य सदा मूली और खीरे खाता है, उसे बिच्छू का विष हानि नहीं करता। जहाँ बिच्छुओं का ज़ियादा ज़ोर हो, वहाँ मनुष्यों को मूली और खीरे सदा खाने चाहियें। अगर घर में एक बिच्छू पकड़ कर जला दिया जाता है,तो घरके सारे बिच्छू भाग जाते हैं। वैद्यों को ये सब बातें अपने से सम्बन्ध रखने वालों को बता देनी चाहिएँ।

(२) अगर मध्यम और महा विषवाले बिच्छू काटें, तो फौरन ही बन्द बाँधो ; यानी अगर बिच्छू बन्द बाँधने योग्य स्थानों—हाथ, पाँव, अँगुली प्रभृति—में डंक मारे, तो आप सब काम और सन्देह छोड़ कर, डंक मारी हुई जगह से चार अंगुल ऊपर की तरफ़, सूत, नर्म चमड़ा या सुतली प्रभृति से कसकर बन्द बाँध दो। इतना कसकर भी न बाँधो, कि चमड़ा कट जाय और इतना ढीला भी न बाँधो कि, खून नीचे का नीचे न रुके। एक ही बन्द बाँधकर सन्तोष न कर लो। ज़रूरत हो तो पहले के बन्द से कुछ ऊपर दूसरा और तीसरा बन्द भी बाँध दो। साँप के काटने पर भी ऐसे ही बन्द लगाये जाते हैं। चूँकि तेज़ ज़हरवाले बिच्छुओं और साँपोंमें कोई भेद नहीं। इनका काटा हुआ भी मर जाता है, अतः सर्प के काटने पर जिस तरह के बन्द आदि बाँधे जाते हैं या जो-जो क्रियायें की जाती हैं, वही सब बिच्छू—खासकर उग्र विषवाले बिच्छू के काटने पर भी करनी चाहियें। वाग्भट्ट में लिखा है:—

साधयेत्सर्पवद्दष्टान्विषोग्रैः कीटवृश्चिकैः।

उग्रविषवाले कीड़े और बिच्छू के डंक मारने पर साँप की तरह चिकित्सा करनी चाहिये।

बन्द बाँधने से क्या लाभ? बन्द बाँधने से बीछू या साँप का विष खून में मिलकर आगे नहीं फैलता। सभी जानते हैं कि, प्राणियों के शरीर में खून हर समय चक्कर लगाया करता है। नीचे का खून ऊपर जाता है और ऊपर का नीचे आता है। खून में अगर विष मिल जाता है, तो वह विष उस खून के साथ सारे शरीर में फैल जाता है। बन्द की वजह से नीचे का खून नीचे ही रहा आता है; अतः खूनके साथ मिला हुआ विष भी नीचे ही रहा आता है। जब तक विष हृदय आदि ऊपर के स्थानों में नहीं जाता, मनुष्य की मृत्यु हो नहीं सकती। बस, इसी ग़रज़ से साँप-बिच्छू आदि के काटने पर बन्द बाँधने की चाल भारत और योरप आदि सभी देशों में है। पहले बन्द ही बाँधा जाता है, उस के बाद और उपाय किये जाते हैं।

अगर साँप या बीछू वगैरः का काटा हुआ स्थान ऐसा हो, जहाँ बन्द न बाँधा जा सके, तो काटी हुई जगह को तत्काल चीरकर और वहाँ का थोड़ा सा मांस निकाल कर, उस स्थान को तेज़ आग से दाग देना चाहिये अथवा सींगी या तूम्बी या मुँह से वहाँ का खून और ज़हर चूस-चूसकर फेंक देना चाहिये।

चूसना ख़तरे से ख़ाली नहीं। इसमें ज़रा सी भूल होने से चूसने वाले के प्राण जा सकते हैं; अतः चूसनेकी जगह तेज़ छुरी, चाकू या नश्तर वग़ैरः से पहले चीरनी चाहिये। इस के बाद, मुँह में कपड़ा भर कर चूसना चाहिये। अगर सींगी से चूसना हो, तो सींगी पर भी मकड़ी का जाला या ऐसी ही और कोई चीज़ लगाकर यानी ऐसी चीज़ों से सींगी को ढक कर तब चूसना चाहिये। क्योंकि मुँह में कपड़ा न भरने अथवा सींगी पर मकड़ी का जाला न रखने

से ज़हर-मिला हुआ खून चूसनेवाले के मुँह में चला जायगा। इस के सिवा, चूसने वाले के मुँह में कहीं ज़ख़्म न होने चाहियें। उस के दाढ़-दाँतों से खून न जाता हो और दाँतों की जड़ या मसूड़े पोले न हों। अगर मुँह में घाव होंगे, दाँतों से खून जाने का रोग होगा या मसूड़े पोले होंगे, तो चूसा हुआ ज़हर घाव वगैरः के द्वारा चूसनेवालेके खूनमें मिल कर उसे भी मार डालेगा। खून चूसने का काम, इस मौक़े पर, बड़ा ही अच्छा इलाज है। मगर चूसनेवाले को, अपनी प्राणरक्षा के लिये, ऊपर लिखी बातों का विचार करके खून चूसने को तैयार होना चाहिये। हाँ, बन्द बाँधकर, खून चूसने की ज़रूरत हो, तो खून चूसने में ज़रा भी देर न करनी चाहिये।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, जो शख़्स खून चूसने का इरादा करे, वह अपने मुँह को "गुले रोग़न" और "बनफ़शाके तेल" से चिकना कर ले। जो चूसे वह बिल्कुल भूखा न हो, शराब से कुल्ले करे और थोड़ी घी पी भी ले। जब खून चूस कर मुँह उठावे, मुँह का लुआब और पानी निकाल दे, जिस से वह और उसके दाँत विपद् से बचें।

और भी लिखा है, अगर काटी हुई जगह ऐसी हो, जो न तो काटी जा सके और न वहाँ बन्द ही बाँधा जा सके, तब काटे हुए स्थान के पासका मांस छुरीसे इस तरह काट डालो, कि साफ़ हड्डी निकल आवे। फिर उस स्थान को गरम किये हुए लोहे से दाग दो या वहाँ कोई विष नाशक लेप लगा दो। राल और जैतूनका तेल औटा कर लगाना भी अच्छा है। अगर डसी हुई जगह पर दवा लगाने से अपने-आप घाव हो जाय, तो अच्छा चिह्न समझो। घावको जल्दी मत भरने दो, जिस से ज़हर अच्छी तरह निकलता रहे; क्योंकि ज़हर का क़तई निकल जाना ही अच्छा है।

खुलासा यह है:—

(१) बीछू ने जहाँ डंक मारा हो, उस जगह से कुछ ऊपर बन्द बाँध दो।

(२) विष को मुँह अथवा सींगी प्रभृति से चूसो।

(३) अगर दागने का मौक़ा हो, तो डसे हुए स्थान को चीरकर या वहाँ का मांस निकाल कर दाग दो अथवा कोई उत्तम विष-नाशक लेप लगा दो

(४) गरम पानी या किसी काढ़े से डसी हुई जगह को धोओ।

(५) ज़रूरत हो तो फस्द खोल कर खून निकाल दो, क्योंकि खून के साथ विष निकल जाता है।

(६) वाग्भट्ट में लिखा है, अगर बिच्छूका काटा हुआ मनुष्य बेहोश हो, संज्ञाहीन हो, जल्दी-जल्दी श्वास लेता हो, बकवाद करता हो और घोर पीड़ा हो रही हो, तो नीचे लिखे उपाय करो:—

(क) काटे हुए स्थान पर कोई अच्छा लेप करो। जैसे, हाड़, हलदी, पीपर, मँजीठ, अतीस, काली मिर्च और तूम्बीका वृन्त—इन सब को वार्ताकू या बैंगन के स्वरस में पीस कर लेप करो।

(ख) उग्र विष वाले बिच्छू के काटे हुए को दही और घी पिलाओ।

(ग) शिरा बींधो यानी फस्द खोलो।

(घ) वमन कराओ; क्योंकि विष-चिकित्सा में वमन कराना सबसे उत्तम उपाय है।

(ङ) नेत्रों में विष-नाशक अञ्जन आँजो।

(च) नाक में विष-नाशक नस्य सुँघाओ।

(छ) गरम, चिकना, खट्टा और मीठा वात-नाशक भोजन रोगी को दो; क्योंकि ऐसा भोजन हितकारी है।

(ज) अगर बिच्छूका विष बहुत ही भयंकर हो, चढ़ता ही चला जावे, अच्छे-अच्छे उपायोंसे भी न रुके, तो शेषमें डङ्क मारी हुई जगह पर विष का लेप करो।

खुलासा यह है, कि अगर विष का ज़ोर बढ़ता ही जावे—रोगीकी हालत ख़राब होती जावे, तो विष का लेप करना चाहिये;

क्योंकि ऐसी हालत में विष ही विष को नष्ट कर सकता है। दुनिया में मशहूर भी है "विषस्यविषमौषधम्" यानी विष की दवा विष है। इसी से महर्षि वाग्भट्ट ने लिखा भी है:—

"अन्त में, अगर बिच्छू का विष बहुत ही बढ़ा हुआ हो, तो उस के डंक मारे स्थान पर विष का लेप करना चाहिये और उच्चिटिङ्गके विष में भी यही क्रिया करने का क़ायदा है।"

जिस तरह सभी तरह के साँपों के सात वेग होते हैं, उसी तरह महाविष वाले या मध्यम विष वाले बिच्छुओं के विष के भी सात वेग होते हैं। जिस तरह साँपों के विष के पाँचवें वेग के बाद और सातवें वेग के पहले प्रतिविष सेवन कराने का नियम है; उसी तरह बिच्छू के विष में भी प्रतिविष सेवन कराने का क़ायदा है। अगर मंत्रतंत्र और उत्तमोत्तम विषनाशक औषधियों से लाभ न हो, हालत बिगड़ती ही जावे, तो प्रतिविष लगाना और खिलाना चाहिये। जिस तरह ज्वर रोग की अन्तिम अवस्था में, जब बहुत ही कम आशा रह जाती है, रोगी को साँपों से कटाते हैं अथवा चन्द्रोदय आदि उग्र रस देते हैं; उसी तरह साँप और बिच्छू प्रभृति उग्र विषवाले जन्तुओं के काटने पर, अन्तिम अवस्था में, विष खिलाते और विष ही लगाते हैं।

नोट—जब एक विष दूसरे विषके प्रतिकूल या विरुद्ध गुणवाला होता है, तब उसे उसका "प्रतिविष" कहते हैं। जैसे, स्थावर विष का प्रतिविष जंगम विष और जंगम विष का प्रतिविष स्थावर विष है।

(७) ऊपर की तरकीबों से वही इलाज कर सकता है, जिसे इन सब बातों का ज्ञान हो, सब तरह के विषोंके गुणावगुण, पहचान और उनके दर्पनाशक उपाय या उतार आदि मालूम हों; पर जिन्हें इतनी बातें मालूम न हों, उन्हें पहले सीधी-सादी चिकित्सा करनी चाहिये; यानी सबसे पहले, अगर बन्द बाँधने योग्य स्थान हो तो, बन्द बाँध देना चाहिये। इसके बाद डंक मारी हुई जगह

को चीर कर वहाँ का खून निकाल देना चाहिये। इस के भी बाद, किसी विष नाशक काढ़े वगैरः का उस जगह तरड़ा देना और फिर लेप आदि कर देना चाहिये। साथ ही खाने के लिये भी कोई उत्तम परीक्षित दवा देनी चाहिये। अगर भूख लगी हो या खुश्की हो, तो कच्चे दूध में गुड़ मिलाकर पिलाना चाहिये अथवा तज, तेजपात, इलायची और नागकेशर का २।२ माशे चूर्ण डाल कर गुड़ का शर्बत बना देना चाहिये।

(८) यूनानी ग्रन्थों में लिखा है,—बिच्छू के काटे हुए को पसीने निकालनेवाली दवा देनी चाहिये या कोई ऊपरी उपाय ऐसा करना चाहिये, जिससे पसीने आवें। जिस अंग में डंक मारा हो, अगर उस अंग से पसीने निकाले जायँ तो और भी अच्छा। बिच्छू के काटने पर पसीने निकालना, हम्माम में जाना और वहाँ शराब पीना हितकारी है।

अगर जरारा बिच्छू ने, जिस की दुम धरती पर घिसटती चलती है, काटा हो तो नीचे लिखे हुए उपाय करो:—

(क) पहले पछनों से ज़हर को चूसो। पछनों के भीतर धुली हुई रूई भर लो, नहीं तो चूसनेवाले पर भी विपद् आ सकती है।

(ख) काटे हुए स्थान को चीर कर, हड्डी तक का मांस निकाल कर फेंक दो और फिर गरम तपाये हुए लोहे से उस जगह को दाग दो।

(ग) इस के बाद फस्द खोलो।

(घ) अगर दाग न सको, तो फरफयून और जुन्देवेदस्तर उस जगह पर रखो और उस के इर्द-गिर्द गिले अरमनी और सिरके का लेप करो।

(ङ) ताज़ा दूध पिलाओ।

(च) अगर जीभ में सूजन हो, तो नीचे की रग खोल दो।

(छ) कासनी का पानी और सिकंजबीन मिला कर कुल्ले कराओ।

(ज) अगर रोगी का पेट फूल गया हो, तो हुकना करो।

नोट—सेव का रुब्ब, बिही का रुब्ब, काहू का शीरा, कासनी का शीरा, ककड़ी-खीरे का शीरा, लम्बी घीया, जौका पानी और कपूर की टिकिया—ये भी इस मौके पर लाभदायक हैं।

(६) बिच्छू के काटे हुए आदमी को ना-बराबर घी और शहद मिला हुआ दूध अथवा बहुत सी खाँड मिलाया हुआ दूध पिलाना हितकारी है। वाग्भट्ट ने कहा है—

लेपः सुखोष्णश्च हितः पिरायाको गोमयोऽपि वा ।
पाने सर्पिर्मधुयुतं क्षीरं वा भूरि शर्करम् ॥

बिच्छूकी काटी हुई जगह पर खली या गोबर का सुहाता-सुहाता लेप हितकारी है। इसी तरह घी और शहद मिलाया हुआ दूध या ज़ियादा चीनी मिला दूध पथ्य है। उन्हीं वाग्भट्ट महोदय ने बहुत ही भयङ्कर बिच्छू के काटने पर दही और घी मिला कर पिलाने की राय दी है। आप कहते हैं, बिच्छू के काटे हुए आदमी को गरम, चिकना, खट्टा, मीठा बादीको नाश करने वाला भोजन देना चाहिये।

नोट—यूनानी हकीम भी दूध पिलाने की राय देते हैं।

बिच्छू-विष-नाशक नुसखे ।

(१) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है—साढ़े चार माशे हींग को २३॥ माशे शराब में मिलाकर, बिच्छू के काटे हुए को पिलाओ। अवश्य वेदना कम हो जायगी।

(२) परीक्षा करके देखा है, थोड़-थोड़ा साँभर नोन खिलाने से बिच्छू के काटे हुए को शान्ति मिलती है।

(३) लहसन, हींग और अकरकरा—इन तीनों को शराब में मिलाकर खिलाने से बिच्छू का काटा आराम हो जाता है।

(४) अरीठे चबाने से भी बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

साथ ही, अरीठे महीन पीस कर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लगाने भी चाहियें। अगर अरीठे चिलम में रखकर तमाखू की तरह पियें भी जायें, तब तो कहना ही क्या? परीक्षित है।

(५) लहसन का रस तीन तोले और शहद तीन तोले—दोनों को मिलाकर, बिच्छू के काटे को, तत्काल, पिलाने से अवश्य आराम होता है।

(६) ज़रासा जमालगोटा पानी में पीस कर बिच्छू के काटे आदमी के नेत्रों में आँजो। साथ ही, काटी हुई जगह पर भी जमालगोटा पीस कर मलो।

नोट—एक या दो जमालगोटे पानी में पीस कर, काटे स्थान पर लगा देने से भयंकर बिच्छू का विष भी तत्काल शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(७) तितली के पत्तों का स्वरस, थोड़ा-थोड़ा, कई बार में, पिलाने से बिच्छू और साँप दोनों का विष उतर जाता है।

नोट—तितली के पत्तों का रस काटे हुए स्थान पर लगाना भी जरूरी है।

(८) कसौंदी का फल भून कर खिलाने से भी बिच्छू का विष उतर जाता है।

नोट—कसौंदी के बीज, पानी के साथ पीस कर, काटे हुए स्थान पर लगाने चाहियें। परीक्षित है।

(९) एक चिलम में मोर-पंख रखकर, ऊपर से जलते हुए कोयले या बिना धूएँ का अङ्गारा रखकर, बिच्छू के काटे आदमी को तमाखू की तरह पिलाओ। अवश्य ज़हर उतर जायगा। परीक्षित है।

नोट—साथ ही मोरपंख को घी में मिलाकर काटे हुए स्थान पर उसकी धूनी भी दो। बड़ी जल्दी आराम होगा।

(१०) "ख़ैरुल तिजारब" नामक पुस्तक में लिखा है, अगर बिच्छू का काटा हुआ आदमी बीस अङ्क उलटे गिने, तो बिच्छू का ज़हर उतर जाय।

नोट—ऊपर की बात का यह मतलब है, कि रोगी २०, १९, १८, १७, १६, १५,

१४, १३, १२, ११, १०, ९, ८, ७, ६, ५, ४, ३, २, और १ इस तरह गिने ; यानी बीस से एक तक उल्टी गिन्ती गिने।

(११) भाँग के बीज कूट-पीसकर और मोम में मिलाकर खिलाने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

(१२) "मोजिज़" नामक ग्रन्थ में लिखा है—एक मनुष्यको बिच्छू ने चालीस जगह काटा। उसने चटपट "इन्द्रायणका हरा फल" लाकर,उस में से आठ माशे गूदा खा लिया। खाते देर हुई, पर आराम होते देर न हुई।

(१३) बिच्छू के काटे स्थान पर प्याज़ का ज़ीरा मलने और थोड़ा सा गुड़ खा लेने से बिच्छू का विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(१४) घी में कुछ सेंधानोन मिलाकर पीने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने, सूँघने, आँजने और धूनी देने की दवाएँ।

---

(१५) किसी क़दर गरम काँजी बिच्छू के काटे स्थान पर सींचने या तरड़ा देने से ज़हर उतर जाता है।

(१६) शालिपर्णी का मन्दोष्ण या सुहाता-सुहाता गरम काढ़ा बिच्छू के काटे स्थान पर सींचने से ज़हर उतर जाता है।

नोट—शालिपर्णी को हिन्दी में "सरिवन" बँगला में शालपानि, मरहटी में सालवण और गुजराती में समेरवो कहते हैं। इस में विष नाश करने की शक्ति है।

(१७) गरमागर्म घी में सेंधानोन पीसकर मिला दो और फिर उसे बिच्छू के काटे हुए स्थान पर सींचो। इसके साथ ही घी में सेंधानोन मिलाकर, दो तीन बार पीओ भी। यह उपाय परीक्षित है।

(१८) दूध में सेंधानोन पीस कर मिला दो और फिर उसे आग

पर गरम करलो। जब गरम हो जाय, काटी हुई जगह पर इस नमक-मिले दूध को सींचो। ज़हर उतर जायगा।

(१९) अश्नान और अजवायन—दोनों दो-दो तोले लेकर, पानी में औटा लो। जब औट जायँ, बिच्छू की काटी हुई जगह पर इस काढ़े का तरड़ा दो ; फौरन ज़हर उतर जायगा।

सूचना—तरड़ा देना और सींचना एक ही बात है। वैद्य सींचना और हकीम तरड़ा देना कहते हैं।

नोट—अश्नान अरबी शब्द है। यह एक तरह की घास है। इस का स्वरूप हरा और स्वाद कड़वा होता है। यह गरम और रूखी है। साबुन इसका बदल या प्रतिनिधि है। यह घावके मांस को छेदन करके साफ करती है। अरब वाले इससे कपड़े धोते हैं। रंगीन रेशमी कपड़े इस से साफ हो सकते हैं। यह घास रुके हुए मासिक खून को फौरन जारी करती है। मात्रा १॥ माशे की है। पर रजोधर्म जारी करने को ३॥माशे और गर्भ गिराने को ११ माशे की मात्रा है।

(२०) मूली और नमक पीसकर, बिच्छू के काटे हुए स्थान पर रखने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

नोट—बिच्छू पर मूली रखने से बिच्छू मर जाता है। मूली के पत्तों का स्वरस बिच्छू पर डालने से भी बिच्छू मर जाता है। अगर मूलीके छिलके बिच्छू के बिल पर रख दिये जायँ, तो बिच्छू बिल से न निकले। कहते हैं, मूली और खीरा सदा खानेवाले को बिच्छू का जहर हानि नहीं करता।

(२१) हरताल, हींग और साँठी चाँवल—इन तीनों को पानी के साथ पीसकर, बिच्छू की काटी हुई जगह पर लेप करने से ज़हर उतर जाता है।

(२२) घासकी पत्तियाँ घी के साथ पीस कर, बिच्छूके काटे स्थान पर मलने से बीछू का ज़हर उतर जाता है।

(२३) नीबू का रस बीछू के काटे स्थान पर मलने से बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(२४) नागरमोथा पीस कर और पानी में घोल कर पीने और

काटी हुई जगह पर इसीका गाढ़-गाढ़ा लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) हींग, हरताल और तुरंज—इनको बराबर-बराबर लेकर, पानी के साथ महीन पीस कर, गोलियाँ बनालो। इन गोलियों को पानी में पीस कर, काटे हुए स्थान पर लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है।

(२६) बिच्छू के काटे स्थान पर मोम की धूनी देने से ज़हर उतर जाता है।

(२७) विषखपरे के पत्ते और डाली तथा चिरचिरा—इनको मिलाकर पीस लो और बिच्छू के काटे स्थान पर मलो; ज़हर उतर जायगा। यह बड़ा उत्तम नुसख़ा है।

नोट—चिरचिरे को अपामार्ग, ओंगा या लटजीरा आदि कहते हैं। विषखपरे को पुनर्नवा या साँठी कहते हैं। चिरचिरे की जड़ को पानी के साथ सिल पर पीस कर डंक मारे स्थान पर लगाने और थोड़ी सी चिरचिरे की जड़ मुँह में रख कर चबाने और चूसने से कैसा ही भयंकर बिच्छू क्यों न हो, फौरन विष नष्ट हो जायगा। यह दवा कभी फेल नहीं होती, अनेक बार आजमायश की है। बहुत क्या, चिरचिरे की जड़ बिच्छू के काटे आदमी को दो चार बार दिखाने और फिर छिपालेने तथा इसके लगा देने या छुला देने मात्र से बिच्छू का जहर उतर जाता है। अगर चिरचिरे की जड़ बिच्छू के डंक से दो-तीन बार छुला दी जाती है, तो बिच्छू और मामूली कीड़ों की तरह निर्विष हो जाता है—उसमें जहर नहीं रहता। आप लोग चिरचिरे के सर्वाङ्ग को अपने घर में अवश्य रखें। इस जंगल की जड़ी से बड़े काम निकलते हैं।

(२८) कौंच के बीज छीलकर, बिच्छू के काटे स्थान पर मलने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

(२९) गुबरीला कीड़ा बिच्छू के काटे स्थान पर मलनेसे बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है।

(३०) बिच्छू के काटे स्थान पर तितली के पत्ते मलने से ज़हर उतर जाता है।

(३१ बिच्छू के काटे स्थान पर मदार या आक का दूध मलने से फौरन ज़हर उतर जाता है।

(३२) बिच्छू के काटे स्थान पर मक्खी को मलने से फौरन आराम होता है।

(३३) सूखा अमचूर और सूखा लहसन इन दोनों को पानी के साथ पीसकर,काटे स्थान पर लेप करने से फौरन ज़हर उतर जाता है।

(३४) बिच्छू के काटे स्थान पर, समन्दरफल पानी के साथ पीसकर लेप करने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है।

(३५) मुश्की घोड़े के नाखून पानी में पीसकर लगाने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—घोड़े के अगले पैर के टखने के पास जो नाखून सा होता है, उसको पानी में घिसकर बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से भी बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है। मुश्की घोड़े का नाखून न मिले, तो साधारण घोड़ों के नाखूनों से भी काम चल सकता है।

(३६) नौसादर, सुहागा और कली का चूना—इन तीनों को बराबर लेकर, महीन पीसकर, हथेली में रखकर मलो और बिच्छू के काटे हुए को सुँघाओ। कई बार सुँघाने से अवश्य आराम होगा। कई बार का परीक्षित है।

(३७) कसौंदी के बीज, पानी के साथ पीस कर, काटे स्थान पर लगा देने से बिच्छू का जहर उतर जाता है।

(३८) चूहे की मैंगनी, पानी के साथ पीसकर काटे स्थान पर लगाने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—चूहे की मैंगनियों में विष नाश करने की बड़ी शक्ति है।

(३९) बिच्छू के काटे स्थान पर, सज्जी को महीन पीसकर और शहद में मिलाकर लेप करो; फौरन लाभ होगा।

(४०) पलाशपापड़ा, पानी में पीसकर, बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से ज़हर उतर जाता है।

(४१) बिच्छूके काटते ही, तत्काल, बिच्छूके काटे स्थान पर तिलों के तेल के तरड़े दो अथवा सैंधानोन-मिले हुए घी के तरड़े दो। इन दोनों में से किसी एक उपायके करने से बिच्छू का ज़हर अवश्य उतर जाता है। परीक्षित है।

नोट—इन उपायों के साथ अगर कोई खाने और आँजने की दवा भी सेवन की जाय, तो और भी जल्दी आराम हो।

(४२) काँजी में जवाखार और नमक पीस कर मिला दो और फिर उसे गरम करो। बारम्बार इस दवा को सींचने या इसका तरड़ा देने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४३) ज़ीरे को पानी के साथ सिल पर पीस लो। फिर उस लुगदी में घी और पिसा हुआ सैंधानोन मिला दो। इसके बाद उसे आग पर गरम करो और थोड़ा सा शहद मिला दो। इस दवा का लेप काटी हुई जगह पर करने से बिच्छू का विष अवश्य नष्ट हो जाता है। कई बार परीक्षा की है। कभी यह लेप फ़ेल नहीं हुआ। इस लेप को सुहाता-सुहाता गरम लगाना चाहिये। परीक्षित है।

(४४) मैनसिल, सैंधानोन, हींग, चमेली के पत्ते और सोंठ—इन सब को एकत्र महीन पीसकर छान लो। फिर इस चूर्ण को खरल में डाल, ऊपर से गायके गोबर का रस दे दे कर घोटो और गोलियाँ बना लो। इन गोलियों को पानी में घिस कर लगाने से बिच्छू का ज़हर फ़ौरन उतर जाता है

(४५) पीपर और सिरस के बीज बराबर-बराबर ले कर, पानी के साथ पीस कर, काटी हुई जगह पर लेप करो। कई बार लेप करने से बिच्छू का विष अवश्य नष्ट हो जाता है।

नोट—अगर सिरस के बीज और पीपल के चूर्ण में "आक के दूध" की तीन भावनाएँ भी दे दी जायँ, तो यह दवा और भी बलवान हो जाय। वाग्भट्टमें लिखा है

अर्कस्य दुग्धेन शिरीषबीजं त्रिर्भावितं पिप्पलिचूर्ण मिश्रम्।
एषोगदो हन्ति विषाणि कीटभुजंगलूतेन्दुरवृश्चिकानाम्॥

सिरस के बीज और पीपल के चूर्ण को मिला कर, आक के दूध की तीन भावनायें दो। इस दवा के लगाने से कीड़े, साँप, मकड़ी-चूहे और बिच्छुओं का विष नष्ट हो जाता है।

सूचना—सिरस के बीज और पीपलों को पीस कर चूर्ण कर लो। फिर इस चूर्ण को आक के दूध में डाल कर हाथों से मसलो और दो तीन घण्टे उसी में पड़ा रखो। इसके बाद चूर्ण को सुखा दो। यह एक भावना हुई। दूसरे दिन फिर आक के ताजा दूध में कल के सुखाये हुए चूर्ण को डाल कर मसलो और सुखा दो। यह दो भावना हुईं। तीसरे दिन फिर ताजा आक के दूध में सुखाये हुए चूर्ण को डाल कर मसलो और सुखा दो। बस, ये तीन भावना हो गईं। इस दवा को शीशी में भर कर रख दो। जब किसी को साँप या बिच्छू आदि काटें, इस दवा को अन्दाज से लेकर, पानी के साथ सिल पर पीस लो और डंक मारी हुई जगह पर लगा दो। ईश्वर-कृपा से अवश्य आराम होगा। कई बार इसकी परीक्षा की; हर बार इसे ठीक पाया। बड़ी अच्छी दवा है।

(४६) ढाकके बीजों को आक के दूध में पीसकर लेप करने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(४७) कसौंदी के पत्ते, कुश और काँस की जड़—इन तीनों जड़ियों को मुख में रखकर चबाओ और फिर जिसे बिच्छू ने काटा हो उसके कानों में फूँको। इस उपाय से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। कई बार परीक्षा की है।

नोट—हमने इस उपाय के साथ जब खाने और लगाने की दवा भी सेवन कराई, तब तो अपूर्व चमत्कार देखा। अकेले इस उपाय से भी चैन पड़ जाता है।

(४८) हुलहुल के पत्तों का चूर्ण बिच्छू के काटे आदमी को सुँघाने से तत्काल आराम होता है; यानी क्षणमात्र में विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—हिन्दी में हुलहुल को हुरहुर और सोंचली भी कहते हैं। संस्कृत में इसे आदित्यभक्ता कहते हैं, क्योंकि इसके फूल सूरज निकलने पर खिल जाते और अस्त होनेपर सुकड़ जाते हैं। यह सूरजमुखी के नाम से बहुत मशहूर है। इसके पत्ते दवा के काम में आते हैं।

(४९) मोरके पंख को घी में मिलाकर, आग पर डालो और

उसका धूआँ बिच्छू के काटे स्थान पर लगने दो । इस उपाय से ज़हर उतर जाता है ।

(५०) ताड़ के पत्ते, कड़वे नीम के पत्ते, पुराने बाल, सैंधानोन और घी—इन सब को मिलाकर, बिच्छू के काटे स्थान पर इनकी धूनी देने से ज़हर तत्काल उतर जाता है ।

(५१) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, गूगल, अलसी के बीज, सैंधानोन, अलेकुमवतम और जुन्देबेदस्तर—इन सब को मिलाकर, पानी में पीसकर, लेप करने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

(५२) पोदीना और जौका आटा—इन को तुलसी के पानी में पीसकर लगाने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

(५३) बाबूना, सूसी, खंगाली लकड़ी और तुलसी—इन सब का काढ़ा बनाकर, उसी से काटे हुए स्थान को धोने और पीछे कोई लेप लगाने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है ।

(५४) लहसन को, जैतून के तेल में पीसकर, काटे स्थान पर लगाने से बिच्छू का ज़हर नष्ट हो जाता है।

(५५) फरफयून का तेल और जम्बक का तेल बिच्छू के काटे स्थान पर मलने से आराम होता है ।

(५६) बबूल के पत्तों को चिलम में रखकर, ऊपर से आग धर कर, तम्बाकू की तरह पीने से बिच्छू का विष उतर जाता है। कोई लाला परमनन्द जी वैश्य इसे अपना आज़माया हुआ नुसखा बताते हैं ।

(५७) निर्मली के बीज, पानी के साथ पत्थर पर घिस कर, बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से बिच्छू का ज़हर फौरन उतर जाता है । परीक्षित है ।

नोट—निर्मली के फल गोल होते हैं । इन पर कुचले की सी छाल होती है । विशेष करके इनकी सारी आकृति कुचले से मिलती है । निर्मली में विष नाशक शक्ति है । इससे पानी खूब साफ हो जाता है । संस्कृत में "कतक" बंगला में

निर्मल फल" और गुजराती में "निर्मली" कहते हैं। निर्विषी दूसरी चीज है। वह एक प्रकार की घास है। उस में साँप और बिच्छू का जहर नाश करने की भारी सामर्थ्य है।

(५८) बिच्छूके काटते ही, काटे स्थान पर, तत्काल, पानी की बर्फ धर देने से दर्द फौरन कम हो जाता है। इस से क़तई आराम नहीं हो जाता, पर शान्ति अवश्य मिलती है। बर्फ रखकर, दूसरी दवा की फिक्र करनी चाहिये और तैयार होते ही लगा देनी चाहिये। परीक्षित है।

(५९) बकरी की मैंगनी, पानी में पीसकर, बिच्छू के काटे स्थान पर लगा देने से तत्काल ज़हर उतर कर शान्ति होती है।

नोट—बकरी की मैंगनी जलाकर खाने और उसी राख का लेप करने से भी फौरन आराम होता है। दोनों उपाय आजमूदा हैं।

(६०) इमली के चीयों या बीजों को पानी में पीसकर बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से तत्काल ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(६१) सत्यानाशी की छाल पान में रखकर खाने से बिच्छूका विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(६२) बाँझ-ककोड़े की गाँठ पानी में घिस कर पीने और काटे स्थान पर लेप करने से बिच्छू, साँप, चूहे और बिल्ली सब का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(६३) बाँझ-ककोड़े की गाँठ और धतूरे की जड़,—इन दोनों को चाँवलों के धोवन में घिसकर पिलाने और डंक-मारे स्थान पर लगाने से बिच्छू प्रभृति ज़हरीले जानवरों का विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(६४ क) प्याज़ के दो टुकड़े करके बिच्छू के डंक-मारे स्थान पर लगाने से फौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(६४) कपास के पत्ते और राई—दोनो को मिलाकर और

पानी के साथ पीसकर बिच्छू के काटे हुए स्थान पर लेप करने से फौरन आराम आता है। परीक्षित है।

(६५) रविवार के दिन खोद कर लाई हुई कपास की जड़ चबाने से बिच्छू का विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(६६) कड़वे नीम के पत्ते या उस के फूलों को चिलम में रख कर, तम्बाकू की तरह, पीने से बिच्छू का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कड़वे नीम के पत्ते चबाओ और मुख से भाफ न निकलने दो। जिस तरफ के अङ्ग में बीछू ने काटा हो, उसके दूसरी तरफ के कान में फूँक मारो। इन उपायों से बड़ी जल्दी आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—कसौंदी के पत्तों को मुंह में चबाकर बिच्छू के काटे हुए के कान में फूंक मारने से भी बिच्छु का जहर उतर जाता है। वैद्यकमें लिखा है...

यः काशमर्दपत्रं वदने प्रक्षिप्य कर्णफूत्कारकम्।
मनुजो ददाति शीघ्रं जयति विषं वृश्चिकानां सः ॥

सूचना—कसौंदी या नीम के पत्तों को वह न चबावे जिसे बिच्छू ने काटा हो; पर दूसरा आदमी चबावे और मुंह की भाफ बाहर न जाने दे। जिसे काटा होगा, वह खुद चबाकर अपने ही कानोंमें फूंक किस तरह मार सकेगा?

(६७) एक या दो तीन जमालगोटे पानी में पीस कर बिच्छू के काटे स्थान पर लगा दो और साथ ही इस में से ज़रा सा लेकर नेत्रोंमें आँज दो। भयंकर बिच्छू का ज़हर फौरन उतर कर रोगी हँसने लगेगा। परीक्षित है।

(६८) चिरचिरे या अपामार्ग की जड़, पानी के साथ, सिल पर पीस कर बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने और इसी जड़ को मुँह में रख कर चबाने और रस चूसनेसे बिच्छूका ज़हर तत्काल उतर जाता है। देखनेवाले कहते हैं, जादू है। हमने दस बीस बार परीक्षा की, इस जड़ी को कभी फेल होते नहीं देखा। डबल परीक्षित है।

(६९) गोमूत्र और नीबू के रस में तुलसी के पत्ते पीस कर

लेप करो और ऊपर से गोबर गरम करके सुहाता-सुहाता बाँध दो। बिच्छूका विष नष्ट हो जायगा।

(७१) कसौंदी के पत्ते मुँह में रखकर और चबाकर, बिच्छू के काटे हुए आदमी के कान में फूँक मारने से बिच्छूका ज़हर उतर जाता है। वृन्दवैद्यक।

(७२) नीले फूलवाले घमिरा के पत्ते मसल कर सूँघने से बिच्छू का ज़हर तत्काल उतर जाता है।

(७३) ज़हरमोहरे को गुलाबजल में घिस-घिस कर चटाने और इसी को घिस कर डंक की जगह लगाने से बिच्छू और साँप प्रभृति का ज़हर तथा स्थावर विष निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं।

नोट—जहरमोहरा की पहचान हमने इसी भागकी सर्प-विष-चिकित्सामें लिखी है।

(७४) मोरके पंख, मुर्गे के पंख, सैंधा नोन, तेल और घी—इन सब को मिलाकर, इन की धूनी देने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है।

(७५) सिन्दूर, मीठा तेलिया, पारा, सुहागा, चूक, निशोत, सज्जीखार, सोंठ, मिर्च, पीपर, पाँचों नोन, हल्दी, दारुहल्दी, कमलके पत्ते, बच, फिटकरी, अरण्डी की गिरी, कपूर, मँजीठ, चीता और नौसादर—इन सब चीज़ों को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इस चूर्ण को गोमूत्र, गुड़, आकके दूध और थूहर के दूध में मिलाकर साँप, बिच्छू या अन्य विषैले जीवोंके काटे स्थान पर लगाओ। यह विष नाश करने में प्रधान औषधि है। हमने इसे "योगचिन्तामणि" से लिखा है। उक्त ग्रन्थ के प्रायः सभी योग उत्तम होते हैं। इससे उम्मीद है, कि यह नुसखा जैसी प्रशंसा लिखी है वैसा ही होगा। इसमें सभी चीज़ें विषनाशक हैं। कहते हैं, इस योग के कहनेवाले सारंगराज हैं।

(७६) हींग हरताल और बिजौरे नीबू का रस—इन तीनों को खरल करके गोलियाँ बना लो। जब किसी को बिच्छू काटे, इन

गोलियों को पानी के साथ पीस कर, काटे हुए स्थान पर इनका लेप कर दो और इन्हीं में से कुछ लेकर नेत्रों में आँज दो। अच्छी चीज़ है। वैद्यों को पहले से तैयार करके पास रखनी चाहियें।

(७७) कबूतर की बीट, हरड़, तगर और सोंठ,—इनको बिजौरे नीबू के रस में मिलाकर रोगी को देने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। वाग्भट्ट महाराज लिखते हैं, यह "परमोवृश्चिकागदः" है; यानी बिच्छू के काटे की श्रेष्ठ दवा है।

(७८) करंजुवा, कोहका पेड, लिहसौड़े का पेड़, गोकर्णी और कुड़ा—इन सब पेड़ों के फूलों को दही के मस्तु में पीसकर बिच्छू के डंक-मारे स्थान पर लगाना चाहिये।

(७९) सोंठ, कबूतर की बीट, बिजौरे का रस, हरताल और सैंधानमक,—इनको महीन पीसकर, बिच्छू के काटे स्थान पर लेप करने से बिच्छू का ज़हर फौरन ही उतर जाता है।

(८०) अगर बिच्छू के काटने पर, ज़हर का ज़ोर किसी लेप या अञ्जन और खाने की दवा से न टूटे, तो एक तिल भर से लगाकर दो, चार, छे और आठ जौ भर तक "शुद्ध सींगिया विष" या "शुद्ध वच्छनाभ विष" अथवा और कोई उत्तम विष रोगीको खिलाओ और इन्हींका डंक मारी हुई जगह पर लेप भी करो। याद रखो, यह अन्त की दवा है। विष खिला कर गाय का घी बराबर पिलाते रहो। घी ही विष का अनुपान है।

(८१) बच, हींग, बायबिडंग, सैंधानोन, गजपीपल, पाठा, काला अतीस, सोंठ, कालीमिर्च और पीपर—इन दसों दवाओं को "दशांग औषध" कहते हैं। यह दशांग औषध काश्यप की रची हुई है। इस दवाके पीने से मनुष्य समस्त ज़हरीले जानवरों के विष को जीतता है।

नोट—इन दवाओं को बराबर-बराबर लेकर, कूट-पीस कर चूर्ण बना लेना चाहिये। समय पर फाँक कर, ऊपरसे पानी पीना चाहिये। अगर यह पानीके साथ पीस कर और पानी मेंही घोल कर पीयी जावे, तो बहुत ही जल्दी लाभ हो। पर साथही

सेंधानोन मिले हुए घी से डंक मारे स्थान को बारम्बार सींचना चाहिये। बिजौरे के रस और गोमूत्र में पिसे हुए सँभालू के फूलों का लेप करना चाहिये अथवा ताज़ा गोबर या खली को गरम करके, उनका सुहाता-सुहाता लेप करना चाहिये अथवा इन्हें सुहाता-सुहाता गरम बाँध देना चाहिये। पीने के लिये घी और शहद मिला हुआ दूध या ज़ियादा चीनी डाला हुआ दूध देना चाहिये।

(८२) हल्दी, सैंधानोंन, सोंठ, मिर्च, पीपर और सिरस के फल या फूल—इन सब का चूर्ण बना लो। बिच्छू की डंक मारी हुई जगह को स्वेदित करके, इसी चूर्ण से उसे घिसना चाहिये।

नोट—बिच्छू की डंक मारी हुई जगह में पसीना निकालने को महर्षि वाग्भट्ट ने जिस तरह अच्छा कहा है; उसी तरह तिब्बे अकबरी के लेखक ने भी इसे अच्छा बताया है।

(८३) बिच्छू के काटे स्थान पर पहले ज़रा सा चूना लगाओ, फिर ऊपर से गंधक का तेज़ाब लगा दो। फौरन आराम हो जायगा। परीक्षित है।

(८४) बबूल के पत्तों को चिलम में रखकर, तमाखू की तरह पीने और साथ ही डंक-स्थान पर मदार का दूध लगाने से बिच्छू का ज़हर उतर जाता है। परीक्षित है।

(८५) काष्टिक या कारबोलिक ऐसिड से बिच्छू के काटे स्थान को जला दो। आराम हो जायगा ; विष ऊपर नहीं चढ़ेगा।

(८६) बिच्छू की काटी हुई जगह पर ऐमोनिया लगाओ और उसे ही नाक में भी सुँघाओ।

नोट—अगर बिच्छू बहुत जहरीला हो, शरीर में पसीने बहुत आते हों, तो शरीर को गरम रखने वाली कोई दवा दो और चाय या काफी पिलाते रहो।

(८७) बेर की पत्तियों को पानी के साथ पीस कर, बिच्छू के काटे स्थान पर लेप करने से ज़हर उतर जाता है।

(८८) लाल और गोल लटजीरे के पत्ते खाने से तत्काल बिच्छू का ज़हर उतर जाता है और मनुष्य सुखी हो जाता है।

(८६) काली तुलसी का रस और नमक मिलाकर, दो तीन बार लगाने से बिच्छू और साँप का विष उतर जाता है। जहरीले जानवरों के विष पर तुलसी रामबाण है।

नोट—तुलसी का रस लगाने से काले भौंरे और बर्र वगैरः का काटा हुआ आराम हो जाता है। कानमें एक या दो बूंद तुलसी का रस डालने और तुलसी का ही रस शहद और नमक मिलाकर पीने से कान का दर्द आराम हो जाता है। सेंधानोन और काली तुलसी का रस, ताम्बे के बरतन में गरम करके, नाक में चार छै बार डालने से नाक से बदबू वगैरः आना बन्द हो जाता है। तुलसी का रस ३० बूँद, कच्चे कपास के फूलोंका रस ३० बूँद, लहसन का रस ३० बूँद और मधु १॥ मास,—इनको मिला कर कान में डालने से कान का दर्द अवश्य नाश हो जाता है।

मूषक-विष-चिकित्सा
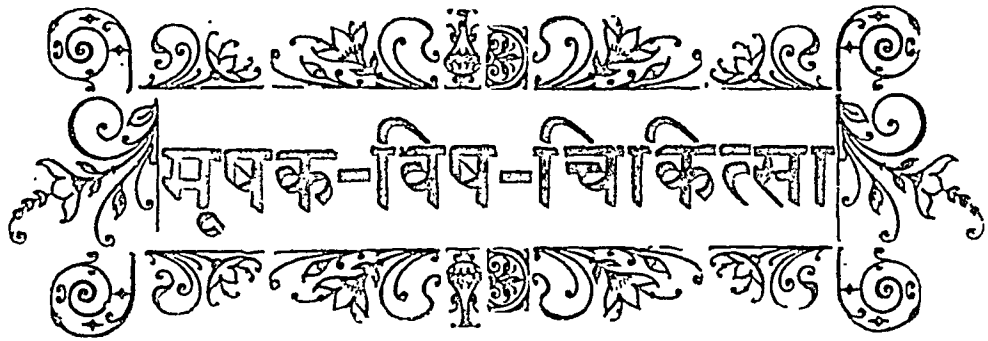
लापरवाही का नतीजा—प्राणनाश।

आजकलके पाश्चात्य डाक्टर साँप और बावले कुत्ते प्रभृति ज़हरीले जानवरों के काटे हुए मनुष्यों की प्राणरक्षा की जितनी फिक्र या खोज करते या कर रहे हैं, उसकी शतांश फिक्र भी इस छोटे से जीव—चूहेके विष से प्राणियों को बचानेकी नहीं करते, यह बड़े ही खेदकी बात है। सर्व साधारण इस को मामूली जानवर समझ कर, इसके विष की भयंकरता और दुर्निवारता न जानने के कारण, इस के काटने की उतनी परवा नहीं करते, यह भारी नादानी है। सर्प-बिच्छू प्रभृति के काटने पर, उनका विष फौरन ही भयंकर वेदना करता और चढ़ता है, अतः लोग सुचिकित्सा होने से बहुधा बच भी जाते हैं; पर ज़हरीले चूहों का विष प्रथम तो उतनी तकलीफ नहीं देता; दूसरे

अनेक बार मालूम भी नहीं होता कि, हमारे शरीर में चूहे का विष प्रवेश कर गया है; तीसरे चूहे के विषके खून में मिलने से जो लक्षण देखने में आते हैं, वे वातरक्त या उपदंश आदिके लक्षणों से मिल जाते हैं, अतः हर तरह धोखा होता है और मनुष्य धीरे-धीरे अनेक रोगों का शिकार होकर मौत के मुँह में चला जाता है।

धोखा होने के कारण।

चूहों का विष और ज़हरीले जानवरों की तरह केवल दाढ़-दाँतों या नख वगैरः किसी एक ही अङ्ग में नहीं होता। चूहों का विष पाँच जगह रहता है:—

(१) वीर्य में। (२) पेशाब में।
(३) पाखाने में। (४) नाखूनों में।
(५) दाढ़ों में।

यद्यपि मूषक-विष के रहने के पाँच स्थान हैं, पर प्रधान विष चूहों के पेशाब और वीर्य में ही होता है। हर घर में कमोबेश चूहे रहते हैं। वे घर के कपड़े-लत्तों, खाने-पीने के पदार्थों, वर्त्तनों तथा अन्यान्य चीज़ों में बेखटके घूमते, बैठते, रहते और मौज करते हैं। जब उन्हें पाखाने पेशाब की हाजत होती है, उन्हीं सब में पेशाब कर देते; वहीं पाखाना फिर देते और वहीं अपना वीर्य भी त्याग देते हैं। इस के सिवा, ज़मीन पर मल-मूत्र और वीर्य डालने में तो उन्हें कभी रुकावट होती ही नहीं। इन के मल-मूत्र प्रभृति से ख़राब हुए कपड़ों को प्रायः सभी लोग पहनते, ओढ़ते और बिछाते हैं, अथवा इन के मल-मूत्र आदि से ख़राब हुई ज़मीन पर अपने कपड़े रखते, बिछाते और सोते हैं। चूहों का मल-मूत्र या वीर्य कपड़ों प्रभृति से मनुष्य-शरीर में घुस जाता है; यानी उन का और शरीर का स्पर्श होते ही विष का असर शरीर में हो जाता है। मज़ा यह कि, उन का ज़हर इस तरह शरीर में घुस जाता और अपना काम करने लगता है, पर मनुष्य को कुछ भी मालूम नहीं होता। लेकिन जब वह—काल और कारण मिल

जाने से—कुपित होता है,तब उस के विकार मालूम होते हैं। पर मनुष्य उस समय भी नहीं समझता, कि यह सब मूषक महाराज की कृपा का नतीजा है। अब आप ही समझिये कि, यह धोखा होना नहीं तो क्या है ?

इतना ही नहीं, जब चूहे के विष के विकार प्रकट होते हैं, तब भी नहीं मालूम होता, कि यह गणेशवाहन के विष का फल है। क्योंकि चूहे के विष के प्रभाव से मनुष्य के शरीर में ज्वर, अरुचि, रोमाञ्च आदि उपद्रव होते और चमड़े पर चकत्ते से हो जाते हैं। चकत्ते वगैरः वातरक्त, रक्तविकार और उपदंश रोग में भी होते हैं। इससे अच्छे-अच्छे अनुभवी वैद्य-डाक्टर भी धोखा खा जाते हैं। कोई उपदंश को दवा देता है, तो कोई वातरक्त-नाशक औषधि देता है, पर असल तह तक कोई नहीं पहुँचता। यद्यपि अनेक बार अटकल पच्चू दवा लग जाती है, पर रोग का निदान ठीक हुए बिना बहुधा रोग आराम नहीं होता। कुत्ता काटता है, तो उसका विष तत्काल ही कोप नहीं करता, काटते ही हड़कवाय नहीं होती, समय और कारण मिलने पर हड़कवाय होती है। इसी तरह चूहेके काटने या और तरह से शरीरमें उसका विष घुस जाने से तत्काल ही विकार नज़र नहीं आते, समय और काल पाकर विकार मालूम होते हैं। पर कुत्ते के काटने पर ज्योंही हड़कवाय होती है, लोग समझ लेते हैं, कि अमुक दिन कुत्ते ने काटा था ; पर चूहे के विषसे तो कोई ऐसी बात नज़र नहीं आती। कौन जाने कब किस वस्त्र प्रभृति के शरीर से छू जाने से चूहे का विष शरीर में घुस गया ? इस तरह चूहे के विष के मनुष्य-शरीर में प्रवेश कर जाने पर धोखा ही होता है। इसी से उचित चिकित्सा नहीं होती और चूहेका विष धीरे-धीरे जीवनी-शक्ति का ह्रास करके, अन्त में मनुष्य के प्राण हर लेता है।

साँप वाले घर में न रहने, साँप को घर से किसी तरह निकाल बाहर करने या मार डालने की सभी विद्वानों ने राय दी है। नीतिकारोंने भी लिखा है:—

दुष्टा भार्या शठं मित्रं भृत्योश्च उत्तरदायकः।
ससर्पे च गृहे वासो मृत्युरेव न संशयः॥

दुष्टा पत्नी, दग़ाबाज़ मित्र, जवाबदिही करने वाला नौकर और साँप वाला घर—ये सब मौत की निशानी हैं; अतः इन्हें त्याग देना चाहिये। नीतिज्ञोंने इन सबके त्याग देनेकी सलाहदी है, पर चूहे भगाने या चूहों से अलग रहने के लिये इतना ज़ोर किसी ने भी नहीं दिया है !!

हमने देखा है, अनेकों गृहस्थों के घरों में चूहों की पल्टन-को-पल्टन रहती हैं। आदमी को देखते ही ये बिलों में घुस जाते हैं, पर ज्योंही आदमी हटा कि ये कपड़ों में घुसते, खाने-पीने के पदार्थों पर ताक लगाते और कोई चीज़ खुली नहीं मिलती तो उसे खोलते और ढक्कन हटाते हैं; और यदि खाने-पीने के पदार्थ खुले हुए मिल जाते हैं, तो आनन्द से उन्हें खाते, उन्हीं पर मल-मूत्र त्यागते और फिर बिलों में घुस जाते हैं। गृहस्थों की कैसी भयङ्कर भूल है ! बेचारे अनजान गृहस्थ क्या जानें कि, इन चूहों की वजह से हमें किन-किन प्राणनाशक रोगों का शिकार होना पड़ता है ? इसी से वे इन्हें घर से निकालने की विशेष चेष्टा नहीं करते। सर्प-बिच्छू आदि को देखते ही मनुष्य उन्हें मार डालता है; पागल कुत्ते को देखकर भंगी या अन्य लोग उसे गोली या लाठी से मार डालते हैं; पर चूहों की उतनी पर्वा नहीं करते ! गृहस्थों को इन घोर प्राणघातक जीवों से बचने की चेष्टा अवश्य करनी चाहिये; क्योंकि निर्विष चूहों में ही विषैले चूहे भी मिले रहते हैं। मालूम नहीं होता, कौनसा चूहा विषैला है। अतः सभी चूहों को घर से निकाल देना परमावश्यक है। बहुत से अन्ध-विश्वासी चूहों को गणेशजी का वाहन या सवारी समझ कर नहीं छेड़ते। वे समझते हैं कि, गणेशजी नाराज़ हो जायँगे। अब इस युग में ऐसा अन्धविश्वास ठीक नहीं। अतः हम चूहों को भगा देने के चन्द उपाय लिखते हैं:—

चूहे भगाने के उपाय।

(१) फिटकरी को पीस कर चूहों के बिलों में डालदो और जहाँ चूहों की ज़ियादा आमदरफ्त हो वहाँ फैला दो। चूहे फिटकरी की गन्ध से भागते हैं।

(२) एक चूहे को पकड़ कर और उस की खाल उतार कर घर में छोड़ दो अथवा उसके फोते निकाल कर छोड़ दो। इस उपाय से सब चूहे भाग जायेंगे।

(३) एक चूहे को नीलके रंग में डुबोकर छोड़ दो। उसे देखते ही सब चूहे बिल छोड़ कर और जगह भाग जायँगे। जहाँ-जहाँ वह नीला चूहा जायगा, वहाँ-वहाँ भागड़ मच जायगी।

(४) भाँगके बीज और केशर को आटेमें मिलाकर गोलियाँ बनालो और बिलों में डाल दो। सब चूहे खा-खाकर मर जायँगे।

(५) संखिया लाकर आटे में मिला लो और पानी के साथ गूँद कर गोलियाँ बना लो। इन गोलयों को बिलों में डाल दो। चूहे इन गोलियों को खा-खाकर मर जायेंगे, बशर्त्ते कि उन्हें कहीं जल पीने को न मिले। अगर जल मिल जायगा, तो बच जायँगे।

(६) गायकी चरबी घर में जलाने से चूहे भाग जाते हैं।

चूहों के विष से बचने के उपाय।

जिस तरह मनुष्यको साँप, बिच्छू और कनखजूरे प्रभृतिसे बचने की ज़रूरत है, उसी तरह चूहों से भी बचने की ज़रूरत है, अतः हम चूहों के विष से बचने के चन्द उपाय लिखते हैं:—

(१) आपके घर में चूहों के बिल हों, तो हज़ार काम छोड़ कर उन्हें बन्द कर या करवा दो। इनके बिलों में ही साँप या कनखजूरे अथवा और प्राणघाती जीव आकर रह जाते हैं।

(२) आप के मकान में जितनी मोरियाँ हों, उन सब में लोहे या पत्थर की ऐसी जालियाँ लगवा दो, जिन में होकर पानी तो निकल जाय, पर चूहे या अन्य जानवर न आ जा सकें। चूहे मोरियों में बहुत रहते हैं।

(३) घरके कोनों या और स्थानों में फालतू चीज़ों का ढेर मत लगा रखो। ज़रूरत की चीज़ों के सिवा, कोई चीज़ घर में मत रखो। बहुत से मूर्ख टूटे-फूटे कनस्तर, हाँडी-कूड़े, मैले चीथड़े या ऐसी ही और फालतू चीज़ें रखकर रोग मोल लेते हैं।

(४) ज़रूरी सामान को, जो रोज़ काम में न आता हो, ट्रङ्कों या सन्दूक़ों में रखो। सन्दूक़ों को वैञ्चों या तिपाइयों पर ऊँचे रखो, जिससे उनके नीचे रोज़ झाड़ू लग सके और चूहे, साँप, कनखजूरे या और जीव वहाँ अपना अड्डा न जमा सकें। हर समय पहननेके कपड़ोंको ऐसी अलगनियों या खूँटियों पर टाँगो, जिन पर चूहे न पहुँच सकें : क्योंकि चूहे ज़रा सा सहारा मिलने से दीवारों पर भी चढ़ जाते और उन पर मल-मूत्र त्याग आते हैं।

(५) खाने-पीने के पदार्थ सदा ढके रखो ; भूलकर भी खुले मत रखो। ज़रासी ग़फ़लत से प्राण जाने की आशङ्का है। क्योंकि खाने-पीने की चीज़ों पर अगर चूहे, मकड़ी, छिपकली और मक्खी आदि पहुँच गये और उन पर विष छोड़ गये, तो आप कैसे जानेंगे ? उन्हें जो भी खायगा, प्राणोंसे हाथ धोयेगा। मक्खियाँ विषैले कीड़े ला-लाकर उन चीज़ों पर छोड़ देती हैं और चूहे मल-मूत्र त्यागकर उन्हें विष-समान बना देते हैं। अतः हम फिर ज़ोर देकर कहते हैं, कि आप खाने-पीने के पदार्थ ढक कर बन्द आलमारियों में रखो। इस काम में ज़रा भी भूल मत करो।

(६) चूहों के पेशाब और मलमूत्र से ख़राब हुए नीले-नीले बर्तनों को बिना खूब साफ किये काम में मत लाओ। जिन घरों में बहुत सा लोहालक्कड़ पड़ा हो, उन घरों में मत जाओ, क्योंकि वहाँ चूहे प्रभृति अनेक ज़हरीले जानवर रहते और विष त्यागते हैं। वह विष आपके

कपड़ों या शरीर में लगकर आप को अनेक रोगों में फँसा देगा। अगर वह कपड़ों या आपके शरीर से न लगेगा, तो साँस द्वारा आपके शरीर में घुसेगा। फिर धीरे-धीरे आप की जीवनी शक्ति का नाश करके आपको मार डालेगा।

(७) हमेशा धोवी के धुले साफ कपड़े पहनो। अगर उन पर ज़रा सा भी दाग़ या नीले-पीले रोग से बहते दीखें, तो आप उन्हें फौरन धोवी को देदो, भूलकर भी न पहनो। अगर आप ग़रीब हैं, तो उन्हें स्वयं साबुन से धोकर पहनो। सब से अच्छा तो यही है कि, आप रोज़ धुले हुए कपड़े पहनें। अंगरेज लोग ऐसा ही करते हैं। आजका कपड़ा कल धुलवाकर पहनते हैं। अँगरेज़ अफसर तो धोवियों को नौकर रखते हैं।

(८) अपने घर में रोज़ गंधक, लोवान या कपूर की धूनी दिया करो, जिससे विषैली हवा निकल जाय और अनेक विषैले कीड़े भी भाग जायँ। जैसेः—

(क) छरीला और फिटकरी की धूआँ से मच्छर भाग जाते हैं।

(ख) गंधक या कनेर के पत्तों की गन्ध से पिस्सू भाग जाते हैं।

(ग) हरताल और नकछिकनी की धूआँ से मक्खियाँ भाग जाती हैं।

(घ) गंधक की धूआँ और लहसन से वर्र या ततैये भाग जाते हैं।

(ङ) अफीम, कालादाना, कन्द, पहाड़ी वकरी का सींग और गंधक—इन सब को मिला कर धूनी देने से समस्त कीड़े-मकोड़े भाग जाते हैं।

(९) ताज़ा या गरम जल से रोज़ स्नान किया करो। अगर पानी में थोड़ा सा कपूर मिला लिया करो, तो और भी अच्छा; क्योंकि कपूर से प्रायः सभी कीड़े नष्ट हो जाते हैं। विष नाश करने की शक्ति भी कपूर में खूब है। पहले के अमीर कपूर के चिराग़ इसी ग़रज से जलवाते थे। कपूर की आरती का भी यही मतलब है। इनसे विषैली हवा निकल जाती और अनेक प्रकार के कीड़े घर छोड़ कर भाग जाते हैं। चन्दन, कपूर और सुगन्धवाला का शरीर पर लेप करना भी बड़ा

गुणकारी है। नहाकर ऐसा कोई लेप, मौसम के अनुसार, अवश्य करना चाहिये।

(१०) जहाँ तक हो, मकान को खूब साफ रखो। ज़रा सा भी कूड़ा-करकट मत रहने दो। इसके सिवा, हो सके तो नित्य, नहीं तो, चौथे पाँचवें दिन साफ पानी या पानी में कोई विषनाशक दवा मिलाकर उसी से घर धुलवा देना बहुत ही अच्छा है। इस तरह ज़मीन वगैरः में लगा हुआ चूहे प्रभृति का विष धुल कर बह जायगा।

(११) दूसरे आदमी के मैले या साफ कैसे भी कपड़े हरगिज़ मत पहनो। पराये तौलिये या अँगोछे से शरीर मत पोंछो। कौन जाने किसके कपड़ों में कौनसा विष हो? हमारे यहाँ आजकल एक वात-रक्त या पारे के दोष का रोगी कभी-कभी आता है। सारे शहर के चिकित्सक उसका इलाज कर चुके, पर वह आराम नहीं होता। वह हम से गज़ भर दूर बैठता है, पर उस के शरीर को छूकर जो हवा आती और हमारे शरीर में लगती है, फौरन खुजली सी चला देती है। उसके जाते ही खुजली बन्द हो जाती है। अगर कोई शख्स ऐसे आदमी के कपड़े पहने या उसके वस्त्र से शरीर रगड़े, तो उसे वही रोग हुए बिना न रहे। इसी से कहते हैं, किसी के साफ या मैले कैसे भी कपड़े न पहनो और न छूओ।

आजकल के विद्वानों की अनुभूत बातें।

अहमदाबाद के "कल्पतरु" में चूहे के विष पर एक उपयोगी लेख किसी सज्जन ने परोपकारार्थ छपवाया था। उस में लिखा है:—"चूहा मनुष्य को जिस युक्तिसे काटता है, वह भी सचमुच ही आश्चर्य्यकारी बात है। जिस समय मनुष्य नींद में ग़र्क़ होता है, चूहा अपने बिल या छप्पर में से नीचे उतरता है। बहुधा सोते हुए आदमी की किसी उँगली को ही वह पसन्द करता है। पहले वह अपनी पसन्द की जगह पर फूँक

मारता है। फूँक मारने से शायद वह स्थान बहरा या सूना हो जाता हो। प्रायः ज़हरीले चूहे की लारमें चमड़े के स्पर्श ज्ञानको नाश करने की शक्ति रहती है। चूहे की फूँक में ऐसी ही कोई विचित्र शक्ति होती है, तभी तो वह जब तक काटता और ख़ून निकालता है, मनुष्य को कुछ ख़बर नहीं होती, वह सोता रहता है। फूँक मारने के बाद चूहा जीभ से उस भाग को चाटता और फिर सूँघता है। सोते आदमी की उंगली अथवा अन्य किसी भाग पर (१) फूँकने की, (२) लार लगाने की, और (३) चाटने की—इन तीन क्रियाओं के करने से उसे यह मालूम हो जाता है, कि मेरी शिकार सोती है—जागती नहीं। अपनी क्रिया सफल हुई समझ कर, वह फिर काटता है।

"उसका दंश कुछ गहरा नहीं होता; तोभी इतना गहरा तो होता है, जितने में उस के दंश का विष चमड़े के नीचे ख़ून में मिल जावे। कुछ गहराई होती है, तभी तो ख़ून भी निकल आता है। चूहे के काट कर भाग जानेके बाद मनुष्य जागता है। जागते ही उसे किसी प्राणी के काट जानेका भय होता है, पर वह इस बात का निश्चय नहीं कर सकता, कि किसने काटा है—साँपने, चूहेने या और किसी प्राणीने। साँपके काटने पर तो तुरन्त मालूम हो जाता है, क्योंकि दंशस्थान में ज़ोर से झन-झनाहट या पीड़ा होती है और वहाँ दाढ़ों के चिह्न दीखते हैं; पर चूहेका विष तो उस के दंश के समान युक्तियुक्त व गुप्त होता है। चूहे के दंश की पीड़ा अधिक न होने के कारण, मनुष्य उसकी उपेक्षा करता है। मिर्च और खटाई खाता रहता है। थोड़े ही दिनों बाद, समय और कारण मिलने से, चूहेका विष प्रत्यक्ष होने लगता है। दो सप्ताह तक विषका पता नहीं लगता। किसी-किसी चूहेका विष जल्दी ही प्रकट होने लगता है। दंश का भाग या काटी हुई जगह सूज जाती है। चूहे के विष का भाग बहुधा लाल होता है, सूजन में पीड़ा भी बहुत होती है, शरीर में दाह या जलन और दिल में घबराहट होती है। चूहे के विष के ये तीक्ष्ण लक्षण महीने दो महीने में शान्त हो जाते हैं; पर

सूजन नहीं उतरती। वह सख़्त हो जाती है। इस विष में यह विलक्षणता है, कि थोड़े दिनों तक रोगी को आराम मालूम होता है। फिर कुछ दिनों के बाद, वही रोग पल्टा खाकर पुनः उभड़ आता है। उस समय रोगीको ज्वर होता है। यह क्रम कई साल तक चलता है।"

एक सज्जन लिखते हैं:—"चूहा काटता है, तो ज़ियादा दर्द नहीं होता। सवेरे उठने पर काटा हुआ मालूम होता है। चूहा अगर ज़हरीला नहीं होता, तब तो कुछ हानि नहीं होती, परन्तु अगर ज़हरीला होता है, तो कुछ दिनों में विष रक्त में मिल कर चेपक सा उठाता है। अगर रोयें वाली जगह पर काटा होता है, तो रतवा रोग की तरह उस जगह सूजन आ जाती है। इसलिये ज्योंही चूहा काटे, उसे ज़हरीला समझकर यथोचित उपाय करो। आठ दिनों तक 'कालीपाढ़' का काढ़ा पिलाओ। काली पाढ़ के बदले अगर "सोनामक्खी के पत्ते" उबालकर कुछ दिन पिलाये जायँ, तो चूहे का विष पाखाने की राह से निकल जाय। काटी हुई जगह पर या उसके ज़हर से जो स्थान फूल उठे वहाँ, "दशाङ्ग लेप" से काम लो; यानी उसे शीतल पानी या गुलाबजलमें घोट कर चूहे के काटे हुए स्थान पर लगाओ। यह लेप फेल नहीं होता।"

चूहे के विष पर आयुर्वेद की बातें।

सुश्रुत-कल्पस्थान में चूहे अठारह तरह के लिखे हैं। वहाँ उन के अलग-अलग नाम, उनके विषके लक्षण और चिकित्सा भी अलग-अलग लिखी है। पर जिस तरह बंगसेन और भावमिश्र प्रभृति विद्वानोंने सब तरह के चूहों के विषके अलग-अलग लक्षण और चिकित्सा नहीं लिखी; उसी तरह हम भी अलग-अलग न लिखकर, उनका ही अनुकरण करते हैं, क्योंकि पाठकों को वह सब झंझट मालूम होगा।

चूहे के विष की प्रवृत्ति और लक्षण।

जहाँ ज़हरीले चूहोंका शुक्र या वीर्य गिरता है अथवा उनके वीर्य से

लिहसे या सने हुए कपड़ों से मनुष्य का शरीर छू जाता है ; यानी ऐसे कपड़े या अन्य पदार्थ मनुष्य-शरीर से छू जाते हैं अथवा चूहों के नाखुन, दाँत, मल और मूत्रका मनुष्य-शरीरसे स्पर्श हो जाता है, तो शरीरका खून दूषित होने लगता है। यद्यपि इसके चिह्न जल्दी ही नज़र नहीं आते, पर कुछ दिनों बाद शरीरमें गाँठें हो जाती हैं, सूजन आती है, कर्णिका—किनारेदार चिह्न, मण्डल—चकत्ते, दारुण फुन्सियाँ, विसर्प और किटिभ हो जाते हैं। जोड़ों में तीव्र वेदना और फूटनी होती तथा ज्वर चढ़ आता है। इनके अलावः दारुण मूर्च्छा—बेहोशी, अत्यन्त निर्बलता, अरुचि, श्वास, कम्प और रोमहर्ष,—ये लक्षण होते हैं। ये लक्षण "सुश्रुत" में लिखे हैं। किन्तु वाग्भट्टने ज्वर की जगह शीतज्वर और प्यास तथा कफ में लिपटे हुए बहुत ही छोटे-छोटे चूहों के आकार के कीड़ों का वमन या क़य में निकलना अधिक लिखा है।

वंगसेन और भावप्रकाश में लिखा है:—चूहे के काटने से खून पीला पड़ जाता है ; शरीर में चकत्ते उठ आते हैं ; ज्वर, अरुचि और रोमाञ्च होते हैं, एवं शरीर में दाह या जलन होती है। अगर ये लक्षण हों, तो समझना चाहिये कि, दूषी विष वाले चूहे ने काटा है।

असाध्य विष वाले चूहेके काटनेसे मूर्च्छा—बेहोशी, शरीरमें सूजन, शरीर का रंग और-का-और हो जाना, शब्द या आवाज़ को ठीक तरह से न सुनना, ज्वर, सिर में भारीपन, लार गिरना और खून की क़य होना—ये लक्षण होते हैं। अगर ऐसे लक्षण हों, तो समझना चाहिये, कि ज़हरी चूहे ने काटा है।

वाग्भट्टने लिखा है, उपरोक्त असाध्य लक्षणों वाले तथा जिन की वस्ति सूजी हो, होठ विवर्ण हो गये हों और चूहे के आकार की गाँठें हो रही हों, ऐसे चूहे के विषवाले रोगियों को वैद्य त्याग दे ; यानी ये असाध्य हैं।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है:—चूहे के काटने से अंग सूजकर घायल हो जाता है, दर्द होता हैं और काटा हुआ स्थान नीला या काला हो जाता

है। इस के सिवा, काटा हुआ स्थान निकम्मा होकर, भीतर की ओर फैलकर, दूसरे अंगों को उसी तरह ख़राब कर देता है,जिस तरह नासूर कर देता है।

नोट—यूनानी ग्रन्थों में लिखा है, चूहे के काटने पर नीचे लिखे उपाय करोः—

(१) विष को चूस-चूस कर खींचो।

(२) काटी हुई जगह पर पछने लगा कर खून निकालो।

(३) अगर देर होने से काटा स्थान बिगड़ने लगे, तो फस्द खोलो, दस्त कराओ, वमन कराओ,पेशाब लाने वाली और विष नाश करने वाली दवाएँ दो।

(४) विष खाने पर जो उपाय किये जाते हैं, उन्हें करो।
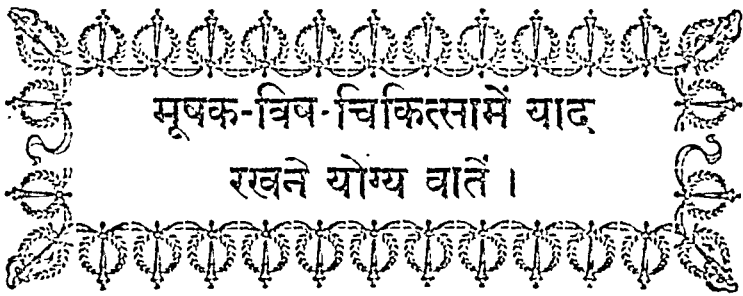
मूषक-विष-चिकित्सामें याद रखने योग्य बातें।

(१) पहले इस बात का निर्णय करो कि, ठीक चूहे ने ही काटा है या और किसी जीवने। बिना निश्चय और निदान किये चिकित्सा आरम्भ मत कर दो।

(२) चिकित्सा करते समय रोगी, रोग का बलाबल, अवस्था, प्रकृति, देश और काल आदि का विचार कर लो, तब इलाज करो।

(३) जब चूहे के विष का निश्चय हो जाय, पहले शिरावेध कर खून निकाल दो और कोई विषनाशक रक्तशोधक दवा रोगी को पिलाओ या खिलाओ। चूहे के दंशको तपाये हुए पत्थर या शीशे से दाग दो। अगर उसे न जलाओगे, तो बक़ौल महर्षि वाग्भट्ट के तीव्र वेदना वाली कर्णिका पैदा हो जायगी। दंशको दग्ध करके या जला कर ऊपर से— सिरस, हल्दी, कूट, केशर और गिलोय को पीस कर लेप कर दो। अगर दागने की इच्छा न हो, तो नश्तर से दंश-स्थान को चीर कर या

पछने लगाकर, वहाँ का ख़राब खून एकदम निकाल दो। इस काम के बाद भी वही सिरस आदि का लेप कर दो या घर का धूआँ, मँजीठ, हल्दी और सैंधे नोनको पीस कर लेप कर दो। खुलासा यह है:—

(क) काटी हुई जगह को दाग़ दो और ऊपर से दवाओं का लेप कर दो। अथवा नश्तर प्रभृति से वहाँ का ख़राब खून निकाल कर दवाओं का लेप करो।

(ख) शिरा वेध कर या फस्द खोलकर ख़राब खून और विष को निकाल दो।

(ग) खाने-पीने को खून साफ करने और ज़हर नाश करने वाली दवा दो। ये आरम्भिक या शुरू के उपाय हैं। पहले यही करने चाहियें।

(४) अगर विष आमाशय में पहुँच जाय—जब विष आमाशय में पहुँचेगा लार बहने लगेगी—तो नीचे लिखे काढ़े पिलाकर वमन करानी चाहियें:—

(क) अरलू की जड़, जंगली तोरई की जड़, मैनफल और देव-दालीका काढ़ा पिलाकर वमन कराओ ; पर पहले दही पिला दो, क्योंकि ख़ाली पेट वमन कराना ठीक नहीं है।

(ख) वच, मैनफल, जीमूत और कूट को गोमूत्र में पीसकर, दही के साथ पिलाओ। इसके पीने से क़य होंगी और सब तरह के चूहों का विष नष्ट हो जायगा।

(ग) दही पिला कर, जंगली कड़वी तोरई, अरलू और अंकोट का काढ़ा पिलाओ। इस से भी वमन होकर विष नष्ट हो जायगा।

(घ) कड़वी तोरई, सिरस का फल, जीमूत और मैनफल—इनके चूर्ण को दही के साथ पिलाओ। इस से भी वमन के द्वारा विष निकल जायगा।

(५) अगर ज़रूरत समझो, तो जुलाब भी दे सकते हो ; वाग्भट्टजी जुलाब की राय देते हैं। निशोथ, कालादाना और त्रिफला,—इन तीनों

का कल्क सेवन कराओ। इस जुलाब से दस्त भी होंगे और ज़हर भी निकल जायगा।

(६) इस रोग में भ्रम और दारुण मूर्च्छा भी होती है ; और ये उपद्रव दिल और दिमाग़ पर विष का विशेष प्रभाव हुए बिना हो नहीं सकते, अतः इस रोग में नस्य और अञ्जन भी काम में लाने चाहियें—

(क) गोबर के रस में सोंठ, मिर्च और पीपर के चूर्ण को पीस कर नेत्रों में आँजो।

(ख) सँभालू की जड़, बिल्ली की हड्डी और तगर,—इन को पानी में पीस कर नस्य दो। इससे चूहेका विष नष्ट हो जाता है।

(७) केवल लगाने, सुँघाने या आँजने की दवाओं से ही काम नहीं चल सकता, अतः कोई उत्तम विषनाशक अगद या और दवा भी देनी चाहिये। सभी तरह के उपाय करने से यह महा भयंकर और दुर्निवार विष शान्त होता है। नीचे की दवाएँ उत्तम हैं :—

(क) सिरस के बीज लाकर आकके दूध में भिगो दो। इसके बाद उन्हें सुखा लो। दूसरे दिन, फिर उनको ताज़ा आकके दूधमें भिगोकर सुखा लो। तीसरे दिन फिर, आक के ताज़ा दूध में उन्हें भिगो कर सुखा लो। ये तीन भावना हुईं। इन भावना दिये बीजों के बराबर पीपर लेकर पीस लो और पानी के साथ घोट कर गोलियाँ बना लो। वाग्भट्ट ने इन गोलियों की बड़ी तारीफ की है। यह अगद साँपके विष, मकड़ी के विष, चूहे के विष, बिच्छू के विष और समस्त कीड़ों के विष को नाश करने वाली है।

(ख) कैथके रस और गोबर के रस में शहद मिलाकर चटाओ।

(ग) सफेद पुनर्नवे की जड़ और त्रिफले को पीस-छान कर चूर्ण करलो। इस चूर्ण को शहद में मिलाकर चटाओ।

(८) दवा खिलाने, पिलाने, लगाने वगैरः से ही काम नहीं चल सकता। रोगी को अपथ्य सेवन से भी बचाना चाहिये। इस रोगवाले को शीतल हवा, पुरवाई हवा, शीतल भोजन, शीतल जलके स्नान, दिन

में सोने, मेह में फिरने और अजीर्ण करनेवाले पदार्थों से अवश्य दूर रखना ज़रूरी है। इस रोग में यह बड़ी बात है, कि मेह बरसने या बादल होने से यह अवश्य ही कुपित होता है। वाग्भट्ट में लिखा है :—

सशेषं मूषकविषं प्रकुप्यत्यभ्रदर्शने।
यथायथं वा कालेषु दोषाणां वृद्धि हेतुषु ॥

बाक़ी रहा हुआ चूहे का विष बादलों के देखने से प्रकुपित होता है अथवा वातादि दोषों के वृद्धिकाल में कुपित होता है

मूषक-विष नाशक नुसखे।

१। वमनकारक दवाएँ—

(क) कड़वी तोरई और सिरस के बीजों से वमन कराओ।

(ख) अरलू, जंगली तोरई, देवदाली और मैनफल के काढ़े से वमन कराओ।

(ग) कड़वी तोरई, सिरसका फल, जीमूत और मैनफल का चूर्ण दही में मिला कर खिलाओ और वमन कराओ।

(घ) सिरस और अंकोलके काढ़े से वमन कराओ।

२। विरेचक या जुलाब की दवाएँ—

(क) निशोथ, दन्ती और त्रिफले के कल्क द्वारा दस्त कराओ।

(ख) निशोथ, कालादाना और त्रिफला—इन के कल्क से दस्त कराओ।

३। लेपकी दवाएँ—

(क) अंकोल की जड़ बकरी के मूत्रमें पीसकर लेप करो।

(ख) करंज की छाल और उसके बीजों को पीसकर लेप करो।

(ग) कैथके बीजों का तेल लगाओ।

(घ) सिरस की जड़ को बकरी के मूत्र में पीसकर लेप करो।

(ङ) सिरस के बीज, नीमके पत्ते और करंजुवेके बीजों की गिरी—इन सबको बराबर ले गाय के मूत्र में पीस कर गोली बना लो। ज़रूरत के समय, गोली को पानी में घिस कर लेप करो।

(च) सिरस, हल्दी, कूट, केशर और गिलोय,—इनको पानी में पीस कर लेप करो।

नोट—ख से च तक के नुसखे परीक्षित हैं।

(छ) काली निशोथ, सफेद गोकर्णी, बेल वृक्ष की जड़ और गिलोय को पीसकर लेप करो।

(ज) घरका धूआँ, मँजीठ, हल्दी और सेंधेनोन को पीस कर लेप करो।

(झ) बच, हींग, वायविडंग, सेंधानोन, गजपीपर, पाठा, अतीस, सोंठ, मिर्च और पीपर—यह "दशांग लेप" है। इस को पानी में पीस कर लगाने और इसी का कल्क पीने से समस्त जहरीले जीवों का विष नष्ट हो जाता है। मूषक-विष पर यह लेप परीक्षित है।

खाने-पीने की औषधियाँ।

(४) सिरस की जड़ को शहद के साथ या चाँवलों के जल के साथ या बकरी के मूत्र के साथ पीने से चूहे का विष नाश हो जाता है। परीक्षित है

(५) अंकोल की जड़का कल्क बकरी के मूत्र के साथ पीने से चूहे का विष शान्त हो जाता है

(६) इन्द्रायण की जड़, अंकोल की जड़, तिलों की जड़, मिश्री, शहद और घी—इन सब को मिला कर पीने से चूहे का दुस्तर विष उतर जाता है। परीक्षित है।

(७) कसूम के फूल, गाय का दाँत, सत्यानाशी, कटेरी, कबूतर की बीट, दन्ती, निशोथ, सेंधानोन, इलायची, पुनर्नवा और राव,—इन सब को एकत्र मिलाकर, दूधके साथ पीने से चूहे का विष दूर होता है।

(८) कैथ के रस को गोबर के रस और शहद में मिलाकर चाटने से चूहे का विष नाश हो जाता है ।

(९) गोरख ककड़ी, बेलगिरी, काकोली की जड़, तिल और मिश्री—इन सबको एकत्र पीसकर, शहद और घी में मिलाकर सेवन करने से चूहे का विष नष्ट हो जाता है ।

(१०) बेलगिरी, काकोली की जड़, कोयल और तिल—इन को शहद और घी में मिला कर सेवन करने से चूहे का विष नष्ट हो जाता है ।

(११) चौलाई की जड़ को पानी के साथ पीसकर कल्क—लुगदी बना लो । फिर लुगदी से चौगुना घी और घी से चौगुना दूध लेकर घी पका लो । इस घी के सेवन करने से चूहेका विष तत्काल नाश हो जाता है ।

(१२) सफेद पुनर्नवे की जड़ और त्रिफला—इनको पीस-छान कर और शहद में मिलाकर पीने से मूषक-विष दूर हो जाता है

(१३) सोंठ, मिर्च, पीपर, कूट, दारुहल्दी, मुलेठी, सेंधानोन, संचर नोन, मालती, नागकेशर और काकोल्यादि मधुरगण की जितनी दवाएँ मिलें—सब को "कैथके रसमें" पीस कर, गायके सींगमें भर कर और उसी से बन्दकर के १५ दिन रखो । इस अगद से विष तो बहुत तरह के नाश होते हैं ; पर चूहेके विष पर तो यह अगद प्रधान ही है

मच्छर के विष की चिकित्सा

सुश्रुत में मच्छर पाँच तरह के लिखे हैं:—

(१) समन्दर के मच्छर ।

(२) परिमण्डल मच्छर=गोल बाँध कर रहने वाले ।

(३) हस्ति मच्छर=बड़े मोटे मच्छर या डाँस ।

(४) काले मच्छर।

(५) पहाड़ी मच्छर।

इन सभी मच्छरों के काटने से स्थान सूज जाता और खुजली बड़े ज़ोर से चलती है। "चरक" में लिखा है, मच्छर के काटने से कुछ-कुछ सूजन और मन्दी-मन्दी पीड़ा होती है। असाध्य कीड़े के काटे घावकी तरह मच्छर का घाव भी कभी-कभी असाध्य हो जाता है। पहले चार प्रकार के मच्छरों का काटा हुआ तो दुःख-सुख से आराम हो भी जाता है, पर पहाड़ी मच्छरों का विष तो असाध्य ही होता है। इन के काटे को अगर मनुष्य नाखूनों से खुजा लेता है, तो अनेक फुन्सियाँ पैदा हो जाती हैं, जो पक जातीं और जलन करती हैं। बहुधा पहाड़ी मच्छरों के काटे आदमी मर भी जाते हैं।

नोट—शरीर पर बादाम का तेल मल कर सोने से मच्छर नहीं काटते।

मच्छर भगाने के उपाय।

(१) सनोवर की लकड़ी की भूसी या उसके छिलकों की धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं।

(२) छरीला और फिटकरी की धूआँ से मच्छर भाग जाते हैं।

(३) सरु की लकड़ी और सरू के पत्ते बिछौने पर रखने से मच्छर खाट के पास नहीं आते।

(४) इन्द्रायण का रस या पानी मकान में छिड़क देने से पिस्सू भाग जाते हैं।

(५) गन्धक की धूनी या कनेर के पत्तों की धूनी से पिस्सू भाग जाते हैं।

(६) सेह की चरबी लकड़ी पर मल कर रख देने से उस पर सारे पिस्सू इकट्ठे हो जाते हैं।

(७) कुंदरु के गोंद की धूनी देने से भी मच्छर भाग जाते हैं।

(८) कनेर के पत्तों का स्वरस ज़मीन और दीवारों पर वारम्बार छिड़कते रहने से मच्छर भाग जाते हैं ।

(९) शरीर पर बादाम का तेल मल कर सोने से मच्छर नहीं काटते । गंधक को महीन पीस कर और तेल में मिला कर, उस की मालिश करके नहा डालने से मच्छर नहीं काटते ; क्योंकि नहाने पर भी, गंधक और तेल का कुछ न कुछ अंश शरीर पर रहा आता है ।

(१०) मकान की दीवारों पर पीली पेवड़ी का या और तरह का पीला रंग पोतने से मच्छर नहीं आते । पीले रंग से मच्छर को घृणा है और नीले रंग से प्रेम है । नीले या ब्ल्यू रंग से पुते मकानों में मच्छर बहुत आते हैं ।

(११) अगर चाहते हो कि, हमारे यहाँ मच्छरों का दौरदौरा कम रहे, तो आप घर को एक दम साफ रखो, कोने कज़ौड़े में मैले कपड़े या मैला मत रखो । घर को सूखा रखो । घर के आस-पास घास-पात या हरे पौधे मत रखो । जहाँ घास-पात, कीचड़ और अँधेरा होता है, वहीं मच्छर ज़ियादा आते हैं ।

(१२) मच्छरों से बचने और रात को सुख की नींद लेने के लिये, पलँगों पर मसहरी लगानी चाहिये । इस के भीतर मच्छर नहीं आते । बंगाल में मसहरी की बड़ी चाल है । यहाँ इसी से चैन मिलता है ।

(१३) घोड़े की दुम के बाल कमरों के द्वारों पर लटकाने से मच्छर कम आते हैं ।

(१४) भूसी, गूगल, गंधक और बारहसिंगे के सींग की धूनी देने से मच्छर भाग जाते हैं ।

मच्छर-विष नाशक नुसखे ।

(१) डाँस के काटे हुए स्थान पर "प्याज़ का रस" लगाने से तत्काल आराम होता है ।

(२) दो तोले कत्था, एक तोले कपूर और आधा तोले सिन्दूर— इन तीनों को पीस कर कपड़े में छान लो। फिर १०१ बार घी या मक्खन काँसी की थाली में धो लो। शेषमें, उस पिसे-छने चूर्ण को घी में खूब मिलाकर एकदिल कर लो। इस मरहम को हर प्रकार के मच्छर, डाँस या पहाड़ी मच्छर के काटे स्थान पर मलो। इस के कई बार मलने से एक ही दिन में सूजन और खुजली वगैर: आराम हो जाती हैं। इन के सिवा, इस मरहम से हर तरह के घाव भी आराम हो जाते हैं। खुजली की पीली-पीली फुन्सियाँ इस से फौरन मिट जाती हैं। जलन शान्त करने में तो यह रामवाण ही है। परीक्षित है।

(३) मच्छर, डाँस तथा अन्य छोटे-मोटे कीड़ों के काटे स्थान पर "अर्क कपूर" लगाने से ज़हर नहीं चढ़ता और सूजन फौरन उतर जाती है।

नोट—अर्क कपूर बनाने की विधि हमारी बनाई "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखी है। यह हर नगर में बना बनाया भी मिलता है।

(४) अगर कान में डाँस या मच्छर घुस, जाय तो कसौंदी के पत्तों का रस निकाल कर कान में डालो। वह मर कर निकल आवेगा।

नोट—मकोय के पत्तों का रस कान में टपकाने से भी सब तरह के कीड़े मर कर निकल आते हैं।

सुश्रुत और चरक में लिखा है, मक्खियाँ छे प्रकार की होती हैं—

(१) कान्तारिका ... ... बनकी मक्खी।

(२) कृष्णा ... ... काली मक्खी।

(३) पिंगलिका ... ... पीली मक्खी ।
(४) मधूलिका ... ... गेंहूके रंग की या मधु मक्खी ।
(५) काषायी ... ... भगवाँ रंग की मक्खी ।
(६) स्थालिका ... ...

कान्तारिका आदि पहली चार प्रकार की मक्खियों के काटने से सूजन और जलन होता है; पर काषायी और स्थालिका के काटने से उपद्रवयुक्त फुन्सियाँ होती हैं ।

"चरक" में लिखा है, पहली पाँचों प्रकार की मक्खियों के काटने से तत्काल फुन्सियाँ होती हैं। उन फुन्सियों का रंग श्याम होता है। उनसे मवाद गिरता और उन में जलन होती है तथा उनके साथ मूर्च्छा और ज्वर भी होते हैं। परन्तु छठी स्थालिका या स्थगिका मक्खी तो प्राणों का नाश ही कर देती है।

नोट—इन मक्खियों में घरेलू मक्खियाँ शामिल नहीं हैं। वे इनसे अलग हैं। ऊपर की छहों प्रकार की मक्खियाँ जहरीली होती हैं।

मक्खी भगाने के उपाय

हिकमत के ग्रन्थों में मक्खियों के भगाने के ये उपाय लिखे हैं—

(१) हरताल और नकछिकनी की धूआँ करो।

(२) पीली हरताल दूध में डाल दो; सारी मक्खियाँ उस में गिर कर मर जायँगी।

(३) काली कुटकी के काढ़े में भी नं० २ का गुण है।

मक्खी-विषनाशक नुसखे।

(१) काली बाम्बी की मिट्टी को गोमूत्र में पीस कर लेप करने से चींटी, मक्खी और मच्छरों का विष नष्ट हो जाता है।

(२) सोया और सेंधानोन एकत्र पीस कर, घी में मिलाकर, लेप करने से मक्खी का विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(३) केशर, तगर, सोंठ, और काली मिर्च—इन चारों को एकत्र पीसकर लेप करने से मक्खी के डंक की पीड़ा शान्त हो जाती है।

(४) मक्खी के काटे स्थान पर सेंधानोन मलने से ज़हर नहीं चढ़ता।

(५) मक्खी की काटी हुई जगह पर सिंगीमुहरा पानी में घिस कर लगा देना अच्छा है।

(६) मक्खी के काटे हुए स्थान पर आक का दूध मलने से अवश्य ज़हर नष्ट हो जाता है।

नोट—बर्र और मक्खीके काटने से एक समान ही जलन, दर्द और सूजन वगैरः उपद्रव होते हैं, इसलिये "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, जो दवाएँ बर्र के जहरको नष्ट करती हैं, वही मक्खी के विष को शान्त करती हैं। हमने बर्र के काटने पर नीचे बहुतसे नुसखे लिखे हैं, पाठक उनसे मक्खीके काटने पर भी काम ले सकते हैं।

बर्रके विषकी चिकित्सा

हिकमत की किताबों में लिखा है, बर्र के डंक मारने से लाल-लाल सूजन और घोर पीड़ा होती है। एक प्रकारकी बर्र और होती है, जिस का सिर बड़ा और काला होता है तथा जिसके ऊपर बूँदें होती हैं। उसके काटने से दर्द बहुत ही ज़ियादा होता है। कभी-कभी तो मृत्यु भी हो जाती है।

"चरक" में लिखा है, कणभ—भौंरा विशेष के काटने से विसर्प, सूजन, शूल, ज्वर और वमन,—ये उपद्रव होते हैं और काटी हुई जगह में विशीर्णता होती है।

बर्रे और ततैये तथा भौंरे वगैरः कई तरह के होते हैं। कोई काले, कोई नारङ्गी, कोई पीले और कोई ज़र्दे होते हैं। इनमें से पीले ततैये कुछ छोटे और कम-ज़हरी होते हैं; परन्तु काले और ज़र्दे बहुत तेज़ ज़हरवाले होते हैं। इन के काटने से सूजन चढ़ आती है, जलन बहुत होती है और दर्द के मारे चैन नहीं पड़ता; पर तेज़ ज़हर वाले के काटने से सारे शरीर में ददौरे हो जाते और ज्वर भी चढ़ आता है।

बर्रों के भगाने के उपाय।

(१) गन्धक और लहसन की धूआँ से बर्रे भाग जाती हैं।

(२) खतमी का रस या खु़ब्बाज़ीका पानी और जैतून के तेल को शरीर पर मल लेने से बर्रे पास नहीं आतीं।

बर्र-विष नाशक नुसखे

(१) पीपर जलके साथ पीस कर, बर्रे के काटे-स्थान पर लेप करनेसे फौरन आराम हो जाता है।

(२) घी, सेंधानोन और तुलसीके पत्तों का रस—इन तीनों को एकत्र मिला कर, बर्रे के काटे स्थान पर, लेप करने से तत्काल शान्ति आती है। परीक्षित है।

(३) काली मिर्च, सोंठ, सेंधानोन और संचर नोन—इन चारों को नागर पान के रस में घोट कर, बर्रे की काटी हुई जगह पर लेप करने से फौरन आराम होता है। परीक्षित है।

(४) ईसबगोल को सिरके में मिलाकर और लुआब निकाल कर पीने से बर्रे का विष उतर जाता है।

(५) हथेली भर धनिया खाने से बर्रे का ज़हर उतर जाता है। कोई कोई २ मुट्ठी लिखते हैं।

(६) काई को सिरके में मिलाकर, काटे हुए स्थान पर लेप करने से बर्रैका विष शान्त हो जाता है।

(७) खुतमी और खुब्बाज़ी को पानीमें पीस कर लुआब निकाल लो। इस लुआब को बर्र के काटे हुए स्थान पर मलो; शान्ति हो जायगी।

(८) बर्र के डंक मारे स्थान पर मक्खी मलने से आराम हो जाता है।

(९) बर्र के काटे हुए स्थान पर शहद लगाने और शहद ही खाने से अवश्य लाभ होता है।

(१०) मकोय की पत्तियाँ, सिरके में पीस कर, बर्र के काटे हुए स्थान पर लगाने से आराम होता है।

(११) इक्कीस या सौ बार का धोया हुआ घी बर्र की काटी हुई जगह पर लगाने से आराम होता है।

(१२) बर्र की काटी हुई जगह को ३।४ बार गरम पानी से धोने से लाभ होता है।

(१३) हरे धनिये का रस सिरके में मिला कर लगाने से बर्रके काटे हुए स्थान में शान्ति आ जाती है।

(१४) कपूर को सिरके में मिलाकर लेप करने से बर्र का ज़हर शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(१५) बड़ी बर्र के छत्ते की मिट्टी का लेप करने से बर्र का विष शान्त हो जाता है। कोई-कोई इस मिट्टी को सिरके में मिला-कर लगाने की राय देते हैं।

(१६) तिलों को सिरके में पीस कर लेप करने से बर्र का विष शान्त हो जाता है।

(१७) गन्धक को पानी में पीस कर लेप करने से बर्रका ज़हर नष्ट हो जाता है।

(१८) जिसे बर्र काटे, अगर वह अपनी जीभ पकड़ ले, तो ज़हर उस पर असर नहीं करे।

(१८) बर्र को काटी हुई जगह पर ताज़ा गोबर रखने से फौरन आराम हो जाता है।

(२०) बर्र की काटी हुई जगह पर पहले गूगल की धूनी दो। इसके बाद कोमल आक के पत्ते पीस कर गोला सा बना लो। फिर उस गोले को घी से चुपड़ कर, बर्र की काटी हुई जगह पर बाँध दो। इस उपाय से अत्यन्त लोहित ततैये या बर्र का विष भी शान्त हो जाता है।

(२१) राल का परिषेक करने से, बर्र का बाक़ी रहा हुआ डंक या काँटा निकल आता है।

(२२) काली मिर्च, सोंठ, सेंधानोन और काला नोन—इन सब को एकत्र पीस कर और वनतुलसी के रसमें मिलाकर, बर्रकी काटी हुई जगह पर, लेप करने से बर्र का विष नष्ट हो जाता है।

(२३) खतमी, खुब्बाज़ी, खुरफा, सकोय और काकनज—इन सब के स्वरस या पानी का लेप बर्र के विष को शान्त करता है।

(२४) एक कपड़ा सिरके में भिगोकर और बर्फ में शीतल करके बर्र की काटी जगह पर रखने से फौरन आराम होता है।

(२५) निर्मल मुलतानी मिट्टी या कपूर या काई या जौ का आटा—इन में से किसी को सिरके में मिलाकर बर्र की काटी हुई जगह पर रखने से लाभ होता है।

(२६) ताज़ा या हरे धनिये के स्वरस में कपूर और सिरका मिलाकर, बर्र के काटे हुए स्थान पर रखने से फौरन शान्ति आती है। परीक्षित है।

(२७) सेवका रुब्ब, सिकंजवीन, खट्टे अनार का पानी, ककड़ी का पानी, कासनी का पानी, काहू और धनिया—ये सब चीज़ें खाने से बर्र के काटने पर लाभ होता है।

नोट—हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है, जब शहद की मक्खी डंक मारती है, तब उस का डंक उसी जगह रह जाता है। मधमक्खी के जहर का इलाज बर्र के

इलाज के समान है; यानी एक की दवा दूसरे के विष को शान्त करती है। चींटी के काटे और बर्र के काटे का भी एक ही इलाज है। बड़ी बर्र काटे या रीर में मवाद हो तो फस्द खोलना हितकारी है।

(२८) बर्र या ततैये के काटते ही घी लगाकर सेंक देना परीक्षित उपाय है। इस उपाय से ज़हर ज़ियादा ज़ोर नहीं करता।

(२९) काटे हुए स्थान पर आक का दूध लगा देने से भी बर्र का ज़हर शान्त हो जाता है।

(३०) बर्र की काटी हुई जगह पर घोड़े के अगले पैर के टखने का नाखुन पानी में घिस कर लगाना भी उत्तम है।

(३१) बर्र के काटे स्थान पर ज़रा सा गन्धक का तेज़ाब लगा देना भी अच्छा है।

(३२) बहुत लोग बर्र के काटते ही दियासलाइयों का लाल मसाला पानीमें घिस कर लगाते हैं या काटी हुई जगह पर दो बूँद पानी डाल कर दियासलाइयों का गुच्छा उस जगह मसाले की तरफ से रगड़ते हैं। फ़ायदा भी होते देखा है। परीक्षित है।

(३३) कहते हैं, कुनैन मल देने से भी बर्र और छोटे बिच्छू का विष शान्त हो जाता है।

(३४) दशांग का लेप करने से बर्र का ज़हर फ़ौरन उतर जाता है।
नोट—दशांग की दवाएँ पृष्ठ ३०२ के नं० १ में लिखी हैं।

(३५) स्पिरिट एमोनिया एरोमैटिक लगाने और चाय या काफ़ी पिलाने से बर्र का विष शान्त हो जाता है।

चींटियों के काटे की चिकित्सा।
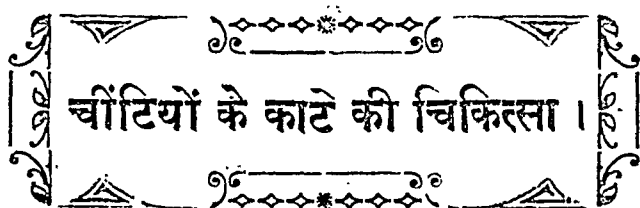
चींटी को संस्कृत में "पिपीलिका" कहते हैं। सुश्रुत में—स्थूलशीर्षा, संवाहिका, ब्राह्मणिका, अंगुलिका, कपिलिका और चित्र-

वर्णा—छे तरह की चींटियाँ लिखी हैं। इन के काटने से काटी हुई जगह पर सूजन,शरीरके और स्थानों में सूजन और आगसे जल जाने की सी जलन होती है।

खेतों और घरों में चींटे, काली चींटी और लाल चींटी बहुत देखी जाती हैं। इन के दल में असंख्य-अनगिन्ती चींटी चींटे होते हैं। अगर इन्हें मिठाई या किसी भी मीठी चीज़ का पता लग जाता है, तो दल के दल वहाँ पहुँच जाते हैं। ये सब अंगरेज़ी फौज की तरह क़ायदे से क़तार बाँध कर चलती हैं। इनके सम्बन्ध में अँगरेज़ी ग्रन्थों में बड़ी अद्भुत-अद्भुत बातें लिखी हैं। यह बड़ा मिहनती जीव है।

लाल-काली चींटी और बड़े-बड़े चींटे, जिन्हें मकोड़े भी कहते हैं, सभी आदमी को काटते हैं। चींटा बहुत बुरी तरह से चिपट जाता है। काली चींटी के काटने से उतनी पीड़ा नहीं होती, पर लाल चींटी के काटने से तो आग सी लग जाती और शरीर में पित्ती सी निकल आती है। अगर यह लाल चींटी खाने-पीने के पदार्थों में खा ली जाती है, तो फौरन पित्ती निकल आती है, सारे शरीर में ददोरे-ही-ददोरे हो जाते हैं, बड़ी गरमी पैदा हो जाती है, कंठ रुकता है और फफोले हो जाते हैं। अतः पानी सदा छानकर पीना चाहिये और खाने के पदार्थ इनसे बचाकर रखने चाहियें और खूब देख-भाल कर खाने चाहिएँ।

चींटियों से बचने के उपाय।

(१) चींटियों के बिल में "चकमक पत्थर" रखने और तेल की धूनी देने से चींटियाँ बिल छोड़कर भाग जाती हैं। कड़वे तेल से चींटे-चींटी बहुत डरते हैं। अतः जहाँ ये ज़ियादा हों, वहाँ कड़वे तेल के छींटे मारो और इसी तेल को आग पर डाल-डालकर धूनी दो।

(२) तेल में पिसी हुई गँधक मिलाकर, उसमें एक कपड़े का टुकड़ा भिगोकर आप जहाँ बाँध देंगे, वहाँ चींटियाँ न जायँगी। बहुत से लोग ऐसे कपड़ों को मिठाई के बर्तन या शर्बतों की बोतलों के किनारों पर बाँध देते हैं। इस तरह के गंधक और तेलमें भीगे कपड़े को लाँघने की हिम्मत चींटियों में नहीं।

चींटी के काटने पर नुसखे।

(१) साँप की बमई की काली मिट्टी को गोमूत्र में भिगोकर चींटी के काटे स्थान पर लगाओ, फौरन आराम होगा। इस उपाय से विषैली मक्खी और मच्छर का विष भी नष्ट हो जाता है। सुश्रुत।

(२) कालीमिर्च, सोंठ, सेंधानोन और कालानोन—इन सबको बनतुलसी के रस में पीसकर लेप करने से चींटी, बर्र, ततैया और मक्खी का विष शान्त हो जाता है।

(३) केशर, तगर, सोंठ और कालीमिर्च—इनको पानी में पीस कर लेप करने से बर्र, चींटी और मक्खी का विष नष्ट हो जाता है।

(४) सोया और सेंधानोन—इनको घी में पीसकर लेप करने से चींटी, बर्र और मक्खी का विष नाश हो जाता है।

कीट विष नाशक नुसखे।

बुद्धिमान वैद्य को विष-रोगियों की शीतल चिकित्सा करनी चाहिये, पर कीड़ों के विष पर शीतल चिकित्सा हानिकारक होती है, क्योंकि शीत से कीट-विष बढ़ता है। सुश्रुत में लिखा है:—

उष्णवर्ज्यो विधिः कार्यो विषार्त्तानां विजानता।
मुक्त्वा कीटविषं तद्धि शीतेनाभिप्रवर्द्धते॥

और भी कहा है:—चूँकि विष अत्यन्त तीक्ष्ण और गरम होता है, इसलिये प्रायः सभी विषों में शीतल परिषेक करना या शीतल छिड़के

देने चाहियें; पर कीड़ों का विष बहुत तेज़ नहीं होता, मन्दा होता है। इसके सिवा, इनके विष में कफवायु के अंश अधिक होते हैं, अतः कीड़ों के विष में पसीना निकालने या सेक करने की मनाही नहीं है, परन्तु कहीं-कहीं गरम सेक को मनाही भी है। मतलब यह है, चिकित्सा में तर्क-वितर्क और विचार की बड़ी ज़रूरत है। जिस विष में वात-कफ हों, उसमें पसीने निकालने ही चाहियें, क्योंकि कफ के विष से प्रायः सूजन होती है और सूजन में स्वेदन कर्म करना या पसीने निकालना हितकारक है।

(१) बच, हींग, वायबिडंग, सेंधानोन, गजपीपर, पाठा, अतीस, सोंठ, मिर्च और पीपर—इन दसों को पानी के साथ सिल पर पीसकर पीने और इन्हीं का काटे स्थान पर लेप करने से सब तरह के कीड़ों का विष नष्ट हो जाता है। इसका नाम "दशाङ्ग योग" है। यह काश्यप मुनि का निकाला हुआ है।

नोट—यह दशाङ्ग योग अनेक बार का आज़मूदा है। चूहे के काटे पर भी इससे फौरन लाभ होता है। सभी कीड़ों के काटने पर इसे लगाना चाहिये।

(२) पीपल, पाखर, बड़, गूलर और पारस पीपल,—इनकी छाल को पानी के साथ पीसकर लेप करने से प्रायः सभी कीड़ों का विष नष्ट हो जाता है।

(३) हींग, कूट, तगर, त्रिकुटा, पाढ़, बायबिडङ्ग, सेंधानोन, जवाखार और अतीस—इन सबको पानी के साथ एकत्र पीस कर लेप करने से कीड़ों का ज़हर उतर जाता है।

(४) कलिहारी, निर्विषी, तूम्बी, कड़वी तोरई और मूली के बीज इन सबको एकत्र काँजी में पीसकर लेप करने से कीड़ों का विष नाश हो जाता है।

(५) चौलाई की जड़ को पीसकर, गाय के घी के साथ पीने से कीड़ों का विष नाश हो जाता है।

(६) तुलसी के पत्ते और मुलहठी को पानी के साथ पीसकर पीने से कीड़ों का ज़हर नाश हो जाता है।

(७) सिरस, कटभी, अर्जुन, बेल, पीपर, पाखर, वड़, गूलर, और पारसपीपल,—इन सबकी छालों को पीसकर पीने और इन्हीं का लेप करने से जौंक का विष शान्त हो जाता है।

(८) हुलहुल के बीज २० माशे पीसकर खाने से सभी तरह का कीट-विष नाश हो जाता है।

(९) हल्दी, दारुहल्दी और गेरू, इनको महीन पीसकर, लेप करने से नाखूनों और दाँतों का विष शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(१० , कीड़ों के काटे हुए स्थान पर तत्काल आदमी के पेशाव के तरड़े देने या सींचने से लाभ होता है।

(११) सिरस, मालकाँगनी, अर्जुनवृक्ष की छाल, लिहसौड़े की छाल और वड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपल—इन सबकी छालों को पानी में पीसकर पीने और इन्हीं का लेप करने से जौंक का ज़हर नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—जहरीले कीड़ों के काटने पर, काटे हुए स्थान का खून अगर जौंक लगवाकर निकलवा दिया जाय और पीछे लेप किया जाय, तो बहुत ही जल्दी लाभ हो।

(१२) सिरस की जड़, सिरस के फूल, सिरस के पत्ते और सिरस की छाल तथा सिरस के बीज—इनका काढ़ा वना लो। फिर इसमें सोंठ, मिर्च, पीपर और सेंधानोन मिला लो। शेष में शहद भी मिला लो और पीओ। "सुश्रुत" में लिखा है, कीट-विष पर यह अच्छा योग है।

(१३) वर्र, ततैया, कनखजूरा, विच्छू, डाँस, मक्खी और चींटी आदि के विष पर "अर्ककपूर" लगाना बहुत ही अच्छा है। परीक्षित है।

———※———

बिल्ली के काटे की चिकित्सा

बिल्ली के काटने से बड़ी पीड़ा होती है ! काटी हुई जगह हरी और सख्त हो जाती है । अगर बिल्ली काट खाय, तो नीचे लिखे उपाय करो :—

(१) मुँह से चूसकर या पछने लगाकर ज़हर को खींचो ।

(२) काटी हुई जगह पर प्याज़ और पोदीना पीसकर लगाओ । साथ ही पोदीना खाओ ।

(३) काले दाने को पानी में पीसकर लेप करो ।

(४) काले तिलों को पानी के साथ पीसकर लेप करो ।

नोट—किसी भी लगानेकी दवा के साथ-साथ पोदीना खाना मत भूलो । बिल्ली के काटे आदमी को पोदीना बहुत ही मुफीद है ।

नौला के काटे की चिकित्सा

नौला अव्वल तो काटता नहीं; अगर काटता है, तो बड़ी वेदना होती है और दर्द सारे शरीर में जल्दी ही फैल जाता है । अगर गर्भवती नौली मनुष्य को काट खाती है, तो मनुष्य मर जाता है, क्योंकि उसका इलाज ही नहीं है । नौले के काटने पर नीचे लिखे उपाय करो :—

(१) काटी हुई जगह पर लहसन का लेप करो ।

(२) मटर के आटे को पानी में घोलकर लेप करो ।

(३) कच्चे अंजीर पीसकर लेप करो ।

(४) अगर काटे हुए स्थान पर, फौरन, बिना विलम्ब, नौले का माँस रख दो, तो तत्काल पीड़ा शान्त होजाय ।

नोट—नौला भी कुत्ते की तरह कभी-कभी बावला हो जाता है । बावला नौला

जिसे काटता है, वह तो बावला भी जाता है। अगर ऐसा हो, तो वही दवा करो जो बावले कुत्ते के काटने पर की जाती है।

नदी का कुत्ता, मगर और काली मछली आदि के काटे का इलाज।

(१) नमक रूई में भर कर घाव पर लगाओ।

(२) पपड़िया नोन शहद में मिलाकर घाव पर लगाओ।

(३) बतख़ और मुर्ग़ी की चर्बी लगाओ।

(४) चर्बी, मक्खन और गुले रोग़न मिलाकर लगाओ।

नोट—ऐसे जीवों के काटने पर मवाद साफ करने और निकालने वाली दवाएं लगानी चाहियें।

(५) अंकोल के पत्तों की धूनी देने से अत्यन्त दुःसाध्य मछली के डंककी पीड़ा भी शान्त हो जाती है।

(६) कड़वा तेल, सत्तू और बाल—इनको एकत्र पीसकर धूनी देने से मछली का विष दूर हो जाता है।

(७) तेल में इन्द्रजौ पीसकर लेप करने से मछली के डंक की पीड़ा शान्त हो जाती है।

आदमी के काटेका इलाज।

आदमी के काटने या उसके दाँत लगने से भी एक तरह का विष चढ़ता है; अतः हम चन्द उपाय लिखते हैं:—

(१) जैतूनके तेलमें मोम गलाकर काटे हुए स्थान पर लेप करो।

(२) अंगूर की लकड़ी की राख सिरके में मिलाकर लेप करो।

(३) सोसनकी जड़ को सिरके में पीस कर लेप करो।

(४) सौंफकी जड़ की छाल को शहद में पीसकर लेप करो।

(५) गन्दाबिरोज़ा, जैतून, मोम और मुर्ग़ की चरबी—इन सब को मिलाकर मलहम बना लो। इस का नाम "काली मलहम" है। इसके लगाने से भूखे आदमी का काटा हुआ भी आराम हो जाता है।

नोट—भूखे आदमी का काटना बहुत ही बुरा होता है।

(६) अगर काटी हुई जगह सूज जाय, तो मुर्दासंगको पानी में पीस कर लेप करदो।

(७) बाकले का आटा, सिरका, गुले रोग़न, प्याज़, नमक, शहद और पानी,—इन में से जो-जो मिलें, मिला कर काटे स्थान पर लगा दो।

(८) गोभी के पत्ते शहद में पीस कर लगाने से आदमीका काटा हुआ घाव आराम हो जाता है।

नोट—ऊपर जितने लेप आदि लिखे हैं, वे सब साधारण आदमी के काटने पर लगाये जाते हैं। भूखे आदमी के काटने से ज़ियादा तकलीफ होती है। बावले कुत्ते के काटे हुए आदमी का काटना, तो बावले कुत्ते के काटने के ही समान है; अतः वैसे आदमी से खूब बचो। अगर काट खाय, तो वही इलाज करो, जो बावले कुत्ते के काटने पर किया जाता है।

छिपकलीके विष की चिकित्सा।

संस्कृतमें छिपकलीको गृहगोधिका कहते हैं। छिपकलीके काटने से जलन होती है, सूजन आती है, सूई चुभानेका सा दर्द होता और पसीने आते हैं। ये लक्षण "चरक" में लिखे हैं।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है, छिपकली के काटने से घबराहट और ज्वर होता है तथा काटे हुए स्थान पर हर समय दर्द होता रहता है, क्योंकि छिपकली के दाँत वहीं रह जाते हैं।

हिकमत में छिपकलीके काटने पर नीचे लिखे उपाय लिखे हैं:—

(१) काटी हुई जगह में से छिपकली के दाँत निकालने के लिये उस जगह तेल और राख मलो।

(२) पहले काटी हुई जगह पर रेशम मलो, फिर वहाँ तेलमें मिला कर राख रख दो।

(३) उपरोक्त उपायों से पीड़ा न मिटे, तो मुँह से चूसकर ज़हर निकाल दो। फिर भूसी को पानी में औटाकर उस जगह ढालो।

(४) थोड़ा सा रेशम एक छुरी पर लपेट लो। फिर उस छुरी को काटे हुए स्थान पर रख कर, चारों तरफ खींचो। इस तरह छिपकली के दाँत रेशम में इलझ कर निकल आवेंगे और पीड़ा शान्त हो जायगी।

(५) ऊनके टुकड़े को ईसबगोल और बबूल के गोंद के लुआब में भिगो कर, काटे हुए स्थान पर कुछ देर तक रखो। फिर एक साथ ज़ोरसे उसके टुकड़े को उठालो। इस तरह छिपकली के दाँत काटे हुए स्थान से बाहर निकल आवेंगे।

नोट—ऊपरकेपाँचों उपाय छिपकलीके दाँत घावसे बाहर करनेके हैं। दाँत निकल आते ही ज्वर जाता रहेगा, और उस जगहका नीलापन और पीप बहना भी बन्द हो जायगा।

श्वान-विष-चिकित्सा

बावले कुत्ते के लक्षण।

“सुश्रुत” में लिखा है, जब कुत्ते और स्यार प्रभृति चौपाये जानवर उन्मत्त या पागल हो जाते हैं, तब उनकी दुम सीधी हो जाती है, तथा जाबड़े और कन्धे या तो ढीले हो जाते या अकड़ जाते हैं। उनके मुँह से राल गिरती है। अक्सर वे अन्धे और बहरे भी हो जाते हैं और जिसे पाते हैं, उसी की ओर दौड़ते हैं।

नोट—बावले कुत्ते की पूँछ सीधी होकर लटक जाती है, मुँह से लार बहुत बहती और गर्दन टेढ़ी सी हो जाती है। उसकी धुन जिधर लग जाती है, उधर ही को दौड़ता है। दूसरे कुत्तों और आदमियों पर हमला करता है। कुत्ते उसे देखकर भागते हैं और लोग हल्ला करते हैं, पर वह बहरा या अन्धा हो जानेके कारण न कुछ सुनता है और न देखता है। ये आँखों-देखे लक्षण हैं।

हिकमतके ग्रन्थों में लिखा है, जब कुत्ता बावला हो जाता है, उसकी हालत बदल जाती है। बावला कुत्ता खाने को कम खाता और पानी देख-कर डरता और थर्राता है; प्यासा मरता है, पर पानी के पास नहीं जाता; आँखें लाल हो जाती हैं; जीभ मुँह से बाहर लटकी रहती है; मुँह से लार और झाग टपकते रहते हैं; नाक से तर पदार्थ बहता रहता है। बावला कुत्ता कान ढलकाये, सिर झुकाये, कमर ऊँची किये और पूँछ दबाये—इस तरह चलता है, मानो मस्त हो। थोड़ी दूर चलता है और सिर के बल गिर पड़ता है। दीवार और पेड़ प्रभृति पर हमले करता है। आवाज़ बैठ जाती है और अच्छे कुत्ते उसके पास नहीं आते—उसे देखते ही भागते हैं।

कुत्ते क्यों बावले हो जाते हैं?

"सुश्रुत" में लिखा है:—स्यार, कुत्ते, ज़रख़, रीछ और बघेरे प्रभृति पशुओं के शरीर में जब वायु—कफ के दूषित होने से—दूषित हो जाता है और संज्ञावहा शिराओं में ठहर जाता है, तब उन की संज्ञा या बुद्धि नष्ट हो जाती है; यानी वे पागल हो जाते हैं।

पागल कुत्ते प्रभृति के काटे हुए के लक्षण।

जब बावला कुत्ता या पागल स्यार आदि मनुष्य को काटते हैं, तब उनकी विषैली डाढ़ें जहाँ लगती हैं, वह जगह सूनी हो जाती और वहाँ से बहुत सा काला खून निकलता है। विष-बुझे हुए तीर आदि

हथियारों के लगने से जो लक्षण होते हैं, वही पागल कुत्ते और स्यार आदि के काटने से होते हैं, ये बात "सुश्रुत" में लिखी है।

पागलपन के असाध्य लक्षण।

जिस पागल कुत्ते या स्यार आदि ने मनुष्य को काटा हो, अगर मनुष्य उसी की सी चेष्टा करने लगे, उसी की सी बोली बोलने लगे और अन्य क्रियाओं से हीन हो जावे—मनुष्य के से और काम न करे, तो वह मनुष्य मर जाता है।

जो मनुष्य अपने तईं काटने वाले कुत्ते या स्यार आदि की सूरत को पानी या काँच में देखता है, वह असाध्य होता है। मतलब यह कि, काटनेवाले कुत्ते प्रभृति के न होने पर भी, अगर मनुष्य उन्हें हर समय देखता है अथवा काँच—आईने या पानी में उन की सूरत देखता है, तो वह मर जाता है।

अगर मनुष्य पानीको देखकर या पानी की आवाज़ सुनकर अकस्मात् डरने लगे, तो समझो कि उसे अरिष्ट है; अर्थात् वह मर जायगा।

नोट—जब मनुष्य कुत्ते के काटने पर कुत्ते की सी चेष्टा करता है, उसी की सी बोली बोलता और पानी से डरता है, तब बोल-चाल की भाषा में उसे "हड़-कयाय" हो जाना कहते हैं।

हिकमत से बावले कुत्ते के काटने के लक्षण।

अगर बावला कुत्ता या कोई और बावला जानवर मनुष्य को काट खाता है, और कई दिन तक उस मनुष्यका इलाज नहीं होता, तो उस की दशा निकम्मी और अस्वाभाविक हो जाती है।

बावले कुत्ते या बावले स्यार आदि के काटने से मनुष्य को बड़े-बड़े शोच और चिन्ता-फिक्र होते हैं, बुद्धि हीन हो जाती है, मुँह सूखता है, प्यास लगती है, बुरे-बुरे स्वप्न दीखते हैं, उजाले से भागता है, अकेला

रहता है, शरीर लाल हो जाता है, अन्त में रोने लगता है और पानी से डर कर भागता है, क्योंकि पानी में उसे कुत्ता दीखता है। उसके शरीर में शीतल पसीने आते, बेहोशी होती और वह मर जाता है। कभी-कभी इन सब लक्षणों के होने से पहले ही मर जाता है। कभी-कभी कुत्ते की तरह भूँकता है अथवा बोल ही नहीं सकता। उसके पेशाब द्वारा छोटा सा जानवर पिल्ले की सी सूरत में निकलता है। पेशाब कभी-कभी काला और पतला होता है। किसी-किसी का पेशाब बन्द ही हो जाता है। वह दूसरे आदमी को काटना चाहता है। अगर काँच में अपना मुँह देखता है, तो नहीं पहचानता, क्योंकि उसे काँचमें कुत्ता दीखता है, इसलिये वह काँच से भी पानी की तरह डरता है। जो कुत्ते का काटा आदमी पानी से डरता है, उसके बचने की आशा नहीं रहती।

बहुत बार, बावले कुत्ते के काटने के सात दिन बाद आदमी की दशा बदलती है। किसी-किसी की छै महीने या चालीस दिन बाद बदलती है। कोई-कोई हकीम कहते हैं, कि सात बरस बाद भी कुत्ते के काटे के चिह्न प्रकट होते हैं।

बावले कुत्ते या स्यार आदि का काटा हुआ आदमी—दशा बिगड़ जाने पर—जिसे काटता है, वह भी वैसा ही हो जाता है। इतना ही नहीं, जो मनुष्य बावले कुत्ते के काटे हुए आदमी का झूठा पानी पीता या झूठा खाता है, वह भी वैसाही हो जाता है।

नोट—यही वजह है कि, हिन्दुओं में किसी का भी—यहाँ तक कि माँ बाप तक का भी झूठा खाना मना है। झूठा खाने से एक मनुष्य के रोग-दोष दूसरे में चले जाते हैं और बुद्धि नष्ट हो जाती है। सभी जानते हैं, कि कोढ़ी का झूठा खाने से मनुष्य कोढ़ी हो जाता है।

जिसे बावला कुत्ता काटता है, उस की हालत जल्दी ही एक तरह के उन्मादी या पागल की सी हो जाती है। अगर यह हालत ज़ोर पर होती है, तो रोगी नहीं जीता। अतः ऐसे आदमी के इलाज में देर न करनी चाहिये।

बावले कुत्ते के काटे हुए की परीक्षा।
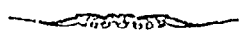
बहुत बार, अँधेरे की वजह से या ऐसे ही और किसी कारण से, काटने वाले कुत्ते की सूरत और हालत मालूम नहीं होती, तब बड़ी दिक्कत होती है। अगर काटता है पागल कुत्ता और समझ लिया जाता है अच्छा कुत्ता, तब बड़ी भारी हानि और धोखा होता है। जब हड़कवाय हो जाती है—मनुष्य कुत्ते की तरह भौंकने लगता है; पानी से डरता या काँच और जलमें कुत्ते की सूरत देखता है—तब फिर प्राण बचने की आशा बहुत ही कम रह जाती है, इसलिये हम हिकमत के ग्रन्थों से, बावले कुत्ते ने काटा है या अच्छे कुत्ते ने—इस के परीक्षा करने की विधि नीचे लिखते हैं। फौरन ही परीक्षा करके, चटपट इलाज शुरु कर देना चाहिये। अच्छा हो, अगर पहले ही बावला कुत्ता समझ कर आरम्भिक या शुरु के उपाय तो कर दिये जायँ और दूसरी ओर परीक्षा होती रहे।

परीक्षा करनेकी विधि।

—:—

(१) अखरोट की मींगी कुत्ते के काटे हुए घाव पर एक घण्टे तक रखो। फिर उसे वहाँ से उठा कर मुर्ग़े के सामने डाल दो। अगर मुर्ग़ा उसे न खाय या खाकर मर जाय, तो समझो कि बावले कुत्ते ने काटा है।

(२) एक रोटी का टुकड़ा कुत्ते के घाव के मलग़म या तरी में भर कर कुत्तों के आगे डालो। अगर कुत्ते उसे न खायँ या खाकर मर जायँ, तो समझो कि बावले कुत्ते ने काटा है।

(३) रोगी को करौंदे के पत्ते पानी में पीसकर पिलाओ। जिस पर विष का असर न होगा, उसे क़य न होगी; पर जिस पर विष का असर होगा, उसे कय होगी। अफीम और धतूरे आदि के विषों के सम्बन्ध में जब

सन्देह होता है, तब इस उपाय से काम लेते हैं । कुत्ते आदि के विष पर इस तरह परीक्षा करने की बात कहीं लिखी नहीं देखी ।

हिकमत से आरम्भिक उपाय ।

"तिब्बे अकबरी" वगैरः हिकमत के ग्रन्थों में बावले कुत्ते के काटने पर नीचे लिखे उपाय करने की सलाह दी गई है:—

(१) बावले कुत्ते के काटते ही, काटी हुई जगह का ख़ून निचोड़ कर निकाल दो अथवा घाव के गिर्द पछने लगाओ । मतलब यह, कि हर तरह से वहाँ के दूषित रुधिर को निकाल दो, क्योंकि ख़ून को निकाल देना ही सर्वश्रेष्ठ उपाय है । सींगी लगाकर ख़ून-मिला ज़हर चूसना भी अच्छा है ।

(२) रोगी के घाव को नश्तर वगैरः से चीर कर चौड़ा करदो, जिस से दूषित तरी आसानी से निकल जाय । घाव को कम-से-कम ४० दिन तक मत भरने दो । अगर घाव से अपने-आप बहुतसा ख़ून निकले,तो उसे बन्द मत करो । यह जल्दी आराम होने की निशानी है ।

(३) रोगी को पैदल या किसी सवारी पर बैठा कर ख़ूब दौड़ाओ, जिस से पसीने निकल जायँ ; क्योंकि पसीनों का निकालना अच्छा है, पसीनों की राह से विष बाहर निकल जाता है ।

(४) अगर भूलसे घाव भर जाय, तो उसे दो बार चीर दो और उसपर ऐसी मरहम या लेप लगादो, जिस से विष तो नष्ट हो पर घाव जल्दी न भरे । इस काम के लिये नीचे के उपाय उत्तम हैं:—

(क) लहसन, प्याज़ और नमक,—तीनों को कूट-पीसकर घाव पर लगाओ ।

(ख) लहसन,जावशीर,कलौंजी और सिरका—इनका लेप करो ।

(ग) राल १ भाग, नमक २ भाग, नौसादर २ भाग और जावशीर ३ भाग लेलो । जावशीर को सिरके में मिलाकर, उसी में राल, नमक

और नौसादर को भी पीसकर मिला दो। इस मरहमके लगाने से घाव भरता नहीं—उल्टा घायल होता है।

(५) जबकि कुत्ते के काटे आदमी के शरीर में विष फैलने लगे और दशा बदलने लगे, तब बादी के निकालने की ज़ियादा चेष्टा करो। इस काम के लिये ये उपाय उत्तम हैं :—

(क) तिरियाक अरबा और दवा-उस्सुरतान रोगीको सदा खिलाते रहो। जिस तरह वैद्यक में "अगद" हैं, उसी तरह हिकमतमें "तिरियाक" हैं।

(ख) जिस कुत्ते ने काटा हो, उसी का जिगर भूनकर रोगी को खिलाओ।

(ग) पाषाणभेद इस रोग की सब से अच्छी दवा है।

(घ) नहरी कीकड़े १०॥ माशे, पाषाणभेद १०॥ माशे, कुँदरु गोंद १०॥ माशे, पोदीना १०॥ माशे और गिलेमख़्तूम ३५ माशे—इन सबको पीस-कूटकर चूर्ण बना लो। इस की मात्रा ३॥ माशे की है। इस चूर्ण से बड़ा लाभ होता है।

(६) कुत्ते के काटे आदमी को तिरियाक या पेशाब ज़ियादा लाने वाली दवा देने से पानी का भय नहीं रहता।

(७) कुत्ते का काटा आदमी पानी से डरता है—प्यासा मर जाता है, पर पानी नहीं पीता। रोगी प्यासके मारे मर न जाय, इसलिये एक बड़ी नली में पानी भर कर उसे उसके मुँह से लगा दो और इस तरह पिलाओ, कि उस की नज़र पानी पर न पड़े। प्यास और खुश्की से न मरने देने के लिये, तरी और सर्दी पहुँचाने की चेष्टा करो। ठण्डे शीरे, तर भोजन और प्यास बुझानेवाले पदार्थ उसे खिलाते रहो।

(८) तीन मास तक घाव को मत भरने दो। काटे हुए सात दिन बीत जायँ, तब "आकाशबेल" या "हरड़ का काढ़ा" रोगीको पिलाकर शरीर का मवाद निकाल दो।

(९) रोगी को पथ्य से रखो। मांस, मछली, अचार, चटनी;

खिचड़ी, दही, माठा, खटाई, गरम और तेज़ पदार्थ उसे न दो। काँसी की थाली में खाने को मत खिलाओ और दर्पण मत देखने दो। नदी, तालाब, कूआ और नहर आदि जलाशयों के पास उसे मत जाने दो। पानी भी पिलाओ, तो नेत्र बन्द करवाकर पिलाओ। हर तरह पानी और सर्दी से रोगी को बचाओ।

आयुर्वेद के मत से बावले कुत्ते के काटे की चिकित्सा।

वैद्यक-ग्रन्थों में लिखा है, बावले कुत्ते के काटते ही, फौरन, नीचे लिखे उपाय करो :—

(१) दाढ़-लगे स्थान का खून निचोड़ कर निकाल दो। खून निकाल कर उस स्थान को गरमागर्म घी से जला दो।

(२) घाव को घी से जलाकर, सर्प-चिकित्सा में लिखी हुई महा अगद आदि अगदों में से कोई अगद घी और शहद आदि में मिलाकर पिलाओ अथवा पुराना घी ही पिलाओ।

(३) आक के दूध में मिली हुई दवा की नस्य देकर, सिर की मलामत निकाल दो।

(४) सफेद पुनर्नवा और धतूरे की जड़ थोड़ी-थोड़ी रोगी को दो।

(५) तिलका तेल, आक का दूध और गुड़ बावले कुत्ते के विष को इस तरह नष्ट करते हैं,जिस तरह वायु या हवा बादलोंको उड़ा देती है। तिली का तेल गरम करके लगाते हैं। तिलों को पीसकर घाव पर रखते हैं। आक के दूध का घाव पर लेप करते हैं।

(६) लोक में यह बात प्रसिद्ध है कि, बावले कुत्ते के काटे आदमी को "हड़कवाय" न होने पावे। अगर हो गई तो रोगी का बचना कठिन है।

इसके लिये लोग उसे काँसी की थाली, आईना, पानी और जलाशयों से दूर रखते हैं। वैद्यकमें भी, विष अपने-आप कुपित न हो जाय इसलिये, दवा खिलाकर उसे स्वयं कुपित करते हैं। जब विषका नक़ली कोप होता है, तब रोगी को जल-रहित शीतल स्थान में रखते हैं। वहाँ रोगी की नक़ली या दवाके कारण से हुई उन्मत्तता शान्त हो जाती है। "सुश्रुत" में ऐसी नक़ली पागलपन कराने वाली दवा लिखी है:—

शरफोंके की जड़ १ तोले, धतूरे की जड़ ६ माशे और चाँवल ६ माशे—इन तीनों को चाँवलो के पानी के साथ महीन पीस कर गोला सा बना लो। फिर उस पर पाँच-सात धतूरे के पत्ते लपेट कर पकालो और कुत्ते के काटे हुए को खिलाओ। इस दवा के पचते समय, अगर उन्मत्तता—पागलपन आदि विकार नज़र आवें, तो रोगी को जलरहित शीतल स्थान में रख दो। इस तरह करने से दवा की वजह से उन्माद आदि विकार शान्त हो जाते हैं। अगर फिर भी कुछ विष-विकार बाक़ी रहे दीखें, तो तीन दिन या पाँच दिन बाद फिर इसी दवा की आधा मात्रा दो। दूसरी बार दवा देने से सब विष नष्ट हो जायगा। जब विष एकदम नष्ट हो जाय, रोगी को स्नान करा कर, गरम दूध के साथ शालि या साँठी चावलों का भात खिलाओ।

यह दवा इस लिये दी जाती है कि, विष स्वयं कुपित न हो, वरन इस दवासे कुपित हो। क्योंकि अगर विष अपने-आप कुपित होता है, तो मनुष्य मर जाता है और अगर दवा से कुपित किया जाता है, तो वह शान्त हो कर निःशेष हो जाता है। यह विधि बड़ी उत्तम है। वैद्योंको अवश्य करनी चाहिये।

सूचना—कुत्ते के काटे के निर्विष होने पर, उसे स्नान आदि कराकर, तेज वमन विरेचन की दवा देकर शुद्ध कर लेना बहुत ही जरूरी है, क्योंकि अगर बिना शोधन किये घाव भर भी जायगा, तो विष समय पाकर फिर कुपित हो सकता है। चूँकि वमन-विरेचन का काम बड़ा कठिन है, अतः इस प्रकार का इलाज वैद्यों को ही करना चाहिये। वाग्भट ने लिखा है,—

अर्कक्षीरयुतं चास्य योज्यमाशु विरेचनम्।

आक का दूध-मिला हुआ जुलाब कुत्ते के काटे हुए को जल्दी ही देना चाहिये।

नोट—आक का दूध, तिल का तेल, तिलकुट, गुड़, धतूरेकी जड़ और सफेद पुनर्नवा—विषखपरा,—ये सब कुत्ते के काटे को परम हितकारी हैं।

अभी गत वैशाख सं० १९८० में, हम अपनी कन्या की शादी करने मथुरा गये थे। हमारे पास के घर में एक मनुष्य को कुत्ते ने काटा। हमारे यहाँ, कामवन से, हमारे एक नातेदार आये थे। उन्होंने कहा, कि नीचे लिखे उपाय से अनेक मनुष्य पागल कुत्ते के काटने पर आराम हुए हैं। इस के सिवा, हमने उनके कहने से पहले भी इस उपाय की तारीफ दिहात के लोगों से सुनी थी:—

पहले कुत्ते के काटे स्थान पर चिराग़ का तेल लगाओ। फिर लाल मिर्च पीस कर ज़ख़्म में दाब दो। ऊपर से मकड़ी का सफ़ेद जाला धर दो और वहाँ कस कर पट्टी बाँध दो।

इस उपाय को औरतें भी जानती हैं। यह उपाय बहुत कम फेल होता है। "वैद्यकल्पतरु" में एक सज्जन लिखते हैं:—

(१) पागल कुत्ते के काटते ही, उस के काटे हुए भाग को काट कर जला दो।

(२) विष दूर हो जाने पर, रोगी को खाने के लिए स्नायु शिथिल करने वाली दवाएँ—अफीम, भाँग या बेलाडोना प्रभृति दो।

(३) अगर कुत्ते का काटा हुआ आदमी अधिक अफीम पचा ले, तो उस से विष के कीड़े निकल जावें और रोगी बच जावे

(४) कुकुरबेल नाम की वनस्पति पिलाने से खूब दस्त और क़य होते और विषैले जन्तु मर कर निकल जाते हैं।

कुत्तेके काटने पर नीचे के लेप उत्तम हैं:—

(१) लहसन को सिरके में पीस कर घाव पर लेप करो।

(२) प्याज़ का रस शहद में मिला कर लेप करो।

(३) कुचला आदमी के मूत्र में पीस कर लगाओ।

(४) कुचला शराब में पीस कर लगाओ।

(५) शुद्ध कुचला, शुद्ध तेलिया विष और शुद्ध चौकिया सुहागा—इन्हें समान-समान लेकर पीस लो और रख दो। इस में से रत्ती-रत्ती भर दवा खिलाने से, बावले कुत्ते का काटा, २१ दिन में, ईश्वर-कृपा से, आराम हो जाता है।

(६) लिहसौढ़े के पत्ते १ तोले और काली मिर्च १ माशे—आध पाव जल में घोट कर ८ या १५ दिन पीने से कुत्ते का काटा आदमी आराम हो जाता है।

(७) दोनों ज़ीरे और काली मिर्च पीस कर १ महीने तक पीने से कुत्तेका विष शान्त हो जाता है।

(८) अगर कुत्ते के काटने से शरीर पर कोढ़ के से चकत्ते हो जायँ, तो आमलासार गंधक ६ माशे, नीलाथोथा ६ माशे और जमाल-गोटा ६ माशे—तीनों को पीस-छान कर घी में मिला दो। फिर उस घी को ताम्बे के बर्तन में रखकर, १०१ बार धोओ। इस घी को शरीर में लगाकर ३ घण्टे तक आग तापो। अगर तापने से सारे शरीर पर बाजरे के से दाने हो जायँ, तो दूसरे दिन गोबर मलकर नहा डालो। बस, सब शिकायतें रफ़ा हो जायँगी।

नोट—इस घी को आँखों और गले पर मत लगाना। मतलब यह कि, इसे गले से ऊपर मत लगाना।

श्वान-विष-नाशक नुसखे ।

(१) कड़वी तोरई का रेशे-समेत गूदा निकाल लो। फिर इस गूदे को एक पाव पानी में आध घण्टे तक भिगो रखो। शेषमें, इसको मसल-छानकर, बलानुसार, पाँच दिन तक, नित्य, सवेरे पीओ। इस से दस्त और क़य होकर विष निकल जाता है। बावले कुत्तेका कैसा भी विष क्यों न हो, इस दवा से अवश्य आराम हो जाता है, बशर्त्ते कि आयु हो और जगदीश की कृपा हो।

नोट—बरसात निकल जाने तक पथ्य रखना बहुत जरूरी है। कड़वी तोरई जङ्गली होनी चाहिये।

(२) कुकुर भाँगरे को पीस कर पीने और उसी का लेप करने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है।

नोट—भाँगरे के पेड़ जल के पास की जमीन में बहुत होते हैं। इन की शाखों में कालापन होता है। पत्तों का रस काला सा होता है। सफेद, काले और पीले—तीन तरह के फूलों के भेद से ये तीन तरह के होते हैं। इस की मात्रा २ माशे की है।

(३) आक के दूध का लेप कुत्ते और बिच्छू के काटे स्थान पर लगाने से अवश्य आराम हो जाता है। बहुत ही उत्तम योग है।

नोट—ऊपर के तीनों नुसखे आज़मूदा हैं। अनेक बार परीक्षा की है। जिन की जिन्दगी थी, वे बच गये। "वैद्यसर्वस्व" में लिखा है:—

> विषसर्कपयो लेपः श्वानवृश्चिकयोर्जयेत् ।
> कौकुरं पानलेपाभ्यामथश्वानविषं हरेत् ॥

अर्थ वही है जो नं० २ और ३ में लिखा है।

(४) अगर किसी को पागल कुत्ता या पागल गीदड़ काट जाय, तो तत्काल, बिना देर किये, सफेद आक का दूध निकाल कर, उस में थोड़ा सा सिन्दूर मिला कर, उसे रूई के फाहे पर रखकर, काटे हुए

स्थान पर रखकर बाँध दो। इस तरह नियम से, रोज़, ताज़ा आक के दूध में सिन्दूर मिला-मिलाकर बाँधो। कितने ही दिन इस उपाय के करने से अवश्य आराम हो जायगा। जब रुई सूख आय, उतार फेंको। परीक्षित है।

नोट—इस रोग में पथ्य पालन की सख्त ज़रूरत है।। मांस, मछली, अचार, चटनी, सिरका, दही, माठा और खटाई आदि गरम और तीक्ष्ण पदार्थ—अपथ्य हैं।

(५) अगर बावला कुत्ता काट खाय, तो पुराना घी रोगी को पिलाओ। साथ ही दूध और घी मिलाकर काटे हुए स्थान पर सींचो यानी इनके तरड़े दो।

(६) सरफोंके की जड़ और धतूरेकी जड़—इन दोनों को चाँवलों के पानी में पीस कर, गोला बना लो। फिर उस पर धतूरे के पत्ते लपेट दो और छाया में बैठ कर पकालो। फिर निकाल कर रोगी को खिलाओ। इस से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है।

(७) धतूरे की जड़ को दूध के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है।

(८) अंकोल की जड़ चाँवलों के पानी के साथ पीस कर पीने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

(९) कठूमर की जड़ और धतूरे का फल—इन को एकत्र पीस कर, चाँवलों के जल के साथ पीने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है।

नोट—कठूमर गूलर का ही एक भेद है।

(१०) अंकोल की जड़ के आठ तोले काढ़े में चार तोले घी डाल कर पीने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है। परीक्षित है।

(११) लहसन, कालीमिर्च, पीपर, वच और गाय का पित्ता—इन सब को सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। इस दवा के पीने, नस्य की तरह सूँघने, अंजन लगाने और लेप करने से कुत्ते का विष उतर जाता है।

नोट—यह एक ही दवा पीने, लेप करने, नाक में सूँघने और नेत्रों में आँजने से कुत्ते के काटे आदमी को आराम करती है।

(१२) जलबेंत की जड़ और पत्ते तथा कूट—इन दोनों को जल में पका और शीतल करके पीने से कुत्ते का विष दूर हो जाता है । परीक्षित है ।

(१३) जलबेंत के पत्ते और उसी की जड़ को कूट लो । फिर उन्हें पानी में डाल कर काढ़ा कर लो । इस काढ़े को छान कर और शीतल करके पीने से कुत्ते का विष नष्ट हो जाता है । परीक्षित है ।

(१४) जंगली कड़वी तोरई के काढ़े में घी मिलाकर पीनेसे वमन होतीं और विष उतर जाता है । परीक्षित है ।

नोट—यह नुसखा कुत्ते के विष आदि अनेक तरह के विषों पर चलता है । सभी तरह के विषों में वमन कराना सर्वश्रेष्ठ उपाय है और इस दवा से वमन होकर विष निकल जाता है ।

(१५) "तिब्बे अकबरी" में लिखा है, जो कुत्ता काटे उसीका थोड़ा सा ख़ून निकाल कर, पानी में मिलाकर, कुत्ते के काटे आदमी को पिलाओ । इस के पीने से बावले कुत्ते का विष असर न करेगा ।

नोट—यह उसी तरह का नुसखा है, जिस तरह हमारे आयुर्वेद में जो साँप काटे, उसी को काटने की सलाह दी गई है । काटने से साँप का ख़ून रोगी के पेट में जाता है और उसके विष को चढ़ने नहीं देता ।

(१६) कुत्ते के काटे स्थान पर, कुचला आदमी के पेशाब में औटा कर और फिर पीस कर लेप करने से बड़ा लाभ होता है ।

नोट—साथ ही कुचले को शराब में औटाकर, उस की छाल उतार फैंको । फिर उस में से एक रत्ती रोज कुत्ते के काटे आदमीको खिलाओ । अथवा कुचले को पानी में औटा कर और थोड़ा गुड मिला कर रोगी को खिलाओ । कुचले की मात्रा जियादा न होने पावे । बावले कुत्ते के काटने पर कुचला सर्व्वोत्तम दवा है । कई बार परीक्षा की है ।

(१७) जो कुत्ता काटे, उसी की जीभ को काट कर जला लो । फिर उस की राख को काटे हुए घाव पर छिड़को । इस उपाय से ज़हर असर नहीं करेगा और कुत्तेका काटा घाव भर जायगा ।

(१८) तलैना नामक दवा को डिब्बी में रख कर बन्द कर दो और

भीतर ही सूखने दो। फिर इस को एक चने भर लेकर, थोड़े से गुड़ में मिलाकर, कुत्तेके काटे आदमीको खिलाओ। इस के सेवन करने से कुत्ते के काटने से बावला हुआ आदमी भी आराम हो जाता है। एक हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं।

(१९) अङ्गूर की लकड़ी की राख सिरके में मिला कर कुत्ते के काटे स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

(२०) लाल बानात के टुकड़े के चने-चने समान सात टुकड़े काट लो। फिर हर टुकड़े को गुड़ में मिला कर, सात गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से कुत्ते का काटा आराम हो जाता है। यह एक अँगरेज़ का कहा हुआ नुसख़ा है।

(२१) जिस कुत्तेने काटा हो, उसी के बाल जलाकर राख करलो। इस राख को काटे स्थान पर छिड़को। अवश्य लाभ होगा।

(२२) कलौंजी की जवारश कुत्ते के काटे आदमी को बड़ी मुफ़ीद है। इसे खाना चाहिये।

(२३) कुत्तेकी काटी जगह पर मूलीके पत्ते गरम करके रखने से अवश्य लाभ होता है।

(२४) कुत्तेके काटे स्थान पर चूहे की मैंगनी पीस कर लगाओ।

(२५) कुत्ते के काटे स्थान पर सम्हालू के पत्ते पीस कर लेप करो।

(२६) बाजरे का फूल—जो बाल के अन्दर होता है—एक माशे भर लेकर, गुड़ में लपेट कर, गोली बना कर, रोज़ खिलाने से कुत्तेका काटा आराम हो जाता है।

(२७) चालीस माशे कलौंजी फाँक कर, ऊपर से गुनगुना पानी पीनेसे कुत्तेके काटे को लाभ होता है। तीन दिन इसे फाँकना चाहिये।

(२८) कुत्तेके काटे स्थान पर पछने लगाने यानी खुरचने और खून निकाल देनेके बाद राई को पीस कर लेप करो। अच्छा उपाय है।

(२९) विजयसार और जटामासी को सिल पर पीसकर पानी में

छानलो । फिर एक "मातुलुंग का फल" खाकर, ऊपर में यही छना हुआ दवा का पानी पीलो । इस नुसख़े से पागल कुत्ते का काटा निश्चय ही आराम हो जाता है ।

(३०) "तिब्बे अकबरी"में लिखा हैं,कुत्तेके काटे स्थान पर सिरका मलो या ऊन को सिरके में भिगो कर रखो । अगर सिरके में थोड़ा सा गुले रोगन भी मिला दो तो और भी अच्छा ।

(३१) कुत्तेके काटे स्थान पर थोड़ा सा पपड़िया नोन सिरके में मिला कर बाँध दो और हर तीसरे दिन उसे बदलते रहो ।

(३२) प्याज़, नमक, शहद, पपड़िया नोन और सिरका—इन को मिलाकर लगाने से कुत्ते का काटा आराम हो जाता है ।

(३३) नमक, प्याज़, तुतली, बाकला, कड़वा बादाम और साफ शहद,—इनको मिला कर कुत्तेके काटे स्थानपर लगानेसे आराम होता है ।

(३४) धतूरे के शोधे हुए बीज इस तरह खाय,—पहले दिन १, दूसरे दिन २, तीसरे दिन ३—इस तरह २१ दिन तक रोज़ एक-एक बीज बढ़ाया जाय । फिर इक्कीस बीज खाकर, रोज़ एक-एक बीज घटा कर खाय और १ पर आ जाय । इस तरह धतूरेके बीज बढ़ा-घटा कर खानेसे कुत्ते का विष निश्चय ही नष्ट हो जाता है ; पर बीजोंको शास्त्र-विधि-से शोधे बिना न खाना चाहिये ।

नोट—धतूरे के बीजों को १२ घण्टे तक गोमूत्र में भिगो रखो; फिर निकालकर सुखा लो और उनकी भूसी दूर कर दो । बस, इस तरह वे शुद्ध हो जायँगे ।

जोंक के विष की चिकित्सा ।

वर्णन ।

जोंकें निर्विष और विषैली दोनों तरह की होती हैं । निर्विष जोंकें खून बिगड़ जाने पर शरीर पर लगाई जाती हैं । ये मैला या गन्दा खून पीकर मोटी हो जातीं और फिर गिर पड़ती हैं । जोंकों का धन्धा करनेवालों को ज़हरी जोंकें न पालनी

चाहियें, क्योंकि ज़हरीली जौंकों के काटने से खुजली, सूजन, ज्वर और मूर्च्छा होती है। कोई-कोई लिखते हैं,—जलन, पकाव, विसर्प, खुजली और फोड़े-फुन्सी भी होते हैं। कोई सफेद कोढ़ का हो जाना भी कहते हैं।

विषैली जौंकों की पहचान।

विषैली जौंकें लाल, सफेद, घोर काली, बहुत चपल, बीच से मोटी, रोएँ वाली और इन्द्रधनुष की सी धारीवाली होती हैं। इन्हींके काटने से उपरोक्त विकार होते हैं।

आसाम और दार्जीलिंग की तरफ ये पाँवों में चिपट जातीं और बड़ी तकलीफ देती हैं, अतः जङ्गलों में फिरनेवालों को टखने तक जूते और पायजामा पहन कर घूमना चाहिये।

चिकित्सा।

(१) सिरस, मालकाँगनी, अर्जुन की छाल, लिहसौढ़े की छाल और बड़, पीपर, गूलर, पाखर और पारसपीपल—इन सबकी छालों को पानी में पीस कर पीने और लगाने से जौंक का काटा हुआ आराम हो जाता है।

नोट—जौंक का विष नाश करने वाले और नुसखे "कीट-विष-चिकित्सा" में लिखे हैं।
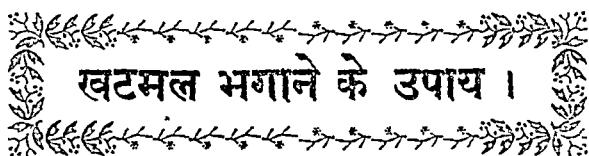
खटमल भगाने के उपाय।

ये खाटोंके अन्दर रहते हैं। कलकत्ते में तो दीवारों, किताबों, तिजौरियों की सन्धों और कपड़ों में बाज़-बाज़ वक्त बुरी तरह से भर जाते हैं। रात को चींटियों की सी क़तार निकलती है। तड़का होने से पहले ही ये अपने-अपने स्थानों में जा

छिपते हैं। ये मनुष्यका खून पी-पीकर मोटे होते और रात को नींद भर सोने नहीं देते।

अगर इनसे बचना चाहो तो नीचे लिखे उपाय करो:—

(१) बिस्तर, तकिये और गद्दे खूब साफ रखो। उन्हें दूसरे तीसरे दिन देखते रहो। चादरों को रोज़ या दूसरे तीसरे दिन धो लो या धुलवा लो। पलँगों पर किरमिच या और कोई कपड़ा इस तरह मढ़वालो, कि खटमलों के रहने को जगह न मिले।

(२) जब सफेदी कराओ, चूने में थोड़ी सी गंधक भी मिला दो। इस तरह सफेदी कराने से खटमल दीवारों में न रहेंगे।

(३) घर और खाटों में गंधक की धूनी दो।

(४) जिन चीज़ों से ये न निकलते हों, उनमें गंधक का धूआँ पहुँचाओ। अथवा मरुवे के काढ़े में नीलाथोथा मिला कर, उस पानी से उन्हें धो डालो और घर को भी उसी जलसे धोओ। मरुवे और गंधक की बू खटमलों को पसन्द नहीं।

शेर और चीते के किये ज़ख्मों की चिकित्सा।

"बंगसेन" में लिखा है,—बाघ, सिंह भेड़िया, गीदड़, कुत्ता, चौपाये जानवर और जंगली आदमियों के नाखूनों और दाँतों में विष होता है। इन के नाखूनों और दाँतों से घाव होकर, वह स्थान सूज जाता और बहता तथा ज्वर हो आता है।

"तिब्बे अकबरी" में लिखा है, चीते और शेर प्रभृति जानवरों के दाँतों और पञ्जों में ज़हर होता है। अतः पहले पछने लगा कर विष निकालना चाहिये, उस के बाद लेप वगैरः करने चाहियें।

(१) चाय औटाकर, उसी से शेर का किया हुआ घाव धोओ। फौरन आराम होगा।

(२) पछनों से मवाद निकाल कर, जराबन्द, सौसन की जड़ और शहद—इन तीनों को मिलाकर शेर इत्यादि के किये हुए घावों पर लेप करो।

(३) ताम्बे का बुरादा, सौसन की जड़, चाँदी का मैल, मोम और जैतून का तेल—इन सब को मिलाकर घाव पर लगाओ। इस मरहम से शेर, चीते, बाघ, भेड़िये और बन्दर आदि सभी चौपायों के किये हुए घाव आराम हो जाते हैं।

(४) अगर सिंह या शेर का बाल किसी तरह खा लिया जाता है, तो बैठते समय पेट में दर्द होता है। शेर का बाल खाने वाला आदमी अगर अरण्ड के पत्ते पर पेशाब करता है, तो पत्ते के टुकड़े-टुकड़े हो जाते हैं। यही शेर का बाल खाने की पहचान है। अगर शेर का बाल खाया हो और परीक्षा से निश्चय हो जाय, तो नीचे लिखे उपाय करो:—

(क) कसौंदी के पत्तों का स्वरस ३ दिन पीओ।

(ख) तीन चार झींगे निगल जाओ।

(५) भेड़िया, बाघ, तेंदुआ, रीछ, स्यार, घोड़ा और सींगवाले जानवरों के काटे हुए स्थान पर तेल मलना चाहिये।

(६) मोखे के बीज, पत्ते या जड़—इन में से किसी एक का लेप करने से भेड़िये और बाघ आदि नं० ५ में लिखे जानवरों का विष नष्ट हो जाता है।

(७) ईख, राल, सरसों, धतूरे के पत्ते, आक के पत्ते और अर्जुन के फूल—इन सब को मिलाकर, इन की धूनी देने से स्थावर और जंगम दोनों तरह के विष नाश हो जाते हैं। जिस जगह यह धूनी दी जाती है वहाँ सर्प, मैंडक एवं अन्य कीड़े कुछ भी नहीं कर सकते। इस धूनी से इन सब का विष तत्काल नाश हो जाता है। नं० ५ में लिखे जानवरों के काटने पर भी यह धूनी पूरा फायदा करती है, अतः उन के काटने पर इसे अवश्य काम में लाओ।

(८) बेलगिरी, अरहर, जवाखार, पाढल, चीता, कमल, कुंभेर और

सेमल—इन सब का काढ़ा बनाकर, उस काढ़े द्वारा शेर आदिके काटे स्थान को सींचने से या इस काढ़े का तरड़ा देने से नं० ५ में लिखे सभी जानवरों का विष शान्त हो जाता है ।

मण्डूक-विष-चिकित्सा ।

मैंडक बहुत तरह के होते हैं। उन में से ज़हरीले मैंडक आठ प्रकार के होते हैं :—

(१) काला, (२) हरा, (३) लाल, (४) जौके रंग का (५) दही के रंग का (६) कुहक (७) भ्रुकुट, और (८) कोटिक ।

इन में से पहले छै मैंडकों में ज़हर तो होता है, पर कम होता है। इन के काटने से काटे हुए स्थान में बड़ी खुजली चलती है और मुख से पीले-पीले झाग गिरते हैं। भ्रुकुट और कोटिक बड़े भारी ज़हरी होते हैं। इन के काटने से काटी हुई जगह में बडी भारी खाज चलती है, मुँह से पीले-पीले झाग गिरते हैं, बड़ी जलन होती है, क़य होती हैं और घोर मूर्च्छा या बेहोशी होती है। कोटिक का काटा हुआ आदमी आराम नहीं होता ।

नोट...कोटिक मैंडक बीरबहुटी के आकार का होता है ।

"बंगसेन" में लिखा है:—विषैले मैंडक के काटने से मैंडक का एक ही दाँत लगता है। दाँत लगे स्थान में वेदना-युक्त पीली सूजन होती है, प्यास लगती, वमन होती और नींद आती है ।

"तिब्बे अकबरी" में लिखाहै,—जो मैंडक लाल रंग के होते हैं, उनका विष बुरा होता है। यह मैंडक जिस जानवर को दूर से भी देखता है, उसी पर ज़ोर से कूदकर आता है। अगर यह किसी तरह नहीं काट सकता, तो जिसे काटना चाहता है उसे फूँकता है। फूँकने से भी भारी सूजन चढ़ती और मृत्यु तक हो जाती है।

नहरी और जंगली मैंडकों के काटने से नर्म सूजन होती है । उनका और शीतल विषों का एक इलाज है ।

नोट—लाल मैंडकों के काटने पर "तिरियाक कबीर" देना अच्छा है।

मैंडक-विष नाशक उपाय ।

(१) सिरस के बीजों को थूहर के दूध में पीसकर लेप करने से मैंड़क का विष तत्काल शान्त हो जाता है ।

भेड़िये और बन्दर के काटे की चिकित्सा ।

बन्दर के काटने से भी मनुष्य को बड़ी पीड़ा होती है और कभी-कभी घाव बड़ी दिक्कत से आराम होते हैं । बन्दर के काटने पर नीचे के उपय बहुत उत्तम हैं :—

(१) मुर्दासंग और नमक पानी में पीसकर काटी हुई जगह पर मलो ।

(२) काटी हुई जगह पर कलौंजी और शहद मिलाकर लगाओ । इससे घाव खुला रहेगा और विष निकल जायगा ।

(३) काटे हुए स्थान पर प्याज़ पीस कर मलो ।

(४) जरावन्द, सौसन की जड़ और शहद—इन तीनों को मिलाकर घाव पर लेप करो ।

(५) प्याज़ और नमक कूट-पीसकर बन्दर के घाव पर रखो ।

(६) ताम्बे का बुरादा, सौसन की जड़, चाँदी का मैल, मोम और जैतून का तेल—इनको मिलाकर मरहम बनालो । सिरके से घाव को धोकर, यह मलहम लगाने से बन्दर और भेड़िये का काटा

हुआ स्थान अवश्य आराम हो जाता है। इस काम के लिये यह मरहम बड़ी ही उत्तम है।

नोट—मोम को गला कर जैतून के तेल में मिला लो। फिर शेष तीनों को खूब महीन पीस कर मिला दो। बस, मरहम बन जायगी।

सूचना—बन्दर या भोड़िये के काटने पर पहले पछने लगा कर जहर निकाल दो, फिर लेप या मरहम लगाओ।

मकड़ी के विषकी चिकित्सा।

कहते हैं, किसी समय विश्वामित्र राजा महामुनि वशिष्ठ जी के आश्रम में गये और उन्हें गुस्सा दिलाया। वशिष्ठ जी को क्रोध आया, उससे उनके ललाट पर पसीने आगये। वह पसीने सामने पड़ी हुई गायकी कुट्टी पर पड़े। उनसे ही अनेक प्रकार के लूता नाम के कीड़े पैदा होगये।

लूता या मकड़ी के काटने से काटा हुआ स्थान सड़ जाता है, खून बहने लगता है, ज्वर चढ़ आता है, दाह होता है, अतिसार और त्रिदोष के रोग होते हैं, नाना प्रकार की फुन्सियाँ होती हैं, बड़े-बड़े चकत्ते हो जाते हैं और बडी गंभीर, कोमल, लाल, चपल, कलाई लिये हुए सूजन होती है। ये सब मकड़ी के काटने के सामान्य लक्षण हैं।

अगर काटे हुए स्थान पर काला या किसी क़दर झाँई वाला, जाले समेत, जले के समान, अत्यन्त पकने वाला और क्लेद, सूजन तथा ज्वर सहित घाव हो, तो समझो कि दूषी विष नामकी मकड़ी ने काटा है।

असाध्य लूता या मकड़ीके काटनेके लक्षण

अगर असाध्य मकड़ी काटती है, तो सूजन चढ़ती है, लाल सफेद और पीली-पीली फुन्सियाँ होती हैं, ज्वर आता है, प्राणान्त करने

भीतर ही सूखने दो। फिर इस को एक चने भर लेकर, थोड़े से गुड़ में मिलाकर, कुत्तेके काटे आदमीको खिलाओ। इस के सेवन करने से कुत्ते के काटने से बावला हुआ आदमी भी आराम हो जाता है। एक हकीम साहब इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा कहते हैं।

(१९) अङ्गूर की लकड़ी की राख सिरके में मिला कर कुत्ते के काटे स्थान पर लगाने से लाभ होता है।

(२०) लाल बानात के टुकड़े के चने-चने समान सात टुकड़े काट लो। फिर हर टुकड़े को गुड़ में मिला कर, सात गोलियाँ बना लो। इन गोलियों के खाने से कुत्ते का काटा आराम हो जाता है। यह एक अँगरेज़ का कहा हुआ नुसख़ा है।

(२१) जिस कुत्तेने काटा हो, उसी के बाल जलाकर राख करलो। इस राख को काटे स्थान पर छिड़को। अवश्य लाभ होगा।

(२२) कलौंजी की जवारश कुत्ते के काटे आदमी को बड़ी मुफ़ीद है। इसे खाना चाहिये।

(२३) कुत्तेकी काटी जगह पर मूलीके पत्ते गरम करके रखने से अवश्य लाभ होता है।

(२४) कुत्तेके काटे स्थान पर चूहे की मैंगनी पीस कर लगाओ।

(२५) कुत्ते के काटे स्थान पर सम्हालू के पत्ते पीस कर लेप करो।

(२६) बाजरे का फूल—जो बाल के अन्दर होता है—एक माशे भर लेकर, गुड़ में लपेट कर, गोली बना कर, रोज़ खिलाने से कुत्तेका काटा आराम हो जाता है।

(२७) चालीस माशे कलौंजी फाँक कर, ऊपर से गुनगुना पानी पीनेसे कुत्ते के काटे को लाभ होता है। तीन दिन इसे फाँकना चाहिये।

(२८) कुत्ते के काटे स्थान पर पछने लगाने यानी खुरचने और खून निकाल देनेके बाद राई को पीस कर लेप करो। अच्छा उपाय है।

(२९) विजयसार और जटामासी को सिल पर पीसकर पानी में

मकड़ी-विष नाशक नुसखे।

(१) फूलप्रियंगू, हल्दी, दारूहल्दी, शहद, घी और पद्माख—इन सबको मिलाकर सेवन करने से सब तरह के कीड़ों और मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है।

(२) करंज, आक का दूध, कनेर, अतीस, चीता और अखरोट—इन सबके स्वरस के द्वारा पकाया हुआ तेल लगाने से मकड़ी का किया हुआ घाव नष्ट हो जाता है।

(३) मण्डवा पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी के विकार फुन्सी वगैरः नाश हो जाते हैं।

(४) सफेद ज़ीरा और सोंठ—पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी के विकार नाश हो जाते हैं।

(५) केंचुए पीसकर मलने से मकड़ी का ज़हर और उसके दाने आराम हो जाते हैं।

नोट—केंचुए न मिलें तो उनकी मिट्टी ही मलनी चाहिये।

(६) चूने को नीबू के रस में खरल करके मलने से मकड़ी के दाने मिट जाते हैं।

(७) चूने को मीठे तेल और चिरौंजीके साथ पीसकर लेप करनेसे मकड़ी के दाने नष्ट हो जाते हैं।

(८) लाल चन्दन, सफेद चन्दन और मुर्दासंग—इन तीनों को पीसकर लगाने से मकड़ी का ज़हर नाश हो जाता है

(९) खली और हल्दी पानी में पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष नाश हो जाता है।

(१०) हल्दी, दारूहल्दी, मँजीठ, पतंग और नागकेशर—इन सब को शीतल जल में एकत्र पीसकर, काटने के स्थान पर लेप करने से मकड़ी का विष शान्त हो जाता है। परीक्षित है।

(११) कटभी, अर्जुन, सिरस, बेल और दूध वाले वृक्षों (पाखर, बड़, गूलर, पीपल और बेलिया पीपल) की छालों के काढ़े, कल्क या चूर्ण के सेवन करने से मकड़ी और दूसरे कीड़ों का विष नष्ट हो जाता है।

(१२) चन्दन, पद्माख, कूट, तगर, ख़स, पाढ़ल, निर्गुण्डी, सारिवा और बेल—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है।

(१३) चन्दन, पद्माख, ख़स, सिरस, सम्हालू, क्षीरविदारी, तगर, कूट, सारिवा, सुगन्धवाला, पाढर, बेल और शतावर—इन सब को एकत्र पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष नाश हो जाता है।

(१४) चन्दन, पद्माख, कूट, जवासा, ख़स, पाढ़ल, निर्गुण्डी, सारिवा और लिहसौड़ा—इन सबको एकत्र पीसकर लेप करने से मकड़ी का विष नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—नं० १२ और इस नं० १४ के नुसख़े में कोई बड़ा भेद नहीं। उसमें तगर और बेल है, इस में जवासा और लिहसौड़ा है; शेष दवायें दोनों में एक ही हैं।

(१५) कड़वी खल की सात दिन धूनी देने से मकड़ी का विष नष्ट हो जाता है।

नोट—इस के साथ ही खली और हल्दी को पानी के साथ पीस कर इनका लेप किया जाय, तो क्या कहना, फौरन आराम हो। परीक्षित है। "वैद्यसर्वस्व" में लिखा है :—

> याति गोमयलेपेन कंडूः खर्जूभवा तथा।
> कटुपिण्याक धूमकैः मकरीजंविषं याति सप्ताहपरिवर्त्तितैः॥

(१६) सफेद पुनर्नवा की जड़ को महीन पीसकर और मक्खन में मिलाकर लगाने से मकड़ी के विष से हुए विकार नष्ट हो जाते हैं।

(१७) अपामार्ग की जड़ को महीन पीसकर और मक्खन में मिलाकर लगाने से मकड़ी के चेप से हुए दाफड़-ददौरे और फुन्सी आदि सब नाश हो जाते हैं।

(१८) गूलर, पीपर, पारस पीपल, बड़ और पाखर—इन पाँचों दूध वाले पेड़ों की छालों का काढ़ा करके शीतल कर लो और इससे मकड़ी के विष से हुए घाव और फुन्सी आदि को धोओ । बहुत जल्दी लाभ होगा ।

(१९) कत्था २ तोले, कपूर १ तोले और सिन्दूर ६ माशे—इन तीनों को महीन पीसकर बारीक कपड़े में छान लो और १०० बार धुले घी या मक्खन में मिला दो । इस मक्खन से मकड़ी के घाव, फुन्सी और सूजन आदि सब नष्ट हो जाते हैं । बड़ी ही उत्तम मरहम है । परीक्षित है ।

(२०) चौलाई का साग पानी में पीसकर लगाने से मकड़ी का विष शान्त हो जाता है ।

तृतीय खण्ड

स्त्री-रोगों की चिकित्सा।
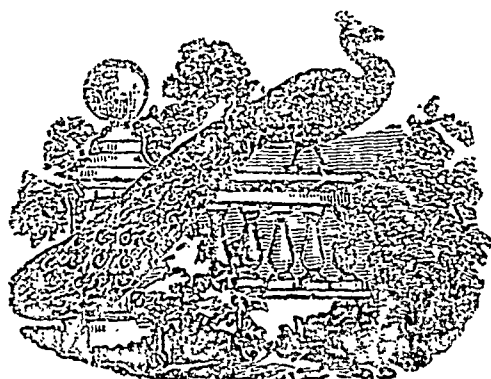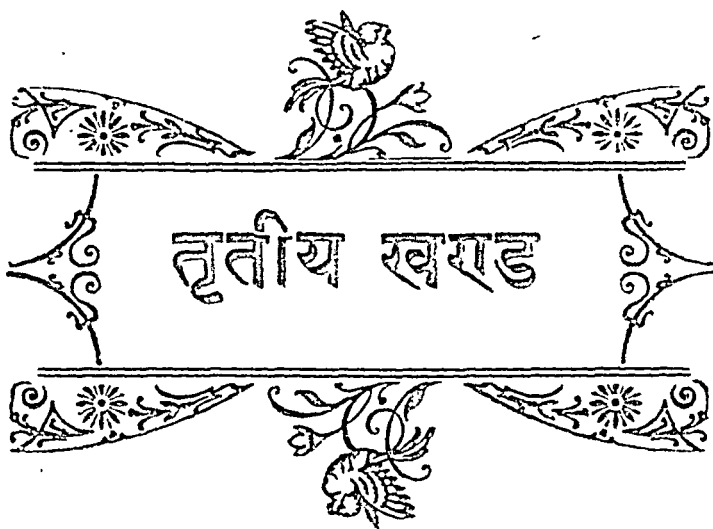
प्रदर रोग का बयान।

प्रदर रोग के निदान-कारण।

सभी जानते हैं, कि स्त्रियोंको हर महीने रजोधर्म होता है। जब स्त्रियों को रजोधर्म होता है; तब उनकी योनिसे एक प्रकारका खून चार या पाँच दिनों तक बहता रहता और फिर बन्द हो जाता है। इसके बाद यदि उन्हें गर्भ नहीं रहता अथवा उनको रजोधर्म बन्द हो जाने का रोग नहीं हो जाता, तो वह फिर दूसरे महीने में रजस्वला होती हैं और उनकी योनिसे फिर चार पाँच दिनों तक आर्त्तव या खून बहता है। यह रजोधर्म होना,—कोई रोग नहीं, पर स्त्रियोंके आरोग्य की निशानी है। जिस स्त्रीको नियत समय पर ठीक रजोधर्म होता है, वह सदा हृष्ट-पुष्ट और तन्दुरुस्त रहती है। मतलब यह, इस समय योनि से खून बहना,—रोग नहीं समझा जाता। हाँ, अगर चार पाँच दिन से ज़ियादा, बराबर खून गिरता रहता है, तो औरत क़मज़ोर हो जाती है एवं और भी अनेक रोग हो जाते हैं। इसका इलाज किया जाता है। मतलब यह कि, जब नाना प्रकार के मिथ्या आहार विहारों से स्त्रियों की योनि से खून या अनेक रंग के रक्त बहा करते हैं, तब कहते हैं कि स्त्रीको "प्रदर रोग" हो गया है।

"भावप्रकाश" में लिखा है—जब दुष्ट रज बहुत ही ज़ियादा बहती है, शरीर टूटता है, अंगों में वेदना होती है एवं शूल की सी पीड़ा होती है, तब कहते हैं—"प्रदर रोग" हुआ।

"वैद्यरत्न" में लिखा है:—

अतिमार्गातिगमन प्रभूत सुरतादिभिः।
प्रदरो जायते स्त्रीणां योनिरक्त स्रुतिःपृथुः॥

बहुत रास्ता चलने और अत्यन्त परिश्रम करने से स्त्रियों को "प्रदर रोग" होता है। इस रोग में योनि से खून बहता है।

"चरक" में लिखा है—अगर स्त्री नमकीन, चरपरे, खट्टे, जलन करनेवाले, चिकने, अभिष्यन्दी पदार्थ, गाँव के और जल के जीवों का मांस, खिचड़ी, खीर, दही, सिरका और शराब प्रभृति को सदा या ज़ियादा खाती है, तो उसका "वायु" कुपित होता और खून अपने प्रमाण से अधिक बढ़ता है। उस समय वायु उस खून को ग्रहण करके, गर्भाशय की रज बहानेवाली शिराओं का आश्रय लेकर, उस स्थान में रहने वाले आर्त्तव को बढ़ाती है। चिकित्सा-शास्त्र-विशारद विद्वान् उसी बढ़े हुए वायुसंसृष्ट रक्तपित्त को "असृग्दर" या "रक्त-प्रदर" कहते हैं। "वैद्यविनोद" में लिखा है:—

मद्याति पानमति मैथुनगर्भपाताज्जीर्णाध्व
शोक गरयोग दिवाति निद्रा।
स्त्रीणाम सृग्धरगदो भवतीति
तस्य प्रत्युद्गतौ भ्रमरुजौदवथुप्रलापौ॥
दौर्बल्य मोहमद पाण्डुगदाश्च तन्द्रा तृष्णा
तथा निलरुजो बहुधा भवन्ति।
तं वातपित्त कफजं त्रिविधं चतुर्थं दोषोद्भवं
प्रदररोगमिदं वदन्ति॥

बहुत ही शराब पीने, अत्यन्त मैथुन करने, गर्भपात होने या गर्भ गिरने, अजीर्ण होने, राह चलने, शोक या रञ्ज करने, कृत्रिम

विषका योग होने और दिनमें बहुत सोने—वगैरः कारणों से स्त्रियों को "असृग्दर" या "प्रदर" रोग पैदा होता है।

इस प्रदर रोग के अत्यन्त बढ़ने पर श्वास, व्यथा, दाह—जलन, सन्ताप, बकवाद, कमज़ोरी, मोह, मद, पाण्डुरोग, तन्द्रा, तृष्णा और बहुत से "वात रोग" हो जाते हैं। यह प्रदर रोग वात, पित्त, कफ और सन्निपात—इन भेदों से चार तरहका होता है।

"भावप्रकाश" में प्रदर रोग होने के नीचे लिखे कारण लिखे हैं:—

(१) विरुद्ध भोजन करना, (२) मद्य पीना।
(३) भोजन पर भोजन करना, (४) अजीर्ण होना।
(५) गर्भ गिरना, (६) अति मैथुन करना।
(७) अधिक राह चलना (८) बहुत शोक करना।
(९) अत्यन्त कर्षण करना, (१०) बहुत बोझ उठाना।
(११) चोट लगना, (१२) दिन में सोना।
(१३) हाथी या घोड़े पर चढ़ कर उन्हें खूब भगाना।

प्रदर रोग की क़िस्में।

प्रदर रोग चार तरह का होता है:—

(१) वातज प्रदर। (२) पित्तज प्रदर।
(३) कफज प्रदर। (४) सन्निपातज प्रदर।

वातज प्रदर के लक्षण।

अगर वातज प्रदर रोग होता है; तो रूखा, लाल, झागदार, व्यथा-सहित, मांसके धोवन-जैसा और थोड़ा-थोड़ा खून बहा करता है।

नोट—"चरक" में लिखा है,—वातज प्रदरका खून झागदार, रूखा, साँवला अथवा अकेले लाल रंग का होता है। वह देखने में ढाक के काढ़े के से रंग का होता है। उस के साथ शूल होता है और नहीं भी होता। लेकिन वायु—कमर, वंक्षण,

हृदय, पसली, पीठ और चूतड़ों में बड़े जोरों से वेदना या दर्द पैदा करता है। वात-जनित प्रदर में वायु का कोप प्रबलता से होता है और वेदना या दर्द करना वायुका का काम है, इसी से वादी के प्रदर में कमर और पीठ वगेरः में बड़ा दर्द होता है।

पित्तज प्रदर के लक्षण।

अगर पित्त के कारण से प्रदर रोग होता है, तो पीला, नीला, काला, लाल और गरम खून बारम्बार बहता है। इस में पित्त की वजह से दाह—जलन आदि पीड़ाएँ होती हैं।

नोट—खट्टे, नमकीन, खारी और गरम पदार्थों के अत्यन्त सेवन करने से पित्त कुपित होता और पित्तजनित या पित्तका प्रदर पैदा करता है। पित्त प्रदर में खून कुछ-कुछ नीला, पीला, काला और अत्यन्त गर्म होता है; बारम्बार पीड़ा होती और खून गिरता है। इसके साथ जलन, प्यास, मोह, भ्रम और ज्वर,—ये उपद्रव भी होते हैं।

कफज प्रदर के लक्षण।

अगर कफ से प्रदर होता है, तो कच्चे रस वाला, सेमल वगैर: के गोंद-जैसा चिकना, किसी क़दर पाण्डुवर्ण और तुच्छ धान्य के धोवन के समान खून बहता है।

नोट—भारी प्रभृति पदार्थों के बहुत ही जियादा सेवन करने से कफ कुपित होता और कफज प्रदर रोग पैदा करता है। इस में खून पिच्छल या लिबलिबा, पाण्डुरंगका, भारी, चिकना और शीतल होता है तथा श्लेष्म मिले हुए खूनका स्राव होता है। पीड़ा कम होती है, पर वमन, अरुचि, हुल्लास, श्वास और खाँसी—ये कफ के उपद्रव नजर आते हैं।

त्रिदोषज प्रदर के लक्षण।

अगर त्रिदोष—सन्निपात या वात-पित्त-कफ—तीनों दोषों के

कोप से प्रदर रोग होता है; तो शहद, घी और हरताल के रंगवाला, मज्जा और शङ्ख की सी गन्धवाला खून बहता है। विद्वान् लोग इस चौथे प्रदर रोग को असाध्य कहते हैं, अतः चतुर वैद्य को इस प्रदर का इलाज न करना चाहिये।

नोट— 'चरक'' में लिखा है—रजस्राव होने, स्त्रीके अत्यन्त कष्ट पाने और खून नाश होने से; यानी सब हेतुओं के मिलजाने से वात, पित्त और कफ तीनों दोष कुपित हो जाते हैं। इन तीनों में "वायु" सबसे जियादा कुपित होकर असाध्य कफ का त्याग करता है; तब पित्तकी तेजी के मारे, प्रदरका खून बदबूदार, लिब-लिबा, पीला और जलासा हो जाता है। बलवान वायु, शरीर की सारी वसा और मेद को ग्रहण करके, योनि की राह से, घी, मज्जा और वसा के से रंगवाला पदाथ हर समय निकाला करता है। इसी वजह से उक्त स्त्रीको प्यास, दाह और ज्वर प्रभृति उपद्रव होते हैं। ऐसी क्षीणरक्त—कमज़ोर स्त्री को असाध्य समझना चाहिये।

खुलासा पहचान।

वातज प्रदरमें—रूखा, झागदार और थोड़ा खून बहता है।
पित्तज प्रदरमें—पीला, नीला, लाल और गरम खून जाता है।
कफज प्रदर में—सफ़ेद, लाल और लिबलिबा स्राव होता है।
त्रिदोषज प्रदरमें—बदबूदार, गरम, शहदके समान खून बहता है।

नोट—ध्यान रखना चाहिये, सोम रोग मूत्र-मार्ग में और प्रदर रोग गर्भाशय में होता है। कहा है:—

सोमरुङ् मूत्रमार्गे स्यात्प्रदरोगर्भवर्त्मनि॥

अत्यन्त रुधिर बहनेके उपद्रव।

अगर प्रदर रोग वाली स्त्री के रोगका इलाज जल्दीही नहीं किया जाता, उसके शरीर से बहुत ही ज़ियादा खून निकल जाता है, तो कमज़ोरी और बेहोशी प्रभृति अनेक रोग उसे आ घेरते हैं। "भाव-प्रकाश" और "बङ्गसेन" प्रभृति ग्रन्थों में लिखा है:—

तस्यातिवृत्तौ दौर्बल्यं श्रमोमूर्च्छा मदस्तृपा ।
दाहः प्रलापः पाण्डुत्वं तन्द्रा रोगश्च वातजाः ॥

बहुत खून चूने या गिरने से कमज़ोरी, थकान, बेहोशी, नशा सा बना रहना, जलन होना, बकवाद करना, शरीरका पीलापन, ऊँघ सी आना और आँखें मिंचना तथा बादीके रोग—आक्षेपक आदि उत्पन्न हो जाते हैं ।

प्रदर रोग भी प्राणनाशक है ।

आजकल स्त्री तो क्या पुरुष भी आयुर्वेद नहीं पढ़ते । इसी से रोगोंकी पहचान और उनका नतीजा नहीं जानते । कोई विरली ही स्त्री होगी, जिसे कोई न कोई योनि-रोग या प्रदर आदि रोग न हो । स्त्रियाँ इन रोगों को मामूली समझती हैं, इसलिये लाज के मारे अपने घरवालों से नहीं कहतीं । अतःरोग धीरे-धीरे बढ़ते रहते हैं। रोग की हालत में ही व्रत-उपवास, अत्यन्त मैथुन और अपने बल से अधिक मिहनत वगैरः किया करती हैं, जिससे रोग दिन-दूना और रात-चौगुना बढ़ता रहता है। जब हर समय पड़े रहने को दिल चाहता है, काम-धन्धे को तबियत नहीं चाहती, सिर में चक्कर आते हैं, प्यास बढ़ जाती है, शरीर पीला या सफेद-चिट्ट होने लगता है, तब घरवालों की आँखें खुलती हैं । उस समय सद्वैद्य भी इस दुष्ट रोग को आराम करने में नाकामयाब होते हैं । बहुत क्या—शेष में मूर्खा अबला इस कठिन से मिलने योग्य मनुष्य-देह को त्याग कर, अपने प्यारों को रोता-विलपता छोड़ कर, यमराजके घर चली जाती है । इसलिये, समझदारों को अव्वल तो इस रोग के होने के कारणों से स्त्रियों को वाकिफ़ कर देना चाहिये । फिर भी; अगर यह रोग किसी को हो ही जाय, तो फ़ौरन से भी पहले इसका इलाज करना या करवाना चाहिये । देखिये आयुर्वेद में लिखा है:—

असृग्दरो प्राणहरः प्रदिष्टः नारीणामतस्तं विनिवारयेच्च ॥

सब तरह के प्रदर रोग प्राण नाश करते हैं, इसलिये उनको शीघ्र ही दूर करना चाहिये।

असाध्य प्रदर के लक्षण।

अगर हर समय खून बहता हो, प्यास, दाह और बुखार हो, शरीर बहुत कमज़ोर हो गया हो बहुत सा खून नष्ट हो गया हो, शरीर का रंग पिलाई लिये सफेद हो गया हो, तो चतुर वैद्य को ऐसे लक्षणों वाली रोगिणी का इलाज हाथ में न लेना चाहिये। क्योंकि इस दशा में पहुँच कर रोगिणी का आराम होना असम्भव है। ये सब असाध्य रोग के लक्षण हैं।

नोट—सुचतुर वैद्य असाध्य रोगी का इलाज करके वृथा अपनी बदनामी नहीं कराते। हाँ, जिन्हें साध्यासाध्य की पहचान नहीं, वेही ऐसे असाध्य रोगियों की चिकित्सा करने लगते हैं। यही बात हम त्रिदोषज प्रदर के लक्षणों के नीचे, जो नोट लिखा है उस में, चरक से लिख आये हैं। वैद्य को सभी बातें याद रखनी चाहियें। इलाज हाथ में लेकर पुस्तक देखना भारी नादानी है।

इलाज बन्द करने को शुद्ध आर्त्तव के लक्षण।

"चरक" में लिखा है—

मासान्निष्पिच्छदाहार्ति पञ्च रात्रानुबन्धि च।
नैवाति बहुलात्यल्पमार्त्तवं शुद्धमादिशेत् ॥

यदि स्त्री महीने-की-महीने ऋतुमती हो और उसकी योनि से पाँच रात से ज़ियादा खून न गिरे और उस ऋतुका खून दाह, पीड़ा और चिकनाई से रहित तथा बहुत ज़ियादा या बहुत कम न हो, तो कहते हैं कि शुद्ध ऋतु हुआ।

और भी लिखा है,—ऋतुका खून चिरमिटी के रंगका, लाल कमल के रंगका अथवा महावर या बीरबहुटी के रङ्ग का हो, तो समझना चाहिये कि विशुद्ध ऋतु हुई।

"वैद्य-विनोद" में लिखा है:—

शशास्त्रवर्णं प्रतिभासमानं लाक्षारसेनापि समं तथा स्यात् ।
तदार्त्तवं शुद्धमतो वदन्ति नरंजयेद्वस्त्रमिदं यदेतत् ॥

अगर स्त्री के मासिक धर्म का खून या आर्त्तव खरगोश के से खून के जैसा अथवा लाख के रस के समान हो तथा उस खून में कपड़ा तर करके पानी से धोया जाय, और धोने पर खून का दाग़ न रहे, तो उस आर्त्तव—खून को शुद्ध समझना चाहिये ।

नोट—जब वैद्य समझे कि रोगिणीका प्रदर रोग आराम हो गया, तब उसे सन्देह निवारार्थ स्त्री का आर्त्तव—खून इस तरह देखना चाहिये । अगर स्त्री को ठीकमहीने पर रजोदश न हो, खून गिरते समय जलन और पीड़ा न हो, खून में चिकनापन न हो, उसका रंग चिरमिटी, महावर, लाल कमल, या बीरबहुटी का सा हो अथवा खरगोश के खून या लाखके रस जैसा हो और उस में भीगा कपड़ा वेदाग़ साफ हो जाय एवं वह खून पाँच दिन तक वह कर बन्द हो जाय, तो फिर उस को दवा देना वृथा है । वह आराम हो गयी । पर खून के पाँच दिन तक बहने और बन्द हो जाने में एक बात का और ध्यान रखना चाहिये ; वह यह कि खून चाहे तीन दिन तक बहे, चाहे पाँच दिन अथवा ऋतु के सोलहों दिन तक, पर खून में ऊपर लिखे हुए शुद्धि के लक्षण होने चाहियें ; यानी उस में चिकनापन, जलन और पीड़ा आदि न हों, उसका रंग खरगोश के खून या चिरमिटी प्रभृति कासा हो, धोनेसे खून का दाग़ न रहे । यह बात हमने इस लिये लिखी है कि, अगर स्त्री का खून जोर से बहता है, तो तीन दिन बाद ही बन्द हो जाता है । अगर मध्यम रूप से बहता है, तो पाँच दिन में बन्द हो जाता है; पर किसी-किसी के पहले से ही थोड़ा-थोड़ा खून गिरता है और वह ऋतु के पहले सोलहों दिन गिरता रहता है । सोलह दिन बाद, जब गर्भाशय या धरण का मुँह बन्द हो जाता है, तब खून बन्द हो जाता है । इसमें कोई दोष नहीं; इसे रोग न समझना चाहिये, बशर्त्ते कि शुद्ध आर्त्तव के और लक्षण हों । हाँ, अगर सोलह दिनके बाद भी खून बहता रहे, तो रोग होने में सन्देह ही क्या ? उसे दवा देकर बन्द करना चाहिये । वैसे खून गिरने के रोग को औरतें "पैर पड़ना" कहती हैं । इस काम के लिए, आगे पृष्ठ ३५६ में लिखा हुआ "चन्दनादि चूर्ण" बहुत ही अच्छा है ।

प्रदर रोगकी चिकित्सा-विधि।

वैद्य को प्रदर रोग के लक्षण, कारण आदि अच्छी तरह समझ कर चिकित्सा करनी चाहिये। सब तरह के प्रदरों में पहले "वमन" कराने की प्रायः सभी शास्त्रकारोंने राय दी है; पर वमन कराना ज़रा कठिन काम है। जिन को पूरा अनुभव हो, वे ही इस काम को करें। "बंगसेन" में लिखा है:—सब तरह के प्रदरों में पहले वमन करानी चाहिये और ईख के रस तथा दाख के जल से तर्पण कराना चाहिये एवं पीपल, शहद, मांड, नागरमोथेका काढ़ा, जौ और गुड़ का शर्बत देना चाहिये। मतलब यह है, इनमें से किसीसे तर्पण कराकर वमन करानी चाहिये। "वैद्य विनोद" में लिखा है—

सर्वेषुपूर्वं वमनं प्रदिष्टं रसेक्षु मुद्गोदक तर्पणाश्च।

सब तरह के प्रदरों में, ईख के रस और मुद्गोदक—मूँग के यूष—से तर्पण कराकर वमन करानी चाहिये। यद्यपि यह ढँग बहुत ही अच्छा है, पर साधारण वैद्यों को इस खटखट में न पड़ना ही अच्छा है। वमन कराने के सम्बन्ध में, हमने "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ १३६-१४० में जो लिखा है, उसे पहले देख लेना ज़रूरी है।

सूचना—योनिरोग, रक्तपित्त, रक्तातिसार और रक्तार्श का इलाज़ जिस तरह किया जाता है; उसी तरह चारों प्रकार के प्रदरों का भी इलाज किया जाता है। "चरक" में लिखा है :—

योनीनां वातलाद्यानां यदुक्तमिह भेषजम्।
चतुर्णां प्रदराणाञ्च तत्सर्वं कारयेद्भिषक्॥
रक्तातिसारणांचैव तथा लोहित पित्तिनाम्।
रक्तार्शसाञ्च यत्प्रोक्तं भेषजं तच्चकारयेत॥

वातज, पित्तज, कफज और सन्निपातज "योनि-रोगों" की जो

चिकित्सा कही गई है, वैद्य को चार प्रकार के प्रदरों में भी वही चिकित्सा करनी चाहिये एवं रक्तातिसार, रक्तपित्त और ख़ूनी बवासीर की जो चिकित्सा कही गई है, वही वैद्य को प्रदर रोग में भी करनी उचित है। चरकने तो ये पंक्तियाँ लिखकर ही प्रदर चिकित्सा का ख़ातमा कर दिया है। चक्रदत्तने भी लिखा है :—

रक्तपित्त विधानेन प्रदरांश्चाप्युपाचरेत् ॥

रक्तपित्त में कहे हुए विधान भी प्रदर रोग में करने उचित हैं। "बंगसेन" में भी लिखा है—

तरुण्याहित सेविन्यास्तदल्पोऽपद्रवंभिषक् ।
रक्तपित्त विधानेन यथावत्समुपाचरेत् ॥

यदि अहित पदार्थ सेवन करने वाली स्त्रियों के अल्प उपद्रव हों, तो रक्तपित्त के विधान या क़ायदे से चिकित्सा करनी चाहिये।

प्रदर-नाशक नुसखे ।

(ग़रीबी नुसखे)

(१) दो तोले अशोक की छाल, गायके दूध में पकाकर और मिश्री मिलाकर, सवेरे-शाम, दोनों समय, लगातार कुछ दिन, पीने से घोर रक्तप्रदर निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—यह नुसखा प्रायः सभी ग्रन्थों में लिखा हुआ है। हमने इस की अनेक बार परीक्षा भी की है। वास्तव में, यह रक्तप्रदर पर अकसीर का काम करता है। अगर अशोक की छाल का काढ़ा पका कर, उस के साथ दूध पकाया जाय और शीतल होने पर सवेरे ही पिया जाय, तब तो कहना ही क्या ? "भावप्रकाश" में लिखा है—अशोक की छाल चार तोले लेकर, एक हाँडी में रख कर, ऊपर से १२८ तोले पानी डालकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब ३२ तोले पानी रह जाय, उस में ३२ तोले दूध भी मिला दो और फिर पकाओ। जब पकते-पकते केवल दूध रह जाय, नीचे उतार लो। जब दूध खूब शीतल हो जाय, उस में से १६ तोले दूध निकाल कर सवेरे ही पीओ। अगर जठराग्नि कमज़ोर हो तो दूध कम पीओ।

इस तरह, इस दूध के पीने से घोर-से-घोर प्रदर भी शान्त हो जाता है। यह तर-कीब सबसे अच्छी है।

(२) पके हुए गूलरके फल लाकर सुखा लो। सूखने पर पीस-कूट कर छान लो और फिर उस चूर्ण में बराबर की मिश्री पीसकर मिला दो और किसी बर्त्तन में मुँह बाँधकर रख दो। यह चूर्ण, सवेरे-शाम, दोनों समय, दूध या पानी के साथ, फाँकने से रक्तप्रदर निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(३) पके हुए केले की फली, दूध में कई बार सान कर, लगा-तार कुछ दिन खाने से, योनि से खून जाना बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

(४) पका हुआ केला और आमलों का स्वरस लेकर, इन दोनों से दूनी शक्कर भी मिला लो। इस नुसख़े के कुछ दिन बराबर सेवन करने से प्रदर रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(५) सवेरे-शाम, एक-एक पका हुआ केला छै-छै माशे घी के साथ खाने से, आठ दिन में ही प्रदर रोग में लाभ दीखता है। परीक्षित है।

नोट—अगर किसी को सर्दी मालूम हो, तो इस में चार बूँद 'शहद' भी मिला लेना चाहिये। इस नुसखे से प्रदर और धातुरोग दोनों आराम हो जाते हैं।

(६) केलेके पत्ते खूब महीन पीस कर, दूध में खीर बना कर, दो तीन दिन, खाने से प्रदर रोग में लाभ होता है। परीक्षित है।

(७) सफेद चन्दन १ तोला, खस १ तोला और कमलगट्टे की गिरी १तोला—तीनों दवाओं को, आध सेर चाँवल के धोवन में खूब महीन घोट-छान कर, दो तोले पिसी हुई मिश्री मिला दो। इसे दिन में कई बार पीने से योनि-द्वारा खून जाना बन्द हो जाता है। इस पर पथ्य केवल दूध भात और मिश्री है। परीक्षित है।

(८) सवेरे-शाम, पाँच-पाँच नग ताज़ा गुलाब के फूल तीन-तीन माशे मिश्री के साथ खाओ। ऊपर से गाय का दूध पीओ। चौदह

दिन इस नुसख़े के सेवन करने से अवश्य लाभ होता है। इससे प्रदर रोग, धातु-विकार, मूत्राशय का दाह, पेशाब की सुर्ख़ी, ख़ूनी बवासीर, पित्त-विकार और दस्तकी क़ब्ज़ियत ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

(९) शतावर का रस "शहद" मिलाकर पीने से पित्तज प्रदर आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१०) शारिवा की हरी जड़ें लाकर पानी से धोकर साफ कर लो। पीछे उन्हें केले के ताज़ा हरे पत्तों में लपेट कर, कण्डों की आग में भून लो। फिर जड़ों में जो रेशे से होते हैं, उन्हें निकाल डालो। इसके बाद साफ की हुई शारिवा की जड़, सफेद ज़ीरा, मिश्री और भुनी हुई सफेद प्याज़—सब को एक जगह पीस लो। फिर सब दवाओंके बराबर "घी" मिला दो। इसमें से दिनमें दो बार, अपनी-शक्ति अनुसार खाओ। इस नुसख़े से सात दिन में गर्भवती का प्रदर रोग तथा शरीर में भिनी हुई गर्मी आराम हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—शारिवा को बङ्गला में अनन्तमूल, कलघंटि; गुजराती में धोली उपलसरी, काली उपलसरी और अङ्गरेजी में इन्डियन सारसापरिला कहते हैं। हिन्दी में इसे गौरीसर भी कहते हैं।

(११) कड़वे नीम की छाल के रस में सफेद ज़ीरा डाल कर, सात दिन, पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) बाँझ-ककोड़े की गाँठ १ तोले, शहद में मिलाकर खाने से श्वेत प्रदर और मूत्रकृच्छ्र नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—ककोड़े की बेल बरसात में जंगल में होती है। इस की बेल झाड़ या बाड़ के सहारे लगती है। जमीन में इस की गाँठ होती है। ककोड़े में फूल और फल लगते हैं, पर बाँझ ककोड़े में केवल फूल आते हैं, फल नहीं लगते। इसकी बेल पहाड़ी जमीन में होती है। इसकी गांठ में शहद मिलाकर सिर पर लेप करने से वातज दर्द-सिर अवश्य आराम हो जाता है।

(१३) कैथ के पत्ते और बाँस के पत्ते बराबर-बराबर लेकर

सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। इस लुगदी को शहद मिला-कर खाने से तीव्र प्रदर रोग भी नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(१४) ककड़ी के बीजों की मींगी एक तोले और सफेद कमल की पंखड़ी एक तोले लेकर पीस लो। फिर ज़ीरा और मिश्री मिला कर सात दिन पीओ। इस नुसख़े से श्वेत प्रदर अवश्य आराम हो जाता है।

(१५) काकजंघा की जड़ के रस में—लोध का चूर्ण और शहद मिलाकर पीनेसे श्वेत प्रदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—काकजंघा के पत्ते औंगा या अपामार्ग-जैसे होते हैं। वृक्ष भी उतना ही ऊंचा कमर तक होता है। नींद लाने को काकजंघा सिर में रखते हैं। काकजंघा का रस कान में डालने से कर्णनाद और बहरापन आराम होते और कान के कीड़े मर जाते हैं। केवल काकजंघा की जड़ को चाँवलों के धोवनके साथ पीने से पाण्डु-प्रदर शान्त हो जाता है।

(१६) छुहारोंकी गुठलियाँ निकाल कर कूट-पीस लो। फिर उस चूर्ण को "घी" में तल लो। पीछे "गोपीचन्दन" पीसकर मिला दो। इसके खाने से प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१७) खिरनी के पत्ते और कैथ के पत्ते पीस कर "घी" में तल लो और खाओ। इस योग से प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(१८) कथीरिया गोंद रात को पानी में भिगो दो। सवेरे ही उस में "मिश्री" मिलाकर पी लो। इस नुसखे से प्रदर रोग, प्रमेह और गरमी—ये नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—कांडोल के पेड़ में दूध सा या गोंद सा होता है। उसी को 'कथीरिया गोंद" कहते हैं। कांडोलका वृक्ष सफेद रंगका होता है। इसके पत्ते बड़े और फूल लाल होते हैं। वसन्त में आम-वृक्षकी तरह मौर आकर फल लगते हैं। फल बादाम-जैसे होते हैं। पकने पर मीठे लगते हैं। इस की जड़ लाल और शीतल होती है।

(१९) कपास के पत्तों का रस चाँवलों के धोवन के साथ पीने से प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—कपास की जड़ चाँवलों के धोवन में घिसकर पीनेसे भी श्वेत प्रदर नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(२०) काकमाची की जड़ चाँवलों के धोवन में घिस कर पीने से प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२१) भिन्डी की जड़ सूखी हुई दस तोले और पिंडारू सूखा हुआ दस तोले लाकर, पीस-कूट कर छान लो। इस में से छै-छै माशे चूर्ण, पाव भर गाय के दूध में एक तोले मिश्री मिलाकर मुँह में उतारो। इस चूर्ण को सवेरे-शाम सेवन करो। अगर कभी दूध न मिले, तो हर मात्रा में ज़रासी मिश्री मिलाकर, पानी से ही दवा उतार जाओ। प्रदर रोग पर परीक्षित है।

नोट—कितनी ही श्वेतप्रदर वाली जो किसी भी दवा से आराम न हुईं, इससे १५।२० दिनों में ही आराम हो गईं। कितनी ही बार परीक्षा की है।

(२२) सफेद चन्दन, जटामाँसी, लोध, खस, कमल की केशर, नाग-केशर, बेल का गूदा, नागरमोथा, सोंठ, हाऊबेर, पाढ़ी, कुरैया की छाल, इन्द्रजौ, अतीस, सूखे आमले, रसौत, आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, मोचरस, कमलगट्टे की गिरी, मँजीठ, छोटी इलायची के दाने, अनार के बीज और कूट—इन २४ दवाओं को अढ़ाई-अढ़ाई तोले ले कर, कूट-पीस कर कपड़े में छान लो। समय—सवेरे-शाम पीओ। मात्रा ६ माशे से दो तोले तक। अनुपान—चाँवलों के धोवन में एक-एक मात्रा घोट-छान कर और एक माशे "शहद" मिलाकर रोज़ पीओ। इस नुसखे के १५ या २१ दिन पीनेसे प्रदर रोग अवश्य आराम हो जाता है। १०० में ८० रोगी आराम हुए हैं। परीक्षित है।

(२३) सुद्गपर्णी के रस के साथ तिली का तेल पकाओ। फिर उस तेल में कपड़े का टुकड़ा भिगो कर योनि में रखो और इसी तेल की बदन में मालिश करो। इस नुसखे से खून का बहना बन्द होता और बड़ा आराम मिलता है। परीक्षित है।

नोट—संस्कृत में मुद्गपर्णी, हिन्दी में मुगवन, बङ्गला में वनमाष या मुगानि, गुजराती में जंगली मग और मरहटी में मुगवेल या रानमूग कहते हैं। इन की बेल मूँग के समान होती है, पत्ते भी मूँग के जैसे हरे हरे होते हैं और फूल पीले आते हैं। फलियाँ भी मूंग के जैसी ही होती हैं। यह वन के मूंग हैं। मुगवनका पञ्चाङ्ग दवा के काम आता है। मात्रा २ माशे की है।

(२४) नीम का तेल गाय के दूध में मिलाकर पीने से प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२५) मुलेठी, पदुमाख, ककड़ी के बीज, शतावर, विदारीकन्द और ईख की जड़—इन सब दवाओंको महीन पीस कर, १०० बार धुले हुए घी में मिला दो। इस दवा के योनि, मस्तक और शरीर पर लेप करने से प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—किसी और खाने की दवा के साथ इस दवा का भी लेप कराकर आश्चर्य फल देखा है। अकेली इस दवा से काम नहीं लिया।

(२६) सँजीठ, धाय के फूल, लोध और नीलकमल—इन को पीस-छान कर "दूध" के साथ पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(२७) दो तोले अशोक की छाल को कुचल कर, एक मिट्टी की हाँडी में, पाव भर जल के साथ जोश दो। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर, आध पाव दूध में मिला कर फिर औटाओ। जब काढ़ा-काढ़ा जल जाय, उतारकर रख दो। जब यह आपही शीतल हो जाय, पीलो। इस को सवेरे के समय पीने से बड़ा लाभ होता है। यह योग घोर प्रदर को आराम करता है। परीक्षित है। हमें यह नुसखा बहुत पसन्द है।

(२८) रोहितक या रोहिड़े की जड़ को सिल पर पीस कर खाने से हल्के लाल रंगका प्रदर आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे को वृन्द, चक्रदत्त और वैद्यविनोदकारने पाण्डु प्रदर (कफ-जनित श्वेतप्रदर) पर लिखा है।

(२६) दारुहल्दी को सिल पर पीस कर लुगदी बनालो । इस लुगदी या कल्क में शहद मिला कर पीने से श्वेत प्रदर आराम हो जाता है।

(३०) नागकेशर को पीस कर और माठा या छाछ में मिला-कर ३ दिन पीने से श्वेत प्रदर आराम हो जाता है। केवल माठा पीनेसे ही श्वेत प्रदर जाता रहता है। परीक्षित है।

(३१) चाँवलों की जड़को चाँवलों के धोवन में औटाकर, फिर उस में "रसौत और शहद" मिला कर पीने से सब तरह के प्रदर रोग नाश हो जाते हैं, इस में शक नहीं। परीक्षित है।

(३२) कुशा की जड़ लाकर, चाँवलों के धोवन में पीस कर, तीन दिन तक, पीने से लाल प्रदर से निश्चय ही छुटकारा हो जाता है। परीक्षित है ।

नोट—यह नुसखा वृन्द, चक्रदत्त और वैद्यविनोद सभी ग्रन्थों में लिखा है।

(३३) रसौत और लाख को बकरी के दूध में मिला कर पीने से रक्तप्रदर अवश्य चला जाता है। परीक्षित है।

(३४) चूहे की मैंगनी दही में मिला कर पीने से रक्त प्रदर अ-वश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है। कहा है:—

दध्ना मूषकविष्ठां च लोहिते प्रदरे पिबेत् ।

बंगसेन में भी लिखा है:—

आखोः पुरीषं पयसा निषेव्यं वह्नेर्बलादेकमहद्वयंहंवा ।
स्त्रियो महाशोणितवेगनद्याः क्षणेन पारं परमाप्नुवन्ति ॥

चूहे की विष्ठा को, दूध के साथ, अग्निबलानुसार, एक या दो दिन तक, सेवन करने से नदी के वेग के समान बहता हुआ खून भी क्षण भर में बन्द हो जाता है।

और भी—चूहे की मैंगनी में बराबर की शक्कर मिला कर रख लो। इस में से ६ माशे चूर्ण, गाय के धारोष्ण दूध के साथ, पीने से सब तरह के प्रदर रोग फौरन आराम हो जाते हैं।

(३५) लाल पूगीफल—सुपारी, माजूफल, रसौत, धाय के फूल, मोचरस, चौलाई की जड़ और गेरू,—इन को बराबर-बराबर लाकर पीस-छान लो। इस में से ६ माशे से १ तोले तक चूर्ण, हर रोज़, चाँवलों के धोवन के साथ पीने से प्रदर रोग चला जाता है। इस नुसखे के उत्तम होने में सन्देह नहीं।

(३६) चौलाई की जड़ को चाँवलों के पानी के साथ पीसकर, उस में "रसौत और शहद" मिला कर पीने से सारे प्रदर रोग अवश्य नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—रसौत और चौलाई की जड़ को, चाँवलों के पानी में पीस कर और शहद मिला कर पीने से समस्त प्रकार के पदर नाश हो जाते हैं। चक्रदत्त।

(३७) भुँइ-आमलों की जड़ चाँवलों के धोवन में पीस-छान कर पीने से दो तीन दिन में ही प्रदर रोग चला जाता है।

नोट—भुँइ-आमलोंके बीज ऊपरकी तरह चावलों के धोवन में पीस-छान कर पीने से प्रदर रोग, लिंग से खून जाना और उल्वण रक्तातिसार ये आराम हो जाते हैं।

(३८) काला नोन, सफेद ज़ीरा, मुलहटी और नील-कमल, इन को पीस-छान कर दही में मिलाओ; और ज़रासा "शहद" मिलाकर पीजाओ। इस योग से वात या बादी से हुआ प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—नील कमल न मिले तो 'नीलोफर" ले सकते हो। चारों चीजें डेढ़-डेढ़ माशे, दही चार तोले और शहद आठ माशे लेना चाहिये।

(३९) हिरन के खून में शहद और चीनी मिला कर पीने से पित्तज प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(४०) बाँसे या अड़ूसे का स्वरस पीने से पित्तज प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(४१) गिलोय या गुर्च का स्वरस भी पित्तज प्रदर रोग को नष्ट करता है। यह नुसखा पित्तज प्रदर पर अच्छा है।

(४२) आमलों के कल्क को पानी में मिला कर, ऊपर से "शहद और मिश्री" डाल कर पीने से प्रदर रोग जाता रहता है।

(४३) धाय के फूल, बहेड़े और आमले के स्वरस में "शहद" डाल कर पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(४४) मकोय की जड़ चाँवलोंके धोवन के साथ पीने से पाण्डु-प्रदर आराम हो जाता है।

(४५) दारुहल्दी, रसौत, अड़ूसा, नागरमोथा, चिरायता, बेलगिरी, शुद्ध भिलावे और कमोदिनी—इन को बराबर-बराबर कुल दो या अढ़ाई तोले लेकर काढ़ा बना लो। शीतल होने पर छान कर "शहद" मिला दो। इस काढ़े के पीने से शूल-समेत दारुण प्रदर रोग आराम हो जाता है। काले, पीले, नीले, लाल या अति लाल एवं सफेद—सब तरह के प्रदर रोग या योनि से खून गिरने के रोग इस नुसखे से आराम हो जाते हैं। योनि से बहता हुआ खून फौरन बन्द हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—भिलावों को शोध कर लेना जरूरी है। हम काढ़ा बनाकर और ६ माशे मिश्री मिलाकर बहुत देते हैं। परीक्षित है।

(४६) भारंगी और सोंठ के काढ़े में "शहद" मिला कर पीने से प्रदर रोगवाली का श्वास और प्रदर दोनों आराम हो जाते हैं। अच्छा नुसखा है।

(४७) दशमूल की दसों दवाओं को चाँवलों के पानी में पीस कर पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है। ३ दिन पीने से चमत्कार दीखता है।

(४८) काली गूलर या कठूमर के फल लाकर रस निकाल लो। फिर उस रस में "शहद" मिलाकर पीओ। इस पर खाँड और दूधके साथ भोजन करो। भगवान् चाहेंगे, तो इस नुसखे से प्रदर रोग अवश्य नष्ट हो जायगा।

नोट—कठूमर, और कठगूलरि गूलर के भेद हैं। कठूमर शीतल, कसैला तथा दाह, रक्तातिसार, मुंह और नाक से खून गिरने को रोकता है। इस पर फूल नहीं आते,

शाखाओं में फल लगते हैं। फल गोल-गोल अंजीर के जैसे होते हैं। उनमें से दूध निकलता है। कठूमर कफ पित्त नाशक है।

सूचना—भावप्रकाश में 'औदुम्बर' शब्द ही लिखा है। इस से यदि काली गूलर या कठूमर न मिले, तो गूलर के फल ही ले लेने चाहियें।

(४९) खिरेंटी की जड़ को दूध में पीसकर और शहद मिलाकर पीने से प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

(५०) खिरेंटी की जड़ को चाँवलों के धोवन में पीसकर पीने से लाल रंग का प्रदर नाश हो जाता है।

नोट—संस्कृत में 'बला' हिन्दी में खिरेंटी, बरियारा और बीजबन्द तथा अंग्रेजी में **Horn beam leaved** कहते हैं।

(५१) बेरों के चूर्ण में गुड़ मिलाकर दूध के साथ पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(५२) मोचरस को कच्चे दूध में पीसकर पीनेसे प्रदर रोग आराम हो जाता है।

(५३) कपास की जड़ को चाँवलों के पानी के साथ पीसकर पीने से पाण्डु या कफजनित श्वेत प्रदर नाश हो जाता है।

(५४) शास्त्रोक्त औषधियों से तैयार हुई मदिरा या शराब के पीते रहने से रक्तप्रदर और शुक्र प्रदर यानी लाल और सफेद प्रदर दोनों नष्ट हो जाते हैं। इस में शक नहीं।

चक्रदत्त में लिखा है:—

शमयति मदिरापानं तदुभयमपि रक्तसंज्ञक शुक्राख्यौ॥
वृन्दने—विधिविहितं कृतलज्जावरयुवतीनां न सन्देहः।
और मिला दिया है। पहली पंक्ति दोनों में समान है।

(५५) मुलेठी १ तोले और मिश्री १ तोले—दोनों को चाँवलों के धोवन में पीसकर पीने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—बंगसेन में मिश्री ४ तोले और मुलेठी १६ तोले दोनों को एकत्र पीस कर चाँवलों के जल के साथ पीने से रक्तप्रदर आराम होना लिखा है।

(५६) कंघी की जड़ को पीस-छानकर, मिश्री और शहद में मिलाकर खाने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—कङ्घी, कंगही या ककहिया एक ही दवा के तीन नाम हैं। संस्कृत में कङ्घी को 'अतिबला' कहते हैं। याद रखो, बला तीन होती हैं:—(१) बला, (२) महाबला और (३) अतिबला। बला को हिन्दी में खिरैंटी, बरियारा और बीजबन्द कहते हैं। महाबला या सहदेवी को हिन्दी में सहदेई कहते हैं और अतिबला को कङ्घी, कंगही या ककहिया कहते हैं। बला या खिरैंटी की जड़ की छाल का चूर्ण दूध और चीनी के साथ खाने से मूत्रातिसार निश्चय ही चला जाता है। महाबला या सहदेई मूत्रकृच्छ्र को नाश करती और वायु को नीचेले जाकर गुदाद्वारा निकाल देती है। कंघी या अतिबला दूध-मिश्री के साथ पीने से प्रमेह को नष्ट कर देती है। ये तीनों प्रयोग अचूक हैं। एक चौथी नागबला और होती है। उसे हिन्दी में गंगेरन या गुलसकरी कहते हैं। यह मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणता रोग में हितकारी है। चारों बलाओं के सम्बन्ध में कहा है:—

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत्।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्र पित्तास्र क्षत नाशनम्॥

चारों तरह की बला शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिदायक, चिकनी और काबिज या ग्राही हैं। ये बात, रक्त-पित्त, रुधिर, विकार और क्षयको नाश करती हैं।

ये चारों बला बड़े ही काम की चीज हैं। इसी से, हमने प्रसङ्ग न होने पर भी, इनके सम्बन्ध में इतना लिखा है।

(५७) पवित्र स्थान की "व्याघ्रनखी" को उत्तर दिशासे लाकर, उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र में, कमर में बाँधने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

नोट—नख, व्याघ्र नख, व्याघ्रायुध ये नख के संस्कृत नाम हैं। व्याघ्रनख कड़वा, गरम, कसैला और कफवात नाशक है। यह कोढ़, खुजली और घाव को दूर करता, एवं शरीर का रंग सुधारता है। सुगन्धित चीज है। कहते हैं, यह नदी के जीवों के नाखून हैं। धूप और तैल आदि में खुशबू के लिये डाले जाते हैं। नख या नखी पाँच तरह की होती हैं। कोई बेर के पत्तों जैसी, कोई कमल के पत्तों जैसी और कोई घोड़े के खुर के आकार की, कोई हाथी के कान जैसी और कोई सूअरके कान-जैसी होती है। इस की मात्रा २ माशे की है।

(५८) तूम्बी के फल पीस-छान कर चीनी मिला दो। फिर शहद में उस के लड्डू बनालो। इन लड्डुओं के खाने से प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(५९) दारुहल्दी, रसौत, चिरायता, अड़ूसा, नागरमोथा, बेलगिरी, शहद, लाल चन्दन और आक के फूल—इन सब का काढ़ा बना कर और काढ़े में शहद मिलाकर पीने से वेदनायुक्त लाल और सफ़ेद प्रदर नाश हो जाता है।

(६०) सूअर का मांस-रस, बकरे का मांस-रस और कुलथीका रस—इन में "दही" और अधिकतर "हल्दी" मिलाकर खाने से वातज प्रदर शान्त हो जाता है।

(६१) ईखका रस पीने से पित्तज प्रदर आराम हो जाता है।

(६२) चन्दन, ख़स, पतंग, मुलेठी, नीलकमल, खीरे और ककड़ी के बीज, धाय के फूल, केले की फली, बेर, लाख, बड़ के अंकुर, पद्माख और कमल-केशर—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, सिल पर पानी के साथ पीस कर लुगदी बनालो। इस लुगदी में "शहद" मिला कर, चाँवलों के जल के साथ पीने से, तीन दिन में, पित्तज प्रदर शान्त हो जाता है।

(६३) मिश्री, शहद, मुलेठी, सोंठ और दही—इन सब को एकत्र मिला कर खाने से पित्त जनित प्रदर आराम हो जाता है।

(६४) काकोली, कमल, कमल कन्द, कमल नाल और कदम्ब का चूर्ण—इन को दूध, मिश्री और शहद में मिलाकर खाने से पित्तज प्रदर आराम हो जाता है।

(६५) मुलेठी, त्रिफला, लोध, ऊँटकटारा, सोरठ की मिट्टी, शहद, मदिरा, नीम और गिलोय—इन सब को मिला कर सेवन करने से कफ का प्रदर रोग आराम हो जाता है।

नोट—सोरठ की मिट्टी को संस्कृत में "गोपीचन्दन" कहते हैं। सोरठ की मिट्टी न मिले तो फिटकरी ले सकते हो। दोनों में समान गुण हैं।

(६६) आमले के बीजों का कल्क बना कर ; यानी उन्हें जल के साथ सिल पर पीसकर, जल में मिला दो। ऊपर से शहद और

मिश्री मिला लो। इस जल के पीने से ३ दिन में श्वेत प्रदर नष्ट हो जाता है।

(६७) त्रिफला, देवदारु, बच, अडूसा, खीलें, दूब, पृश्निपर्णी और लजवन्ती—इन का काढ़ा बना कर, शीतल कर के, फिर शहद मिलाकर पीने से सब तरह के प्रदर रोग आराम हो जाते हैं।

(६८) खंज पची की आँखों को सिल पर पीसकर, ललाट पर लेप करने से प्रदर रोग अवश्य चला जाता है। इस चीज़ में यह अद्भुत सामर्थ्य है।

(६९) बथुए का जड़ को दूध या पानी में पकाकर, ३ दिन तक, पीने से प्रदर रोग चला जाता है।

(७०) कमल की जड़ को दूध या पानी में पकाकर ३ दिन पीने से प्रदर रोग शान्त हो जाता है।

(७१) नीलकमल, भसींडा (कमल-कन्द), लाल शालि-चाँवल, अजवायन, गेरू और जवासा—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर, शहद में मिलाकर पीने से प्रदर रोग नष्ट हो जाता है।

(७२) खिरेंटी की जड़ को दूध में पीसकर, शहद में मिला-कर पीनेसे प्रदर रोग नाश हो जाता है।

(७३) कुशा की जड़ और खिरेंटी की जड़ को चाँवलों के जल में पीसकर पीने से रक्तप्रदर नाश हो जाता है।

(७४) चूहे की विष्ठा को जला कर दूध या पानी के साथ पीने से रक्त प्रदर नष्ट हो जाता है।

(७५) तृणपञ्चमूल के काढ़े में मिश्री मिलाकर पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है।

नोट—कुश, कांस, शर, दर्भ और गन्ना—इन पाँचों को "पंचतृण" या पञ्च-मूल कहते हैं।

(७६) चूहे की मैंगनी, फिटकरी और नागकेशर,—इन तीनों

को बराबर-बराबर लाकर पीस-छान लो। इस चूर्ण को शहदमें मिला कर खाने से हर तरह का प्रदर रोग निश्चय ही आराम हो जाता है। परीक्षित है। मूल लेखक ने भी लिखा है—

आखुपुरीष स्फटिका नागकेशराणां चूर्णम्।
मधुसहितं सर्वप्रदररोगे योगोऽयं बहुवारेणाह्यनुभूतः॥

(७७) आँवले, हरड़ और रसौतका चूर्ण—योनिसे ज़ियादा खून गिरने और सब तरह के प्रदरों को दूर करता है। परीक्षित है।

(७८) वंसलोचन, नागकेशर और सुगन्धबाला,—इन सब को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर एक-एक मात्रा चाँवलों के धोवन में पीस-छान कर पीने से प्रदर रोग आराम हो जाता है। परीक्षित है।

(७९) अकेली नागकेशर को चाँवलों के धोवन के साथ पीस कर और चीनी मिलाकर पीने से प्रदर रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

कौरैया की जड़ की गीली छाल पाँच सेर लेकर, एक क़लईदार देग में रख, ऊपर से सोलह सेर पानी डाल, मन्दाग्नि से काढ़ा बनाओ। जब आठवाँ भाग—दो सेर पानी रह जाय, उतार कर छान लो और फिर दूसरे छोटे क़लईदार बासन में डाल कर चूल्हे पर रख दो। जब गाढ़ा होने पर आवे, उस में पाढ़, सेमर का गोंद, धाय के फूल, नागरमोथा, अतीस, लजवन्ती और कोमल बेल का चार चार तोले पिसा-छना चूर्ण, जो पहले से तैयार रखा हो, डाल

दो। चाटने लायक़ गाढ़ा रहते-रहते उतार लो। यही "कुटजाष्टक अवलेह" है।

सेवन-विधि—इस अवलेह को गाय के दूध, बकरी के दूध या चाँवलों के मांड के साथ सेवन करने से रक्तप्रदर, रक्तपित्त, अतिसार, रक्तार्श और संग्रहणी ये सब आराम होते हैं। परीक्षित है।

जीरक अवलेह।

—०—

सफ़ेद ज़ीरा एक सेर, गाय का दूध आठ सेर, पाव भर गाय का घी और पाव भर लोध—इन को किसी बर्तन में रख, मन्दाग्नि से पकाओ। जब यह गाढ़ा होने पर आवे, इस में एक सेर मिश्री भी मिला दो। इसके भी बाद पहले से पीस-छान कर तैयार की हुई-तज, तेजपात, छोटी इलायची, नागकेशर, पीपर, सोंठ, कालाज़ीरा, नागरमोथा, सुगन्धबाला, दाड़िम का रस, काकजंघा, हल्दी, चिरौंजी, अड़ूसा, बंसलोचन और तवाखीर—अरारोट—इनमें से हरेक चार-चार तोले मिला दो। चाटने लायक़ रहते-रहते उतार लो। फिर शीतल होने पर, किसी साफ़ बर्तन में रख, मुँह बाँध दो। इस का नाम "जीरक अवलेह" है। इस के सेवन करने से प्रदर रोग, ज्वर, कमज़ोरी, अरुचि, श्वास, प्यास, दाह और क्षय ये सब आराम हो जाते हैं।

चन्दनादि चूर्ण।

—※—

सफ़ेद चन्दन, जटामासी, लोध, ख़स, कमलकेशर, नागकेशर, बेलगिरी, नागरमोथा, मिश्री, हाउबेर, पाढ़ी, कुरैया की छाल, इन्द्रजौ, बेतरा-सोंठ, अतीस, धाय के फूल, रसौत, आम की गुठली की गिरी, जामुन की गुठली की गिरी, मोचरस, नील कमल का पञ्चाङ्ग, मँजीठ, इलायची और अनार के फूल—इन चौबीस दवाओं को बराबर-बराबर लाकर, कूट-पीस कर छान लो और एक बर्तन में रखकर मुँह बाँध दो। इस का नाम "चन्दनादि चूर्ण" है।

सेवन-विधि—इस चूर्ण को, चाँवलों के धोवन के साथ, ३ माशे शहद मिलाकर, सेवन करने से चारों प्रकार के प्रदर, रक्तातिसार और खूनी बवासीर—ये रोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

इस चूर्ण की एक मात्रा मुँह में रख कर, ऊपर से "तीन माशे शहद मिला हुआ चाँवलों का धोवन" पीलो। अथवा चूर्ण को सिल पर भाँग की तरह चाँवलों के धोवन के साथ पीस कर, चाँवलों के धोवन में छान लो और ३ माशे शहद मिला कर पीलो। इस तरह सवेरे-शाम दोनों समय पीओ।

चाँवल के धोवन की विधि।

नोट...आधी छटाँक पुराने चाँवल लेकर दो-दो तीन-तीन टुकड़े कर लो। ऐसा न हो कि आटा हो जाय। फिर उन चाँवलों को एक पाव जल में भिगो दो। घण्टे या दो घण्टे बाद खूब मलकर पानी छान लो और चाँवल फेंक दो। यही "चाँवलों का धोवन" या 'तन्दुल जल" है। शास्त्र में लिखा है :—

कंडितं तंडुल पलं जलऽष्टगुणितो क्षिपेत्।
भावयित्वा जलं ग्राह्यं देयं सर्वत्र कर्मसु॥

चार तोले कुचले हुए चाँवल बत्तीस तोले पानी में भिगो दो। पीछे मल-छान कर जल ले लो और सब काम में बरतो।

पुष्यानुग चूर्ण

पाढ़, जामुन की गुठली की गरी, आम की गुठली की गिरी, पाषाणभेद, रसौत, मोइया, मोचरस, मँजीठ, कमल-केशर, केशर, अतीस, नागरमोथा, बेलगिरी, लोध, गेरू, कायफल, कालीमिर्च, सोंठ, दाख, लालचन्दन, श्योनाक, कुड़ा, अनन्तमूल, धाय के फूल, मुलेठी और अर्जुन—इन सब को "पुष्यनक्षत्र" में बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान कर रख लो। फिर इस "पुष्यानुग चूर्ण" को शहत में मिला कर चाँवलों के पानी के साथ सेवन करो। परीक्षित है।

इस चूर्ण के सेवन करने से सब तरह का प्रदर रोग, अतिसार, रक्तातिसार, बालकों के आगन्तु दोष, योनिदोष, रजोदोष, श्वेतप्रदर,

नीलप्रदर, पीतप्रदर, श्यावप्रदर और लाल प्रदर, सब रोग नाश हो जाते हैं। महर्षि आत्रेय ने इस चूर्ण को कहा है।

मात्रा—डेढ़ माशे से तीन माशे तक। एक मात्रा खाकर, ऊपर से चाँवलों के पानी में शहद मिला कर पीना चाहिये।

नोट—पाषाण-भेद को हिन्दी में पाखान भेद, बंगला में पाथरचूरी, गुजराती और मरहटी में पाषाण-भेद कहते हैं। संस्कृत में पाषाण-भेद, शिला-भेद, अश्म-भेदक आदि अनेक नाम हैं। फारसी में गोशाद कहते हैं। यह योनिरोग, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, तिल्ली, पथरी और गुल्म आदि को नष्ट करता है।

मोइया हिन्दी नाम है। संस्कृत में इसे मात्रिका और अम्बष्टा कहते हैं। बंगला में भी मात्रिका कहते हैं। मोइये का पेड़ मशहूर है। इसके पत्तों का साग बनता है। दवा के काम में इसका सर्वांङ्ग लेते हैं। मात्रा दो माशे की है।

श्योनाक को हिन्दी में सोनापाठा, अरलू या टेंटू कहते हैं। बंगलामें शोनापाता या सोनालू,गुजरातीमें अरलू और मरहटीमें दिंडा या टेंटू कहते हैं। इसकी मात्रा १ माशे की है। इसका पेड़ बहुत ऊँचा होता है। फलियाँ लम्बी-लम्बी तलवार के समान दो दो फुट की होती हैं। फली के भीतर रूई और दाने निकलते हैं।

अर्जुनवृक्ष हिन्दी नाम है। बंगला में अर्जुन-गाछ और मरहटी में अर्जुनवृक्ष कहते हैं। हिन्दी में कोह और काह भी इसके नाम हैं। संस्कृत में कुकुभ कहते हैं। इसके पेड़ वन में बहुत ऊँचे होते हैं। इसकी छाल सफेद होती है। उसमें दूध निकलता है। मात्रा २ माशे की है।

पाड़ नाम हिन्दी है। इसे हिन्दी में पाठ भी कहते हैं। संस्कृत में पाठा, बंगला में आकनादि, मरहटी में पहाड़मूल और अंग्रेजी में पैरोरूट कहते हैं। इसकी बेलें वनमें होती हैं।

अशोक घृत।

अशोक की छाल १ सेर लेकर ८ सेर जल में पकाओ, जब पकते-पकते चौथाई पानी रहे उतार कर छान लो। यह काढ़ा हुआ।

इस काढ़े में घी १ सेर, चाँवलों का धोवन १ सेर, बकरी का दूध १ सेर, जीवक का रस १ सेर और कुकुरभाँगरे का रस १ सेर इन को भी मिला दो।

कल्कके लिये जीवनीयगण की औषधियाँ, चिरौंजी, फालसे, रसौत, मुलेठी, अशोक की छाल, दाख, शतावर और चौलाई की जड़,—इन में से प्रत्येक दवा को सिल पर जल के साथ पीस-पीस कर दो दो तोले लुगदी तैयार कर लो और पिसी हुई मिश्री ३२ तोले ले लो।

क़लईदार कड़ाही में कल्क या लुगदियों तथा मिश्री और ऊपर के काढ़े वगैरः को डाल कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और साफ बर्तन में रख दो।

इस अशोक घृत के पीने से सब तरह के प्रदर रोग—श्वेतप्रदर, नीलप्रदर, काला प्रदर, दुस्तर प्रदर, कोख का दर्द, कमर का दर्द, योनि का दर्द, सारे शरीर का दर्द, मन्दाग्नि, अरुचि, पाण्डु रोग, दुबलापन, श्वास और खाँसी—ये सब नाश होते हैं। यह घी आयु बढ़ाने वाला, पुष्टि करनेवाला और रंग निखारने वाला है। इस घीको स्वयं विष्णु भगवानने ईजाद किया था। परीक्षित है।

शीतकल्याण घृत।

कमोदिनी, कमल, खस, गेहूँ, लाल शालि चाँवल, मुगवन, काकोली, कुम्भेर, मुलेठी, खिरेंटी, कांघी की जड़, ताड़ का मस्तक, विदारीकन्द, शतावर, शालिपर्णी जीवक, त्रिफला, खीरे के बीज और केले की कच्ची फली—इन में से हरेक को दो-दो तोले लेकर, सिल पर जल के साथ पीस-पीस कर कल्क या लुगदी बना लो।

गाय का दूध ४ सेर, जल २ सेर और गाय का घी १ सेर लो। फिर कड़ाही में ऊपर के कल्क और इन दूध, पानी और घी को मिला कर, मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

इस घी के सेवन करने से प्रदर रोग, रक्तगुल्म, रक्तपित्त, हलीमक, बहुत तरह का पित्त कामला, वातरक्त, अरुचि, जीर्णज्वर, पाण्डु-रोग, मद और भ्रम ये सब नाश हो जाते हैं। जो स्त्रियाँ अल्प पुष्प-

वाली या गर्भ न धारण करने वाली होती हैं, उन्हें इस घी के खाने से गर्भ रहता है। यह घृत उत्तम रसायन है।

प्रदरारि लौह।

पहले कुरैया की छाल सवा छै सेर लेकर कुचल लो। फिर एक क़लईदार बासन में बत्तीस सेर पानी और छाल को डालकर मन्दी-मन्दी आग से औटाओ। जब चौथाई या आठ सेर पानी रहजाय, उतार कर, कपड़े में छान लो और छूंछ को फेंक दो।

इस छने हुए काढ़े को फिर क़लईदार बासन में डाल, मन्दाग्नि से पकाओ, जब गाढ़ा होने पर आजाय, उस में नीचे लिखी हुई दवाओं के चूर्ण मिला दो और चट उतार लो।

काढ़े में डालने को दवायें—मोचरस, भारङ्गी, बेलगिरी, वराह-कान्ता, मोथा, धाय के फूल और अतीस,—इन सातों को एक-एक तोले लेकर, कूट-पीस कर कपड़-छन कर लो। इस चूर्ण को और एक तोले "अभ्रक भस्म" तथा एक तोले "लोहभस्म" को उसी (ऊपर के) गाढ़ा होते हुए काढ़े में मिला दो।

सेवन विधि—कुशमूल को सिल पर पीस कर स्वरस या पानी छान लो। एक माला यानी २ माशे दवाको चाट कर,ऊपर से कुश-मूल का पानी पीलो। इस लौह से प्रदर रोग निश्चय ही नाश होता और कोख का दर्द भी जाता रहता है।

प्रदरान्तक लौह।

शुद्ध पारा ६ माशे, शुद्ध गन्धक ६ माशे, बंगभस्म ६ माशे, चाँदी की भस्म ६ माशे, खपरिया ६ माशे, कौड़ी की भस्म ६ माशे और लोहभस्म या कान्तिसार तीन तोले—इन सब को खरल में डाल-कर, ऊपर से घीग्वार का रस डाल-डाल कर, बारह घण्टों तक घोटो। फिर एक-एक चिरमिटी बराबर गोलियाँ बना कर, छाया में सुखा

लो और शीशी में रख दो। इस लौह से सब तरह के प्रदर रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

सेवनविधि—सवेरे-शाम एक-एक गोली खाकर, ऊपर से ज़रा सा जल पी लेना चाहिये। गोली खाकर, ऊपर से अशोक की छाल के साथ पकाया दूध, जिस की विधि पहलेपृष्ठ ३४४ में लिख आये हैं, पीने से बहुत ही जल्दी अपूर्व चमत्कार दीखता है। अथवा गोली खाकर, रसौत और चौलाई की जड़ को पीसकर, चावलों के पानी में छान लो और यही पीओ। ये अनुपान परीक्षित हैं।

शतावरी घृत।

शतावर का गूदा या रस आध सेर, गायका घी आध सेर, गायका दूध दो सेर लाकर रख लो। जीवनीय गण की आठों दवाएँ तथा मुलेठी, चन्दन, पद्माख, गोखरु, कौंच के बीजों की गिरी, खिरेंटी, कंघी, शालपर्णी, पृश्निपर्णी, विदारीकन्द, दोनों शारिवा, मिश्री और कुंभेर के फल—इन में से हरेक दवा को पानी के साथ सिल पर पीस-पीस कर, एक-एक तोले कल्क बना लो। शेष में सब दवाओं के कल्क, शतावर का रस, घी और दूध सब को क़लईदार बर्तन में चढ़ा कर, मन्दाग्नि से घी पकालो। इस "शतावरी घृत" के सेवन करने से रक्तपित्तके विकार, वातपित्तके विकार, वातरक्त, क्षय, श्वास, हिचकी, खाँसी, रक्तपित्त, अंगदाह, सिरकी जलन, दारुण मूत्रकृच्छ्र और सर्वदोष-जनित प्रदर रोग इस तरह नाश होते हैं, जिस तरह सूर्य से अन्धकार का नाश होता है।

सोमरोग की पहचान।

स्त्री की योनि से जब प्रसन्न, निर्मल, शीतल, गंधरहित, साफ, सफेद और पीड़ा-रहित जल बहुत ही ज़ियादा बहता रहता है, तब वह स्त्री जल के वेग को रोक नहीं सकती, एकदम कमज़ोर हो जाने की वजह से बेचैन रहती है; माथा शिथिल हो जाता है, मुँह और तालू सूखने लगते हैं, बेहोशी होती, जँभाई आतीं, चमड़ा रूखा हो जाता, प्रलाप होता और खाने-पीने के पदार्थों से कभी तृप्ति नहीं होती। जिस रोग में ये लक्षण होते हैं, उसे "सोमरोग" कहते हैं। इस रोग में जो पानी योनि से जाता है, वही शरीर को धारण करने वाला है। इस रोग में सोमधातु का नाश होता है, इसीलिये इसे "सोमरोग" कहते हैं।

जिस तरह पुरुषों को बहुमूत्र रोग होता है; उसी तरह स्त्रियों को "सोमरोग" होता है। जिस तरह पेशाबों-पर-पेशाब करने से मर्द मर जाता है; उसी तरह स्त्रियाँ, योनि से सोम धातु जाने के कारण, गलगल-कर मर जाती हैं। साफ, शीतल, गन्धहीन, सफेद पानी सा हर समय बहा करता है। यहाँ तक कि बहुत बढ़ जाने पर औरत पेशाव के वेग को रोक नहीं सकती, उठते-उठते धोती में पेशाब हो जाता है, इसलिये इस रोग वाली की धोती हर वक्त भीगी रहती है। यह रोग औरतों को ही होता है।

सोमरोग से मूत्रातिसार।

जब स्त्री का सोमरोग पुराना हो जाता है, यानी बहुत दिनों तक बना रहता है, तब वह "मूत्रातिसार" हो जाता है। पहले तो सोमरोग की हालतमें पानी सा पदार्थ बहा करता है ; किन्तु इस दशा में बार-म्बार पेशाब होते हैं और पेशाबों की मिक़दार भी ज़ियादा होती है। स्त्री ज़रा भी पेशाब को रोकना चाहती है, तो रोक नहीं सकती। परिणाम यह होता है कि, स्त्री का सारा बल नाश हो जाता है और अन्त में वह यमालय की राह लेती है। कहा है—

सोमरोगे चिरंजाते यदा मूत्रमतिस्रवेत्।
मूत्रातिसारं तं प्राहुर्बलविध्वंसनं परम्॥

सोमरोग के पुराने होने पर, जब बहुत पेशाब होने लगता है, तब उसे बल को नाश करने वाला "मूत्रातिसार" कहते हैं।

नोट—याद रखना चाहिये, सोमरोग मूत्र-मार्ग या मूत्र की नली में और प्रदर रोग गर्भाशय में होता है और ये दोनों रोग स्त्रियों को ही होते हैं।

सोमरोग के निदान-कारण।

जिन कारणों से "प्रदर रोग" होता है, उन्हीं कारणों से "सोमरोग" होता है। अति मैथुन और अति मिहनत प्रभृति कारणों से शरीर के रस रक्त प्रभृति पतले पदार्थ और पानी, अपने-अपने स्थान छोड़ कर, मूत्र की थैली में आकर जमा होते और वहाँ से चलकर, योनि की राह से, हर समय या अनियत समय पर बाहर गिरा करते हैं।

सोमरोग नाशक नुसखे।

(१) भिन्डी की जड़, सूखा पिंडालू, सूखे आमले और बिदारीकन्द,

ये सब चार-चार तोले, उड़द का चूर्ण दो तोले और मुलेठी दो तोले—लाकर पीस-कूट और छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ६ माशे की है। एक पुड़िया मुँह में रख, ऊपर से मिश्री-मिला गाय का दूध पीने से सोम-रोग अवश्य नाश हो जाता है। दवा सवेरे-शाम दोनों समय लेनी चाहिये। परीक्षित है।

(२) केले की पकी फली, आमलों का स्वरस, शहद और मिश्री इन सबको मिलाकर खाने से सोमरोग और मूत्रातिसार अवश्य आराम हो जाते हैं।

(३) उड़द का आटा, मुलेठी, विदारीकन्द, शहद और मिश्री—इन सब को मिलाकर सवेरे ही, दूध के साथ सेवन करने से सोमरोग नष्ट हो जाता है।

(४) अगर सोमरोग में पीड़ा भी हो और पेशाब के साथ सोम-धातु बारम्बार निकलती हो, तो ताज़ा शराब में इलायची और तेजपात का चूर्ण मिला कर पीना चाहिये।

(५) शतावर का चूर्ण फाँक कर, ऊपर से दूध पीने से सोमरोग चला जाता है।

(६) आमलों के बीजों को जल में पीसकर, फिर उसमें शहद और चीनी मिलाकर पीने से, तीन दिन में ही श्वेतप्रदर और मूत्रातिसार नष्ट हो जाते हैं।

(७) छे माशे नागकेशर को माठे में पीस कर, तीन दिन तक पीने और माठे के साथ भात खाने से श्वेतप्रदर और सोमरोग आराम हो जाते हैं।

(८) केले की पकी फली, विदारीकन्द और शतावर—इन सब को एकत्र मिलाकर, दूध के साथ, सवेरे ही पीने से सोमरोग नष्ट हो जाता है।

(९) मुलेठी, आमले, शहद और दूध—इन सबको मिलाकर सेवन करने से सोमरोग नाश हो जाता है।

योनि रोग-चिकित्सा

योनि रोगों की क़िस्में।

असल में योनिरोग, प्रदर रोग और आर्त्तव रोग एवं स्त्री-पुरुषों के रज और वीर्य के शुद्ध, निर्दोष और पुष्ट न होने वग़ैरः वग़ैरः कारणों से आज भारतके लाखों घर सन्तान-हीन हो रहे हैं। मूर्ख लोग गण्डा-तावीज़ और भभूत के लिये वृथा ठगाते और दुःख भोगते हैं; पर असल उपाय नहीं करते, इसीसे उनकी मनोकामना पूरी नहीं होती। अतः हम योनि-रोगों के निदान, कारण और लक्षण लिखते हैं। आर्त्तव रोग या नष्टार्त्तव की चिकित्सा इस के बाद लिखेंगे।

"सुश्रुत" और "माधव निदान" आदि ग्रन्थोंमें योनिरोग—भग के रोग—बीस प्रकार के लिखे हैं। उन के नाम ये हैं:—

(१) उदावृता
(२) वन्ध्या
(३) विप्लुता
(४) परिप्लुता
(५) वातला

ये पाँच योनिरोग वायु-दोषसे होते हैं।

(६) लोहिताक्षरा
(७) प्रस्रंसिनी
(८) वामनी
(९) पुत्रघ्नी
(१०) पित्तला

ये पाँच योनिरोग पित्त-दोषसे होते हैं।

(११) अत्यानन्दा
(१२) कर्णिनी
(१३) चरणा
(१४) अतिचरणा
(१५) कफजा

} ये पाँच योनिरोग कफके दोषसे होते हैं ।

(१६) षंडी
(१७) अण्डिनी
(१८) महती
(१९) सूचीवक्त्रा
(२०) त्रिदोषजा

} ये पाँचों योनिरोग तीनों दोषोंसे होते हैं ।

योनिरोगों के निदान-कारण ।

"सुश्रुत" में योनिरोगों के निम्नलिखित कारण लिखे हैं:—

(१) मिथ्याचार । (२) मिथ्या विहार ।
(३) दुष्ट आर्त्तव । (४) वीर्यदोष ।
(५) दैवेच्छा ।

आजकल आयुर्वेद की शिक्षा न पानेसे मर्दों की तरह स्त्रियाँ भी समय-बेसमय खातीं, दूध और मछली प्रभृति विरुद्ध पदार्थ और प्रकृति-विरुद्ध भोजन करतीं, गरम मिज़ाज होने पर भी गरम भोजन करतीं, सर्द मिज़ाज होने पर भी सर्द पदार्थ खातीं; दिन-रात मैथुन करतीं; व्रत-उपवास करतीं तथा खूब क्रोध और चिन्ता करतीं हैं । इन कारणों एवं इसी तरहके औरभी कारणों से उनका आर्त्तव या मासिक खून—गरम होकर, उपरोक्त बीस प्रकार के योनिरोग करता है । इसके सिवा, माँ-बापके वीर्य-दोष से जिस कन्याका जन्म होता है, उसे भी इन

बीसों योनि-रोगों में से कोई न कोई योनि-रोग होता है। सबसे प्रबल कारण दैवेच्छा है।

बीसों योनिरोगों के लक्षण।

(१) जिस स्त्री की योनि से झाग-मिला हुआ खून बड़ी तकलीफ के साथ झिरता है, उसे "उदावृत्ता" कहते हैं।

नोट—उदावृत्ता योनि रोगवाली स्त्री का मासिक धर्म बड़ी तकलीफ से होता है, उसके पेड़ू में दर्द होकर रक्त की गाँठ सी गिरती है।

(२) जिसका आर्त्तव नष्ट हो; यानी जिसे रजोधर्म न होता हो, अगर होता हो तो अशुद्ध और ठीक समय पर न होता हो, उसे "वन्ध्या" कहते हैं।

(३) जिसकी योनि में निरन्तर पीड़ा या भीतर की ओर सदा एक तरह का दर्द सा होता रहता है, उसे "विप्लुता" योनि कहते हैं।

(४) जिस स्त्री के मैथुन कराते समय योनि के भीतर बहुत पीड़ा होती है, उसे "परिप्लुता" योनि कहते हैं।

(५) जो योनि कठोर या कड़ी हो तथा उसमें शूल और चोंटने की सी पीड़ा हो, उसे "वातला" योनि कहते हैं। इस रोगवाली का मासिक खून या आर्त्तव वादी से रूखा होकर सूई चुभाने का सा दर्द करता है।

नोट—यद्यपि उदावृत्ता, वन्ध्या, विप्लुता और परिप्लुता नामक योनियों में वायु के कारण से दर्द होता रहता है, पर "वातला" योनि में उन चारों की अपेक्षा अधिक दर्द होता है। याद रखो, इन पाँचों योनिरोगों में "वायु" का कोप रहता है।

(६) जिस योनि से दाहयुक्त रुधिर बहता है; यानी जिस योनि से जलन के साथ गरम-गरम खून बहता है, उसे "लोहिताक्षरा" कहते हैं।

(७) जिस स्त्री की योनि, पुरुष के मैथुन करने के बाद, पुरुष के वीर्य और स्त्री के रज दोनों को बाहर निकाल दे, उसे "वामनी" योनि कहते हैं।

(८) जिस की योनि अधिक देर तक मैथुन करने से, लिंग की रगड़ के मारे, बाहर निकल आवे ; यानी स्थानभ्रष्ट हो जाय और विमर्दित करने से प्रसव-योग्य न हो, उसे "प्रस्रंसिनी" योनि कहते हैं। अगर ऐसी स्त्री को कभी गर्भ रह जाता है, तो बच्चा बड़ी मुश्किल से निकलता है।

(९) जिस स्त्री को रुधिर-क्षय होने से गर्भ न रहे, वह "पुत्रघ्नी" योनिवाली है। ऐसी योनि वाली स्त्री का मासिक खून गर्म होकर कम हो जाता और गर्भगत बालक अकाल या असमय में ही गिर जाता है।

(१०) जो योनि अत्यन्त दाह, पाक और ज्वर, इन लक्षणों वाली हो, वह "पित्तला" है। खुलासा यों समझिये कि, इस योनि वाली स्त्री की भगके भीतर दाह या जलन होती है और भगके मुँह पर छोटी-छोटी फुन्सियाँ हो जाती हैं और पीड़ा से उसे ज्वर चढ़ आता है।

नोट—यद्यपि लोहितात्तरा, प्रस्रंसिनी, पुत्रघ्नी और वामनी में पित्तकोप के चिन्ह पाये जाते हैं और वे चारों योनिरोग पित्त सेही होते हैं, पर पित्तला योनिरोग में पित्तकोप के लक्षण विशेष रूप से देखे जाते हैं। दाह, पाक और ज्वर पित्तला के उपलक्षण मात्र हैं। उसमें से नीला, पीला और सफेद आर्त्तव बहता रहता है।

(११) जिस स्त्री की योनि अत्यधिक मैथुन करने से भी सन्तुष्ट न हो, उसे "अत्यानन्दा" योनि कहते हैं। इस योनिवाली स्त्री एक दिन में कई पुरुषों से मैथुन कराने से भी सन्तुष्ट नहीं होती। चूँकि इस योनि वाली एक पुरुष से राज़ी नहीं होती, इसी से इसे गर्भ नहीं रहता।

(१२) जिस स्त्री की योनि के भीतर के गर्भाशय में कफ और खून मिलकर, कमलके इर्द-गिर्द मांसकन्द सा बना देते हैं, उसे "कर्णिनी" योनि कहते है।

(१३) जो स्त्री मैथुन करने से पुरुष से पहले ही छूट जाती है और वीर्य ग्रहण नहीं करती, उसकी योनि "चरणा" है।

(१४) जो स्त्री कई बार मैथुन करने पर छुटती है, उसकी योनि "अति चरणा" है।

नोट—ऐसी योनिवाली स्त्री कभी एक पुरुष की होकर नहीं रह सकती। चरणा और अतिचरणा योनि वाली स्त्रियों को गर्भ नहीं रहता।

(१५) जो योनि अत्यन्त चिकनी हो, जिसमें खुजली चलती हो और जो भीतर से शीतल रहती हो, वह "कफजा" योनि है।

नोट—अत्यानन्दा, कर्णिनी, चरणा और अति चरणा—चारों योनियों में कफ का दोष होता है, पर कफजा में कफ-दोष विशेष होता है।

(१६) जिस स्त्री को मासिक धर्म न होता हो, जिसके स्तन छोटे हों और मैथुन करने से योनि लिंग को खरदरी मालूम होती हो, उसकी योनि "षण्डी" है

(१७) थोड़ी उम्र वाली स्त्री अगर बलवान पुरुष से मैथुन कराती है, तो उसकी योनि अण्डे के समान बाहर लटक आती है। उस योनि को "अण्डिनी" कहते हैं।

नोट—इस रोगवाली का रोग शायद ही आराम हो। इसको गर्भ नहीं रहता।

(१८) जिस स्त्री की योनि बहुत फैली हुई होती है, उसे "महती" योनि कहते हैं।

(१९) जिस स्त्री की योनि का छेद बहुत छोटा होता है, वह मैथुन नहीं करा सकती, केवल पेशाब कर सकती है, उस की योनिको "सूची वक्त्रा" कहते हैं।

नोट—ऊपर के योनिरोग वातादि दोषों से होते हैं; पर जिस योनि रोग में तीनों दोषों के लक्षण पाये जावें, वह त्रिदोषज है।

योनिकन्द रोग के लक्षण।

जब दिन में बहुत सोने, बहुत ही क्रोध करने, अत्यन्त परिश्रम करने, दिन-रात मैथुन कराने, योनिके छिल जाने अथवा नाखून या दाँतों के लग जाने से योनिके भीतर घाव हो जाते हैं; तब वातादि दोष कुपित

होकर, पीप और खूनको इकट्ठा करके, योनि में बड़हल के फल-जैसी गाँठ पैदा कर देते हैं, उसे ही "योनि कन्द रोग" कहते हैं।

नोट—अगर वात का कोप जियादा होता है, तो यह गाँठ रूखी और फटी सी होती है। अगर पित्त जियादा होता है, तो गाँठ में जलन और सुर्खी होती है, इससे बुखार भी आ जाता है। अगर कफ जियादा होता है, तो उसमें खुजली चलती और रंग नीला होता है। जिसमें तीनों दोषों के लक्षण होते हैं, उसे सन्निपातज योनिकन्द कहते हैं।

योनि-रोग-चिकित्सा में याद रखने योग्य बातें।
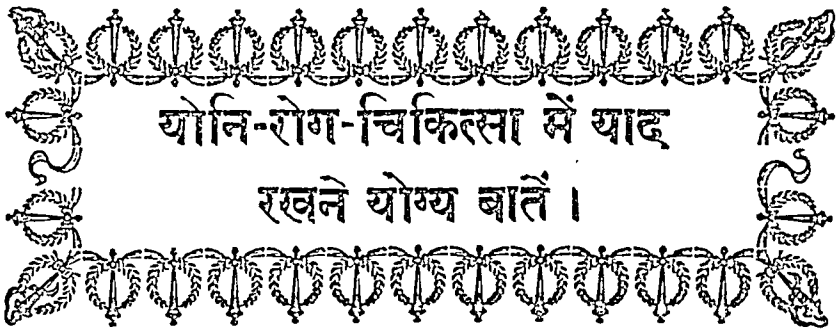
(१) बीसों प्रकार के योनि-रोग साध्य नहीं होते; कितने ही सहज में और कितने ही बड़ी दिक़त से आराम होते हैं। इन में से कितने ही तो असाध्य होते हैं; पर बाज़ औक़ात अच्छा इलाज होने से आराम भी हो जाते हैं। चिकित्सक को योनिरोग के निदान, लक्षण और साध्यासाध्य का विचार करके इलाज में हाथ डालना चाहिये।

(२) योनि रोग आराम करने के तरीके ये हैं:—

(क) तेल में रूई का फाहा तर करके योनि में रखना।

(ख) दवा की बत्ती बनाकर योनि में रखना।

(ग) योनि में धूनी या बफारा देना।

(घ) दवाओं के पानी से योनि को धोना।

(ङ) योनि में दवा के पानी वगैरः की पिचकारी देना।

(च) खाने को दवा देना।

(छ) अगर योनि टेढ़ी या तिरछी हो गई हो अथवा बाहर निकल

आई हो, तो योनि को चिकनी और स्वेदित करके ; यानी तेल चुपड़कर और वफारों से पसीने निकाल कर उसे यथास्थान स्थापित करना एवं मधुर औषधियों का वेसवार वनाकर योनि में घुसाना ।

(ज) रूईका फाहा तेलमें तर करके बलानुसार योनिके भीतर रखना । इस से योनि के शूल, पीड़ा, सूजन और स्राव वगेरः दूर हो जाते हैं ।

(झ) टेढ़ी योनि को हाथ से नवाना, सुकड़ी हुई को बढ़ाना और बाहर निकली हुई को भीतर घुसाना ।

(३) वातज योनि रोगों में—गिलोय, त्रिफला और दातूनि की जड़—इन तीनों के काढ़े से योनि को धोना चाहिये । इसके बाद नीचे लिखा तेल बनाकर, उस में रूई का फाहा तर करके, जब तक रोग आराम न हो, बराबर योनि में रखना चाहिये ।

कूट, सेंधानोन, देवदारु, तगर और भटकटैया का फल—इन सब को पाँच-पाँच तोले लेकर अधकचरा करलो और फिर एक हाँडी में पाँच सेर पानी भर कर उसी में कुटी हुई दवाएँ डालकर औटाओ । जब पाँचवाँ भाग पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो । फिर एक क़लईदार कड़ाही में एक पाव काली तिली का तेल डालकर, ऊपर से छना हुआ काढ़ा डाल दो और चूल्हे पर रख कर मन्दी-मन्दी आग से पकाओ । जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर, शीतल होने पर छान लो और काग लगाकर शीशी में रख दो ।

नोट—पाँचों वातज योनि-रोगों पर ऊपर लिखा योनि धोनेका जल और यह तेल अनेक बार के परीक्षित हैं । जल्दी न की जाय और आराम न होने तक बराबर दोनों काम किये जायँ, तो १०० में ६० को आराम होता है ।

(४) पित्तज योनि-रोगोंमें योनिको काढ़ोंसे सींचना, धोना, तेल लगाना और तेल के फाहे रखना अच्छा है । पित्तज रोग में शीतल और पित्त-नाशक नुसखे काम में लाने चाहियें । शीतल दवाओं के तरड़े देने और फाहे रखने से अनेक बार तत्काल लाभ दिखता है । पित्तज योनिरोगों में गरम उपचार भयानक हानि करता है

शतावरीघृत और बला तेल—ये दोनों पित्तनाशक प्रयोग अच्छे हैं।

(५) कफजनित योनि-रोगों में शीतल उपचार कभी न करना चाहिये। ऐसे योनि-रोगों में गर्म उपचार फायदा करता है। कफजन्य योनि रोगों में रूखी और गरम दवायें देना अच्छा है। उधर पृष्ठ ३७७ में लिखी नं० १५ बत्ती ऐसे रोगों में अच्छी पाई गई है।

(६) वात से पीड़ित योनि में हींग के कल्क में घी मिलाकर योनि में रखना चाहिये।

पित्त से पीड़ित योनि में पञ्च वल्कल के कल्क में घी मिलाकर योनि में रखना चाहिये।

कफजन्य योनि रोगों में श्यामादिक औषधियों के कल्क या लुगदी में घी मिलाकर योनि में रखना चाहिये।

अगर योनि कठोर हो, तो उसे मुलायम करने वाली चिकित्सा करनी चाहिये।

सन्निपातज योनि-रोग में साधारण क्रिया करनी चाहिये।

अगर योनि में बदबू हो, तो सुगन्धित पदार्थों के काढ़े, तेल, कल्क या चूर्ण योनि में रखने से बदबू नहीं रहती। जैसे,—पृष्ठ ३७८ का नं० १८ नुसख़ा।

(७) याद रखो, सभी तरहके योनि रोगोंमें "वातनाशक चिकित्सा" उपकारी है, पर वातज योनि रोगों में स्नेहन, स्वेदन और वस्ति कर्म विशेष रूप से करने चाहियें। कहा है—

> सर्वेषु योनिरोगेषु वातघ्नःक्रमइष्यते।
> स्नेहनःस्वेदनो वास्तिर्वातजायां विशेषतः॥

योनिरोग नाशक नुसखे।

(१) "चरक" में योनि रोगों पर "धातक्यादि" तैल लिखा है। उस

तेल का फाहा योनि में रखने और उसी की पिचकारी योनि में लगाने से विप्लुता आदि योनि रोग, योनिकन्द रोग, योनि के घाव, सूजन और योनि से पीप बहना वगैरः निश्चय ही आराम हो जाते हैं। यह तेल हमने जिस तरह आज़माया है नीचे लिखते हैं:—

धव के पत्ते, आमले के पत्ते, कमल के पत्ते, काला सुरमा, मुलेठी, जामुनकी गुठली, आमकी गुठली, कशीश, लोध, कायफल, तेंदूका फल, फिटकरी, अनार की छाल और गूलर के कच्चे फल—इन १४ दवाओं को सवा-सवा तोले लेकर कूट-पीस लो। फिर एक सेर अढ़ाई पाव बकरी के पेशाब में ऊपर के चूर्ण को पीस कर लुगदी बना लो। फिर एक कड़ाही में ऊपर लिखी बकरी के मूत्र में पिसी लुगदी, एक सेर काले तिलों का तेल और एक सेर अढ़ाई पाव गाय का दूध डालकर, चूल्हे पर रख, मन्दाग्नि से पकाओ। जब दूध और मूत्र जलकर तेलमात्र रह जाय, उतार कर छान लो और बोतल में भर दो।

नोट—अगर यह तेल पीठ, कमर और पीठ की रीढ़ पर मालिश किया जाय, योनि में इसका फाहा रखा जाय और पिचकारी में भर कर योनि में छोड़ा जाय—तो विप्लुता, परिप्लुता, योनिकन्द, योनि की सूजन, घाव और मवाद बहना अवश्य आराम हो जाते हैं। इन रोगों पर यह तेल रामबाण है।

(२) वातला योनि में अथवा उस योनि में जो कड़ी, स्तब्ध और थोड़े स्पर्शवाली हो—उस के पर्दे बिठा कर—तिली के तेल का फाहा रखना हितकर है।

(३) अगर योनि प्रस्रंसिनी हो, लिंग की रगड़ से बाहर निकल आई हो, तो उस पर घी मल कर गरम दूध का बफारा दो और उसे हाथ से भीतर बिठा दो। फिर नीचे लिखे वेशवार से उस का मुँह बन्द कर के पट्टी बाँध दो। सोंठ, काली मिर्च, पीपर, धनिया, ज़ीरा, अनार और पीपरामूल—इन सातों के पिसे-छने चूर्ण को पण्डित लोग "वेशवार" कहते हैं।

(४) अगर योनि में दाह या जलन होती हो, तो नित्य आमलों

के रस में चीनी मिलाकर पीनी चाहिये। अथवा कमलिनी की जड़ चाँवलों के पानी में पीसकर पीनी चाहिये।

(५) अगर योनि में से राध निकलती हो, तो नीम के पत्ते प्रभृति शोधन पदार्थों को सेंधेनोन के साथ पीसकर गोली बना लेनी चाहिये। इन गोलियों को रोज़ योनि में रखने से राध निकलना बन्द हो जाता है।

(६) अगर योनिमें बदबू आती हो अथवा वह लिबलिबी हो,तो बच, अड़ूसा, कड़वे परवल, फूल प्रियंगू और नीम—इन के चूर्ण को योनि में रखो। साथ ही अमलताश आदिके काढ़े से योनि को धोओ। पहले धोकर, पीछे चूर्ण रखो।

(७) कर्णिका नामक कफजन्य योनिरोग हो—गर्भाशय के ऊपर मांस सा बढ़ा हो—तो आप नीम आदि शोधन पदार्थों की बत्ती बनाकर योनि में रखवाओ।

(८) गिलोय, हरड़, आमला और जमालगोटा,—इनका काढ़ा बना कर, उस काढ़े की धारों से योनि धोने से योनि की खुजली नाश हो जाती है।

(९) कत्था, हरड़, जायफल, नीमके पत्ते और सुपारी—इन को महीन पीसकर छान लो। पीछे इस चूर्ण को मूँगके यूष में मिला कर सुखा लो। इस चूर्ण के योनि में डालने से योनि सुकड़ जाती और जल का स्राव या पानी सा आना बन्द हो जाता है।

(१०) ज़ीरा, कालाज़ीरा, पीपर, कलौंजी, सुगन्धित बच, अड़ूसा, सेंधानोन, जवाखार और अजवायन—इन को पीस-छान कर चूर्ण कर लो। पीछे इसे ज़रा सेक कर, इस में चीनी मिलाकर लड्डू बना लो। इन लड्डुओं को अपनी जठराग्नि के बल-माफ़िक़ नित्य खाने से योनि के सारे रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इस खाने की दवा के साथ योनि में लगाने की दवा भी इस्तेमाल करने से शीघ्र ही लाभ दीखता है।

(११) चूहे के मांस को पानी के साथ हाँडी में डाल कर काढ़ा बना लो। फिर उसे छान कर, उस में काली तिली का तेल मिला कर, मन्दाग्नि से पकालो। जब पानी जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और शीशी में रख दो। इस तेल में फाहा भिगो कर, योनि में रखने से, योनि-सम्बन्धी रोग निश्चय ही नाश हो जाते हैं।

नोट—चूहे के मांस को तेल में पकाकर, तेल छान लेने से भी काम निकल जाता है। इस चूहे के तेल का फाहा योनि में रखने से योन्यर्श—योनि का मस्सा और योनिकन्द—गर्भाशय के ऊपर का मांसकन्द निश्चय ही आराम हो जाते हैं; पर जब तक पूरा आराम न हो, सब्र के साथ इसे लगाते रहना चाहिये।

(१२) चूहे को भूभल में दाबकर, उसका आम बैंगन प्रभृति की तरह भरता करलो। जब भुरता हो जाय, उस में सेंधानोन बारीक पीस कर मिलादो। उस भरते के योनि में रखने से योनिकन्द—गर्भाशय पर गाँठ सी हो जाने का रोग—निस्सन्देह नाश हो जाता है, पर देर लगती है। नं० ११ की तरह योनि का मस्सा भी इसी भरते से नष्ट हो जाता है।

नोट—नं ११ और १२ नुसखे परीक्षित हैं। अगर योन्यर्श—योनि के मस्से और योनिकन्द—योनि की गाँठ आराम करनी हो, तो आप नं० ११ या १२ से अवश्य काम लें। इन दोनों रोगोंमें चूहेका तेल और भरता अकसीर का काम करते हैं।

(१३) करेले की जड़ को पीस कर, योनि में उसका लेप करने से, भीतर को घुसी हुई योनि बाहर निकल आती है।

(१४) योनि में चूहे की चरबी का लेप करने से, बाहर निकली हुई योनि भीतर घुस जाती है।

(१५) पीपर, कालीमिर्च, उड़द, शतावर, कूट और सेंधानोन—इन सब को महीन पीस-कूट कर छान लो। फिर इस छने चूर्ण को सिल पर रख और पानी के साथ पीसकर, अंगूठे-समान बत्तियाँ बना-बनाकर छायामें सुखा लो। इन बत्तियों के नित्य योनि में रखने से कफ-सम्बन्धी योनि रोग—अत्यानन्दा, कर्णिका, चरणा और अतिचरणा एवं

कफजा योनि रोग—निस्सन्देह नष्ट हो जाते और योनि बिल्कुल शुद्ध हो जाती है। यह योग हमारा आज़मूदा है।

(१६) तगर, कूट, सेंधानोन, भटकटैया का फल और देवदारु—इन का तेल पकाकर, उसी तेल में रूई का फाहा भिगोकर, योनि में लगातार कुछ दिन रखने से, वातज योनि-रोग—उदावृत्ता, वन्ध्या, विप्लुता, परिप्लुता और वातला योनिरोग—अवश्य आराम हो जाते हैं। इसका नाम "नताद्य" तेल है। (इसके बनाने की विधि पृष्ठ ३७३ के नं० ३ में देखो।)

नोट—तेल का फाहा रखने से पहले गिलोय, त्रिफला और दातुनि की जड़—इनके काढ़े से योनि को सींचना और धोना जरूरी है। दोनों काम करने से पाँचों बादी के योनिरोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। अनेक बार परीक्षा की है।

(१७) तिलका तेल १ सेर, गोमूत्र १ सेर, दूध २ सेर और गिलोय का कल्क एक पाव,—इन सबको कड़ाही में चढ़ाकर मन्दाग्निसे पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतारकर छान लो। इस तेल में रूई का फाहा भिगो कर, योनिमें रखने से,वातजनित योनि-पीड़ा शान्त हो जाती है। बादी के योनि रोगों में यह तेल उत्तम है। इसका नाम "गुडूच्यादि तेल" है।

(१८) इलायची, धाय के फूल, जामुन, मँजीठ, लजवन्ती, मोचरस और राल—इन सब को पीस-छानकर रख लो। इस चूर्ण को योनि में रखने से योनि की दुर्गन्ध, लिबलिबापन तथा तरी रहना आदि विकार नष्ट हो जाते हैं।

(१६) गिलोय, त्रिफला, शतावर, श्योनाक, हल्दी, अरणी, पिया-बाँसा, दाख, कसौंदी, बेलगिरी और फालसे—इन ग्यारह दवाओं को एक-एक तोले लेकर, कूट-पीस कर, सिल पर रख लो और पानी के साथ फिर पीस कर, लुगदी बना लो। इस लुगदी को आधसेर "घी" के साथ क़लईदार कड़ाही या देगची में रखकर मन्दाग्नि से पका लो। इसका नाम "गुडूच्यादि घृत" है। यह घृत योनि-रोगों और वात-विकारों को नष्ट करता तथा गर्भ स्थापन करता है।

नोट—गुड़ूच्यादि घृत विशेषकर वातज योनि रोगों में स्त्री को उचित मात्रा से खिलाना-पिलाना चाहिये।

(२०) कड़वे नीम की निबौलियों को नीम के रस में पीस कर, योनि में रखने या लेप करने से, योनि-शूल मिट जाता है। परीक्षित है।

(२१) अरण्डी के बीज नीम के रसमें पीस कर गोलियाँ बना लो। इन गोलियाँ को योनि में रखने या पानी में पीसकर इनका लेप करने से योनि-शूल मिट जाता है।

(२२) आमले की गुठली, वायविडंग, हल्दी, रसौत और कायफल—इन को बराबर-बराबर लेकर और पीस-कूटकर छान लो। पीछे इस चूर्णको "शहद"में मिला-मिलाकर रोज़ योनि में भरो। इस नुसखे से "योनिकन्द" रोग निश्चय ही नाश हो जाता है। पर इसे भरने से पहले, हरड़, बहेड़े और आमले के काढ़े में "शहद" मिलाकर, उस से योनि को सींचना या धोना उचित है; अर्थात इस काढ़े से योनि को धोकर, पीछे ऊपर का चूर्ण शहद में मिलाकर योनि में भरना चाहिये। काढ़ा नित्य ताज़ा बनाना चाहिये।

(२३) मँजीठ, मुलेठी, कूट, हरड़, बहेड़ा, आमला, खाँड, खिरेंटी एक-एक तोले, शतावर दो तोले, असगन्ध चार तोले, असगन्ध की जड़ १ तोले तथा अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, फूलप्रियंगू, कुटकी, कमल, बबूला—कुमुदिनी, दाख, काकोली, क्षीर काकोली, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—ये सब एक-एक तोले लाकर, पीस-कूट कर छान लो। फिर छने चूर्ण को सिल पर रख और जल के साथ पीसकर कल्क, या लुगदी बना लो।

चौंसठ तोले गाय का घी, १२८ तोले शतावर का रस और १२८ तोले दूध तथा ऊपर की लुगदी—इन सब को क़लईदार कड़ाही में रख, मन्दाग्नि से चूल्हे पर पकाओ। जब घी की विधि से घी तैयार हो जाय, उतार कर छान लो और रख दो। इस का नाम "फलघृत" है।

सेवन-विधि—इस घी को अगर पुरुष पीता है, तो उस की मैथुन-

शक्ति अतीव बढ़ जाती है और उस के वीर, रूपवान और बुद्धिमान पुत्र पैदा होते हैं।

जिन स्त्रियों की सन्तान मरी हुई होती है, जिन की सन्तान होकर मर जाती है, जिन का गर्भ रह कर गिर जाता है अथवा जिन के लड़की-ही-लड़की होती हैं, उनके इस घी के पीने से दीर्घायु, गुणवान, रूपवान और बलवान पुत्र होता है।

इस घी के पीने से योनि-स्राव—योनि से मवाद गिरना, रजो-दोष—रजोधर्म ठीक और शुद्ध न होना तथा दूसरे योनि-रोग नाश हो जाते हैं। यह घी सन्तान और आयु को बढ़ाने वाला है। इस "फल-घृत" को अश्विनीकुमारों ने कहा है।

नोट—हमने यह घृत "भावप्रकाश से लिया है। इसमें "सफेद कटेरी की जड़" डालना नहीं लिखा है, तथापि वैद्य लोग उसे डालते हैं। वैद्य लोग इसके लिए जिसका बछड़ा जीता हो और जिसका एकही रंग हो अर्थात माता और बछड़े दोनों एकही रंगके हों—ऐसी गायका घी लेते हैं और सदा से इसे आरने या जङ्गली कण्डों की आग पर पकाते हैं।

यह घृत अनेक ग्रन्थों में लिखा है। सब में कुछ न कुछ भेद है। उनमें हींग, बच, तगर और दूना विदारीकन्द—ये दवाएँ और भी लिखी हैं। वैद्य चाहें तो इन्हें डाल सकते हैं।

(२४) घी का फाहा अथवा तेल का फाहा या शहद का फाहा योनि में रखने से, योनि के सभी रोग नाश हो जाते हैं; पर फाहा बहुत दिनों तक रखना चाहिये है। परीक्षित है।

☞ (२५) मैनफल, शहद और कपूर—इन को पीस कर, अंगुली से, योनि में लगाने से गिरी हुई भग ठीक होती, उसकी नसें सीधी होतीं और वह सुकड़ कर तंग भी हो जाती है। परीक्षित है।

नोट—चक्रदत्त में लिखा है:—

मदनफलमधुकर्पूरपूरितं भवति कामिनीजनस्य।
विगलित यौवनस्य च वराङ्गमति गाढ़ं सुकुमारम्॥

बूढ़ी स्त्री की भी योनि—मैनफल, शहद और कपूर को योनि में लगाने से, अत्यन्त सुन्दर और तंग हो जाती है।

(२६) माजूफल, शहद और कपूर—इनको पीसकर, अँगुली से, योनिमें लगाने से गिरी हुई योनि ठीक हो जाती, नसें सीधी होतीं और वह सुकड़ कर तंग हो जाती है। परीक्षित है।

(२७) इन्द्रायण की जड़ और सोंठ—इन दोनों को "बकरी के घी" में पीसकर, योनि में लेप करने से ,योनि का शूल या दर्द शीघ्र ही नाश हो जाता है। "वैद्यजीवन"-कर्त्ता अपनी कान्ता से कहते हैं—

> तरुण्युत्तरणीमूलं छागीसर्पिःसनागरम्।
> शिवशत्राभिधांबाधां योनिस्थांहन्तिसत्वरम्॥

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है।

(२८) कलौंजी की जड़ के लेप से, भीतर घुसी हुई योनि बाहर आती और चूहे के मांस-रस की मालिश से बाहर आई हुई योनि भीतर जाती है।

(२९) पंचपल्लव, मुलहटी और मालती के फूलोंको घीमें डाल कर, घीको घाममें पका लो। इस घीसे योनि की दुर्गन्ध नाश हो जाती है।

(३०) योनि को चुपड़ कर, उस में शालछड़ का कल्क ज़रा गरम करके रखने से, वातकी योनि-पीड़ा शान्त हो जाती है।

(३१) पित्त से पीड़ित हुई योनि वाली स्त्रीको, पञ्चवल्कलका कल्क योनि में रखना चाहिये।

(३२) चूहीके मांस को तेलमें डालकर, धूपमें पका लो। फिर इस की योनिमें मालिश करो और चूहीके मांस में सेंधानोन मिलाकर योनि को इसका बफारा दो। इन उपायोंसे योनि का मस्सा नाश हो जायगा।

(३३) शालई, मदनमंजरी, जामुन और धव—इन की छाल और पंच वल्कल की छाल—इन सबका काढ़ा करके तेल पकाओ। फिर उस में रूई का फाहा तर करके योनिमें रक्खो। इससे विप्लुता योनि-रोग जाता रहता है।

(३४) वामिनी और पूत योनियों को पहले स्वेदन करो। फिर उनमें चिकने फाहे रखो।

(३५) त्रिफले के काढ़े में "शहद" डालकर योनि-सेचन करने या तरड़ा देने से योनिकन्द रोग आराम हो जाता है।

(३६) गेरू, अंजन, बायबिड़ंग, कायफल, आम की गुठली और हल्दी—इन सब का चूर्ण करके और "शहद" में मिलाकर योनि में रखने से योनिकन्द नाश हो जाता है।

(३७) घोंघे का मांस पीसकर, उस में पकी हुई तिन्तिड़िका का रस मिलाकर, लेप करने से योनिकन्द रोग नाश हो जाता है।

(३८) कड़वी तोरई के स्वरस में "दही का पानी" मिलाकर पीने से योनिकन्द रोग नाश हो जाता है।

(३९) आग पर गरम की हुई लोहे की शलाका से योनिकन्द को दागने से, बहुत विकारों से हुआ योनिकन्द भी नाश हो जाता है।

(४०) अड़ूसा, असगन्ध और रास्ना—इन से सिद्ध किया हुआ दूध पीने से योनि-शूल नाश हो जाता है। साथ ही दन्ती, गिलोय और त्रिफले के काढ़े का तरड़ा भी योनि में देना चाहिये।

नोट—रक्त योनि में प्रदरनाशक क्रिया करनी चाहिये।

(४१) ढाक, धायके फूल, जामुन, लजालू, मोचरस और राल,—इन का चूर्ण बदबू, पिच्छिलता और योनिकन्द आदि में लाभदायक है।

(४२) सिरस के बीज, इलायची, समन्दर-झाग, जायफल, बायबिड़ंग और नागकेशर—इन को पानी में पीसकर बत्ती बना लो। इस बत्ती को योनि में रखने से समस्त योनि-रोग नाश हो जाते हैं।

(४३) बड़ी सौंफ का अर्क योनि-शूल, मन्दाग्नि और कृमिरोगको नाश करता है।

(४४) अर्क पाखाणभेद योनि-रोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और गुल्म-रोगको नाश करता है।

योनि संकोचन योग।

(भग तङ्ग करने वाले नुसखे।

(१) मैनफल, मुलेठी और कपूर—तीनों को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण को तंजेब या महीन मलमल के कपड़े में रख कर स्त्री की भग में रखाओ। उम्मीद है कि कई दिनों में, स्त्री की ढीली-ढाली और फैली हुई भग खूब सुकड़कर नर्म हो जायगी। परीक्षित है।

(२) कौंचकी जड़ का काढ़ा बनाकर, उस से कितने ही दिनों तक योनि धोने से योनि सुकड़ जाती है।

(३) बैंगन को लाकर सुखा लो। सूखने पर पीसकर चूर्ण कर लो। इस चूर्ण को भगमें रखने से भग सुकड़ कर तंग हो जाती है।

(४) आक की जड़ लाकर स्त्री अपने पेशाब में पीस ले। फिर फाया करके, दो घण्टे बाद मैथुन करे। भग ऐसी तंग हो जायगी कि लिङ्ग नहीं सकते।

(५) सूखे कैंचुए भग में मलने से बड़ा आनन्द आता है।

(६) बबूल की छाल, झड़बेरी की छाल, मौलसरी की छाल, कचनार की छाल और अनार की छाल—सब को बराबर-बराबर लेकर, कुचल लो और एक हाँडी में अन्दाज़ का पानी भर कर जोश दो। औटाते समय हाँडी में एक सफेद कपड़ा भी डाल दो। जब कपड़े पर रंग चढ़ जाय, उसे निकाल लो। इस काढ़े से योनि को खूब धोओ। इसके बाद, इसी काढ़े में रंगे हुए कपड़ेको भगमें रख लो। इस तरह करने से योनि सुकड़ कर छोकरी की सी हो जाती है।

(७) ढाक की कोंपलें या कलियाँ लाकर छाया में सुखा लो। सूखने पर पीस-छान लो और बराबर की पीसी हुई मिश्री मिलाकर रख दो। इसमें से एक मात्रा चूर्ण रोज़ सात दिन तक खाओ। सात दिन बाद साफ मालूम हो जायगा कि, योनि तंग हो गई। अगर कुछ कसर हो, तो और भी कई दिन खाओ। मात्रा—सवा दो माशे से नौ माशे तक। अनुपान—शीतल जल।

(८) सूखी बीरबहुट्टी घी में पीस कर भग में मलने से भग तंग हो जाती है।

(९) बकायन की छाल लाकर सुखा लो। फिर पीस-छान कर रख लो। इस में से कुछ चूर्ण रोज़ भग में रखने से भग तंग हो जाती है।

(१०) खट्टे पालक के बीज कूट-छानकर भग में रखने से भी योनि सुकड़ जाती है।

(११) इमली के बीजोंकी गिरी कूट-छान कर रख लो। सवेरे-शाम इस चूर्ण को भग में मलने से भग तङ्ग हो जाती है।

(१२) समन्दर-झाग और हरड़ के बीजों की गिरी बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इस चूर्ण को भग में रखने से भग तङ्ग हो जाती है।

(१३) चीनिया गोंद छै माशे लाकर महीन पीस लो और दो तोले फिटकरी लाकर भून लो। जब फिटकरी भुनने लगे और उसका पानी सा हो जाय, उस फिटकरी के पतले रस पर, पिसे हुए गोंद को पानी में मिला कर छिड़को। जब शीतल हो जाय पीस लो। इस के बाद, इस में ज़रा सा "गुलधावा" मिला दो और फिर सब को पीसो। इस दवा को योनि में रखने से अदभुत चमत्कार नज़र आता है। "इलाज़ुलगुर्बा" के लेखक महोदय इसे अपना आज़माया हुआ बताते हैं।

(१४) बेंतकी जड़ को मन्दाग्नि से पानी के साथ पका कर

काढ़ा करलो और उस से योनि को धोओ। इस से बालक होने बाद, योनि पहले की जैसी तंग हो जाती है। कहा है :—

लोध्रतुम्बीफलालेपो योनि दार्ढ्यं करोति च।
वेतसमूलानिः क्वाथक्षालनेन तथैव च॥

अर्थात् लोध और तूम्बी के लेप से योनि सख़्त हो जाती है। बेंतकी जड़ के काढ़े से भी योनि दृढ़ हो जाती है।

(१५) ढाक के फल और गूलर के फल—इन को पीस कर, तिली के तेल और शहद में मिलाकर, योनि पर लेप करने से योनि तंग हो जाती है। यह योग और भी अच्छा है।

(१६) बच, नील-कमल, कूट, गोल मिर्च, असगन्ध और हल्दीके लेप से योनि दृढ़ हो जाती है।

(१७) कड़वी तूम्बी के पत्ते और लोध—इन को मिला कर जल के साथ पीस लो और गोली बनाकर योनि में रखो। इस उपाय से भी योनि सुकड़ जाती है।

(१८) हरड़, बहेड़े, आमले, भाँग, लोध, दूधी और अनार की छाल—इन सब को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण को अरणी के रस में घोट कर गोली बना लो। इस गोली के रात को भग में रखने से योनि सुकड़ जाती है।

नोट—नं० १५, १६ और १८ के नुसखे हमारे एक मित्र अपने आजमूदा कहते हैं।

(१९) बेरी की जड़ की छाल, कनेर की जड़ की छाल, लोध, माजूफल, पद्मकाठ, बिसौंटे की जड, कपूर और फिटकरी—इन सब को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो और फिर इस चूर्ण को योनि में रखो। इस चूर्ण से योनि सिकुड़ जाती है।

(२०) बिसौंटे की जड़, फिटकरी, लोध, आमली, बेर की गुठली की मींगी और माजूफल,—इन सबको बराबर-बराबर लेकर, पीस-ान लो। इस चूर्ण को योनि में रखने से योनि सिकुड़ जाती है।

(२१) जामुन की जड़की छाल, लोध और धायके फूल, इन सब को पीस कर, "शहद" में मिला लो और योनि में लेप करो। इससे अवश्य योनि सिकुड़ जाती है।

(२२) अकेली छाछ से योनि को धोओ। इस उपाय से योनि साफ होकर सिकुड़ जाती है।

नोट—अमलतास के बड़े पेड़ की जड़ की छाल और भांग को धतूरे के रस में पीस कर गोली बना लो और छाया में सुखा लो। इन गोलियों को अपने पेशाबमें घिस कर लिङ्ग परे लेप करो। इससे लिङ्ग दीर्घ पुष्ट, और कड़ा हो जायगा।

असगन्ध, कूट, चिवक और गजपीपल—इनको पीसकर, भैंस के घी में मिला लो और लिंग पर लेप करो। इससे लिंग खूब पुष्ट हो जायगा।

मैनसिल, सुहागा, कूट, इलायची और मालती के पत्तों का रस, इन सबको कुचल कर तिलके तेल में डाल कर पकाओ। इस तेल को लिंग पर मलने से लिंग कड़ा हो जायगा।

(२३) भाँग की पोटली बनाकर, योनि में ३।४ घण्टे रखने से, सौ बार की प्रसूता नारी की योनि भी कन्या की सी हो जाती है। "वैद्यरत्न" में कहा है :—

भंगा पोटलिकां दत्वा प्रहरं काममन्दिरे।
शतवारं प्रसूतापि पुनर्भवति कन्यका॥

(२४) मोचरस को पीस-छान कर, योनि में ३।४ घण्टे तक लगा रखने से सौ बच्चा जनने वाली की योनि भी सुकड़ जाती है। "वैद्यरत्न" में ही लिखा है:—

मोचरससूक्ष्मचूर्णं चिप्तं योनौ स्थितं प्रहरम्।
शतवार प्रसूताया अपि योनिः सूक्ष्मरन्ध्रास्यात्॥

(२५) देवदारु और शारिवा को "घी" में मिलाकर लेप करने से शिथिल योनि भी कड़ी हो जाती है।

(२६) कूट, धाय के फूल, बड़ी हरड़, फूली फिटकरी, माजूफल, हाऊबेर, लोध और अनार की छाल, इनको पीस कर और शराबमें मिला कर लेप करने से योनि दृढ़ हो जाती है।

(बाल उड़ाने के उपाय)

---

(१) बालों को उखाड़ कर, उस जगह थूहर का दूध लगा देने से बाल नहीं आते ।

(२) कली का चूना, मुर्गेकी बीट, संखला (शङ्खला) धतूरे का रस और घोड़ेका पेशाब—इन सब को मिला कर, बालों की जगह लेप करने से बाल उड़ जाते हैं ।

(३) कपूर, भिलावे, शंखका चूर्ण, सजीखार, अजवायन और अजमोद-इन सब को तेल में पकाकर "हरताल" पीस कर मिला दो । इस तेल के लगाने से क्षण-भर में ही बाल गिर जाते हैं ।

(४) शंखकी राख करके, उसे केले के डंठल के रस में मिला दो । पीछे पीस कर बराबर की हरताल मिला दो । इस दवा के लेप से गुदा आदि के रोम या बाल नष्ट हो जाते हैं ।

(५) रक्तांजना की पुच्छ के चूर्ण में सरसों का तेल मिलाकर सात दिन रख दो । फिर इस का लेप करो । इस तेल से बालों का नाश हो जाता है, इसमें शक नहीं ।

(६) कसूम के तेल की मालिश करने से ही बाल उड़ जाते हैं ।

(७) अमलताश की जड़ ४ तोले, शंख का चूर्ण २ तोले, हरताल २ तोले और गधेका पेशाब ६४ तोले,—इनके साथ कड़वा तेल पकाकर रख लो । इस तेलका लेप करने से बाल उड़ जाते और फिर नये पैदा नहीं होते । इसे "आरग्वधादि तैल" कहते हैं ।

(८) कपूर, भिलावे, शंख का चूर्ण, जवाखार, मैनसिल और

हरताल—इन में पकाया हुआ तेल क्षण भर में बालों को उड़ा देता है। इसका नाम "कर्पूरादि तैल" है। "चक्रदत्त" में कहा है:—

कर्पूर भल्लातक शंखचूर्णं क्षारो यवानां च मनःशिला च ।
तैलं विपक्वं हरितालमिश्रं रोमाणि निर्मूलयति क्षणेन ॥

नोट-कपूरादि पाँच दवाओं को पानी के साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो, फिर तेल पकालो । तेल पक जाने पर, इस तेल में "हरताल" पीस कर मिला दो और बालों की जगह लेप करो—यही मतलब है ।

(९) सीपी, छोटा शंख,बड़ा शंख, पीली लोध, घंटा और पाटली-वृक्ष—इन सबको जलाकर क्षार बना लो । इस क्षारमें गधे का पेशाब डाल कर घोटो और जितना क्षार हो, उसका पाँचवाँ भाग "कड़वा तेल" मिला दो और आग पर पकालो ।

यह "क्षार तेल" आत्रेय मुनिका पूजित और महलोंमें देने योग्य है। जहाँ इसकी एक बूँद गिर जाती है,वहाँ बाल फिर पैदा नहीं होते । इस से बवासीर के मस्से, दाद, खाज और कोढ़ प्रभृति भी आराम हो जाते हैं ।

(१०) शंखका चूर्ण दो भाग और हरताल एक भाग,—इन दोनों को एकत्र पीसकर लेप करने से बाल गिर जाते हैं ।

(११) कसूम का तेल और थूहर का दूध—दोनों को मिलाकर लेप करने से बाल गिर जाते हैं ।

(१२) केले की राख और श्योनाक के पत्तों की राख, हरताल, नमक और छोंकरे के बीज—इन को एकत्र पीस कर लेप करने से बाल गिर जाते हैं ।

(१३) हरताल १ भाग, शंखका चूर्ण ५ भाग और ढाककी राख १ भाग—इन सबको मिलाकर लेप करनेसे बाल गिर जाते हैं ।

(१४) कनेर की जड़, दन्ती और कड़वी तोरई—इन सबको पीस कर, केले के खार द्वारा तेल पकाओ। यह तेल बाल गिराने में उत्तम है। इसे "करवीराद्य तैल" कहते हैं ।

(१५) शंखकी राख ६ माशे, हरताल ४॥ माशे, मैनसिल २। माशे और सज्जी-खार ४॥ माशे,—इनको जलमें पीस कर बालों पर लगाओ और बालों को उखाड़ो। सात बार लगाने से बालों की जड़ ही नष्ट हो जाती है।

(१६) विना बुझा चूना और हरताल,—दोनों को बराबर-बराबर लेकर बालों पर मलो। चूना ज़ियादा होगा तो जल्दी लाभ होगा; यानी बाल जल्दी गिरेंगे। कोई-कोई इसमें थोड़ी सी अण्डे की सफेदी भी मिलाते हैं। इसके मिलाने से जलन नहीं होती।

(१७) जली सीप, जली गच और हरताल मिलाकर लगाने से बाल उड़ जाते हैं।

नोट—"तिब्बे अकबरी" में लिखा है,—गुप्त स्थानके बाल न गिराने चाहिए। इससे हानि हो सकती है और काम-शक्ति तो कम हो ही जाती है। गुप्त स्थान के बाल छुरे या उस्तरे से मूँड़नेसे लिङ्ग पुष्ट होता और कामशक्ति बढ़ती है। इसके सिवा और भी अनेक लाभ होते हैं।

नष्टार्त्तव-चिकित्सा

बन्द हुए रजोधर्म की चिकित्सा।

रजोधर्म से लाभ।

संसारकी सभी स्त्रियाँ, हर महीने, रजस्वला होती हैं ; यानी हर महीने, उनकी योनि से रज या एक प्रकार का खून रिस-रिस कर निकला करता है। इसीको रजोधर्म होना, मासिक-धर्म होना या रजस्वला होना कहते हैं। यह रजोधर्म स्त्रियोंमें बारह वर्षकी अवस्थाके बाद आरम्भ होता और पचास सालकी उम्र तक होता रहता है। वाग्भट्ट महोदय कहते हैं :—

> मासि मासि रजः स्त्रीणां रसजं स्रवति त्र्यहम्।
> वत्सराद्द्वादशादूर्ध्वं याति पंचाशतः क्षयम्॥

महीने-महीने स्त्रियों के रस से रज बनता है और वही रज, तीन दिन तक, हर महीने उनकी योनिसे झिरता है। यह रजःस्राव या रजोधर्म बारह वर्ष की उम्र से ऊपर होने लगता और पचास साल की उम्र तक होता रहता है; इसके बाद नहीं होता ; यानी बन्द हो जाता है।

यह रजका गिरना तीन दिन तक रहता है, पर जिस रहम या गर्भाशय से यह रज या आर्त्तव अथवा खून निकलकर बाहर बहता है, वह सोलह दिनों तक खुला रहता है। इसी से ऋतुकाल सोलह दिन का माना गया है। इसी ऋतुकाल के समय स्त्री-पुरुष के परस्पर मैथुन करने से, गर्भ रह जाता है। मतलब यह कि, इसी ऋतुकाल में गर्भ रहता

है। गर्भ रहने के लिये स्त्री का रजस्वला होना ज़रूरी है, क्योंकि रज गिरने के लिये गर्भाशय का मुँह खुल जाता है और वह सोलह दिन तक खुला रहता है। इस समय, मैथुन करने से, पुरुष का वीर्य गर्भाशय के अन्दर जाता है और वहाँ रजसे मिलकर गर्भ का रूप धारण करता है। अगर सोलह दिन के बाद मैथुन किया जाता है, तो गर्भ नहीं रहता; क्योंकि उस समय गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाता है। रजोधर्म होनेके १६ दिन बाद मैथुन करने से, पुरुष का वीर्य योनिके और हिस्सों में—गर्भाशय से बाहर—गिरता है। उस दशा में गर्भ रह नहीं सकता। "भावप्रकाश" में लिखा है :—

आर्त्तवस्रावदिवसादृतुः षोडशरात्रयः।
गर्भग्रहणयोग्यस्तु स एव समयः स्मृतः॥

आर्त्तव गिरने या रजःस्राव होने के दिन से सोलह रात तक स्त्री "ऋतुमती" रहती है। गर्भ ग्रहण करने-योग्य यही समय है।

जो बात हमने ऊपर लिखी है, वही बात यह है। स्त्री के गर्भाशयका मुँह रजोधर्म होने के दिनसे सोलह रात तक खुला रहता है। इतने समय को "ऋतुकाल" और इतने समय तक यानी सोलह दिन तक स्त्री को "ऋतुमती" कहते हैं। इसी समय वह पुरुष का संसर्ग होने से गर्भ धारण कर सकती है; फिर नहीं। बाद के चौदह दिनों में गर्भ नहीं रहता; इसी से बहुत सी चतुरा वेश्या अथवा विधवा स्त्रियाँ इन्हीं चौदह दिनों में पुरुष-संग करती हैं।

पिता का वीर्य और स्त्री का आर्त्तव गर्भ के बीज हैं। बिना दोनों के मिले गर्भ नहीं रहता। अनजान लोग समझते हैं, कि केवल पुरुष के वीर्य से गर्भ रहता है, यह उनकी ग़लती है। बिना दो चीज़ों के मिले तीसरी चीज़ पैदा नहीं होती, यह संसार का नियम है। जब वीर्य और रज मिलते हैं, तभी गर्भोत्पत्ति होती है। वाग्भट्ट जी कहते हैं :—

शुद्धे शुक्रार्त्तवे सत्त्वः स्वकर्मक्लेशचोदितः।
गर्भः सम्पद्यते युक्तिवशादग्निरिवारणौ॥

जिस तरह अरणी को मथने से आग निकलती है; उसी तरह स्त्री-पुरुष की योनि और लिंग की रगड़ से—वीर्य और आर्त्तवके मिलने से—अपने कर्म रूपी क्लेशों से प्रेरित हुआ जीव गर्भ का रूप धारण करता है

"भावप्रकाश" में लिखा है:—

कामान्मिथुन-संयोगे शुद्धशोणितशुक्रजः ।
गर्भः संजायते नार्य्याः स जातो बाल उच्यते ॥

जब स्त्री-पुरुष दोनों कामदेव के वेग से मतवाले होकर आपस में मिलकर मैथुन करते हैं, तब शुद्ध रुधिर और शुद्ध वीर्य से स्त्री को गर्भ रहता है। वही गर्भ पैदा हो कर—योनि से बाहर निकल कर—बालक कहलाता है।

और भी लिखा है:—

ऋतौ स्त्रीपुंसयोर्योगे मकरध्वजवेगतः ।
मेढ्रयोन्यभिसंघर्षाच्छरीरोष्मानिलाहतः ॥
पुंसः सर्वशरीरस्थं रेतोद्रावयतेऽथ तत् ।
वायुर्मेहनमार्गेण पात्यत्यंगनाभगे ।
तत् संश्रुत्य व्यात्तमुखं याति गर्भाशयं प्रति ।
तत्र शुक्रवदायातेनार्त्तवेन युतं भवेत् ।
शुक्रार्त्तवसमाश्लेषो यदैव खलु जायते ।
जीवस्तदैव विशति युक्तः शुक्रार्त्तवान्तरः ॥

काम-वेग से मस्त होकर, ऋतुकाल में, जब स्त्री-पुरुष आपस में मिलते हैं—मैथुन-कर्म करते हैं—तब लिङ्ग और योनि के आपस में रगड़ खाने से, शरीर की गरमी और वायुके ज़ोरसे, पुरुषों के शरीर से वीर्य द्रवता है। उस को वायु या हवा, लिङ्गकी राह से, स्त्रीकी योनि में डाल देती है। फिर वह वीर्य खुले मुँह वाले गर्भाशयमें बहकर जाता और वहाँ स्त्री के रज में मिल जाता है। जब वीर्य और रज का संयोग होता है, जब वीर्य और रज गर्भाशय में मिलते हैं, तब उन मिले हुए वीर्य और रज में "जीव" आ घुसता है। जिस तरह सूरज की किरणों

और सूर्यकान्त मणि के मिलने से आग पैदा होती है ; उसी तरह वीर्य और आर्त्तव—रज—के मिलने से "जीव" पैदा होता है।

इतना लिखने का मतलब यह है कि, गर्भ रहने के लिये स्त्री का ऋतुमती होना परमावश्यक है। जिस स्त्री को महीने-महीने रजोधर्म नहीं होता, उसे गर्भ रह नहीं सकता। यद्यपि स्त्रियाँ प्रायः तेरहवें साल से रजस्वला होने लगती हैं ; पर अनेक कारणों से उनका रजोधर्म होना बन्द हो जाता या ठीक नहीं होता। जिनका रजोधर्म बन्द या नष्ट हो जाता है, वे गर्भ धारण कर नहीं सकतीं ; इसी से कहा है—"बन्ध्या नष्टार्त्तवा ज्ञेया" जिसका रज नष्ट हो गया है, वह बाँझ है; क्योंकि "गर्भोत्पत्तिभूमिस्तुरजस्वला" यानी रजस्वला स्त्री को ही गर्भ रहता है।

यद्यपि बाँझ होने के और भी बहुत से कारण हैं। उन्हें हम दत्तात्रयी प्रभृति ग्रन्थों से आगे लिखेंगे; पर सब से पहले हम "नष्टार्त्तव" या मासिक बन्द हो जाने के कारण और इलाज लिखते हैं, क्योंकि शुद्ध साफ रजोधर्म होना ही स्त्रियों के स्वास्थ्य और कल्याण की जड़ है। जिन स्त्रियों को रजोधर्म नहीं होता, उनको अनेक रोग हो जाते हैं और वे गर्भ को तो धारण कर ही नहीं सकतीं।

प्रकृति, अवस्था और बलसे कम या ज़ियादा रक्त का जाना अथवा तीन दिन से ज़ियादा खून का झिरता रहना— रोग समझा जाता है। अगर किसी स्त्री को महीने से दो चार दिन चढ़ कर रजोधर्म हो, ज़रा सा खून धोती के लग कर फिर बन्द हो जाय, पेड़ू में पीड़ा होकर खून की गाँठ सी गिर पड़े अथवा एक या दो दिन खून गिर कर बन्द हो जाय, तो समझना चाहिये कि शरीर का खून सूख गया है—खून की कमी है। अगर तीन दिन से ज़ियादा खून गरे या दूसरा महीना लगने के दो चार दिन पहले तक गिरता रहे, तो समझना चाहिये, कि खून में गरमी है। अगर खून सूख गया हो या कम हो गया हो, तो खून बढ़ाने वाली दवायें या आहार सेवन कराकर खून बढ़ाना चाहिये। अगर

ज़ियादा दिनों तक खून पड़ता रहे, तो प्रदर रोग की तरह इलाज करना चाहिये ।

मासिक धर्म बन्द होने के कारण ।

रजोधर्म बन्द होने के कारण यूनानी ग्रन्थों में विस्तार से लिखे हैं और वह हैं भी ठीक; अत: हम "तिब्बे अकबरी" और "मीज़ान तिब्ब" वगैर: से उन्हें खूब समझा-समझाकर लिखते हैं:—

तिब्बे अकबरी में रजोधर्म या हैज़ का खून बन्द हो जाने के मुख्य आठ कारण लिखे हैं:—

(१) शरीर में खून के कम होने या सूख जाने से रजोधर्म होना बन्द हो जाता है ।

(२) सरदी के मारे खून, गाढ़े दोषों से मिलकर, गाढ़ा हो जाता और रजोधर्म नहीं होता ।

(३) रहम या गर्भाशय की रगों के मुँह बन्द हो जाने से रजोधर्म नहीं होता ।

(४) गर्भाशय में सूजन आ जाने से रजोधर्म होना बन्द हो जाता है ।

(५) गर्भाशय के घावों के भर जाने से रगों की तह बन्द हो जाती है, और फिर रजोधर्म नहीं होता ।

(६) गर्भाशय से रजके आने की राह में मस्सा पैदा हो जाता है और फिर उस के कारण से रजोधर्म नहीं होता ; क्योंकि मस्से के आड़े आ जाने से रज को बाहर आने की राह नहीं मिलती ।

(७) स्त्री के ज़ियादा मोटी हो जाने की वजह से गर्भाशय में रज आने की राहें दब जाती हैं, इस से रजोधर्म होना बन्द हो जाता है ।

(८) गर्भाशय के मुँह के किसी तरफ घूम जाने से रजोधर्म होना बन्द हो जाता है ।

प्रत्येक कारण की पहचान।

पहला कारण।

(१) अगर शरीर में खून की कमी होने या खून के सूख जाने से मासिकधर्म होना बन्द हुआ होगा, तो स्त्री का शरीर कमज़ोर और बदन का रंग पीला होगा।

खून की कमी के कारण।

(१) अधिक परिश्रम करना।

(२) भूखा रहना या उपवास करना।

(३) मवाद नाशक रोग होना।

(४) गुलाब प्रभृति जियादा पीना।

(५) शरीरसे खून का निकलना।

खून बढ़ाने वाले उपाय।

(१) पुष्टिकारक भोजन।

(२) मुर्गी का अधभुना अण्डा।

(३) मोटे मुर्ग का शोरबा।

(४) जवान बकरी का माँस।

(५) दूध, घी और मीठा जियादा खाना।

(६) सोना और आराम करना।

(७) विशेष तरी के स्थान में नहाना।

सूचना—अगर खून सूख गया हो, कम हो गया हो; तो पहले पुष्टिकारक और रक्तवृद्धिकारक आहार-विहार या औषधियाँ सेवन कराकर, खून बढ़ा लेना चाहिये। इसके बाद मासिक धर्म खोलने के उपाय करने चाहियें।

नोट—हमारे वैद्यक में भी रस रक्त आदि बढ़ाने वाले अनेक पदार्थ लिखे हैं। जैसे:—

(१) अनार प्रभृति खून बढ़ाने वाले फल खाना।

(२) पका हुआ दूध मिश्री मिलाकर पीना ।

(३) काली मिर्चों के साथ पकाया हुआ दूध पीना ।

(४) १५ गोलमिर्च चबाकर मिश्री-मिला गरम दूध पीना ।

(५) एक पाव गरम या कच्चे दूध में १० माशे घी, ६ माशे शहद, १ तोले मिश्री और १५ दाने गोल मिर्च—सब को मिला कर, सवेरे-शाम पीना । यह नुसखा परीक्षित है । यह सूखे हुए खून को हरा करता और उसे अवश्य बढ़ाता है ।

(६) स्नान करना, खुश रहना और नींद भर सोना ।

शरीर का अधिक दुबला-पतला होना भी एक रोग है । इस विषय में हम "चिकित्सा चन्द्रोदय" पहले भाग के पृष्ठ १६४-१६६ में लिख आये हैं । प्रसंगवश यहाँ भी दो चार दवाएँ शरीर पुष्ट और मोटा करने की लिखते हैं :—

(१) असगन्ध, काली मूसली और सफेद मूसली; इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर गाय के दूध में पकाओ । जब दूध सूख जाय, उतार कर धूप में सुखा लो । फिर सिल पर पीसकर, चूर्ण के बराबर शक्कर मिला दो और रख दो । इसमें से, हर दिन दो-अढ़ाई तोले चूर्ण लेकर खाओ और ऊपर से गाय का दूध पीओ । यह नुसखा दुबली स्त्रियों को विशेष कर मोटा करता है । परीक्षित है ।

(२) हर दिन दूध में रोटी चूर कर खाने से भी शरीर मोटा होता है ।

(३) मीठे बादाम की मींगी, निशास्ता, कतीरा और शक्कर बराबर-बराबर मिला कर रख लो । इसमें से, तोले भर चूर्ण, दूध के साथ, नित्य खाने से खून बढ़कर शरीर मोटा होता है ।

दूसरा कारण ।

(२) अगर सर्दी के कारण, खून गाढ़े दोषों से मिलकर, गाढ़ा हुआ होगा और उस की वजह से मासिक धर्म होना बन्द हुआ होगा; तो स्त्री का शरीर सुस्त रहेगा, उस के बदन का रंग सफेद होगा, नसों का रंग नीला-नीला चमकेगा, पेशाब ज़ियादा आवेगा, आमाशय के पचाव में गड़बड़ होने से कफ-मिला मल उतरेगा, नींद में भारीपन होगा और खून-हैज़ या आर्त्तव अगर आवेगा तो पतला होगा ।

रोग नाशक उपाय ।

(१) मवाद को नर्म करने वाली चीजें—पारा प्रभृति युक्ति से दो , जिससे गाढ़े दोष छट जायँ ।

(२) अजमोद के बीज, रूमी सौंफ, पोदीना, सौंफ और पहाड़ी पोदीना,—इनको औटाकर, शहद या कन्द में माजून बना लो और गाढ़े दोष निकाल कर खिलाओ, जिससे खून पतला होकर सहज में निकल जाय।

(३) सोया, दोनों मरुआ, पोदीना, तुतली, बाबूना, अकलीलुलमलिक और सातर,—इनका काढ़ा बनाकर योनि को भफारा दो।

(४) बालछड़, दालचीनी, तज, हुब्ब, बिलसाँ, जायफल, छोटी इलायची और कूट प्रभृति से, जिसमें इत्र पड़ा हो, सेक करो और इन्हीं खुशबूदार दवाओं को आग पर डाल-डालकर गर्भाशय को धूनी दो।

तीसरा कारण।

(३) अगर गर्भाशय की रगों के मुँह बन्द हो जाने से मासिक-धर्म होना बन्द हुआ होगा, तो गर्भाशय में जलन और खुश्की होगी।

कारण— (१) गर्भाशय में गर्मी और खुश्की।

(२) अजीर्ण।

उपाय— (१) शीरखिश्त, सिमाक, घीया के बीजों की मींगी, खुब्बाजी और सौंफ को कूट कर, शहद और अण्डे की ज़र्दी में मिला लो। फिर उसे कपड़े पर लहेस कर, स्त्री के मूत्रस्थान पर कई दिनों तक रखो।

नोट—जिस तरह गर्भाशय की रगों के मुँह गरमी से बन्द हो जाते हैं; उसी तरह गर्भाशय में सुकेड़नेवाली सरदी पैदा होने से भी रगों के मुँह बन्द हो जाते हैं। यद्यपि दुष्ट प्रकृति गर्भाशय में पैदा होती है, पर उस के चिह्न सारे शरीर में प्रकट होते हैं, क्योंकि गर्भाशय श्रेष्ठ अङ्ग है। इस दशा में गर्म और मवाद ग्रहण करने वाली दवा देनी चाहिये, जिस से गर्भाशय में गरमी पहुँचे। ऐसे नुसखे बाँझ होने के बयान में लिखे हैं। "बूलकी टिकिया" गर्भाशय नर्म करनेमें सबसे अच्छी है।

बूल	१०॥ माशे
निर्विष	१७॥ माशे
तुतली के पत्ते	७ माशे
पोदीना	७ माशे
पहाड़ी पोदीना	७ माशे
मंजीठ	७ माशे
हींग	७ माशे
कुन्दलगोंद	७ माशे
जावशीर	७ माशे

इस नुसखे में जो चीजें घोलने योग्य हों उन्हें घोल लो और जो कूटने योग्य हों उन्हें कूट लो। फिर टिकिया बना लो। ज़रूरत के माफिक, इसे "देवदारु के काढ़े" के साथ सेवन कराओ। यह दवा गर्भाशय को नर्म करती है।

उपाय—इस हालत में, यानी गर्मी और खुश्की से रोग होने की दशा में, तरी पहुँचाने वाली दवा या गिजा दो। ऐसी दवाएँ बांझ-चिकित्सा में लिखी हैं।

चौथा कारण।

(४) अगर सूजन आजाने की वजह से रज का आना बन्द होगया हो, तो उसका इलाज और पहचान सूजन रोग में लिखी विधि से करो।

उपाय—हल्दी को महीन पीसकर और घी में मिलाकर, उसमें रुई का फाहा तर कर लो और उसका शाफा बनाकर गर्भाशय में रखो। इस नुसखे से गर्भाशय की सूजन तो नाश हो ही जाती है, इसके सिवा और भी लाभ होते हैं।

पाँचवाँ कारण।

(५) अगर गर्भाशयके घाव भर जाने और रगों की तह बन्द हो जाने से मासिक धर्म बन्द हुआ हो, तो इस रोग का आराम होना असम्भव हैं। पर मासिक बन्द होने वाली को हानि न हो, इस के लिए उसे फस्द खुलवानी, सदा मवाद निकलवाना और मिहनत करनी चाहिये।

छठा कारण।

(६) अगर गर्भाशय पर मस्सा हो जाने या गर्भाशय के मुँह और छेद पर ऐसी ही कोई चीज़ पैदा हो जाने से रज आने की राह रुक गई हो और उससे रजोधर्म बन्द हो गया हो या संभोग भी न हो सकता हो, तो उचित इलाज करना चाहिये। ऐसी औरतको जब रजोधर्म का समय होता है, बड़ी तकलीफ और खिंचावसा होता है

उपाय—(१) इलाज मस्सों की तरह करो।

(२) फस्द प्रभृति खोलो।

सातवाँ कारण।

(७) अगर अधिक मुटापे की वजह से गर्भाशय के मार्ग दब कर बन्द हो गये हों, तो उचित उपाय करो।

उपाय—(१) फस्द खोलो।

(२) शरीर को दुबला करो।

(३) मासिक धर्म के समय पाँवकी रग की फस्द खोलो।

(४) पेशाब लाने वाली दवाएँ और शर्वत दो।

(५) खाने से पहले मिहनत कराओ।

(६) विना कुछ खाये स्नान कराओ।

(७) इतरीफल, सगीर, रूमी सौंफ, और गुलकन्द मुफीद हैं।

(८) कफनाशक जुलाब दो।

(६) एक माशे चन्दरस, दो तोले सिकंजीवन और पानी को साथ मिलाकर पिलाओ। भोजन में सिरका, मसूर और जौ की रोटी खिलाओ। बबूल की छाया में बैठाओ। रांगे की अंगूठी पहनाओ। मोटे कपड़े पहनाओ। जमीन पर सुलाओ। सरदी में कुछ देर नंगी रखो। कम सोने दो। कुछ चिन्ता लगाओ। इसमें से प्रत्येक उपाय मोटे शरीर को दुबला करने वाला है। परीक्षित उपाय हैं।

नोट—अगर गरमी हो, तो गरम चीज काम में न लाओ।

आठवाँ कारण।

(८) गर्भाशय किसी तरफ को फिर गया हो और इससे मासिकधर्म न होता हो, तो "बन्ध्या चिकित्सा" में लिखा हुआ उचित उपाय करो।

अन्य ग्रन्थों से कारण और पहचान।

(१) अगर गर्भाशय में गरमी से ख़राबी होगी, तो हैज़ का खून या मासिक रक्त काला और गाढ़ा होगा और उसमें गरमी भी होगी।

(२) अगर शीतकी वजह से खराबी होगी, तो हैज़ का खून या आर्त्तव देर से और विना जलन के निकलेगा।

(३) अगर खुश्की से रोग होगा; तो पेशाब की जगह—योनि—सूखी रहेगी और हैज़ कम होगा; यानी मासिक रक्त कम गिरेगा।

(४) अगर तरी से रोग होगा, तो रहम या गर्भाशय से तरी निकला करेगी। ऐसी स्त्री को तीन महीने से जियादा गर्भ न रहेगा।

(५) अगर मवाद की वजह से रोग होगा, तो उस मवाद की पह-

चान उसी तरी से होगी, जो रहम या गर्भाशय से बह-बह कर आती होगी ।

(६) अगर शरीर के बहुत मोटे होने के कारण से रजोधर्म न होता होगा या गर्भ न रहता होगा, तो स्त्रीको दुबली करने के उपाय करने होंगे ।

(७) अगर अधिक दुबलेपन से मासिक धर्म न होता होगा या गर्भ न रहता होगा, तो स्त्री खून बढ़ाने वाले पदार्थ खिला कर मोटी करनी होगी ।

(८) अगर गर्भाशय में सूजन आ जाने या मस्सा हो जाने या और कोई चीज़ आड़ी आ जाने से गर्भ न रहता हो या मासिक खून बाहर न आ सकता हो, तो उन की यथोचित चिकित्सा करनी चाहिये ।

(९) अगर गर्भाशय में गाढ़ी वायु जमा होगई होगी और इस से मासिक धर्म न होता होगा, तो पेड़ू फूला रहेगा और सम्भोग के समय पेशाब की जगह से आवाज़ के साथ हवा निकलेगी ।

उपाय—वायु नाशक दवा दो । पेड़ू पर बारे लगाओ । रोगन बेदञ्जीर १०॥ माशे माउल असूल में मिलाकर पिलाओ ।

(१०) अगर रहम या गर्भाशय का मुँह सामने से हट गया होगा और इससे रजोधर्म न होता होगा या गर्भ न रहता होगा, तो सम्भोगके समय योनि में दर्द होता होगा ।

(११) जब भग के मुख पर या उसके और गर्भाशय के मुँह के बीचमें अथवा गर्भाशय के मुँह पर कोई चीज़ बढ़कर आड़ी आ जाती है, तब मासिक खून बाहर नहीं आता । हाँ, पुरुष उस स्त्री से मैथुन कर सकता है । अगर योनि के मुँह पर ही कोई चीज़ आड़ी आ जाती है, तब तो लिङ्ग भीतर जा ही नहीं सकता । इस रोग को "रतक" कहते हैं ।

उपाय—बढ़ी हुई चीज को नश्तर से काट डालो और घाव को मरहम से भर दो ।

मासिक धर्म न होने से हानि।

स्त्रीको महीना-महीना रजोधर्म न होनेसे नीचे लिखे रोग हो जाते हैं:—

(१) गर्भाशय का भिंचना।

(२) गर्भाशय और भीतरी अंगों का सूजना।

(३) आमाशय के रोगों का होना। जैसे, भूख न लगना, अजीर्ण, जी मिचलाना, प्यास और आमाशय की जलन।

(४) दिमाग़ी रोगोंका होना। जैसे,—मृगी, सिरदर्द, मालिखोलिया या उन्माद और फालिज वगैरः।

(५) सीने या छाती के रोग होना। जैसे, खाँसी और श्वास का तंग होना।

(६) गुर्दे और जिगर के रोग। जैसे, जलन्धर।

(७) पीठ और गर्दन का दर्द।

(८) आँख, कान और नाक का दर्द।

(९) एक तरह का पित्तज्वर।

डाक्टरी से निदान—कारण।

अंगरेज़ी में रजोधर्मको "ऐमेनोरिया" कहते हैं। डाक्टरी-मत से यह तीन तरह का होता है:—

(१) जिस में खून निकलता ही नहीं।

(२) जिस में कम या ज़ियादा खून निकलता है।

(३) जिसमें रजोधर्म तकलीफ के साथ होता है। इसको "डिसमेनेरिया" कहते हैं।

कारण।

(१) जिस में खून आता ही नहीं, उस के कारण नीचे लिखे अनुसार है :—

(क) बहुत चिन्ता या फिक्र करना ।

(ख) चोट लगना ।

(ग) ज्वर या कोई और बड़ा रोग होना ।

(घ) सर्दी लगना या गला रह जाना ।

(ङ) क्षय-कास होना ।

(च) बहुत दिनों बाद पति-संग करने से दो तीन महीने को रज गिरना बन्द हो जाना ।

(२) जिस में कम या ज़ियादा खून गिरता है, उसके कारण ये हैं :—

(क) जिस स्त्री के ज़ियादा औलाद होती है और जो बहुत दिनों तक दूध पिलाती रहती है, उसके अधिक खून गिरता है। इस रोग में कमज़ोरी, थकान, आलस्य, कमर और पेड़ू में दर्द और मुँह का फीकापन होता है।

(३) जिस में रजोधर्म कष्ट से होता है, उस में ऋतुकाल के ३।४ दिन पहले, पीठ के बाँसे में दर्द होता है, आलस्य बेचैनी और वेदना,—ये लक्षण नज़र आते हैं।

मासिक धर्म पर होमियोपैथी का मत ।

होमियोपैथी वालोंने मासिक धर्म बन्द हो जाने के नीचे लिखे कारण लिखे हैं:—

(१) गर्भ रहना ।

(२) बहुत रजःस्राव होना ।

(३) नये पुराने रोग ।

(४) अधिक मैथुन ।

(५) ऋतुकालमें गीले वस्त्र पहनना ।

(६) बर्फ खाना या और कोई शीतल आहार विहार-करना ।

(६) अत्यधिक चिन्ता ।

इसके सिवा २।३ मास तक ठीक ऋतुधर्म होकर, फिर दो एक दिन चढ़-उतर कर होता है। इसका कारण—कमज़ोरी और आलस्य है। एक प्रकार के रजोधर्म में थोड़ा या बहुत खून तो गिरता है, पर माथे में दर्द, गालों पर लाली, हृदय काँपना और पेट भारी रहना,—ये लक्षण होते हैं। इस में रजोधर्म होते समय तकलीफ होती है और यह तकलीफ रजोधर्म के चार-पाँच दिन पहले से शुरू होती है और रजोधर्म होते ही बन्द हो जाती है। इसका कारण कोष्टबद्ध या कब्ज़ है।

एक कृत्रिम या बनावटी ऋतु भी होती है। इसमें रज गिरती या थोड़ी गिरती है। लार के साथ खून आता है। खून की क़य होतीं और योनि से सफ़ेद पानी निकलता अथवा रज के एवज़ में कोई दूसरा पदार्थ निकलता है।

शुद्ध आर्त्तव के लक्षण।

"वङ्गसेन" में लिखा है—जो आर्त्तव महीने-महीने निकले; जिस में चिकनापन, दाह और शूल न हों, जो पाँच दिनों तक निकलता रहे, न बहुत निकले और न थोड़ा———ऐसा आर्त्तव शुद्ध होता है।

जो आर्त्तव खरगोश के खून के समान लाल हो एवं लाख के रस के जैसा हो और जिस में सना हुआ कपड़ा जल में धोने से बेदाग़ हो जाय, उसको शुद्ध आर्त्तव कहते हैं।

मासिक धर्म जारी करने वाले नुसखे

(१) काले तिल ३ माशे, त्रिकुटा ३ माशे और भारङ्गी ३ माशे—इन सबका काढ़ा बनाकर, उस में गुड़ या लाल शक्कर मिला कर, रोज़, सवेरे-शाम, पीने से मासिक धर्म होने लगता है।

नोट—अगर शरीर में खून कम हो, तो पहले द्राक्षावलेह, माषादि मोदक, दूध, घी, मिश्री, मलाई का हलवा प्रभृति ताकतवर और खून बढ़ाने वाले पदार्थ खिला कर, तब उपर का काढ़ा पिलाने से जल्दी रजोधर्म होता है। ऐसी रोगिणी को उड़द, दूध, दही और गुड़ प्रभृति हित हैं। इनका जियादा खाना अच्छा। रूखे पदार्थ न खाने चाहिये। यह नं० १ नुसखा परीक्षित है।

(२) माल-काँगनी, राई, * विजयसार-लकड़ी और दूधिया-बच—इन चारों को बराबर-बराबर लेकर और कूट-पीस कर कपड़े में छान लो। इस की मात्रा ३ माशे की है। समय—सवेरे-शाम है। अनुपान—शीतल जल या शीतल—कच्चा दूध है।

नोट—भावप्रकाश में "शीतेन पयसा" लिखा है। इसका अर्थ शीतल जल और शीतल दूध दोनों ही है। पर हमने बहुधा शीतल जल से सेवन करा कर लाभ उठाया है। याद रखो, गरम मिजाज वाली स्त्री को यह चूर्ण फायदा नहीं करता। गरम मिजाज की स्त्री को खून बढ़ाने वाले दूध, घी, मिश्री या अनार प्रभृति खिला कर खून बढ़ाना और योनि में नीचे लिखी नं० ३ की बत्ती रखनी चाहिये। मासिकधर्म न होनेवालीको मछली, काले तिल, उड़द और सिरका प्रभृति हितकारी हैं। गरम प्रकृति होने से माहवारी खून सूख जाता है, तब वह स्त्री दुबली हो जाती है, शरीर में गरमी लखाती है एवं खून की कमी के और लक्षण भी दीखते हैं। इस दशा में खून बढ़ाने वाले पदार्थ खिलाकर औरत को पुष्ट करना चाहिये, पीछे मासिक खोलने की चेष्टा करनी चाहिये।

(३) कड़वी तूम्बी के बीज, दन्ती, बड़ी पीपर, पुराना गुड़, मैन-फल, सुराबीज और जवाखार—इन सब को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। फिर इस चूर्ण को "थूहरके दूध" में पीस कर, छोटी अंगुलीके समान बत्तियाँ बनाकर छाया में सुखा लो। इन में से एक बत्ती रोज़ गर्भाशय के मुख या योनि में रखने से मासिक धर्म खुल जाता है। परीक्षित है।

नोट—नं० २ नुसखा खिलाने और इस बत्ती को योनिमें रखने से, ईश्वर की दया से, सात दिनमें ही रजोधर्म होने लगता है। अनेक बार परीक्षा की है। अगर

---

* भावप्रकाश में मालकाँगनी के पत्ते, सज्जीखार विजयसार और बच,—ये चार दवाएँ लिखी हैं।

खून सूख गया हो, तो पहले खून बढ़ाना चाहिये। अनार खिलाना बहुत मुफीद है। शराब खिंच जाने के बाद देग या भभके में जो तलछट नीचे रह जाती है, उसे ही "सुराबीज" कहते हैं, यह कलारी में मिलती है। इस बत्ती में कोई जवाखार लिखते हैं और कोई मुलहटी।

(४) घर में बहुत दिनों की बँधी हुई आम के पत्तों की बन्दनवार को जल में पका कर, उस जल को छान कर, पीने से नष्ट हुआ रजोधर्म फिर होने लगता है।

(५) लाल गुड़हल के फूलों को, काँजी में पीस कर, पीने से रजोदर्शन होने लगता है।

(६) मालकाँगनी के पत्ते भून कर, काँजी के साथ पीस कर पीने से रजोधर्म होता है।

(७) कमल की जड़ को पीस कर खाने से रजोधर्म होता है।

(८) सुराबीज को शीतल जल के साथ पीने से स्त्रियों को रजोधर्म होता है।

(९) जवाखिश-कलौंजी सेवन करने से रजोधर्म जारी होता और दर्द-पेट भी आराम हो जाता है। हैज़ का खून जारी करने, पेशाब लाने और गर्भाशय की पीड़ा आराम करने में यह नुसख़ा उत्तम है। कई बार परीक्षा की है।

(१०) काला ज़ीरा दो तोले, अरण्डी का गूदा आध पाव और सोंठ एक तोला,—सब को जोश देकर पीस लो और पेट पर इस का सुहाता-सुहाता गरम लेप कर दो। कई रोज़ में, इस नुसखे से रजोधर्म होने लगता और नलों का दर्द मिट जाता है।

(११) थोड़ा सा गुड़ लाकर, उस में ज़रा सा घी मिला दो और एक कलछी में रख कर आग पर तपाओ। जब पिघल कर बत्ती बनाने लायक़ हो जाय, उस में ज़रा सा "सूखा बिरौज़ा" भी मिला दो और छोटी अँगुली-समान बत्ती बना लो। इस बत्ती को गर्भाशय के मुँह या धरन में रखने से रजोधर्म या हैज़ खुल कर होता है।

(१२) मालकाँगनीके पत्ते और विजयासार लकड़ी,—इन दोनों को दूध में पीस-छान कर पीने से रुका हुआ मासिक फिर खुल जाता है ।

(१३) काले तिल, सोंठ, मिर्च, पीपर, भारङ्गी और गुड़—सब दवाएँ समान-समान भाग लेकर, दो तोले का काढ़ा बनाकर; बीस दिन तक पिया जाय, तो निश्चय ही रुका हुआ मासिक खुल जाय एवं रोग नाश होकर पुत्र पैदा हो ।

(१४) योगराज गुग्गुल सेवन करने से भी शुक्र और आर्त्तव के दोष नष्ट हो जाते हैं ।

(१५) अगर मासिक धर्म ठीक समय से आगे-पीछे होता हो, तो ख़राबी समझो । इस से कमज़ोरी बहुत होती है । इस हालत में छातियों के नीचे "सींगी" लगवाना मुफीद है ।

(१६) कपास के पत्ते और फूल आध पाव लाकर, एक हाँडी में एक सेर पानी के साथ जोश दो । जब तीन पाव पानी जल कर एक पाव जल रह जाय, उसमें चार तोले "गुड़" मिला कर छान लो और पीओ । इस तरह करने से मासिक धर्म होने लगेगा ।

(१७) नीम की छाल २ तोले और सोंठ ४ माशे; इन को कूट-छान कर, २ तोले पुराना गुड़ मिलाकर, हाँड़ी में, पाव-डेढ़ पाव पानी डाल कर, मन्दाग्नि से जोश दो ; जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो और पीओ । इस नुसखे के कई दिन पीने से खून-हैज़ या रजोधर्म जारी होगा । परीक्षित है ।

(१८) काले तिल और गोखरू दोनों तोले-तोले भर लेकर, रात को हाँडी में जल डाल कर भिगो दो । सवेरे ही मल कर शीरा निकाल लो । उस शीरे में २ तोले शक्कर मिला कर पी लो । इस नुसख़े के लगातार सेवन करने से ख़ून-हैज़ जारी हो जायगा ; यानी बन्द हुआ आर्त्तव बहने लगेगा । परीक्षित है ।

(१९) मूली के बीज, गाजर के बीज और मेथी के बीज—इन

तीनों को छटाँक-छटाँक भर लाकर, कूट-पीस और छान कर रख लो। इस चूर्ण में से हथेली-भर चूर्ण फाँक कर, ऊपर से गरम जल पीने से खून-हैज़ जारी हो जाता; यानी रजोधर्म होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे को तीन चार दिन लेनेसे-खून हैज़ जारी होता और रहा हुआ गर्भ भी गिर जाता है। परीक्षित है।

(२०) काँडवेल को गरम राख या भूभल में भून कर, उसका दो तोले रस निकाल लो और उस में उतना ही घी तथा एक तोले "गोपीचन्दन का चूर्ण" एवं एक तोले "मिश्री" मिलाकर पीओ। इस से औरतों के रज-सम्बन्धी सभी दोष दूर हो जाते हैं। परीक्षित है।

(२१) बिनौले के तेल में—एक या दो माशे इलायची, ज़ीरा, हल्दी और सेंधानोन मिलाकर, छोटी अँगुली के बराबर बत्ती या गोली बनाकर, महीन कपड़ेमें उसे लपेट कर, चौथे दिनसे स्त्री उस पोटली को योनि में बराबर रखेगी, तो नष्टपुष्प या नष्टार्त्तव फिरसे जी जायगा, रजोधर्म होने लगेगा। रजोधर्म ठीक समय पर न होता होगा, कम-अधिक दिनोंमें—महीनेसे चढ़-उतर कर होता होगा, तो ठीक समय पर खुल कर होने लगेगा। परीक्षित है।

(२२) खिरनी के बीजों की मींगी निकाल कर सिल पर पीस लो। फिर एक महीन वस्त्र में रख कर, उस पोटली को स्त्री की योनि में कई दिन तक रखाओ। पोटली रोज़ ताज़ा बनाई जाय। इस पोटली से ऋतु की प्राप्ति होगी, यानी बन्द हुआ मासिक धर्म फिर से होने लगेगा। परीक्षित है।

(२३) खीरेतीके फलोंका चूर्ण "नारियलके स्वरस" में मिलाकर, एक या तीन दिन देने से ही रजोधर्म होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—खीरेती नाम मरहटी है। संस्कृत में इसी "फल्गु" कहते हैं। यह पेड़ बहुत होता है। इसके पत्तों पर आरी के से दाँते होते हैं। कोंकन देश में इसके पत्तोंसे लकड़ी साफ करते हैं, क्योंकि इनसे लकड़ी चिकनी हो जाती है। कटुंबर के फल और पत्ते-जैसे ही खीरेती के फल और पत्ते होते हैं।

(२४) गाजर के बीज सिल पर पीस कर, पानी में छान लो और स्त्री को पिलाओ। इस नुसखे से बन्द हुआ मासिक होने लगेगा। परीक्षित है।

(२५) तितलौकी, साँपकी काँचली, घोषालता, सरसों और कड़वा तेल--इन पाँचों को आग पर डाल-डाल कर, योनि में धूनी देने से, उचित समय पर रजोदर्शन होने लगता है। परीक्षित है।

नोट—अंगुली में बाल लपेट कर गर्भमें घिसने से भी अनेक बार रजोदर्शन होते देखा गया है।

(२६) जिन स्त्रियों का पुष्प जवानी में ही नष्ट हो जाय—रजोधर्म बन्द हो जाय—उन्हें चाहिये कि "इन्द्रायण की जड़" को सिल पर जल के साथ पीस कर, छोटी अँगुली-समान बत्ती बनालें और उस बत्ती को योनि या गर्भाशय के मुख में रखें। इस नुसखे से कई दिन में खुल कर रजोधर्म होने लगेगा। परीक्षित है।

नोट—(१) इस योग से विधवाओं का रहा हुआ गर्भ भी गिर जाता है। इस काम के लिये यह नुसखा परमोत्तम है। "वैद्यजीवन" में लिखा है—

सूलगवाद्याः स्मरमन्दिरस्थं, पुष्पावरोधस्य वधं करोति।
अभर्तृकानां व्यभिचारिणीनां, योगो यमेव द्रुत गर्भपाते॥

नोट—(२) इन्द्रायण दो तरह की होती हैं—(१) बड़ी और दूसरी छोटी। यह जियादातर खारी जमीन या कैरों में पैदा होती है। इसके पत्ते लम्बे-लम्बे और बीच में कटे से होते हैं और फूल पीले रंग के पाँच पंखड़ी के होते हैं। इस के फल छोटे-छोटे काँटेदार, लाल रंग की छोटी नारंगी के जैसे सुन्दर होते हैं। इस के बीच में बीज बहुत होते हैं।

दूसरी इन्द्रायण रेतीली जमीन में होती है। उसका फल पीले रंग का और फूल सफेद होता है। दवा के काम में उस के फल का गूदा लिया जाता है। उस की मात्रा ६ रत्ती से दो माशे तक है। उस के प्रतिनिधि या बदल इल्वन्द, रसौत और निशोथ हैं। इन्द्रायण को बंगला में राखालशशा, मरहटी में लघु इन्द्रावण या लघुकवंडल, गुजराती में इन्द्रवारणां और अँगरेजी में Colocynth कॉलोसिन्थ कहते हैं। बड़ी इन्द्रायण को बंगला

में बड़वाकाल, मरहटी में थोर इन्द्रावण, गुजराती में मोटो इन्द्रायण और अङ्गरेजी में Bitter apple बिटर एपिल कहते हैं ।

(२६) भारंगी, सोंठ, काले तिल और घी—इन चारों को कूट-पीस कर मिला लो। इस के लगातार पीने से बन्द हुआ रजोधर्म निश्चय ही जारी हो जाता है। यह नुसखा "वैद्य सर्वस्व" का है। बहुत उत्तम है। लिखा है—

भार्ङ्गीशुंठी तिल घृतं नष्टपुष्पवती पिबेत् ।

(२७) गुड़ के साथ काले तिलोंका काढ़ा बनाकर और शीतल करके छान लो। इस नुसखे को कई दिन बराबर पीने से बहुत समय से बन्द हुआ रजोधर्म फिर होने लगता है। "वैद्यरत्न" में लिखा है:—

सगुड़ः श्यामतिलानांक्वाथः पीतः सुशीतलोः नार्य्यः।
जनयति कुसुमं सहसागतमपि सचिरं निरातंकम् ॥

गुड़ के साथ काले तिलों का काढ़ा बना और शीतल करक पीने से, बहुत काल से रजोवती न होनेवाली नारी भी रजोवती होती है।

(२८) भारङ्गी, सोंठ, बड़ी पीपर, कालीमिर्च और काले तिल-इन सब को मिलाकर दो तोले लाओ और पाव भर पानी के साथ हाँडी में औटाओ। जब चौथाई जल रह जाय, उतार कर छान लो और पीओ। इस नुसखे से रुका या अटका हुआ आर्त्तव फिर जारी हो जाता है; यानी खुलासा रजोधर्म होता है। परीक्षित है।

वैद्यवर विद्यापति कहते हैं:—

भार्ङ्गीव्योषयुतः क्काथस्तिलजः पुष्परोधहा ॥

(२९) वही वैद्यवर विद्यापति लिखते हैं—

रामठं च कणा तुम्बीबीजं क्षार समन्वितम्।
दन्ती सेहुण्डदुग्धाभ्यां वर्त्तिं कृत्वा भगे न्यसेत्।
पुष्पावरोधाय नारीगर्भायमुत्तमम् ॥

हींग, पीपल, कड़वी तूम्बी के बीज, जवाखार और दन्ती की जड़—इन सब को महीन पीस-छान कर, इनके चूर्ण में "सेंहुड़ का

दूध" मिलाकर, छोटी अँगुली-जितनी बत्तियाँ बनाकर, छाया में सुखा लो। इन बत्तियोंमें से एक बत्ती रोज़ योनि में रखने से रुका हुआ मासिक धर्म फिर होने लगता है।

(३०) जुन्देबेदस्तर ... ... १॥ माशे
नीले सौसन की जड़... ... ८ माशे
पोदीने का पानी या अर्क़ ... २ गिलास
शहद ... ... ३१॥ माशे

इन सब को मिला कर रख लो। यह दो खूराक दवा है। इस दवा के दो बार पिलाने से ही ईश्वर-कृपा से अनेक बार रज बहने लगता है।

(३१) लाल लोबिया ... ... १०॥ माशे
मेथी दाने ... ... १०॥ „
रूमी सौंफ ... ... १०॥ „
मँजीठ (अधकुचली)... ... ... १४ „

इन चारों चीज़ों को एक प्याले भर पानी में औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, मल-छान लो और इस में पैंतालीस माशे "सिकंजबीन" मिला कर गुनगुना करो और पिला दो। साथ ही, नीचे लिखी दवा योनि में भी रखाओः—

बूल ... ... १४ माशे
पोदीना ... ... १४ „
देवदारु ... ... २८ „
तुतली ... ... ३५ „
मुनक्का (बीज निकाले हुए)... ७० „

इन सब को कूट-पीस और छान कर, "बैल के पित्ते" में मिलाओ। पीछे इसे स्त्री की योनि में रखवा दो। "तिब्बे अकबरी" वाला लिखता है, इस दवा से सात साल का बन्द हुआ खून-हैज़ भी जारी हो जाता है, यानी सात बरस से रजोवती न होने वाली नारी फिर

रजोवती होने लगती है। पाठक इस नुसखे को ज़रूर आज़मावें। विचार से यह नुसख़ा उत्तम मालूम होता है।

(३२) कुर्स मुरमकी एक यूनानी दवा है। इसको महीने में ३ बार, हर दसवें दिन, खाने से रज बहने लगता है। अच्छी दवा है।

नोट—तज, कलौंजी, हुरमुल, जुन्देबेदस्तर, वायविडंग, बाबूना, मीठा कूट, कबाबचीनी, हंसराज, ऊद, कुर्समुरमुकी, अजवायन, केशर, तगर, सूखा जूफा, करफस, दोनों मस्ले, चनों का पानी, अमलताश के छिलके, मोथा और तूरमूस प्रभृति दवाएँ हैज का खून या रजोधर्म जारी करने को हिकमत में अच्छी समझी जाती हैं।

(३३) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—साफनकी फस्द, ऋतुके दिनों के पहले, खोलने से मासिक धर्म का खून जारी हो जाता है।

(३४) तोख्मा, सुर्ख मँजीठ, मेथी के बीज, गाजर के बीज, सोये के बीज, मूली के बीज, अजवायन, सौंफ, तितली की पत्तियाँ और गुड़—सब को बराबर-बराबर लेकर, हाँडी में काढ़ा पकाओ। पक जाने पर मल-छान कर स्त्री को पिलाओ। इस योग से निश्चय ही रुका हुआ रज जारी हो जाता और गर्भ भी गिर पड़ता है। परीक्षित है।

(३५) अखरोट की छाल, मूली के बीज, अमलतास के छिलके, परसियावसान और वायविडंग, इन में से हरेक जौकुट करके नौ-नौ माशे लो और गुड़ सब से दूना लो। पीछे इसे औटाकर औरत को पिलाओ। इस से गर्भ गिरता और खून हैज़ जारी होता है।

नोट—अनेक हकीम इस नुसखे में कलौंजी और कपास की छाल भी मिलाते हैं। यह नुसखा हमारा आजमूदा नहीं; पर इस की सभी दवाएँ रजोधर्म कराने और गर्भ गिराने के लिये उत्तम हैं। इसलिये पाठक परीक्षा जरूर करें। उन की मिहनत व्यर्थ न जायगी।

(३६) अगर ऋतु होने के समय स्त्री की कमरमें दर्द होता हो, तो सोंठ ५ माशे, वायविडंग ५ माशे और गुड़ ४० माशे—इन सब को औटाकर स्त्री को पिलाओ। अवश्य आराम हो जायगा।

वन्ध्या-चिकित्सा

बाँझ स्त्रीका इलाज।

गर्भ रहने के लिए शुद्ध रज-वीर्य की जरूरत।

हम पहले लिख आये हैं कि स्त्री की रज, गर्भाशय और पुरुष का वीर्य—इन सबके शुद्ध और निर्दोष होने से ही गर्भ रहता है। अगर स्त्री को किसी प्रकार का योनि-रोग होता है, उसका मासिक-धर्म बन्द हो जाता है अथवा योनि में कोई और तकलीफ होती है तथा स्त्री के योनि-फूल में सात प्रकारके दोषों में से कोई दोष होता है या प्रदर रोग होता है; तो गर्भ नहीं रहता। इसलिये स्त्री के योनि-रोग, आर्त्तव रोग, योनिफूल-दोष और प्रदर रोग प्रभृति को आराम करके, तब गर्भ रहने का ख़याल मन में लाना चाहिये। अव्वल तो इन रोगों की हालत में गर्भ रहता ही नहीं—यदि इनमें से किसी-किसी रोग के रहते हुए गर्भ रह भी जाता है, तो गर्भ असमय में ही गिर जाता है, सन्तान मरी हुई पैदा होती है, होकर मर जाती है अथवा रोगीली और अल्पायु होती है।

इसी तरह अगर पुरुषके वीर्य में कोई दोष होता है, यानी वीर्य निहायत कमज़ोर और पतला होता है, बिना प्रसंगके ही गिर जाता है, रुकावट की शक्ति नहीं होती; तो गर्भ नहीं रहता, चाहे

स्त्री बिल्कुल नीरोग और तन्दुरुस्त ही क्यों न हो। गर्भ रहने के लिये जिस तरह स्त्री का निरोग रहना ज़रूरी है, उसके रज प्रभृति का शुद्ध रहना आवश्यक है; उसी तरह पुरुष के वीर्य का निर्दोष, गाढ़ा और पुष्ट होना परमावश्यक है। जो लोग आयुर्वेद या हिकमत के ग्रन्थ नहीं देखते, वे समझते हैं कि बाँझ होने के दोष स्त्रियों में ही होते हैं, मर्दों में नहीं। इसी से वे लोग और घरकी बड़ी-बूढ़ी बच्चा न होने पर, गर्भ-स्थिति न होने पर, बहुओं के लिये गण्डे-तावीज़ और दवाओं की फिक्र करती हैं, अनेक तरह के कुवचन सुनाती हैं, ताने मारती हैं और सवेरे ही उन के मुख देखने में भी पाप समझती हैं; पर अपने सपूतों के वीर्य की ओर उनका ध्यान नहीं जाता। पुरुष के वीर्यमें दोष रहने से, स्त्री के गर्भ रहने-योग्य होने पर भी, गर्भ नहीं रहता। हमने अनेक स्त्री-पुरुषोंके रज और वीर्यकी परीक्षा करके, उन में अगर दोष पाया तो दोष मिटाकर, गर्भोत्पादक औषधियाँ खिलाईं और ठीक फल पाया; यानी उनके सन्तानें हुईं। अतः वैद्य जब किसी बाँझ का इलाज करे, तब उसे उसके पुरुष की भी परीक्षा करनी चाहिये। देखना चाहिये, कि पुरुष महाशय में तो बाँझपन का दोष नहीं है। "बंगसेन" में लिखा है :—

एवं योनिषु शुद्धासु गर्भं विन्दन्ति योषितः।
अदुष्टे प्राकृते बीजे बीजोपक्रमणे सति॥

इस तरह "फलघृत" प्रभृति योनि-दोष नाशक औषधियों से शुद्ध की हुई योनि वाली स्त्री गर्भ को धारण करती है—गर्भवती होती है; किन्तु पुरुषके बीज के दूषित न होने—स्वभाव से ही शुद्ध होने या दवाओं से शुद्ध करलेने पर। इसका खुलासा वही है, जो हम ऊपर लिख आये हैं। स्त्री को आप योनि-रोग वगैरः से मुक्त करलें; पर अगर पुरुष के बीज में दोष होगा, तो स्त्री गर्भवती न होगी—गर्भ न रहेगा। इस से साफ़ प्रमाणित हो गया कि, गर्भ रहने के लिये स्त्रीकी रज और पुरुषका वीर्य दोनों ही निर्दोष होने चाहियें।

अगर दोनों ही या कोई एक दोषी हो, तो उसी का इलाज करके, रोगमुक्त करके, तब सन्तान होने की दवा देनी चाहिये। दवा देने से पहले, दोनों को परीक्षा करनी चाहिये। परीक्षा से ही रज-वीर्य के दोष मालूम होंगे। नीचे हम परीक्षा करने की चन्द तरकीबें लिखते हैं।

स्त्री-पुरुष के बाँझपने की परीक्षा-विधि ।

पहली परीक्षा ।

"बंगसेन" में लिखा है :—

> बीजस्य प्लवनं न स्यात् यदि मूत्रञ्च फेनिलम् ।
> पुमान्स्याल्लक्षणैरेतेर्विपरीतैस्तु षण्ढकः ॥

जिसका का बीज पानी में डालने से न डूबे और जिसके पेशाब में झाग उठते हों, उसे मर्द समझो। जिसका बीज पानी में डूब जाय और पेशाब में झाग न उठें, उसे नामर्द या नपुंसक समझो।

नोट—"बंगसेन" लिखते हैं, वीर्य जल में न डूबे तो मर्द समझो और डूब जाय तो नामर्द समझो। पर अन्य ग्रन्थकार लिखते हैं,—अगर वीर्य एकबारगी ही पानी के भीतर चला जाय—डूब जाय, तो उसे गर्भाधान करने लायक समझो। हमने परीक्षा करके भी इसी बात को ठीक पाया है। हाँ, पेशाब में झाग उठना बेशक मर्दुमी की निशानी है

"इलाजुल गुर्बा" में लिखा है :—दो मिट्टी से भरे हुए नये गमलों में बाकले या गेहूँ या जौके सात-सात दाने डाल-दो। फिर उन गमलों में स्त्री-पुरुष अलग-अलग सात दिन तक पेशाब करें। जिस के गमले के दाने उग आवें, वह बाँझ नहीं है और जिस के गमले के दाने न उगें, वही बाँझ है।

दूसरी परीक्षा ।

दो प्यालों में पानी भर दो। फिर उन प्यालों में स्त्री-पु

अलग-अलग अपना-अपना वीर्य डालें। जिसका वीर्य पानी में बैठ जाय, वह बाँझ नहीं है—वह गर्भ रखने या धारण करने योग्य है। जिसका वीर्य पानी के ऊपर तैरता रहे—न डूबे, उसी में दोष है।

तीसरी परीक्षा।

स्त्री-पुरुष अलग-अलग दो कद्दू या कद्दूके वृक्षों की जड़ों में पेशाब करें। जिसके पेशाब से वृक्ष सूख जायँ, वही बाँझ है और जिस के मूत्र से वृक्ष न सूखें, वह दुरुस्त है।

चौथी परीक्षा।

मर्दके वीर्य की परीक्षा—फूल-काँसीके कटोरे में गरम पानी भर दो। उस में मर्द अपना वीर्य डाले। अगर वीर्य एक दम से पानी में डूब जाय, तो समझो कि मर्द गर्भाधान करने योग्य है; उसका वीर्य ठीक है। अगर वीर्य पानी पर फैल जाय, तो समझो कि यह गर्भाधान करने योग्य नहीं है। अगर वीर्य न ऊपर रहे न नीचे जाय, किन्तु बीच में जाकर ठहर जाय, तो समझो कि इस वीर्य से गर्भ तो रह जायगा, पर सन्तान होकर मर जायगी—जियेगी नहीं।

स्त्री के रज की परीक्षा—एक मिट्टी के गमले में थोड़े से सोये के पेड़ बो दो। उन वृक्षों की जड़ों में औरत पेशाब करे। अगर पेशाब से वृक्ष मुर्झा जायँ, तो समझो, कि स्त्री का रज निर्दोष नहीं है। अगर वृक्ष न मुर्झावें—जैसे के तैसे बने रहें, तो समझो स्त्री का रज शुद्ध है।

नोट—अगर पुरुष का वीर्य और स्त्री की रज सदोष हों, तो दोनों को वीर्य और रज शुद्ध करनेवाली दवा खिलाकर, वैद्य रज वीर्यको शुद्ध करे और दवा खिला कर फिर परीक्षा करे। अगर दुरुस्त पावे तो गर्भाधान की आज्ञा दे। रज-वीर्य शुद्ध होने की दशा में स्त्री पुरुष अगर मैथुन करेंगे, तो निश्चय ही गर्भ रह जायगा। हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" चौथे भाग में वीर्य को शुद्ध, पुष्ट और बलवान करने वाले अनेक आजमूदा नुसखे लिखे हैं। रज और वीर्य शुद्ध करनेवाली चन्द दवाएं हम यहाँ भी लिखते हैं।

रजशोधक नुसखा ।

बबूल का गोंद	...	...	२ तोले
छोटी इलायची के दाने	...	...	१ "
नागौरी असगन्ध	...	...	५ "
शतावर	...	...	५ "

इन चारों दवाओंको कूट-पीस कर छान लो और रख दो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ४ माशे तक है। एक-एक मात्रा सवेरे-शाम फाँक कर, ऊपर से गाय का धारोष्ण दूध एक पाव पीओ। जब तक आराम न हो जाय या कम से कम ४० दिन तक इस दवाको खाओ। इसके सेवन करने से रज निश्चय ही शुद्ध हो जाती है। परीक्षित है। अपथ्य—मैथुन और गरम पदार्थ।

वीर्यशोधक नसखा ।

सेमरका मूसला ...	...	...		५ तोले
बीजबन्द	...	...	...	५ "
मखाने	...	...	...	५ "
तालमखाना	...	...	...	५ "
सफेद मूसली	...	...	...	५ "
गुलसकरी	...	...	...	५ "
कामराज	...	...	...	५ "

इन सबको कूट-पीस कर कपड़े में छान कर रख लो। मात्रा ६ माशे की है। सन्ध्या-सवेरे एक-एक मात्रा फाँककर, ऊपर से मिश्री-मिला गायका धारोष्ण दूध पीओ। कम-से-कम ४० दिन तक इस चूर्णको खाओ। अपथ्य—मैथुन, तेल, मिर्च, खटाई वगैरः गरम पदार्थ। परीक्षित है।

बाँझों के भेद ।

योनिरोग अथवा नष्टार्त्तव प्रभृति बाँझ होने के कारण हैं, पर इनके

सिवा, गर्भाशयके और दोषों से भी स्त्री बाँझ हो जाती है। "दत्तात्रयी" नामक ग्रन्थ में लिखा है:—बाँझ तीन तरह की होती हैं:—

(१) जन्म-वन्ध्या।

(२) मृत वन्ध्या।

(३) काक वन्ध्या।

"जन्म-वन्ध्या" उसे कहते हैं, जिस के जन्म-भर सन्तान नहीं होती। "मृतवन्ध्या" उसे कहते हैं, जिसके सन्तान तो होती है, पर होकर मर जाती हैं। "काक वन्ध्या" उसे कहते हैं, जिसके एक सन्तान होकर फिर और सन्तान नहीं होती।

बाँझ होने के कारण।

ऊपर लिखी हुई तीनों प्रकार की बाँझ स्त्रियाँ प्रायः फूल में नीचे लिखे छै दोष हो जाने से बाँझ होती हैं:—

(१) फूल या गर्भाशय में हवा भर जाने से।

(२) फूल या गर्भाशय पर मांस बढ़ आने से।

(३) फूल में कीड़े पड़ जाने से।

(४) फूल के वायु-वेग से ठण्ढा हो जाने से।

(५) फूल के जल जाने से।

(६) फूल के उलट जाने से।

कोई-कोई सातवाँ दोष "भूतबाधा" और आठवाँ "कर्मदोष" या पूर्वजन्म के पाप भी मानते हैं।

फूलमें दोष होने के कारण।

फूल में दोष हो जाने के कारण तो बहुत हैं, पर मुख्य-मुख्य कारण ये हैं:—

(१) बचपन की शादी।

(२) छोटी स्त्री की बड़े मर्द से शादी।

(३) स्त्री पुरुष में मुहब्बत न होना ।

(४) असमय में मैथुन करना ।

फूलमें क्या दोष है, उसकी परीक्षा-विधि ।

फूल में क्या दोष हुआ है, इस को वैद्य स्त्री के पति-द्वारा ही जान सकता है । वैद्य नाड़ी पकड़ कर जान लेय, ऐसा उपाय नहीं। स्त्री जब चौथे दिन ऋतुस्नान करले, तब पति मैथुन करे। मैथुन करने के बाद, तत्काल ही अपनी स्त्री से पूछे, तुम्हारा कौन सा अंग दर्द करता है । अगर स्त्री कहे,—कमर में दर्द होता है, तो समझो, फूल पर मांस बढ़ गया है । अगर वह कहे,—शरीर काँपता है, तो समझो, फूल में वायु भर गया है। अगर कहे,—पिंडलियों में पीड़ा होती है, तो समझो फूल में कीड़े पड़ गये हैं। अगर कहे,—छाती में दर्द है, तो समझो, फूल वायुवेग से शीतल हो गया है। अगर कहे,—सिर में दर्द जान पड़ता है, तो समझो, फूल जल गया है । अगर जाँघों में दर्द कहे,—तो समझो, कि फूल उलट गया है । इस को खुलासा यों समझिये :—

(१) शरीर काँपना = फूल में वायु भर गया है ।

(२) कमर में दर्द = फूल पर मांस बढ़ा है ।

(३) पिंडलियों में दर्द = फूल में कीड़े पड़ गये हैं ।

(४) छाती में दर्द = फूल शीतल हो गया है ।

(५) सिर में दर्द = फूल जल गया है ।

(६) जाँघों में दर्द = फूल उलट गया है ।

फूल-दोष की चिकित्सा ।

(१) अगर फूल में वायु भर गया हो, तो ज़रासी हींग को काली तिली के तेल में पीसकर, उस में रूई का फाहा भिगोकर,

तीन दिनों तक योनि में रखो। हर रोज़ ताज़ा दवा पीस लो। ईश्वर-इच्छा से, तीन दिन में यह दोष नष्ट हो जायगा।

(२) अगर फूल में मांस बढ़ गया हो, तो काला ज़ीरा, हाथी का नाख़ून और अरण्डी का तेल—इन तीनों को महीन पीस कर, पिसी हुई दवा में रूई का फाहा तर करके, तीन दिन तक, योनि में रखो और चौथे दिन मैथुन करो।

(३) अगर फूल में कीड़े पड़ गये हों, तो हरड़, बहेड़ा और कायफल—तीनों को साबुन के पानी के साथ, सिल पर महीन पीस लो। फिर उस में रूई का फाहा भिगोकर, तीन दिन तक, योनि में रखो। इस उपाय से गर्भाशय के कीड़े नाश हो जाएँगे।

(४) अगर फूल शीतल हो गया हो; तो बच, कालाज़ीरा और असगन्ध;—तीनों को सुहागे के पानी में पीस लो। फिर उस में रूई का फाहा तर कर के, तीन दिन तक, योनि में रखो। इस तरह फूल की शीतलता नष्ट हो जायगी।

(५) अगर फूल जल गया हो; तो समन्दरफल, सेंधानोन और ज़रा सा लहसन,—तीनों को महीन कर के, रूई के फाहे में लपेट कर, योनि में रखने से आराम हो जाता है।

नोट—अगर इस दवा से जलन होने लगे, तो फाहे को निकालकर फेंक दो। फिर दूसरे दिन उसी तरह फाहा रखो। बस, तीन दिन में काम हो जायगा। इसे ऋतुकाल के पहले दिन से तीसरे दिन तक योनि में रखना चाहिये; चौथे दिन मैथुन करना चाहिये। अगर इसी दोष से गर्भ न रहता होगा, तो अवश्य गर्भ रह जायगा।

(६) अगर फूल या गर्भाशय उलट गया हो, तो कस्तूरी और केशर समान-समान लेकर, पानी के साथ पीसकर गोली बना लो। उस गोली को ऋतु के पहले दिन भग में रखो। इस तरह तीन दिन करने से अवश्य गर्भाशय ठीक हो जायगा। चौथे दिन स्नान करके मैथुन करना चाहिये। ये छहों उपाय परीक्षित हैं।

हिकमत से बाँझ होने के कारण ।

जिस तरह ऊपर हमने वैद्यक-ग्रन्थों के मत से लिखा है कि, गर्भाशय में छै तरह के दोष होने से स्त्रियाँ बाँझ हो जाती हैं; उसी तरह हिकमत के ग्रन्थ "तिब्बे अकबरी" में बाँझ होने के तेरह कारण, दोष या भेद लिखे हैं। उन में से कितने ही हमारे छै दोषों के अन्दर आजाते हैं और चन्द नये भी हैं। उन सब के जान लेने से वैद्य की जानकारी बढ़ेगी और उसे बाँझ के इलाज में सुभीता होगा, इसलिये हम उन को विस्तार से लिखते हैं। अगर वैद्य लोग या अन्य सज्जन हरेक बात को अच्छी तरह समझेंगे, तो उन्हें अवश्य सफलता होगी। "बन्ध्या-चिकित्सा" के लिये उन्हें और ग्रन्थ न देखने होंगी।

(१) गर्भाशय में शीतका पैदा होकर, वीर्य और खून को जमा कर सुखा देना।

(२) गर्भाशय में गरमी का पैदा होकर, वीर्य को ज़ला कर ख़राब कर देना।

(३) गर्भाशय में खुश्की का पैदा होकर, वीर्य को सुखा देना।

(४) गर्भाशय में तरीका पैदा होकर, गर्भ के ठहरानेवाली ताक़त को कमज़ोर करना।

(५) वात, पित्त या कफ का गर्भाशय में कुपित होकर वीर्य को बिगाड़ देना।

(६) स्त्री का मोटा हो जाना और शरीर तथा गर्भाशय में चरबी का बढ़ जाना।

(७) स्त्री का एक दम से दुर्बल या कमज़ोर होना। इस दशा में रज के ठीक न होने या रज पैदा न होने से बच्चे के शरीर बननेको मसाला नहीं मिलता और उसे भोजन भी नहीं पहुँचता।

(८) बालक के भोजन—रजका स्त्री के शरीर में किसी वजह से बन्द हो जाना।

(९) गर्भाशय में गर्म सूजन, मस्से या निकम्मे घाव होना।

(१०) गर्भाशय में गाढ़ी हवा का पैदा होना, जो वीर्य और बालक को न ठहरने दे।

(११) गर्भाशय में सख्त सूजन, रितक या मस्सा पैदा होना।

(१२) गर्भाशय का मुँह जननेन्द्रिय के सामने से हट जाय। इस वजह से उस में पुरुष का वीर्य न जा सके।

(१३) स्त्री के शरीर या गर्भाशय में कोई रोग न होने पर भी, वीर्य को न ठहरने देनेवाले अन्यान्य कारणों का होना।

ऊपर का खुलासा।

गर्भाशय में सरदी, गरमी, खुश्की और तरी का पैदा होना; वातादिक दोषों का गर्भाशय में कोप करना; स्त्री का अत्यन्त मोटा या दुबला होना; बालकके शरीर-पोषण-योग्य रजका न बनना; गर्भाशय में सूजन, रतक या मस्सा पैदा होना; गाढ़ी हवा का पैदा होना या गर्भाशय में भर जाना और गर्भाशय के मुँह का सामने से हट जाना—ये ही बच्चा न होने या गर्भ न रहने के कारण हैं।

और भी खूलासा।

(१) गर्भाशय में सरदी, गरमी, खुश्की या तरी होना।

(२) गर्भाशय में वात, पित्त और कफ का कोप।

(३) स्त्री का मोटा या अत्यन्त दुबलापना।

(४) स्त्री-शरीर में रज का न बनना।

(५) गर्भाशय में गाढ़ी हवा का होना।

(६) गर्भाशय में सूजन, मस्सा या रतक होना।

(७) गर्भाशय के मुँहका सामने से हट जाना।

इन कारणों से स्त्री बाँझ हो जाती है। उसे हमल नहीं रहता।

तेरहों भेदों के लक्षण और चिकित्सा।

पहला भेद—

कारण—सरदी।

नतीजा—वीर्य और खून जम जाते हैं।

लक्षण—

(१) रजोधर्म देर में हो

(२) खून लाल, पतला और थोड़ा आवे और जल्दी वन्द न हो।

(३) अगर सरदी सारे शरीर में फैल जाय, तो रंग सफ़ेद और छूनेमें शीतल हो। इस के सिवा और भी सरदी के चिह्न हों।

चिकित्सा—

अगर साधारण सरदी का दोषहो, तो गरम दवाओं से ठीक करो। अगर कफ़ का मवाद हो, तो पहले उसे यारजात और हुकनों से निकाल डालो। इस के वाद और उपाय करो:—

(क) दीवाल मुश्क खिलाओ।

(ख) केशर, बालछड़, अकलील-उल-मलिक, तेजपात, पहाड़ी किर्विया, वतख़ की चरवी, मुर्ग़ी की चरवी, अण्डे की ज़र्दी और नारदैन का तेल—इन सबको पीस-कूट कर मिला दो। पीछे एक ऊन का टुकड़ा तर कर के योनि में रख दो।

(ग) रजोधर्म से निपट कर लाल हरताल, दूध, सरू का फल, सलारस, गन्दाविरोजा और हब्बुल गार की धूनी योनि में दो। इन दवाओं को एक मिट्टी के बर्तन में रखकर, ऊपर से जलते कोयले भर दो। इस बरतन पर, वीचमें छेदकी हुई थाली रख दो। थाली के छेद के सामने, पर थालीसे अलग, स्त्री अपनी योनि को रखे, ताकि धूआँ भीतर जाय।

(घ) योनि को इन्द्रायण के काढ़े से धोना लाभदायक है। गर्भस्थान पर घारे लगाना भी उत्तम है।

(ङ) भोजन—उत्तम कलिया, गरम मसाले डाला हुआ तवे पर भूना पक्षियों का मांस—दालचीनी या उटंगन के बीज महीन पीस कर बुरकी हुई मुर्ग़के अधभुने अण्डे की ज़र्दी,—ये सब ऐसी मरीज़ाको मुफ़ीद हैं।

दूसरा भेद—

कारण—गर्भाशय में गरमी।

नतीजा—वीर्य जलकर ख़ाक हो जाता है।

लक्षण—

(१) रज में गरमी, कालापन और गाढ़ापन।

(२) अगर सारे शरीर में गरमी होगी, तो शरीर दुबला और रंग पीला होगा।

(३) बाल ज़ियादा होंगे।

चिकित्सा—

(१) सर्दी पहुँचाने को शर्बत बनफ़शा, शर्बत नीलोफर, शर्बत ख़शख़ाश, शर्बत सेब या शर्बत चन्दन प्रभृति पिलाओ।

(२) मुर्ग़ के बच्चे, हिरन और बकरे का मांस खिलाओ।

(३) घीया या पालक खिलाओ।

(४) अण्डे की ज़र्दी, मुर्ग़ी की चर्बी और बतख़ की चर्बी को बनफ़शा के तेल में मिलाकर स्त्री की योनि में रखवाओ।

(५) जहाँ कहीं पित्त ज़ियादा हो, वहाँसे उसे उचित उपायसे निकालो।

तीसरा भेद—

कारण—गर्भाशय में ख़ुश्की।

नतीजा—वीर्य सूख जाता है।

लक्षण—

(१) रजस्वला हो, पर बहुत कम।

(२) अगर सारे शरीरमें ख़ुश्की हो, तो शरीर दुबला और निर्बल हो। विशेष ख़ुश्की से खाल सूखी सी मालूम हो।

(३) मूत्रस्थान सदा सूखा रहे ।

चिकित्सा—

(१) शर्बत बनफ़शा और शर्बत नीलोफ़र पिलाओ ।

(२) घीया और नीलोफ़र का तेल तथा बतख़ और मुर्ग़की चर्बी मसाने और योनि पर मलो ।

(३) पाढ़ का गूदा, गाय का घी और स्त्री का दूध, इन तीनों को मिलाकर रख लो । फिर इस में कपड़ा सानकर, कपड़े को योनि में रखवाओ ।

चौथा भेद —

कारण—गर्भाशय में तरी ।

नतीजा—गर्भाशय की शक्ति नष्ट हो जाती है । इस से उसमें वीर्य नहीं ठहर सकता ।

लक्षण—

(१) सदा गर्भाशय से तरी बहा करे,

(२) गर्भ ठहरे तो क्षीण हो जाय और बहुधा तीन मास से अधिक न ठहरे ।

चिकित्सा—

(१) तरी निकालने को यारजात खिलाओ ।

(२) इस रोग में वमन कराना मुफीद है ।

(३) सूखे भोजन दो । जैसे, कवाब गरम और सूखे मसाले मिलाकर ।

(४) इन्द्रायण का गूदा, अंजरूत, सोया, तुतरूग, बूल, केशर और अगर,—इन सबको महीन पीसकर शहद में मिला लो । फिर इसमें ऊन का टुकड़ा भर कर योनि में रखो ।

(५) गुलाब के फूल, अजफारुतीब, सातर, बालछड़, सुक और तज,—इनका काढ़ा बनाकर, उस से गर्भाशय में हुक्ना करो ।

पाचवाँ भेद—

कारण—वात, पित्त या कफ ।

नतीजा—गर्भाशय और वीर्य बिगड़ जाते हैं।

लक्षण—

(१) कफ का दोष होने से सफेद तरी, पित्त का दोष होने से पीली और बादी से काली तरी निकलती है।

नोट—यह विषय पहले आ चुका है, पर पाठकों के सुभीते के लिये हमने फिर भी लिख दिया है।

चिकित्सा—

(१) सारा मवाद निकालने को पीने की दवा दो।

(२) गर्भाशय शुद्ध करने को हुकना करो।

छठा भेद—

कारण—मुटाई या मोटा हो जाना

नतीजा—गर्भाशय में चर्बी बढ़ जाय।

लक्षण—

(१) पेट मुनासिब से ऊँचा और बढ़ा हो।

(२) चलने-फिरने से श्वास रुके।

(३) ज़रा भी बादी और मल पेटमें जमा हो जाय, तो बड़ा कष्ट हो।

(४) मूत्र-स्थान या योनिद्वार छोटा हो जाय।

(५) अगर गर्भ रह भी जाय, तो बढ़ कर गिर पड़े।

चिकित्सा—

(१) बदन दुबला करने को फस्द खोलो।

(२) जुलाब दो।

(३) भोजन कम दो।

(४) इतरीफल और कम्मूनी प्रभृति खुश्क चीज़ें खिलाओ।

सातवाँ भेद—

कारण—दुबलापन

नतीजा—स्त्री के ज़ियादा कमज़ोर होने से, बच्चे के अंग बनने को, रज

का मैला फोक न रहे और रज के न बननेसे गर्भगत बालक के लिए भोजन भी न बने।

चिकित्सा—

(१) मोटी करने के लिये दूध, घी एवं अन्य पुष्टिकारक भोजन दो।

(२) खूब आराम कराओ।

(३) बेफिक्र कर दो।

(४) खूब हँसाओ।

(५) खून बढ़ाने वाली दवा दो।

आठवाँ भेद—

कारण—रज का न बनना

नतीजा—रजोधर्म न होना।

चिकित्सा—

(१) रजोधर्म जारी करने वाली दवा दो। इस रोग की दवाएं "नष्टार्त्तव-चिकित्सा" के पृष्ठ ४०३-४११ में लिखी हैं।

नवाँ भेद—

कारण—गर्भाशय में गरम सूजन, कठोरता या निकम्मे घाव।

नतीजा—गर्भ न ठहरे

चिकित्सा—रोगानुसार इलाज करो।

दसवाँ भेद—

कारण—गर्भाशय में गाढ़ी हवा।

नतीजा—वीर्य और बालक गर्भ में न ठहरें।

लक्षण—

(१) पेड़ू सदा फूला रहे।

(२) बादी की चीज़ों से तकलीफ हो।

(३) अगर गर्भ ठहर जाय, तो बढ़ने से पहले गिर पड़े।

(४) मैथुन के समय योनि से हवा की आवाज़ उसी तरह आवे, जैसे गुदा से आती है।

चिकित्सा—

(१) अर्क़ गुलाब और अर्क़ सौंफ तथा गुलकन्द आदि दो।

(२) गिलास लगाओ।

(३) गरम माजून दो।

(४) बादी नाश करनेवाले तेल, लेप और खानेकी दवा दो। वायु बढ़ाने वाले पदार्थों से बचाओ। नीचे की माजून बादी नाश करने को अच्छी है :—

(५) कचूर, दरुनज, जायफल, लौंग, अकाकिया, अजवायन, अजमोद के बीज और सोंठ—ये सात-सात माशे लो। सिरकेमें पड़ा हुआ ज़ीरा १७॥ माशे और जुन्देबेदस्तर १॥। माशे—इन सब को कूट-छान कर, कन्द और शहद में मिला कर, माजून बना लो। मात्रा ४॥ माशे। अनुपान—गुनगुना जल। रोगनाश—बादी।

नोट—दसवाँ भेद बादी का है। इस में कोई भी वायुनाशक दवा समझ कर दे सकते हो। ऊपर की माजून उत्तम है, इसी से लिखी है।

ग्यारहवाँ भेद।

कारण—गर्भाशय में कड़ी सूजन, रितका या रतक अथवा मस्सा।

नतीजा—गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाता है। इस से वीर्य गर्भाशय में नहीं जा सकता। <u>असल बाँझ यही स्त्री है</u>।

चिकित्सा—

(१) इस रोग का इलाज कठिन है। देख-भालकर हाथ डालना चाहिये, ऐसा न हो कि उलटे लेने के देने पड़ जायँ। इस रोग में मांस को गलाने वाली तेज़ दवा काम देती है।

बारहवाँ भेद—

कारण—गर्भस्थान का मुँह सामने से हट जाय।

नतीजा—गर्भाशय में लिंग से निकला हुआ वीर्य न जा सके।

लक्षण—

(१) मैथुन के समय गर्भस्थान में दर्द हो । दाई अँगुली से गर्भाशय को टटोले तो मालूम हो जाय, कि उसका मुँह किस तरफ झुका हुआ है ।

(२) कदाचित मरोड़ी हो और मल मूत्र बन्द हो जायँ ।

नोट—अधिक कूदने-फाँदने, दौड़ने, भारी बोझ उठाने या खींचने प्रभृति कारणों से यह रोग होता है । इस के टेढ़े होने के दो कारण हैं:—(१) रगों का भर जाना और उन में खिंचाव होना, (२) बिना मवाद के रुकावट और सुकड़न होना ।

चिकित्सा—

(१) अगर रगों के भर जाने और खिंचाव से गर्भाशय टेढ़ा हुआ हो, तो पाँवकी मोटी नस की फस्द खोलो ।

(२) अगर बिना मवाद के केवल रुकाव और सूजन से टेढ़ापन हुआ हो तो अंजीर, बाबूना, मेथी, कड़के बीजों की मींगी और अलसी के बीज—इन सब के काढ़े में तिली का तेल मिला कर हुकना करो । बाबूने का तेल, बतख़ और मुर्ग़ी की चरबी मलो ।

(३) शीतल हम्माम और बफारे, गर्भाशय के सिमटने या रुक जाने में लाभदायक हैं ।

(४) अगर गर्भाशय पर तरी गिरने से टेढ़ापन हुआ हो, तो "यारज" दो ।

(५) जब कारण दूर हो जायँ ; केवल टेढ़ापन और झुकाव बाक़ी रह जाय, तब दाई उसे अंगुलीसे सीधा कर दे, जिससे गर्भाशय जननेन्द्रिय के सामने हो जाय । अंगुली लगाने से पहले दाई को तेल, चर्बी या मोम प्रभृति अंगुली में लगा लेना चाहिये, जिस से गर्भाशय को तकलीफ न हो और वह अपनी जगह पर आजाय ।

"दस्तूरुल इलाज" में लिखा है, मवाद निकल जाने के बाद चतुर दाई तिली के तेल में उँगली चिकनी करके हाथ से गर्भाशय को सीधा करे और उसकी रगों को खींचे । इस तरह रोज़ कुछ दिन करने से गर्भाशय का मुँह योनि के सामने हो जायगा । उस दशा में मैथुन करने से गर्भ रह जायगा ।

तेरहवाँ भेद—

(१) स्त्री वीर्य छुटने के बाद शीघ्र ही उठ खड़ी हो तो गर्भ नहीं रहता ।

(२) व्रत-उपवास करने या भूखी रहने से बालक क्षीण हो जाता है ।

(३) गर्भावस्था में मैथुन करने से भी गर्भ गिर जाता है, इस लिये गर्भ की दशामें मैथुन न करना चाहिये, क्योंकि गर्भाशय का स्वभाव, बाहरको होकर या मुँह खोल कर, वीर्य खींचने का है। मैथुन से बच्चा हिल कर भी गिर पड़ता है ।

(४) नहाने की अधिकतासे भी गर्भाशय नर्म हो जाता है; इस लिये बालक फिसल कर निकल जाता है ।

चिकित्सा—जो कारण वीर्यको रोकते, गर्भाशय में उसे नहीं ठहरने देते, गर्भ को क्षीण करते या गिराते हैं, उन से बचनाही इस भेदका इलाज है ।

(१) हाथी-दाँत का बुरादा ४॥ माशे खाने से गर्भ रहता है ।

(२) मैथुन से पहले या उसी समय, हाथी का पेशाब पीने से गर्भ रहता है । यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थों में मिलता है ।

(३) हींग के पेड़ का बीज, जिसे बज्र सीसियालयूस भी कहते हैं, खाने से अवश्य गर्भ रहता है । हकीम अकबर अली साहब इसे अपना आज़मूदा नुसख़ा लिखते हैं ।

(४) सुक, बालछड़, ख़ुसियत्तुस्सालिब (एक प्रकार की जड़), बिलसाँ का तेल, बकायन का तेल और सौसन का तेल—इन सब को पीस-कूट कर मिला लो । फिर इस में एक कपड़ा लहेस कर योनि में रखो । पीछे निकाल कर मैथुन करो । इस से भी गर्भ रह जाता है ।

(५) कायफल को कूट छान कर और बराबर की शक्कर मिलाकर

रख लो। ऋतुस्नान के बाद, तीन दिन तक हथेली-भर खाओ। पथ्य—दूध, भात। पीछे मैथुन करने से गर्भ अवश्य रहेगा।

(६) असगन्ध को कूट-पीस कर छान लो। इस की मात्रा ४॥ से ६ माशे तक है। ऋतु आरंभ होने से पहले इसे सेवन करना चाहिये। पथ्य—दूध-भात।

(७) पियावाँसे की जड़ी सवा दो माशे लेकर, पानी में पीस कर; थोड़े से गायके दूध के साथ पुरुष खावे और तीन दिन तक स्त्री को भी खिलावे, उसके बाद मैथुन करे; अवश्य गर्भ रहेगा

(८) काले धतूरे के फूल पीस कर और शहद-घी में मिलाकर खाने से गर्भ रहता है।

(९) एक समन्दर-फल थोड़े से दही में मिला कर निगल जाने से अवश्य गर्भ रहता है। यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थों में लिखा है।

(१०) करंजवे की गिरी स्त्री के दूध में पीस कर बत्ती बना लो। इस को गर्भाशय में रखने से गर्भ-धारण-शक्ति हो जाती है।

(११) थोड़ी सी सरसों पीस कर, ऋत होने के तीन दिन बाद, शाफा करो। अवश्य गर्भ रहेगा।

(१२) एक हथेली-भर अजवायन कई दिन तक खाने से गर्भ रहता है।

(१३) बाज़ की बीट कपड़े में लगा कर बत्ती सी बना लो और ऋतु से निपट कर भग में रक्खो। बाज़ की बीट में थोड़ा सा शहद मिला कर खाना भी ज़रूरी है इन दोनों उपायों से गर्भ रहता है। यह नुसख़ा अनेक ग्रन्थों में लिखा है। कोई-कोई बिना शहद के भी बाज़ की बीट खाने की राय देते हैं।

(१४) ऋतु के बाद, कबूतर की बीट भग में रखने से गर्भ रहता है।

(१५) असगन्ध, नागकेशर और गोरोचन—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर पीस छान लो। इसे शीतल जल के साथ सेवन करने या खाने से गर्भ रहता है।

(१६) नागकेशर को पीस-छान कर, बछड़ेवाली गाय के दूध के साथ खाने से गर्भ रहता है।

(१७) बिजौरे नीबू के बीज पीस कर, बछड़ेवाली गाय के दूध के साथ खाने से गर्भ रहता है।

(१८) खिरेंटी, खाँड, कांघी, मुलेठी, बड़ के अंकुर और नागकेशर, इनको शहद, दूध और घी में पीस कर पीने से बाँझ के भी पुत्र होता है।

(१९) ऋतुस्नान करके, असगन्ध को दूध में पकाकर और घी डाल कर, सवेरे ही, पीने और रात को भोग करने से गर्भ रह जाता है।

(२०) ऋतुस्नान करनेवाली स्त्री अगर, पुष्य नक्षत्र में उखाड़ी हुई, सफेद कटेहली की जड़ को, कँवारी कन्या के हाथों से दूध में पिस-वाकर पीती है, तो निश्चय ही गर्भ रह जाता है।

(२१) पीले फूल की कटसरैया की जड़, धाय के फूल, वड़ के अंकुर और नीले कमल,—इन सब को दूध में पीसकर पीने से अवश्य गर्भ रह जाता है।

(२२) जो स्त्री ज़ीरे और सफेद फूल के सरफोंके के साथ पारस-पीपल के डोडे को पीस कर पीती और पथ्य से रहती है, वह अवश्य पुत्र जनती है।

(२३) जो गर्भवती स्त्री ढाक के एक पत्ते को दूध में पीस कर पीती है, उस के बलवान पुत्र होता है। कई बार चमत्कार देखा है। परीक्षित है।

(२४) कौंच की जड़ अथवा कैथका गूदा अथवा शिवलिंगी के बीजों को दूध में पीस कर पीने से गर्भवती स्त्री कन्या हरगिज़ नहीं जनती।

(२५) विष्णुकान्ता की जड़ अथवा शिवलिंगी के बीज जो स्त्री पीती है, वह कन्या हरगिज़ नहीं जनती। उस के पुत्र-ही-पुत्र होते हैं।

(२६) दो तोले नागौरी असगन्ध को गाय के दूध के साथ सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। फिर उसे एक क़लईदार कड़ाही या

देगची में रख कर, ऊपर से एक पाव गाय का दूध और एक तोले गाय का घी भी डाल दो और अत्यन्त मन्दी आग से पकाओ। इस के बाद उस दूध को कपड़े में छान लो। इस दूध को स्त्री ऋतुस्नान करके चौथे दिन सवेरे ही पीवे और दूध-भात का भोजन करे, तो अवश्य गर्भ रहे। मैथुन रात को करना चाहिये। यह नुसख़ा शास्त्रोक्त है, पर हमारा परीक्षित है।

(२७) छोटी पीपर, सोंठ, काली मिर्च और नागकेशर,—इनको बराबर-बराबर लाकर पीस-कूट कर छान लो। इस में से ६ माशे चूर्ण गाय के घी में मिलाकर, ऋतुस्नान के चोथे दिन, अगर स्त्री चाट ले और रात को मैथुन करे, तो अवश्य पुत्र हो। चाहे वह बाँझ ही क्यों न हो। परीक्षित है।

नोट—नं० २६ और २७ दोनों नुसखे "भैषज्यरत्नावली" के हैं। कितनी ही स्त्रियाँ को बतलाये, प्रायः सभी को गर्भ रहा। पर यह शर्त्त है कि स्त्री को और कोई रोग जैसे प्रदररोग, योनिरोग, नष्टार्त्तव रोग आदि न हों। हमने अनेक स्त्रियों को प्रदर आदि रोगों से छुड़ा कर ही यह नुसखे सेवन कराये थे। रोग की दशा में गर्भाधान करना तो महा मूर्ख का काम है। "वंगसेन" में लिखा है—

> क्काथेन हयगन्धायाः साधितं सघृतं पयः।
> ऋतुस्नाताऽबला पीत्वा गर्भं धत्ते न संशयः॥
> पिप्पलीशृंगवेरञ्च मरिचं केशरं तथा।
> घृतेनसह पातव्यं बन्ध्यापि लभते सुतम्॥

इसका वही अर्थ है, जो ऊपर लिख आये हैं। कोई असगन्ध को कूट-पीस कर दूध-घी में पकाते हैं। कोई असगन्ध का काढ़ा बनाकर, काढ़े को दूध घी में मिला कर पकाते हैं। जब काढ़ा जल कर दूध मात्र रह जाता है, दूध को छानकर ऋतुस्नान करके उठी हुई स्त्री को पिलाते हैं। दूध और घी बछड़े वाली गाय का लेते हैं।

असगन्ध में गर्भोत्पादक शक्ति बहुत है। इसकी अनेक विधि हैं। हमने नं० ६ और २६ में दो विधि लिखी हैं। अगर स्त्री को योनिरोग प्रभृति न हों, पर जरा बहुत रोग की शंका हो, तो पहले नं० ६ की विधि से ८।१० दिन या २१ दिन असगन्ध खानी चाहिये। फिर ऋतु के चौथे दिन नहा कर, ऊपर की नं० २६ की विधि से

लेकर, रात को मैथुन करना चाहिये। अगर इस तरह काम न हो, तो चौथे-पाँचवें और छठे दिन फिर लेकर तब मैथुन करना चाहिये।

सूचना—नं० २७ नुसखा भी कमजोर नहीं है। कहीं-कहीं इस से बड़ा चमत्कार देखने में आया है। "वैद्यविनोद"-कर्त्ताने इस की जो प्रशंसा लिखी है सच्ची है।

(२८) नागकेशर और सुपारी—इन दोनों को बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस चूर्ण की मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इस के सेवन करने से अनेकों को गर्भ रहा है। परीक्षित है।

(२९) पुत्रजीवक वृक्ष की जड़ दूध में पीस कर पीने से दीर्घायु पुत्र होता है। परीक्षित है।

(३०) पुत्रजीव की जड़ और देवदारु—इन दोनों को दूध में पीस कर पीने से भी बड़ी उम्र पाने वाला पुत्र होता है। पाँच-सात बार परीक्षा की है। परीक्षित है।

(३१) मोथा, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, इन्द्रायण, कूट, पीपर, देवदारु, कमल, काकोली, क्षीर काकोली, त्रिफला, वायविडंग, मेदा, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, रास्ना, प्रियंगू, दन्ती, मुलहटी, अजमोद, वच, चमेली के फूल, दोनों तरह के सारिवा, कायफल, वंशलोचन, मिश्री और हींग—इन में से हरेक दवा को एक-एक तोले लेकर पीस-कूटकर छान लो। फिर उस चूर्ण को सिल पर डाल कर, पानी के साथ पीस कर लुगदी बना लो।

शेषमें यह लुगदी, एक सेर घी और चार से गाय का दूध—इन को अच्छी तरह मथ-मिलाकर, क़लईदार कड़ाहीमें चूल्हे पर रख कर, आरने कण्डों की मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो और रख दो।

अगर मर्द इस घी को चार तोले या दो तोले रोज़ पीवे, तो लगातार कुछ दिन पीने से औरतों में साँड हो जाय। अगर बाँझ पीवे तो पुत्र जनने लगे। जिन स्त्रियों का गर्भ पेट में न बढ़ता हो, जिन के एक सन्तान होकर फिर न हुई हो, जिन के बालक होते ही मर जाते

हों या मरे हुए बच्चे होते हों, उन्हें इस घृत के सेवन करने से रूपवान, बलवान, और आयुष्मान पुत्र होता है। यह "फलघृत" भारद्वाज मुनिने कहा है। परीक्षित है।

नोट—इस नुसखे में उस गायका घी लेना चाहिये, जो एक रंगकी हो और जिस का बछड़ा जीता हो। इसे आरने—जंगली कण्डों की आग से ही पकाना चाहिये। वैद्यविनोद कर्त्ता लिखते हैं, इस में "लक्ष्मणा की जड़" भी जरूर डालनी चाहिये। यद्यपि और भी अनेक दवाओं में पुत्र देने की ताकत है, पर लक्ष्मणा उन सब में सिरमौर है। शास्त्रों में लिखा है —

> कथिता पुत्रदाऽवश्यं लक्ष्मणा मुनिपुंगवैः ।
> लक्ष्मणार्कं तु या सेवेद्वन्ध्यापि लभतेऽसुतम् ॥
> लक्ष्मणा मधुरा शीता स्त्रीवन्ध्यात्व विनाशिनी ।
> रसायनकरी बल्या त्रिदोषशमनी परा ॥

लक्ष्मणा मुनियों ने अवश्य पुत्र देने वाली कही है। लक्ष्मणा के अर्क को अगर बाँझ भी सेवन करती है, तो पुत्र होता है। लक्ष्मणा-कन्द मधुर, शीतल, स्त्री के बाँझपन को नाश करनेवाला, रसायन और बलकारक है।

लक्ष्मणा की बेल पुत्रक के जैसी होती है। इस के पत्तों पर खून की सी लाल-लाल छोटी-छोटी बूँदें होती हैं। इस की आकृति और गन्ध बकरे के समान होती है। लक्ष्मणा, और पुत्रजननी—ये दो लक्ष्मणा के संस्कृत नाम हैं। इन के सिवा और भी बहुत से संस्कृत नाम हैं। जैसे,—नागपत्री, पुत्रदा, पुत्रकन्दा, नागिनी और नागपुत्री वगेरः वगेरः।

एक ग्रन्थ में लिखा है, लक्ष्मणा बहुत कम मिलती है। यह कहीं-कहीं पहाड़ों में मिलती है। इस के पत्ते चौड़े होते हैं। उन पर चन्दन की सी लाल-लाल बूँदें होती हैं। इस के नीचे सफेद रंग का कन्द होता है।

कहते हैं, लक्ष्मणा गया के पहाड़ों पर मिलती है। कोई कहते हैं, हिमालय और उस की शाखाओं पर अवश्य मिलती है। लक्ष्मणा का वृक्ष बनतुलसी के समान लम्बा-चौड़ा और सूरत-शकल में भी वैसा ही होता है। बनतुलसी के पत्तों पर खून की सी बूँदे नहीं होतीं, पर लक्ष्मणा पर छोटी-छोटी खून की सी बूँदें होती हैं।

शरद् ऋतु में, लक्ष्मणा में फल फूल आते हैं। उसी मौसम में यानी क्वार कात्तिक में, शनिवार के दिन, साँझ के समय, स्नान करके, खैर की लकड़ी की चार मेखें उसके चारों ओर गाढ़कर, उसकी धूप दीप आदिसे पूजा करके, वैद्य उसे निमंत्रण दे आवे।

फिर जब पुष्य, हस्त या मूल नक्षत्र में से कोई नक्षत्र आवे, तब मंत्र पढ़ कर उसे उखाड़ लावे और पीछे न देखे। शास्त्रों में लक्ष्मणा लेने की यही विधि लिखी है। महर्षि वाग्भट्ट ने इस मौके की कई बातें अच्छी लिखी हैं:—

वैद्य, पुष्य नक्षत्र में, सोने चाँदी या लोहेका पुतला बनाकर, उसे आगमें तपाकर लाल करले और फिर उसे दूध में बुझा दे। फिर पुतले को निकालकर, उस दूधमें से एक अञ्जलि या आठ तोले दूध स्त्रीको पिला दे। साथ ही गोरदण्ड, अपामार्ग—ओंगा, जीवक, ऋषभक और श्वेतकुरंटा—इन में से एक, दो, तीन या सबको जलमें पीसकर स्त्री को पुष्य नक्षत्र में पिलावे, तो पुत्र की प्राप्ति हो। और भी लिखा है:—

> क्षीरेण श्वेतबृहतीमूलं नासापुटे स्वयम्।
> पुत्रार्थं दक्षिणे सिञ्चेद्वामे दुहितृवाञ्छया॥
> पयसा लक्ष्मणामूलं पुत्रोत्पादस्थितिप्रदम्।
> नासयास्येन वा पीतं वटशृंगाष्टकम् तथा।
> औषधीर्जीवनीयाश्च बाह्यान्तरुपयोजयेत्॥

सफेद कटेहली की जड़ को स्त्री स्वयं ही दूध में पीस कर, पुत्रके लिये नाक के दाहने नथने में और कन्या के लिये बाँयें नथने में सींचे।

पुत्र देने वाली लक्ष्मणा की जड़ को स्त्री दूध में पीस कर नाक से या मुँह से पीवे। इसके सिवा, बड़के अङ्कुर प्रभृति अष्टकों को भी नाक या मुँह द्वारा पीवे एवं जीवनीयगण की दसों दवाओं को स्नान और उबटन के काम में लावे तथा भोजन और पान में भी ले, तो जिसके पुत्र न होता होगा पुत्र होगा और होकर मर जाता होगा तो न मरेगा।

जिसके गर्भ न रहता हो या रहकर गिर जाता हो उसको, यदि किसी उपाय से गर्भ रह जाय, तो वह उसी दिन या तीन दिन के अन्दर लक्ष्मणा की जड़, बड़ की कोंपल, पीले फूल की कंगही अथवा सफेद फूल का बरियारा—इन चारों में से जो मिल जाय उसे, बछड़े वाली गाय के दूध में पीस कर, पुत्र की इच्छा से, अपनी नाक के दाहने छेद में सींचे। अगर कन्या की इच्छा हो, तो बायें नथने में सींचे। अगर दवा नाक में डालने से गलेमें उतर जाय तो हर्ज नहीं, पर उसे भूल कर भी थूकना ठीक नहीं। इन उपायों से गर्भ पुष्ट हो जाता है, गिरने का भय नहीं रहता। पर, जिस गाय का दूध पिया जाय, उसका और बछड़े का रंग एक ही होना चाहिये। परीक्षित है।

बड़का अष्टक, बढ़का फुनगा या कोंपल, पीले फूलकी कंगही या गुलसकरी

अथवा सफेद फूलका बरियारा, सफेद कटेहरी की जड़, ओंगा, जीवक, ऋषभक और लक्ष्मणा ये सभी औषधियाँ बाँझको पुत्र देनेवाली प्रसिद्ध हैं। पर इन सब में "लक्ष्मणा" सबको रानो है। अगर लक्ष्मणा न मिले, तो सफेद फूलकी कटेहली और बड़ की कोंपल प्रभृति से काम अवश्य लेना चाहिये। कटेहली का चमत्कार हमने कई बार देखा है।

गर्भ-पुष्टिकर उपाय उस समयके लिये हैं, जब मालूम हो जाय कि गर्भ रहगया। अनेक चतुरा रमणियाँ तो गर्भ रहने के उसी क्षण कह देती हैं, कि हमें गर्भ रह गया, पर सब में यह सामर्थ्य नहीं होती; अतः हम गर्भ रहने की पहचान नीचे लिखते हैं। गर्भ रहने से स्त्री में ये लक्षण पाये जाते हैं :—

(१) दिल खुश हो जाता है।

(२) शरीर में कुछ भारीपन होता है।

(३) कूख फड़कती है।

(४) गर्भाशय में गया हुआ मर्दका वीर्य बहकर बाहर नहीं आता।

(५) रजोधर्म के चौथे दिन भी जो जरा-जरा खून या भूंदरा-भूंदरा लाल-लाल पानी सा गिरता है, वह नहीं गिरता—बन्द हो जाता है।

(६) कलेजा धक-धक करता है।

(७) प्यास लगती है।

(८) भोजन की इच्छा नहीं होती।

(९) रोएं खड़े होते हैं।

(१०) तन्द्रा या ऊंघाई आती और सुस्ती घेरती है।

नाक में लक्ष्मणा प्रभृति का रस डालना ही पुंसवन कहलाता है। अगर कोई यह कहे, कि जब गर्भ रहेगा, तब होनहार होगा तो, बच्चा होगा ही। पुंसवनसे क्या लाभ ? उस पर महर्षि वाग्भट्ट कहते हैं—

बली पुरुषकारो हि दैवमप्यीतिवर्त्तते ॥

बलवान् पुरुषार्थ दैव या प्रारब्ध को भी उल्लङ्घन करता है। मतलब यह, पुरुषार्थ के आगे प्रारब्ध या तकदीर भी हेच हो जाती है।

हमारा अपना अनुभव ।

हमने जिस स्त्री को किसी योनिरोग से पीड़ित पाया उसे पहले पृष्ठ ४३७ का "फल घृत" सेवन कराकर आरोग्य किया। जब वह योनिरोग से छुटकारा पागई, तब पृष्ठ ४३३ के नं० ३१ का फलघृत सेवन कराया

और साथ ही पुरुष को भी "वृष्यतमघृत" या कोई पुष्टिकर औषधि सेवन कराई। जब देखा, कि दोनों नीरोग हो गये, स्त्री को योनिरोग, प्रदर रोग या आर्त्तव रोग नहीं है और पुरुष तथा स्त्री के वीर्य और रज शुद्ध हैं, तब ऋतुस्नान के चौथे दिन, स्त्री को पृष्ठ ४३१—३२ के नं० २६ या २७ नुसख़ों में से कोई सेवन कराकर, गर्भाधान की सलाह दी। इस तरह हमें १०० में ६० केसों में कामयाबी हुई

योनिरोग नाशक फलघृत।

गिलोय, त्रिफला, रास्ना, हल्दी, दारुहल्दी, शतावर, दोनों तरह के सहचर, स्योनाक, मेदा और सोंठ—इन ग्यारह दवाओं को सिल पर जल के साथ पीसकर लुगदी कर लो। फिर आधसेर घी और दो-सेर दूध तथा लुगदी को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, जंगली कण्डों की मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। यही योनि-रोगनाशक फलघृत है। यह योनिरोग की दशा में रामबाण है। इस घी के पीने से योनि में दर्द होना, उस का अपने स्थान से हट जाना, बाहर निकल आना और मुँह चौड़ा हो जाना प्रभृति कितने ही योनि रोग, पित्त-योनि, विभ्रान्त योनि तथा षण्ढ योनि ये सब आराम होकर गर्भ-धारण की शक्ति हो जाती है। योनि-दोष दूर करने में यह फलघृत परमोत्तम है। परीक्षित है।

वृष्यतमघृत

विधायरा लेकर पीस-कूट कर छान लो और फिर उसे सिल पर पानी के साथ पीस कर लुगदी बना लो। यह लुगदी, गायका घी और गाय का दूध—इन सब को मिलाकर, ऊपर की तरह घी बना लो और उसे सेवन करो। यह घी पुत्र चाहने वाले पुरुषों को परमोत्तम है।

नोट—अगर कोई और दवा खाकर वीर्य पुष्ट और शुद्ध कर लिया हो, तोभी यदि कुछ दिन यह घी सेवन किया जायगा, तो उत्तम पुत्र होगा। इससे हानि नहीं, वरन लाभ ही होगा। परीक्षित है।

(३२) खिरेंटी, कंघी, मिश्री, मुलेठी, दूध, शहद और घी—इन सातों को एक जगह मिलाकर पीने से गर्भ रहता है ।

(३३) लक्ष्मणा की जड़ को, दूध में पीसकर, बत्ती के द्वारा नाक के दाहिने छेद में डालने से पुत्र और बाँएँ छेद में डालने से कन्या होती है ।

(३४) बड़ के अंकुरों को दूध में पीसकर, बत्ती बनाकर, नाक के दाहिने छेद में डालने से पुत्र और बाएं में डालने से कन्या होती है ।

(३४) पुष्य नक्षत्र में सोने का पुतला बना कर, उसे आग में गरम कर के, दूध में बुझाओ । फिर उस दूध में से ३२ तोले दूध स्त्री को पिलाओ । इस उपाय से भी गर्भ रहता है । चक्रदत्त में लिखा है—

> कानकान्राजतान्वापि लौहान्पुरुषकानमून् ।
> ध्यातान्नि वर्णान्पयसो दध्नो वाप्युदकस्य वा ।
> क्षिप्त्वाञ्जलौ पिवेत्पुष्ये गर्भे पुत्रत्वकारकान् ॥

सोने चाँदी या लोहे का सूक्ष्म पुरुष बनाकर, उसे आग में लालकर लो और दूध, दही या पानी की भरी अञ्जलि में डालकर निकाल लो। फिर उस दूध, दही या पानी को औरत को पिला दो । इस से गर्भ में पुत्र होता है । यह काम पुष्य नक्षत्र में करना चाहिये ।

(३५) तिल का तेल, दूध, दही, राब और घी—इन सब को मिला कर मथो और फिर इस में पीपरों का चूर्ण डाल कर स्त्री को पिलाओ । अगर वह बाँझ भी होगी, तोभी गर्भ रहेगा ।

(३६) पुष्य नक्षत्र में लक्ष्मणा की जड़ को उखाड़ कर, कन्या से पिसवाकर, घी और दूध में मिलाकर, ऋतुकाल के अन्त में, पीने से बाँझ के भी पुत्र होता है ।

(३७) पताजिया (जीवक पुत्रक) के बीज, पत्ते और जड़ को दूध के साथ पीस कर पीने से उस स्त्री के भी सन्तान होती है, जिसकी सन्तान हो-होकर मर गई हैं।

(३८) सफेद कटेहली (कटाई) की जड़ को दूध के साथ पीस

कर, दाहिनी ओर के नाक के छेद द्वारा पीने से पुत्र और बाईं ओर के नाक के छेद द्वारा पीने से कन्या होता है। परीक्षित है।

(३६) लक्ष्मणा की जड़ और सुदर्शन की जड़ को कन्या के हाथों से पिसवाकर, घी और दूध में मिलाकर, ऋतुकाल में, पीने से उस बाँझ के भी पुत्र होता है, जिस की सन्तान मर-मर जाती हैं।

(४०) पुष्य नक्षत्र में बड़ के अंकुर, बिजयसार और मूँगे का चूर्ण—एक रंग की बछड़े वाली गाय के दूध के साथ पीने से पुत्र होता है।

(४१) मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरेंटी, सफेद बिलाईकन्द, काकोली, क्षीर काकोली, असगन्ध की जड़, अजवायन, हल्दी, दारूहल्दी, हींग, कुटकी, नील कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन, मिश्री, कमोदिनी और दोनों काकोली,—इन सब को दो-दो तोले लेकर पीस-कूट-छान लो। फिर सिल पर रख, जल के साथ पीस लुगदी बना लो।

फिर गाय का घी ४ सेर, शतावर का रस १६ सेर और बछड़े वाली गाय का दूध १६ सेर तथा ऊपर की दवाओं की लुगदी,—इन सब को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, जंगली कण्डों की मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब शतावर का रस और दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो और वर्तन में रख दो।

यह घी अश्विनी कुमारों का ईजाद किया हुआ है। यह अव्वल दर्जे का ताक़तवर, स्त्रियोंके योनिरोग, और उन्माद—हिस्टीरिया पर रामवाण है। यह स्त्रियों के बाँझपन को निश्चय ही नाश करके पुत्र देता है। हमारा आज़माया हुआ है। इस की प्रशंसा सच्ची है। वंगसेन में लिखा है, इस घी को पीने वाला पुरुष औरतों में बैल के समान आचरण करता है। स्त्री अगर इसे पीती है, तो मेधासम्पन्न प्रियदर्शन पुत्र जनती है। जिन स्त्रियों के गर्भ नहीं रहता, जिन के मरे हुए बालक होते हैं, जिन के बालक होकर थोड़ी उम्र में ही मर जाते हैं, जिन के कन्या-ही-

कन्या पैदा होती हैं, उनके सब दोष दूर होकर उत्तम पुत्र पैदा होता है। इस से योनि-रोग, रजो दोष और योनिस्राव रोग भी आराम होते हैं।

नोट—बङ्गसेन और चक्रदत्त प्रभृति सभीने इस नुसखे में लक्ष्मणा की जड़ और भी मिलाने को लिखा है। इसके मिला देने से इस के गुणों का क्या कहना? इस का नाम "बृहतफलघृत" है।

(४२) वरियारी, मिश्री, गंगेरन, मुलेठी, काकड़ासिंगी और नाग-केशर—इन को बराबर-बराबर लेकर, पीस-छान लो। इस में से एक तोला चूर्ण घी, दूध और शहद में मिलाकर पीने से बाँझ के भी गर्भ रहता है। परीक्षित है।

(४३) मोरशिखा—मयूर शिखा की जड़ अथवा सफेद कटेहली या लक्ष्मणा की जड़ को पुष्य नक्षत्र में लाकर, कँवारी कन्या के हाथों से गाय के दूध में पिसवाकर, ऋतुस्नान कर के पीने से अवश्य गर्भ रहता है।

नोट—मोरशिखा के क्षुप होते हैं। इस पर मोर की चोटी के समान चोटी होती है, इसी से इसे मोरशिखा कहते हैं। दवा के काम में इस का सर्वांश लेते हैं। इस की मात्रा २ माशे की है। फारसी में इसे असलान और लैटिन में सिलो-सिया क्रिसटाय कहते हैं।

(४४) शिवलिंगी के बीज ज़ीरे के साथ मिला कर, ऋतुस्नान के बाद, दूध के साथ पीने से गर्भ रहता है।

नोट—संस्कृत में शिवलिंगी को लिंगिनी, बहुपुत्री, ईश्वरी, शिवमल्लिका, चित्र-फला, और लिंगसम्भूता आदि नाम हैं। बंगला में शिवलिगिनी, मरहटीमें शिव-लिंगी, लैटिन में ब्रायोनिया लेसिनियोसा (Bryonia Laciniosa) कहते हैं। यह स्वाद में चरपरी, गरम और बदबूदार होती है। यह रसायन, सर्वसिद्धि-दाता, वशीकरण और पारे को बाँधने वाली है। इस की बेल चलती है। इसके फल नीले, गोल और बेरके बराबर होते हैं। फलों के ऊपर सफेद चित्र होते हैं, इसी से इसे "चित्रफला" कहते हैं। फलों में से जो बीज निकलते हैं, उन की आकृति शिवलिंग के जैसी होती है। इस के पत्ते अरण्ड के समान होते हैं, पर उन से छोटे होते हैं। शिवलिंगी और शंखिनी के फल एकसे होते हैं; परन्तु

शंखिनी के बीज शंख-जैसे होते हैं, जबकि शिवलिंगी के शिवलिंग-जैसे होते हैं। शंखिनी के फल भी पकने पर लाल हो जाते हैं, पर इन पर शिवलिंगी के फलों की तरह सफेद-सफेद छींटे नहीं होते। शंखिनी का फल कड़वा और दस्तावर होता है, पर शिवलिंगी का चरचरा और रसायन होता है।

(४४) पारस-पीपल के बीज सफेद ज़ीरे के साथ मिलाकर, ऋतु-स्नान के बाद, दूध के साथ पीने से गर्भ रहता है।

नोट—हिन्दी में पारसपीपल, गजदण्ड और गजहुंड कहते हैं। बँगला में गज-शुण्डी, गुजराती में पारशपीपलो और लैटिन में पोपलनिया कहते हैं।

पारस पीपल दुर्जर, चिकना, फल में खट्टा, जड़ में मीठा, कसैला और स्वादिष्ट मींगी वाला होता है। इस का पेड़ भी पीपर के समान ही होता है। पीपल के पेड़ में फूल नहीं होते, पर पारस-पीपर में भिन्डी के जैसे पीले फूल भी होते हैं। इसके फलके डोरे भिंडी के आकार के होते हैं। इसकी मात्रा २ माशे की है।

(४५) वाराहीकन्द, कैथा और शिवलिंगी के बीज—बराबर-बराबर लेकर चूर्ण कर लो। ऋतुस्नान के बाद, दूध के साथ यह चूर्ण खाने से अवश्य गर्भ रहता और पुत्र होता है।

(३६) बिलारीकन्द के साथ "सोना भस्म" खाने से पुत्र होता है।

(४७) काकमाची के अर्क के साथ "सोना भस्म" खाने से गर्भ रहता, रजोधर्म शुद्ध होता और प्रदर रोग नष्ट होता है।

(४८) असगन्ध की जड़ के साथ "चाँदी की भस्म" बच्चेवाली गाय के दूध में पीस कर खाने से बाँझ के भी पुत्र होता है, इस में शक नहीं।

नोट—परीक्षित है। जिस बाँझ को किसी तरह गर्भ न रहता हो, वह इसे ३ दिन सेवन करे, अवश्य गर्भ रहेगा।

(४६) मातुलिंगी के बीजों को बछड़ेवाली गाय के दूध में पीस कर, उस के साथ "चाँदी की भस्म" खाने से बाँझ के भी पुत्र होता है। इस में सन्देह नहीं।

(५०) शिवलिंगी के बीजों के साथ, ऊपर की विधि से, दूध में पीस कर, "चाँदी की भस्म" खाने से अवश्य पुत्र होता है।

(५१) ऋतुस्नान के बाद, नागकेशर को अतिबला के साथ पीस कर, दूध के साथ पीने से अवश्य चिरजीवी पुत्र होता है। परीक्षित है।

(५२) ऋतुस्नान करके चौथे दिन, शिवलिंगी का एक फल निगल लेने से बाँझ के भी पुत्र होता है, इस में शक नहीं। "वैद्यरत्न" में लिखा है:—

शिवलिंगी फलमेकमृत्वन्ते यावला गिलति।
वन्ध्यापि पुत्ररत्नं लभेत सानात्रसंदेहः॥

(५३) "चक्रदत्त" में लिखा है—स्त्री सवेरे ही ब्राह्मणको दान दे और शिव की पूजा करे। फिर सफेद खिरेंटी—बला—की जड़ और मुलहटी दोनों एक-एक तोले लेकर पीस-छान ले और उस में चार तोले चीनी मिला दे। फिर; एक रंग वाली बछड़े सहित गाय के दूध में बहुतसा घी मिलाकर, इसी के साथ उपरोक्त चूर्णको फाँके और दिन-भर अन्न न खाय, अगर भूख लगे तो दूध-भात खाय। अगर वीर्यवान बलवान पुरुष अपनी ही स्त्री में मन लगाकर मैथुन करे, तो निश्चय ही पुत्र हो।

(५४) गोशाला में पैदा हुए बड़ की पूर्व और उत्तर की शाखा लेकर, दो उड़द और दो सफेद सरसों दही में मिलाकर, पुष्य नक्षत्र में, पी जाने से शीघ्रही गर्भ धारण करने वाली स्त्री के पुत्र होता है। चक्रदत्त।

(५५) सफेद सरसों, वच, ब्राह्मी, शंखाहूली, काकड़ासिंगी, काकोली, मुलहटी, कूट, कुटकी, सारिवा, त्रिफला, असवण, पूतिकरञ्ज, अड़ूसा के फूल, मँजीठ, देवदारु, सोंठ, पीपर, भाँगरे के बीज, हल्दी, फूलप्रियंगू, हुलहुल, दशमूल, हरड़, भारङ्गी, असगन्ध और शतावर,— इन में से प्रत्येक को आठ-आठ तोले लेकर कुचल लो और सोलह सेर जल में औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतार कर नितार और छान लो। फिर इस काढ़े में एक सेर "घी" मिला कर, क़लईदार कड़ाही में मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी मात्र रह जाय, उतार कर धर लो।

सेवन-विधि—अपुत्रा नारी को दो माशे और गर्भवती को ८ माशे रोज़ खिलाओ।

रोगनाश—इसे "सोमघृत" कहते हैं। इस के सेवन करने से निरोग-पुत्र होता है। बाँझ भी शूर और पण्डित पुत्र जनती है। इस के पीने से शुक्रदोष और योनि-दोष दोनों नष्ट हो जाते हैं। सात दिन ही सेवन करने से वाणी की जड़ता और गूँगापन—मिनमिनापन नाश हो जाते हैं और सेवन करने वाला एक वार सुनी बात को याद रखनेवाला श्रुतिधर हो जाता है। जिस घर में यह सोमघृत रहता है, वहाँ अग्नि और वज्र आदि का भय नहीं होता और वहाँ कोई अल्पायु होकर नहीं मरता।

(५६) सरसों, वच, ब्राह्मी, शंखपुष्पी, साँठी, क्षीर काकोली, कूट, मुलहटी, कुटकी, त्रिफला, दोनों अनन्तमूल, हल्दी, पाठा, भाँगरा, देवदारु, सूरज वेल-मँजीठ, दाख, फालसा, कंभारी, निशोथ, अडूसे के फूल और गेरू,—इन सब को दो-दो तोले लेकर, साढ़े बारह सेर पानी में काढ़ा बना लो। चौथाई पानी रहने पर उतार लो। फिर इस काढ़े में ६४ तोले घी मिला कर मन्दाग्नि से पकाओ। जब घीमात्र रह जाय, उतार लो। तैयार होते ही "ओं नमो महाविनायकायामृतं रक्ष रक्ष मम फलसिद्धिं देहि रुद्रवचनेन स्वाहा" इस मंत्र द्वारा सात दूब से इस घी को अभिमंत्रित कर लो।

सेवन-विधि—दूसरे महीने से इसे गर्भवती सेवन करे और छठे महीने से आगे सेवन न करे। इस के सेवन करने से शूरवीर और पण्डित पुत्र पैदा होता है। सात रात्रि सेवन करने से मनुष्य दूसरे की सुनी हुई बात को याद रखने वाला हो जाता है। जहाँ यह दवा रहती है, वहाँ बालक नहीं मरता। इस के प्रताप से बाँझ भी निरोग पुत्र जनती है तथा योनि-रोग से पीड़ित नारी और वीर्य-दोष से दुष्ट हुए पुरुष शुद्ध हो जाते हैं।

(५७) अगर रजस्वला नारी बड़ की जटा गाय के घी में मिलाकर पीती है, तो गर्भ रह जाता है। मगर नवीना नारी को जवान पुरुष के साथ संभोग करना चाहिये। कहा है—

ऋतौरुद्रजटांनीत्वा गोघृतेन या च पिबेत्।
सा नारी लभते गर्भमेतद्भक्तिकर्मतम्॥

(५८) नागकेशर और ज़ीरा—इन दोनों को गायके घी में अगर स्त्री तीन दिन पीती है, तो गर्भ रह जाता है। कहा है:—

नागकेशरसंयुक्तं जीरकं गोघृतेनच ।
त्रिदिनं या पिवेन्नारी सगर्भा भामिनी भवेत् ॥

(५९) रविवार के दिन जड़ और पत्तों समेत सर्पाक्षि (सितार) को उखाड़ लाओ। फिर एक रंगकी गाय के दूध में कन्या से उसे पिसवाओ। इस में से दो तोले रोज़ अगर बाँझ स्त्री, ऋतु काल में, सात दिन तक, पीती है तो गर्भ रह जाता है। पथ्य—गायका दूध, साँठी चाँवल और मीठे पदार्थ खाने चाहियें। अपथ्य—चिन्ता, फिक्र, क्रोध, भय, दिन में सोना, सर्दी, गरमी या धूप सहना मना है।

(६०) कंघई को पानी के साथ पीने से स्त्री गर्भवती होती है।

(६१) पारस पीपल के बीजों को पीसकर घी और चीनी के साथ खाने से गर्भ रह जाता है। इसे ऋतुकाल में सेवन करना चाहिये।

(६२) लजवन्ती	...	...	...	४॥ माशे
मिश्री	...	...	...	४॥ माशे
लौंग	...	...	...	४॥ माशे
ईसबगोल	...	...	...	४॥ माशे
माजूफल	...	...	...	४॥ माशे
बंसलोचन	...	...	...	४॥ माशे
मोचरस	...	...	—	४॥ माशे
सीपभस्म	...	...	...	२। माशे
खिरैंटी	...	...	...	४॥ माशे
खैर	...	...	...	४॥ माशे
सहँजना	...	...	...	४॥ माशे
गोखरु	...	...	...	४॥ माशे
सोंठ	...	...	...	४॥ माशे

अजवायन	...	...	...	४॥ माशे
कमलगट्टा	...	...	...	४॥ माशे
जायफल	...	...	...	४॥ माशे
गजकेसर	...	...	...	६ माशे
कायफल	...	...	...	४॥ माशे
साँच पथरी	...	...	...	४॥ माशे
उटंगन	...	...	...	२२॥ माशे

इन को कूट-पीस और छान कर रखलो। सवेरे ही गाय के घी और शहद के साथ रोज़ खाओ। ईश्वर-दया से गर्भ रहेगा। पथ्य दूध भात। १ मास तक अपथ्य पदार्थ त्याग कर दवा खाओ।

(६३) निर्गुण्डी	...	...	...	२४ तोले
जायफल	...	...	...	२ "
लजवन्ती	...	...	...	१ "
जावित्री	...	...	...	१ "
ईसबगोल	...	...	...	१ "
मगजी	...	...	...	१ "
शतावर	...	...	...	५ माशे
शिलाजीत (शुद्ध)	...	...	...	२ तोले

सब को कूट-पीस और छान लो, फिर ५ सेर गाय के दूध में औटाओ; जब सूख कर चूर्ण सा हो जाय, तब तोल कर दवा से दूनी मिश्री मिला दो। फिर एक सेर गायका घी और ४ तोले बंगेश्वर मिला दो। जब सब एक दिल हो जायँ, सुपारी के बराबर रोज़ १ या २ महीने तक खाओ। अपथ्य—खट्टा, मीठा, चरपरा। इस के सेवन करने से, ईश्वर-कृपा से, १० मास में बालक होगा।

(६४) अबीध मोती आधा, मूँगा आधा और जायफल आधा—इन सब को पीसकर अगर बाँझ तीन दिन पीती है, तो गर्भ रह जाता है।
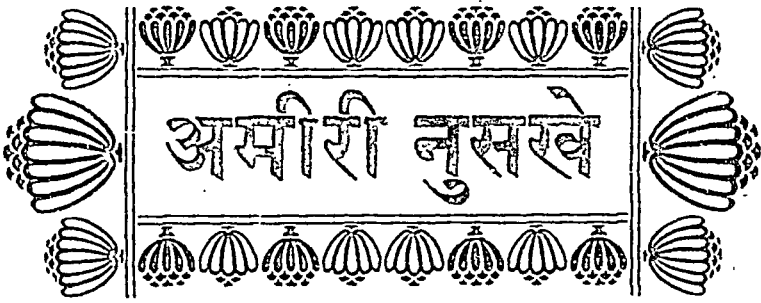
वृहत कल्याण घृत ।

नागरमोथा, कूट, हल्दी, दारुहल्दी, पीपल, कुटकी, काकोली, क्षीरकाकोली, बायबिडंग, त्रिफला, बच, मेदा, रास्ना, असगन्ध, इन्द्रायण, फूलप्रियंगू, दोनों शारिवा, शतावर, दन्ती, मुलेठी, कमल, अजमोद, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, चमेली के फूल, बंसलोचन, मिश्री, हींग और कायफल———इन सब को दो-दो तोले या बराबर-बराबर लेकर, पीस कूटकर छान लो। फिर इन्हें सिल पर पानी के साथ पीस कर लुगदी या कल्क बना लो। फिर कल्क से चौगुना दूध लेकर, इस कल्क और दूध के साथ घी पकाओ। किन्तु इस घी को पुष्यनक्षत्र में, ताम्बे के क़लईदार बासन में, मन्दाग्नि से पकाओ। जब घी पक जाय, निकाल कर रख लो। दवाएँ अगर दो-दो तोले लोगे, तो सब मिला कर तीन पाव होंगी। कुटने-पिसने और लुगदी बनने पर भी तीन पाव ही रहेंगी। इस दशा में घी तीन सेर लेना और गाय का दूध बारह सेर लेना। सब को चूल्हे पर चढ़ा कर मन्दाग्नि से पकाना। जब दूध जल कर घी मात्र रह जाय, उतार कर रख देना। खूब शीतल होने पर छान कर बासन में भर लेना।

रोगनाश—इस घी के उचित मात्रा के साथ सेवन करने से पुरुष स्त्रियों में बैल के समान आचरण करता है। जिस स्त्री के कन्या-ही-कन्या होती हों, जिसकी सन्तान होकर मर जाती हों, जिस के गर्भ ही न रहता हो, जिसके गर्भ रह कर नष्ट हो जाता हो या जिसके पेट से मरी सन्तान होती हो, उन सब को यह "वृहत कल्याण घृत" परमोप-

योगी है। इसके सेवन करने से बाँझ स्त्री भी वेदवेदाङ्ग के जानने वाला, रूपवान, बलवान, अजर और शतायु पुत्र जनती है।

नोट—यद्यपि इस नुसखे में "लक्ष्मणा" की जड़ का नाम नहीं आया है, तोभी सुवैद्य इस में उसे डालते हैं। लक्ष्मणा के मिलाने से निश्चयही गर्भ रहता और पुत्र होता है

वृहत् फलघृत।

मँजीठ, मुलेठी, कूट, त्रिफला, खाँड, खिरेंटी, मेदा, क्षीर काकोली, काकोली, असगन्ध की जड़, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, नीलकमल, कमोदिनी—कुमुदफूल, दाख, दोनों काकोली, लाल चन्दन, और सफेद चन्दन—इन २१ दवाओं को पहले कूट-पीस कर महीन कर लो। फिर सिल पर रख कर, पानी के साथ भाँग की तरह पीसकर लुगदी या कल्क बना लो। घी चार सेर और शतावर का रस सोलह सेर तैयार रखो।

शेष में; ऊपर की लुगदी, घी और शतावर के रस को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब रस जल कर घी मात्र रह जाय, उतार लो और छानकर साफ बासन में रख दो।

रोगनाश—इस घी के मात्रा के साथ पोने से वन्ध्यादोष, मृतवत्सा-दोष, योनिदोष और योनिस्राव आदि रोग आराम होते हैं।

जिस स्त्री को गर्भ नहीं रहता, जिसके मरी सन्तान होती हैं, जिस के अल्पायु सन्तान होती हैं, जिस की सन्तान होकर मर जाती हैं, जिसके कन्या ही-कन्या होती हैं, उस के लिये यह "फलघृत" उत्तम है। अगर पुरुष इस घी को पीता है, तो स्त्रियों की खूब तृप्ति करता है। इस घृत को अश्विनी कुमारों ने निकाला था।

नोट—यद्यपि इस में "लक्ष्मणा" का नाम नहीं आया है, तथापि वैद्य लोग इस में उसे डालते हैं। अगर मिले तो अवश्य डालनी चाहिये।

"चक्रदत्त" में लिखा है, प्रत्येक दवा को एक-एक तोले लेकर और पीस कर लुगदी

बना लो। फिर घी ६४ तोले और शतावर का रस और दूध दोनों मिलाकर २५६ तोले लो और यथाविधि घी पकालो। हमारे नुसखेमें दूध नहीं है, वंगसेन में भी घी से चौगुना शतावर का रस और दूध लेना लिखा है। अब यह बात वैद्यों की इच्छा पर निर्भर है, चाहे जिस तरह इस घी को बनावें। हमने जिस तरह परीक्षा की, उस तरह लिख दिया।

दूसरा फल घृत ।

दोनों तरह के पियाबाँसा, त्रिफला, गिलोय, पुनर्नवा, श्योनाक, हल्दी, दारुहल्दी, रास्ना, मेदा और शतावर—इन ग्यारह दवाओं को पीस-कूट कर, सिल पर रख, जलके साथ फिर पीस कर लुगदी या कल्क बना लो।

इन सब दवाओं को दो-दो तोले लो, घी ६४ तोले लो और गायका दूध २५६ तोले लो। सब को मिलाकर, कड़ाही में रख, चूल्हे पर चढ़ा, मन्दाग्नि से घी पकालो।

रोगनाश—इस घीके पीने से योनि-शूल, पीड़िता, चलिता, निःस्रुता और विवृता आदि योनि रोग आराम होते और स्त्री में गर्भ-धारणशक्ति पैदा होती है। यह घृत योनिदोष नाश करके गर्भ रखने में उत्तम है। परीक्षित है।

नोट—पुनर्नवा सफेद, लाल और नीला इस तरह कई प्रकार का होता है। इस को विषखपरा और साँठ या साँठी भी कहते हैं। लाल को लाल पुनर्नवा या लाल विषखपरा कहते हैं। नीले को नीला पुनर्नवा या नीली साँठ कहते हैं। बँगला में श्वेत गांदावन्ने, रक्तगांदावन्ने और नील गांदावन्ने कहते हैं। कोई-कोई बंगाली इसे श्वेत पुणया भी कहते हैं। सफेद पुनर्नवा गरम और कड़वा होता है। यह कफ खाँसी, विष, हृदयरोग, खूनविकार, पीलिया, सूजन और वात-वेदना नाशक है। मात्रा २ माशे की है

दोनों पियाबासों से मतलब दोनों तरह के सहचरों या कटसरैया से है। यह सहचर या कटसरैया दो तरहकी होती है:—(१) कटसरैया या पियाबाँसा (२) पीली कटसरैया। इस विषय में हम विस्तारसे अन्यत्र लिख आये हैं।

श्योनाकको हिन्दी में सोनापाठा, अरलू या टेंटू कहते हैं। बँगला में शोना-पाता या सोनालू कहते हैं।

तीसरा फलघृत।

मोथा, हल्दी, दारुहल्दी, कुटकी, इन्द्रायण, कूट, पीपल, देवदारु, कमल, काकोली, क्षीर काकोली, त्रिफला, वायबिडंग, मेदा, महामेदा, सफेद चन्दन, लाल चन्दन, रास्ना, प्रियंगू, दन्ती, मुलहटी, अजमोद, वच, चमेलीके फूल, दोनों तरह के सारिवा, कायफल, बंसलोचन, मिश्री और हींग—इन तीस दवाओं को एक-एक तोले लेकर, पीस-कूट कर छान लो। फिर सिल पर रख, जलके साथ भाँग की तरह पीस लो। यही कल्क है।

फिर एक सेर घी और चार सेर गायका दूध तथा ऊपर की लुगदी या कल्क को मिला कर खूब मथो और चूल्हे पर रख कर, आरने उपलों की आग से पकाओ। जब घी तैयार हो जाय, दूध जल जाय, घी को उतार कर छान लो।

मात्रा—चार तोले की है। पर बलाबल-अनुसार कम या इतनी ही लेनी चाहिये।

रोगनाश—इस घीको अगर पुरुष पीवे तो औरतों में साँड हो जाय और बाँझ पीवे तो पुत्र जने। जिन स्त्रियों को गर्भ तो रह जाता है पर पेटमें बढ़ता नहीं, जिन के कन्या ही-कन्या होती हैं, जिन के एक सन्तान होकर फिर नहीं होती, जिन की सन्तान होकर मर जाती है या जिन के मरे हुए बच्चे होते हैं—वे सब इस घीके पीने से रूपवान, बलवान और आयुष्मान् पुत्र जनती हैं। इस घीको भरद्वाज मुनि ने निकाला था। परीक्षित है। (यह घी हम पृष्ठ ४३३ में भी लिख आये हैं)

फलकल्याण घृत।

मँजीठ, मुलेठी, कूट, त्रिफला, खाँड, बरियारेकी जड़, मेदा, विदारी-

कन्द, असगन्ध, अजमोद, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, लाल कमल, कुमुदफूल, दाख, काकोली, क्षीर काकोली, सफेद चन्दन और लाल-चन्दन—इन दवाओं को दो-दो तोले लाकर, पीस-कूट लो । फिर सिल पर रख, पानी के साथ, भाँग की तरह पीस कर लुगदी या कल्क बना लो ।

फिर गाय का घी चार सेर, शतावर का रस आठ सेर और दूध आठ सेर—इन को और ऊपर की लुगदी को मिला कर मथ लो । शेष में, सब को कड़ाही में रख मन्दाग्नि से पकाओ । जब दूध और शतावर का रस जल कर घी मात्र रह जाय, उतारकर छान लो ।

रोगनाश—इस घी के पीने से गर्भदोष, योनिदोष और प्रदर आदि रोग शान्त होकर गर्भ रहता है । परीक्षित है ।

नोट—कल्फ की दवाओं में अगर मिले, तो लक्ष्मणा की जड़ भी दो तोले मिलानी चाहिये ।

प्रियंगादि तैल ।

—:०:—

प्रियंगूफूल, कमल की जड़, मुलेठी, हरड़, बहेड़ा, आमले, रसौत, सफेदचन्दन, लालचन्दन, मँजीठ, सोवा, राल, सेंधानोन, मोथा, मोच-रस, काकमाची, बेल का गूदा, बाला, गजपीपर, पीपर, काकोली और क्षीर काकोली—इन सब को चार-चार तोले लेकर, पीस-कूट कर, सिल पर रख, पानी के साथ पीस कर लुगदी बना लो ।

काली तिली का तेल चार सेर, बकरी का दूध चार सेर, दही चार सेर और दारुहल्दी का काढ़ा चार सेर और ऊपर की लुगदी,—इन सब को मिला कर मन्दाग्नि से तेल पका लो । जब सब पतली चीज़ें जल जायँ, तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो ।

रोगनाश—इस तेल की मालिश करने से योनिरोग, ग्रहणी और अतिसार ये सब नाश हो जाते हैं । गर्भ रखने में तो यह तेल रामबाण

हीहै। अगर फलघृत पीया जाय और यह तेल लगाया जाय, तो निश्चयही बाँझ के रूपवान, बलवान और आयुष्मान पुत्र हो। परीक्षित है।

शतावरी घृत

शतावर का रस १६ सेर और बछड़े वाली गाय का दूध १६ सेर, तैयार कर लो।

फिर मेदा, मँजीठ, मुलहटी, कूट, त्रिफला, खिरेंटी, सफेद बिलाईकन्द, काकोली, क्षीर काकोली, असगन्ध, अजवायन, हल्दी, दारुहल्दी, हींग, कुटकी, नीला कमल, दाख, सफेद चन्दन और लाल चन्दन—इन उन्नीस दवाओं को दो-दो तोले लेकर और सिल पर पीस कर लुगदी बना लो।

फिर बछड़े वाली गाय का घी चार सेर, लुगदी, शतावर का रस और दूध सब को चूल्हेपर चढ़ाकर, मन्दाग्नि से पकालो। जब दूध वगैर: जलकर घी मात्र रह जाय, उतार कर छानलो।

रोगनाश—इस घी के पीने से स्त्रियों के योनि रोग, उन्माद-हिस्टिरिया एवं वन्ध्यापन—सब नाश हो जाते हैं। इन रोगों पर यह घी रामबाण है।

नोट—यह का यही नुसखा हम पहले लिख आये हैं, सिर्फ बनाने में थोड़ा भेद है। हमने इस तरह बनाकर और भी अधिक चमत्कार देखा है, इसी से फिर पिसे को पीसा है।

वृष्यतम घृत

बिधायरे की जड़ एक छटाँक लाकर, सिल पर पानी के साथ पीस कर, लुगदी बनालो। फिर एक पाव गाय का घी और एक सेर गाय का दूध—इन तीनों को क़लईदार बर्तन में रख, मन्दाग्नि से घी पका लो।

यह घी अत्यन्त पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्योत्पादक है। इस घी को पुत्रकामी पुरुष को अवश्य पीना चाहिये। परीक्षित है।

नोट(१)—इसी हिसाब से चाहे जितना घी बना लो, इस घी को दो चार महीने खा कर, शुद्ध रज और योनि वाली स्त्री से अगर पुरुष मैथुन करे, तो निश्चय ही गर्भ रहे और महाबलवान पुत्र हो। यह घी आज़मूदा है। "वंगसेन" में लिखा है:—

वृद्धदारुकमूलेन घृतंपक्वं पयोन्वितम्।
एतदवृष्यतमं सर्पिः पुत्रकामः पिबेन्नरः॥

अर्थ वही है, जो ऊपर लिखा है। इस में साफ "पिबेन्नरः" पद है, फिर न जाने क्यों वंगसेन के अनुवादकने लिखा है—"पुत्र की इच्छा करने वाली स्त्री पान करे"

नोट—(२)विधायरे को हिन्दी में विधारा और काला बिधारा कहते हैं। संस्कृत में वृद्धदारु, जीर्णदारु और फंजी आदि कहते हैं। बंगला में वितारक, वीजतारक और विद्धडक कहते हैं। मरहटी में श्वेत वरधारा और गुजराती में वरधारो कहते हैं। विधारा दो तरह का होता है:—

(१) वृद्धदारु, और (२) जीर्णदारु। जीर्णदारु को फंजी भी कहते हैं। विधारा समुद्र-शोष सा जान पड़ता है, क्योंकि समुद्र शोष और विधारे के फूल, पत्ते, बेल आदि में कुछ भी फर्क नहीं दीखता। कितने ही वैद्य तो विधारे और समुद्रशोष को एकही मानते हैं। कोई-कोई कहते हैं, समुद्रशोष और समुद्रफूल—ये दोनों विधारे के ही भेद हैं।

कुमारकल्पद्रुम घृत।

पहले बकरे का माँस तीस सेर और दशमूल की दशों दवाएँ तीन सेर—इन दोनों को सवा मन पानी में डाल कर औटाओ। जब चौथाई यानी १२॥ सेर पानी रहजाय, उतार कर छान लो और मांस वगैरः को फैंक दो।

गाय का दूध चार सेर, शतावर का रस चार सेर और गाय का घी दो सेर भी तैयार रखो।

कूट, शठी, मेदा, महामेदा, जीवक, ऋषभक, प्रियंगूफूल, त्रिफला, देवदारु, तेजपात, इलायची, शतावर, गंभारीफल, मुलेठी, क्षीर-काकोली,

मोथा, नील कमल, जीवन्ती, लाल चन्दन, काकोली, अनन्तमूल, श्यामलता, सफेद बरियारे की जड़, सरफोंके की जड़, कोहड़ा, विदारीकन्द, मँजीठ, सरिवन, पिठवन, नागकेशर, दारुहल्दी, रेणुक, लताफटकी की जड़, शंखपुष्पी, नीलवृक्ष, बच, अगर, दालचीनी, लौंग और केशर—इन ४० दवाओं को एक-एक तोले लेकर, पीस-कूटकर, सिल पर रख, पानी के साथ, भाँग की तरह पीस कर कल्क या लुगदी बना लो।

शुद्ध पारा एक तोले, शुद्ध गंधक १ तोले, निश्चन्द्र अभ्रक भस्म १ तोले और शहद एक सेर—इन को भी तैयार रखो।

बनाने की विधि—मांस और दशमूल के काढ़े, दूध, शतावर के रस और घी तथा दवाओं के कल्क या लुगदी—इन सब को मिलाकर पकाओ। जब घी मात्र रहजाय, उतार कर शीतल करो और घी को छान लो। शेष में, पककर तैयार हुए शीतल घी में पारा, गंधक, अभ्रक भस्म और शहद मिला दो। अब यह "कुमारकल्पद्रुम घृत" तैयार हो गया।

सेवन-विधि—इस घी की मात्रा ६ माशे की है। बलाबल अनुसार कम-ज़ियादा खाना चाहिये। इस घी के पीने से स्त्रियों के योनिरोग वगैरः समस्त रोग और गर्भाशय के दोष नष्ट हो कर गर्भ रहता है। इस घी की जितनी भी तारीफ की जाय थोड़ी है। अमीरों के घरों की स्त्रियाँ इसे अवश्य खायँ और निर्दोष होकर पुत्र जनें।

नोट—इस घी को खाना और प्रियंगुआदि तेल को मलवाना चाहिये।

बन्ध्या बनानेवाली औषधियाँ।

गर्भ न रहने देने वाली औषधियाँ।

(१) अगर स्त्री—रजोधर्म होने के समय में—पीपल, वायबिडंग और सुहागा—इन तीनों को बराबर-बराबर लेकर, पीस-छानकर रख

ले और ऋतुस्नान करके एक-एक मात्रा चूर्ण गरम दूध के साथ फाँके तो कदापि गर्भ न रहे। परीक्षित है।

नोट—इस चूर्ण को, ऋतुकाल में, पाँच दिन तक जल या दूध से फाँकना चाहिये

(२) चार तोले हरड़ की मींगी मिश्री मिलाकर, तीन दिन, खाने से रजोधर्म नहीं होता। जब रजोधर्म न होगा, गर्भ भी न रहेगा।

(३) दूधी की जड़ को बकरी के दूध में मिला कर, तीन दिन, पीने से स्त्री रजस्वला नहीं होती।

(४) पुष्यार्क योग में, धतूरे की जड़ लाकर कमर में बाँधने से कभी गर्भ नहीं रहता। विधवाओं के लिये यह उपाय अच्छा है। "वैद्यरत्न" में लिखा है:—

धत्त्तूरमूलिका पुष्ये गृहीता कटिसंस्थिता।
गर्भंनिवारयत्येवरंडा वेश्यादियोषिताम्॥

(५) पलाश यानी ढाक के बीजों की राख शीतल जल के साथ पीने से स्त्री को गर्भ नहीं रहता। "वैद्यवल्लभ" में लिखा है—

रक्षांपलाशबीजस्य पीत्वाशीतेन वारिणा।
न भ्रूणं लभते नारी श्री हस्तिकविनामतः॥

(६) पाँच दिन तक हींग के साथ तेल पीने से गर्भ नहीं रहता।

(७) चीते के पिसे-छने चूर्ण में गुड़ और तेल मिलाकर, तीन दिन तक, पीने से गर्भ नहीं रहता।

(८) करेले के रस के पीने से गर्भ नहीं रहता।

(९) पुराने गुड़ के साथ उड़द खाने से गर्भ नहीं रहता।

(१०) जाशुकीके सूखे फल खानेसे गर्भ नहीं रहता।

(११) ढाकके बीज, शहद और घी—इन तीनोंको मिलाकर, ऋतु समयमें, अगर स्त्री योनिमें रखे, तो फिर कभी गर्भ न रहे। "वैद्यरत्न" में लिखा है—

पलाशबीजमध्वाज्यलेपात्सामर्थ्ययोगतः।
योनिमध्ये ऋतौ गर्भं धत्ते स्त्री न कदाचन॥

(१२) चूहे की मेंगनी शहद में मिलाकर योनि में रखने से गर्भ नहीं रहता।

(१३) खच्चर का पेशाब और लोहे का बुझा हुआ पानी मिलाकर अगर स्त्री पीती है, तो गर्भ नहीं रहता।

(१४) सूखी हाथी की लीद शहद में मिलाकर खाने से जन्मभर गर्भ नहीं रहता।

(१५) हाथी की लीद योनि पर रखने से भी गर्भ नहीं रहता।

(१६) पाखानभेद महँदी में मिलाकर स्त्री के हाथों पर लगाने से गर्भ नहीं रहता और रजोधर्म होना बन्द हो जाता है।

(१७) पहली बार जनने वाली स्त्री के बच्चा जनने के बाद जो खून निकलता है, उसे यदि कोई स्त्री सारे शरीर पर मल ले, तो उम्र-भर गर्भवती न हो

(१८) लोहे का बुझाया हुआ पानी पीने से गर्भ नहीं रहता।

(१९) जो स्त्री ऋतुकाल में, गुड़हल के फूलों को आरनाल नामकी काँजी में पीसकर, तीन दिन तक पीती और चार तोले भर उत्तम पुराना गुड़ सेवन करती है, वह हरगिज़ गर्भवती नहीं होती।

(२०) तालीसपत्र और गेरू—इन दोनों को दो तोले शीतल जल के साथ चार दिन पीने से गर्भ नहीं रहता—स्त्री बाँझ हो जाती है।

(२१) ऋतुवती नारी अगर ढाक के बीज जल में घोट कर तीन दिन तक पीती है तो बाँझ हो जाती है। परीक्षित है।

(२२) ऋतुवती स्त्री अगर सात या आठ दिन तक खीरे के बीज पीती है, तो बाँझ हो जाती है।

(२३) बेर की लाख औटाकर और तेल में मिलाकर, तीन दिन तक, दो-दो तोले रोज़ पीने से गर्भ नहीं रहता।

(२४) जसवन्त के एक तोले फूल काँजी में पीसकर, ऋतुकाल में, पीने से गर्भ नहीं रहता।

(२५) ऋतुकाल में, तीन दिन तक, एक छटाँक पुराना गुड़ नित्य खाने से गर्भ नहीं रहता ।

(२६) ढाक के बीजों की राख में हींग मिलाकर खाने और ऊपर से दूध पीने से गर्भ नहीं रहता ।

(२७) अगर स्त्री बाँझ होना चाहे तो उसे हाथी के गू का निचोड़ा हुआ रस एक तोले, थोड़े से शहद में मिलाकर, ऋतुधर्म होने के पीछे, तीन दिनों तक पीना चाहिये ।

नोट—हाथी की सूखी लीद शहद में मिलाकर खाने से जीते जी गर्भ नहीं रहता । हाथी की लीद योनि पर रखने से भी गर्भ नहीं रहता ।

(२८) हाथी के गू में भिगो हुई बत्ती योनि में रखने से स्त्री बाँझ हो जाती है ।

(२९) नौसादर और फिटकरी बराबर-बराबर लेकर पानी के साथ पीसकर, ऋतु के बाद, योनि में रखने से स्त्री बाँझ हो जाती है ।

(३०) अगर स्त्री हर सवेरे एक लौंग निगलती रहे, तो उसे कभी गर्भ न रहे ।

(३१) ऋतु के दिनों के बाद, इस्पन्द नागौरी जलाकर खाने से स्त्री को गर्भ नहीं रहता ।

(३२) अगर मर्द लिङ्ग के सिर में मीठा तेल और नमक मल कर मैथुन करे, तो गर्भ न रहे । इस दशा में गर्भाशय वीर्य को नहीं लेता ।

(३३) अगर स्त्री रजोदर्शन होने के पहले दिन से लगाकर उन्नीसवें दिन तक, हल्दी पीस-पीसकर खाय; तो उसे हरगिज़ गर्भ न रहे ।

(३४) अगर स्त्री चमेली की जड़ और गुले चीनिया का ज़ीरा बराबर-बराबर लेकर और पीस कर, रजोधर्म होने के पहले दिन से तीसरे दिन तक—तीन दिन खाती और ऊपर से एक-एक घूँट पानी पीती है, तो कभी गर्भवती नहीं होती ।

(३५) फराश वृक्ष की छाल और गुड़ औटाकर पीने से स्त्री को गर्भ नहीं रहता ।

(३६) मैथुन के बाद, योनि में काली मिर्च रखने से गर्भ नहीं रहता।

(३७) अगर स्त्री तीन माशे छे रत्ती नील खाले, तो कदापि गर्भवती न हो।

(३८) अगर स्त्री चमेली की एक कली निगल ले, तो एक साल तक गर्भवती न हो।

(३९) अगर स्त्री एक रेंडी का गूदा निगल जाय, तो एक साल तक गर्भवती न हो। अगर दो रेंडी का गूदा निगल ले, तो दो साल तक गर्भ न रहे।

(४०) मैथुन के समय खाने का नोन भग में रखने से गर्भ नहीं रहता।

(४१) अगर किसी लड़के का पहला दाँत गिरने वाला हो, तो औरत उसका ध्यान रखे। ज्योंही वह गिरे, उसको हाथ में लेले, ज़मीन पर न गिरने दे। फिर उस दाँत को चाँदी के जन्तर में मढ़वा कर अपनी भुजा पर बाँधले। इस उपाय से हरगिज़ गर्भ न रहेगा।

(४२) अगर स्त्री, मैथुनके समय, मैंडककी हड्डी अपने पास रखखे, तो कदापि गर्भ न रहे।

(४३) काकुंज के सात दाने, ऋतुधर्म के पीछे, निगल लेने से स्त्री को गर्भ नहीं रहता।

(४४) अगर स्त्री बाँझ होना चाहे, तो थूहर की लकड़ी लाकर छाया में सुखाले। सूखने पर उसे जलाकर राख करले और राख को पीस-छान कर रखले। फिर इस में से एक माशे-भर राख लेकर, उसमें माशे भर शक्कर मिला दे और खा जावे। इस तरह २१ दिन तक इस राख के खाने से गर्भ-धारण-शक्ति मारी जाती है और गर्भ नहीं रहता।

(४५) मनुष्यके कानका मैल और एक दाना बाकले का पश्मीने में बाँधकर, स्त्री अपने गले में लटका ले। जब तक गले में यह रहेगा, हरगिज़ गर्भ न रहेगा।

(४६) अगर स्त्री अपने बेटे के पेशाब पर पेशाब करे, तो उसे कभी गर्भ न रहे।

(४७) अगर स्त्री हर महीने थोड़ा सा ख़च्चर का पेशाब पी लिया करे, तो कभी गर्भ न रहे ।

(४८) अगर स्त्री चाहे कि मैं गर्भवती न होऊँ, तो उसे माजूफल पानी के साथ महीन पीस कर, उस में रूई भिगोकर, उसका गोला सा बना कर, मैथुन से पहले, अपनी योनि में रख लेना चाहिये। इस उपाय से गर्भ नहीं रहता और भोग के बाद अगर गर्भाशय में पीड़ा होती है, तो वह भी मिट जाती है ।

(४९) पुरुष को चाहिये, मैथुन के समय स्त्री को बहुत आलिंगन न करे, उसके पाँवों को ऊँचे न उठावे और जब वीर्य छुटने लगे, लिंग को गर्भाशय से दूर करले; यानी बाहर की ओर खींच ले। स्त्री और पुरुष दोनों साथ-साथ न छुटें। ज्योंही वीर्य निकल जाय, दोनों झट अलग हो जायँ। स्त्री मैथुन से निपटते ही जल्दी उठ खड़ी हो और आगे की ओर सात या नौ बार कूदे और छींकें ले, जिस से गर्भाशय में गया हुआ वीर्य भी निकल पड़े। इन बातों के सिवा पुरुष मैथुन करते समय लिंग की सुपारी पर तिली का तेल लगा ले। इस उपाय से वीर्य फिसल जाता और गर्भाशय में नहीं ठहरता। सब से अच्छा उपाय यह है, कि मर्द लिंग पर पतला कपड़ा लपेट कर मैथुन करे, जिस से वीर्य कपड़े में ही रहजाय।

फ्रान्स देश की विलासिनी रमणियाँ बच्चा जनना पसन्द नहीं करतीं, इसलिये वहाँ वालोंने एक प्रकार की लिंग की टोपियाँ बनाई हैं। मैथुन करते समय मर्द उन टोपियों को लिंग पर चढ़ा लेते हैं। इससे वीर्य उन टोपियों में ही रह जाता है और स्त्रियों को गर्भ नहीं रहता। ऐसी टोपी कलकत्ते में भी आगई हैं।

ज्वर नाशक नुसखे।

(१) मुलेठी, लालचन्दन, ख़स, सारिवा और कमलके पत्ते—इनका काढ़ा बनाकर, उसमें मिश्री और शहत मिलाकर पीनेसे गर्भिणी स्त्रियों का ज्वर जाता रहता है।

(२) लालचन्दन, सारिवा, लोध, दाख और मिश्री—इनका काढ़ा पीने से गर्भिणी का ज्वर शान्त हो जाता है।

(३) बकरी के दूधके साथ "सोंठ" पीने से गर्भिणी स्त्रियों का विषमज्वर आराम हो जाता है

अतिसार-ग्रहणी आदि नाशक नुसखे।

(४) सुगन्धवाला, अरलू, लालचन्दन, खिरेंटी, धनिया, गिलोय, नागरमोथा, ख़स, जवासा, पित्तपापड़ा और अतीस—इन ग्यारह दवाओंका काढ़ा बनाकर पिलाने से गर्भिणी स्त्रियों के अतिसार, संग्रहणी, ज्वर, योनि से खून गिरना, गर्भस्राव, गर्भस्रावकी पीड़ा, दर्द या मरोड़ी के साथ दस्त होना आदि निश्चय ही आराम हो जाते हैं। यह नुसख़ा सूतिका रोगों के नाश करने के लिये प्राचीन काल में ऋषियों ने कहा था। परीक्षित है।

(५) आमकी छाल और जामुन की छालका काढ़ा बनाकर, उस में "खीलों का सत्तू" मिलाकर खाने से गर्भिणीका ग्रहणी रोग तत्काल शान्त होता है।

(६) कुशा, काँस, अरण्डी और गोखरूकी जड़—इनको सिल पर

पानी के साथ पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदी को दूध में रखकर, दूध को पका और छान लो और पीछे मिश्री मिला दो। इस दूध को पीने से गर्भशूल या गर्भवती का दर्द आराम हो जाता है।

(७) गोखरू, मुलेठी, कटेरी और पियावाँसा,—इन को ऊपर की विधि से सिल पर पीसकर दूध में मिलाकर औटा लो। पीछे छान कर मिश्री मिला दो और पिला दो। इस दूध से गर्भकी वेदना शान्त हो जाती है।

(८) कसेरू, कमल और सिंघाड़े—इन को पानी के साथ पीस कर लुगदी बनालो और दूध में औटाकर दूध को छानलो। इस दूध के पीने से गर्भवती सुखी हो जाती है।

(९) अगर गर्भवती के पेट पर अफारा आ जाय—पेट फूल जाय, तो बच और लहसनको सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदी को दूध में डाल कर दूधको औटालो। जब औट जाय, उस में हींग और काला नोन मिला कर पिला दो। इससे अफारा मिटकर गर्भिणीको सुख होता है।

(१०) शालिधानों की जड़, ईखकी जड़, डाभ की जड़, काँसकी जड़ और सरपते की जड़,—इनको सिल पर पीसकर लुगदी बना लो और ऊपर की विधि से दूधमें डालकर, दूधको पका-छान लो और गर्भिणी को पिला दो। इस पंचमूलके साथ पकाये हुए दूधके पीने से गर्भिणीका रुका हुआ पेशाब खुल जाता है। इसके सिवा इस नुसख़ेसे प्यास, दाह-जलन और रक्तपित्त रोग भी आराम हो जाते हैं।

नोट—गर्भिणी के दाह आदि रोगों में वैद्यको शीतल और चिकनी क्रिया करनी चाहिये।

गर्भस्राव और गर्भपात।

गर्भस्राव और गर्भपात के निदान-कारण

गर्भावस्था में मैथुन करने, राह चलने, हाथी या घोड़े पर चढ़ने,

मिहनत करने, अत्यन्त दवाव पड़ने, कूदने, फलाँगने, गिरने, दौड़ने, व्रत-उपवास करने, अजीर्ण होने, मलमूत्र आदि वेगों के रोकने, गर्भ गिराने वाले तेज़ और गर्म पदार्थ खाने, विषम—ऊँचे-नीचे स्थानों पर सोने या बैठने, डरने और तीक्ष्ण, गर्म, कड़वे तथा रूखे पदार्थ खाने-पीने आदि कारणों से गर्भस्राव या गर्भपात होता है।

गर्भस्राव और गर्भपात में फर्क़ ?

चौथे महीने तक जो गर्भ खून के रूप में गिरता है, उसे "गर्भस्राव" कहते हैं ; लेकिन जो गर्भ पाँचवें या छठे महीने में गिरता है, उसे "गर्भपात" कहते हैं।

खुलासा यह, कि चार महीने तक या चार महीने के अन्दर अगर गर्भ गिरता है, तो वह खून के रूप में होता है, यानी योनि से यकायक खून आने लगता है, पर मांस नहीं गिरता; इसीसे उसे "गर्भस्राव होना" कहते हैं। क्योंकि इस अवस्था में गर्भ स्रवता या चूता है। पाँचवें महीने के बाद गर्भ का शरीर बनने लगता है और उसके अङ्ग सख़्त हो जाते हैं। इस अवस्था में अगर गर्भ गिरता है, तो मांस के छीछड़े, खून और अधूरा बालक गिरता है, इसी से इस अवस्था के गिरे गर्भ को "गर्भपात होना" कहते हैं।

गर्भस्राव या गर्भपात के पूर्व्व रूप।

अगर गर्भ स्रवने या गिरनेवाला होता है, तो पहले शूल की पीड़ा होती और खून दिखाई देता है।

खुलासा यह है, कि अगर किसी गर्भिणी के शूल चलने लगें और खून आने लगे तो समझना चाहिये, कि गर्भस्राव या गर्भपात होगा।

गर्भ अकाल में क्यों गिरता है ?

जिस तरह वृक्ष में लगा हुआ फल चोट वगैरः लगने से अकाल

या असमय में गिर पड़ता है; इसी तरह गर्भ भी चोट वगैर: लगने और विषम आसन पर बैठने आदि कारणों से असमय में ही गिर पड़ता है।

गर्भपात के उपद्रव।

जब गर्भपात होता या गर्भ गिरता है, तब जलन होती, पसलियों में शूल चलते, पीठ में पीड़ा होती, पैर चलते यानी योनि से खून गिरता, अफारा आता और पेशाब रुक जाता है।

गर्भ के स्थानान्तर होने से उपद्रव
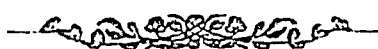
जब गर्भ एक स्थान से दूसरे स्थान में जाता है, तब आमाशय और पक्वाशय में क्षोभ होता, पसलियों में शूल चलता, पीठ में दर्द होता, पेट फूलता, जलन होती और पेशाब बन्द हो जाता है; यानी जो उपद्रव गर्भपात के समय होते हैं, वही सब गर्भ के स्थानान्तर होने से होते हैं।

हिदायत।

अगर गर्भ-स्राव या गर्भपात होने लगे, तो जहाँ तक सम्भव हो, चिकित्सा द्वारा उसे रोकना चाहिये। अगर किसी को गर्भस्राव या गर्भपात का रोग ही हो, तो उसे हर महीने "गर्भसंरक्षक दवा" देकर गर्भ को गिरने से बचाना चाहिये। अगर गर्भ रुके नहीं—रुकने से गर्भिणी की जान को ख़तरा हो, अथवा कष्ट होने की सम्भावना हो, तो उस गर्भ को गर्भ गिरानेवाली दवा देकर गिरा देना चाहिये। हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है,—" अगर गर्भवती कम-उम्र हो, दर्द सहने योग्य न हो, गर्भ से उसके मरने या किसी भारी रोग में फँसने की संभावना हो, तो गर्भ को गिरा देनाही उचित है।" जिस तरह हमने गर्भोत्पादक नुसखे लिखे हैं, उसी तरह हम आगे गर्भ गिरानेवाले नुसखे भी लिखेंगे।

गर्भपात और उस के उपद्रवों की चिकित्सा।

(१) भौंरी के घर की मिट्टी, मोंगरे के फूल, लजवन्ती, धाय के फूल, पीला गेरू, रसौत और राल—इन में से सब या जो-जो मिलें, उन्हें कूट-पीसकर छान लो। इस चूर्ण को शहद में मिला कर चाटने से गिरता हुआ गर्भ रुक जाता है।

(२) जवासा, सारिवा, पद्माख, रास्ना, मुलेठी और कमल—इन को गाय के दूध में पीसकर पीने से गर्भस्राव बन्द हो जाता है।

(३) सिंघाड़ा, कमल-केशर, दाख, कसेरू, मुलहटी और मिश्री—इन को गाय के दूध में पीसकर पीने से गर्भस्राव बन्द हो जाता है।

(४) कुम्हार बर्तन बनाते समय, हाथ में लगी हुई मिट्टी को पोंछता जाता है। उस मिट्टी को लाकर गर्भिणी को पिलाने से गिरता हुआ गर्भ थम जाता है।

(५) खिरेटी की जड़ कँवारी कन्या के काते हुए सूत में बाँधकर, कमर में लपेटने से गिरता हुआ गर्भ थम जाता है।

(६) कुश, काश, लाल अरण्ड की जड़ और गोखरू—इन को दूध में औटा कर और मिश्री मिलाकर पीने से गर्भवती की पीड़ा दूर हो जाती है। दवाओं का कल्क १ तोले, दूध ३२ तोले और पानी १२८ तोले लेकर दूध पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान लो।

(७) कसूम के रंगे हुए लाल डोरे में एक करंजुआ बाँधकर गर्भिणी की कमर में बाँध देने से गर्भ नहीं गिरता। अगर गर्भ रहते ही यह कमर में बाँध दिया जाय और नौ महीने तक बँधा रहे, तो गर्भ गिरने का भय ही न रहे।

नोट—कंटक करंज या करंजुए के पेड़ माली लोग फुलवाड़ियों की बाड़ों पर रक्षा के लिये लगाते हैं। इन के फल कचौरी जैसे होते हैं। इन के इर्द-गिर्द इतने काँटे होते हैं कि तिल धरने को जगह नहीं मिलती, फल में से चार पाँच दाने

निकलते हैं। उन दानों को ही 'करंजुवा" या "करंजा" कहते हैं। दाने के ऊपर का छिलका राख के रंग का होता है, पर भीतर से सफेद गिरी निकलती है। इसे संस्कृत में कण्टक करंज, हिन्दी में करंजा या करंजुवा, बंगला में काँटाकरंज और अँगरेजी में बोंडकनट कहते हैं।

(८) कुहरवा यशमई और दरुनज अकरबी गर्भिणी की कमर में बाँध देने से गर्भ नहीं गिरता।

(९) कँवारी कन्या के काते हुए सूत से गर्भिणी को सिर से पाँव के नाखून तक नापो। उसी नाप के २१ तार लेलो। फिर काले धतूरे की जड़ लाकर, उस के सात टुकड़े करलो और हर टुकड़े को उस तार में अलग-अलग बाँध दो। फिर उस जड़ बँधे हुए सूत को स्त्री की कमर में बाँध दो। हरगिज़ गर्भ न गिरेगा।

(१०) गर्भिणी के बाँयें हाथ में जमुर्रद की अंगूठी पहना देने से खून बहना या गर्भस्राव-गर्भपात होना बन्द हो जाता है।

(११) ख़तमी के बीज और मुलतानी मिट्टी को "मकोय के रस" में पीसकर, योनि में लगा देने से गर्भ नहीं गिरता और भग की जलन और खुजली मिट जाती है।

(१२) भीमसेनी कपूर अर्क़ गुलाब में पीसकर भग में मलने से गर्भ गिरना बन्द हो जाता है।

(१३) गूलर की जड़ या जड़ की छाल का काढ़ा बनाकर गर्भिणी को पिलाने से गर्भस्राव या गर्भपात बन्द हो जाता है।

नोट—अगर गर्भिणी को भूख न लगती हो, तो बड़ी इलायची २ माशे कन्द में मिलाकर खिलाओ।

(१४) गर्भिणी की कमर में अकेला "कुहरवा" बाँध देने से गर्भ नहीं गिरता।

नोट—इसी कुहरवे को गले में बाँधने से कमल वायु आराम हो जाती है और छाती पर रखने से प्लेग या ताऊन भाग जाता है।

(१५) अगर गर्भ चलायमान हो, तो गाय के दूध में कच्चे गूलर पका कर पीने चाहियें।

(१६) कसेरु, सिंघाड़े, पद्माख, कमल, मुगवन और मुलेठी—इन को पीस-छान और मिश्री मिलाकर दूध के साथ पीने से गर्भस्राव आदि उपद्रव नाश हो जाते हैं। इस दवा पर दूध-भात के सिवा और कुछ न खाना चाहिये।

(१७) कसेरु, सिंघाड़े, जीवनीयगण की दवाएँ, कमल, कमोदिनी, अरण्डी और शतावर—इन को दूध में औटाकर और मिश्री मिलाकर पीने से गर्भ गिरता-गिरता ठहर जाता और पीड़ा नष्ट हो जाती है।

(१८) विदारीकन्द, अनार के पत्ते, कच्ची हल्दी, त्रिफला, सिंघाड़े के पत्ते, जाती फूल, शतावर, नील कमल और कमल—इन आठों को दो-दो तोले लेकर सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। फिर तेल की विधि से तेल पकाकर रखलो। इस तेल की मालिश करने से गर्भशूल, गर्भस्राव आदि नष्ट हो जाते और गिरता-गिरता गर्भ रह जाता है। इस तेल का नाम "गर्भविलास तैल" है। परीक्षित है।

(१६) कबूतर की बीट शालि चाँवलों के जल के साथ पीने से गर्भस्राव या गर्भपात के उपद्रव दूर हो जाते हैं।

(२०) शहद और बकरी के दूध में कुम्हार के हाथ की मिट्टी मिला कर खाने से गिरता हुआ गर्भ ठहर जाता है।

गर्भिणी की महीने-महीने की चिकित्सा।

पहला महीना।

पहले महीने में—मुलेठी, सागौन के बीज, असगन्ध और देवदारु—इन में से जो-जो मिलें; उन सब का एक तोला कल्क दूध में घोलकर गर्भिणी को पिलाओ।

दूसरा महीना।

दूसरे महीने में—अश्मन्तक, काले तिल, मंजीठ और शतावर—इन में से जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूध में घोल कर गर्भिणी को पिलाओ।

तीसरा महीना ।

तीसरे महीने में—वंदा, फूल प्रियंगू, कंगुनी और सफेद सारिवा—इन में से जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूध में घोलकर पिलाओ ।

चौथा महीना ।

चौथे महीने में—सफेद सारिवा, काला सारिवा, रास्ना, भारंगी, और मुलेठी—इन में से जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूध में घोलकर पिलाओ ।

पाँचवाँ महीना ।

पाँचवें महीने में—कटेरी, बड़ी कटेरी, कुम्भेर, बड़ आदि दूध वाले वृक्षों की बहुत सी छोटी-छोटी कोंपलें और छाल—इन में से जो-जो मिलें, उन सब का एक तोले कल्क दूध में घोल कर पिलाओ ।

छठा महीना ।

छठे महीने में—पिठवन, बच, सहँजना, गोखरु और कुम्भेर—इन का एक तोले कल्क दूध में घोल कर पिलाओ ।

सातवाँ महीना ।

सातवें महीने में—सिंघाड़े, कमलकन्द, दाख, कसेरु, मुलेठी और मिश्री—इन में से जो मिलें, उनका एक तोले कल्क दूध में घोलकर पिलाओ ।

नोट—सातों महीनों में दवाओंको शीतल जल में पीस कर और दूध में मिला कर पिलाने से गर्भस्राव और गर्भपात नहीं होता । इस के सिवा, गर्भ-सम्बन्धी शूल भी नष्ट हो जाता है ।

आठवाँ महीना ।

आठवें महीने में—कैथ, कटाई, बेल, परवल, ईख और कटेरी—इन सब की जड़ों को शीतल जल में पीस कर, एक तोले कल्क तैयार कर लो । फिर इस कल्क को १२८ तोले जल और ३२ तोले दूध में डाल कर पकाओ । जब पानी जलकर दूध मात्र रह जाय, छान कर पिलाओ ।

नोट—इस मास में मैथुन कतई त्याग देना चाहिये। क्योंकि इस महीने में मैथुन करने से गर्भ निश्चय ही गिर जाता या अन्धा, लूला, लँगड़ा हो जाता है।

नवाँ महीना।

नवें महीने में—मुलेठी, सफेद सारिवा, काला सारिवा, असगन्ध और लाल पत्तों का जवासा—इनको शीतल जल में पीस कर, एक तोले कल्क लेकर चार तोले दूध में घोलकर पिलाओ।

दशवा महीना

दसवें महीने में—सोंठ और असगन्ध को शीतल जल में पीस कर, फिर उसमें से एक तोले कल्क लेकर, १२८ तोले जल और बत्तीस तोले दूध में डाल कर पकाओ। जब दूध मात्र रह जाय, छान कर गर्भिणी को पिला दो।

अथवा

सोंठ को दूध में औटाकर और शीतल करके पिलाओ।

अथवा

सोंठ, मुलेठी और देवदारु को दूध में औटाकर पिलाओ। अथवा इन तीनों के एक तोले कल्क को चार तोले दूध में घोलकर पिलाओ।

ग्यारहवाँ महीना

ग्यारहवें महीने में—खिरनी के फल, कमल, लजवन्ती की जड़ और हरड़—इनको शीतल जल में पीस कर, फिर एक तोले कल्क को दूध में घोल कर पिलाओ। इससे गर्भिणी का शूल शान्त हो जाता है।

बारहवाँ महीना

बारहवें महीने में—मिश्री, विदारीकन्द, काकोली और कमलनाल इनको सिल पर पीस कर, इसमें से एक तोला कल्क पीने से शूल मिटता, घोर पीड़ा शान्त होती और गर्भ पुष्ट होता है।

इस तरह महीने-महीने चिकित्सा करते रहने से गर्भस्राव या गर्भ-पात नहीं होता, गर्भ स्थिर हो जाता और शूल वगैरः उपद्रव शान्त हो जाते हैं।

वायु से सूखे गर्भ की चिकित्सा।

योनिस्राव की वजह से अगर बढ़ते हुए गर्भ का बढ़ना रुक जाता है और वह पेट में हिलने-जुलने पर भी कोठे में रहा आता है, तो उसे "उपविष्टिक गर्भ" कहते हैं। अगर गर्भ की वजह से पेट नहीं बढ़ता एवं रूखेपन, और उपवास आदि अथवा अत्यन्त योनिस्राव से कुपित हुए वायु के कारण से कृश गर्भ सूख जाता है, तो उसे "नागोदर" कहते हैं। इस दशा में गर्भ चिरकाल में फुरता है और पेट के बढ़ने से भी हानि ही होती है।

अगर वायु से गर्भ सूख जाय और गर्भिणी के उदर की पुष्टि न करे, पेट ऊँचा न आवे, तो गर्भिणी को जीवनीयगण की औषधियों के कल्क द्वारा पकाया हुआ दूध पिलाओ और मांसरस खिलाओ।

अगर वायु से गर्भ संकुचित हो जाय और गर्भिणी प्रसवकाल बीत जाने पर भी; यानी नवाँ, दसवाँ, ग्यारहवाँ और बारहवाँ महीना बीत जाने पर भी बच्चा न जने, तो बच्चा जनाने के लिये, उससे ओखली में धान डाल कर मूसल से कुटवाओ और विषम आसन या विषम सवारी पर बैठाओ। वाग्भट्ट में लिखा है,—उपविष्टक और नागोदर की दशा में बृंहण, वातनाशक और मीठे द्रव्यों से बनाये हुए घी, दूध और रस गर्भिणी को पिलाओ।

हिकमत में एक "रिजा" नामक रोग लिखा है, उसके होनेसे स्त्रीकी दशा ठीक गर्भवती के जैसी हो जाती है। जिस तरह गर्भ रहने पर स्त्री का रजःस्राव बन्द हो जाता है; उसी तरह 'रिजा' में भी रज बन्द हो जाती है। रंग में अन्तर आ जाता है। भूख जाती रहती है। संभोग या मैथुन की इच्छा नहीं रहती। गर्भाशय का मुँह बन्द हो जाता है और पेट बड़ा हो जाता है। गर्भवतियों की तरह पेट में

कड़ापन और गति मालुम होती है। ऐसा जान पड़ता है, मानों पेट में बच्चा हो। अगर हाथ से दबाते हैं, तो वह सख्ती दाहिने बायें हो जाती है।

इस रोग के लक्षण बेढंग होते हैं। कभी तो यह किसी भी इलाजसे नहीं जाता और उम्रभर रहा आता है और कभी जलोदर या जलन्धर का रूप धारण कर लेता है। कभी बच्चा जनने के समय का सा दर्द उठता है और एक मांस का टुकड़ा तर पदार्थ और मैले के साथ निकल पड़ता है अथवा बहुत सी हवा निकल पड़ती है या कुछ भी नहीं निकलता।

अनेक बार झूठे गर्भ का मवाद सड़ जाता है और अनेक बार उस मवाद में जान पड़ जाती है और वह जानवर की सी सूरत में तब्दील हो जाता है। अखबारों में लिखा देखते हैं, फलाँ औरत के कछुए की सी शकल का बच्चा पैदा हुआ। कई घण्टों तक जीता या हिलता-जुलता रहा। एक बार एक स्त्री ने मुर्गे की सूरत का बच्चा जना। ऐसे-ऐसे उदाहरण बहुत मिलते हैं।

सच्चे और झूठे गर्भ की पहचान।

अगर रोग होता है, तो पेट बड़ा होता है और हाथ पाँव सुस्त रहते हैं, पर पेट की सख्ती की गति बालक की सी नहीं होती। पेट पर हाथ रखने या दबाने से वह इधर उधर हो जाती है; परन्तु जो अपने-आप हिलता है वह और तरह का होता है। बच्चा समय पर हो जाता है, पर यह रोग चार-चार बरस तक रहता है और किसी-किसी को उम्र भर। इलाज में देर होने से यह जलन्धर हो जाता है।

इसके होने के ये कारण हैं:—

(१) गर्भाशय में कड़ी सूजन हो जाने से, रज निकलना बन्द हो जाता है और रज के बन्द होजाने से यह रोग होता है। (२) गर्भाशय के परतों में गाढ़ी हवा रुक जाती है, उसके न निकलने से पेट फूल जाता है। इस दशा में जलन्धर के लक्षण दीखते हैं।

प्रसव का समय।

गर्भिणी नवें, दसवें, ग्यारहवें अथवा बारहवें महीने में बच्चा जनती है। अगर कोई विकार होता है, तो बारहवें महीने के बाद भी बच्चा होता है।

वाग्भट्ट में लिखा है—

तस्मिंस्त्वेकाहयातेऽपि कालः सूतेरतः परम्।
वर्षाद्विकारकारी स्यात्कुक्षौ वातेन धारितः॥

आठवें महीने का एक दिन बीतने बाद और बारहवें महीने के अन्त तक बालक के जन्म का समय है। बारहवें महीने के बाद, कोख में वायुद्वारा रोका हुआ गर्भ, विकारों का कारण होता है।

बच्चा होने के २४ घण्टों पहले के लक्षण।

जब ग्लानि हो, कोख और नेत्र शिथिल हों, थकान हो, नीचे के अंग भारी से हों, अरुचि हो, प्रसेक हो, पेशाब बहुत हों; जाँघ, पेट, कमर, पीठ, हृदय, पेड़ू और योनि के जोड़ों में पीड़ा हो; योनि फटती सी जान पड़े, योनि में शूल चलें, योनि से पानी आदि झिरें, जनने के समय के शूल चलें और अत्यन्त पानी गिरे, तब समझो कि बालक आज ही या कल होगा ; यानी ये लक्षण होने से २४ घण्टों में बच्चा हो जाता है। देखा है, बच्चा होने में अगर २४ घन्टों से कमी की देर होती है, तो पेशाब बारम्बार होने लगते हैं, दर्द ज़ोर से चलते हैं और पानी से धोती तर हो जाती है। पानी और ज़रा सा खून आने के थोड़ी देर बाद ही बच्चा हो जाता है।

सूचना—गर्भवती को गर्भावस्था में क्या कर्त्तव्य और क्या अकर्त्तव्य है, उसे पथ्य क्या और अपथ्य क्या है, पेट में लड़का है या लड़की, गर्भिणी की इच्छा पूरी करना परमावश्यक है, गर्भ में बच्चा क्यों नहीं रोता, किस महीने में गर्भ के कौन-कौन अङ्ग बनते हैं,—इत्यादि गर्भिणी-सम्बन्धी सैकड़ों बातें हमने अपनी लिखी "स्वास्थ्यरक्षा" नामक सुप्रसिद्ध पुस्तकमें विस्तार से लिखी हैं। चूंकि "चिकित्साच-न्द्रोदय" का प्रत्येक ख़रीदार "स्वास्थ्यरक्षा" अवश्य

खरीदता है, इस से हम उन बातों को यहाँ फिर लिखना व्यर्थ समझते हैं। जिन्हें ये बातें जाननी हों, "स्वास्थ्यरक्षा" देखें।

प्रसव विलम्ब-चिकित्सा

गर्भिणी जब बच्चा जन लेती है, तब उसका नया जन्म होता है। जिस तरह पेटमें बच्चेके मर जाने पर स्त्रीकी जानको ख़तरा होता है; उसी तरह अनेक कारणोंसे जीते हुए बच्चेके जल्दी न निकलने अथवा ओलनाल, जेर या झिल्ली के पेटमें कुछ देर रुके रहने से स्त्री की मौतका सामान हो जाता है। इसलिये बच्चा जनने वाली की जीवन-रक्षा और सुखके लिये चन्द ऐसे उपाय लिखते हैं, जिनसे बालक आसानी से योनिके बाहर आ जाता है। यद्यपि रुके हुए गर्भ और जेर प्रभृतिको सहज में निकाल देने वाले मन्त्र-तन्त्र और योग वैद्यकमें बहुत से लिखे हैं; पर बालकके रुक जाने के निदान-कारण प्रभृतिका हमारे यहाँ बहुत ही संक्षिप्त ज़िक्र है। आयुर्वेदकी अपेक्षा हिकमतमें इस विषय पर खूब प्रकाश डाला गया है। अतः हम तिब्बे अकबरी, मीज़ान तिब्ब और इलाजुल गुर्बा प्रभृति से दो चार उपयोगी बातें, पाठकों के लाभार्थ, नीचे लिखते हैं:—

हिकमत से निदान कारण और चिकित्सा।

मुख्य चार कारण।

बालक के होने में देर लगने या कठिनाई होने के मुख्य चार कारण हैं:—

(१) गर्भवती का मोटा होना ।

(२) सर्द हवा या सर्दी से गर्भाशय के मुख का सुकड़ जाना ।

(३) बालक के ऊपर की झिल्ली का बहुत ही मोटा होना ।

(४) प्रकृति और हवाकी गरमी ।

पहले कारण का इलाज ।

(१) अगर स्त्री मोटी होती है, तो उस का गर्भाशय भी मोटा होता है । मुटाईकी वजहसे गर्भाशयका मुंह तंग हो जाता है ; यानी जिस सूराख या राह में होकर बालक बाहर आता है, उस सूराखकी चौड़ाई काफी नहीं होती । अगर बालक दुबला-पतला होता है, तब तो उतनी कठिनाई नहीं होती । अगर कहीं मोटा होता है, तब तो महा विपद् का सामना होता है । ऐसे मौक़ों के लिये हकीमोंने नीचे लिखे उपाय लिखे हैं:—

(क) बनफ़शे का तेल, जरबक का तेल, जैतून का तेल, मुर्ग़ और बतख़ की चर्बी एवं गायकी पिंडली की चर्बी,—इनको बच्चा जनने वाली स्त्री के पेट और पीठ पर मलो ।

(ख) बाबूना, सोया और दोनों मरुवों को पानी में औटा कर, उसी पानी में बच्चा जननेवाली को बिठाओ । यह पानी स्त्री की टूँडी सूँडी या नाभि तक रहना चाहिये । इसलिये ढेर सा काढ़ा औटाकर एक टब में भर देना चाहिये और उसी में स्त्री को बिठा देना चाहिये ।

(ग) जंगली पोदीना और हंसराज—इन दोनों का काढ़ा बनाकर मिश्री मिला दो और छानकर स्त्री को पिला दो ।

(घ) काला दाना, जुन्देबेदस्तर और नकछिंकनी,—इनको पीस-छान कर छींक आनेके लिये स्त्री को सुँघाओ । जब छींक आने लगे, तब स्त्री के नाक और मुँह को बन्द कर दो, ताकि भीतर की ओर ज़ोर पड़े और बालक सहज में निकल आवे ।

(ङ) स्त्री की योनि को घोड़े, गधे या ख़च्चर के खुरों का धूआँ

पहुँचाओ। इन में से जिस जानवर का खुर मिले, उसी का महीन चूरा करके आग पर डालो और स्त्री को इस तरह बिठाओ कि, धूआँ योनि की ओर जावे।

(च) अगर स्त्री मांस खानेवाली हो, तो उसे मोटे मुर्ग़का शोरवा बना कर पिलाओ।

दूसरे कारण का इलाज।

(२) अगर सर्द हवा या और किसी प्रकार की सर्दी पहुँचने से गर्भाशय का मुँह सुकुड़ या सिमट गया हो, तो इस का यथोचित उपाय करो। इस के पहचानने में कुछ दिक़्क़त नहीं। अगर गर्भाशय और योनि सर्द या सुकड़े हुए होंगे, तो दीख जायँगे—हाथ से पता लग जायगा। इस के लिये ये उपाय करोः—

(क) स्त्री को गर्म हम्माम में ले जाकर गुनगुने पानी में बिठाओ।

(ख) गर्म और मवाद को नर्म करने वाले तेलों की मालिश करो।

(ग) शहद में एक कपड़ा ल्हेस कर मूत्रस्थान पर रखो।

तीसरे कारण का इलाज।

(३) गर्भाशय में वालक के चारा तरफ एक झिल्ली पैदा हो जाती है। इस झिल्ली को "मुसीमिया" कहते हैं। इससे गर्भगत बालक की रक्षा होती है। यह कद्दूदाने की थैली जैसी होती है,पर उस से ज़ियादा चौड़ी होती है। जब बालक निकलने को ज़ोर करता है और वह यदि वलवान होता है, तो यह झिल्ली झट फट जाती है। बालक उस में से निकल कर, गर्भाशय के मुँह में होता हुआ, योनि के बाहर आ जाता है; पर झिल्ली पीछे निकलती है। अगर यह झिल्ली ज़ियादा मोटी होती है, तो वालक के ज़ोर करने से जल्दी नहीं फटती। बच्चा उस से बाहर निकलने की कोशिश करता है और उसे इसमें तकलीफ भी बहुत होती

है, पर झिल्ली के बहुत मोटी होने की वजह से वह निकल नहीं सकता। ऐसे मौक़े पर बच्चा मर जाता है। बच्चेके मर जाने से ज़च्चा या प्रसूता की जान भी ख़तरे में हो जाती है। इस समय चतुर दाई या डाक्टर की ज़रूरत है। चतुर दाई को बाँयें हाथ से झिल्ली को खींचना और तेज़ छुरे से उसे इस तरह काटना चाहिये, कि ज़च्चा और बच्चा दोनों को कष्ट न हो। झिल्ली के सिवा और जगह छुरा या हाथ पड़ जाने से ज़च्चा और बच्चा दोनों मर सकते हैं।

चौथे कारण का इलाज।

(४) अगर मिज़ाज की गरमी और हवा की गरमी से बालक के होने में कठिनाई हो, तो उस का उचित उपाय करना चाहिये। यह बात गरमी के होने और दूसरे कारणों के न होने से सहज में मालूम हो सकती है। हकीमों ने नीचे लिखे उपाय बताये हैं:—

(क) बनफ़शा का तेल, लाल चन्दन और गुलाब,—इनको ज़च्चाके पेट और पीठ पर मलो।

(ख) खट-मिट्ठे अनार का रस, तुरंजबीन के साथ, स्त्री को पिलाओ।

(ग) गरम चीज़ों से स्त्री को बचाओ। क्योंकि इस हालत में गरमी करने वाले उपाय हानिकारक हैं। स्त्रीको ऐसी जगह में रखो, जहाँ न गरमी हो और न सर्दी।

चन्द लाभदायक शिक्षायें।

जिस रोज़ बच्चा होने के आसार मालूम हों, उस दिन ये काम करो:—

(क) बच्चा होने के दो चार दिन रह जायँ तब से, स्त्रीको नर्म और चिकने शोरबे का पथ्य दो। भोजन कम और हलका दो। शीतल

जल, खटाई और शीतल पदार्थों से स्त्री को बचाओ। किसी भी कारण से नीचे के अंगों में सरदी न पहुँचने दो।

(ख) जननेवाली को समझा दो, कि जब दर्द उठे तब हल्ला-गुल्ला मत करना, सन्तोष और सब्र से काम लेना तथा पाँव पर ज़ोर देना, जिस से ज़ोर का असर अन्दर पहुँचे।

(ग) जब जनने के आसार नमूदार हों, स्त्री को नहाने के स्थान या सोहर में ले जाओ। बहुत सा गर्म जल उस के सिर पर डालो और तेल की मालिश करो। स्त्री से कहो, कि थोड़ी दूर चल-चल कर उकरू बैठे।

(घ) ऐसे समय में दाई को इन में से कोई चीज़ गर्भाशय के मुँह पर मलनी और लगानी चाहिये—अलसी के बीजों का लुआब या तिली के तेल का शीरा, बादाम का तेल या मुर्ग़ी की चर्बी या बतख़ की चर्बी बनफशे के तेल में मिली हुई। गर्भाशय पर इन में से कोई सी चीज़ मलने या लगाने से बच्चा आसानी से फिसल कर निकल आता है।

(ङ) जब ज़रा-ज़रा दर्द उठे, तभी जनने वाली को मलमूत्र आदि से निपट लेना चाहिये। अगर अजीर्ण हो, तो नर्म हुकने से मल को निकाल देना चाहिये।

नोट—ये सब उपाय बच्चा जनने वाली स्त्रियों के लिये लाभदायक हैं। पर, जिन को बालक जनते समय कष्ट हुआ ही करता है, उन के लिये तो इनका किया जाना विशेष रूप से परमावश्यक है।

शीघ्र प्रसव कराने वाले उपाय।

(१) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—चकमक पत्थर कपड़ेमें लपेट कर स्त्री की रानपर बाँध देने से बच्चा आसानी से हो जाता है। पर "तिब्बे अकबरी" में लिखा है-अगर स्त्री चकमक पत्थरको बाँयें हाथ में रखे, तो सुख से बच्चा हो जाय। कह नहीं सकते, इन में से कौन सी विधि ठीक है, पर चकमक पत्थर की राय दोनों ने ही दी है।

(२) घोड़ेकी लीद और कबूतर की बीट पानीमें घोल कर स्त्री को पिला देने से बालक सुख से हो जाता है।

(३) "तिब्बे अकबरी" और "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है कि, अठारह माशे अमलताश के छिलकों का काढ़ा औटाकर स्त्री को पिला देनेसे बच्चा सुख से हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—कोई-कोई अमलताश के छिलकों के काढ़े में "शर्बत बनफशा या चनों का पानी" भी मिलाते हैं। हमने इन दोनों के बिना मिलाये केवल अमलताशके छिलकों के काढ़े से झिल्ली या जेर और बच्चा आसानी से निकल जाते देखे हैं।

(४) स्त्री की योनि में घोड़े के सुम की धूनी देने से बच्चा सुख से हो जाता है।

(५) योनिके नीचे काले या दूसरे प्रकार के साँपों की काँचली की धूनी देने से बालक और जेर नाल आसानी से निकल आते हैं। हकीम अकबर अली साहब लिखते हैं, कि यह हमारा परीक्षा किया हुआ उपाय है। इससे बच्चा वगेरः निश्चय ही फौरन निकल आते हैं, पर इस उपाय से एकाएकी काम लेना मुनासिब नहीं, क्योंकि इसके ज़हर से बहुधा बालक मर जाते हैं। हमारे शास्त्रों में भी लिखा है—

कटुतुम्ब्यहिनिर्मोक कृतवेधनसर्षपैः।
कटुतैलान्वितैर्योनेधूमः पातयतेऽपराम॥

कड़वी तूम्बी, साँपकी काँचली, कड़वी तोरई और सरसों—इन सब को कड़वे तेल में मिला कर,—योनि में इनकी धूनी देने से अपरा या जेर गिर जाती है।

हमारी राय में जब बच्चा पेटमें मर गया हो, उसे काटकर निकालने की नौबत आ जावे, उस समय साँप की काँचली की धूनी देना अच्छा है। क्योंकि इस से बच्चा जननेवाली को तो किसी तरह की हानि होती ही नहीं। अथवा बच्चा जीता-जागता निकल आवे, पर जेर या अपरा न निकले, तब इस की धूनी देनी चाहिये। हाँ, इस में शक नहीं कि, साँप की काँचली जेर या मरे-जीते बच्चे को निकालने में है

अक्सीर। "तिब्बे अकबरी" में, जहाँ मरे हुए बच्चे को पेट से निकालने का ज़िक्र किया गया है, लिखा है—साँपकी काँचली और कबूतर की बीट—इन दोनों को मिलाकर, योनि में इनकी धूनी देने से बच्चा फौरन ही निकल आता है। अकेली साँपकी काँचलीको धूनी भी काफी है। अगर यह उपाय फेल हो जाय, मरा हुआ बच्चा न निकले, तो फिर दाई को हाथ डाल कर ही जेर या बच्चा निकालना चाहिये।

(६) बावूने के नौ माशे फूलों का काढ़ा बना और छान कर, उस में ३ माशे "शहद" मिला कर स्त्री को पिला देने से बच्चा सुख स हो जाता है।

(७) बच्चा जननेवाली के बाँयें हाथमें "मकनातीसी पत्थर" रखने से बच्चा सुख से हो जाता है। "इलाजुल गुर्बा" के लेखक महाशय इस उपाय को अपना आज़माया हुआ कहते हैं।

नोट—एक यूनानी निघण्टु में लिखा है, कि चुम्बक पत्थर को रेशमी कपड़े में लपेट कर, स्त्री की बाईं जाँघ में बाँधने से बच्चा जल्दी और आसानी से होता है। चुम्बक पत्थरको अरबीमें हजरत"मिकनातीस" और फारसीमें 'संग आहनरुबा' कहते हैं। यह मशहुर पत्थर लोहेको अपनी तरफ खींचता है। अगर शरीर के किसी भागमें सूई या ऐसी ही कोई चीज, जो लोहे की हो, घुस जाय और निकालनेसे न निकले, तो वहाँ यही चुम्बक पत्थर रखने से वह बाहर आ जाती है।

(८) "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है—बच्चा जनने वाली को हींग खिलाने से बच्चा सुख से होता है। "तिब्बे अकबरी" में हींग को जुन्देबेदस्तर में मिलाकर खिलाना ज़ियादा गुणकारी लिखा है।

(९) योनि में मनुष्य के सिरके बालों की धूनी देने से बच्चा जनने में विशेष कष्ट नहीं होता।

(१०) करिहारी की जड़, रेशम के धागे में बाँध कर, स्त्री अपने बाँयें हाथ में बाँध ले, तो बच्चा जनते समय का कष्ट व पीड़ा दूर हो जाय। परीक्षित है।

(११) सूरजमुखी की जड़ और पाटलाकी जड़ गर्भिणी के कंठ में बाँध देने से बच्चा सुख से हो जाता है ।

(१२) पीपर और बच को पानी में पीसकर और रेंडीके तेल में मिलाकर, स्त्री की नाभि पर लेप कर देने से बच्चा सुख से होता है। परीक्षित है।

(१३) बिजौरे की जड़ और मुलेठी को घी में पीस कर पीने से बच्चा सुख से पैदा होता है। परीक्षित है। कोई-कोई इसमें शहद भी मिलाते हैं। "वैद्यजीवन" में लिखा है :—

> मध्वाज्ययष्टीमधुलुंगमूलं निपीय सूते सुमुखी सुखेनेन ।
> सुतंडुलांभः सितधान्यकल्कनाद्वमिर्गच्छति गर्भिणीनाम ॥

जिस स्त्री को बच्चा जनते समय अधिक कष्ट हो, उसे मुलेठी और बिजौरे की जड़—इन दोनों को पानी में पीस-घोल और गरम करके पिलाने से बालक सुख से हो जाता है। जिस गर्भवती को कय जियादा होती हों, उसे धनिये का चूर्ण खाकर ऊपर से मिश्री-मिला चाँवलों का पानी पीना चाहिये।

(१४) आदमी के बहुत से बाल जलाकर राख करलो। फिर उस राख को गुलाब-जलमें मिलाकर बच्चा जननेवाली के सिर पर मलो। सुख से बालक हो पड़ेगा।

(१५) लाल कपड़े में थोड़ा नमक बाँध कर, बच्चा जनने वाली के बायें हाथ की तरफ लटका देने से, बिना विशेष कष्ट के सहज में बच्चा हो पड़ता है।

(१६) अगर बच्चा जननेवाली को भारी कष्ट हो,तो थोड़ी सी साँप की काँचली उसके चूतड़ों पर बाँध दो और उसकी योनि में थोड़ी सी काँचली की धूनी भी दे दो। परमात्मा चाहेगा तो सहज में बालक हो जायगा; कुछ भी तकलीफ न होगी।

(१७) बारहसिंगे का सींग स्त्रीके स्तन पर बाँध देने से भी बच्चा सुख से हो जाता है।

(१८) गिद्ध का पंख बच्चा जनने वाली के पाँव के नीचे रखदेने से बच्चा बड़ी आसानी से हो जाता है।

(१९) सरफोंके की जड़ बच्चा जननेवाली की कमर में बाँधने से बालक शीघ्रही बाहर आ जाता है।

(२०) जीते हुए साँप के दाँत स्त्री के कंठ या गले में लटका देने से बच्चा सुख से होता है।

(२१) इन्द्रायण की जड़ को महीन पीस कर और घी में मिला कर, योनि में रखने से बच्चा सुख से हो जाता है।

नोट—इन्द्रायण की जड़ योंही योनि में रखनेसे भी बालक बाहर आजाता है। यह चीज इस कामके लिये अथवा गर्भ गिरानेके लिए अकसीर का काम करती है।

(२२) गायका दूध आध पाव और पानी एक पाव मिलाकर स्त्री को पिलाने से तुरन्त बच्चा हो पड़ता है; कष्ट ज़रा भी नहीं होता।

(२३) कागज़ पर चक्रव्यूह लिख कर स्त्री को दिखाने से भी बच्चा जल्दी होता है।

(२४) फालसे की जड़ और शालपर्णी की जड़—इनको एकत्र पीस कर, स्त्री की नाभि, पेड़ू और भग पर लेप करने से बच्चा सुख से होता है।

(२५) कलिहारी के कन्द को काँजी में पीस कर स्त्री के पाँवों पर लेप करने से बच्चा सुख-पूर्व्वक होता है।

(२६) तालमखाने की जड़ को मिश्री के साथ चबा कर, उसका रस गर्भिणी के कानमें डालने से बच्चा सुख से होता है।

नोट—हिन्दी में तालमखाना, संस्कृत में कोकिलाक्ष, बंगला में कुलियाखाड़ा, कुले काँटो, मरहटी में तालिमखाना और गुजराती में एखरो कहते हैं।

(२७) श्यामा और सुदर्शन-लता को पीस कर और उसमें से बत्तीस तोले लेकर स्त्री के सिर पर रख दो। जब तक उसका रस पाँवों तक टपक कर न आ जाय, सिर पर रखी रहने दे। इस से बच्चा सुख-पूर्व्वक होता है।

(२८) चिरचिरे की जड़ को उखाड़ कर, योनि में रखने से बच्चा सुख से होता है।

नोट—चिरचिरे को चिरचिरा, लटजीरा और ओंगा कहते हैं। संस्कृत में अपामार्ग, बँगला में अपांग, मरहटी में अघाड़ी और गुजराती में अघेडो कहते हैं। इसके दो भेद हैं—(१) सफेद, और (२) लाल। यह जंगल में अपने-आप पैदा हो जाता है। बड़े कामकी चीज है।

(२९) पाढ़ की जड़ को पीस कर योनि पर लेप करने या योनि में रखने से बच्चा सुख से हो जाता है।

नोट—पाढ़ और पाठ, हिन्दी नाम हैं। संस्कृत में पाठा, बँगला में आकनादि और मरहटी में पहाड़ मूल कहते हैं।

(३०) अड़ूसे की जड़ को पीस कर योनि पर लेप करने या योनि में रखने से बालक सुख से होता है।

नोट—हिन्दीमें अड़ूसा, वासा और बिसोंटा; बंगलामें बासक, मरहटी में अड़ूलसा और गुजराती में अड़ूसो कहते हैं। दवा के काम में अड़ूसेके पत्ते और फूल आते हैं। मात्रा चार माशे की है।

(३१) शालिपर्णी की जड़ को चाँवलों के पानी में पीस कर नाभि, पेड़ू और भग पर लेप करने से स्त्री बच्चा सुख से जनती है।

नोट—हिन्दीमें सरिवन, संस्कृत में शालिपर्णी, बंगलामें शालपानि, मरहटी में सालवण और गुजराती में समेरवो कहते हैं।

(३२) पाढ़ के पत्तों को स्त्री के दूध में पीसकर पीने से मूढ़गर्भ की व्यथा से स्त्री शीघ्र ही निवृत्त हो जाती है; यानी अड़ा हुआ बच्चा निकल आता है।

नोट—पाढ़के लिये पिछला नं० २९ का नोट देखिये।

(३३) उत्तर दिशा में पैदा हुई ईख की जड़ उखाड़ कर, स्त्री के बराबर डोरे में बाँध कर, कमर में बाँध देने से सुख से बच्चा होता है।

(३४) उत्तर दिशा में उत्पन्न हुए ताड़ के वृक्ष की जड़ को कमर में बाँधने से बच्चा सुख से पैदा होता है। बच्चा जननेवाली को पीड़ा नहीं होती।

(३५) गाय के मस्तक की हड्डी को जच्चा के घरकी छत पर रखने से स्त्री तत्काल सुख-पूर्वक बच्चा जनती है।

नोट—नरी नाद का सूखा मस्तक, जिस में केवल हड्डी ही रह गई हो, लेना चाहिये।

(३६) कड़वी तूम्बी, साँप की कैंचली, कड़वी तोरई और सरसों—इन को कड़वे तेल में मिलाकर, इन की धूनी योनि में देने से आंवल अर्थात् जेर गिर जाती है।

(३७) प्रसूता को कमर में भोजपत्र और गूगल की धूनी देने से जेर गिर जाती और पीड़ा तत्काल नष्ट हो जाती है।

(३८) बालों को उँगली में बाँधकर कण्ठ या मुँह में घिसने से जेर आदि गिर जाती हैं।

(३९) कलिहारीकी जड़ पीसकर हाथ या पाँवों पर लेप करने से जेर आदि गिर जाती हैं।

(४०) कूट, शालिधानकी जड़ और गोमूत्र,—इनको एकत्र मिला-कर पीने से निश्चय ही ज़ेर आदि गिर जाते हैं।

(४१) सरिवन, नागदौन और चीते की जड़—इन को बराबर-बराबर लेकर पीस लो। इस में से ३ माशे चूर्ण गर्भिणीको खिलाने से शीघ्र ही बच्चा होता और प्रसव में पीड़ा नहीं होती।

नोट—नागदौन-नगदमन और बरियारा हिन्दी नाम हैं। संस्कृतमें नागदमनी, बँगला में नागदना, मरहटी में नागदमणा और गुजराती में झीपटो कहते हैं।

(४२) मैनफल की धूनी योनि के चारों ओर देने से सुख से बच्चा हो जाता है।

(४३) कलिहारी की जड़ डोरे में बाँधकर हाथ में बाँधने से सुख से बच्चा हो जाता है।

(४४) हुलहुल की जड़ डोरे में बाँधकर हाथ या सिर में बाँधने से शीघ्र ही बालक हो जाता है। परीक्षित है।

नोट—सूरजमुखीकी जड़ कोही हुलहुल कहते हैं। अङ्गरेजीमें उसे सनफ्लावर (Sun flower) कहते हैं।

(४५) पोई की जड़ को सिल पर जल के साथ पीस कर, उस में

तिल का तेल मिलाकर, उसे योनि के भीतर रखने या लेप करने से स्त्री सुख से बच्चा जनती है ।

(४६) कलिहारी की गाँठ पानी में पीसकर अपने हाथ पर लेप कर लो । जिस स्त्री को बच्चा जनने में कष्ट हो, उस के हाथ को अपने लेप लगे हुए हाथ से छूओ अथवा उस गाँठ में धागा पिरोकर स्त्री के हाथ या पैर में बाँध दो । इस उपाय से बालक सुख से हो जाता है । परीक्षित है ।

(४७) केले की गाँठ कमर में बाँधो । इस के बाँधने से फौरन बच्चा होगा । ज्योंही बच्चा और जेर निकल चुके, गाँठ को खोलकर फैंक दो । परीक्षित है ।

(४८) गेहूँकी सेमई पानीमें उबालो । फिर कपड़ेमें छान कर पानी निकाल लो । आध सेर सेमई के पानी में आध पाव ताज़ा घी मिला लो । इसमें से थोड़ा-थोड़ा पानी स्त्री को पिलाओ । ज्योंही पेट दुखना शुरु हो, यह पानी देना बन्द कर दो । जल्दी और सुख से बच्चा जनाने को यह उपाय उत्तम और परीक्षित है ।

(४९) कड़वे नीम की जड़ स्त्री की कमर में बाँधनेसे तुरन्त बच्चा हो जाता है । बच्चा हो चुकते ही जड़ को खोलकर फैंक दो । परीक्षित है ।

(५०) काकमाची की जड़ कमर में बाँधने से सहज में बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

(५१) कसौंदी की पत्तियों का रस स्त्री को पिलाने से सुख से बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—संस्कृत में कासमर्द और हिन्दी में कसौंदी कहते हैं । इसके पत्तों का रस कान में डालने से कान में घुसा हुआ डांस या मच्छर मर जाता है ।

(५२) तूम्बी की पत्ती और लोध—इन को बराबर-बराबर लेकर, पीस लो और योनि पर लेप कर दो । इस से शीघ्र ही बालक हो जाता है । परीक्षित है ।

नोट—साथही बिजौरेकी जड़ और मुलहटी को पीसकर, शहद और घी में

मिलाकर स्त्रीको पिलादो। इन दोनों उपायों के करने पर भी क्या बच्चा जनने वाली को कष्ट होगा? इसे खिलाओ और कालिपर्णी की जड़को चांवलों के पानी में पीस कर स्त्री की नाभि, पेड़ू और योनिपर लेप कर दो। ये नुसखे कभी फेल नहीं होते।

(५३) सुधा, इन्दु और समुद्र—इन तीन नामों को ज़ोर से सुनाने से गर्भ जल्दी ही स्थान छोड़ देता है।

(५४) ताड़ की जड़, मैनफल की जड़ और चीते की जड़—इन के सेवन करने से मरा हुआ और जीता हुआ गर्भ आसानी से निकल आता है। चक्रदत्त।

(५५) "एरंडस्य वनेः? काको गंगातीरमुपागतः। इतः पिवति पानीयं विशल्या गर्भिणी भवेत्।" इस मंत्र से सात वार पानी को मतर कर पिलाने से गर्भिणी का शल्य नष्ट होता है, यानी बच्चा सुख से हो जाता है। चक्रदत्त।

(५६) "मुक्ताः पाशा विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः। मुक्ताः सर्व भयाद्गर्भ एह्येहि मारिच स्वाहा।" इस च्यवन मंत्र से मतरे हुए पानी को पीने से स्त्री सुख से बच्चा जनती है। चक्रदत्त-वंगसेन।

नोट—इन मंत्रों से मतरा हुआ जल पिलाया जाय और कड़वी तूम्बी, साँपकी कांचली, कड़वी तोरई और सरसों को बराबर-बराबर लेकर और कड़वे तेल में मिलाकर-इन की स्त्री की योनिमें धूनी दी जाय-तो सुख से बालक होनेमें क्या शक है? यह नुसखा जीते और मरे गर्भ के निकालने में रामवाण है। परीक्षित है।

(५७) तीसका मंत्र लिखकर, मिट्टी के शकोरे में रखकर और धूप देकर बच्चा जननेवाली को दिखाने से सुख से बालक होता है। यह बात वैद्यरत्न और वंगसेन आदि अनेक ग्रन्थों में लिखी है।

नोट—तीस का मंत्र हमारी लिखी "स्वास्थ्य रक्षा" में मौजूद है।

(५८) चोंटली यानी चिरमिटी की जड़ के सात टुकड़े और उसी के सात पत्ते कमर में बाँधने से स्त्री सुख से बच्चा जनती है।

(५९) पाढ़ और चिरचिरे की जड़—दोनों को जल में पीसकर, योनि में लेप कर देने से तत्काल बच्चा होता है।

(६०) हाथ पैरके नाखूनों और नाभि पर सेहुंड़ के दूध का लेप करने से स्त्री फौरन ही बच्चा जनती है।

(६१) फालसे की जड़ और शालपर्णी की जड़ को पीस कर योनि पर लेप करने से मूढ़ गर्भवती स्त्री भी सुखसे बच्चा जनती है।

(६२) कूट और तालीसपत्र को पानी के साथ पीस कर, कुल्थी के काढ़े के साथ पिलाने से सुख से बच्चा होता है।

(६३) बाँस की जड़ कमर पर बाँधने से निश्चय ही सुख से बालक होता है।

(६४) घर के पानी में घर का धूआँ पीने से गर्भ जल्दी निकलता है।

मरा हुआ बच्चा निकालने और गर्भ गिराने के उपाय।

गर्भ गिराना पाप है।

गर्भ गिराना या हमल इस्कात करना ईश्वर और राजा—दोनों के सामने महापाप है। अगर राजा जान पाता है, तो भारी दण्ड देता है और यदि राजा की नज़रों से मनुष्य बच भी जाता है, तो ईश्वर की नज़रों से तो बच ही नहीं सकता। हमारी स्मृतियों में लिखा है, भ्रूणहत्या करनेवाले को लाखों-करोड़ों बरसों तक रौरव नरक में रहना होता है। वहाँ यम-दूत अपराधी को घोर-घोर कष्ट देते हैं। अतः

ईश्वर से डरनेवालों को न तो व्यभिचार करना चाहिये और न गर्भ गिराना चाहिये। एक पाप तो व्यभिचार है और दूसरा गर्भ गिराना। व्यभिचार से गर्भ गिराना हज़ारों-लाखों गुना बढ़कर पाप है, क्योंकि इस से एक निर्दोष प्राणी की हत्या होती है। अगर किसी तरह व्यभिचार हो ही जाय, तो भी गर्भ कोतो भूलकर भी न गिराना चाहिये। ज़रासी लोक-लज्जा के लिए इतना बड़ा पाप कमाना महामूर्खता है। दुनिया निन्दा करेगी, बुरा कहेगी, पर ईश्वर के सामने तो अपराधी न होना पड़ेगा।

हम हिन्दुओंमें पांच-पाँच या सात-सात और ज़ियादा-से-ज़ियादा नौ दश बरसकी उम्र में कन्याओं की शादी करदी जाती है। इससे करोड़ों लड़कियाँ छोटी उम्र में ही विधवा हो जाती हैं। वे जानती भी नहीं, कि पुरुष-सुख क्या होता है। जब उनको जवानी का जोश आता है, कामदेव ज़ोर करता है, तब वे व्यभिचार करने लगती हैं। पुरुष-संग करने से गर्भ रह जाता है। उस दशा में वह गर्भ गिराने में ही अपनी भलाई समझती हैं। अनेक स्त्री-पुरुष पकड़े जाकर सज़ा पाते हैं, अनेक दे-ले कर बच जाते हैं और अनेकों का पुलिस को पता ही नहीं लगता। हमारी रायमें, अगर विधवाओंका पुनर्विवाह कर दिया जाय, तो यह हत्याएँ तो न हों।

आर्यसमाजी विधवाविवाह पर ज़ोर देते हैं, तो सनातनी हिन्दू उनकी मसखरी करते और विधवा-विवाह को घोर पाप बतलाते हैं। पर उन्हें यह नहीं सूझता, कि अगर विधवा-विवाह पाप है, तो भ्रूण-हत्या कितना बड़ा पाप है। भ्रूणहत्या और व्यभिचार उन्हें पसन्द है, पर विधवा-विवाह पसन्द नहीं!! जो स्त्रियाँ विधवा-विवाह के नाम से कानों पर उँगली धरती हैं, इस का नाम लेना भी पाप समझती हैं, वे ही घोर व्यभिचार करती हैं। ऐसी घटनाएँ हमने आँखों से देखी हैं। हमारी ५० सालकी उम्र में, हमने इस बातको बारीकी से जाँच की, तो हमें यही मालूम हुआ कि हिन्दुओं की सौ

विधवाओं में से नब्बे व्यभिचार करती हैं, पर ८० फी सदी में तो हमें ज़रा भी शक नहीं। हम कट्टर सनातन धर्मी और ब्राह्मण के भक्त हैं; आर्यसमाजी नहीं; पर विधवा-विवाह के मामले में हम उनसे पूर्णतया सहमत हैं। हमने हर पहलू से विचार करके एवं धर्मशास्त्र का अनुशीलन और अध्ययन करके ही अपनी यह राय स्थिर की है। हमने कितनी ही विधवाओं से विधवा-विवाह पर उनकी राय भी ली, तो उन्होंने यही कहा, कि मर्द आप तो चार-चार विवाह करते हैं, पर स्त्रियाँ अगर अक्षतयोनि भी हों, तो उनका पुनर्विवाह नहीं करते। यह उनका घोर अन्याय है। कामवेग को रोकना महा कठिन है। अगर ऐसी विधवाएँ व्यभिचार करें तो दोष-भागी हो नहीं सकतीं; हिन्दुओं को अब लकीर का फ़क़ीर न होना चाहिये। विधवा-विवाह जारी करके, हज़ारों पाप और कन्याओं के शाप से बचना चाहिये। विधवा-विवाह न होने से हमारी हज़ारों-लाखों विधवा बहन-बेटियाँ मुसलमानी हो गईं। हम व्यभिचार पसन्द करें, भ्रूणहत्या को बुरा न समझें, अपनी स्त्रियों को मुसल्मानी बनते देख सकें; पर रोती-बिलपती विधवाओं का दूसरा विवाह होना अच्छा न समझें; हमारी इस समझ की बलिहारी है।" हमने नीचे गर्भ गिराने के नुसख़े इस गरज़ से नहीं लिखे कि, व्यभिचारिणी विधवाएँ इन नुसख़ों को सेवन करके गर्भ गिरावें; बल्कि नेक स्त्रियों की जीवनरक्षा के लिए लिखे हैं।

गर्भ गिराना उचित है।

हिकमत में लिखा है, नीचे की हालत में गर्भ गिराना उचित है:—

(१) गर्भिणी कम-उम्र और नाज़ुक हो एवं दर्द न सह सकती हो। बच्चा जनने से उसकी जान जाने की सम्भावना हो।

(२) गर्भ न गिराने से स्त्री के भयानक रोगों में फँसने की सम्भावना हो।

(३) बच्चा जनने के दर्द चार दिनों तक रहें, पर बालक न हो, तब समझना चाहिये कि बच्चा पेट में मर गया। उस दशा में गर्भिणी की जान बचाने के लिए फौरन से पहले गर्भ गिरा देना चाहिये। अगर मरा हुआ बच्चा स्त्री के पेट में देर तक रहता है, तो उसे ज़हर चढ़ जाता और वह मर जाती है।

पेट में मरे और जीते बच्चे की पहचान।

अगर बालक पेट में कड़ा पत्थर सा हो जाय, गर्भिणी करवट बदले तो वह पत्थर की तरह इधर से उधर गिरजाय, गर्भिणी की नाभि पहले की अपेक्षा शीतल हो जाय, छाती कमज़ोर हो जाय, आँखों की सफेदी में स्याही आ जाय अथवा नाक, कान और सिर सफेद हो जायँ, पर होठ लाल रहें, तो समझो कि बच्चा मर गया। बहुत बार देखा है, जब पेट में बच्चा मर जाता है, तब वह हिलता नहीं—पत्थर सा रखा रहता है, स्त्री के हाथ-पाँव शीतल हो जाते हैं और श्वास लगातार चलने लगता है। इस दशामें गर्भ गिरा कर ही गर्भिणी की जान बचाया जा सकती है।

याद रखना चाहिये, जिस तरह मरे हुए बालक के देर तक पेट में रहने से स्त्री के मर जाने का डर है, उसी तरह बच्चे के चारों ओर रहनेवाली झिल्ली, जेरनाल या अपरा के देर तक पेट में रहने से भी स्त्री के मरने का भय है।

नोट—यद्यपि हमने "प्रसव विलम्ब चिकित्सा" और "गर्भ गिराने वाले योग" अलग-अलग शीर्षक देकर लिखे हैं; पर इन दोनों शीर्षकों में लिखी हुई दवाएँ एक ही हैं। दोनों से एक ही काम निकलता है। इनके सेवन से बच्चा जल्दी होता तथा मरा बच्चा और झिल्ली या जेर नाल निकल आते हैं। ऐसे ही अवसरों के लिए हमने गर्भ गिराने वाले उपाय लिखे हैं।

गर्भ गिराने वाले नुसख़े।

(१) गाजर के बीज, तिल और चिरौंजी—इन तीनों को गुड़के साथ खाने से निश्चय ही गर्भ गिर जाता है। "वैद्यरत्न"में लिखा है-

गृंजनस्य च बीजानि तिलकारविके अपि।
गुड़ेनभुक्तमेतत्तु गर्भं पातयति ध्रुवम्॥

(२) सोंठ तीन माशे और लहसन पन्द्रह माशे दोनों को पानी में जोश देकर काढ़ा बनालो। इस नुसख़े के तीन दिन पीने से गर्भ गिर पड़ता है। "वैद्य वल्लभ" में लिखा है—

विश्वौषधात्पंचगुणं रसोनकमुत्काल्य नारी त्रिदिनं प्रपाययेत।
गर्भस्यापातः प्रभवेत्सुखेन योगोयमाद्यः कविहस्तिनामतः॥

(३) पीपर, पीपलामूल, कटेरी, निर्गुण्डी और फरफेंदू—इन को बराबर-बराबर पाँच-पाँच या छै-छै माशे लेकर कुचल लो और हाँडी में पाव-सवा पाव जल डाल कर काढ़ा बना लो। चौथाई जल रहने पर उतार कर छान लो और पीओ। इस नुसखे से गर्भ गिर जाता है।

नोट—फरफेंदू का दूसरा नाम इन्द्रायण है।

(४) चिरमिटी का चार तोले चूर्ण जल के साथ तीन दिन पीने से गर्भ गिर जाता है।

(५) अलसी के तेल को औटाकर, उस में पुराना गुड़ मिला दो और स्त्री को पिलाओ। इस नुसखे से ३।४ दिन में या जल्दी ही गर्भ गिर जाता है।

(६) चार तोले अलसी के तेल में "गूगल" मिला कर औटा लो और स्त्री को पिलाओ। इस नुसखे से गर्भ अवश्य गिर जायगा।

(७) इन्द्रायण की जड़ योनिमें रखने से गर्भ गिर जाता है।

(८) इन्द्रायण की जड़ की बत्ती बनाकर योनि में रखने से भी गर्भ गिर जाता है।

(९) फिटकरी और बाँस की छाल—इन दोनों को औटाकर काढ़ा कर लो। फिर इस में से ३२ माशे काढ़ा नित्य सात दिन तक पीने से गर्भ गिर जाता है।

(१०) हज़ार-इस्पन्द के बीज खाने और बिलसाँ के तेल में कपड़ा भिगो कर योनि में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(११) हकीम लोग कहते हैं, अगर गर्भिणी बखुरमरियम पर पाँव रखदे, तो गर्भ गिर जाय।

(१२) इन्द्रायण के पत्तों का स्वरस निकाल कर, गर्भाशय में पिचकारी देने से और इसी स्वरस में एक ऊनका टुकड़ा भिगोकर योनि में रखने से गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

(१३) गावजुबाँ की जड़ का स्वरस पिचकारी द्वारा गर्भाशय में पहुँचाने या इसी स्वरस में कपड़े की बत्ती भिगोकर गर्भाशय में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(१४) दस माशे चूका-घास सिल पर पीसकर खाने से फ़ौरन ही गर्भ गिरता है।

(१५) साढ़े दस माशे हींग और साढ़े दश माशे सूखी तुलसी—इन दोनों को मिला कर, सवेरे-शाम, "देवदारु" के काढ़े के साथ पीने से फ़ौरन गर्भ गिरता है। यह एक ख़ूराक दवा है।

(१६) नौसादर २५ माशे और क़रीला १०॥ माशे लाकर रखलो। पहले क़रीले को पीसकर बहुत थोड़े पानी में घोल दो। इस के बाद नौसादर को महीन पीस कर क़रीले के पानी में मिला दो और छुहारे की गुठली-समान बत्ती बनालो। इस बत्ती को सारी रात गर्भाशय के मुँह में रखो और दोनों जाँघों को एक तकिये पर रखकर सो जाओ। इस उपाय से गर्भ गिर जायगा।

(१७) साँप की काँचली की धूनी योनि में देने से गर्भ गिर जाता है। काले साँपकी काँचली अधिक गुणकारी है।

(१८) अगर स्त्री गरम-मिज़ाज वाली हो और गर्भ गिराना

हो, तो ३॥ माशे खतमी सिल पर पानी के साथ पीसकर, आध सेर जल में मिला दो और उसे पिला दो। इस दवा से बालक फिसल कर निकल पड़ेगा।

(१९) सत्तर माशे तिल कूट कर २४ घण्टों तक पानी में भिगो रखो। सवेरे ही कपड़े में छान कर उस पानी को पीलो। इस नुसखे से बालक फिसल कर निकल आवेगा।

(२०) जङ्गली पोदीना, खङ्गाली लकड़ी, तुर्की अगर, कड़वा कूट, तज, अजवायन, पोदीना, दोनों तरह के मरूवे, नाकरून घास के बीज, मेथी, पहाड़ी गन्दना, काली झाँप, जदविलसाँ और तगर—सब को बराबर-बराबर लेकर एक बड़े घड़े में औटाकर काढ़ा कर लो। फिर उस काढ़े को एक टब या गहरे और चौड़े बर्तन में भर दो और उस काढ़े में स्त्री को बिठा दो; गर्भ गिर जायगा। जब गर्भ गिर जाय, गूगल, जूफा, हुसुल, सातर, अक्लेकुल-बतम और राई—इन में से जो-जो चीज़ मिलें, उन को आग पर डाल-डालकर गर्भाशय को धूनी दो। इस उपाय से रज गिरता रहेगा—गाढ़ा न होने पावेगा।

(२१) इन्द्रायण का गूदा, तुलसी के पत्ते और कूट—इन को सात-सात माशे लेकर, महीन पीस लो और बैल के पित्ते में मिला कर नाभि से पेड़ू और योनि तक इस का लेप कर दो; गर्भ गिर जायगा।

(२२) इन्द्रायण के स्वरस में रूई का फाहा भिगोकर योनि में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(२३) कड़वे तेल में साबुन मिलाकर, उस में रूई का फाहा भिगोकर, गर्भाशय के मुँह में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(२४) कड़वी तोरई बीजों समेत पानी के साथ सिल पर पीसकर, नाभि से योनि तक लेप करने और इसी में एक रूई का फाहा भिगोकर गर्भाशय में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(२५) मुरमक्की गुड़ में लपेटकर खाने और परवल पीसकर शाफा करने से गर्भ गिर जाता है।

(२६) बथुए के बीज १॥ तोले लाकर, आध सेर पानी में डाल कर काढ़ा बनाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार कर कपड़े में छान लो और पिलाओ। इस नुसख़े से अवश्य गर्भ गिर जाता है। बहुत उत्तम नुसखा है।

(२७) साढ़े चार माशे अस्नान पीस-कूट और छान कर फाँकने से गर्भ गिर जाता है।

(२८) सहँजने की छाल और पुराना गुड़—इन को औटाकर पीने से गर्भ गिर जाता और जेरनाल या झिल्ली आदि निकल आते हैं।

(२९) जङ्गली कबूतर की बीट और गाजर के बीज बराबर-बराबर लेकर, आग पर डाल-डालकर, योनि को धूनी देने से गर्भ गिर जाता है।

(३०) ऊँटकटारे की जड़ पानी के साथ सिल पर पीस कर पेट पर लेप करने से गर्भ गिर जाता है।

(३१) गुड़हल के फूल जल के साथ पीस कर, नाभि के चारों तरफ लेप करने से गर्भ गिर जाता है।

(३२) गंधक, मुरमक्की, हींग और गूगल, इन चारों को महीन पीसकर, आग पर डाल-डाल कर गर्भाशय को धूनी देने से गर्भ गिर जाता है। अगर इन में बैल का पित्ता भी मिला दिया जाय, तब तो कहना ही क्या?

(३३) घोड़े की लीद योनि के सामने जलाने या धूनी देने से जीते हुए और मरे हुए बच्चे फौरन निकल आते हैं।

(३४) अनार की छाल की धूनी योनि में देने से गर्भ गिर जाता है।

(३५) निहार मुँह या खाली कलेजे दस माशे शोरा खाने से गर्भ गिर जाता है।

(३६) अरण्ड की नरम टहनी को रेंडी के तेल में भिगोकर गर्भाशय के मुख में रखने से गर्भ गिर जाता है।

(३७) गधे के खुर और उसी के गू को गर्भाशय को धूनी देने से गर्भ गिर जाता है।

(३८) मेथी, हल्दी और फिटकरी बीस-बीस माशे, तूतिया दस माशे और भड़भूँजे के छप्पर का धूआँ दस माशे—इन सबको पानी के साथ पीसो और बत्ती बनालो। पहले गर्भाशय के नर्म करने को उस में घी और पोदीने की पट्टी रखो। इस के बाद सवेरे-शाम ऊपर की बत्ती गर्भाशय के मुख में रख दो; गर्भ गिर जायगा।

जब गर्भ गिर जाय, घी में फाहा भिगोकर गर्भाशय में रख दो। इस से पीड़ा नष्ट हो जायगी। साथ ही गोखरू ६ माशे, खरबूजे के बीज १ तोले और सौंफ १ तोले को औटा कर छान लो और मिश्री मिलाकर स्त्री को पिला दो। इस के सिवा और कुछ भी खाने को मत दो। पानी के बदले में, कपास की हरी कली और बाँस की हरी गाँठ प्रत्येक अस्सी-अस्सी माशे लेकर पानी में औटा लो और इसी पानी को पिलाते रहो। जिस स्त्री के पेट से मरा हुआ बच्चा निकलता है, उसे यही पानी पिलाते हैं और खाने को कई दिन तक कुछ नहीं देते। कहते हैं, इस जल के पीने से ज़हर नहीं चढ़ता।

(३९) गाजर के बीज, मेथी के बीज और सोये के बीज—तीनों छब्बीस-छब्बीस माशे लेकर, दो सेर पानी में औटाओ। जब आधा पानी रह जाय, उतार कर मल-छान लो। इस नुसखे के कई दिन पीने से गर्भ गिर जाता है।

(४०) एलुआ, बिसखपरे की जड़, तूतिया, खिरनी के बीज और महुए के बीज,—बराबर-बराबर लेकर कूट-पीस लो। फिर पानी के साथ सिल पर पीस कर बत्ती बना लो और उसे गर्भाशय में रखो।

इस तरह सवेरे-शाम कई दिन तक ताज़ा बत्ती रखने से गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

(४) अरण्ड की कली २० माशे, एलुआ ४ माशे और खिरनी के बीजों की गिरी ४ माशे—इन सब को पानी के साथ महीन पीस कर बत्ती बना लो और गर्भाशय में रखो। सवेरे-शाम ताज़ा बत्ती रखने से २। ३ दिन में गर्भ गिर जाता है।

(४२) अखरोट की छाल, बिनौले की गिरी, मूली के बीज, गाजर के बीज, सोये के बीज और कलौंजी—इन को बराबर-बराबर लेकर जौकुट करलो। फिर इन के वज़न से दूना पुराना गुड़ लेलो। सब को मिलाकर हाँडी में पानी के साथ औटा लो। जब तीसरा भाग पानी रह जाय, उतार कर पीलो। इस नुसखे से गर्भ गिर जाता है। परीक्षित है।

मूढ़गर्भ-चिकित्सा

मूढ़गर्भ के लक्षण।

जो गर्भ योनि के मुँह पर आकर अड़ जाता है, उसे "मूढ़ गर्भ" कहते हैं। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

> मूढ़ः करोति पवनः खलु मूढ़गर्भं।
> शूलंच योनि जठरादिषु मूत्रसंगम्॥

अपने कारणों से कुपित हुई—कुण्ठित चालवाली वायु, गर्भाशय में जाकर, गर्भ की गति या चालको रोक देती है, साथही योनि और पेट में शूल चलाती और पेशाब को बन्द कर देती है

खुलासा यह कि, वायु के कुपित होने की वजह से गर्भ योनि के

मुँह पर आकर अड़ जाता है, न वह भीतर रहता है और न बाहर, इस से जनने वाली स्त्री की ज़िन्दगी खतरे में पड़ जाती है। कोई कहते हैं, वह गर्भ चार प्रकार से योनि में आकर अड़ जाता है और कोई कहते हैं, वह आठ प्रकार से अड़जाता है। पर यह बात ठीक नहीं, वह अनेक तरह से योनि में आकर अड़ जाता है।

मूढ़ गर्भ की चार प्रकार की गतियाँ।

(१) जिसके हाथ, पाँव और मस्तक योनि में आकर अटक जाते हैं, वह मूढ़ गर्भ कील के समान होता है, इसलिये उसे "कीलक" कहते हैं।

(२) जिसके दोनों हाथ और दोनों पाँव बाहर निकल आते हैं और बाक़ी शरीर योनि में अटका रहता है, उसे "प्रतिखुर" कहते हैं।

(३) जिसके दोनों हाथों के बीच में होकर सिर बाहर निकल आता है और बाक़ी शरीर योनि में अटका रहता है, उसे "बीजक" कहते हैं।

(४) जो दरवाज़े की आगल की तरह, योनि-द्वार पर आकर अटक जाता है, उसे "परिघ" कहते हैं।

मूढ़ गर्भ की आठ गति।

(१) कोई मूढ़ गर्भ सिर से योनि-द्वारको रोक लेता है।

(२) कोई मूढ़ गर्भ पेट से योनि-द्वार को रोक लेता है।

(३) कोई कुबड़ा होकर, पीठ से योनिद्वारको रोक लेता है।

(४) किसी का एक हाथ बाहर निकल आता और बाक़ी शरीर योनिद्वार में अटका रहता है।

(५) किसी के दोनों हाथ बाहर निकल आते हैं, और बाक़ी सारा शरीर योनिद्वार में अड़ा रहता है।

(६) कोई मूढ़ गर्भ आड़ा होकर योनिद्वार में अड़ा रहता है।

(७) कोई गर्दन के टूट जाने से, तिर्छा मुँह करके योनिद्वार को रोक लेता है।

(८) कोई मूढ़ गर्भ पसलियों को फिराकर योनि-द्वार में अटका रहता है।

सुश्रुतके मत से मूढगर्भ की आठ गति।

(१) कोई मूढ़ गर्भ दोनों साथलोंसे योनिके मुखमें आता है।

(२) कोई मूढ़ गर्भ एक साथल—जाँघ से कुबड़ा होकर दूसरी साथल से योनि के मुँह में आता है।

(३) कोई मूढ़गर्भ शरीर और साथल को कुबड़े करके, कूलों से आड़ा होकर, योनिद्वार पर आता है।

(४) कोई मूढ़ गर्भ अपनी छाती, पसली और पीठ इन में से किसी एक से योनिद्वार को ढक कर अटक जाता है।

(५) कोई मूढ़ गर्भ पसलियों और मस्तक को अड़ाकर एक हाथ से योनिद्वार को रोक लेता है।

(६) कोई मूढ़ गर्भ अपने सिर को मोड़ कर दोनों हाथों से योनिाद्दर को रोक लेता है।

(७) कोई मूढ़ गर्भ अपनी कमर को टेढ़ी करके, हाथ, पाँव और मस्तक से योनिद्वार में आता है।

(८) कोई मूढ़ गर्भ एक साथल से योनिद्वार में आता और दूसरी से गुदा में जाता है।

असाध्य मूढगर्भ और गर्भिणी के लक्षण।

जिस गर्भिणी का सिर गिरा जाता हो, जो अपने सिर को ऊपर न उठा सकती हो, शरीर शीतल हो गया हो, लज्जा न रही हो,

कोख में नीली-नीली नसें दीखती हों, वह गर्भ को नष्ट कर देती है और गर्भ उसे नष्ट कर देता है।

मृतगर्भ के लक्षण।

मूढ़ गर्भ की दशा में बच्चा जीता भी होता है और मर भी जाता है। अगर मर जाता है, तो नीचे लिखे हुए लक्षण देखे जाते हैं:—

(१) गर्भ न तो फड़कता है और न हिलता-जुलता है।

(२) जनने के समय के दर्द नहीं चलते।

(३) शरीर का रंग स्याही-माइल-पीला हो जाता है।

(४) श्वास में बदबू आती है।

(५) मरे हुए बच्चे के सूज जाने के कारण शूल चलता है।

नोट—बंगसेन ने पेट पर सूजन होना और भावमिश्रने शूल चलना लिखा है। तिब्बे अकबरीमें लिखा है, अगर पेट में गति न जान पड़े, बच्चा हिलता-डोलता न मालूम पड़े, पत्थर सा एक जगह रखा रहे, स्त्रीके हाथ पाँव शीतल हो गये हों और सांस लगातार आता हो, तो बालक को मरा हुआ समझो।

पेट में बच्चे के मरने के कारण।

गर्भ के पेट में मरजाने के यों तो बहुत से कारण हैं, पर शास्त्र में तीन कारण लिखे हैं:—

(१) आगन्तुक दुःख। (२) मानसिक दुःख।

(३) रोगों का दुःख।

खुलासा यह है कि, महतारी के प्रहार या चोट आदि आगन्तुक कारणों से और शोक-वियोग आदि मानसिक दुःखों से तथा रोगों से पीड़ित होनेके कारण गर्भ पेट में ही मरजाता है। बहुत से अज्ञानी सातवें, आठवें और नवें महीनों में या बच्चा होने के दो चार दिन

पहले तक मैथुन करते हैं। मैथुन के समय किसी बातका ध्यान तो रहता नहीं, इससे बालक को चोट लगजाती और वह मर जाता है। इसी तरह और किसी वजह से चोट लगने या किसी इष्ट मित्र या प्यारे नातेदार के मर जाने अथवा धन या सर्वस्व नाश हो जाने से गर्भवती के दिल पर चोट लगती है और इसके असर से पेट का बच्चा मर जाता है। इसी तरह शरीर में रोग होने से भी बच्चा पेट में ही मर जाता है। पेट में बच्चे के मर जाने से, उसका बाहर निकलना कठिन हो जाता है और स्त्री की जान पर आ जाती है।

और ग्रन्थों में लिखा है—अगर गर्भवती स्त्री वातकारक अन्न-पान सेवन करती है एवं मैथुन और जागरण करती है, तो उस के योनि-मार्ग में रहने वाली वायु कुपित होकर, ऊपर को चढ़ती और योनिद्वार को बन्द कर देती है। फिर भीतर रहने वाली वायु गर्भगत बालक को पीड़ित करके गर्भाशय के द्वार को रोक देती है, इस से पेटका बच्चा अपने मुँहका साँस रुक जाने से तत्काल मर जाता है और हृदय के ऊपर से चलता हुआ साँस—गर्भिणी को मार देता है। इसी रोग को "योनिसंवरण" रोग कहते हैं।

नोट—बादी पदार्थ खाने-पीने, रात में जागने और गर्भावस्था में मैथुन करने से योनि-मार्ग और गर्भाशय का वायु कुपित होकर 'योनि-संवरण' रोग करता है। इस का नतीजा यह होता है कि, पेट का बच्चा और मां दोनों प्राणों से हाथ धो बैठते हैं, अतः गर्भवती स्त्रियों को इन कारणों से बचना चाहिये।

गर्भिणी के और असाध्य लक्षण।

जिस गर्भिणी को योनि-संवरण रोग हो जाता है—जिस की योनि सुकड़ जाती है, गर्भ योनिद्वार पर अटक जाता है, कोखों में वायु भर जाता है, खाँसी श्वास आदि उपद्रव पैदा हो जाते हैं—अथवा मक्कल शूल उठ खड़ा होता है, वह गर्भिणी मर जाती है।

नोट—यद्यपि प्रसूता स्त्रियों को मक्कल शूल होता है, गर्भिणी स्त्रियों को नहीं; तोभी सुश्रुत के मत से जिस के बच्चा न हुआ हो, उसको भी मक्कलशूल होता है।

मूढ़गर्भ-चिकित्सा।

मूढ़ गर्भ निकालने की तरकीबें।
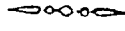
"सुश्रुत" में लिखा है, मूढ़गर्भ का शल्य निकलने का काम जैसा कठिन है वैसा और नहीं है, क्योंकि इस में योनि, यकृत, प्लीहा, आँतों के विवर और गर्भाशय इन स्थानों को टोह-टोह या जाँच-जाँच कर वैद्य को अपना काम करना पड़ता है। भीतर-ही-भीतर गर्भ को उकसाना, नीचे सरकाना, एक स्थान से दूसरे स्थान पर करना उखाड़ना, छेदना, काटना, दबाना और सीधा करना—ये सब काम एक हाथ से ही करने पड़ते हैं। इस काम को करते-करते गर्भगत बालक और गर्भिणी की मृत्यु हो जाना सम्भव है। अतः मूढ़ गर्भ को निकालने से पहले वैद्य को देशके राजा अथवा स्त्री के पति से पूँछ और सुनकर इस काम में हाथ लगाना चाहिये। इस में बड़ी बुद्धि-मानी और चतुराई की ज़रूरत है। ज़रा भी चूकने से बालक या माता अथवा दोनों मर सकते हैं। इसी से "बंगसेन" में लिखा है:—

गर्भस्य गतयश्चित्रा जायन्तेऽनिलकोपतः।
तत्राऽनल्पमतिर्वैद्यो वर्त्तते मतिपूर्वकम्॥

वायुके कोप से गर्भ की अनेक प्रकार की गति होती हैं। इस मौक़े पर वैद्य को खूब चतुराई से काम करना चाहिये।

याभिः संकटकालेऽपि बह्वयो नार्यः प्रसाविताः।
सम्यग्लब्धं यशस्तास्तु नार्यः कुर्युरिमां क्रियाम्॥

जिसने ऐसे संकट-काल में भी अनेक स्त्रियों को जनाया हो और इस काम में जिसका यश फैल रहा हो, ऐसी दाई को यह काम करना चाहिये।

(१) अगर गर्भ जीता हो, तो दाई को अपने हाथ में घी लगाकर, योनिके भीतर हाथ डालकर, यत्न से गर्भ को बाहर निकाल लेना चाहिये।

(२) अगर मूढ़ गर्भ मर गया हो, तो शस्त्रविधि या अस्त्र-चिकित्सा को जानने वाली, हलके हाथवाली, निर्भय दाई गर्भिणी की योनि में शस्त्र डाले।

(३) अगर गर्भ में जान हो, तो उसे किसी हालत में भी शस्त्र से न काटना चाहिये। अगर जीवित गर्भ काटा जाता है, तो वह आप तो मरताही है, साथ ही माँको भी मारता है। "सुश्रुत" में लिखा है :—

सचेतनं च शस्त्रेण न कथंचन दारयेत्।
दीर्यमाणोहि जननीमात्मानं चैव घातयेत्॥

अगर जीता हुआ बालक गर्भ में रुका हुआ हो, तो उसे किसी दशा में भी न काटना चाहिये। क्योंकि उसके काटने से गर्भवती और बालक दोनों मर जाते हैं।

(४) अगर गर्भ मर गया हो, तो उसे तत्काल बिना विलम्ब शस्त्र से काट डालना चाहिये। क्योंकि न काटने या देर से काटने से मरा हुआ गर्भ माता को तत्काल मार देता है। "तिब्बे अकबरी" में भी लिखा है,—अगर बालक पेट में मर जाय अथवा बालक तो निकल आवे, पर झिल्ली या जेर रह जाय तो सुस्ती करना अच्छा नहीं। इन दोनों के जल्दी न निकालने से मृत्यु का भय है।

(५) गर्भगत बालक जीता हो, तो उसे जीता ही निकालना चाहिये। अगर न निकल सके तो "सुश्रुत" में लिखे हुए "गर्भमोक्ष मन्त्र" से पानी मतर कर, बच्चा जननेवाली को पिलाना चाहिये। इस मन्त्र से मतरा हुआ पानी इस मौक़े पर अच्छा काम करता है, रुका हुआ गर्भ निकल आता है। वह मंत्र यह है :—

मुक्ताः पोशर्विपाशाश्च मुक्ताः सूर्येण रश्मयः।
मुक्ताः सर्व भयाद्गर्भ एह्येहि माचिरं स्वाहा॥

इस मन्त्र को "च्यवनमन्त्र" कहते हैं। इस मन्त्र से अभिमन्त्रित किये हुए जल के पीने से स्त्री सुख से बच्चा जनती है।

नोट—यह मंत्र सुश्रुत में है। उससे चक्रदत्त प्रभृति अनेक ग्रन्थकारों ने लिया है। मालूम होता है, यह मंत्र काम देता है। हमने तो कभी परीक्षा नहीं की। हमारे पाठक इसकी परीक्षा अवश्य करें।

(६) जहाँ तक हो, अटके हुए गर्भ को ऊपरी उपायों यानी योनि में धूनी देकर, कोई दवा गले या मस्तक प्रभृति पर लगा या रखकर निकालें। हमने ऐसे अनेक उपाय "प्रसव विलम्ब चिकित्सा में लिखे हैं। जब उन में से कोई उपाय काम न दे, तब "अस्त्र-चिकित्सा" का आश्रय लेना ही उचित है। पर इस काम में देर करना हिंसा करना है। "वाग्भट्ट" में लिखा है,—अगर गर्भ अड़ जावे तो नीचे लिखे उपायोंसे काम लो:—

(क) काले साँपकी काँचली की योनि में धूनी दो।

(ख) काली मूसली की जड़ को हाथ या पैर में बाँधो।

(ग) ब्राह्मी और कलिहारी को धारण कराओ।

(घ) गर्भिणी के सिर पर थूहर का दूध लगाओ।

(ङ) बालोंको अँगुलीमें बाँधकर, स्त्रीके तालू या कंठको घिसो।

(च) भोजपत्र, कलिहारी, तूम्बी, साँप की काँचली, कूट और सरसों—इन सब को मिलाकर योनि में इनकी धूनी दो और इन्हीं को पीस कर योनि पर लेप करो।

अगर इन उपायों से गर्भ न निकले और मन्त्र भी कुछ काम न दे, तब राजा से पूछकर और पति से मंजूरी लेकर गर्भको यत्न से निकालो।

सेमल के निर्यास में घी मिला कर हाथ को चिकना करो और इसी को योनि में भी लगाओ। इसके बाद, अगर गर्भ न निकलता दीखे, तो हाथ से निकाल लो।

अगर हाथ से न निकल सके, तो मरे हुए गर्भ और शल्यतन्त्र को जानने वाला वैद्य, साध्यासाध्य का विचार करके, धन्वन्तरि के मत से, उस गर्भ को शस्त्र से काटकर निकाले।

अगर चोट वगैरः लगने से स्त्री मर जाय और उसकी कोख में गर्भ फड़के, तो वैद्य स्त्री को चीर कर बालक को निकाल ले।

अगर स्त्री जीती हो और गर्भ न निकलता हो, तो वैद्य गर्भाशय को बचा कर और गर्भिणी की रक्षा करके, एक साथ फुरती से शस्त्र चलाने में दक्ष वैद्य चतुराई से काम करे। ऐसा वैद्य धन-धान्य मित्र और यशका भागी होता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—अगर बालक गर्भ में मर जाय, तो वैद्य उसे शीघ्रही जैसे हो सके साबत ही निकाल ले। विद्वान् वैद्य को इस में दो घड़ी की भी देर करना उचित नहीं, क्योंकि गर्भ में मरा हुआ बालक शीघ्र ही माता को मार डालता है।

वैद्यको अस्त्र से काम लेते समय मंडलाग्र नामक यंत्र से काम लेना चाहिये। क्योंकि इस की नोक आगे से तेज़ नहीं होती, पर वृद्धिपत्र यंत्र से काम न ले, क्योंकि इस औज़ार की नोक आगे से तेज़ होती है। इस से गर्भवती की आँतें आदि कट कर मर जाने का भय है। हाँ, इस चीरफाड़ के काम में वही हाथ लगावे, जिसे मनुष्य-शरीर के भीतरी अंगों का पूरा ज्ञान हो।

लिख आये हैं, कि जीता हुआ बालक गर्भ में रुका हो, तो उसे कदाचित भी शस्त्र से न काटना चाहिये, क्योंकि जीते बालक को काटने से बालक और माँ दोनों मर जाते हैं।

गर्भ में बालक मर गया हो, तो वैद्य स्त्री को मीठी-मीठी हितकारी बातों से समझा कर, मंडलाग्र शस्त्र या अँगुली शस्त्र से बालक का सिर विदारण करके, खोपड़ी को शंकु से पकड़कर अथवा पेट को पकड़ कर अथवा कोख से पकड़ कर बाहर खींच ले। अगर सिर छेदने की ज़रूरत न हो, यदि गर्भका सिर योनि के द्वार परही हो, तो उसकी कनपटी या गंडस्थल को पकड़ कर उसे खींच ले। यदि कन्धे रुके हों, तो कन्धों के पास से हाथों को काटकर निकाल ले। अगर गर्भ मशक की तरह आड़ा हो या पेट हवा से ला हो, तो

पेटको चीरकर, आँतें निकाल कर, शिथिल हुए गर्भ को बाहर खींचले। जो कूले या साथल अटके हों, तो कूलों को काट कर निकाल ले।

मरे हुए गर्भ के जिस-जिस अंग को वैद्य मथे या छेदे या चीरे, उन्हें अच्छी तरह से काट-काट कर बाहर निकाल ले। उनका कोई भी अंश भीतर न रहने दे। काटते और निकालते समय एवं पीछे भी चतुराई से स्त्री की रक्षा करे।

गर्भ निकल आवे, पर अपरा या जेर अथवा ओलनाल न निकले, तो उसे काले साँपकी काँचली की धूनी देकर या उधर लिखे हुए लेप वग़ैरः लगाकर निकाल ले। अगर इस तरह न निकले, तो हाथ में तेल लगा कर हाथ से निकाल ले। पसवाड़े मलने से भी जेर निकल आती है। ऐसे समय में दाई स्त्री को हिलावे, उसके कन्धों और पिंडलियों को मले और योनि में खूब तेल लगावे।

अपरा या ओलनाल न निकलने से हानि।

बच्चा हो जाने पर अगर जेर या अम्बर न निकले, तो वह अम्बर दर्द चलाती, पेट फुलाती और अग्नि को मन्दी करती है।

जेर निकालने की तरक़ीबें।

अंगुली में बाल बाँधकर, उससे कंठ घिसने से अम्बर गिर जाती है।

साँपकी काँचली, कड़वी तूम्बी, कड़वी तोरई और सरसों—इन्हें एकत्र पीसकर और सरसों के तेल में मिला कर, योनि के चारों ओर धूनी देने से अम्बर गिर जाती है

प्रसूताके हाथ और पाँवके तलवों पर कलिहारी की जड़ का कल्क लेप करने से जेर गिर जाती है।

चतुर दाई अपने हाथ की अंगुलियों के नख काटकर, हाथ में घी लगाकर, धीरे-धीरे हाथ को योनि में डालकर अम्बरको निकाल ले।

जब मरा हुआ गर्भ और ओलनाल दोनों निकल आवें तब,

दाई स्त्री के शरीर पर गरम जल सींचे, शरीर पर तेल की मालिश करे और योनि को भी घी या तेल से चुपड़ दे।

वक्तव्य।

यहाँ तक हमने मूढ़गर्भ-सम्बन्धी साधारण बातें लिख दी हैं। यह विद्या—चीरफाड़ की विद्या—बिना गुरुके सामने सीखे आ नहीं सकती।। यद्यपि "सुश्रुत" में चीरफाड़ के औज़ारों और उनके चलाने की तरकीबें विस्तार से लिखी हैं। पहले के वैद्य ऐसे सब औज़ार रखते थे और चीरफाड़ का अभ्यास करते थे। पर आजकल, जब से इस देश में विदेशी राजा अँगरेज़ आये, यह विद्या उड़गई। डाक्टरोंने इस विद्या में चरम की उन्नति की है, अतः जिन्हें मूढ़गर्भ को अस्त्र-चिकित्सा से निकालना सीखना हो, वे किसी सरजरीके स्कूल में इसे सीखें। कोई भी वैद्य बिना सीखे-देखे चीरफाड़ न करे। हाँ, दवाओं के ज़ोर से काम हो सके, तो वैद्य करे।

बाद की चिकित्सा।

पीपर, पीपरामूल, सोंठ, बड़ी इलायची, हींग, भारंगी, अजमोद, बच, अतीस, रास्ना और चव्य—इन सब को पीसकूट कर छान लो। इस चूर्ण को गरम पानी के साथ स्त्री को खिलाना चाहिये।

दोषों के निकालने और पीड़ा दूर होने के लिये, इन्हीं पीपर आदि दवाओं का काढ़ा बनाकर, और उसमें घी मिलाकर प्रसूता को पिलाओ।

इन दवाओं को तीन, पाँच या सात दिन तक पिला कर, फिर घी प्रभृति स्नेह पदार्थ पिलाओ। रात के समय उचित आसव या संस्कृत अरिष्ट पिलाओ।

जब स्त्री सब तरह से शुद्ध हो जाय, तब उसे चिकना, गरम और थोड़ा अन्न दो। रोज़ शरीर में तेल की मालिश कराओ। उससे कह दो कि क्रोध न करे।

वात नाशक द्रव्यों से सिद्ध किया हुआ दूध दस दिन तक पिलाओ। फिर दस दिन यथोचित मांसरस दो।

जब कोई उपद्रव न रहे, स्त्री स्वस्थ अवस्था की तरह बलवती और रूपवती हो जाय और गर्भ को निकाले हुए चार महिने बीत जायँ, तब यथेष्ट आहार विहार करे।

प्रसूता की मालिश के लिए बला तैल।
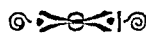
"सुश्रुत" में लिखा है योनि के संतर्पण, शरीर पर मलने, पीने और वस्तिकर्म तथा भोजन में वायु-नाशक "बलातैल" प्रसूता स्त्री को सेवन कराओ—

बला (खिरेंटी) की जड़ का काढ़ा			८ भाग
दशमूल का काढ़ा	...	...	८ "
जौ का काढ़ा	...	...	८ "
बेर का काढ़ा	...	...	८ "
कुलथी का काढ़ा	...	...	८ "
दूध	...	...	८ "
तिल का तेल	...	...	१ "

इन सब को मिलाकर पकाओ। पकते समय मधुर-गण (काकोल्यादिक)और सेंधानोन मिला दो।

अगर, राल, सरल निर्यास, देवदारू, मँजीठ, चन्दन, कूट, इलायची, तगर, मेदा, जटामासी, शैलेय (शिलारस) पत्रज, तगर, शारिवा, बच, शतावरी, असगन्ध, शतपुष्प—सोवा—और सौंठी—इन सब को तेल से चौथाई लेकर पीस लो और पकते समय डाल दो। जब पककर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इसे सोने चाँदी या चिकनी मट्टी के बासन में रखदो और मुँह बाँध दो।

यह तेल समस्त वात-व्याधि और प्रसूता के समस्त रोग नाशक है। जो बाँझ गर्भवती होना चाहे उस को—क्षीणवीर्य पुरुष को, वायु

से क्षीण को, जिस के गर्भ में चोट लगी हो या अत्यन्त चोट लगी हो, टूटे हुए, थके हुए, आक्षेपक आदि वातव्याधियों वालों को तथा फोतों के रोगवालों को परम लाभदायक है। खाँसी, श्वास, हिचकी और गुल्म, इस के सेवन करने से नाश हो जाते तथा धातु पुष्ट और स्थिर-यौवन होता है। यह राजाओं के योग्य है।

और तेल

तिलों को खिरेंटीके काढ़े की सात भावनाएँ दो और फिर कोल्हू में उनका तेल निकालकर—सौ बार उसे खिरेंटी के काढ़े में पकाओ। इस तेल को निर्वात स्थान में, बलानुसार, नित्य पीने और जब तेल पच जाय तब चिकने भात को दूध के साथ खाने से बड़ा लाभ होता है। इस तरह १६ सेर तेल पीने और यथोक्त भोजन करने से १ साल में खूब रूप और बल हो जाता है। सब दोष नाश होकर १०० वर्ष की आयु हो जाती है। सोलह-सोलह सेर तेल बढ़ने से सौ-सौ वर्ष की उम्र बढ़ती है।

सूतिका रोग के निदान।

अत्यन्त वातकारक स्थान के सेवन करने आदि से, अयोग्य आचरण से, दोषों को कुपित करने वाले आचरण से, विषम भोजन और अजीर्ण से प्रसूता या जच्चा को जो रोग होते हैं, उन्हे "सूतिका रोग" कहते हैं। वे कष्टसाध्य हो जाते हैं।

सूतिका रोग ।

—※—

अंगों का टूटना, ज्वर, खाँसी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार—ये रोग प्रसूता को विशेष कर होते हैं। यह रोग प्रसूता को होते हैं, इसलिये "सूतिका रोग" कहे जाते हैं।

"वैद्यरत्न" में लिखा है—

अंगमर्दो ज्वरः कम्पः पिपासा गुरुगात्रता ।
शोथः शूलातिसारौ च सूतिकारोग लक्षणम् ॥

शरीर टूटना, ज्वर, कँपकँपी, प्यास, शरीर भारी होना, सूजन, शूल और अतिसार ये प्रसूति रोग के लक्षण हैं।

"वंगसेन" में लिखा है—

प्रलापो वेपथुर्यस्याः सूतिका सा उदाहृता ।

जिस में प्रलाप—आनतान बकना और कम्प—कँपकँपी आना—ये लक्षण हों, उसे "सूतिका रोग" कहते हैं।

नोट—कम्प होना सभी ने लिखा है, पर भावमिश्र ने "कम्प" के स्थान में "कास" यानी खाँसी लिखी है।

ज्वर, अतिसार, सूजन, पेट अफरना, बलनाश, तन्द्रा, अरुचि और मुँह में पानी भर-भर आना इत्यादि रोग स्त्री को मांस और बल की क्षीणता से होते हैं। ये सूतिका रोगों के विशेष निदान हैं। ये रोग जब सूतिका को होते हैं, तब सूतिका रोग कहे जाते हैं।

इन रोगों में से यदि कोई रोग मुख्य होता है, तो ज्वर आदि अन्य रोग उस के "उपद्रव" कहलाते हैं।

स्त्री कब से कब तक प्रसूता ?

बच्चा जनने के दिन से डेढ़ महीने तक अथवा रजोदर्शन होने तक स्त्री को "प्रसूता" कहते हैं। यह धन्वन्तरि का मत है। कहा है—

प्रसूता सार्धमासान्ते दृष्टे वा पुनरार्त्तवे।
सूतिका नामहीना स्यादिति धन्वन्तरेर्मतम्॥

प्रसूता को पथ्य पालन की परमावश्यकता।

सूतिका रोग बड़े कठिन होते और बड़ी दिक़्क़त से आराम होते हैं। अगर पथ्य पालन न किया जाय, तो आराम होना कठिनही नहीं, असम्भव है। जिस का सारा दूषित खून निकल गया हो, वह एक महीने तक चिकना, पथ्य और थोड़ा भोजन करे, नित्य पसीने ले, शरीर में तेल मलवावे और पथ्य में सावधान रहे।

पथ्य—लंघन, हल्के पसीने, गर्भाशय और कोठों का शोधन, उवटन, तैलपान; चरपरे, कड़वे और गरम पदार्थों का सेवन; दीपन-पाचन पदार्थ, शराब, पुराने साँठी चाँवल, कुलथी, लहसन, बैंगन, छोटी मूली, परवल, बिजौरा, पान, खट्टा मीठा अनार तथा अन्य कफवात नाशक पदार्थ प्रसूता के लिए हित हैं। किसी-किसी ने पुराने चाँवल, मसूर, उड़द का जूस, गूलर और कच्चे केले का साग आदि भी हितकर लिखे हैं।

अपथ्य—भारी भोजन, आग तापना, मिहनत करना, शीतल हवा, मैथुन, मलमूत्रादि रोकना, अधिक खाना और दिनमें सोना आदि हानिकारक हैं।

चार महीने बीत जायँ और कोई भी उपद्रव न रहे, तब परहेज़ त्यागना चाहिये।

उपद्रवविशुद्धाञ्च विज्ञाय वरवर्णिनीम्।
उर्द्धं चतुर्भ्यो मासेभ्यः परिहारं विवर्जयेत्॥

सूतिका रोगों की चिकित्सा।

सूतिका रोग नाशार्थ वातनाशक क्रिया करनी चाहिये। जिस रोग का ज़ोर हो, उसी की दवा देनी चाहिये। दस दिन तक वातनाशक दवाओं के साथ औटाया हुआ दूध पिलाना चाहिये। सिरस की लकड़ी की दाँतुन करानी चाहिये। सूतिका रोगों की चिकित्सा हमने "चिकित्साचन्द्रोदय" दूसरे भाग-अठारहवें अध्यायके पृष्ठ ४२२-

४२७ में लिखो है। मक्कल शूल की चिकित्सा हमने "स्वास्थ्यरक्षा" पृष्ठ २३२—२३३ में लिखी है। लेकिन जिन के पास "स्वास्थ्यरक्षा" न होगी, वे तकलीफ पायेंगे ; इसलिये हम उसे यहाँ भी लिखे देते हैं।

मक्कल शूल।

बच्चा और जेरनालके योनिसे बाहर आते ही, अगर दाई प्रसूता की योनि को तत्काल भीतर दबा नहीं देती, देर करती है, तो प्रसूता की योनि में वायु घुस जाती है। वायु के कुपित होनेसे हृदय और पेड़ू में शूल चलता, पेट पर अफारा आ जाता एवं ऐसे ही और भी वायु के विकार हो जाते हैं। वायु के योनि में घुस जाने से हृदय, सिर और पेड़ूमें जो शूल चलता है, उसे "मक्कल" कहते हैं।

"भावप्रकाश" में लिखा है,—प्रसूता स्त्रियों के रूक्ष कारणों से बढ़ी हुई वायु—तीक्ष्ण और उष्ण कारणों से सुखाये हुए खून को रोक कर, नाभिके नीचे, पसलियों में, मूत्राशय में अथवा मूत्राशय के ऊपर के भाग में—गाँठ उत्पन्न करती है। इस गाँठ के होने से नाभि, मूत्राशय और पेट में दर्द चलता है, पक्काशय फूल जाता और पेशाब रुक जाता है। इसी रोग को "मक्कल" कहते हैं।

चिकित्सा।

(१) जवाखार का महीन चूर्ण सुहाते-सुहाते गरम जल या घी के साथ पीने से मक्कल आराम होता है।

(२) पीपर, पीपरामूल, काली मिर्च, गजपीपर, सोंठ, चीता, चव्य, रेणुका, इलायची, अजमोद, सरसों, हींग, भारंगी, पाढ़, इन्द्रजौ, ज़ीरा, बकायन, चुरनहार, अतीस, कुटकी और बायबिडंग—इन २१ दवाओंको "पिप्पल्यादि गण" कहते हैं। इन के काढ़े में "सेंधानोन" डाल कर पीने से मक्कल शूल, गोला, ज्वर, कफ और वायु कतई नष्ट हो जाते हैं तथा अग्नि दीपन होती और आम पच जाता है।

(३) सोंठ, मिर्च पीपर, दालचीनी, तेजपात, इलायची, नागकेशर

और धनिया,—इन सबके चूर्ण को, पुराने गुड़ में मिला कर, खाने से सकल शूल आराम हो जाता है।

सूतिका रोग नाशक नुसखे।

१ सौभाग्य शुंठी पाक।

घी ८ तोले, दूध १२८ तोले. चीनी २०० तोले और पिसी-छनी सोंठ ३२ तोले,—इन सबको एकत्र मिला कर, गुड़ की विधि से, पकाओ। जब पकने पर आवे इस में धनिया १२ तोले, सौंफ २० तोले, और बायबिडंग, सफेद ज़ीरा, सोंठ, गोल मिर्च, पीपर, नागरमोथा, तेजपात, नागकेशर, दालचीनी और छोटी इलायची प्रत्येक चार-चार तोले पीस-छान कर मिला दो और फिर पकाओ। जब तैयार हो जाय, किसी साफ बासन में रख दो। इस के सेवन करने से प्यास, वमन, ज्वर, दाह, श्वास, शोथ, खाँसी, तिल्ली और कृमि रोग नाश हो जाते हैं।

२ सौभाग्य शुण्ठी मोदक।

कसेरू, सिंघाड़े, पद्म-बीज, मोथा, सफेद ज़ीरा, कालाज़ीरा, जायफल, जावित्री, लौंग, शैलज—शिलाजीत, नागकेशर, तेजपात, दालचीनी, कचूर, धायके फूल, इलायची, सोआ, धनिया, गजपीपर, पीपर, गोलमिर्च और शतावर—इन २२ दवाओं में से हरेक चार-चार तोले, लोहा-भस्म ८ तोले, पिसी-छनी सोंठ एक सेर, मिश्री आधसेर, घी एक सेर और दूध आठ सेर तैयार करो। कूटने-पीसने योग्य दवाओंको कूट-पीस छान लो ; फिर चौथे भाग में लिखे पाकों की विधि से लड्डू बना लो। इस में से छै छै माशे पाक खाने से सूतिका-जन्य अतिसार ग्रहणी आदि रोग शान्त होकर अग्निवृद्धि होती है।

३ जीरकाद्य मोदक ।

सफेद ज़ीरा ३२ तोले, सोंठ १२ तोले, धनिया १२ तोले, सोवा ४ तोले, अजवायन ४ तोले और काला ज़ीरा ४ तोले—इनको पीस-छान कर, ८ सेर दूध, ६ सेर चीनी और ३२ तोले घी में मिला कर पकाओ। जब पकने पर आवे, इसमें त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, बाय-बिडंग, चव्य, चीता, मोथा और लौंग का पिसा-छना चूर्ण और मिला दो। इस से सूतिकाजन्य ग्रहणी रोग नाश होकर अग्नि वृद्धि होती है।

४ पञ्चजीरक पाक ।

सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, सोया, सौंफ, अजमोद, अजवायन, धनिया, मेथी, सोंठ, पीपर, पीपरामूल, चीता, हाऊबेर, बेरोंका चूर्ण, कूट और कबीला—प्रत्येक चार-चार तोले लेकर पीस-छान लो। फिर गुड़ ४०० तोले या पाँच सेर, दूध १२८ तोले और घी १६ तोले लेकर, सब को मिला कर पाक की विधि से पाक बना लो। इसके खाने से सूतिका-जन्य ज्वर, क्षय, खाँसी, श्वास, पाण्डु, दुबलापन और बादी के रोग नाश होते हैं।

५ सूतिकान्तक रस ।

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, अभ्रक भस्म और ताम्बा-भस्म, इन सबको बराबर-बराबर लेकर, खुलकुड़ी के रस में घोट कर, उड़द-समान गोलियाँ बनाकर, छाया में सुखा लो। इस रस को अदरख के स्वरस के साथ सेवन करने से सूतिकावस्था का ज्वर, प्यास, अरुचि, अग्निमांद्य और शोथ आदि रोग नाश हो जाते हैं।

६ प्रतापलंकेश्वर रस ।

शुद्ध पारा १ तोले, अभ्रक भस्म १ तोले, शुद्ध गंधक १ तोले, पीपर

३ तोले, लोहभस्म ५ तोले, शंख-भस्म ८ तोले, आरने कण्डों की राख १६ तोले और शुद्ध मीठा विष एक तोले—इन सब को एकत्र घोट लो। इसमें से २ रत्ती रस शुद्ध गूगल, गिलोय, नागरमोथा और त्रिफले के साथ मिला कर देने से प्रसूत रोग और धनुर्वात रोग नाश हो जाते हैं। अदरखके रस के साथ देने से सन्निपात और ववासीर रोग नाश होजाते है। भिन्न-भिन्न अनुपानों के साथ यह रस सब तरह के अतिसार और संग्रहणी को नाश करता है। यह रस स्वयं जगत्माता पार्वतीने कहा है।

७ वृहत् सूतिका विनोद रस।

—*—

सोंठ १ तोले, गोलमिर्च २ तोले, पीपर ३ तोले, सेंधानोन ६ माशे, जावित्री २ तोले और शुद्ध तूतिया २ तोले—इन सब को मिला कर निर्गुण्डी के रस में ३ घण्टे तक खरल करके रख लो। इस रस के मात्रा से सेवन करने से तरह-तरह के सूतिका रोग नाश हो जाते हैं।

८ सूतिका गजकेसरी रस।

—*—

शुद्ध पारा, शुद्ध गंधक, शुद्ध अभ्रकभस्म, सोनामक्खी की भस्म, त्रिकुटा और शुद्ध मीठा विष—सबको बराबर-बराबर लेकर, खरल कर के रख लो। मात्रा ४ रत्ती की है। इस को उचित अनुपान के साथ सेवन करने से सूतिका-जन्य ग्रहणी, मन्दाग्नि, अतिसार, खाँसी और श्वास आराम होते हैं।

९ हेमसुन्दर तैल।

—:*:—

धतूरे के गीले फल पीस कर, चौगुने कड़वे तेल में डालकर पकाओ। कोई २५ मिनट में "हेमसुन्दर तैल" बन जायगा। यह तेल मालिश करने से दुष्ट पसीने आने और सूतिका रोगों को नाश करता है।

ग़रीबी नुसखे ।

(१०) पद्ममूल, मोथा, गिलोय, गंधाली, सोंठ और बाला—इन के काढ़े में ६ माशे शहद मिलाकर पीने से सूतिका ज्वर और वेदना नाश हो जाते हैं।

(११) सोंठ, काकड़ासिंगी और पीपरामूल—इन को एकत्र मिला कर सेवन करने से प्रसूतिका ज्वर और वात रोग नष्ट हो जाते हैं।

(१२) दश मूल के काढ़े में पीपलों का चूर्ण डाल और कुछ गरम करके पीने से बढ़ा हुआ प्रसूतिका रोग भी शान्त हो जाता है।

(१३) हींग, पीपर, दोनों पाढ़ल, भारंगी, मेदा, सोंठ, रास्ना, अतीस और चव्य—इन सब को मिलाकर पीस-कूट-छान लो। इसके सेवन करने से योनि का शूल मिट कर योनि नर्म हो जाती है।

(१४) बेल और भाँगरे की जड़ों को सिल पर पानी के साथ पीस कर, मदिरा के साथ पीने से योनि-शूल तत्काल नाश हो जाता है।

(१५) इलायची और पीपर—बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो। इस में थोड़ा सा कालानोन डाल कर, मदिरा के साथ, पीने से योनि-शूल नाश हो जाता है।

(१६) बिजौरे नीबू की जड, मोतिया की जड़, बेलगिरी और नागरमोथा—इन को एकत्र पीस कर लेप करने से प्रसूता का शिरोरोग नाश हो जाता है।

(१७) सोंठ, मिर्च, पीपर, पीपरामूल, देवदारु; चव्य, चीता, हल्दी, दारुहल्दी, हाऊबेर, सफेद ज़ीरा, जवाखार, सेंधानोन, कालानोन और कचियानोन,—इन को बराबर-बराबर लेकर, सिल पर जल के साथ पीस कर, गरम जल के साथ लेने से सुख से पाखाना हो जाता है।

(१८) पञ्चमूल का काढ़ा बनाकर, उस में सेंधानोन डाल कर सुहाता-सुहाता पीने से सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(१६) पञ्चमूल के काढ़े में गरम किया हुआ लोहा बुझाकर पीने से सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(२०) वारुणी मदिरा में गरम किया हुआ लोहा बुझाकर, उस मदिरा को पीने से सूतिका रोग नाश हो जाता है।

(२१) अगर प्रसूता के शरीर में वेदना हो, तो सागौन की छाल, हींग, अतीस, पाढ़, कुटकी और तेजवल का काढ़ा, कल्क या चूर्ण "घी" के साथ लेने से दोषों की शान्ति होकर और वेदना नाश होती है।

(२२) पीपर, पीपरामूल, सोंठ, इलायची, हींग, भारंगी, अजमोद, वच, अतीस, रास्ना और चव्य—इन दवाओं का कल्क या चूर्ण "घी" में भूनकर सेवन करने से दोषों की शान्ति होकर वेदना नाश होती है।

(२३) अगर शरीर में दर्द हो, तो दशमूल का काढ़ा सूतिका को पिलाओ।

(२४) अगर खाँसी हो तो "सूतिकान्तक रस" सेवन कराओ।

(२५) अगर अतिसार या संग्रहणी हो, तो "जीरकाद्य मोदक" या "सौभाग्यशुण्ठी मोदक" सेवन कराओ।

स्त्री की योनि के घाव वगैरः का इलाज।

तूम्बी के पत्ते और लोध—बराबर बराबर लेकर, खूब पीसकर योनिमें लेप करो। इससे योनि के घाव तत्काल मिट जाते हैं।

ढाक के फल और गूलर के फल—इन्हें तिल के तेल में पीसकर योनि में लेप करने से योनि दृढ़ हो जाती है।

प्रसव होने ब अगर पेट बढ़ गया हो, तो स्त्री २१ दिन तक सवेरे ही पीपरामू के चूर्ण को दही में घोलकर पीवे।

स्तन कठोर करने के उपाय ।

श्रीपर्णी की छाल के कल्क और उसी के पत्तों के स्वरस के साथ तेल पका कर, शीशी में रख लो। इस तेल में एक साफ कपड़ा भिगो-भिगो कर, एक महीने तक, स्तनों पर बाँधने से स्त्रियों के गिरे हुए ढीले-ढाले स्तन पुष्ट और कठोर हो जाते हैं। कहा है:—

> श्रीपर्णीरसकल्काभ्यांतैलंसिद्धं तिलोद्भवम्।
> तत्तैलं तूलकेनैव स्तनस्योपरि दापयेत्।
> पतितावुऽत्थितौस्यातामंगनायाः पयोधरौ ॥

नोट—श्रीपर्णी-अरनी या गनियारीको कहते हैं। पर कई टीकाकारोंने इस का अर्थ बिजौरा या शालिपर्णी लिखा है। कह नहीं सकते, यह कहाँ तक ठीक है। यह नुसखा चक्रदत्त, वृन्द और वैद्य-विनोद प्रभृति अनेक ग्रन्थों में मिलता है। यद्यपि हमने परीक्षा नहीं की है, तथापि उम्मीद है कि, यह सोलह आने कारगर हो। जब इसे बनाना हो, श्रीपर्णी की छाल लाकर, सिल पर पीस कर कल्क बना लो और इसी के पत्तों को पीसकर स्वरस निचोड़ लो। जितनी लुगदी हो उससे दूना स्वरस और स्वरस से दूना तेल—काले तिलों का तेल—लेकर, कलईदार बर्तन में रखकर, मन्दी-मन्दी आग से पकालो और छान कर शीशी में रख लो। फिर ऊपर लिखी विधि से इसमें कपड़ा तर-कर करके नित्य स्तनों पर बाँधो।

(२) चूहे की चरबी, सूअर का माँस, भैंस का माँस और हाथी का माँस—इन सब को मिलाकर, स्तनों पर मलने से स्तन कठोर और पुष्ट हो जाते हैं।

३ कमलगट्टे की गरी को महीन पीस-छानकर, दूध दही के साथ पीने से खूब दूध आता और बुढ़ापे में भी स्तन कठोर हो जाते हैं।

नोट—कमलगट्टों को रात के समय, पानी में भिगो दो और सवेरे ही चाकू से उनके छिलके उतार लो। भीगे हुए कमलगट्टों के छिलके आसानी से उतर आते हैं। छिलके उतार कर, उनके भीतर की हरी-हरी पत्तियों को निकाल कर फेंक दो, क्योंकि वह हानिकारक होती हैं। इसके बाद उन्हें खूब सुखाकर, कूट-पीस और

छान लो। यह उत्तम चूर्ण है। इस चूर्ण के बलानुसार, उचित मात्रा में, दही-दूध के साथ, लगातार कुछ दिन खाने से स्तनों में खूब दूध आता और वे कठोर भी हो जाते हैं।

(४) गाय का घी, भैंस का घी, काली तिली का तेल, काली निशोथ, लताञ्जली, बच, सोंठ, गोलमिर्च, पीपर और हल्दी—इन दसों दवाओं को एकत्र पीस कर, लगातार कुछ दिन, नस्य लेने से एक-दम से गिरे हुए स्तन भी उठ आते हैं।

(५) बच्चा जनने के बादके पहले ऋतुकाल में, चाँवलों के पानी या धोवन की नस्य लेने से गिरे हुए ढीले स्तन उठ आते और कठोर हो जाते हैं।

यह नस्य ऋतुकाल के पहले दिन से १६ दिन तक सेवन करनी चाहिये। एक दो दिन में लाभ नहीं हो सकता। विद्यापतिजी भी यही बात कहते हैं:—

आर्त्तवस्नानादिवसात् षोडशाहं निरन्तरम्।
तण्डुलोदकनस्येन काठिन्यं कुचयोः स्थिरम्॥

जिस दिन से स्त्री रजस्वला हो, उस दिन से सोलह दिन तक बराबर चाँवलों के धोवन की नस्य ले, तो उसके गिरे हुए स्तन कठोर और पुष्ट हो जायँ।

(६) भैंस का नौनी घी, कूट, खिरैंटी, बच और बड़ी खिरैंटी इन सबको पीसकर स्तनों पर लगानेसेस्तन कठोर और पुष्ट होजाते हैं।

बढ़े हुए पेट को छोटा करने के उपाय।
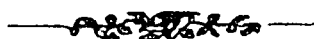
(७) पीपरोंको महीन पीस-छान कर, मथित नामक माठे के साथ पीने से, चन्द रोज़ में, प्रसूता की कुक्षि या कोख दब या घट जाती है।

(८) माधवी की जड़ महीन पीस-छान कर, मथित-माठे के साथ पीने से, कुछ दिनों में, प्रसूता का पेट छोटा और कमर पतली हो जाती है।

(९) मालती की जड़ को माठे के साथ पीसकर, फिर उस में घी और शहद मिलाकर सेवन करने से प्रसूता का बढ़ा हुआ पेट छोटा हो जाता है।

(१०) आमले और हल्दी को एकत्र पीस-छानकर सेवन करने से प्रसूता का बढ़ा हुआ पेट छोटा हो जाता है।

स्तन और स्तन्य रोग नाशक उपाय।

स्तन रोग के कारण और भेद।

दूधवाली या बिना दूधवाली स्त्री के स्तनों में दोष पहुँच कर खून और मांस को दूषित करके "स्तन रोग" करते हैं। यह स्तनरोग कन्याओं को नहीं होता। क्योंकि कन्याओं के स्तनों की धमनी रुकी हुई होती हैं, इसलिये उन में दोषों का सञ्चार नहीं होता और इसी से उनको स्तन-रोग नहीं होते। "सुश्रुत" में लिखा है :—

> धमन्यः संवृतद्वाराः कन्यानां स्तनसंश्रिताः।
> दोषविसरणास्तासां न भवन्ति स्तनामयः॥

बच्चा जननेवाली—प्रसूता और गर्भवती स्त्रियों की धमनियाँ स्वभाव से ही खुल जाती हैं, इसी से स्राव करती हैं ; यानी उनमें से दूध निकलता है।

पाँच तरह के स्तनरोगों के लक्षण, रुधिर-जन्य विद्रधि को छोड़ कर, बाहर की विद्रधि के समान होते हैं।

स्तनरोग पाँच तरह के होते हैं:—

(१) वातजन्य। (२) पित्तजन्य।

(३) कफजन्य । (४) सन्निपात जन्य ।

(५) आगन्तुक ।

नोट—चोट लगने या शल्य से जो स्तनरोग होते हैं, वह आगन्तुक कहलाते हैं। रुधिर के कोप से स्तन रोग नहीं होते, यह स्वभाव की बात है।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है—खून चलता-चलता स्तनों की छोटी नसों में गरमी, सरदी या और कारणों से रुक कर सूजन पैदा कर देता है। उस समय पीड़ा होती और ज्वर चढ़ आता है। इस दशा में बड़ी तकलीफ होती है। बहुत बार बालक के सिर की चोट लगने से भी नसों का मुँह बन्द होकर पीड़ा खड़ी हो जाती है।

चिकित्सा-विधि ।

अगर स्तनोंमें सूजन हो, तो वैद्य विद्रधि रोग के अनुसार इलाज करे; परन्तु सेक आदि स्वेदन-कर्म कभी न करे। स्तनरोग में पित्तनाशक शीतल पदार्थ प्रयोग करे और जौंक लगा कर ख़राब खून निकाले।

स्तनपीड़ा नाशक नुसखे।

(१) इन्द्रायण की जड़ पानी या बैल के मूत्र में घिस कर लेप करने से स्तनों की पीड़ा और सूजन तुरन्त मिट जाती है।

(२) अगर स्तनों में खुजली, फोड़ा, गाँठ या सूजन वग़ैरः हो जाय, तो शीतल दवाओं का लेप करो। १०८ बार धोये हुए मक्खन में मुर्दासंग और सिन्दूर पीस-छान कर मिला दो और उसे फिर २१ बार धोओ। इस के बाद उसे स्तनों पर लगा दो। इस लेप से फोड़े-फुन्सी और घाव आदि सब आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

(३) जौंक लगवाकर ख़राब खून निकाल देने से स्तन-पीड़ा में जल्दी लाभ होता है।

(४) हल्दी और घीग्वार की जड़ पीस कर स्तनों पर लगाने स्तन रोग नाश हो जाते हैं। किसीने कहा है:—

कुमारिकारसैर्लेपो हरिद्रारज सान्वितः ।
कवोष्णां स्तनशोथस्य नाशनं सर्वसम्मताम् ॥

घीग्वार के पट्ठे के रस में हल्दी का चूर्ण डालकर गरम कर लो। फिर सुहाता-सुहाता स्तनों की सूजन पर लेप करदो। इस से सूजन फौरन उतर जायगी ।

(५) ककौंटक और जटामाँसी को पीस कर स्तनों पर लेप करने से जादू की तरह आराम होता है।

(६) निबौलियों के तेल के समान और कोई दवा स्तनपाक मिटाने वाली नहीं है ; यानी स्तन पकते हों तो उन पर निबौलियों का तेल चुपड़ो। कहा है—

स्तनपाकहरं निम्बतैलतुल्यं न चापरम् ॥

(७) अगर बालक स्तनों को दाँतों से काटता हो, तो चिरायता पीस कर स्तनों पर लगा दो।

नोट—स्तन पीड़ा नाशक और नुसखे "चिकित्सा चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ४२८-४३० में देखिये।

दुग्ध-चिकित्सा ।

स्त्री का दूध वातादि दोषों के कुपित होने से दूषित हो जाता है। अगर बच्चा दूषित दूध पीता है, तो बीमार हो जाता है।

वात-दूषित दूधके लक्षण ।

अगर दूध पानी में डालने से पानी में न मिले, ऊपर तैरता रहे और कसैला स्वाद हो तो उसे वायु से दूषित समझो।

पित-दूषित दूधक लक्षण ।

अगर दूध में कड़वा, खट्टा और नमकीन स्वाद हो तथा उस में पीली रेखा हों, तो उसे पित्त-दूषित समझो।

कफ दूषित दूधके लक्षण।
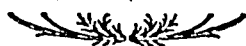
अगर दूध गाढ़ा और लसदार हो तथा पानी में डालने से डूब जाय, तो उसे कफ-दूषित समझो।

त्रिदोष-दूषित दूधके लक्षण।
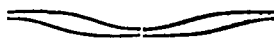
अगर दो दोषों के लक्षण दीखें, तो दूध को दो दोषों से और तीन दोषों के लक्षण हों तो तीन दोषों से दूषित समझो। किसी ने लिखा है,—अगर दूध आम समेत, मल के समान, पानी-जैसा, अनेक रङ्गवाला हो और पानीमें डालने से आधा ऊपर रहे और आधा नीचे चला जाय, तो उसे त्रिदोषज समझो।

उत्तम दूध क लक्षण।

जो दूध पानी में डालने से मिल जाय, पाण्डु रङ्ग का हो, मधुर और निर्मल हो, वह निर्दोष है। ऐसाही दूध बालक के पीने-योग्य है।

बालकों के रोगों से दूधके दोष जानने की तरकीब।
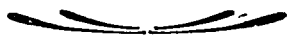
अगर दूध पीनेवाले बालक की आवाज़ बैठ गई हो, शरीर दुबला हो गया हो, उस के मलमूत्र और अधोवायु रुक जाते हों, तो समझो कि दूध वायु से दूषित है।

अगर बालक के शरीर में पसीने आते हों, पतले दस्त लगते हों, कामला रोग हो गया हो, प्यास लगती हो, सारे शरीर में गरमी लगती हो तथा पित्त की और भी तकलीफें हों, तो समझो कि दूध पित्त से दूषित है।

अगर बालक के मुँह से लार बहुत गिरती हो, नींद बहुत आती

हो, शरीर भारी रहता हो, सूजन हो, नेत्र टेढ़े हों और वह वमन या क्षय करता हो, तो समझो कि दूध कफ से दूषित है ।

दूध शुद्ध करने के उपाय

(१) अगर दूध वायु से दूषित हो, तो माता या धाय को तीन दिन तक दशमूल का काढ़ा पिलाओ ।

(२) अगर दूध पित्त से दूषित हो, तो माँको गिलोय, शतावर, परवल के पत्ते, नीम के पत्ते, लालचन्दन और अनन्तमूल का काढ़ा मिश्री मिलाकर पिलाओ।

(३) अगर दूध कफसे दूषित हो, तो माँको त्रिफला, मोथा, चिरायता, कुटकी, बमनेटी, देवदारु, बच और अञ्जुवन का काढ़ापिलाओ ।

नोट—दो दोष और तीनों दोषों से दूषित दूध हो, तो दो या तीन दोषों की दवाएं मिलाकर काढ़ा बनाओ और पिलाओ ।

(४) परवल के पत्ते, नीम के पत्ते, बिजयसार, देवदारु, पाठा, मरोड़फली, गिलोय, कुटकी और सोंठ—इन का काढ़ा पिलाने से किसी भी दोष से दूषित दूध शुद्ध हो जाता है ।

दूध बढ़ाने वाले नुसखे ।

(१) सफेद जीरा और साँठी चाँवल, दूध में पका कर, कुछ दिन पीने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है । परीक्षित है ।

दूध कम होने क कारण ।

स्तनों में दूध कम आने के मुख्य ये कारण हैं:—

(१) स्त्री की कमजोरी ।

(२) स्त्री को ठीक भोजन न मिलना ।

नोट—अगर स्त्री कमजोर हो, तो उसे ताकत बढ़ाने वाली दवा और पुष्टिकारक भोजन दो ।

(२) सफेद ज़ीरा, नानख्वाह और नमक-सङ्ग—इन को बराबर-बराबर लेकर और महीन पीस-छानकर, दही में मिलाकर खाने से स्तनों में दूध बढ़ता है।

(३) अजमोद, अनीसूँ, बोजीदाँ और तुख्म सोया—इन को पीस-छान और शहद में मिलाकर, मात्रा के साथ सेवन करने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

(४) अर्क स्वर्णवल्ली सेवन करने से दूध बढ़ता और मस्तकशूल आराम हो जाता है।

(५) अर्क सोमवल्ली पीने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है। यह रसायन है।

(६) कमलगट्टों का पिसा-छाना चूर्ण दूध और दही के साथ खाने से स्तनों में खूब दूध आता है।

(७) केवल विदारीकन्द का स्वरस पीने से स्तनोंमें खब दूध आता है।

(८) दूध में सफेद ज़ीरा मिलाकर पीने से स्तनों में खूब दूध आता है। कहा है—

अक्षीरा स्त्री पिबेज्जीरं सक्षीरं सा पयस्विनी ॥

बिना दूधवाली स्त्री अगर दूध में ज़ीरा पीवे, तो दूध वाली हो जाय।

(९) शतावर को दूध में पीस कर पीने से स्तनों में दूध बढ़ता है।

(१०) गरम दूध के साथ पीपरों का पिसा-छना चूर्ण पीने से स्तनों में दूध बढ़ता है

(११) वनकपास की जड़ और ईखकी जड़—दोनों बराबर-बराबर लेकर काँजी में पीस लो। इस में से ६ माशे दवा खाने से स्तनों में दूध बढ़ता है।

(१२) हलदी, दारुहलदी, इन्द्रजौ, मुलेठो और चकवड़—इन
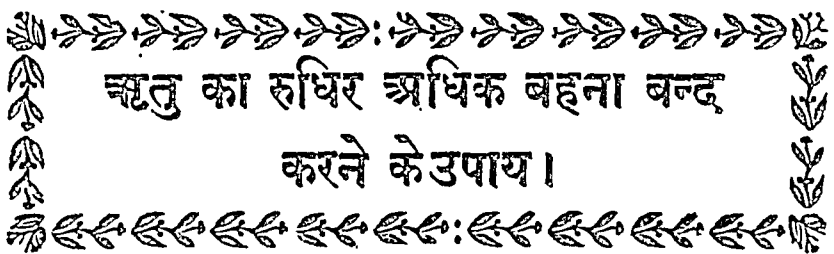
पाँचों को मिलाकर दो या अढ़ाई तोले लेकर काढ़ा बनाने और पीने से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।
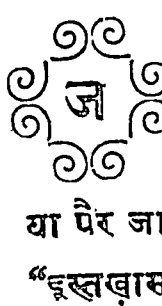
(१३) बच, अतीस, मोथा, देवदारु, सोंठ, शतावर और अनन्तमूल—इन सातों को मिलाकर कुल दो या अढ़ाई तोले लो और काढ़ा बनाकर स्त्री को पिलाओ। इस नुसखे से स्तनों में दूध बढ़ जाता है।

(१४) सफेद ज़ीरा दो तोले, इलायची के बीज एक तोले, मगज़ खीरेका बीस दाना और मगज़ कद्दू बीस दाना—इस सबको पीस-कूटकर छान लो। इस दवाके सेवन करने से स्तनों में दूध बढ़ता और शुद्ध—निर्दोष होता है

सेवन-विधि—अगर जाड़े का मौसम हो, तो एक-एक माशा में मिश्री मिलाकर स्त्री को फँकाओ और ऊपर से बकरी का दूध पिला दो। अगर मौसम गरमी का हो, तो इस दवा को सिल पर घोट-पीस कर पानी में छान लो, पीछे शर्बत नीलोफर मिला कर पिला दो। केवल शर्बत नीलोफर पिलाने से ही दूध बढ़ जाता है।

नोट—नं० १, ६, ७, ८, ९, और १० के नुसखे परीक्षित हैं और नं० ११, १२, और १३ भी अच्छे हैं।

ऋतु का रुधिर अधिक बहना बन्द करने के उपाय।

जब रजोधर्म के दिनों को छोड़कर, स्त्री की योनि से खून गिरता है; यानी नियत दिनों को छोड़कर, पीछे भी खून गिरता है, तो बोल-चाल की भाषा में उसे "पैर पड़ने या पैर जारी होने" का रोग कहते हैं। हकीम लोग इस रोग को "इस्तहाज़ा" कहते हैं। हमारे यहाँ इस रोग का वही इलाज

है, जो प्रदर रोग का है। फिर भी हम नीचे चन्द ग़रीबी नुसख़े ऐसे खून को बन्द करने के लिए लिखते हैं। अगर योनि से खून गिरता हो, तो नीचे के नुसख़ों में से किसी एक से काम लो:—

(१) छातियों के नीचे सींगी लगवाओ।

(२) बकायन की कोंपलों का एक तोले स्वरस पीओ।

(३) कपास के फूलों की राख हथेली-भर, नित्य, शीतल जलके साथ फाँको।

(४) कुड़े की छाल सात माशे कूट-छान कर और थोड़ी चीनी मिलाकर पानी के साथ फाँको।

(५) मसूर, अरहर और उड़द—तीनों दो तोले और साँठी चाँवल एक तोले—चारों को जलाकर राख करलो। इस में से हथेली-भर राख सवेरे-शाम फाँकने से योनि से खून बहना, पैर चलना या पैर जारी होना बन्द हो जाता है।

(६) जले हुए चने, तज और लोध—बराबर-बराबर लेकर पीस लो और फिर सबकी बराबर चीनी मिला दो। इस में से हथेली-हथेली भर दवा फांको।

(७) रालको महीन पीसकर और उस में बराबर की शक्कर मिलाकर फाँको।

(८) छोटी दुधी को कूट-छानकर रखलो और हर सवेरे उस में से हथेली भर फाँको।

(९) असगन्ध को कूट-पीस और छान कर रख लो। फिर उस में बराबर की मिश्री पीसकर मिला दो। उस में से एक तोले दवा शीतल जलके साथ रोज़ फाँको।

(१०) बबूल का गोंद भून लो। फिर उस में बराबरका गेरू मिला दो और पीस लो। उस में से ७॥ माशे दवा हर सवेरे फाँको।

(११) हारसिंगार की कोंपले जल के साथ सिल पर पीस कर, भाँग की तरह पानी में छान कर पीलो।

(१२) मुल्तानी मिट्टी पानी में भिगो दो । फिर उसका नितरा हुआ पानी दिन में कई बार पीओ ।

(१३) सूखा और पुराना धनिया एक हथेली भर औटालो और छान कर पीलो ।

(१४) कचनार की कली, हरा गूलर, खुरफे का साग, मसूर की दाल और पटसनके फूल—इन सबको पकाकर लाल चाँवलों के भात के साथ खाओ ।

(१५) अनार की छाल औटाकर एक तोले भर पीओ ।

(१६) गधे की लीद सुखाकर और पोटली में बाँधकर योनि में रखो ।

(१७) छै माशे गेरू और ६ माशे सेलखड़ी एकत्र पीस कर पानी के साथ फाँको ।

(१८) छै माशे मालती के फूल और छै माशे शक्कर मिलाकर फाँको ।

(१९) बैंगन की कोंपलें पानी में घोट-छान कर पीओ ।

(२०) शुद्ध शंख ज़ीरा और मिश्री बराबर-बराबर लेकर पीस-छान लो । इस में से ६ माशे रोज़ खाने से ख़ून गिरना बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

(२१) सूखी बकरी की मेंगनी पीसकर और पोटली में रख कर, उस पोटली को गर्भाशय के मुख के पास रखो । अगर इस में थोड़ा सा "कुन्दर" भी मिला दो तो और भी अच्छा ।

(२२) सात हारसिंगार की कोंपलें और सात काली मिर्च—पानी में पीस-छान कर पीलो ।

(२३) भुना ज़ीरा और कच्चा ज़ीरा लेकर और लाल चाँवलों की पीच में पीसकर भग में रखो । इससे फ़ौरन ख़ून बन्द हो जाता है । परीक्षित है ।

(२४) रसौत १ माशे, राल १ माशे, बबूल का गोंद १ माशे,

और सुपारी २॥ माशे,—इनको सिल पर पानी के साथ पीसकर एक-एक माशे की टिकियाँ बनालो। इन में से २। ३ टिकियाँ खाने से खून बन्द हो जाता है।

(२५) गायके पाँच सेर दूधमें एक पाव चिकनी सुपारी पीसकर मिलादो और औटाओ। जब औट जाय, उस में आध सेर चीनी डाल दो और चाशनी करो। फिर छोटी माई ५२॥ माशे, बड़ी माई ५२॥ माशे, पकी सुपारी के फूल १०५ माशे, धाय के फूल १०५ माशे और ढाक का गोंद १० तोले—इन सब को महीन पीस कर कपड़-छन करलो। जब चाशनी शीतल होने लगे, इस छने चूर्ण को उसमें मिला दो और चूल्हे से उतारकर साफ बर्तन में रख दो। मात्रा २० माशे से ६० माशे तक। इस सुपारी-पाक के खाने से योनि से नदी के समान बहता हुआ खून भी बन्द हो जाता है।

नर नारी की जननेन्द्रियोंका वर्णन

नर की जननेन्द्रियाँ ।

पुरुष और स्त्री के जो अंग सन्तान पैदा करने के काम में आते हैं, उन्हें "जननेद्रियाँ" कहते हैं। जैसे,—लिंग और भग।

पुरुष और स्त्री दोनों की जननेन्द्रियाँ एक तरह की नहीं होतीं। उनमें बड़ा भेद है। दोनों ही की जननेन्द्रियाँ दो-दो तरह की होती हैं:—(१) बाहर से दीखनेवाली, और (२) बाहर से न दीखनेवाली।

बाहर से दीखनेवाली जननेन्द्रियाँ

पुरुष का शिश्न या लिंग और अण्डकोष में लटके हुए अण्ड—ये बाहर से दीखनेवाली पुरुष की जननेन्द्रियाँ हैं। पुरुष की तरह स्त्री की भग बाहर से दीखनेवाली जननेन्द्रिय है। भग की नाक, भग के होठ और योनिद्वार प्रभृति भी भग के हिस्से हैं। ये भी बाहर से दीखते हैं।

भीतरी जननेन्द्रियाँ।

पुरुष और स्त्री दोनों की भीतरी जननेन्द्रियाँ वस्तिगह्वर या पेड़ू की पोल में रहती हैं, इसी से दीखती नहीं। शुक्राशय, शुक्रप्रणाली, प्रोस्टेट और शिश्नमूल ग्रन्थि—ये पुरुष के पेड़ की पोल में रहनेवाली

भीतरी जननेन्द्रियाँ हैं। इसी तरह डिम्बग्रन्थि, डिम्ब प्रनाली, गर्भाशय और योनि—ये स्त्री के पेड़ू की पोल में रहनेवाली जननेन्द्रियाँ हैं।

शिश्न या लिंग।

शिश्न या लिंग मर्द के शरीर का एक अङ्ग है। इसी में होकर मूत्र मूत्राशय से बाहर आता है और इसी से पुरुष स्त्री से मैथुन करता है। जब लिङ्ग ढीला, शिथिल या सोया रहता है, तब वह तीन या चार इञ्च लम्बा होता है। जब पुरुष स्त्री को देखता, छूता या आलिङ्गन करता है, तब उसे हर्ष होता है। उस समय उसकी लम्बाई बढ़ जाती है और वह पहले से खूब कड़ा भी हो जाता है। अगर इस समय वह सख्त न हो जाय, तो योनि के भीतर जाही न सके। जिन पुरुषों का लिङ्ग हस्तमैथुन आदि कुकर्मों से ढीला हो जाता है, वह मैथुन कर नहीं सकते। मैथुन के लिये लिङ्ग के सख्त होने की ज़रूरत है।

शिश्न मणि।

—०००—

लिङ्ग के अगले भाग को मणि या सुपारी अथवा शिश्नमुण्ड—लिङ्ग का सिर कहते हैं। इस में एक छेद होता है। उस छेद में होकर ही मूत्र और वीर्य बाहर निकलते हैं। इस सुपारी के ऊपर चमड़ी होती है, जिसे सुपारी का घूंघट भी कहते हैं। यह हटाने से ऊपर को हट-जाती और फिर खींचने से सुपारी को ढक लेती है। जब यह चमड़ी या घूँघट की खाल तङ्ग होती है, तब हटाने से नहीं हटती; यानी घूँघट बड़ी मुश्किल से खुलता है। मैथुन के समय इस के हटजाने की ज़रूरत रहती है। अगर इस के बिना हटे मैथुन किया जाता है, तो पुरुष को बड़ी तकलीफ होती है और मैथुन-कर्म भी अच्छी तरह नहीं होता। इसी से बहुत से आदमी तङ्ग आकर, इसे मुसलमानों की तरह कटवा डालते

हैं। कटवा देने से कोई हानि नहीं होती। मुसल्मानोंमें तो इसका दस्तूर ही हो गया है। बाज़-बाज़ औक़ात छोटे-छोटे बालकों की यह चमड़ी अगर तङ्ग होती है, तो उन्हें बड़ा कष्ट होता है। जब उनकी पालनेवाली सफाई करने के लिये इस घूँघट को खोलती हैं, तब वे रोते-चीख़ते हैं और कभी-कभी पेशाब करते समय किंच्छते और चिल्लाते हैं।

इस मणि या सुपारी के पीछे गोल और कुछ गहरी सी जगह होती है। वहाँ एक प्रकार की बदबूदार चिकनी चीज़ जमा हो जाती है। यह चीज़ वहीं बनती रहती है। जब यह ज़ियादा बनती है या सुपारी बहुत दिनों तक धोई नहीं जाती, तब यह बहुत इकट्ठी हो जाती है और वहाँ से चलकर सुपारी पर भी आ जाती है। जो मूर्ख लिङ्ग को रोज़ नहीं धोते, उन की सुपारी या उस की गर्दन में इस चिकने पदार्थ से फुन्सियाँ हो जाती हैं। बहुत बार लिङ्गार्श या उपदंश रोग भी हो जाता है। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

हस्ताभिघातान्नखदन्तघातादधावनादत्युपसेवनाद्वा ।
योनिप्रदोषाच्चभवन्ति शिश्ने पञ्चोपदंशा विविधोपचारैः ॥

हाथ की चोट लगने, नाखुन या दाँतों से घाव हो जाने, लिंग को न धोने, पशु प्रभृति के साथ मैथुन करने और बाल वाली या रोगवाली स्त्री से मैथुन करने से पाँच तरह का उपदंश या गरमी रोग हो जाता है। लिंगार्श होने से सुपारी के नीचे मुर्ग़ की चोटी के समान फुन्सियाँ हो जाती हैं।

शिश्न-शरीर ।

—:o:—

सुपारी और लिंग की जड़ के बीच में जो लिंग का हिस्सा है, उसे लिंगका शरीर कहते हैं। लिंग का कुछ भाग फोतों या अण्ड-कोषों के नीचे ढका रहता है। इसे ही लिङ्ग की जड़ या शिश्नमूल कहते हैं। लिंग का पिछला हिस्सा मूत्राशय या वस्ति से मिला रहता है।

मूत्राशय के नीचले भाग से लेकर सुपारी के सूराख़ तक पेशाब बहने के लिये एक लम्बी राह बनी हुई है। इसे मूत्र-मार्ग कहते हैं। पेशाब आने का एक द्वार भीतर और एक बाहर होता है। जिस जगह से मूत्रमार्ग शुरु होता है, उसे ही भीतर का मूत्रद्वार कहते हैं और सुपारी के छेद को बाहर का मूत्रद्वार कहते हैं। पुरुष के मूत्र-मार्ग की लम्बाई ७। ८ इंच और स्त्री के मूत्रमार्ग की लम्बाई डेढ़ इंच होती है। भीतरी मूत्रद्वार के नीचे प्रोस्टेट नाम की एक ग्रन्थि रहती है। मूत्रमार्ग का एक इंच हिस्सा इसी ग्रन्थि में रहता है।

अण्डकोष या फोते ।

लिंग के नीचे एक थैली रहती है, उसे ही अण्डकोष कहते हैं। संस्कृत में उसे वृषण कहते हैं। फोतों की चमड़ी के नीचे वसा नहीं होती, पर मांस की एक तह होती है। जब यह मांस सुकड़ जाता है, तब यह थैली छोटी हो जाती है और जब फैल जाता है, तब बड़ी हो जाती है। सर्दी के प्रभाव से यह मांस सुकड़ता और गर्मी से फैलता है। बुढ़ापे में मांस के कमज़ोर होने से यह थैली ढीली हो जाती और लटकी रहती है।

इस अण्डकोष या थैली के भीतर दो अण्ड या गोलियाँ रहती हैं। दाहिनी तरफ वाले को दाहिना अण्ड और बाईं तरफवाले को बाँयाँ अण्ड कहते हैं। अण्डकोष या अण्डों की थैली के भीतर एक पर्दा रहता है, उसी से वह दो भागों में बँटा रहता है। उस पर्दे का बाहरी चिह्न वह सेवनी है, जो अण्डकोष की थैली के बीच में दीखती है। यह सेवनी पीछे की तरफ मलद्वार या गुदा और आगे की तरफ लिंग की सुपारी तक रहती है।

इस अण्डकोष के भीतर दो कड़ीसी गोलियाँ होती हैं, इन्हें "अण्ड" कहते हैं। ये दोनों अण्ड जिस चमड़े की थैली में रहते हैं, उसे "अण्ड-कोष" कहते हैं। इन अण्डों के ऊपर एक झिल्ली रहती है। इस झिल्ली

की दो तह होती हैं। जब इन दोनों तहों के बीच में पानी-जैसा पतला पदार्थ जमा हो जाता है, तब अण्ड बड़े मालूम होते हैं। उस समय "जलदोष" होगया है या पानी भर गया है, ऐसा कहते हैं।

इस अंडको "शुक्र-ग्रन्थि" भी कहते हैं। इसमें दो तीन सौ छोटे-छोटे कोठे होते हैं। इन कोठोंमें बाल-जैसी पतली आठ नौ सौ नलियाँ रहती हैं। ये नलियाँ बहुत ही मुड़ी हुई रहती हैं और पीछे की तरफ जाकर एक दूसरे से मिलकर जाल सा बना देती हैं। इस जाल में से बीस या पच्चीस बड़ी नलियाँ निकलती हैं और आगे चलकर इन सब के मिलने से एक बड़ी नली बन जाती है। इसी को "शुक्र प्रनाली" कहते हैं। शुक्र ग्रन्थि की नलियाँ वास्तव में छोटी-छोटी नली के आकार की ग्रन्थियाँ हैं। इन्हीं में वीर्य बनता है। इस वीर्य या शुक्र के मुख्य अवयव शुक्रकीट या शुक्राणु हैं।

अंडकोष को टटोलने से, ऊपर के हिस्से में, एक रस्सी सी मालूम होती है। इसी रस्सी में बँधे हुए अण्ड अण्डकोष में लटके रहते हैं। इस रस्सी को अण्डधारक रस्सी कहते हैं। यह पेट तक चली जाती है। कभी-कभी उसी राह से अंत्र या आँतों का कुछ भाग अण्डकोष में चला आता है, तब फोते बढ़ जाते हैं। उस समय "अंत्रवृद्धि" रोग हो गया है, ऐसा कहते हैं।

शुक्राशय ।

लिख आये हैं, कि अण्ड या शुक्र-ग्रन्थि में शुक्र या वीर्य बनता है। यही शुक्र शुक्र-प्रणाली द्वारा शुक्राशय में आकर जमा होता है। फिर मैथुन के समय, यह शुक्राशय से निकल कर, मूत्रमार्ग में जा पहुँचता और वहाँ से सुपारी के छेदमें होकर योनि में जा गिरता है। यह शुक्राशय भी वस्तिगह्वर या पेड़ू की पोल में, मूत्राशय से लगा रहता है। शुक्राशय की दो थैली होती हैं। इनके पीछे ही मलाशय है।

शुक्र या वीर्य।

शुक्र या वीर्य दूधके से रंगका गाढ़ा-गाढ़ा लसदार पदार्थ होता है। उस में एक तरह की गन्ध आया करती है। अगर वह कपड़े पर लग जाता है, तो वहाँ हलके पीले रंग का दाग़ हो जाता है। अगर वही कपड़ा आग के सामने रखा जाता या तपाया जाता है, तो उस दाग़ का रंग गहरा हो जाता है। वीर्य से तर कपड़ा सूखने पर सख्त हो जाता है।

वीर्य पानी से भारी होता है। एक वार मैथुन करने से आधे से सवा तोले तक वीर्य निकलता है। वीर्यके सौ भागों में ९० भाग जल, १ भाग सोडियम नमक, १ भाग दूसरी तरह के नमकों का, ३ भाग खटिक प्रभृति पदार्थोंका और पाँच भाग एक तरह के सेलोंके होते हैं, जिन्हें शुक्राणु या शुक्रकीट कहते हैं।

शुक्राणु या शुक्रकीट।

अगर कोई ताज़ा वीर्य को खुर्दवीन शीशे में देखे, तो उसे उस में वड़ी तेज़ी से दौड़ते हुए कीड़े दीखेंगे। इन्हीं को शुक्राणु, शुक्रकीट या सेल कहते हैं। सन्तान इन्हीं से होती है। जिनके शुक्र में शुक्रकीट नहीं होते, जिनकी शुक्रग्रन्थियों से ये नहीं वनते, वे पुरुष सन्तान पैदा कर नहीं सकते। हाँ, विना इनके कदाचित मैथुन कर सकते हैं। एक वारके निकले हुए वीर्य में ये कीड़े एक करोड़ अस्सी लाख से लगाकर वाईस करोड़ साठ लाख तक होते हैं। अगर आप वीर्य को एक काँच के गिलास में रख दें, तो कुछ देर में दो तहें हो जायँगी। ऊपर की तह पतली और दही के तोड़-जैसी होगी, पर नीचे की गाढ़ी और दूधके रंगकी होगी। सारे शुक्रकीट नीचे वैठ जाते है, इसी से नीचे की तह गाढ़ी होती है। नीचे की तह जितनी ही गहरी और गाढ़ी होगी, उस में उतने ही शुक्रकीट अधिक होंगे।

शुक्रकीट की लम्बाई एक इंच के हज़ारवें भाग या पाँचसौवें भागके जितनी होती है। इस कीड़े का अगला भाग मोटा और अण्डे की सी शकलका होता है तथा पिछला भाग पतला और नोकदार होता है। अगले भाग को सिर, सिर के पीछेके दबे हुए भाग को गर्दन, बीचके भाग को शरीर और शरीर के अन्तिम भाग को दुम या पूँछ कहते हैं। शुक्रकीट या वीर्य के कीड़े वीर्य के तरल भाग में तैरा करते हैं। कमज़ोर कीड़े धीरे-धीरे और ताक़तवर तेज़ी से दौड़ते फिरते हैं। इनकी दुम पानी में तैरते हुए या ज़मीन पर रेंगते हुए साँप की तरह हरकत करती जान पड़ती है।

शुक्रकीट कब बनने लगते हैं ?
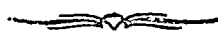
शुक्रकीट चौदह या पन्द्रह बरस की उम्र में बनने लगते हैं, परन्तु इस समय के शुक्र-कीट बलवान सन्तान पैदा करने योग्य नहीं होते। अच्छे शुक्रकीट बीस या पच्चीस सालकी उम्र में बनते हैं। अतः जो लोग छोटी उम्र में ही मैथुन करने लगते हैं, उनकी अपनी वृद्धि रुक जाती है और जो सन्तान पैदा होती है, वह निर्बल और अल्पायु होती है। इसलिये २०। २५ वर्ष की उम्र से पहले स्त्री-प्रसंग न करना चाहिये।

शुक्रग्रन्थियों से शुक्रकीट तो बनते ही हैं। इनके सिवा एक और बड़ा काम होता है—एक और काम की चीज़ बनती है। यद्यपि सन्तान पैदा करने के लिए उसकी ज़रूरत नहीं होती, पर वह खून में मिलकर शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गों में पहुँचती और उन्हें बलवान करती है। हर पुरुष को शरीर बढ़नेके समय इसकी दरकार होती है। अगर हम किसी के अण्डोंको जवानी आने से पहले ही निकाल दें, तो वह अच्छी तरह न बढ़ेगा। उसके डाढ़ी मूँछ वगैरः जवानी के चिह्न अच्छी तरह न निकलेंगे। बैल और साँड का फ़र्क़ सभी जानते हैं। जब बछड़े के अण्ड निकाल लेते हैं, तब वह बैल बन जाता है। बैल न तो

सन्तान पैदा कर सकता हैं और न वह साँड के समान बलवान ही होता है। वही बछड़ा अण्ड रहने से साँड बन जाता है और खूब पराक्रम दिखाता है; अतः सब अङ्गों के पके पहले, इन शुक्र-ग्रन्थियों—अण्डों से शुक्र बनाने का काम लेना, अपनी और अपनी औलाद की हानि करना है। इसलिये २५ साल से पहले मैथुन द्वारा या और तरह वीर्य निकालना परम हानिकारक है। इसी से सुश्रुतने २४ वर्ष के पुरुष और सोलह साल की स्त्री को विवाह करके गर्भाधान करने की आज्ञा दी है, पर आजकल तो १३।१४ साल का लड़का बहू के पास भेज दिया जाता है! उसीका नतीजा है, कि हिन्दू क़ौम आज सब से कमज़ोर और सब से मार खानेवाली मशहूर है।

स्त्री की जननेन्द्रियों का वर्णन

नारी की जननेन्द्रियाँ।

जिस तरह मर्द के लिंग और अंडकोष होते हैं; उसी तरह स्त्री के भग और उसके दूसरे हिस्से होते हैं। भग, भगनासा, भग के होठ और योनिद्वार ये बाहर से दीखते हैं। बस्तिगह्वर या पेड़ू की पोल में डिम्बग्रन्थि, डिम्बप्रनाली, गर्भाशय और योनि—ये होते हैं। ये बाहर से नहीं दीखते।

भग।

भग के बीचों-बीच में एक दराज़ सी होती है। उसके दोनों ओर चमड़ी के झोल से बने हुए दो कपाट या किवाड़ से होते हैं। चमड़ी के नीचे वसा होने की वजह से वे उभरे होते हैं। अगर ये दोनों कपाट

हटाये जाते हैं, तो भीतर दो पतले-पतले कपाट और दीखते हैं। इस तरह बड़े और छोटे दो कपाट होते हैं। इनको बड़े और छोटे भगोष्ठ या भगके होंठ भी कहते हैं।

अगर हम अंगुली से दोनों भगोष्ठों को हटावें, तो दरार या फाँक में दो सूराख़ नज़र आवेंगे। इनमें से एक सूराख बड़ा और दूसरा छोटा होता है। बड़ा सूराख योनि की राह है। इसी को योनिद्वार या योनि का दरवाज़ा भी कहते हैं। मैथुन के समय पुरुष का लिंग इसी छेद में होकर भीतर जाता है। इसी में होकर, मासिक धर्म के समय, रज बह-बहकर बाहर आता है और इसी राह से बालक बाहर निकलता है। इस छेद से कोई आध इंच ऊपर दूसरा छेद होता है। यह मूत्र-मार्ग का छेद और उसका बाहरी द्वार है। पेशाब इसी में होकर बाहर आता है।

जिन स्त्रियों का पुरुष से समागम नहीं होता, उनके योनिद्वार पर चमड़े का पतला पर्दा पड़ा रहता है। इस पर्दे में भी एक छेद होता है। इस छेद में होकर रजोधर्म का रज या खून बाहर आया करता है। जब पहले-पहल मैथुन किया जाता है, तब लिंग के ज़ोर से यह पर्दा फट जाता है। उस समय स्त्री को कुछ तकलीफ होती है और थोड़ा सा खून भी निकलता है। किसी-किसी का यह पर्दा बहुत पतला और छेद चौड़ा होता है। इस दशा में मैथुन करने पर भी चमड़ा नहीं फटता और लिंग भीतर चला जाता है। जब तक यह पर्दा मौजूद रहता है और उसका छेद बड़ा नहीं होता, तब तक यह समझा जाता है, कि स्त्री का पुरुष से समागम नहीं हुआ। इस पर्दे को योनिच्छद या योनि का ढकना कहते हैं।

बड़े भगोष्ट ऊपर जाकर एक दूसरे से मिल जाते हैं। जहाँ वे मिलते हैं, वह स्थान कुछ ऊँचा या उभरा हुआ सा होता है। इसे "कामाद्रि" कहते हैं। जवानी आने पर यहाँ बाल उग आते हैं।

कामाद्रि के नीचे और दोनों बड़े होठों के बीच में और पेशाब के

बाहरी छेद के ऊपर एक छोटा अंकुर होता है। इसे भगनासा या भग की नाक कहते हैं। जिस तरह मर्द के लिंग होता है, उसी तरह स्त्री के यह होता है। लिंग बड़ा होता है और यह छोटा होता है। जब मैथुन किया जाता है, तब इसमें खून भर आता है, इसलिये लिंग की तरह यह भी कड़ा हो जाता है। इसमें लिंग की रगड़ लगने से बेहताशा आनन्द आता है। जब मैथुन हो चुकता है, तब खून लौट जाता है, इसलिये यह भी लिंग की तरह ढीला हो जाता है।

डिम्ब-ग्रन्थियाँ।

जिस तरह मर्द के दो अंड या शुक्र-ग्रन्थियाँ होती हैं ; उसी तरह स्त्री के भी ऐसे ही दो अंग होते हैं। इनमें डिम्ब बनते हैं, इसलिये इन्हें डिम्ब-ग्रन्थियाँ कहते हैं। स्त्री के डिम्ब और शुक्राणु के मिलने से ही गर्भ रहता है। ये डिम्बग्रन्थियाँ वस्ति-गह्वर या पेड़ू की पोल में रहती हैं। एक ग्रन्थि गर्भाशय की दाहिनी ओर और दूसरी बाँई ओर रहती है। दोनों ग्रन्थियों में अन्दाज़न बहत्तर हज़ार डिम्ब-कोष होते हैं और हरेक कोष में एक-एक डिम्ब रहता है। डिम्ब-ग्रन्थियों के भीतर छोटी-बड़ी थैलियाँ होती हैं, उन्हीं को डिम्बकोष कहते हैं।

गर्भाशय।

—:o:—

यह वह अंग है, जिसमें गर्भ रहता है। यह वस्तिगह्वर या पेड़ू की पोल में रहता है। इसके सामने मूत्राशय और पीछे मलाशय रहता है। गर्भाशय के दोनों बग़ल, कुछ दूरी पर डिम्ब-ग्रन्थियाँ होती हैं। गर्भाशय का आकार कुछ-कुछ नाशपाती के जैसा होता है, परन्तु स्थूल भाग चपटा होता है। गर्भाशय की लम्बाई ३ इंच, चौड़ाई २ इंच और मुटाई १ इंच होती है। वज़न में यह अढ़ाई से साढ़े तीन तोले तक होता है।

गर्भाशय का ऊपरी भाग मोटा और नीचे का भाग, जो योनि से

जुड़ा रहता है, पतला होता है। नीचे के भाग में एक छेद होता है; इसे गर्भाशय का बाहरी मुँह कहते हैं। इसे अँगुली से छू सकते हैं।

गर्भाशय भीतर से पोला होता है। उसके अन्दर बहुत जगह नहीं होती, क्योंकि अगली-पिछली दीवारें मिली रहती हैं। गर्भ रह जाने पर गर्भाशय की जगह बढ़ने लगती है।

गर्भाशय के ऊपरी भाग में, दाहनी-बाँईं ओर डिम्बप्रणालियों के मुख होते हैं। जिस तरह डिम्ब-ग्रन्थियाँ दो होती हैं; उसी तरह डिम्ब-प्रणाली भी दो होती हैं। एक दाहिनी ओर और दूसरी बाईं ओर। ये दोनों प्रनालियाँ या नालियाँ गर्भाशय से आरम्भ होकर डिम्बग्रन्थियों तक जाती हैं। जब डिम्ब-ग्रन्थियों से कोई डिम्ब निकलता है, तब वह डिम्ब-प्रनाली की झालर के सहारे डिम्ब-प्रनाली के छेद तक और वहाँ से गर्भाशय तक पहुँचता है।

योनि ।
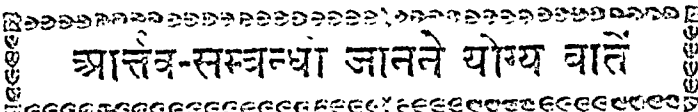
योनि वह अङ्ग है, जिसमें होकर मासिक खून बाहर आता, मैथुन के समय लिंग अन्दर जाता और प्रसवकाल में बच्चा बाहर आता है। वास्तव में, योनि भी एक नली है, जिसका ऊपरी सिरा पेड़ू में रहता है और गर्भाशय की गर्दन के नीचे के भाग के चारों ओर लगा रहता है। गर्भाशय का बाहरी मुख इस नली के अन्दर रहता है।

योनि की लम्बाई तीन या चार इंच होती है और उसकी दीवारें एक दूसरे से मिली रहती हैं। इसी से कोई चीज़ या कीड़ा-मकोड़ा आसानी से अन्दर जा नहीं सकता। योनि की लम्बाई-चौड़ाई दबाव पड़ने पर ज़ियादा हो सकती है। द्वार के पास से योनि तंग होती है, बीच में चौड़ी होती है और गर्भाशय के पास जाकर फिर तंग हो जाती है। योनि के द्वार पर योनि-संकोचनी पेशियाँ होती हैं, जो उसे सुकेड़ती हैं। योनि की दीवारों पर एक बड़ा शिराजाल या नस-जाल है, जो मैथुन के समय खून से भर जाता है। इसी के कारण से मैथुन के समय योनि की दीवारें पहले से मोटी हो जाती हैं।

स्तन।

—:o:—

स्त्री के स्तन या दुग्ध-ग्रन्थियाँ भी होती हैं। स्तनों की टोंटनियों या घुण्डियों में १२ से २० तक छेद होते हैं। कुमारियों के स्तन छोटे होते हैं। ज्यों-ज्यों कन्या जवान होती है, उसकी जननेन्द्रियाँ बढ़ती हैं। जवानी आने पर स्तन भी बढ़ते हैं और भग के ऊपर बाल भी आते हैं। जब स्त्री गर्भवती होती है और बालक को दूध पिलाती है, तब ये स्तन बड़े हो जाते हैं। जिसने गर्भ धारण न किया हो, उस स्त्री का स्तनमण्डल हलका गुलाबी होता है। गर्भ के दूसरे मास में स्तनमण्डल बड़ा और उसका रंग गहरा हो जाता है। अन्तमें वह काला हो जाता है। जब स्त्री दूध पिलाना बन्द करती है, तब स्तन-मण्डल का रंग फिर हलका पड़ने लगता है; परन्तु उतना हलका नहीं होता, जितना कि गर्भवती होने के पहले था।

आर्त्तव-सम्बन्धी जानने योग्य बातें

जब कन्या जवान होने लगती है, तब उसकी योनि से एक तरह का लाल पतला पदार्थ हर महीने निकला करता है। इसी को रजोधर्म या रजस्वला होना कहते हैं। रजोदर्शन के साथही जवानी के और चिह्न भी प्रकट होते हैं—स्तन बढ़ते हैं और भगके ऊपर बाल आते हैं।

आर्त्तव खून-मिला हुआ स्राव है, जो गर्भाशय से निकल कर आता है। इस खून में श्लेष्मा मिली रहती है, इसी से यह जल्दी जम नहीं सकता। सब स्त्रियों के समान आर्त्तव नहीं होता। यह एक से तीन या चार छटाँक तक होता है।

आर्त्तव निकलने के दो चार दिन पहले से जब तक वह निकलता रहता है, स्त्रियों को आलस्य और भोजन से अरुचि होती

है। कमर,कूल्हों और पेड़ू में भारीपन होता है। बाज़ी स्त्रियों का मिज़ाज चिड़चिड़ा हो जाता है। जो अमीरी की वजह से मोटी हो जाती हैं, जिन को कब्ज़ और अजीर्ण रहता है, जो जोश दिलाने वाली पुस्तकें—लण्डन रहस्य या छबीली भटियारी प्रभृति पढ़ती हैं या ऐसी बातें सुनती और करती हैं, उन के पेड़ू, कमर और कूल्-हों में बड़ी वेदना होती और उनके हाथ पैर टूटा करते हैं।

इस गरम देश की स्त्रियों को बारह या चौदह साल की उम्र में रजोधर्म होने लगता है। किसी-किसी को बारह वर्ष के पहले ही होने लगता है। यूरोप आदि शीतप्रधान देशों की स्त्रियों को चौदह-पन्द्रह साल की उम्र में रजोदर्शन होता है। जिन घरों की लड़-कियाँ खाती तो बढ़िया-बढ़िया माल हैं और काम करती हैं कम तथा जो पतिसंग या विवाह-शादी की बातें बहुत करती रहती हैं, उन्हें रजोदर्शन जल्दी होता है। ग़रीब घरों की कमज़ोर और रोगीली लड़कियों को रजोदर्शन देर में होता है।

बारह या चौदह साल की उम्र से रजोधर्म होने लगता और ४५ या ५० साल की उम्र तक होता रहता है। जब गर्भ रह जाता है, तब रजोधर्म नहीं होता। जब तक स्त्री गर्भवती रहती है, रजो-धर्म बन्द रहता है। जो स्त्रियाँ अपने बच्चों को दूध पिलाती हैं, वे बच्चा जनने के कई महीनों तक भी रजस्वला नहीं होतीं। ४५ और ४६ साल के दर्म्यान रजोधर्म होना स्वभाव से ही बन्द हो जाता है। जब तक स्त्री रजस्वला होती रहती है, उसे गर्भ रह सकता है। कभी-कभी रजोदर्शन होने के पहले और रजोदर्शन बन्द हो जाने के बाद भी गर्भ रह जाता है।

आर्त्तव निकलने के दिनों में स्त्री की बाक़ी जननेन्द्रियों में भी कुछ फेरफार होता रहता है। डिम्बग्रन्थि, डिम्बप्रनालियाँ और योनि अधिक रक्तमय हो जाती हैं और उन का रङ्ग गहरा हो जाता है। गर्भाशय भी कुछ बढ़ जाता है।

दो आर्त्तव या मासिक धर्मों के बीच में २८ दिन का अन्तर रहता है। किसी-किसी को एक या दो दिन कम या ज़ियादा लगते हैं। बहुधा तीन या चार दिन तक रजःस्राव होता है। किसी-किसी को एक दिन और किसीको ज़ियादा-से-ज़ियादा छै दिन लगते हैं। छै दिनों से अधिक रजःस्राव होना या महीने में दो बार होना रोग है। इस दशा में इलाज करना चाहिये।

मैथुन।

मैथुन केवल सन्तान पैदा करने के लिये है, पर विधाता ने इस में एक अनिर्वचनीय आनन्द रख दिया है। इस से हर प्राणी इसे करना चाहता है और इस तरह जगदीश की सृष्टि चलती रहती है।

मैथुन करने से पुरुष का शुक्र या वीर्य स्त्री की योनि में पहुँचता है। जब ठीक विधि से मैथुन किया जाता है, तब लिंग की सुपारी योनि की दीवारों से रगड़ खाती है। इस रगड़ का असर नाड़ियों द्वारा मस्तिष्क तक पहुँचता है। इस समय स्त्री और पुरुष दोनों को बड़ा आनन्द आता है।

योनि की दीवारें एक श्लेष्मसमय रस से भीगी रहती हैं। बहुत से अनजान इसे स्त्री का वीर्य समझ लेते हैं। पर इस तर पदार्थ में सन्तान पैदा करने की सामर्थ्य नहीं होती। यह खाली योनि की दीवारों को गीली रखता है, जिस से लिंग की रगड़ से योनिकी श्लेष्मिक कला को नुक़सान न पहुँचे।

जब सुपारी गर्भाशय के मुँह से मिलजाती है,तब स्त्री को बहुत ही ज़ियादा आनन्द आता है। अगर सुपारी या शिश्नमुण्ड गर्भाशय के पास न पहुँचे या उस से रगड़ न खाय, तो मैथुन व्यर्थ है। स्त्री को ज़रा भी आनन्द नहीं आता। जब सुपारी और गर्भाशय के मुख मिलते हैं, तब वीर्य बड़े ज़ोर से निकलता और गर्भाशय के मुँह के पास ही योनि में गिरता है। गर्भाशय का स्वभाव वीर्यको चूसना है,

अतः वह अनेक बार उसे फौरन ही चूस लेता है। वीर्य निकल चुकते ही मैथुन-कर्म खतम हो जाता है। वीर्य निकलतेही खून लौट जाता है, इस लिये लिंग शिथिल हो जाता है। बहुत मैथुन हानिकारक है। अत्यधिक मैथुन से स्त्री-पुरुष दोनों ही यक्ष्मा या राजरोग प्रभृति प्राणनाशक रोगों के शिकार हो जाते हैं।

गर्भाधान ।

जब पुरुष का वीर्य स्त्रीके गर्भाशय में जाता है, तब उस में शुक्र-कीट भी होते हैं। शुक्रकीटों का डिम्बों से अधिक अनुराग होता है; अतः जिस डिम्बप्रणाली में डिम्ब होता है, उसी में शुक्रकीट घुसते हैं। मतलब यह है कि, शुक्रकीट धीरे-धीरे गर्भाशय से डिम्ब-प्रणाली में जा पहुँचते हैं। गर्भ रहने के लिये शुक्रकीट की ही ज़रूरत होती है। वीर्य के साथ शुक्रकीट तो बहुत जाते हैं, पर इन में जो शुक्रकीट ज़बर्दस्त होता है, वही डिम्ब के अन्दर घुस पाता है।

बहुत से अनजान समझते हैं कि, गर्भाशय में अधिक वीर्य के जाने से गर्भ रहता है। यह बात नहीं है। गर्भ के लिये एक शुक्रकीट ही काफी होता है। इसलिये अगर ज़रा सा वीर्य भी गर्भाशय में रह जाता है तो गर्भ रहजाता है, योनि, गर्भाशय और डिम्ब-प्रनाली में शुक्रकीट कई दिनों तक जीते रहते हैं; अतः जिस दिन मैथुन किया जाय उसी दिन गर्भ रह जाय,यह बात नहीं है। शुक्र-कीटों के जीते रहनेसेमैथुन के कई दिन बाद भी गर्भ रह सकता है

असल में शुक्राणु और डिम्ब के मिलने को गर्भाधान कहते हैं; यानी इन दोनों के मिलने से गर्भ रहता है। जब एक शुक्राणु या शुक्र के कीड़े का एक ही डिम्ब से मेल होता है, तब एक ही गर्भ रहता और एक ही बच्चा पैदा होता है। जब कभी दो शुक्रकीटों का दो डिम्बों से मेल हो जाता है, तब दो गर्भ पैदा होते हैं। इस दशा में स्त्री एक साथ या थोड़ी देर के अन्तर से दो बच्चे जनती है।

कभी-कभी दो शुक्रकीटों का एक डिम्ब से मेल हो जाता है, तब जो बालक पैदा होता है, उस के आपस में जुड़े हुए दो शरीर होते हैं। ऐसे बालक बहुधा बहुत दिन नहीं जीते।

शुक्रकीट और डिम्ब का संयोग बहुधा डिम्बप्रनाली में होता है, पर कभी-कभी गर्भाशय में भी हो जाता है। इन दोनों के मेल को ही गर्भाधान होना कहते हैं और इन दोनों के मेल से जो चीज़ बनती है, उसे ही गर्भ कहते हैं।

नाल क्या चीज़ है ?

भ्रूण, गर्भ या बच्चा गर्भाशय की दीवार से एक रस्सी द्वारा लटका रहता है। इस रस्सीको ही नाल या नाभिनाल कहते हैं। क्योंकि नाल एक तरफ भ्रूण या बच्चे की नाभि से लगा रहता है और दूसरी ओर गर्भाशय—कमल से। नाभिनाल उतनाही लम्बा होता है, जितना कि भ्रूण या बच्चा। कभी-कभी यह बहुत लम्बा या छोटा भी होता है।

कमल किसे कहते हैं ?

उस स्थानको जिससे भ्रूण नाल द्वारा लटका रहता है, "कमल" कहते हैं। कमल सामान्यतः गर्भाशय के गात्र में या तो ऊपर की ओर या उसकी अगली-पिछली दीवारों में बनता है। कभी-कभी यह गर्भाशय के भीतरी मुख के पास भी बन जाता है, यह अच्छा नहीं। इस से बच्चा जनते समय अधिक खून जाने से ज़च्चा की जान जोखिम में रहती है। यह कमल तीसरे महीने में अच्छी तरह बन जाता है। कमल के ये काम हैं;—

(१) कमल भ्रूणको धारण करता और इसके द्वारा भ्रूण माता के शरीर से जुड़ा रहता है।

(२) कमल द्वाराही भ्रूणका पोषण होता है।

(३) कमल से ही भ्रूण के साँस लेने का काम होता है।

(४) कमल ही भ्रूण के रक्त-शोधक यंत्र का काम करता है।

जिस तरह बच्चे का पोषण कमल के द्वारा होता है; उसी तरह उसके श्वासोच्छ्वास का काम भी कमल द्वारा ही होता है।

गर्भ का वृद्धि क्रम ।

तीन चार सप्ताहके गर्भ की लम्बाई तिहाई इंच और भार सवा से डेढ़ माशे तक होता है। परिमाण चींटी के समान होता है। मुख के स्थान पर एक दरार और नेत्रों की जगह दो काले तिल होते हैं।

छै सप्ताह का गर्भ—इसकी लम्बाई आध इंचसे एक इंच तक और बोझ तीन से ५ माशे तक होता है। सिर और छाती अलग-अलग दीखते हैं। चेहरा भी साफ दीखता है। नाक, आँख, कान और मुँहके छेद बन जाते तथा हाथों में उँगलियाँ निकल आती हैं। कमल बनना भी आरम्भ हो जाता है।

दो मास का गर्भ—इसकी लम्बाई डेढ़ इञ्चके क़रीब और भार आठ से बीस माशे तक। नाक, होठ और आँखें दीखती हैं; परन्तु भ्रूण लड़का है या लड़की, यह नहीं मालूम होता। मलद्वार, फुफ्फुस, और प्लीहा आदि दीखते हैं।

तीन मासका गर्भ—इसकी लम्बाई टाँगों को छोड़कर दो-तीन इञ्च और भार अढ़ाई छटाँकके क़रीब होता है। सिर बहुत बड़ा होता है। अंगुलियाँ अलग-अलग दीखती हैं। भगनासा या शिश्न भी नज़र आते हैं; अतः कन्या है या पुत्र,इस बातके जानने में सन्देह नहीं रहता।

चार मास का गर्भ—इसकी लम्बाई साढ़े तीन इञ्च के क़रीब और टाँगों को मिलाकर छै इञ्चके लगभग। सिर की लम्बाई कुल शरीरकी लम्बाई से चौथाई होती है। गर्भ का लिङ्ग साफ दीखता है। नाखुन

वनने लगते हैं। कहीं-कहीं रोएँ दीखने लगते हैं और हाथ पाँव कुछ-कुछ हरकत करने लगते हैं।

पाँच मासका गर्भ—सिर से एड़ी तक दस इञ्च के क़रीब लम्बा और बोझ में आध सेर होता है। सारे शरीर पर वारीक वाल होते हैं। यकृत अच्छी तरह वन जाता है। आँतों में कुछ मल जमा होने लगता है। गर्भ कुछ हिलता डोलता है। माताको उसका हरकत करना या हिलना-डोलना मालूम होने लगता है। नाखुन साफ दीखते हैं।

सात मासका गर्भ—इसकी लम्बाई १४ इञ्च और भार डेढ़ सेर के लगभग। सिर पर कोई पाँच इञ्च लम्बे वाल होते हैं। आँतों में मल इकट्ठा हो जाता है। इस मासमें पैदा हुए वालकका अगर यत्नसे पोषण किया जाय, तो वच भी सकता है, पर ऐसे वालक वहुधा मर जाते हैं।

छे मासका गर्भ—इस की लम्बाई सिर से एड़ी तक १२ इंच और भार एक सेर के क़रीब होता है। सिर के वाल और स्थानों की अपेक्षा ज़ियादा लम्बे होते है। भौं और वरौनियाँ वनने लगती हैं।

आठ मास का गर्भ—इसकी लम्बाई १६।१७ इञ्च और भार दो सेर के क़रीव होता है। इस मासमें पैदा हुआ वच्चा, अगर सावधानी से पालन किया जाय, तो जी सकता है।

नौ मास का गर्भ—इसकी लम्बाई १८ इंच तक और भार सवा दो सेर से अढ़ाई सेर तक होता है। इस मास में अण्ड वहुधा अण्ड-कोष में पहुच जाते हैं।

दस मास का गर्भ—इसकी लम्बाई २० इंच के लगभग और वज़न सवा तीन से साढ़े तीन सेर के क़रीव होता है। शरीर पूरा वन जाता है। हाथोंकी अँगुलियों के नाखुन पोरुओं से अलग दीखते हैं। पैर की उँगलियों के नख पोरुओं तक रहते हैं; आगे नहीं वढ़े रहते। टटरी के वाल १ इंच लम्बे होते हैं। अगर वालक जीता हुआ पैदा होता है, तो वह ज़ोर से चिल्लाता है और यदि उसके होठों में कोई चीज़ दी जाती है, तो वह उसे चूसने की चेष्टा करता है।

पीड़ा नहीं होती; लेकिन अमीरों की स्त्रियाँ अथवा नीचे लिखी स्त्रियाँ बच्चा जनने में बड़ी तकलीफ सहती हैं:—

(१) जो दुर्बल या नाज़ुक होती हैं।

(२) जो कम उम्र में बच्चा जनती हैं।

(३) जो अधिक अमीर होती हैं।

(४) जो किसी भी तरह की मिहनत नहीं करतीं।

(५) जिनका वस्तिगह्वर अच्छी तरह बना हुआ नहीं होता, जिनका वस्तिगह्वर विशाल—लम्बा-चौड़ा न होकर तंग होता है और जिनके वस्तिगह्वर की हड्डियाँ किसी रोग से मुड़ जाती हैं।

(६) जो ईश्वरीय नियमों या क़ानून-कुदरत के खिलाफ़ काम करती हैं।

(७) जिनका स्वभाव चंचल होता है

(८) जो बच्चा जनने से डरती हैं।

बच्चा जनने के समय स्त्री के दर्द क्यों चलते हैं?

बच्चा जनने का समय नज़दीक होने पर, स्त्री के गर्भाशय का मांस सुकड़ने लगता है, पर वह एक-दम से नहीं सुकड़ जाता, धीरे-धीरे सुकड़ता है। इसी सुकड़ने से लहरों के साथ दर्द या वेदना होती है। मांस के सुकड़ने से गर्भाशय की भीतरी जगह कम होने लगती है और जगह की कमी एवं गर्भाशय की दीवारों के दबाव से गर्भाशय के भीतर की चीज़ें—बच्चा और जेरनाल वगैरः बाहर निकलना चाहते हैं।

इतनी तंग जगहोंमें से बच्चा आसानी से कैसे निकल आता है?

जब बच्चा होनेवाला होता है, तब गर्भ के पानी से भरी हुई पोटली सी गर्भाशय के मुँह में आकर अड़ जाती है। इस से गर्भाशय का

मुँह चौड़ा हो जाता है और बालक के सिर निकलने लायक़ जगह हो जाती है। जब बच्चे का सिर गर्भाशय के मुँह में आ पड़ता है, तब उसके आगे जो पानी की पोटली होती है, वह भारी दबाव पड़ने से फट जाती और गर्भ का जल बह-बह कर योनि के बाहर आने लगता है। इस जल-भरी पोटली के फूटने के साथ ज़रा सा खून भी दिखाई देता है। गर्भ-जलसे योनि और भग खूब तर हो जाते हैं और इसी वजह से बच्चा सहज में फिसल आता है।

बाहर आते ही बच्चा क्यों रोता है ?

ज्योंही बच्चा योनि के बाहर आता है, वह ज़ोर से चिल्लाता है। यह चिल्लाकर रोना मुफ़ीद है, इस से वह श्वास लेता और हवा पहली ही बार उसके फुफ्फुसों में घुसती है। अगर बालक होते ही नहीं रोता, तो उसके जीने में सन्देह हो जाता है; यानी वह मर जाता है। अगर पेट से मरा बालक निकलता है, तो वह नहीं रोता।

अपरा या जेरनाल के देर से निकलने में हानि ?

अगर बच्चा बाहर आने के एक घण्टे के अन्दर अपरा या ज़ेर नाल वगेरः बाहर न आ जावें, तो ख़राबी का ख़ौफ़ है। इन्हें दाई को फौरन ही निकालने के उपाय करने चाहिएँ। बच्चा होने के बाद पेट से एक लोथड़ा सा और निकलता है, उसी को अपरा या जेर नाल कहते हैं।

प्रसूता के लिये हिदायत।

—:o:—

जब बच्चा और बच्चे के बाद अपरा या जेर नाल गर्भाशय से निकल आते हैं, तब गर्भाशय अपनी पहली ही हालत में होने लगता है। यहाँतक कि चौदह या पन्द्रह दिनों में वह इतना छोटा हो जाता है कि, बस्तिगह्वर या पेड़ू में घुस जाता है। जब तक गर्भाशय पेड़ू में न घुस

जाय, प्रसूता को चलने-फिरने और मिहनत करने से बचना चाहिये। चालीस या बयालीस दिन में गर्भाशय ठीक अपनी असली हालत में हो जाता है, तब फिर किसी बात का भय नहीं रहता।

बालक होने के बारह या चौदह दिनों तक योनि से थोड़ा-थोड़ा पतला पदार्थ गिरा करता है। इस में ज़ियादा हिस्सा खून का होता है। पहले खून निकलता है, पर पीछे वह कम होने लगता है। तीन चार दिन बाद भूँदरा-भूँदरा पानी सा गिरता है। एक हफ़्ते बाद वह स्राव पीला हो जाता है। इस स्राव में खून के सिवा और भी अनेक चीज़ें होती हैं। इस में एक तरह की बू भी आया करती है। यदि भीतर से आने वाले पदार्थ में बदबू हो या उसका निकलना कम पड़ जाय या वह क़तई बन्द हो जाय, तो ग़फ़लत छोड़ कर इलाज करना चाहिये।

धन्यवाद! इस छोटे से लेखके लिखनेमें हमें "हमारी शरीर रचना" नामकी पुस्तक और डाक्टर कार्त्तिक चन्द्रदत्त महोदय एल०एम०एस० भूतपूर्व सिविल सर्जन हैदराबाद, दकन, से बहुत सहायता मिली है, अतः हम उक्त पुस्तक के लेखक महोदय और डाक्टर साहब मज़कूर को अशेष धन्यवाद देते हैं। डाक्टर त्रिलोकीनाथ जी को हम विशेष रूप से धन्यवाद इसलिए देते हैं, कि हम उनके ऋणी सब से अधिक हैं। हमने इस खण्ड में स्त्री रोगों की चिकित्सा लिखी है। उसका अधिक सम्बन्ध नरनारी की जननेन्द्रियों से है, इसलिए हमें शरीर के इन अंगों के सम्बन्ध में कुछ लिखना ज़रूरी था। यह मसाला हमें उक्त ग्रन्थ में अच्छा मिला, इसी से हम लोभ संवरण न कर सके।

क्षुद्र रोग-चिकित्सा ।

झांई और नीलिका वगैरः की चिकित्सा

जो लोग ज़ियादा शोच-फ़िक्र-चिन्ता या क्रोध करते हैं, अपने बल से अधिक परिश्रम या मिहनत करते हैं, हर समय किसी-न-किसी चिन्ताजनक ख़याल में ग़लतां-पेचाँ रहते हैं, उन के चेहरों पर कम उम्र में ही काले, लाल या सफ़ेद दाग़ अथवा चकत्ते से हो जाते हैं। उन के सुन्दर और दर्श-नीय चेहरे असुन्दर और अदर्शनीय हो जाते हैं।

आयुर्वेदग्रन्थों में लिखा है,—क्रोध और परिश्रम से कुपित हुआ वायु, पित्त से मिलकर, मुख पर आकर, वेदना-रहित सूक्ष्म और काला सा चकत्ता मुँह पर कर देता है। उसे ही व्यंग और झाँईं कहते हैं। किसी ने लिखा है, वात और पित्त सुर्ख़ रंग के दाग़ कर देते हैं, उन्हें ही झाँईं कहते हैं। किसी ने लिखा है, शरीर पर बड़ा या छोटा, काला या सफ़ेद, वेदनारहित जो मण्डलाकार दाग़ हो जाता है, उसे "न्यच्छ" कहते हैं। सुर्ख़ दाग़ को व्यंग या झाँईं और नीले को नीलिका या नीली झाँईं कहते हैं।

हिकमत में लिखा है,—तिल्ली, जिगर या पेट के फ़साद से, धूप और गरम हवा में फिरने से तथा शोच-फ़िक्र और ग़म करने एवं अत्यन्त स्त्री प्रसंग करने से आदमी का चेहरा स्याह, मैला, बदरूप और दाग़ धब्बे वाला हो जाता है; अतः धूप, गरम हवा, चिन्ता और स्त्री-प्रसङ्ग को त्यागकर तिल्ली और जिगर प्रभृति की दवा करनी चाहिये और मुँह पर कोई अच्छा उबटन मलना चाहिये।

चिकित्सा

(१) अर्जुन-वृक्ष की छाल और सफेद घोड़े के खुर की लपी—इन दोनों का लेप झाँई को नाश करता है।

(२) आक के दूध में हल्दी पीसकर लगाने से नयी क्या—पुरानी झाँई भी चली जाती है। परीक्षित है।

(३) तेल की, २१ दिन तक, प्रतिसर्षण नस्य देने से, गालों पर उठी हुई फुन्सियाँ इस तरह नष्ट हो जाती हैं, जिस तरह धर्म-सेवन से पाप।

(४) केशर, चन्दन, तमालपत्र, खस, कमल, नीलाकमल, गोरोचन, हल्दी, दारूहल्दी, मँजीठ, मुलहटी, सारिवा, लोध, पतंग, कूट, गेरू, नागकेशर, स्वर्णचोरी, प्रियंगू, अगर और लालचन्दन—इन २१ चीज़ों को एक-एक तोले लेकर, पानी के साथ, सिल पर महीन पीसकर, लुगदी या कल्क बना लो। फिर काली तिलों के एक सेर तेल में ऊपर की लुगदी और चार सेर पानी मिलाकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब पानी जलकर तेल मात्र रह जाय (पर तेल न जले) उतार कर छान लो और बोतल में भर कर रख दो।

इस तेल को राजरानियों या धनी मनुष्यों को मुख पर लगाना चाहिये। मुहासे, व्यङ्ग, नीलिका, झाँई, दुर्च्छवि—सूरत बिगड़ना और विवर्णता—मुँह का रङ्ग बिगड़ जाना आदि चेहरे के रोग नष्ट होकर, चेहरा अतीव मनोहर और मुख-कमल केशर के समान कान्तिमान हो जाता है। जिन लोगों के चेहरे खराब हो रहे हों, वे इस तेल को बनाकर अवश्य लगावें। इस तेल से उन का चेहरा सचमुच ही मनोहर हो जायगा। परीक्षित है।

(५) चेहरे पर खरगोश का खून लगाने से व्यङ्ग और झाँई नाश हो जाती हैं।

(६) मँजीठ को शहद में मिलाकर लेप करने से झाँई अवश्य नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(७) बड़ के अङ्कुर और मसूर—इन दोनों को गाय के दूध में पीस कर लगाने या लेप करने से झाँईं नाश हो जाती है। परीक्षित है।

(८) वरना की छाल बकरी के दूध में पीसकर लेप करने से झाँईं आराम हो जाती है।

नोट—वरना को हिन्दी में वरना और वरुण तथा बँगला में वरुण गाछ कहते हैं। यह वातपित्त नाशक है।

(९) जायफल पानीमें घिसकर लगानेसे झाँईं चली जाती है।

(१०) बादाम की मींगी पानी में घिसकर मुखपर लेप करने से झाँईं चली जाती है।

(११) मसूर की दाल को दूध में पीस लो। फिर उस में ज़रा सा कपूर और घी मिला दो। इस लेप से झाँईं या नीली झाँईं नाश होकर चेहरा कमल के जैसा मनोहर हो जाता है। परीक्षित है।

(१२) एक तरबूज़ में छोटा सा छेद करलो और उसमें पाव भर चाँवल भर दो। इसके बाद उस छेद का मुख उसी तरबूज़ के टुकड़े से बन्द करके, सात दिन तक, तरबूज़ को रखा रहने दो। आठवें दिन, चाँवलों को निकाल कर सुखालो। ऐसे चाँवलों को महीन पीसकर, उबटन की तरह, नित्य, मुखपर लगाने से झाँईं आदि नाश हो जाते हैं।

(१३) आम की बिजली और जामुन की गुठली लगाने से झाँईं नाश हो जाती है।

(१४) नाजबो की पत्ती और तुलसी की पत्ती दोनों को पीसकर मुख पर मलने से झाँईं या काले दाग़ नष्ट हो जाते हैं।

(१५) पहले कितने ही दिनों तक, कुलींजन पानी में पीस-पीस-कर झाँईं या काले दाग़ों पर लगाओ। इस से चमड़े के भीतर की स्याही नष्ट हो जायगी। इस के कुछ दिन लगाने बाद, चाँवलों को पानी में महीन पीस कर उन्हीं दाग़ों के स्थानों पर लेप कर दो। इन से चमड़े का रङ्ग एकसा हो जायगा।

(१६) चौलाई की जड़ और डाली लाकर जला लो। इन राखको पानी में पीसकर झाँईं पर मलो और आध घण्टे तक धूप में बैठो। जब लेप सूख जाय, उसे गरम पानी से धो डालो। इस के बाद लाहौरी नमक पीसकर मुख पर मलो। इन उपायों से झाँईं या काले दाग़ नष्ट हो जायँगे।

(१७) तुलसी की सूखी पत्तियाँ पानी में पीसकर मुख पर मलने से काले दाग़ नष्ट हो जाते हैं।

(१८) कलमी शोरा और हरताल चार-चार माशे लाकर पीस लो। फिर उस चूर्ण के तीन भाग कर लो। एक भाग को पानी में पीस कर मुख पर मलो। आध घण्टे तक धूप में बैठो और फिर गरम जल से धोलो। दूसरे दिन फिर इसी तरह करो। तीन दिन में झाँईं या दाग़ों का नाम भी न रहेगा।

(१८) करञ्जवे की गरी गाय के दूध में पीसकर लेप करो, इस से चेहरा बुर्राक चमकीला हो जायगा।

(२०) नीम के बीज सिरके में पीसकर मलने से झाँईं नाश हो जाती है।

(२१) अंजरूत १ तोले और सफेद कत्था ६ माशे—दोनों को गाय के ताज़ा दूध में पीसकर, दिन में कई बार मलने से झाँईं खूब जल्दी आराम हो जाती है।

(२२) कबूतर की बीट पानी में पीसकर, हर रोज़, दिन में कई बार मलने से झाँईं नष्ट हो जाती है।

(२३) मसूर की दाल नीबू के रस में पीसकर लगाने से झाँईं नाश हो जाती है।

(२४) हल्दी और काले तिल भैंस के दूध में पीसकर लगाने से छीप नष्ट हो जाती है।

(२५) चीनिया के फूल, छाल और पत्ते—पानी में पीसकर लगाने से छीप नाश हो जाती है।

(२६) चौनिया के फूल नीबू के रस में पीसकर लगाने से छीप चली जाती है।

(२७) सुहागा और चन्दन पानी में पीस कर लगाने से छीप चली जाती है।

(२८) पँवार के बीजों को अधकुचले करके, दही के पानी में मिलादो और तीन दिन रखे रहने दो ; फिर इस पानी को बदन पर मलकर नहा डालो ; छीप नष्ट हो जायगी

(२९) कलमली के बीज दूध में पीसकर, उबटन की तरह मलने से चेहरा साफ हो जाता है।

(३०) चिड़िया की बीट सुखाकर और पीसकर मुँह पर मलने से चेहरा सुन्दर हो जाता है।

(३१) पीली सरसों एक पाव को दूध में डाल कर औटाओ। जब जलते-जलते दूध जल जाय, सरसों को निकाल कर सुखा दो। फिर रोज़ इस में से थोड़ी सी सरसों लेकर, महीन पीस कर उब-टन बनालो और मुख पर मलो। चेहरा चमक उठेगा।

(३२) चाँवल, जौ, चना, मसूर और मटर,—इन सब को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इस में से थोड़ा-थोड़ा चून नित्य लेकर, उबटन सा बना लो और मुख पर मलो। चेहरा एकदम मनोहर हो जायगा।

नोट—चाँवल, जौ, चना, मसूर और मटर में से प्रत्येक मुह को साफ कर सकते है। अगर किसी एक का भी उबटन बनाया जाय, तोभी लाभ होगा। चेहरा साफ हो जायगा।

(३३) समग़ अरबी, कतीरा और निशास्ता,—इन को पीसकर रख लो। नित्य ईसबगोल के लुआब में इस चूर्ण को मिलाकर, सफर में, मुँहपर मलो। राह चलने के समय जो चेहरे पर स्याही आ जाती है, वह न आयेगी। चेहरा साफ बना रहेगा।

(३४) नारियल के भीतर का एक पूरा गोला लेकर, उसमें

चाकू से छेद कर लो। फिर २० माशे केशर और २० माशे जवासा, पानी में पीसकर, उस गोले में भर दो और उसी के टुकड़े से उसका मुँह बन्द कर दो। इसके बाद एक बर्तन में आठ सेर गाय का दूध भर कर, उसमें वह गोला रख दो और दूध के बर्तन को चूल्हे पर चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आग से औटने दो। जब दूध जलकर सूख जाय, गोले या खोपरे को निकाल लो। फिर इस खोपरे में से दवा को निकाल कर पीस लो और चने-समान गोलियाँ बनाकर, छाया में सुखा कर रख लो। इसमें से एक गोली नित्य पान में रख कर खाने से चेहरा खूबसूरत हो जाता है। खासकर स्त्रियों को तो यह नुसखा परी ही बना देता है।

(३५) बंगभस्म और लाख का रस—महावर, इन दोनों को मिलाकर लेप करने से झाँई नष्ट हो जाती है।

(३६) मँजीठ, लोध, लाल चन्दन, मसूर, फूल प्रियंगू, कूट और बड़ की कोंपल—इन सब को पीस कर, उबटन की तरह मुँह पर मलने से छायी और झाँई आदि नाश होकर चेहरा साफ और सुन्दर हो जाता है।

(३८) गोंद, कतीरा और निशास्ता—ईसबगोल के पानी या लुआब में पीस कर मुँह पर मलने से मुँह का रंग साफ-उजला हो जाता है।

नोट—चेहरा सुन्दर बनाने वाले को गरम हवा, धूप, स्त्री-प्रसंग और शोच-फिक्र को, कम-से-कम कुछ दिनों को त्याग देना चाहिये, क्योंकि बहुत करके इन कारणों से ही चेहरा कुरूप हो जाता है; अतः कारणों के त्यागे बिना, कोरा उबटन या लेप करने से क्या होगा?

(३९) चौकिया सुहागा ३ तोले, केशर ३ तोले, शुद्ध सिंगरफ ३ तोले, शुद्ध मैनसिल ३ तोले और मुर्दासंग ६ तोले—इन सब को खरल में डालकर पाँच दिन बराबर घोटो, इसके बाद रख लो। इसमें से थोड़ी-थोड़ी दवा तिलों के तेल में मिला कर, शरीर पर

मलने से सेंहुआ, दाद और मुँह की झाँई—ये सब रोग नाश हो जाते हैं। यह दवा राजाओं के लायक़ है।

मुहासों की चिकित्सा।

वात, कफ और खूनके कोप से, जवानी में, मुँह पर जो सेमलके काँटोंके समान फुन्सियाँ होती हैं,उन्हें बोलचालकी ज़बानमें "मुहासे" और संस्कृत में "मुखदूषिका" कहते हैं। इनसे खूबसूरत चेहरा बदसूरत दीखने लगता है। बहुत लोग इस रोग की दवा तलाश किया करते हैं, अतः हम नीचे मुहासे-नाशक दवाएँ लिखते हैं:—

"तिब्बे अक़बरी" और "इलाजुलग़ुर्बा" आदि हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है:—

(१) सरेरू की फस्द खोलो।

(२) जुलाब देकर, शीतल दवाओंका लेप करो।

आयुर्वेद-ग्रन्थों में लिखा है:—

मुहासे, न्यच्छ, व्यङ्ग और नीलिका इनको नीचे के उपायों से दूर करो:—

(१) शिराविधन करो—फस्द खोलो।

(२) लेप और अभ्यञ्जनादि से काम लो।

मुहासे नाशक नुसखे।

---

(१) अमलतास के वृक्ष की छाल, अनार की छाल, लोध, आमाहल्दी और नागरमोथा,—इन सब को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इसे पानी में मिलाकर, नित्य, मुँह पर मला करो और सखने पर धो डाला करो।

(२) बेर की गुठली की मींगी, मुलहटी और कूट—इन को समान-समान लेकर, पानी में महीन पीसो और मुँह पर नित्य मलो।

(३) जवासे का काढ़ा करके, उसी से नित्य मुँह धोया करो।

(४) गाय के दूध में खुरफे के बीज पीस कर, उबटन की तरह रोज़ मलो और पीछे मुँह धो लो।

(५) नरकचूर और समन्दर-झाग—दोनों को पानी में महीन पीस कर, उबटन की तरह रोज़ लगाओ।

(६) थोड़ा सा कुचला पानीमें भिगो दो। १।२ घण्टे बाद, मलकर पानी-पानी छान लो और कुचला फेंक दो। फिर, सफ़ेद चिरमिटी की गिरी और लाहौरी नोन समान-समान लेकर, कुचले के पानी में पीस कर मुहासों पर लेप करो।

(७) केवल नरकचूर पानीमें पीसकर मुहासों पर लगाओ।

(८) नीबू के रस में पीली कौड़ी पीस कर मिला दो। जब वह सूख जाय, फिर और कौड़ी पीसकर मिला दो। जब यह पिछली कौड़ी भी सूखजाय, इस मसाले को सवेरे-शाम मुँह पर मलो। मुँह साफ हो जायगा।

(९) सिरस की छाल और काले तिल समान-समान लेकर, सिरके में पीसकर मुँह पर लेप करो।

(१०) कलौंजी सिरके में पीसकर, रात को मुँह पर लगाकर सो जाओ। सवेरे ही उठकर पानी से धो डालो। इस उपायसे, कई दिनों में, मुहासे और मस्से दोनों नष्ट हो जायँगे।

(११) झड़बेरी के बेरों की राख कर लो। उस राख को पानी में मिलाकर मुँह पर लेप करो।

(१२) मँजीठ, लालचन्दन, मसूर, लोध और लहसन की कोंपल—इन को पानी के साथ महीन पीसकर, रात को मुहासों पर लगाकर सो जाओ और सवेरे ही धो डालो।

(१३) लोध, धनिया और बच, इन तीनों को पानी में पीसकर मुहासों पर लेप करो। परीक्षित है।

(१४) गोरोचन और काली मिर्चों को पानी के साथ पीसकर मुहासों पर लेप करो। परीक्षित है।

(१५) सरसों, बच, लोध और सेंधानोन—इन का लेप मुहासे नाश करने में अकसीर है। परीक्षित है।

(१६) बच, लोध, सोंठ, पीपर और काली मिर्च—इन को समान-समान लेकर पानी में महीन पीसकर लेप करो। इस से मुहासे निश्चय ही नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१७) तिल, बालछड़, सोंठ, पीपर, काली मिर्च और सफेद जीरा—इनको समान-समान लेकर और महीन पीस कर मुख पर लेप करने से मुहासे नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

(१८) सेमल के काँटों को गाय के दूध में पीसकर लेप करने से मुहासे ३ दिन में नष्ट हो जाते हैं।

नोट—वमन कराने से भी लाभ देखा गया है।

(१९) लालचन्दन और केशर को पानी में पीसकर लेप करने से मुहासे नष्ट हो जाते हैं।

नोट—पके हुए पिण्डालू का लेप करने से वात की गाँठ नाश हो जाती है।

(२०) जायफल, लालचन्दन और कालीमिर्च—समान-समान लेकर, पानी में पीसकर मुँह पर लेप करने से मुहासे नष्ट हो जाते हैं।

मस्से और तिलों की चिकित्सा

शरीर पर वेदना-रहित, सख्त, उर्द के समान, काली और उठी हुई सी जो फुन्सी होती है, उसे संस्कृत में "माष" और बोल-चाल की ज़बान में "मस्सा" कहते हैं।

वात, पित्त और कफ के योग से, चमड़े पर, जो काले तिल के ऐसे दाग़ हो जाते हैं, उन्हें "तिलकालक" या "तिल" कहते हैं।

चमड़े से ज़रा ऊँचा, काला या लालसा दाग़ जो चमड़े पर पड़ जाता है, उसे "जतुमणि" या "लहसन" कहते हैं।

नोट—सामुद्रिक शास्त्र में तिल, मस्से और लहसन के शुभाशुभ लक्षण लिखे हैं। पुरुष के दाहने और स्त्रीके बायें-अंग पर होने से ये शुभ और इस के विपरीत अशुभ समझे जाते हैं।

चिकित्सा।

(१) अगर इन को नष्ट करना हो, तो इन को तेज़ छुरी या नश्तर से छील कर, इनको क्षार, तेज़ाब या आग पर तपाये लोहे से जला दो; बस ये नष्ट हो जायँगे। पीछे कोई सरहम लगा कर घाव आराम कर लो।

(२) शरीर में जितने मस्से हों, उतनी ही काली मिर्च लेकर शनिवार को न्यौत दो। फिर रविवार के सवेरे ही उन्हें कपड़े में बाँधकर, राह में छोड़ दो। मस्से नष्ट हो जायँगे।

(३) मोर की बीट सिरके में मिलाकर, मस्सों पर लगाने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(४) मस्से को जंगली कण्डे से खुजा लो और फिर उस जगह चूना और सज्जी पानी में घोलकर मलो। तीन दिन में मस्सा जाता रहेगा।

(५) धनिया पीसकर लगाने से मस्से और तिल नष्ट हो जाते हैं।

(६) चुकन्दर के पत्ते शहद में मिलाकर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(७) खुरफे की पत्ती मस्सों पर मलने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

(८) सीप की राख सिरके में मिलाकर मस्सों पर लेप करने से मस्से नष्ट हो जाते हैं।

पलित रोग चिकित्सा

असमय में बाल सफेद होने का इलाज।

शोक और परिश्रम आदि से कुपित हुआ वायु शरीर की गरमी को सिर में ले जाता है; उधर मस्तक में रहने वाला भ्राजक पित्त भी क्रोध से कुपित हो जाता है। "प्रकुपित हुआ एक दोष दूसरे दोष को भी कुपित करता है," इस वचन के अनुसार, वात और पित्त कफ को भी कुपित करते हैं। कुपित हुआ कफ बालों को सफेद कर देता है। इस तरह इन तीनों दोषों के कोप से बाल सफेद हो जाते हैं। असमय में बाल सफेद होने के रोग को "पलित रोग" कहते हैं।

चिकित्सा।

—*—

(१) आमले नग २, हरड़ नग २, बहेड़ा नग १, लोहचूर १ तोले और आम की मींगी ५ तोले—इन सब को लोहे के बर्तन में महीन पीस कर, थोड़ा पानी मिला दो और रात भर खरल में ही पड़ा रहने दो। दूसरे दिन इसका लेप बालों पर करो। अकाल या जवानी में हुआ पलितरोग तत्काल आराम हो जायगा; यानी सफेद बाल काले हो जायँगे।

(२) भाँगरा, सफेद तिल, चीते की जड़ और माठा—इनको मिलाकर खाने से पलित रोग नाश हो जाता है।

(३) आमले और लोह का चूर्ण-दोनों पानी में पीसकर लेप करने से पलित रोग नाश हो जाता है।

(४) भाँगरा, नील के पत्ते और लोहभस्म,—इनको बराबर-

बराबर लेकर, बकरी के दूध में पीसकर, लेप करने से सिर के बाल काले हो जाते हैं:—

> अंजामूत्रे मृंगराजं नीलीपत्रसमोरजः ।
> पिष्ट्वा सम्यक प्रलिम्पेद्वै केशाःस्युर्भ्रमरोपमाः ॥

(५) हरड़, बहेड़ा, आमले, नील के पत्ते, भाँगरा और लोह का चूर्ण—इनको भेड़ के मूत्र में पीस कर लेप करने से बाल काले हो जाते हैं।

(६) कुँभेर की जड़, पियाबाँसे की जड़ या फूल, केतकी की जड़, लोहे का चूरा, भाँगरा और त्रिफला—इन छहों का चार तोले कल्क तैयार करो ; यानी इन सब को सिल पर पानी के साथ पीस कर लुगदी बना लो। उसमें से चार तोले लुगदी ले लो। काली तिली के पाव भर तेल में इस लुगदी को रख कर, ऊपर से एक सेर पानी मिला दो और पकाओ। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। फिर इस तेल को लोहे के बर्तन में भरकर मुँह बन्द कर दो और एक महीने तक ज़मीन में गाड़ रखो। पीछे निकाल कर बालों में लगाओ। इस तेल से काँसी के फूल-जैसे सफेद बाल भी काले हो जाते हैं। इसका नाम "केशरञ्जन तेल" है।

नोट—ऊपर की छहों चीजों का रस या मिली हुई लुगदी जितनी हो, उससे तेल चौगुना लेना चाहिये। यह और नं० १ नुसखा उत्तम नुसखे हैं।

(७) लोहे का चूर्ण, भाँगरा, त्रिफला और काली मिट्टी—इन सब को एकत्र पीस कर, ईख के रस में मिलाकर, एक महीने तक ज़मीन में गाड़ रखो और फिर निकाल कर लगाओ। इस तेल के लगाने से जड़ समेत बाल काले हो जाते हैं।

(८) लोहचून, पानी में पिसे हुए आमले और ओड़हल के फूल—इन सब को पानी में मिलाकर, इस पानी से जो सदा स्नान करता रहता है, उसे कदापि पलित रोग या बाल सफेद होने की बीमारी नहीं होती।

(९) नीम के बीजों को भाँगरे के रसकी और विजयसार के रस की भावना दो। फिर कोल्हू में उन बीजों का तेल निकलवा लो। इस तेल की नस्य लेने और नित्य दूध भात खाने से बाल जड़ से काले हो जाते हैं।

नोट—भाँगरे के रस में बीजों को मसल कर भीगने दो और फिर सुखालो। दूसरे दिन विजयसार के रस में भीगने दो और फिर मसल कर सुखालो। शेष में कोल्हू में तेल निकलवा लो। इस तेलको "निम्ब बीज तैल" कहते हैं।

(१०) केतकी, भाँगरा, नील की पत्ती, अर्जुन के फूल, अर्जुन के बीज, पियाबाँसा, तिल, पीपर, मैनफल, लोहे का चूर्ण, गिलोय, कमल, सारिवा, त्रिफला, पद्माख और कीचड़—इनको सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। इनको जितनी लुगदी हो, उससे चौगुना तिली का तेल लो। तेल से चौगुना त्रिफले का और भाँगरे का काढ़ा पकाकर रख लो। पीछे लुगदी, तेल और दोनों काढ़ों को कड़ाही में पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार लो और छानकर बोतल में भर दो। इस तेल से बाल अञ्जन के जैसे काले हो जाते हैं और उपजिह्विक रोग भी नष्ट हो जाता है। इस का नाम "केतक्यादि तैल" है।

(११) कुम्भेर, अर्जुन, जामुन और पियाबाँसा—इन चार के फूल, आम की गुठली, मैनफल और त्रिफला, इन सबको चार-चार तोले लेकर कल्क बनाओ; यानी पानी के साथ सिल पर पीसकर लुगदी बना लो। इस लुगदी को ३२ तोले तिली के तेल, १२८ तोले दूध, १२८ तोले भाँगरे का रस और १२८ तोले महुए के फलों के रस के साथ कड़ाही में रख, मन्दाग्नि से तेल पकालो। जब काढ़े और दूध जल कर तेल मात्र रह जाय, उतार कर मल-छान लो। इस तेल के बालों में लगाने से बाल भौंरे के समान काले हो जाते हैं। इस तेल की नास देने से भी एक महीने में कुन्द, चन्द्रमा और शंख के समान बाल भी काले-स्याह हो जाते हैं। इसका नाम

"काश्मर्याद्य" तेल है। इसके लगाने वाला १०० बरस तक जीता है।

(१२) मुलेठी की पिसी हुई लुगदी ४ तोले, गाय का दूध १२८ तोले और भाँगरे का रस १२८ तोले तथा तेल १६ तोले—इन सब को कड़ाही में रख कर पकालो। तेल मात्र रहने पर उतार लो। इस "मधूक तेल" की नाश देने से पलित रोग नष्ट हो जाता है।

(१३) पुण्डरिया, पीपर, मुलेठी, चन्दन और कमल को सिल पर एकत्र पीस कर लुगदी बना लो। लुगदी से चौगुना तिली का तेल और तेल से चौगुना आमलों का रस—इन सब को कड़ाही में डाल, तेल पकालो। इस तेल की नस्य और मालिश से मस्तक के सारे सफेद बाल काले हो जाते हैं।

(१४) नील, केतकी की जड़, केले की जड़, घमिरा, पियाबांसा, अर्जुन के फूल, कसूम के बीज, काले तिल, तगर, कमल का सर्व्वाङ्ग, लोहचूर्ण, मालकाँगनी, अनार की छाल, गिलोय और नीले कमल की जड़—ये सब दो-दो तोले, त्रिफला २० तोले, भाँगरे का रस अढ़ाई सेर, काली तिली का तेल आध सेर, इन सब को एक लोहे के घड़े में भर कर, उसका मुंह बन्द करके कपड़-मिट्टी (खाली मुख पर) कर दो और उसे जमीन के गड्ढ़े में रखकर, उस के चारों ओर घोड़े की लीद भर दो। पीछे ऊपर से मिट्टी डालकर गाड़ दो। चालीस रोज़ बाद, उसे निकाल कर आग पर पकाओ। जब रस जलकर तेल मात्र रह जाय, उतार कर छान लो।

हर चौथे दिन इसको बालों पर लगाओ और चार घण्टे रहने दो। इसके बाद हरड़ के पानी से सिर धो डालो। इसके लगाने से बाल काले रहेंगे। यह योग "सुश्रुत" का है। इसे हमने २।३ बार आज़माया है, इसी से लिखा है।

नोट—छै घण्टे पहले थोड़ी सी छोटी हरड़ कुचल कर पानी में भिगो दो। यही हरड़ का पानी है।

(१५) एक कड़ाही में गेंदे की पंखडी काट कर डाल दो। ऊपर से एक सेर मीठा तेल भी मिला दो और औटाओ। जब पत्तियाँ गल जायँ, उतार कर, एक बर्तन में मसाले समेत तेल को भर दो और मुँह बन्द करके, ज़मीन में एक मास तक गाड़ रखो। फिर निकाल कर बालों पर मलो। इससे बाल काले हो जायँगे।

(१६) दो सेर भाङ्ग की जड़ कूटकर कड़ाही में रखो। उसमें दो सेर तिलों का तेल रख दो और चार सेर पानी भर दो। फिर इसे मन्दाग्नि से औटाओ, जब सारा पानी और आधा तेल जल जाय उतार कर रख लो। इस में से गाढ़ी-गाढ़ी तेल-मिली दवा लेकर सिर में मलो। थोड़े दिन के मलने से ही बाल काले हो जायेंगे और फिर कभी सफेद न होंगे।

(१७) सौ मक्खियाँ तिलों के तेल में डालकर चालीस दिन तक धूप में रखो। फिर तेल को छान कर रख लो। इस तेल के नित्य लगाने से बाल सदा काले रहेंगे।

इन्द्रलुप्त या गंज की चिकित्सा।

निदान कारण

रोमों की जड़ में रहने वाला खून, पित्तके साथ कुपित होकर, रोमों को गिरा देता है। इसके बाद खून के साथ कफ रोम-कूपों को रोक देता है, इस से फिर बाल पैदा नहीं होते। इस रोग को "इन्द्रलुप्त, खालित्य और रूझ्या" कहते हैं। बोलचाल की भाषा में "गंज या टाँक" कहते हैं।

स्त्रियों को गंज रोग क्यों नहीं होता ?

यह रोग स्त्रियों को नहीं होता, क्योंकि उनका खून, रजोधर्म

होने से, हर महीने शुद्ध होता रहता है। इसी वजह से उनके रोम-कूप या बालों के छेद नहीं रुकते।

"तिब्बे अकबरी" में बालों के उड़ने के सम्बन्ध में बहुत कुछ लिखा है। उस में से दो चार काम की बातें हम यहाँ पर लिखते हैं। गंज रोग में सिर के बाल उड़ जाते हैं और कनपटियों के रह जाते हैं। अगर यह हालत बुढ़ापे में हो, तब तो इसका इलाजही नहीं है। अगर जवानी में हो, तो दवा करने से आराम हो सकता है। अगर सिर पर ज़ियादा बोझा उठाने से बाल उड़ते हों, तोबोझा उठाना बन्द करना ज़रूरी है। शेख़ बूअली सेना ने अपनी किताब 'शिफा' में लिखा है, स्त्रियों के सिर के बाल नहीं उड़ते, क्योंकि उनमें तरी ज़ियादा होती है और नपुंसकों के भी नहीं उड़ते, क्योंकि उनकी प्रकृति में कुछ नपुंसकता होती है।

चिकित्सा।

(१) रोगी को स्निग्ध और स्विन्न करके मस्तक की फस्द खोलो; यानी स्नेहन और स्वेदन क्रिया करके, सिर की या सरेरूकी फसद खोलो और मैनसिल, कसीस, नीला थोथा और काली मिर्च—इन को बराबर-बराबर लेकर, पानी के साथ पीस कर, गंज की जगह लेप करो।

नोट—यह नुसख़ा सुश्रुत के चिकित्सा-स्थान का है। वैद्यविनोद आदि ग्रन्थों में भी लिखा है।

(२) कुटकी को कड़वे परवलके पत्तों के रस के साथ पीसकर, तीन दिन तक, लगाने से पुराना गंज रोग भी आराम हो जाता है।

(३) कटेरी का रस शहद में मिलाकर, गञ्ज पर लगाने से गंज रोग नाश हो जाता है।

(४) हाथी-दाँत की राख में, बकरीका दूध और रसौत मिला

कर, गञ्ज पर लेप करने से मनुष्य के पैरों के तलवों में भी बाल आ जाते हैं ।

नोट—यह नुसखा "वैद्यविनोद" का है । इस नुसखे को जराजरा सा उलट फेर करके अनेक वैद्योंने लिखा है और बड़ी तारीफें की हैं । चिकित्साञ्जन में लिखा है,

हस्तिदन्तमसीताक्ष्यामिन्द्रलुप्ते प्रलेपनम् ।
प्राज्येन पयसा कुर्यात्सवं था तद्विनश्यति ॥

हाथीदाँत की भस्म और रसौत—दोनों को बराबर-बराबर लेकर, घी और दूध में मिला लो । जिसके सिरके बाल गिरे जाते हों, उसके सिर में इसका लेप करो । इस उपाय के करने से गंज रोग नाश हो जायगा और सिर के बाल फिर कभी न गिरेंगे । 'भाव मिश्रजी" ने भी इस नुसखे की बड़ी तारीफ की है ।

(५) चमेली के पत्ते, कनेर, चीता और करंज—इनको समान-समान लेकर, पानी के साथ पीस लो । फिर लुगदी के वज़न से चौगुना मीठा तेल लो और तेल से चौगुना जल या बकरी का दूध लो । सब को मिला कर, पकालो । तेल मात्र रहने पर उतार लो । इस तेल को सिर पर मलने से गंज रोग नाश हो जाता है ।

नोट—यह नुसखा हम "वैद्यविनोद" से लिख रहे हैं । वास्तव में यह नुसखा "सुश्रुत" चिकित्सास्थान का है । वैद्यविनोद में होने से, हमें विश्वास है, यह नुसखा और ऊपर का नं० ४ का नुसखा जरूर उत्तम होंगे । "भावप्रकाश" में भी यह मौजूद है । "वरना" और जियादा लिखा है ।

(६) "भावप्रकाश" में लिखा है, कड़वे परवलों के पत्तों का स्वरस निकाल कर, गंज पर मलने से, तीन दिन में बहुत पुरानी गञ्ज भी आराम हो जाती है ।

नोट—इस नुसखे और न० २ नुसखे में 'कुटकी' काही फर्क है । "भाव प्रकाश" में—तिक्तपटोल पत्र स्वरसैर्घृष्ट्वा शमं याति है और वैद्यविनोद में—तिक्तापटोलपत्र स्वरसै है । तिक्त कड़वे को और तिक्ता कुटकी को कहते हैं ।

(७) गंज रोग में, मस्तक को बारम्बार खुरच कर, चिरमिटी को पानी के साथ पीस कर लेप करना चाहिये। अगर जड़ ज़ियादा नीची हो गई होगी, तो भी इस नुसखे से लाभ होगा।

नोट—यह नुसखा भी सुश्रुत का है, पर हम "वैद्यविनोद" से लिख रहे हैं।

(८) "सुश्रुत" में लिखा है, श्योनाक और देवदारु के लेप से गंज-रोग जाता है।

(९) गोखरू और तिल के फूलों में उन के बराबर घी और शहद मिलाकर, सिर पर लगाने से सिर बालों से भर उठता है।

(१०) मुलेठी, नील कमल, दाख, तेल, घी और दूध—इन सब को मिलाकर, सिर पर लगाने से गंज रोग नाश हो जाता है तथा बाल सघन और दृढ़ हो जाते हैं।

(११) भाँगरा पीसकर मलने से गंज या बालखोरा रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) चुकन्दर के पत्तों का अस्सी माशे स्वरस कड़वे तेल में जलाकर, तेल का लेप करने से गंज रोग आराम हो जाता है।

(१३) घोड़े या गधे का खुर जलाकर राख कर लो। फिर इस राख को मीठे तेल में मिलाकर गंज पर मलो। इससे गंज रोग चला जायगा।

(१४) गंधक पानी में पीसकर और शहद मिलाकर लगाने से गंज रोग जाता है।

(१५) आमलों को चुकन्दर के रस में पीसकर सिर पर लगाने से ५। ६ दिन में बाल आ जाते हैं।

(१६) थोड़ा सा दही ताम्बे के वर्तन में उस समय तक घोटो, जबतक कि वह हरा न हो जाय ; हरा हो जाने पर, उस का लेप करो। इस उपाय से बाल आ जाते हैं।

(१७) कुन्दश और हाथीदाँत का बुरादा, मुर्ग़ की चरबी में मिलाकर लगाने से अवश्य बाल उग आते हैं। लिखा है, अगर हथेली पर लगाओ, तो वहाँ भी बाल आ जायँ।

बाल लम्बे करने के उपाय।

(१) नीम के पत्ते और बेर के पत्ते पीसकर सिर में लगालो और दो घन्टे बाद धो डालो। ३१ दिन में बाल खूब लम्बे हो जायँगे।

(२) कलौंजी को पानी में पीसकर, उसी से बाल धोने से, सात दिन में, बाल लम्बे हो जाते हैं।

(३) आमले नीबू के रस में पीसकर बालों की जड़ में मलने से बाल लम्बे हो जाते हैं।

(४) करील की जड़ पीसकर बालों की जड़ में मलने से, बाल लम्बे हो जाते हैं।

(५) नहाते समय काले तिलों की पत्तियों से बाल धोने से बाल लम्बे हो जाते हैं।

(६) सरोके पत्ते पाँच तोले और आमले दस तोले—दोनों को अढ़ाई सेर पानी में औटाओ। जब गल जायँ, तिली का तेल आध सेर ऊपर से डाल दो और पकने दो। जब तेल मात्र रह जाय, उतार कर सबको मसल लो। दवाओं को उसी में रहने देना। इस दवा-समेत तेल के सिर में मसलनें से बाल बढ़ते और काले होते हैं।

(७) कसूम के बीज और कसूम के पेड़ की छाल—दोनों को बराबर-बराबर लेकर राख कर लो। इस राख को चमेली के तेल में मिलाकर मल्हम सी बना लो। बालों की जड़ों में इस मरहम के मलने से बाल लम्बे और नरम हो जाते हैं।

(८) भैंस के दही में ककोड़े की जड़ पीसकर सिर में लेप करने से और फिर सिर धोकर तेल की मालिश करने से बाल खूब बढ़ जाते हैं। लेप को २।३ घण्टे रखना चाहिये और २१ दिन तक बराबर उसे लगाना चाहिये। एक मित्र इसे आज़मूदा कहते हैं।
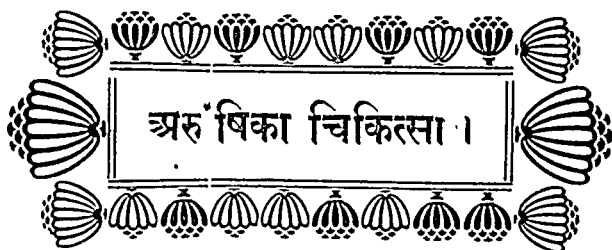
अरुंषिका चिकित्सा।

कफ, खून और कीड़ों के प्रकोप से, सिर में, अनेक मुँह वाली और अत्यन्त क्लेदयुक्त व्रण या फुन्सियाँ होती हैं। इन को ही अरुंषिका कहते हैं। बोलचाल की भाषा में इन्हें "वराही" कहते हैं।

चिकित्सा।

---

(१) जौंक लगाकर सिर का ख़राब खून निकाल दो।

(२) माठा और सेंधेनोन के काढ़े से सिर को वारम्बार धोओ। इस के बाद कोई लेप करो।

(३) परवल, नीम और अडूसा—इन के पत्ते पीस कर लेप करो।

(४) मिट्टी के ठीकरे में कूट को भून कर पीस लो। फिर उसे तेल में मिलाकर लेप कर दो। इस से खुजली, क्लेद, दाह और पीड़ा सब नाश हो जाते हैं।

(५) दारुहल्दी, हल्दी, चिरायता, नीम की छाल, अडूसेके पत्ते और लाल चन्दन का बुरादा—सब को बराबर-बराबर लेकर, सिल पर पीस कर लुगदी बना लो। लुगदी से चौगुना काली तिली का तेल और तेल से चौगुना पानी मिलाकर तेल पकालो। तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस तेल के लगाने से अरुंषिका, दाह, जलन, मवाद, दर्द तथा अन्य जगह के घाव, फोड़े, फुन्सी जड़ से आराम हो जाते हैं। ऐसा कोई चर्म रोग ही नहीं है, जो इस तेल के लगातार लगाने से आराम न हो। हज़ारों रोगी आराम हुए हैं। परीक्षित है।

वृषणकच्छू-चिकित्सा ।

जो मनुष्य स्नानकरते समय शरीर का मैल साफ नहीं करता, फोतों और लिंग आदि गुप्त अंगों को खूब अच्छी तरह नहीं धोता, उस के फोतों में मैल जम जाता है। जब उस मैल पर पसीने आते हैं, तब खुजली चलने लगती है। खुजाते रहने से वहाँ फुन्सी-फोड़े हो जाते है, जिन में से राध बहने लगती है। इस रोग को "वृषणकच्छू" कहते हैं। यह फोतों का रोग कफ और रक्त के कोप से होता है।

चिकित्सा।

राल, कूट, सैंधानोन और सफेद सरसों—इन चारों को पीसकर उबटन बना लो और फोड़ों पर मलो। इस उबटन से वृषणकच्छू या फोतों की खुजली फौरन मिट जाती है।

नोट—पिछले पृष्ठ ५६७ के नं० ५ तेल से भी फोतों की खुजली वगैरः व्याधियाँ आराम होती हैं।
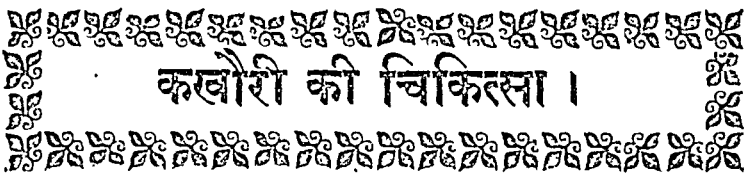
कखौरी की चिकित्सा।

बाँह की बग़ल में, एक महाकष्टदायक फोड़ा होता है, उसे ही कखौरी, कँखलाई या काँखहरी कहते हैं। यह रोग पित्त के कोप से होता है।

चिकित्सा।

(१) देवदारु, मनसिल और कूट—इन तीनों को पीस और स्वेदित करके लेप करने से कफ-वात से उत्पन्न हुई कँखलाई नष्ट हो जाती है।

(२) जदवार खताई को गुलाबजल में घिस कर लेप करने से कँख-लाई जाती रहती है।

(३) चकचूनी की पत्ती और अरण्ड की पत्ती—इन दोनों को समान-समान लेकर और पीस कर गरम कर लो। थोड़ा सा नमक मिला कर फिर पीस लो और गरम करके बाँध दो। कँखलाई नष्ट हो जायगी।

दारुणक रोग-चिकित्सा।
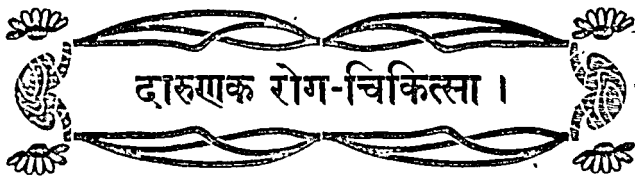
कफ और वात के प्रकोप से बालों की जगह कड़ी और रूखी हो जाती है और वहाँ खाज चलती है, इस को ही "दारुणक रोग" कहते हैं। बोलचाल की ज़बान में इसे फिहाँसों या खोसी निकलना कहते हैं।

चिकित्सा

(१) ललाट की शिरा को स्निग्ध और स्विन्न करके, नश्तर से छेद कर खून निकालो। फिर अवपीड़ नस्य देकर सिर की मलामत निकालो और कोई तेल मलो, अथवा कोई लेप आदि करो।

नोट—जिसे शिरावेधन करने या फस्द खोलने का पूरा ज्ञान और अभ्यास हो, जिसे नसों का ज्ञान हो, वही इस काम को करे; नहीं तो लेने के देने पड़ेंगे। विना शिरावेधन किये, कोरी दवाओं से भी यह रोग आराम हो सकता है।

(२) प्रियाल के बीज, मुलहटी, कूट, उड़द और सेंधानोन—इन को पीसकर और शहद में मिलाकर सिर पर लेप करो।

(३) चिरमिटी पीसकर लुगदी बना लो। फिर लुगदी से चौगुना मीठा तेल और तेल से चौगुना भाँगरे का रस लेकर सब को मिला लो और आग पर पकाओ। तेल मात्र रहने पर उतार कर छान लो। इस तेल के लगाने से खुजली, दारुणक रोग, हृद्रोग, कोढ़ और मस्तक-रोग नाश होते हैं।

(४) भाँगरा, त्रिफला, कमल, सातला, लोहचूर्ण और गोबर—

इन के साथ तेल पकाकर लगाने से दारुणक रोग नष्ट होता और गिरे हुए बाल सघन और टिकाऊ होते हैं।

(५) महुआ की छाल, कूट, उड़द और सेंधानोन,—इन को बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो और शहद में मिलाकर सिर पर लेप करो। इस से दारुणक रोग नष्ट हो जाता है।

(६) पोस्त को दूध में पीसकर लेप करने से दारुणक रोग नाश हो जाता है।

नोट—पोस्ता के दाने या खसखास के बीजों को दूध में पीसकर लगाओ।

(७) चिरौंजी के बीज, मुलहटी, कूट, उड़द और सेंधानोन—इनको एकत्र पीसकर और शहद में मिलाकर लगाने से दारुणक रोग जाता रहता है।

(८) आम की गुठली और हरड़—दोनों को समान-समान लेकर, दूध में पीसकर सिर में लगाने से दारुणक रोग चला जाता है।

(९) नीबू का रस चीनी में मिलाकर सिर पर लगाने और ५। ६ घण्टे बाद सिर धोने से सिर की रूसी-भूसी नष्ट हो जाती है।

(१०) चने का बेसन आध घन्टे तक सिरके में भिगो रखो। फिर उसे शहद में मिलाकर सिर पर मलो। इस से रूसी-भूसी और बफा नाश हो जाती है।

(११) साबुन से सिर धोकर तेल लगाने से रूसी-भूसी नष्ट हो जाती है।

(१२) चुकन्दर की जड़ और चुकन्दर के पत्तों का काढ़ा बनाकर, उस में थोड़ा नमक मिला दो। इस काढ़े को सिर पर डालने से रूसी-भूसी और जूं नष्ट हो जाती हैं।

नोट—पारे को मूली के पत्तों के रस में या पानों के रस में पीसकर, उस में एक डोरा भिगो लो और उसे सिर में रख दो। सारी जूं २।३ दिन में मर जायँगी।

यक्ष्मा के निदान—कारण।

आयुर्वेद-ग्रन्थों में लिखा है :—

> वेगरोधात्क्षयाच्चैव साहसाद्विषमाशनात्।
> त्रिदोषो जायते यक्ष्मागदो हेतुचतुष्टयात्॥

मल-मूत्रादि वेगों के रोकने, अधिक व्रत-उपवास करने, अति मैथुन आदि धातुक्षयकारी कर्म करने, बलवान मनुष्य से कुश्ती लड़ने अथवा बिना समय खाने—कभी कम और कभी ज़ियादा खाने आदि कारणों से "क्षय" या "यक्ष्मा" रोग होता है। यह क्षय रोग त्रिदोष या सान्निपातिक है, क्योंकि तीनों दोषों से होता है। उपरोक्त चार कारणों के सिवा, इसके होने के और भी बहुत कारण हैं; पर वे सब इन चार कारणों के अन्तर्भूत हैं।

खुलासा यह है, कि यक्ष्मा रोग नीचे लिखे हुए चार कारणों से होता है :—

(१) मलमूत्रादि वेग रोकने से।

(२) अति मैथुन द्वारा धातुक्षय करने से।

(३) अपनी ताक़त से ज़ियादा साहस करने से।

(४) कम-ज़ियादा और समय-बेसमय खाने से।

चारों कारणों का खुलासा।

नोट (१)—ऊपर जो वेग रोकने की बात लिखी है, क्या उस से मल, मूत्र,

छींक, डकार, जंभाई, अधोवायु, वीर्य, आँसू, वमन, भूख, प्यास, श्वास और नींद—इन तेरहों वेगों के रोकने से मतलब है ? अगर यही बात है, तो इन तेरह वेगों के रोकने से तो "उदावर्त्त" रोग होना लिखा है। कहा है :—

> वातविरामूत्रजृम्भाश्रु क्षवोद्गारवमीन्द्रियैः ।
> क्षुत्तृष्णोच्छ्वास निद्राणां धृत्योदावर्त्तसंभवः ॥

यह बात तो ठीक नहीं। कहीं वेगों के रोकने से "उदावर्त्त" होना लिखा हो और कहीं "यक्ष्मा"।

चूंकि मल मूत्र आदि वेगों के रोकने से "उदावर्त्त" होता है, इससे मालूम होता है, यहाँ अधोवायु, मल और मूत्र—इन तीनों वेगों से मतलब है। "भावप्रकाश" में ही लिखा है,—"वातमूत्र पुरीषाणि निगृहणानि यदानरः।" अर्थात् अधोवायु, मूत्र और मल के रोकने से "क्षय" रोग होता है। भरद्वाज ने स्पष्ट ही कहा है :—

> वातमूत्र पुरीपाणां ह्रीभयाद्यैर्यदा नरः ।
> वेगं निरोधयेत्तेन राजयक्ष्मादि सम्भवः ॥

मनुष्य जब शर्म-लाज और डर के मारे अधोवायु, मूत्र और मलको रोकता है, तब उसे "राजयक्ष्मा" आदि रोग हो जाते हैं।

मतलब यह है, कि जो लोग आस-पास बैठनेवालों की शर्म के मारे या अपने बड़ों के भय से अधोवायु या गुदा की हवा को रोक लेते हैं अथवा किसी काम में दत्तचित्त रहने या मौका न होने से पाखाने-पेशाब की हाजत को रोक लेते हैं, उनको "क्षय रोग" हो जाता है। यह बड़ी ग़लती है। पर हम लोगोंमें ऐसी चाल ही पड़ गई है, कि अगर कोई सभ्य या ऊंचे दर्जे का आदमी चार आदमियों के बीच में बैठ कर हवा खोलता है, तो लोग उसके सामने ही या उसके पीठ-पीछे उसकी मसखरी करते हैं, उसे गंवार कहते हैं। इस सम्बन्ध में शाहन्शाह अकबर और बीरबर की दिल्लगी मशहूर है। मर्दों की अपेक्षा औरतों में यह बेहूदा चाल और भी जियादा है। कन्याओं को छोटी उम्र में ही यह पट्टी पढ़ा दी जाती है, कि अपने बड़ों या खास कर सास-ससुर और पति आदि की मौजूदगी में अधोवायु कभी न खोलना, उसे ऊपर चढ़ा लेना या रोक लेना। इसका नतीजा यह होता है, कि मर्दों की निस्बत औरतें इस मूंजी रोग की शिकार जियादा होती हैं और चढ़ती जवानी में ही बल-मांस-हीन हाड़ों के कङ्काल होकर यमसदन की राही होती हैं। मर्द तो अनेक मौकों पर अधोवायु को खुलने

देते हैं, पर औरतें इसको ज़ियादा रोका करती हैं। यद्यपि हमारी समाज में यह औंधी चाल चल गई है, और अब इसके विपरीत काम करना बुरा मालूम होता है, तोभी "स्वास्थ्यरक्षा" के लिए वेगों को न ,रोकना चाहिये। जब ये सब निकलना चाहें, किसी भी उपाय से इन्हें निकाल देना चाहिये। जानवर अपने इन वेगों को नहीं रोकते, इसी से ऐसे पाजी रोगों के पंजों में नहीं फँसते।

नोट (२)—यक्ष्मा का दूसरा कारण धातुओं का क्षय करना है। असल में धातुओं के क्षय से ही क्षय रोग होता है। अनेक नासमझ नौजवान दमादम मैथीन चलाते हैं। उन्हें हर समय स्त्री-प्रसंग ही अच्छा लगता है। एक बार, दो बार या चार छे बार का कोई नियम नहीं। 'अपनी पुंगी जब चाहे तब बजाई।' नतीजा यह होता है, कि वीर्य के नाश होने से मज्जा, अस्थि और मेद मांस प्रभृति सभी धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। इनके आधार पर ही मनुष्य-चोला खड़ा रहता है। जब आधार कमजोर हो जाता है या नहीं रहता है, तब चोला गिर पड़ता है। मतलब यह है कि, वीर्य के नाश होने से वायु कुपित होता है और फिर वह मज्जा प्रभृति शेष धातुओं को चर जाता है—शरीर को सुखा डालता है, तब मनुष्य क्षीण हो जाता है। अतः दीर्घजीवन चाहनेवालों को इस निश्चयही प्राणघातक रोग से बचने के लिए अति मैथुन से बचना चाहिये। शास्त्र-नियम से मैथुन करना चाहिये। मैथुन से जाहिरा आनन्द आता है, पर वास्तव में यह भीतर-ही-भीतर जीवनी शक्तिका नाश करता और मनुष्य की आयु को कम करता है।

अति मैथुन के सिवा, व्रत-उपवासों का लम्बर लगा देना और दूसरों को देख कर जलना-कुढ़ना या उनसे ईर्षा द्वेष रखना भी क्षय के कारण हैं। इन से भी धातुएँ क्षीण होती हैं। हम हिन्दुओं और विशेष कर जैनी-हिन्दुओं में व्रत—उपवासकी बड़ी चाल है। आज एकादशी है, कल नरसिंह चौदस है, परसों रविवार है,—इस तरह आठ वारों में नौ उपवास होते हैं। जैनियों में एक-एक स्त्री महीनों के उपवास कर डालती है। यही वजह है, कि हिन्दुओं की अधिकांश स्त्रियाँ राज-रोग, क्षय रोग या तपेदिक के चङ्गुल में फँसकर भरी जवानी में उठ जाती हैं। स्वास्थ्य-लाभ के लिए उपवास की बड़ी जरूरत है, पर जब स्वास्थ्य नाश होने लगे, तब लकीर के फकीर होकर उपवास किये जाना, अपनी मौत आप बुलाना है। अतः उचित से अधिक उपवास हरगिज न करने चाहिएँ।

नोट (३)—यक्ष्मा का तीसरा कारण साहस है। जो लोग अपने बल से जियादा काम करते, रातदिन कामके पीछे ही पड़ रहते हैं अथवा अपनेसे जियादा ताक़तवरों

से कुश्ती लड़ते, बहुत भारी चीज खींचते या उठाते या ऐसे ही और काम करते हैं, अपनी ताक़त का ध्यान रखकर काम नहीं करते, बदन में ८ घण्टे मिहनत करने की शक्ति होने पर भी १४ घण्टे काम करते हैं, उन्हें क्षय रोग अवश्य होता है।

नोट (४)—चौथा कारण विषम भोजन है। जो लोग किसी दिन नाक तक ठूँसकर खाते हैं, किसी दिन आधे पेट भी नहीं, छटाँक भर चने चबाकर ही दिन काट देते हैं, किसी दिन, दिनके दसबजे, तो किसी दिन शाम के २ बजे और किसी दिन रात के आठ बजे भोजन करते हैं; यानी जिनके खाने-पीनेका कोई नियम और क़ायदा नहीं है, वे पशु-रूपी मनुष्य क्षय केशरी के शिकार होते हैं। अतः समझदारों को खाने-पीने में नियम-विरुद्ध काम न करना चाहिये। हमने इस विषय में अपनी बनाई सुप्रसिद्ध "स्वास्थ्यरक्षा" नामक पुस्तक में विस्तार से लिखा है। जो मनुष्य उस ग्रन्थके अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं, उनके जीवनका बेड़ा सुख से पार होता है।

इन चार कारणों के अलावः, बहुत शोक या चिन्ता-फिक्र करना, असमय में बुढ़ापा आना, बहुत राह चलना, अधिक मिहनत करना, अति मैथुन करना और व्रण या घाव होना भी—क्षय रोग के कारण लिखे हैं। पर ये सब इन चारों के अन्दर आ जाते हैं। देखने में नये मालूम होते हैं, पर वास्तव में इनसे जुदे नहीं हैं।

हारीत लिखते हैं,—मिहनत करने, बोझा उठाने, लम्बी राह चलने, अजीर्ण में भोजन करने, अति मैथुन करने, ज्वर चढ़ने, विषम स्थान पर सोने और अति शीतल पदार्थों के सेवन करने से कफ कुपित होता है। फिर वह अपने साथी वायु और पित्त को भी कुपित कर देता है। इस तरह वात, पित्त और कफ—इन तीनों दोषों से क्षय रोग होता है।

और भी लिखा है,—खाना कम खाने और कसरत ज़ियादा करने, दिन-रात सवारी पर चढ़कर फिरने, अधिक मैथुन करने और बहुत लम्बी सफर करने या राह चलने से क्षय रोग होता है। इन के सिवा, फोड़े-फुन्सियों के बहुत दिनों तक बने रहने, शोक करने, लंघन करने, डरने और व्रत-उपवास करने से मनुष्य को महा भयंकर यक्ष्मा रोग होता है।

पूर्वकृत पाप भी क्षय रोग के कारण हैं।
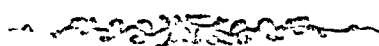
हारीत मुनि कहते हैं, जो मनुष्य पूर्वजन्म में देवमूर्त्तियों को तोड़ता है, गर्भगत जीव को दुःख देता है; गाय, राजा, ब्राह्मण और बालक की हत्या करता है, किसी के लगाये बाग़ और स्थान का नाश करता है, स्त्रियों को जान से मार डालता है—देवताओं को जलाता है, किसी का धन नाश करता है, देवताओं के धन को हड़पता है, गर्भ गिराता या हमल इस्क़ात करता है और किसी को विष देता है—उस मनुष्य को इन विपरीत कर्मों के फल-स्वरूप महादारुण रोग राजयक्ष्मा होता है। और भी लिखा है, स्वामी की स्त्री को भोगने, गुरुपत्नी की इच्छा करने, राजाका धन हरने और सोना चुरानेसे भी राजयक्ष्मा होता है। कहा भी है—

> कुष्टं च राजयक्ष्मा च प्रमेहो ग्रहणी तथा।
> मूत्रकृच्छ्राश्मरी कास अतीसार भगन्दरौ॥
> दुष्टं व्रणं गंडमाला पक्षाघातोऽक्षिनाशनं।
> इत्येवमादयो रोगा महापापोद्भवाः स्मृताः॥

कोढ़, राजयक्ष्मा, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, खाँसी, अतिसार, भगन्दर, नासूर, गण्डमाला, पक्षाघात—लकवा और नेत्र फूट जाना—ये सब रोग घोर पाप करने से होते हैं।

यक्ष्मा आदि शब्दों की निरुक्ति।

"भावप्रकाश" में लिखा है—इस रोगका मरीज़ वैद्य-हकीम की खूब पूजा करता है, इसलिए इसे "यक्ष्मा" कहते हैं।

किसीने लिखा है,—राजा चन्द्रको क्षय रोग हुआ। वैद्यों को उसके आराम करने में बड़ी-बड़ी मुश्किलातों का सामना करना पड़ा, उन्हें

बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ दरपेश आईं, तब वे लोग इस शोष या क्षय रोग को "यक्ष्मा" कहने लगे।

क्षय रोग सब रोगों से ज़बर्दस्त है, सब में प्रबल है और अतिसार आदि इसके भयङ्कर सिपाही हैं, इस से वैद्य इसे "रोगराज" कहते हैं। वास्तव में, यह है भी रोगों का राजा ही।

सम्पूर्ण क्रियाओं और धातुओं को यह क्षय करता है, इसी से इसे "क्षय" कहते हैं। "वाग्भट्ट" में लिखा है:—यह देह और औषधियों को क्षय करता है, इसलिए इसे "क्षय" कहते हैं अथवा इसका जन्मही क्षय से है, इसलिए इसे "क्षय" कहते हैं।

यह रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इन सातों धातुओं को सोखता या सुखाता है, इसलिए इस का नाम "शोष" रखा गया है।

क्षय, शोष, रोगराज और राजयक्ष्मा,—ये चारों एकही यक्ष्मा रोग के चार नाम या पर्य्याय शब्द हैं।

क्षय रोग की सम्प्राप्ति।

———:*:———

क्षय रोग कैसे होता है?

जब कफ-प्रधान वात आदि तीनों दोष कुपित हो जाते हैं, तब उन से रस वहनेवाली नाड़ियों के मार्ग रुक जाते हैं। रसवाहिनी शिराओं या नाड़ियों के रुकने से क्रमशः रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र धातुएँ क्षीण होती हैं। जब सब धातुएँ क्षीण हो जाती हैं, तब मनुष्य भी क्षीण हो जाता है।

मनुष्य जो कुछ खाता-पीता है, उस का पहले रस बनता है। रस से रक्त या खून, खून से मांस, मांस से मेद, मेद से अस्थि, अस्थि से मज्जा और मज्जा से शुक्र या वीर्य बनता है। समस्त धातुओं का कारण-रूप "रस" है; यानी मांस, मेद आदि छहों धातुओं को बनानेवाला

"रस" है। रस से ही खून आदि धातुएँ बनती हैं। जब रस ही न होगा, रक्त कहाँ से होगा? रक्त न होगा, तो मांस भी न होगा। जिन नालियों में होकर "रस" रक्त बनाने की मैशीन में पहुँचता और वहाँ जाकर खून हो जाता है, उन नालियों की राहें जब दोषों के कुपित होने से बन्द हो जाती हैं, तब "रस" रक्त बनाने की मैशीनमें पहुँच ही कैसे सकता है? वह वहाँ का वहीं यानी अपने स्थान—हृदय—में जलकर, खाँसी के साथ मुँह से निकल जाता है। रस नहीं रहता और इसी से खून तैयार करने वाली मैशीन में नहीं पहुँचता, इस का नतीजा यह होता है, कि खून दिन-पर-दिन कम होता जाता है और खून के कम होने से मांस आदि भी कम होने लगते हैं। "चरक" में लिखा है:—

रसःस्रोतःसु रुद्धेषु, स्वस्थानस्थो विदह्यते।
सऊर्द्ध्वं कासवेगेन, बहुरूपः प्रवर्त्तते॥

स्रोतों या छेदों अथवा नाड़ियों के रुक जाने पर, हृदय में रहने वाला रस विदग्ध हो जाता है, जल जाता है। इस के बाद वह, ऊपर की ओर से, खाँसी के वेग के साथ, मुँह-द्वारा, अनेक तरह का होकर, बाहर निकल जाता ह।

दूसरे शब्दों में यों कह सकते हैं, कि रस ही सब धातुओं की सृष्टि करने वाला है। जब उस रस की ही चाल रुक जाती है, उसी की राहें बन्द हो जाती हैं, तब रक्त आदि धातुओं का पोषण कैसे हो सकता है? वाग्भट्ट महाराज इसी बात को और ढँग से कहते हैं। उनका कहना है,—जिस तरह तन्दुरुस्त आदमियों के खाये-पीये पदार्थ शरीर की अग्नि और धातुओं की गरमी से पकते हैं; उस तरह क्षय-रोगी के खाये-पीये पदार्थ शरीर और धातुओं की गरमी से नहीं पकते। उस के खाये-पीये पदार्थ कोठों में पचते हैं और पचकर उन का मल बन जाता है, रस नहीं बनता। चूँकि रस नहीं बनता, मल बनता है, इसलिये रक्त आदि धातुओं का पोषण नहीं होता—उन के बढ़ने को असल मसाला—रस नहीं मिलता। जब रस नहीं, तब खून

कहाँ ? और जब खून नहीं, तब मांस की तो बात ही क्या है ? क्षय-रोगी केवल मल या विष्ठा के सहारे जीता है। मल टूटा और जीवन नाश हुआ। यों तो सभी के बल का सहारा मल और जीवन का अवलम्ब वीर्य है ; पर क्षयरोगी को तो केवल मल काही आसरा है, क्योंकि उस में वीर्य की तो कमी रहती है।

एक बात और भी है, जिसतरह कारण-भूत या सब धातुओं को पैदा करने वाले "रस" के क्षय होने से—कमी होने या नाश होने से—कार्यभूत या रस से पैदा हुई धातुओं—खून वगैरः—का क्रम से क्षय होता है; ठीक उसी तरह पर उल्टे क्रम से, कार्यभूत शुक्र के क्षय से कारणरूप मज्जा आदि धातुओं का क्षय होता है। खुलासा यों समझिये, कि जिस तरह सब धातुओं के पैदा करनेवाले "रस" के नाश होने से, रक्त, मांस और मेद आदि धातुओं का नाश होता है; उसी तरह रस से बनी हुई रक्त आदि धातुओं में से वीर्य का नाश होने से मज्जा, अस्थि, मेद और मांस आदि धातुओंका भी नाश होता है; यानी जिस तरह रस की घटती से खून आदि की घटती होती है; उसी तरह शुक्र-वीर्य की कमी से उसके पैदा करनेवाली मज्जा आदि धातुएं भी घट जाती हैं,—

उस हालतमें, वेगों के रोकने आदि कारणों से, वातादि दोष कुपित होते हैं और रस बहाने वाली नाड़ियों की राह बन्द कर देते हैं। इसलिये खून बनानेवाली मैशीन में खून बनने का मसाला "रस" नहीं पहुँचता। रस के न पहुँचने से खून नहीं बनता और खून न बनने से मांस वगैरः नहीं बनते। इस दशा में—उल्टी हालत में—पहले मैथुन से वीर्य कम होता है। वीर्यके कम होने से वायु कुपित होता है। वायु कुपित होकर मज्जादि धातुओं को शोख लेता है। धातुओं के सूखने से मनुष्य सूख जाता है। हम समझते हैं, धातुओं के सीधी और उल्टी राह से क्षय होने की बात पाठक अब समझ जायँगे। और भी साफ यों समझिये,—उस दशा में पहले रसका क्षय होता है, रसके क्षयसे मांस का क्षय होता है, मांस से मेद का, मेद से अस्थि का, अस्थि से मज्जा

का और मज्जा से वीर्यका क्षय होता है। इस दशा में पहले वीर्य का, फिर मज्जा का, फिर अस्थि का, फिर मेद और मांस आदि का क्षय होता है।

क्षय के पूर्व रूप।

(क्षय होने से पहले नज़र आने वाले चिह्न)

जब किसी को क्षय रोग होने वाला होता है, तब पहले उसमें नीचे लिखे हुए चिह्न या लक्षण नज़र आतेहैं :—

श्वास रोग होता है, शरीर में दर्द होता है, कफ गिरता है, तालू सूखता है, कय होती है, अग्नि मन्दी हो जाती है, नशा सा बना रहता है, नाक से पानी गिरता है, खाँसी और अधिक नींद आती हैं। तात्पर्य्य यह है, कि जिनको क्षय होने वाला होता है, उनमें क्षय होनेसे पहले, उपरोक्त शिकायतें देखने में आती हैं।

इन लक्षणों के सिवा, क्षय के पंजों में फँसने वाले मनुष्य का मन मांस और मैथुन पर अधिक चलता है और उसकी आँखें सफेद हो जाती हैं।

वाग्भट्ट महाराज कहते हैं, जिसे क्षय होने वाला होता है, उसे पीनस या ज़ुकाम होता है, छींकें बहुत आती हैं, उसका मुँह मीठा-मीठा रहता है, जठराग्नि मन्दी हो जाती है, शरीर शिथिल और गिरा पड़ा सा हो जाता है, मुँह थूक या पानी से भर-भर आता है, वमन होती हैं, खाने को दिल नहीं चाहता। खाने-पीने पर भी बल कम होता जाता है, मुँह और पैरों पर वरम या सूजन चढ़ आती है और दोनों नेत्र सफेद हो जाते हैं। इनके सिवा, क्षय रोगी खाने-पीने के शुद्ध-साफ बर्तनों को अशुद्ध समझता है; खाने-पीने के पदार्थों में उसे मक्खी, तिनका या बाल प्रभृति दीखते हैं, अपने हाथों को देखा करता है; दोनों भुजाओं का प्रमाण जानना चाहता है; सुन्दर शरीर देखकर भी डरता है; स्त्री, शराब और मांस की बहुत ही इच्छा करता है एवं उसके नाखुन और

बाल भी बहुत बढ़ते हैं। यह सब तो जाग्रत अवस्था की बातें हैं। सो जाने पर, स्वप्न में, क्षयवाला पतङ्ग, सर्प, बन्दर और किरकेंटा आदि से तिरस्कृत होता है। कोई लिखते हैं, कौआ, तोता, नीलकण्ठ, गिद्ध, बन्दर और किरकेंटा आदि पशु-पक्षियों पर अपने तईं सवार और बिना जलकी सूखी नदियाँ देखता है तथा हवा, धूएँ या दावानल—वन की आग से पीड़ित या सूखे हुए वृक्ष देखता है; बाल, हाड़ या राख के ढेरों पर चढ़ता है, शून्य या जनशून्य गाँव या देश देखता है और आकाश से गिरते हुए तारे और पहाड़ देखता है। यह क्षय रोग होने से पहले के लक्षण या क्षय के पेशख़ीमे हैं। क्षय के आने से पहले ये सब तशरीफ लाते हैं। चतुर लोग इन लक्षणों को देखते ही होशियार और साव-धान हो जाते हैं। यहीं से वे रोग के कारणों को रोकते और मौजूदा शिकायतों का इलाज करते हैं। ऐसे लोग क्षय से बहुत कम मरते हैं। जो क्षयके पूर्व रूपों को नहीं जानते और इसलिये सावधान नहीं होते, उनको फिर नीचे लिखी शिकायतें या उपद्रव हो जाते हैं:—

पूर्व्व रूप के बाद के लक्षण ।

पहले पूर्वरूप होते हैं, उनके बाद रोग। जब क्षय रोग प्रकट हो जाता है, तब जुकाम, खाँसी, स्वरभेद—गला बैठना, अरुचि, पसलियों का संकोचन और दर्द, खून की कय और मलभेद—ये लक्षण होते हैं।

राजयक्ष्मा के लक्षण ।

त्रिरूप क्षय के लक्षण ।

पहला दर्जा

जब क्षय रोग प्रकट होता है, तब पहले कन्धों और पसलियों में वेदना होती है, हाथों और पैरों के तलवे जलते हैं तथा ज्वर चढ़ा रहता है।

नोट—लिख चुके हैं कि, यक्ष्मा तीनों दोषों—वात, पित्त और कफ—के कोप से होता है। ऊपर जो लक्षण लिखे गये हैं, वे साधारण यक्ष्मा या यक्ष्मा के पहले दर्जे के हैं। इस अवस्था या दर्जे का यक्ष्मा आराम हो सकता है।

इस रोग में सारी धातुओं का क्षय होकर, सारे शरीर का शोषण होता है, ऐसा समझना चाहिये। कन्धों और पसलियों में शूल चलना, हाथ-पैर जलना और सारे शरीर में ज्वर बना रहना—ये तीन लक्षण "चरक" में होनहार के लिखे हैं। "सुश्रुत" में छै लक्षण और लिखे हैं। उन्हें हम नीचे लिखते हैं:—

यक्ष्मा के लक्षण।

षटरूपक्षय।

दूसरा दर्जा।

"सुश्रुत" में अन्न पर अरुचि, ज्वर, श्वास, खाँसी, खून दिखाई देना और स्वर-भेद—ये लक्षण यक्ष्मा के लिखे हैं। खुलासा यों समझिये, कि खाने की बात तो दूर रही, खाने का नाम भी बुरा लगता है। ज्वर से शरीर तपा करता है, साँस फूलता रहता है, खाँसी चलती रहती है, थूकके साथ खून गिरा करता और गला बैठ जाता है। यह यक्ष्मा के दूसरे दर्जे के लक्षण हैं। इन लक्षणों के प्रकट हो जाने पर, कोई भाग्यशाली प्राणी, सुवैद्य के हाथों में जाकर, बच भी जाता है, पर बहुत कम। इसके आगे तीसरा दर्जा है। तीसरे दर्जे वालों की तो समाप्ति ही समझिये। वे असाध्यों की गिन्ती में हैं।

हारीत कहते हैं, छाती में क्षत या घाव होने, धातुओं के क्षय होने, ज़ोर से कूदने, अत्यन्त मैथुन करने और रूखा भोजन करने से, शरीर क्षीण होकर, मन्द ज्वर हो जाता है और ज्वर के अन्त में सूजन चढ़ आती है; मैल, मल और मूत्र अधिक आते हैं; अतिसार हो जाता है; खाया-पिया नहीं पचता; खाँसी ज़ोर से चलती है; थूक बहुत आता

है; शरीर सूखता है; स्त्री की इच्छा ज़ियादा होती है और बात सुनना बुरा लगता है। जिसमें ये लक्षण पाये जायँ, उसे "राजयक्ष्मा" है। जिस राजयक्ष्मा-रोगी के पैर सूने हो जाते हैं, जिसे एक ग्रास भोजन भी बुरा लगता है और जिस की आवाज़ एकदम से मन्दी हो जाती है, उस का राजयक्ष्मा आराम नहीं होता।

दोषों की प्रधानता-अप्रधानता।

लिख आये हैं कि, यक्ष्मा रोग वातादिक तीनों दोषोंके कोप से होता है, पर उन तीनों में से कोई न कोई दोष प्रधान या सबसे ऊपर होता है। जो प्रधान होता है, उसी के लक्षण या ज़ोर अधिक दीखता है।

अगर वायु की उल्वणता, प्रधानता या अधिकता होती है, तो स्वर-भंग,—गला बैठना, कन्धों और पसलियों में दर्द और संकोच,—ये लक्षण होते हैं; यानी वायु के बढ़ने से गला बैठता और कन्धों तथा पसलियों में पीड़ा होती है। ये वाताधिक्य या वायु के अधिक होने के चिह्न हैं।

अगर पित्त उल्वंण या प्रधान होता है; तो ज्वर, दाह, अतिसार और खून निकलना ये लक्षण होते हैं; यानी पित्त के बढ़ने से ज्वर से शरीर तपता, हाथ पैर जलते, पतले दस्त लगते और मुंह से खून आता है।

अगर कफ उल्वण या अधिक होता है, तो सिर में भारीपन, अन्न पर मन न चलना, खाँसी और कंठ जकड़ना—ये लक्षण होते हैं; यानी अगर कफ बढ़ा हुआ होता है, तो रोगी का सिर भारी रहता है, खानेका नाम नहीं सुहाता, खाँसी आती और गला बैठ जाता है।

"सुश्रुत" में लिखा है,—क्षय रोग, तीनों दोषोंका सन्निपात रूप होने से, एक ही तरह का माना गया है, तोभी उस में दोषों की उल्वणता या प्रधानता होने के कारण, उन्हीं उन दोषों के चिह्न देखने में आते हैं।

स्थान-भेद से दोषों के लक्षण।

वाग्भट्ट कहते हैं, अगर दोष ऊपर रहता है, तो जुकाम, श्वास, खाँसी, कन्धों और सिर में दर्द, स्वरपीड़ा और अरुचि—ये उपद्रव होते हैं। अगर दोष नीचे के अंगों में होता है, तो अतिसार और शरीर सूखना—ये उपद्रव होते हैं। अगर दोष कोठे में रहता है, तो कय या वमन होती है। अगर दोष तिरछा होता है, तो पसलियों में दर्द होता है। अगर दोष सन्धियों या जोड़ों में होता है, तो ज्वर चढ़ता है। इस तरह क्षय रोग में ११ उपद्रव होते हैं।

साध्यासाध्यत्व।

साध्य लक्षण।

क्षय रोग साधारणतः कष्टसाध्य है, बड़ी दिक्कतों से आराम होता है; पर अगर रोगी के बल और मांस क्षीण न हुए हों, तो चाहे यक्ष्मा के ग्यारहों लक्षण क्यों न प्रकट हो जायँ, वह आराम हो सकता है। खुलासा यह है, कि यक्ष्मा के समस्त लक्षण प्रकाशित हो जाने पर भी रोगी आराम हो सकता है, बशर्ते कि, उसके बल और मांस क्षीण न हुए हों।

"वंगसेन" में लिखा है, जिन की इन्द्रियाँ वश में हैं, जिनकी अग्नि दीप्त है और जिनका शरीर दुबला नहीं हुआ है, उन यक्ष्मा वालों का इलाज करना चाहिये। वे आराम हो जायँगे।

असाध्य लक्षण।

अगर रोगी के बल और मांस क्षीण हो गये हों, पर यक्ष्मा के ग्यारह रूप प्रकट न हुए हों; खाँसी, अतिसार, पसली का दर्द, स्वर-भंग—

गला बैठना, अरुचि और ज्वर ये छै लक्षण हों अथवा श्वास, खाँसी, और खून थूकना—ये तीन लक्षण हों तो रोगी को असाध्य समझो।

अगर रोगी में जुकाम प्रभृति लक्षण कम भी हों, पर रोगी रोग और दवा के बल को न सह सकता हो, तो वैद्य उस को असाध्य समझकर, उसका इलाज न करे, यह वाग्भट्ट का मत है।

नोट—अगर रोगी में जुकाम आदि सब लक्षण हों, पर वह रोग और दवा के बल को सह सकता हो, तो आराम हो जायगा।

भावमिश्र जी कहते हैं, यशकामी वैद्य ग्यारह या छै अथवा ज्वर, खाँसी और खून थूकना इन तीन लक्षणों वालों का इलाज नहीं करते।

जो क्षय रोगी खूब ज़ियादा खाने-पीने पर भी सूखता जाता है, वह असाध्य है——आराम न होगा।

जिस रोगी को अतिसार हो—पतले या आम मरोड़ी वगैरः के दस्त लगते हों, उसका इलाज वैद्य को न करना चाहिये; क्योंकि वह असाध्य है। कहा है—

मलायत्तं बलं पुंसां शुक्रायत्तं च जीवितम्।
तस्माद्यत्नेन संरक्षेद्यक्ष्मिणां मल रेतसी॥

मनुष्यों का बल मल के अधीन है और जीवन वीर्य के अधीन है, अतः क्षय रोगी के मल और वीर्य की रक्षा यत्न से—खूब होशियारी से करनी चाहिये।

क्षय रोग का अरिष्ट।
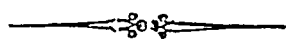
जिस क्षय-रोगी की आँखें सफेद हो गई हों, अन्न में अरुचि हो—खाने को मन न चाहता हो और उर्द्ध श्वास चलता हो, उसे अरिष्ट है, वह मर जायगा।

जिस रोगी का बहुतसा वीर्य कष्ट के साथ गिरता हो, वह क्षय-रोगी मर जायगा।

अगर यक्ष्मा-रोगी खूब खाने पर भी क्षीण होता जाता हो, उसे अतिसार हो या उसके पेट और फोतों पर सूजन हो—तो समझो कि रोगी को अरिष्ट है, वह मर जायगा।

नोट—इन ऊपर लिखे हुए उपद्रवों में से, यदि कोई एक उपद्रव भी उपस्थित हो, तो यक्ष्मा-रोगी का मरण समझना चाहिये।

क्षय रोगी के जीवन की अवधि।

आयुर्वेद-ग्रन्थों में लिखा है,—जो यक्ष्मारोगी जवान हो और जिस की चिकित्सा उत्तमोत्तम वैद्य करते हों, वह एक हज़ार दिन या दो वरस, नौ महीने और दस दिन तक जी सकता है। कहा है:—

परं दिनसहस्रन्तु यदि जीवति मानवः।
सुभिषग्भिरुपक्रान्तस्तरुणः शोषपीडितः॥

मतलब यह है, कि यक्ष्मा रोग बड़ी कठिन से आराम होता है। जिसकी टूटी नहीं होती, जिस पर ईश्वर की दया होती है, उसे सद्वैद्य मिल जाते हैं। अच्छे अनुभवी विद्वान् वैद्यों की चिकित्सा से यक्ष्मा-रोगी आराम हो जाता है; यानी प्रायः पौने तीन वरस की उम्र बढ़ जाती है। इस अवधिके बाद, आराम हो जाने पर भी, वह फिर यक्ष्मा-रोगमें फँस कर मर जाता है। किसी-किसी ने तो यहाँ तक लिख दिया हैं, कि अगर यक्ष्मा रोगी दवा-दारु करने से आराम हो जाय, तो मन में समझो कि उसे यक्ष्मारोग था ही नहीं, कोई दूसरा रोग था। क्योंकि यक्ष्मा रोग तो किसी भी दवा से आराम होता ही नहीं।

हारीत मुनि कहते हैं—

सज्जीवेच्चतुरो मासान्षण्मासं वा वलाधिकः।
उत्कृष्टैश्च प्रतीकारैः सहस्राहं तु जीवति।
सहस्रात्परतो नास्ति जीवितं राजयक्ष्मिणः॥

राजयक्ष्मा रोगी चार महीनों तक जीता है। अगर उसमें ताक़त ज़ियादा होती है, तो छे महीने जीता है। अगर उत्तम-से-उत्तम चि

चिकित्सा होती रहे, तो हज़ार दिन या पौने तीन बरस तक जीता है। हज़ार दिन से अधिक किसी तरह नहीं जी सकता। क्योंकि इतने दिनों बाद उसके प्राण, बल और वीर्य क्षीण हो जाते और इन्द्रियाँ विकल हो जाती हैं।

जो यक्ष्मा कभी घटता और कभी बढ़ता नहीं, बल्कि एक समान बना रहता और उत्तम चिकित्सा से धीरे-धीरे घटता है, वह अन्त में अच्छे इलाज से घट जाता है। जिस यक्ष्मावाले की खाँसी कभी घट जाती और कभी बढ़ जाती है, कभी कफ आता, कभी बन्द हो जाता और फिर बढ़ जाता है, वह यक्ष्मा रोगी तीन या छे महीने से ज़ियादा नहीं जीता—अवश्य मर जाता है। उस समय अमृत भी काम नहीं करता।

हिकमत के ग्रन्थों में लिखा है, कि यक्ष्मा या तपेदिक पहले और दूसरे दर्जे का होने से आराम हो जाता है, तीसरे दर्जे पर पहुँच जाने से बड़ी दिक्कतों से आराम होता और चौथे दर्जे में पहुँच जाने से तो असाध्य ही हो जाता है।

चिकित्सा करने-योग्य क्षय रोगी।

जिस क्षय रोगी का शरीर ज्वर से न तपता हो, जिस में चलने-फिरने की कुछ सामर्थ्य हो, जो तेज़ दवाओं को सह सकता हो, जो पथ्य पालन करने में मज़बूत हो, जिसे खाना पच जाता हो और जो बहुत दुबला या कमज़ोर न हो, उस क्षय रोगी की चिकित्सा करनी चाहिये। ऐसे रोगी की उत्तम चिकित्सा करने से वैद्य को यश मिल सकता है, क्योंकि ये सब क्षयरोग के पहले दर्जे के लक्षण हैं। "सुश्रुत" आदि ग्रन्थों में लिखा है:—

ज्वरानुबन्धरहितं बलवन्तं क्रियासहम्।
उपक्रमेदात्मवन्तं दीप्ताग्निमकृशं नरम्॥

जो क्षय रोगी ज्वर की पीड़ा से रहित, बलवान, चिकित्सा-

सम्बन्धी क्रियाओं को सह सकने वाला, मल पचने वाला, दीपन करने वाला और प्रदीप्त अग्निवाला हो और जो दुबला न हो, उस की चिकित्सा करनी चाहिये ।

निदान-विशेष से शोष विशेष ।
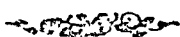
शोषरोगके और छै भेद ।

निदान विशेष से शोष या क्षय रोग छै तरह का होता है:—

(१) व्यवाय शोष—यह अति मैथुन से होता है ।

(२) शोक शोष—यह बहुत शोक या रंज करने से पैदा होता है ।

(३) वार्द्धक्य शोष—यह असमय के बुढ़ापे से होता है ।

(४) व्यायाम शोष—यह बहुतही कसरत-कुश्ती से होता है

(५) अध्व शोष—यह बहुत राह चलने से होता है ।

(६) व्रण शोष—यह व्रण होने से होता है ।

उरःक्षत शोष—यह छाती में घाव होने से होता है ।

नोट—यद्यपि उरःक्षत रोगको यक्ष्मा से अलग, पर उस के बादही कई आचार्योंने लिखा है, पर हम उसे यहाँ इस लिये लिख रहे हैं कि उस की और यक्ष्मा की चिकित्सा में कोई प्रभेद नहीं । जो यक्ष्मा का इलाज है, वही उरःक्षत का इलाज है ।

व्यवाय शोष के लक्षण ।
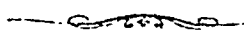
इस शोष में, "सुश्रुत" में लिखे हुए, वीर्यक्षय के सब चिह्न होते हैं; यानी लिंग और अण्डकोषों—फोतों में पीड़ा होती है, मैथुन करने की सामर्थ्य नहीं रहती अथवा मैथुन करते समय अनेक वार वीर्य स्खलित होता है; पर बहुत थोड़ा वीर्य निकलता है और रोगी का शरीर पाण्डु-वर्ण का हो जाता है । इस प्रकार के क्षय रोग में पहले वीर्य क्षय होता है । वीर्य के क्षय होने से वायु कुपित होकर मज्जा आदि धातुओं को क्षय करता है ।

खुलासा यह है, जो अत्यन्त मैथुन करते हैं, उनका शरीर पीला पड़ जाता है। क्योंकि वीर्य के क्षय होने से उलटे क्रम से धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। पहले वीर्य क्षीण होता है, फिर वायु कुपित होता और मज्जा को क्षीण करता है। मज्जाके क्षीण होने से अस्थियाँ क्षीण होती हैं। अस्थियों के क्षीण होने से मेद, मेद के क्षीण होने से मांस, मांस के क्षीण होने से खून और खून के क्षीण होने से रस क्षीण होता है। अथवा यों समझिये कि, जब वीर्य क्षीण हो जाता है, तब मज्जा उस की कमी को पूरा करती है और खुद कम हो जाती है। मज्जा को कम देखकर, अस्थियाँ उसकी कमी को पूरा करतीं और खुद कम हो जाती हैं। इसी तरह एक दूसरी धातु की कमी पूरी करने के लिए प्रत्येक धातु कम होती जाती है। धातुओं के कम होने या क्षीण होने से मनुष्य क्षीण हो जाता है।

शोक शोष के लक्षण।
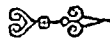
जिस चीज़ के न होने या नष्ट हो जाने से रोगी को शोक होता है, शोक शोष में, उसी चीज़ का ध्यान उसे सदैव बना रहता है। उस के अङ्ग शिथिल हो जाते हैं। व्यवाय-शोष-रोगी की तरह उस की शुक्र आदि समस्त धातुएँ क्षीण होने लगती हैं। फ़र्क़ इतना ही होता है, कि व्याधि के प्रभाव से लिंग और फोतों प्रभृति में पीड़ा आदि उपद्रव नहीं होते।

खुलासा यह है, जिस तरह अत्यन्त स्त्री-प्रसंग करने से शोष रोग हो जाता है; उसी तरह शोक, चिन्ता या फिक्र करने से भी शोष रोग हो जाता है। शोक-शोष होने से शरीर ढीला और गिरा-पड़ा सा रहता है और बिना धातु-क्षय के भी धातुक्षय के लक्षण देखने में आते हैं। चिन्ता के समान शरीर की धातुओं को नाश करनेवाला और दूसरा नहीं है। चिन्ता से क्षणभर में हाथ-पैर गिर पड़ते हैं, बैठ कर उठा

नहीं जाता और चार क़दम चला नहीं जाता। चिता और चिन्ता दो बहिन हैं। इन दोनों में चिन्ता बड़ी और चिता छोटी है। क्योंकि चिता तो निर्जीव या मुर्देको जला कर भस्म करती है, पर चिन्ता जीते हुए को जलाती और मोटे-ताज़े शरीर को ख़ाक कर देती है। चिन्ता में इतना बल है, कि वह अकेली ही, बिना किसी रोग के, खून और मांस आदि धातुओं को चर जाती है। इस रोग में सारे काम स्वयं चिन्ता करती है, रोगका तो नाम है। अतः चिकित्सक को पहले रोगी का शोक दूर करना चाहिये। क्योंकि रोग के कारण—चिन्ता के मिटे बिना रोग आराम हो नहीं सकता।

वार्द्धक्य शोष के लक्षण।

वार्द्धक्य शोषवाले या जरा शोष रोगी का शरीर दुबला हो जाता है। वीर्य, बल, बुद्धि और इन्द्रियाँ कमज़ोर या मन्दी हो जाती हैं, कँपकँपी आती है, शरीर की कान्ति नष्ट हो जाती है, गले की आवाज़ काँसी के फूटे बासन-जैसी हो जाती है, थूकने से कफ नहीं निकलता, शरीर भारी रहता और भोजन से अरुचि रहती है। मुँह, नाक और आँखों से पानी बहा करता है, पाखाना और शरीर दोनों ही सूखे और रूखे हो जाते हैं।

खुलासा यह है, जो यक्ष्मा रोग जरा अवस्था, बुढ़ापे या ज़ईफी से होता है, उस में रोगी का शरीर एकदम दुबला हो जाता है, वीर्य कम हो जाता है, बुद्धि कमज़ोर हो जाती है, इन्द्रियों के काम शिथिल हो जाते हैं; आँख, नाक, कान आदि इन्द्रियाँ अपने-अपने काम सुचारु रूपसे नहीं करतीं, हाथ और मुँह काँपते हैं, खाना अच्छा नहीं लगता, गले से फूटे हुए काँसी के बर्तन-जैसी आवाज़ निकलती है; रोगी घबरा जाता है, पर कफ नहीं निकलता; शरीर पर बोझ सा रखा जान पड़ता है; मुँह का स्वाद बिगड़ जाता है; मुँह, नाक और आँखों से

पानी गिरता है, मल या पाखाना सूखा और रूखा उतरता है तथा शरीर भी सूखा और रूखा हो जाता है।

नोट—यह शोष रोग उस बुढ़ापे में बहुत कम होता है, जो जवानी पार होने या अपने समय पर सब को आता है; बल्कि असमय के बुढ़ापे में होता है। कहते हैं, यक्ष्मा रोग बहुधा चालीस साल से कम की उम्र में होता है।

अध्व शोष के लक्षण।

अध्व शोष अधिक रास्ता चलने से होता है। इस शोष में मनुष्य के अङ्ग शिथिल या ढीले हो जाते हैं। शरीर की कान्ति आग में भुनी हुई चीज़ के जैसी और खरदरी हो जाती है, शरीर के अवयव छूने से स्पर्शज्ञान नहीं होता और प्यास लगने के स्थान—गला और मुँह सूखने लगते हैं।

खुलासा यह है कि, इस शोष वाले का सारा शरीर ढीला और बेकाम हो जाता है, शरीर की शोभा जाती रहती है, हाथ-पैरों में चुटकी काटने पर कुछ मालूम नहीं होता; यानी वे सूने हो जाते हैं और कंठ तथा मुख सूखते हैं।

व्यायाम शोष के लक्षण।

इस प्रकार के शोष में अध्वशोष के लक्षण मिलते हैं और क्षत या घाव न होने पर भी, उरःक्षत शोष के चिह्न नज़र आते हैं।

ध्यान रखना चाहिये, जो लोग अधिक कसरत-कुश्ती या और मिहनत के काम करते हैं, अपने आधे बल के अनुसार कसरत आदि नहीं करते, उनको निश्चयही यक्ष्मा रोग हो जाता है। जो मूर्ख केवल कसरत से बलवृद्धि करने की हौंस रखते हैं, उन्हें इस बात पर ध्यान देना चाहिये। कसरत के नियम-क़ायदे हमने अपनी "स्वास्थ्यरक्षा" में विस्तार से लिखे हैं।

व्रणशोष के निदान-लक्षण।

अगर व्रण या फोड़े वाले मनुष्य के शरीर से रुधिर या ख़ून निकल जाता है अथवा और किसी वजह से ख़ून घट जाता है, घाव में दर्द होता और आहार घट जाता है, तो उसको शोष रोग हो जाता है।

उरःक्षत शोष के निदान।

बहुत ज़ियादा तीर कमान चलाने, बड़ा भारी बोझ उठाने, बलवान के साथ युद्ध या कुश्ती करने, विषम या ऊँचे-नीचे स्थान से गिरने; दौड़ते हुए बैल, घोड़े, हाथी ऊँट या मोटर गाड़ी आदि के रोकने; लकड़ी पत्थर या हथियार आदि को ज़ोर से फेंकने, दूसरों को मारने, बहुत ज़ोर से चीख़ने, वेदशास्त्रों के पढ़ने, ज़ोर से भागने या दूर जाने, गहरी नदियों को तैर कर पार करने, घोड़े के साथ दौड़ने, अकस्मात् उछलने कूदने या छलाँग भरने, कला खाने, जल्दी-जल्दी नाचने अथवा ऐसे ही साहस के और काम करने से मनुष्य की छाती फट जाती है और उसे भयङ्कर उरःक्षत रोग हो जाता है। जो लोग अत्यन्त चोट लगने पर भी स्त्री-संगम करते हैं और जो रूखा तथा बहुत थोड़ा प्रमाण का भोजन करते हैं, उन्हें भी उरःक्षत रोग होता है।

खुलासा यह है, कि जो लोग ऊपर लिखे काम करते हैं, उन की छाती फट जाती और उस में घाव हो जाते हैं। इस छाती में घाव होने के रोग को ही "उरःक्षत" रोग कहते हैं; क्योंकि उर का अर्थ हृदय और क्षत का अर्थ घाव है। उरःक्षत रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानो उसकी छाती फट या टूट कर गिर पड़ना चाहती है।

क्षय और उरःक्षत के निदान लक्षण आदि महामुनि हारीतने विस्तार से लिखे हैं। उनके जानने से पाठकोंको बहुत कुछ लाभ होने की सम्भावनाहै, अतः हम उन्हें भी यहाँ लिखते हैं—

उरःक्षत रोगी की छाती बहुत दुखती है। ऐसा जान पड़ता है, मानो

कोई छाती को चीरे डालता है या उस के दो टुकड़े किये डालता है, पसलियों में दर्द होता है, सारे अंग सूखने लगते हैं, देह काँपने लगती है; अनुक्रम से वीर्य, बल, वर्ण, कान्ति और अग्नि क्षीण होती है; ज्वर चढ़ता है, मन में दीनता होती है, मलभेद या दस्त होते हैं, अग्नि मन्द हो जाती है; खाँसने से काले रंगका, बदबूदार, पीला, गाँठदार, बहुत सा खून-मिला कफ बारम्बार गिरता है। उरःक्षत रोगी वीर्य और ओज के क्षय से अत्यन्त क्षीण हो जाता है

खुलासा यह है, कि जो आदमी अपनी ताक़त से ज़ियादा काम करता है, उसकी छाती फट जाती है; यानी उसके लंग्ज़ या फैंफड़ों में ख़राबी हो जाती है, वह फट जाते हैं। उन के फटने या उन में घाव हो जाने से मुँह से खून आने लगता है। अगर उस घाव का जल्दी ही इलाज नहीं होता, वह ज़ख्म दवाएँ खिलाकर जल्दी ही भरा नहीं जाता, तो वह पक जाता है। पकने से मवाद पड़ जाता है और वही मुँह के रास्ते निकलने लगता है। वह घाव फिर नहीं भरता और नासूर हो जाता है। बस, इसी को "उरःक्षत" कहते हैं। उरःक्षत का अर्थ हृदय का घाव है। लंग्ज या फैंफड़े हृदय में रहते हैं, इसी से इसे उरःक्षत कहते हैं।

नोट—याद रखो,—लिवर, कलेजा, जिगर या यकृत में बिगाड़ होने से भी मुँहसे खून या मवाद आने लगता है। अतः वैद्य को अच्छी तरह समझ-बूझकर इलाज करना चाहिये। मनुष्य-शरीर में यकृत दाहिनी ओर की पसलियों के नीचे रहता है। इस का मुख्य काम खून और पित्त बनाना है।

जब यकृत या लिवर में मवाद भर जाता या सूजन आ जाती है, तब उस के छूने से तकलीफ होती है। अगर दाहिनी तरफ की पसली के नीचे दबाने से सख्ती सी मालूम हो अथवा फोड़ा सा दूखे, कुछ पीड़ा हो अथवा दाहनी करवट लेटने से दर्द हो या खाँसी जोर से उठे, तो समझो कि यकृत में मवाद भर गया है।

जब किसी रोगी का पुराना ज्वर या खाँसी अनेक चेष्टा करने पर भी आराम न हों, कम-से-कम तब तो यकृत की परीक्षा करो। क्योंकि यकृत में सूजन आये बिना ज्वर और खाँसी बहुत दिनों तक ठहर नहीं सकते।

उरःक्षत के विशेष लक्षण।

उरःक्षत रोगी की छाती में अत्यन्त वेदना होती है, खून की क़य होती हैं और खाँसी बहुत आती है ; खून, कफ, वीर्य और ओजका क्षय होने से लाल रंग का खून-मिला पेशाब होता है तथा पसली, पीठ और कमर में घोरातिघोर वेदना होती है।

निदान विशेष से उरःक्षत के लक्षण।

व्रण के अवरोध से, धातु को क्षीण करने वाले मैथुन से, कोठे में वायु की प्रतिलोमता और प्रतिलोम हुए मल से जिस की छाती फट जाती है,—उस का श्वास, अन्न पचते समय, बदबूदार निकलता है।

साध्यासाध्य लक्षण।

अगर उरःक्षत रोग के कम लक्षण हों, अग्निदीप्त हो, शरीर में बल हो और यह रोग थोड़े ही दिनों का हुआ हो, तो साध्य होता है; यानी आराम हो जाता है।

जिस उरःक्षत को पैदा हुए एक साल हो गया हो, वह बड़ी मुश्किल से आराम होता है।

जिस उरःक्षत में सारे लक्षण मिलते हों, उसे असाध्य समझ कर उस की चिकित्सा न करनी चाहिये।

नोट—अगर कोई उत्तम वैद्य मिल जाता है, तो आराम हो भी जाता है; पर रोगी हजार दिन से अधिक नहीं जीता।

अगर मुख से खून गिरता है यानी खून की क़य होती हैं, खाँसी का ज़ोर होता हैं, पेशाब में खून आता है, पसलियों में दर्द होता है और पीठ तथा कमर जकड़ जाती हैं—तो उरःक्षत रोगी नहीं जीता, क्योंकि ये असाध्य रोग के लक्षण हैं।

यक्ष्मा-चिकित्सा में चिकित्सक के याद रखने योग्य बातें ।

(१) सभी तरह के यक्ष्मा त्रिदोषज होते हैं ; यानी हर तरह की यक्ष्मा वात, पित्त और कफ तीनों दोषों के कोप से होते हैं। यद्यपि यक्ष्मा में तीनों ही दोषों का कोप होता है, पर तीनों में से किसी एक दोष की उल्वणता या प्रधानता होतीही है। अतः दोषों के बलाबल का विचार करके, दोषवाले की चिकित्सा करनी चाहिये। "चरक" में लिखा है;—

यद्यपि सभी यक्ष्मा त्रिदोष से होते हैं, तथापि वातादि दोषों के बलाबल का विचार करके यक्ष्माका-इलाज करना चाहिये। जैसे, कन्धे और पसलियों में दर्द, शूल और स्वर-भेद हो, तो वायु की प्रधानता समझनी चाहिये। अगर ज्वर, दाह और अतिसार हों एवं खून की क्षय होती हो, तो पित्त की प्रधानता समझनी चाहिये। अगर सिर भारी हो, अन्न पर अरुचि हो, खाँसी और कंठ की जकड़न हो, तो कफ की प्रधानता जाननी चाहिये।

जिस तरह दोषों के बलाबल का विचार करना आवश्यक है; उसी तरह इस बात का भी विचार करना ज़रूरी है, कि रोगी के शरीर में किस धातु की कमी हो रही है, कौनसी धातु क्षीण हो रही है। जैसे रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि, मज्जा और शुक्र—इन में से किस धातु की क्षीणता है। अगर खून कम हो, तो खून की कमी पूरी करनी चाहिये। अगर रस-क्षय के लक्षण दीखें, तो रसक्षय की चिकित्सा करनी चाहिये। अगर मांस-क्षय के चिह्न हों, तो उसका इलाज करना चाहिये। क्योंकि बिना धातुओं के क्षीण हुए यक्ष्मा रोग असाध्य नहीं होता।

अनेक अधूरे या अधकचरे वैद्य यक्ष्मा के निदान लक्षण मिला-कर, रोगी को यक्ष्मा नाशक उत्तमोत्तम औषधियाँ तो दनादन दिये जाते हैं, पर कौन-कौनसी धातुएँ क्षीण होगई हैं, इसका ख़याल ही नहीं करते; इसी से उन को सफलता नहीं होती, उन-के रोगी आराम नहीं होते। यह काया इन्हीं रस रक्त आदि सातों धातुओं पर ठहरी हुई है। अगर ये क्षीण होंगी, तो शरीर कैसे रहेगा? यहाँ हम रस रक्त आदि धातुओं के क्षय होने के लक्षण और उन की चिकित्सा साथ-साथ लिखते हैं—

रसक्षय के लक्षण।

अगर रस का क्षय होता है, तो बड़ी ख़ुश्की रहती है, अग्नि मन्द हो जाती है, भूख नहीं लगती, खाना हज़म नहीं होता, शरीर काँपता है, सिर में दर्द होता है, चित्त उदास रहता है, यकायक दिल बिगड़ कर रंज या शोच हो जाता है और सिर घूमता है।

रस बढ़ाने वाले उपाय
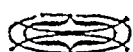
अगर क्षय रोगी के शरीर में रस या रक्त की कमी के चिह्न पाये जावें, तो भूलकर भी रसरक्त-विरोधी दवा न देनी चाहिये, बल्कि इन को बढ़ाने वाली दवा देनी चाहिये। हारीत कहते हैं;— जांगल देश के जीवों का मांस खाना; गिलोय, अदरख या अजवायन में पकाया हुआ क्वाथ या जल पीना और काली मिर्चों के साथ पकाया हुआ दूध रात के समय पीना अच्छा है। इन से रस की वृद्धि होती और क्षय रोग नाश होता है। अन्नों में गेहूँ, जौ और शालि चाँवल भी हित हैं। नीचे लिखे हुए उपाय परीक्षित हैं:—

(१) गिलोय का सत्त अदरख के स्वरस के साथ चटाने से रस रक्त की वृद्धि होती है।

(२) गिलोय का काढ़ा या फाँट पिलाना भी रस और रक्त बढ़ाने को अच्छे हैं।

(३) काली मिर्चों के साथ पकाया हुआ गाय का दूध अथवा औटाये हुए गायके दूध में मिश्री और दस-पन्द्रह दाने गोल मिर्च डालकर पीना रसरक्त बढ़ाने का सर्वश्रेष्ठ उपाय है ; पर इसे रात के समय पीना चाहिये। इस तरह का औटाया हुआ दूध जुकाम को भी फ़ौरन आराम करता है।

नोट—इन उपायों से रस और रक्त दोनों बढ़ते हैं।

(४) अगर रोगी खाने को माँगे, तो बरस दिन के पुराने गेहूँ की ख़मीर उठायी रोटी, जौकी पूरी और पुराने शालि चाँवलों का भात—ये सब रोगी को दे सकते हो।

रक्तक्षय के लक्षण।

अगर रक्तक्षय या खून की कमी होगी; तो पाण्डु रोग हो जायगा, शरीर पीला पड़ जायगा, काम-धन्धे को दिल न चाहेगा, श्वास रोग होगा, मुँह में थूक भर-भर आवेगा, अग्नि मन्द होगी, भूख न लगेगी और शरीर सूखेगी। अगर ये लक्षण दीखें, तो खून की कमी समझ कर खून बढ़ाने के उपाय करने चाहिएँ।

रक्त बढाने के उपाय।
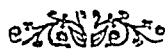
हारीत कहते हैं:—घी, दूध, मिश्री, शहद, गोलमिर्च और पीपर—इनका पना बनाकर पीने से खून की वृद्धि अवश्य होती है।

हारीत मुनि का यह योग हमने अनेक बार आज़माया है, जैसी तारीफ़ लिखी है वैसाही है:—अगर रोगी का मिज़ाज सर्द हो तो पाव भर दूध औटालो ; अगर मिजाज़ गरम हो तो औटाने की दरकार नहीं; कच्चे या औटे हुए दूध में एक तोले घी, ६।७ माशे

मधु, एक तोले मिश्री, १५। २० दाने काली मिर्चों के और आधी पीपर—इन सब को पीस कर मिलादो और एक दिल करलो। इसी को पना कहते हैं। इस को किसी दवा के बाद या अकेला ही सन्ध्या-सवेरे पिलाने से खून बढ़ता है, इस में रत्ती भर भी सन्देह नहीं। इस पनेके पीने से अनेकों हाड़ों के पञ्जर मोटे-ताज़े और तन्दुरुस्त हो गये। उनका क्षय भाग गया। पर ख़ाली इस पने से ही काम नहीं चल सकता। इस के पिलाने से पहले, कोई यक्ष्मा-नाशक ख़ास दवा भी देनी चाहिये। अगर खून की कमी ही हो, कोई उपद्रव न हो और रोग का ज़ोर न हो, तो केवल इस पने से ही क्षय आराम होते देखा है। खाने को हल्का भोजन देना चाहिये।

मांस क्षय के लक्षण।

मांस-क्षय होने शरीर एकदम से दुबला-पतला हो जाता और कामधन्धे को दिल नहीं चाहता, क्योंकि शरीर शिथिल हो जाता है, नींद नहीं आती, किसी-किसी को बहुत ज़ियादा नींद आती है, बातें याद नहीं रहतीं और शरीर में ताक़त नहीं रहती।

मेद क्षयके लक्षण।

मेद की कमी होने से शरीर थका सा रहता है, कहीं दिल नहीं लगता, बदन टूटता और चलने-फिरने की ताक़त कम हो जाती है; श्वास और खांसी का ज़ोर रहता है; खाने को दिल नहीं चाहता, और अगर कुछ खाया जाता है, तो हज़म भी नहीं होता।

मेद बढ़ानेवाले उपाय।

"हारीत संहिता" में लिखा है,—आनूपदेश के जीवों का मांस, हलके अन्न, घी, दूध, कल्प-संज्ञक शराब और मधुर पदार्थ, 'सितो-

पलादि चूर्ण,' पीपरों के साथ पकाया हुआ बकरीका दूध—ये सब मेद बढ़ाने को उत्तम हैं। खुलासा यह कि, घी, दूध, मिश्री, मक्खन और मीठे शर्बत, जांगलदेश के जानवरों के मांसका रस, हल्के और जल्दी हज़म होनेवाले अन्न, सितोपलादि चूर्ण शहत में मिलाकर सवेरे-शाम चाटना और ऊपर से मिश्री मिला हुआ बकरी का दूध पीना— मेदक्षय वाले क्षय रोगी को परम हितकर हैं। इन से मेद बढ़ती और क्षय नाश होता है।

अस्थिक्षय के लक्षण ।

अस्थि या हड्डियों के क्षय होने से मन उदास रहता है, काम को दिल नहीं चाहता, वीर्य कम हो जाता है, मुटाई नाश हो कर शरीर दुबला हो जाता है, संज्ञा नहीं रहती, शरीर काँपता है, वमन होती हैं, शरीर सूखता है, सूजन आती है और चमड़ा रूखा हो जाता है इत्यादि।

नोट—राजयक्ष्मा या जीर्णज्वर अगर बहुत दिनों तक रहते हैं, तो आदमी की हड्डियाँ पतली पड़ जाती हैं। विशेष कर,हाथ, पैर, कमर और पसलियों के हाड़ तो अवश्य ही पतले हो जाते हैं। हड्डियों के पतले पड़ने से ऊपर लिखे लक्षण होते हैं।

अस्थि वृद्धि के उपाय ।

हारीत कहते हैं,—पकेहुए घी और दूध अस्थि-वृद्धि के लिए अच्छे हैं। सब तरह के मीठे अन्न और जांगल देशके जीवों के मांस भी हितकारी हैं।

शुक्र क्षय के लक्षण ।

शुक्र या वीर्य के क्षय या कमी से भ्रम होता है, किसी बात पर दिल नहीं जमता, अकस्मात चिन्ता या फिक्र खड़ा हो जाता है,

धीरज नहीं रहता, रोगी जीवन से निराश हो जाता है, हाथ पैर और मुँह पर सूजन आ जाती है, रात को नींद नहीं आती, मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहता है; अथवा दाह या जलन होती है, क्रोध आता है, स्त्रियाँ बुरी लगती हैं, शरीर काँपता है, जी घबराता है, जोड़ों पर सूजन आ जाती है और शरीर रूखा हो जाता है।

शुक्र बढ़ानेके उपाय।

हारीत कहते हैं, अगर वीर्य कम हो गया हो, तो उसके बढ़ाने के लिये नीचे लिखे पदार्थ हित हैं। जैसे,—अच्छी तरह पकाये हुए रस, नौनी घी, दूध, मीठे पदार्थ, ककही की जड़ की छाल, विदारीकन्द और सेमल की मूसरी को दूधके साथ मिश्री मिला-कर पीना। चौथे भागके पृष्ठ १८४ में लिखी हुई "धातुवर्द्धक-सुधा" गाय को खिला कर, वही दूध पीने से वीर्य खूब बढ़ता है।

(२) अगर क्षय-रोगी ताक़तवर हो और उसके वातादिक दोष बढ़े हुए हों तो स्नेह, स्वेद, वमन, विरेचन और वस्ति-क्रिया से उसका शरीर शुद्ध करना चाहिये। पर, अगर रोगी के रस रक्त आदि धातु क्षीण होगये हों, तो भूल कर भी वमन विरेचन आदि पञ्च-कर्मों से काम न लेना चाहिये। जो वैद्य बिना सोचे-समझे ऊँट-पने से क्षय रोगी को शुद्धि के लिये कय और दस्त आदि कराते हैं, उनके रोगी बिना मौत मरते हैं। मनुष्योंका बल वीर्य के अधीन है और जीवन मलके अधीन है, इसलिये धातुक्षीण-क्षय-रोगी के वीर्य और मलकी रक्षा अवश्य करनी चाहिये। जिस में क्षय रोगी का जीवन तो मल ही के अधीन होता है। वाग्भट्ट में लिखा है—

सर्वधातुक्षयार्त्तस्य बलं तस्य हि विड्बलम्।

जिसकी समस्त धातुएँ क्षीण हो गई हैं, उस क्षयरोगी को एक मात्र विष्ठा के बलकाही सहारा है

"वाग्भट्ट" में ही और भी कहा है, कि क्षय रोगी का खाया-पीया, शरीर और धातुओं की अग्निसे न पक कर, कोठों में पकता है और मल हो जाता है और उसी मलके सहारे वह जीता है। इस से क्षय-रोगी अगर बलवान न हो, तो उसे पञ्चकर्मों से शुद्ध न करना चाहिये। अगर दस्त एकदम न होता हो, मल सूख गया हो, तो हलकी सी दस्तावर दवा देकर एकाध दस्त करा देना चाहिये।

(३) कोई भी रोग क्यों न हो, सब में पथ्य पालन और अपथ्य के त्याग की बड़ी ज़रूरत है। बिना पथ्य-पालन किये रोगी अमृतसे भी आराम हो नहीं सकता ; जबकि पथ्य-पालन से बिना दवा के ही आराम हो जाता है। बहुत से रोग ऐसे हैं, जिन में रोगी का मन उन्हीं चीज़ों पर चलता है, जिन से रोगी का रोग बढ़ता है अथवा जो चीज़ें रोगी के हक़ में नुक़सानमन्द हों। ख़ासकर क्षयरोगी का दिल ऐसे ही पदार्थों पर चलता है, जिन से उसकी रस, रक्त, मांस, मेद आदि धातुएँ क्षीण होने की सम्भावना हो। इसलिए क्षय रोगी का मन जिन-जिन पदार्थों पर चले, उन-उन पदार्थों को उसे हरगिज़ न देना चाहिये। उसे ऐसे ही पदार्थ देने चाहियें, जिन से उसकी धातुएँ बढ़ें और गरमी कम हो। क्षय-रोगी को मीठे और घन पदार्थ सदा हितकारी हैं, क्योंकि इन से धातुओं की वृद्धि होती है

(४) अगर जीर्णज्वर और यक्ष्मावाले को उत्तम-से-उत्तम दवा देने पर भी लाभ न हो, तो उसके यकृत पर ध्यान देना चाहिये। क्योंकि यकृतके दोष आराम हुए बिना, हज़ारों दवाओंसे भी जीर्ण ज्वर और क्षयरोग आराम हो नहीं सकते। यकृत में ख़राबी होने, सूजन आने या मवाद पड़ने से मन्दा-मन्दा ज्वर चढ़ा रहता है, भूख नहीं लगती, कमज़ोरी आ जाती है और शरीर पीला हो जाता है। हमारे शास्त्रों में यकृत के निदान लक्षण बहुत ही कम लिखे हैं। वंगसेन ने बेशक अच्छा प्रकाश डाला है। वह लिखते हैं—

मन्दज्वराग्निः कफपित्तलिंगै रुपद्रुतः क्षीणबलोतिपाण्डुः।
सव्यान्य पार्श्वेयकृतप्रदुष्टे ज्ञेयं यकृदाल्युदरं तथैव॥

रोगी के शरीर में मन्दा-मन्दा ज्वर बना रहे, भूख मारी जाय, कफ और पित्तका कोप दीखे, बल नाश हो जाय, और शरीर का रंग पीला पड़ जाय, तो समझो कि दाहिनी पसली के नीचे रहने वाला यकृत—लिवर—कलेजा या जिगर ख़राब हो गया है।

हिकमत की पुस्तकों में लिखा है, अक्सर तपेकोनः, तपेदिक और सिलकी बीमारी वालों यानी जीर्णज्वर, क्षय और उरःक्षत-रोगियों के यकृतमें सूजन या वरम आ जाती है। यकृत या लिवरमें सूजन आजाने से जीर्णज्वर और यक्ष्मा तथा उरःक्षत रोग असाध्य हो जाते हैं। अगर जल्दी ही यकृत का इलाज न करने से उस में मवाद पड़ जाता है, तो उस दशा में मुँह की राहसे वह मवाद या ज़रा-ज़रा सा खून-मिला मवाद निकलने लगता है। "इलाजुल गुर्बा" में लिखा है, सिल या फ़ंफड़े में घाव होने से ऐसा बुखार आता है, कि वह सैकड़ों तरह के उपाय करने से भी नहीं उतरता। खाँसीके साथ खून निकलता और रोगी दिन-दिन बल-हीन होता जाता है। इस हालतमें वासलीक की फस्द खोलना और पीछे ज्वर और खाँसीकी दवा करना हितकारी है। इसकी साफ पहचान यही है,कि यकृतमें सूजन और मवाद पड़ने से रोगी अगर दाहिनी करवट सोता है,तो खाँसी ज़ोरसे उठती है, अतः रोगी दाहिनी करवट सोना नहीं चाहता और सो भी नहीं सकता। यकृतकी ख़राबीका हाल वैद्य हाथसे छूकर भी जान सकता है। अगर दाहिनी पसलियों के नीचे दबाने से कड़ापन मालूम होता हो, पके फोड़े पर हाथ लगाने-जैसा दर्द होता हो, तो निश्चयही यकृतमें ख़राबी हुई समझनी चाहिये। इस हालतमें फस्द खोलना, यकृत पर लेप लगाना और यकृत-दोष नाशक दवा देना हितकारी है। अगर यकृत में दर्द हो, तो उस पर तारपीन का तेल मलकर गरम जल से सेक करना चाहिये अथवा

गोमूत्र को गरम करके और बोतल में भर कर सेक करना चाहिये अथवा गरम जल या गोमूत्र में फलालनका टुकड़ा भिगोकर सेक करना चाहिये। हमने यहाँ दो चार बातें इशारतन लिख दी हैं। यक्ष्मतके निदान-लक्षण और चिकित्सा हम आगे लिखेंगे।

(५) यक्ष्मा रोग नाशार्थ कोई ख़ास दवा जैसे, लवंगादि चूर्ण, सितोपलादि चूर्ण, च्यवनप्राश अवलेह, द्राक्षारिष्ट, जातीफलादि चूर्ण, मृगांक रस प्रभृति उत्तमोत्तम रसों या दवाओंमें से कोई देनी चाहिये, पर साथ ही ऊपर के उपद्रव जैसे कन्धों का दर्द और स्वरभंग आदिके ऊपरी उपाय भी करने चाहिएँ। इस तरह करने से रोगीको उतना ज़ियादा कष्ट नहीं होता। जैसे,—रोगी बहुत ही कमज़ोर हो तो उसे घी, दूध, शहद, कालीमिर्च और मिश्री का पना बनाकर, किसी दवा के बाद, सवेरे-शाम थोड़ा-थोड़ा पिलाना चाहिये। अथवा नौनी घी में मिश्री और शहद मिलाकर खिलाना चाहिये। बकरी का दूध पिलाना चाहिये। बकरी के घी में ज़रा सी चीनी मिलाकर पिलाना चाहिये। अगर पच सके तो बकरी का मांस खिलाना चाहिये। यक्ष्मा-रोगी को बकरी और हिरन बहुत हितकारी हैं, इसी से वैद्य लोग क्षय-रोगी के पलँग के पास हिरन या बकरी को बाँध रखते हैं। "भावप्रकाश" में लिखा है:—

छागमांसं पयश्छागं छागं सर्पिः सनागरम् ।
छागोपसेवी शयनं छागमध्येतु यक्ष्मनुत् ॥

बकरी का मांस खाना, बकरी का दूध पीना, सोंठ मिला कर बकरी का घी खाना, बकरों की सेवा करना और बकरे-बकरियों में सोना—यक्ष्मा-रोगी को हित है।

अगर कन्धों और पसलियों में दर्द हो, तो शतावर क्षीर-काकोली, गन्धतृण, मुलहटी और घी—इन सब को पीस और गरम करके, इन का लेप दर्दस्थानों पर करना चाहिए। अथवा गूगल, देवदारु, सफ़ेद चन्दन, नागकेशर और घी—इन सबको

पीस और गरम करके सुहाता-सुहाता लेप दर्द-स्थानों पर करना चाहिये।

अगर खून की क़य होती हों, तो महावर का स्वरस दो तोले और शहद ६ माशे—इन को मिलाकर पिलाना चाहिये।

नोट—पीपल, बेर और शीशम आदि वृक्षों की शाखाओं पर जो लाल-लाख पदार्थ लगा रहता है, उसे "लाख" कहते हैं। पीपर की लाख उत्तम होती है। पीपर की लाख को गरम जल में पका कर महावर बनाते हैं।

(६) लिख आये हैं, कि क्षय-रोगी के पथ्यापथ्य का खूब ख़याल रखना चाहिये। उसे अपथ्य आहार विहारों से बचाना चाहिये। क्षयवाले को आग तापना, रात में जागना, ओस में बैठना, घोड़े आदि पर चढ़ना, गाना-बजाना, ज़ोर से चिल्लाना, स्त्री-प्रसंग करना, पैदल चलना, कसरत करना, हुक्का सिगरट पीना, मलमूत्र आदि वेगों का रोकना, स्नान करना और कामोत्तेजक कामों से बचना चाहिये; क्योंकि इस रोग में मैथुन करने की इच्छा बहुत प्रबल होती है। मैथुन करने से वीर्य क्षय होता है और वीर्य-क्षय से क्षय रोग होता है। जिस काम से रोग पैदा हो, वही काम करना सदैव बुरा है। विशेष कर, वीर्यक्षय से हुए यक्ष्मा में तो इस बात को न भूलने की बड़ीही ज़रूरत है।

नोट—इस रोग के पथ्यापथ्य हम आगे लिखेंगे।
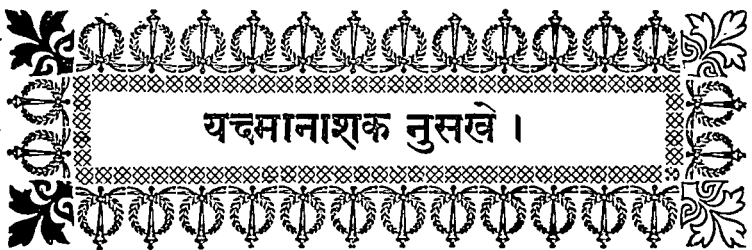
यक्ष्मानाशक नुसखे।

(१) अर्जुन की छाल, गुलसकरी और कौंच के बीज—इनको दूध में पीस कर, पीछे शहद, घी और चीनी मिलाकर पीने से राज-यक्ष्मा और खाँसी—ये रोग नाश हो जाते हैं।

नोट—इन दवाओं के ६ माशे चूर्ण को—पाव भर बकरी के कच्चे दूधमें ३ माशे शहद और ६ माशे चीनी मिलाकर, उसी के साथ फाँकना चाहिये। परीक्षित है।

(२) बकरी का मांस खाना, बकरी का दूध पीना, बकरीके घी में सोंठ मिला कर पीना और बकरे-बकरियों के बीच में सोना—क्षय रोगी को लाभदायक हैं। इन उपायों से ग़रीब यक्ष्मा-रोगी निश्चयही आराम हो सकते हैं।

(३) शहद, सोनामक्खी की भस्म, बायबिडंग, शुद्ध शिलाजीत, लोहभस्म, घी और हरड़—इन सब को मिला कर सेवन करने और पथ्य पालन करने से उग्र राजयक्ष्मा भी आराम हो जाता है।

नोट—बंगसेन के इसी नुसखे में सोनामक्खी नहीं लिखी है।

(४) नौनी घी में शहद और चीनी मिला कर खाने और ऊपर से दूध सहित भोजन करने से क्षय रोग नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(५) ना-बराबर शहद और घी मिला कर चाटने से भी पुष्टि होती और क्षय नाश होता है। घी १० माशे और शहद ६ माशे इस तरह मिलाना चाहिये। परीक्षित है।

(६) खिरैंटी, असगन्ध, कुम्भेर के फल, शतावर और पुनर्नवा—इन को दूध में पीस कर नित्य पीने से उरःक्षत रोग जाता है।

(७) बकरे के चिकने मांस-रस में पीपर, जौ, कुलथी, सोंठ, अनार, आमले और घी—मिलाकर पीने से पीनस-जुकाम श्वास, खाँसी, स्वरभङ्ग, सिरदर्द, अरुचि और कन्धों का दर्द—ये छै तरह के रोग नाश होते हैं।

(८) असगन्ध, गिलोय, भारङ्गी, बच, अड़ूसा, पोहकरमूल, अतीस और दशमूल की दशों दवाएँ—इन सब का काढ़ा पीने और ऊपर से दूध और मांसरस खाने से यक्ष्मा रोग नाश हो जाता है।

(९) बन्दर के मांस को सुखाकर पीस लो। इस के सूखे माँस-चूर्ण को खाकर, दूध पीने से यक्ष्मा नाश हो जाता है। कहा है—

कपिमांसं तथा पीतं क्षयरोगहरं परम्।
दशमूल बलारास्नाकषायः क्षयनाशनः॥

बन्दर का मांस भी बकरी के दूध के साथ पीने से क्षय को नष्ट करता है। दशमूल, खिरेंटी और रास्ना का काढ़ा भी क्षय को दूर करता है। परीक्षित है।

(१०) हिरन और बकरी के सूखे माँस का चूर्ण करके, बकरी के दूध के साथ पीने से क्षय रोग चला जाता है।

(११) बच, रास्ना, पोहकरमूल, देवदारु, सोंठ, और दशमूल की दशों दवाएँ—इनका काढ़ा पीने से पसली का दर्द, सिर के रोग, राजयक्ष्मा और खाँसी प्रभृति रोग नाश हो जाते हैं।

(१२) दशमूल, धनिया, पीपर और सोंठ, इनके काढ़े में दाल-चीनी, इलायची, नागकेशर और तेजपात—इन चारों का चूर्ण मिला कर पीने से खाँसी और ज्वरादि रोग नाश होकर बलवृद्धि और पुष्टि होती है।

(१३) दो तोले लाख पेठे के रस में पीस कर पीने से रक्तक्षय या मुँह से खून गिरना आराम होता है।

(१४) चव्य, सोंठ, मिर्च, पीपर और बायबिडंग—इन सब का चूर्ण घी और शहद में मिला कर चाटने से क्षय रोग निश्चय ही नाश हो जाता है।

(१५) त्रिकुटा, त्रिफला, शतावर, खिरेंटी और कंघी—इन सब के पिसे छने चूर्णमें "लोहभस्म" मिलाकर सेवन करने से अत्यन्त उग्र यक्ष्मा, उरःक्षत, कण्ठरोग, बाहुस्तम्भ और अर्दित रोग नाश हो जाते हैं।

(१६) परेवा पक्षी के मांस को धूप में, नियत समय पर, सुखा कर, शहद और घी में मिलाकर चाटने से अत्यन्त उग्र यक्ष्मा भी नाश हो जाता है।

(१७) असगन्ध और पीपल के चूर्ण में शहद, घी और मिश्री मिलाकर चाटने से क्षय रोग चला जाता है।

(१८) मिश्री, शहद और घी मिलाकर चाटने से क्षय नष्ट हो जाता है। नाबराबर घी और शहद मिलाकर चाटने और ऊपर से दूध पीने से क्षय रोग चला जाता है। परीक्षित है।

(१९) सोया, तगर, कूट, मुलेठी और देवदारु,—इन को घी में पीस कर पीठ, पसली, कन्धे और छाती पर लेप करने से इन स्थानों का दर्द मिट जाता है।

(२०) कबूतर का मांस बकरी के दूध के साथ खाने से यक्ष्मा नाश हो जाता है। कहा है—

संशोषितं सूर्यकरैर्हि मांसं पारावतं यः प्रतिघस्रमत्ति।
सर्पिर्मधुभ्यां विलिहन्नरो वा निहन्ति यक्ष्माणमतिप्रगल्भम् ॥

कबूतर का मांस सूरज की किरणों से सुखाकर हर दिन खाने से अथवा उस में घी और शहद मिलाकर चाटने से अत्यन्त बढ़ा हुआ राजयक्ष्मा भी नाश हो जाता है,। परीक्षित है।

(२१) दिन में कई दफा दो-दो तोले अँगूर की शराब, महुए की शराब या मुनक्के की शराब पीने से यक्ष्मा नाश हो जाता है।

नोट—यक्ष्मा रोग में शराब पीना हितकर है, पर थोड़ी-थोड़ी पीने से लाभ होता है।

(२२) गायका ताज़ा मक्खन ६ माशे, शहद ४ माशे, मिश्री ३ माशे और सोने के वरक १ रत्ती—इनको मिला कर खाने से यक्ष्मा अवश्य नाश होजाता है। यह नुसखा कभी फेल नहीं होता। परीक्षित है।

(२३) बकरी का घी बकरी के ही दूध में पकाकर और पीपल तथा गुड़ मिला कर सेवन करने से भूख बढ़ती, खाँसी और क्षय नाश होते हैं। परीक्षित है।

(२४) अगर क्षय या जीर्णज्वर वाले के शरीर में ज्वर चढ़ा रहता हो, हाथ पैर जलते हों और कमज़ोरी बहुत हो, तो "लाक्षादि तैल" की मालिश कराना परम हितकर है। अनेकों बार परीक्षा की है। कहा भी है—

दौर्बल्ये ज्वर सन्तापे तैलं लाक्षादिकं हितम् ।
सघृतान्राजमाषान्यो नित्यमश्नाति मानवः ।
तस्य क्षयः क्षयं यान्ति मूत्रमेहोति दारुणः ।

कमज़ोरी, ज्वर और सन्ताप में लाक्षादि तैल हितकारी है। जो मनुष्य राजमाष—एक प्रकार के उड़दों को घी के साथ खाता है, उसका क्षय और अति दारुण प्रमेह रोग नाश हो जाता है।

धान्यादि क्वाथ।

धनिया, सोंठ, दशमूल और पीपर—इन तेरह दवाओं को बराबर-बराबर कुल मिलाकर दो या अढ़ाई तोले लेकर काढ़ा बनाकर पिलानेसे यक्ष्मा और उसके उपद्रव—पसली का दर्द, खाँसी, ज्वर, दाह, श्वास और जुकाम नाश हो जाते हैं। परीक्षित है।

त्रिफलाद्यवलेह।

त्रिफला, त्रिकुटा, शतावर और लोह चूर्ण—हरेक दवा चार-चार तोले लेकर कूटकर रख लो। इस में से एक तोले चूर्ण की मात्रा शहद के साथ चटाने से उरःक्षत और कंठ-वेदना नाश हो जाती है।

विडंगादिलेह।

वायविडंग, लोहभस्म, शुद्ध शिलाजीत और हरड़—इनका चूर्ण घी और शहद के साथ चाटने से प्रबल यक्ष्मा, खाँसी और श्वास आदि रोगों का नाश होता है। परीक्षित है।

सितोपलादि चूर्ण।

तज १ तोले, इलायची २ तोले, पीपर ४ तोले, बंसलोचन ८ तोले और मिश्री १६ तोले—इन सबको पीस-छान कर रखलो। यही "सितो-

पलादि चूर्ण” है। इस चूर्ण से जीर्णज्वर पुराना बुख़ार, और क्षय या तपेदिक निश्चय ही आराम हो जाते हैं। परीक्षित है।

नोट—इस चूर्ण को मामूली तौर से शहद में चटाते हैं। अगर रोगी को दस्त लगते हों, तो शर्बत अनार या शर्बत बनफशा में चटाते हैं। इन शर्बतों के साथ यह ख़ूब जल्दी आराम करता है। इसकी मात्रा १॥ माशे से ३ माशे तक है। यक्ष्मावाले को एक मात्रा चूर्ण, शहद ४ माशे और मक्खन या घी १० माशे में मिलाकर चटाने से भी बहुत बार अच्छा चमत्कार देखा है। जब इसे घी और शहद में चटाते हैं, तब “सितोपलादि लेह या चटनी” कहते हैं। “चक्रदत्त”में लिखा है—इस सितोपलादि को घी और शहदमें मिलाकर चाटनेसे श्वास, खाँसी और क्षय नाश होते हैं तथा अरुचि, मन्दाग्नि, पसली का दर्द, हाथ पैरों की जलन, कन्धों की जलन और दर्द, ज्वर, जीभ का कड़ापन,कफरोग, सिर के रोग और ऊपर का रक्तपित्त ये भी आराम होते हैं। इस चूर्ण की प्रायः सभी आचार्य्यों ने भर पेट प्रशंसा की है और परीक्षा में ऐसा ही प्रमाणित भी हुआ है। हमारे दवाखाने में यह सदा तैयार रहता है और हम इन रोगों में बहुधा पहले इसे ही रोगियोंको देते हैं।

मुस्तादि चूर्ण।

नागरमोथा, असगन्ध, अतीस, साँठकी जड़, श्रीपर्णी, पाठा, शतावरी, खिरेंटी और कुड़ा की छाल—इनका चूर्ण दूध के साथ पीने से श्वास और उरःक्षत रोग नाश होते हैं। परीक्षित है।

वासावलेह।
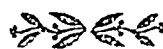
अडूसा और कटेरी का रस शहद और पीपर मिलाकर पीने से शीघ्र ही दारुण श्वास आराम हो जाता है। परीक्षित है।

दूसरा वासावलेह।
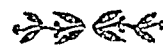
अडूसे के आध सेर स्वरस में शुद्ध सोनामक्खी, मिश्री और छोटी पीपर—ये तीनों चार-चार तोले मिलाकर मन्दाग्नि से पकाओ। जब

गाढ़ा हो जाय उतारलो और शीतल होने पर उस में चार तोले शहद मिला दो और अमृतबान या शीशी में रखदो। इस में से एक तोले रोज़ खाने से खाँसी, कफ, क्षय और बवासीर रोग नष्ट हो जाते हैं। परीक्षित है।

तालीसादी चूर्ण।

तालीस पत्र १ तोले, गोलमिर्च २ तोले, सोंठ ३ तोले, पीपर ४ तोले, बंसलोचन ५ तोले, छोटी इलायची के दाने ६ माशे, दालचीनी ६ माशे और मिश्री ३२ तोले—इन सब को पीसकूट कर कपड़-छन करलो और रखदो। इसकी मात्रा ३ से ६ माशे तक है। इसके अनुपान शहद, कच्चा दूध, बासी पानी, मिश्री की चाशनी, अनार का शर्बत, बनफशा का शर्बत या चीनी का शर्बत है; यानी इन में से किसी एक के साथ इस चूर्ण को खाने से श्वास, खाँसी, अरुचि, संग्रहणी, पीलिया, तिल्ली, ज्वर, राजयक्ष्मा और छाती की वेदना—ये सब आराम होते हैं। इस चूर्ण से पसीने आते हैं और हाड़ों का ज्वर निकल जाता है। अनेक बार आज़मयाश की है। इसे बहुत कम फेल होते देखा है। अगर इस के साथ-साथ "लाक्षादितैल" की मालिश भी की जाय, तबतो कहना ही क्या? परीक्षित है।

लवंगादि चूर्ण।
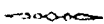
लौंग, शुद्ध कपूर, छोटी इलायची, कलमी तज, नागकेशर, जायफल, खस, बेतरा सोंठ, कालाज़ीरा, काली अगर, नीली झांई का बंसलोचन, जटामासी, कमलगट्टे की गिरी, छोटी पीपर, सफेद चन्दन, सुगन्धवाला और कंकोल—इन सब को बराबर-बराबर लेकर, महीन पीसकर कपड़े में छान लो। फिर सब दवाओं के वज़न से आधी "मिश्री" पीसकर मिला दो और बर्तन में मुंह बन्द करके रखदो।

इसका नाम "लवंगादि चूर्ण" है । इस की मात्रा ४ रत्ती से २ माशे तक है। यह चूर्ण राजाओं के खाने योग्य है।

यह चूर्ण अग्नि और स्वाद बढ़ाता, दिल को ताक़त देता, शरीर पुष्ट करता, त्रिदोष नाश करता, बल बढ़ाता, छाती के दर्द और दिल की घबराहट को दूर करता, गले के दर्द और छालों को नाश करता, खाँसी, जुकाम, 'यक्ष्मा' हिचकी, तमक श्वास, अतिसार, उरःक्षत—कफ के साथ मवाद और खून आने, प्रमेह, अरुचि, गोला और संग्रहणी आदि को नाश करता है। परीक्षित है।

नोट—कपूर खूब सफेद और जल्दी उड़ने वाला लेना चाहिये और कमलगट्टे के भीतर की हरी-हरी पत्ती निकाल देनी चाहियें, क्योंकि वह विषवत् होती हैं ।

जातीफलादि चूर्ण ।

यह नुसख़ा हमने "चिकित्सा चन्द्रोदय" तीसरे भाग के संग्रहणी प्रकरण में लिखा है, वहाँ देखकर बना लेना चाहिये । इस चूर्ण से संग्रहणी, श्वास, खाँसी, अरुचि, क्षय और वात-कफ जनित जुकाम ये सब आराम होते हैं । बादी और कफ का जुकाम नाश करने और उसे बहाने में तो यह रामबाण है। इस से जिस तरह संग्रहणी आराम होती है, उसी तरह क्षय भी नाश होता है। जिस रोगी को क्षय में जुकाम, संग्रहणी, खाँसी, श्वास आदि उपद्रव होते हैं, उन के लिए बहुत ही उत्तम है। इस के सेवन करने से रोगी को नींद भी आती है और वह अपने दुःख को भूल जाता है।

अगर क्षय रोगी को इसे देना हो, तो इसे शाम के वक्त शहद में मिलाकर चटाना और ऊपर से निवाया-निवाया दूध मिश्री मिलाकर पिलाना चाहिये। शाम को इस के चटाने और सवेरे "लवंगादि चूर्ण" खिलाने से अवश्य लाभ होगा। यह अपना काम करेगा और वह खाना हज़म करेगा , भूख लगायेगा, नींद लायेगा और दस्त को बाँधेगा ।

नोट—अगर क्षय रोगी को पाखाना साफ न होता हो अथवा कफ के साथ

खून आता हो या कफ में बदबू मारती हो, तो "द्राक्षारिष्ट" दिन में कई बार चटाना चाहिये। जिन क्षयवालों को कब्ज की शिकायत रहती हो, उनके लिये "द्राक्षारिष्ट" रामवाण है। हमने इन चूर्णों और दाखों के अरिष्ट से बहुत रोगी आराम किये हैं।

द्राक्षारिष्ट

उत्तम बड़े-बड़े बीज निकाले हुए मुनक्के सवा सेर लेकर, क़लईदार देग या कड़ाही में रखकर, ऊपर से दस सेर पानी डाल कर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। जब अढ़ाई सेर पानी बाक़ी रह जाय, उतार कर शीतल करलो और मल-छानलो। पीछे उसमें सवा सेर मिश्री भी मिलादो। इसके बाद दालचीनी २ तोले, छोटी इलायची के बीज २ तोले, नागकेशर २ तोले, तेजपात २ तोले, वायबिडंग २ तोले और फूल-प्रियंगू २ तोले, काली मिर्च १ तोले और छोटी पीपर १ तोले, इन सब को जौकुट करके उसी मुनक्कों के मिश्री मिले काढ़े में मिला दो। पीछे एक चीनी या काँच के बरतन में चन्दन, अगर और कपूर की धूनी देकर, यह सारा मसाला भरदो। ऊपर से ढकना बन्द करके कपड़-मिट्टी से सन्धें बन्द करदो। हवा जाने को साँस न रहे, इसका ध्यान रखो। फिर इसे एक महीने तक ऐसी जगह पर रखदो, जहाँ दिन में धूप और रात को ओस लगे। जब महीना भर हो जाय, मुँह खोलकर सब को मथो और छानकर बोतलों में भर दो और काग लगादो। बस यही सुप्रसिद्ध "द्राक्षारिष्ट" है। ध्यान रखो, यह कभी बिगड़ता नहीं।

इस की मात्रा ६ माशे से दो तोले तक है। इसे अकेला ही या "लवंगादि चूर्ण" और "जातीफलादि चूर्ण" सवेरे शाम देकर, दोपहर के बारह बजे, सन्ध्या के ४ बजे और रातको दस बजे चटाना चाहिये। इस अकेले से भी उरःक्षत रोग नाश होता है। अगर कफ के साथ हर बार खून आता हो, तो इसे हर दो-दो घन्टे पर देना चाहिये। मुखसे खून आने को यह फौरन ही आराम करता है। इसके सेवन करने से बवा-

सीर, उदावर्त्त, गोला, पेट के रोग, कृमिरोग, खून के दोष, फोड़े-फुन्सी, नेत्ररोग, सर के रोग और गले के रोग भी नाश हो जाते हैं। इस से अग्नि वृद्धि होती, भूख लगती, खाना हज़म होता और दस्त साफ होता है। अनेक बार का परीक्षित है।

दूसरा द्राक्षारिष्ट ।

—:※:—

बड़े-बड़े बिना बीज के मुनक्के सवा सेर लेकर, चौगुने जल यानी पाँच सेर पानी में डालकर, क़लईदार बासन में मन्दाग्नि से औटाओ। जब सवा सेर या चौथाई पानी बाक़ी रह जाय, उतारकर मल-छानलो। फिर उस में पाँच सेर अच्छा गुड़ मिलादो और तज, इलायची, नागकेशर, मेंहदी के फूल, काली मिर्च, छोटी पीपर और बायविडंग—दो-दो तोले लेकर, महीन पीस-छान कर उसी में डालदो और क़लईदार कड़ाही में उड़ेलकर फिर औटाओ। औटाते समय कलछी से चलाना बन्द मत करो। अगर न चलाओगे तो गुठले से हो जायँगे। जब औट जाय, इसे अमृतबानों में भर दो। इसकी मात्रा १ से चार तोले तक है। बलाबल देखकर मात्रा मुक़र्रर करनी चाहिये। इसके सेवन करने से छातीका दर्द, छाती के भीतर का घाव, श्वास, खाँसी, यक्ष्मा, अरुचि, प्यास, दाह, गले के रोग, मन्दाग्नि, तिल्ली और ज्वर आदि रोग नाश हो जाते है। अनेक बार का परीक्षित है। कभी फेल नहीं होता।

द्राक्षासव ।

बड़े-बड़े दाख सवा सेर, मिश्री पाँच सेर, झड़बेरी की जड़ की छाल अढ़ाई पाव, धाय के फूल सवा पाव, चिकनी सुपारी, लौंग, जावित्री, जायफल, तज, बड़ी इलायची, तेजपात, सोंठ, मिर्च, छोटी पीपर, नाग-केशर, मस्तगी, कसेरू, अकरकरा और कूट—इनमें से हरेक आध-आध पाव तथा साफ पानी सवा छत्तीस सेर—इन सब को एक मिट्टी

के घड़े में भर कर, ऊपर से ढकना रखकर, कपड़मिट्टी से मुख बन्द-करदो। फिर ज़मीनमें गहरा गड्ढा खोद कर, उसी में घड़े को रखकर ऊपर से मिट्टी डालकर दवादो और १४ दिन मत छेड़ो। पन्द्रह दिन बाद घड़े को निकाल कर, उसका मसाला भभके में डालकर अर्क़ खींचलो। इस अर्क़ में दो तोले केशर और एक माशे कस्तूरी मिलाकर काँच के भाँड में भर कर रख दो और तीन दिन तक मत छेड़ो। चौथे दिन से इसे पी सकते हो। सवेरे ही छै तोले, दोपहर को १० तोले और रात को १५ तोले तक इसे पीना चाहिये। ऊपर से भारी और दूध घी का भोजन करना चाहिये।

इस आसव के पीने से खाँसी, श्वास और राजयक्ष्मा रोग नाश होते, वीर्य वढ़ता, दिल खुश होता और ज़रा-ज़रा नशा आता है। इसके पीने वाले की स्त्रियाँ दासी हो जाती हैं। भाग्यवानों को ही यह अमृत मयस्सर होता है। यक्ष्मा वाले के लिए यह ईश्वर का आशीर्व्वाद है। कई दफा का परीक्षित है।

द्रक्षादि घृत।

—:o:—

विना बीज के मुनक्के दो सेर और मुलेठी तीन पाव—दोनों को खरल में कुचलकर, रात के समय दस सेर पानी में भिगो दो। सवेरे ही मन्दाग्नि से औटाओ। जब चौथाई पानी रह जाय, उतारकर छानलो।

इस के बाद विना बीजों के मुनक्के चार तोले, मुलेठी छिली हुई चार तोले और छोटी पीपर आठ तोले, इन तीनों को सिल पर पीसकर लुगदी बनालो।

इस के भी बाद गाय का उत्तम घी दो सेर, तीनो दवाओं की लुगदी और मुनक्का-मुलेठी का काढ़ा—इन सब को क़लईदार कड़ाही में चढ़ाकर, मन्दी-मन्दी आग से पकाओ। ऊपर से थनदुहा गाय का दूध आठ सेर भी थोड़ा-थोड़ा करके उसी कड़ाही में डालदो। जब

दूध और काढ़ा जल जायँ, तब चूल्हे से उतार कर छान लो और किसी बासन में रखदो ।

इस घी को रोगी को पिलाते हैं, दाल रोटी और भात के साथ खिलाते हैं। अगर पिलाना हो, तो घी में तीन पाव मिश्री पीसकर मिला देनी चाहिये। जिन रोगियों को घी दे सकते हैं, उन्हें यह दवाओं से बना द्राक्षादि घृत खिलाना-पिलाना चाहिये। क्योंकि खाँसी वालों को अगर मामूली घी खिलाया जाता है; तो खाँसी बढ़ जाती है। जिस क्षय-रोगी को खाँसी बहुत ज़ोर से होती है, उसे मामूली घी नुक़सान करता है ; पर बिना घी दिये रोगी के अन्दर खुश्की बढ़ जाती है। अत: ऐसे रोगियों को यही घी पिलाना चाहिये। क्षय और खाँसी वालों को यह घी अमृत है। यह खुश्की मिटाता, खाँसी को आराम करता और पुष्टि करता है।

च्यवनप्राश अवलेह

१ बेल, २ अरणी, ३ श्योनाक की छाल ४ गंभारी, ५ पाढ़ल, ६ शाल-पर्णी ७ पृश्निपर्णी, ८ मुगवन, ९ माषपर्णी १० पीपर, ११ गोखरू, १२ बड़ी कटेरी, १३ छोटी कटेरी, १४ काकड़ासिंगी १५ भुईं आमला, १६ दाख, १७ जीवन्ती, १८ पोहकरमूल, १९ अगर २० गिलोय, २१ हरड़, २२ वृद्धि २३ जीवक, २४ ऋषभक २५ कचूर, २६ नागरमोथा, २७ पुनर्नवा २८ मेदा, २९ छोटी इलायची ३० नील कमल, ३१ लालचन्दन, ३२ विदारीकन्द, ३३ अडूसे की जड़, ३४ काकोली, ३५ काकजंघा, और ३६ बरियारे की छाल :—

इन ३६ दवाओं को चार-चार तोले लो और उत्तम आमले पाँच सौ नग लो। इन सब को ६५ सेर पानी में डालकर, क़लईदार बासन में औटाओ। जब १६ सेर पानी बाक़ी रहे, उतार कर काढ़ा छान लो।

इस के बाद, छानने के कपड़े में से आमलों को निकाल लो। फिर उन के बीज और ततूरे या रेशा निकालकर, उनको पहले २४ तोले

घी में भून लो। इस के बाद उन्हें फिर २४ तोले तेल में भूनलो और सिल पर पीसकर लुगदी बनालो।

अब अढ़ाई सेर मिश्री, ऊपर का छना हुआ काढ़ा और पीसे हुए आमलों की लुगदी—इन सब को क़लईदार बासन में मन्दाग्नि से पकाओ। जब पकते-पकते और घोटते-घोटते लेह के जैसा यानी चाटने लायक़ हो जाय, उतार कर नीचे रखो।

फिर तत्काल वंसलोचन १६ तोले, पीपर ८ तोले, दालचीनी २ तोले, तेजपात २ तोले, इलायची २ तोले और नागकेशर २ तोले—इन छहों को पीस-छान कर उस में मिला दो। जब शीतल हो जाय, उस में २४ तोले शहद भी मिला दो और घी के चिकने बर्तन में रख दो।

इसकी मात्रा ६ माशे से दो तोले तक है। इसे खाकर ऊपर से बकरी का दूध पीना चाहिये। कमज़ोर को ६ माशे सवेरे और ६ माशे शाम को चटाना चाहिये। कोई-कोई इस पर गायका गरम दूध पीने की भी राय देते हैं।

इस के सेवन करने से विशेष कर खाँसी और श्वास नाश होते हैं; क्षतक्षीण, बूढ़े और बालक की अग्नि वृद्धि होती है; स्वरभंग, छाती के रोग, हृदयरोग, वातरक्त, प्यास, मूत्रदोष और वीर्य-दोष नाश होते हैं। इस के सेवन करने से ही महावृद्ध व्यवन ऋषि जवान, बलवान और रूपवान हुए थे। यह कमज़ोर और धातुक्षीणवाले स्त्री-पुरुषों के लिए अमृत-समान है। जो इस को बुढ़ापे की लैन-डोरी आते ही सेवन करता है, वह जवान-पट्ठा हो जाता है। इसकी कृपासे उसकी स्मरण-शक्ति, कान्ति, आरोग्यता, आयु और इन्द्रियों की सामर्थ्य बढ़ती, स्त्री-प्रसंग में आनन्द आता, शरीर सुन्दर होता और भूख बढ़ती है।

बृहत् वासावलेह।

—:+—

अडूसे की जड़ की छाल १२॥ सेर लाकर ६४ सेर पानी में डाल कर पकाओ, जब चौथाई या १६ सेर पानी बाक़ी रहे, उतार कर छान

लो । फिर उस में १२ सेर चीनी और त्रिकुटा, दालचीनी, तेजपात, इलायची, कायफल, नागरमोथा, कूट, कमीला, सफेद ज़ीरा, काला ज़ीरा, तेवड़ी, पीपरामूल, चव्य, कुटकी, हरड़, तालीसपत्र और धनिया—इन में से हरेक का चार-चार तोले पिसा-छना चूर्ण मिला कर पकाओ और घोटो, जब अवलेह की तरह गाढ़ा होने पर आवे, उतार कर शीतल कर लो । जब शीतल हो जाय, उस में एक सेर शहद मिला दो । इस की मात्रा ६ माशे से १ तोले तक है । अनुपान—गरम जल है । इसके सेवन करने से राजयक्ष्मा, स्वरभंग, खाँसी और अग्निमान्द्य आदि रोग नाश होते हैं ।

वासावलेह

अडूसे का स्वरस १ सेर, सफेद चीनी ६४ तोले, पीपर ८ तोले और घी ३२ तोले,—इन सब को एक क़लईदार बासन में डाल कर, मन्दाग्नि से पकाओ । जब पकते-पकते अवलेह के समान हो जाय, उतार लो । जब खूब शीतल हो जाय, ३२ तोले शहद मिला कर किसी अमृतबान में रख दो । इस के सेवन करने से राजयक्ष्मा, श्वास, खाँसी, पसली का दर्द, हृदय का शूल, रक्तपित्त और ज्वर ये रोग नाश होते हैं ।

कर्पूराद्य चूर्ण ।

कपूर, दालचीनी, कंकोल, जायफल, तेजपात और लौंग प्रत्येक एक-एक तोले, बालछड़ २ तोले, गोलमिर्च ३ तोले, पीपर ४ तोले, सोंठ ५ तोले और मिश्री २० तोले—सब को एकत्र पीस कर कपड़े में छान लो ।

यह चूर्ण हृदय को हितकारी, रोचक, क्षय, खाँसी, स्वरभंग, क्षीणता, श्वास, गोला, बवासीर, वमन और कण्ठ के रोगों को नाश करता है । इस को सब तरह के खाने-पीने के पदार्थों में मिला कर

रोगी को देना चाहिये । जो लोग दवा के नाम से चिढ़ते हैं, उन के लिए यह अच्छा है ।

षडंग यूप ।

जौ ४ तोले, कुल्थी ४ तोले और बकरे का चिकना मांस १६ तोले इन सब को अठगुने या १९२ तोले (२ सेर डेढ़पाव) जल में पकाओ । जब पकते-पकते चौथाई पानी रहजाय, चार तोले घी डालकर बघार दे-दो । फिर इसमें १ तोले सेंधानोन, ज़रासी हींग, थोड़ा-थोड़ा अनार और आमलों का स्वरस, ६ रत्ती पानी के साथ पिसी हुई सोंठ और छै ही रत्ती पानी के साथ पीसी हुई पीपर डाल दो । इसी मांस-रस का नाम "षडंगयूष" है । इस यूप के पीने से क्षय वाले के जुकाम या पीनस आदि सभी विकार नष्ट हो जाते हैं ।

चन्दनादि तैल ।
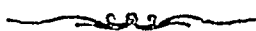
चन्दन, नख, मुलेठी, पद्माख, कमलकेशर, नेत्रवाला, कूट, छार-छरीला, मँजीठ, इलायची, पत्रज, बेल, तगर, कंकोल, ख़स, चीढ़, देव-दारु, कचूर, हल्दी, दारुहल्दी, सारिवा, कुटकी, लौंग, अगर, केशर, रेणुका, दालचीनी और जटामासी—इन सब को पहले हमामदस्ते में कूटलो । फिर कुटे हुए चूर्ण को सिल पर रख, पानी के साथ पीसकर लुगदी बनालो ।

पीपर-वृक्ष की लाख सवा सेर लाकर, पाँच सेर पानी में डालकर औटाओ । जब चौथाई या सवा सेर पानी रह जाय, उतार कर छानलो ।

अब एक क़लईदार कड़ाही में तीन सेर तिली का तेल, अढ़ाई सेर दही का तोड़, सवासेर लाख का छाना हुआ पानी और ऊपर की लुगदी रखकर मन्दाग्नि से पकाओ । आठ नौ घन्टे बाद जब पानी

और दही का तोड़ जलकर तेल मात्र रहजाय, उतार लो और छान-कर बोतल में भरदो ।

इस तेलकी नित्य मालिश कराने से ज्वर, यक्ष्मा, रक्तपित्त, उन्माद, पागलपन, मृगी, कलेजे की जलन, सिर का दर्द और धातु के विकार नाश होकर शरीर की कान्ति सुन्दर होती है। जीर्णज्वर और यक्ष्मा पर कितनी ही बार आज़मायश की है। परीक्षित है।

नोट—जब झाग उठने लगें तब घी को पका समझो और जब झाग उठकर बैठ जायँ, झागों का नाम न रहे, तब समझो कि तेल पक गया। यह चन्दनादि तैल क्षय और जीर्ण ज्वर पर खासकर फायदेमन्द है। शरीर पुष्टि करने वाला चन्दनादि तैल हमने "स्वास्थ्यरक्षा" में लिखा है।
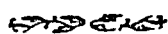
लाक्षादि तल ।

इस तैल की मालिश से जीर्णज्वरी और क्षय-रोगी को बड़ा फायदा होता है। प्रत्येक ग्रन्थ में इसकी तारीफ लिखी है और परीक्षा में भी ऐसा ही साबित हुआ है। इस के बनाने की विधि "चिकित्सा-चन्द्रोदय" दूसरे भाग के पृष्ठ ३६४ में लिखी है। यद्यपि उस विधि से बनाया तेल बहुत गुण करता है, पर उस के तैयार करने में समय ज़ियादा लगता है; इस लिये एक ऐसी विधि लिखते हैं, जिस से १२ घन्टे में ही लाक्षादि तैल तैयार हो जाता है।

पीपल की लाख एक सेर लाकर चार सेर पानी में डाल कर औटाओ। जब एक सेर या चौथाई पानी बाक़ी रहे, उतार कर छान लो। फिर उस छने हुए पानी में काली तिली का तेल १ सेर और गाय के दही का तोड़ ४ सेर मिला दो।

इन सब कामों से पहले ही या लाख को चूल्हे पर रख कर, सौंफ, असगन्ध, हल्दी, देवदारु, रेणुका, कुटकी, मरोड़फली, कूट, मुलेठी, नागर-मोथा, लाल चन्दन, रास्ना, कमलगट्टे की गरी और मँजीठ एक-एक तोले लाकर, सिल पर सब को पानीके साथ पीस कर लुगदी कर लो।

एक क़लईदार कड़ाही में, लाखके छने पानी, तेल और दहीके तोड़ को डालकर, इस लुगदी को भी बीच में रखदो और मन्दाग्नि से बारह घन्टे पकाओ। जब पानी और दही का तोड़ ये दोनों जल जायँ, केवल तेल रह जाय, उतार कर शीतल करलो और छानकर बोतलों में भरदो।

इस तेल के लगाने या मालिश कराने से जीर्णज्वर, विषमज्वर, तिजारी, खुजली, शरीर की बदबू और फोड़े-फुन्सी नाश हो जाते हैं। इस से सिर के दर्द में भी लाभ होता है। अगर गर्भिणी इस की मालिश कराती है, तो उसका गर्भ पुष्ट होता और हाथ पैरों की जलन मिटती है। यह तेल अपने काम में कभी फेल नहीं होता।

राजमृगाङ्क रस।

मारा हुआ पारा ३ भाग, सोनाभस्म १ भाग, ताम्बाभस्म १ भाग, शुद्ध मैनसिल २ भाग, शुद्ध गंधक २ भाग और शुद्ध हरताल २ भाग-- इन सब को एकत्र महीन पीस कर, एक बड़ी पीली कौड़ी में भर लो। फिर बकरी के दूध में पीसे हुए सुहागे से कौड़ी का मुँह बन्द कर दो। इस के बाद उस कौड़ी को एक मिट्टी के बर्तन में रख कर, उस बर्तन पर ढकना रख कर, उस का मुँह और दराज़ कपड़-मिट्टी से बन्द कर दो और सुखा लो।

अब एक गज़भर गहरा, गज़भर चौड़ा और उतना ही लम्बा गढ़ा खोदकर, उस में जंगली कण्डे भर कर, बीच में उस मिट्टी के बासन को रख दो और आग लगा दो। जब आग शीतल हो जाय, उस बासन को निकाल कर, उस की मिट्टी दूर कर दो और रस को निकाल लो। इसका नाम "राज मृगाङ्क रस" है। इसमें से चार रत्ती रस, नित्य, १८ कालीमिर्च, दस पीपर, ६ माशे शहद और १० माशे घी के साथ खाने से वायु और कफ-सम्बन्धी क्षय रोग तत्काल नाश हो जाता है।

अमृतेश्वर रस।
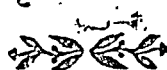
पाराभस्म, गिलोय का सत्त और लोह भस्म—इन को एकत्र मिला कर रख लो। इसीका नाम "अमृतेश्वर रस" है। इस में से २ से ६ रत्ती तक रस ना-बराबर घी और शहद में मिला कर नित्य चाटने से राज्ययक्ष्मा शान्त हो जाता है। यह योग "रसेन्द्रचिन्तामणि" का है।

कुमुदेश्वर रस।
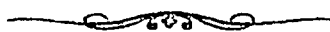
सोनाभस्म १ भाग, शुद्धपारा १ भाग, मोती २ भाग, भुना सुहागा १ भाग और गंधक १ भाग—इन को काँजी में खरल करके, गोला बना लो। गोले पर कपड़ा और मिट्टी लहेस कर उसे सुखा लो। फिर एक हाँडी में नमक भर कर, बीच में उस गोले को रख दो। इस के बाद हाँडी पर पारी रख कर, उस की सन्धि और मुँह बन्द करके, उसे चूल्हे पर चढ़ा दो और दिन भर नीचे से आग लगाओ। जब दिनभर या १२ घन्टे आग लग ले, उसे उतार कर शीतल कर लो। शीतल होने पर, उस में सिद्ध हुए रस को निकाल लो। इसी का नाम "कुमुदेश्वर रस" है।

इसकी मात्रा एक रत्तीकी है,अनुपान घी और काली मिर्च हैं। एक मात्रा खाकर, ऊपर से कालीमिर्च-मिला घी पीना चाहिये। इस के सेवन करने से अत्यन्त खानेवाला, प्रमेही, अतिसार-रोगी, नित्य प्रति क्षीण होनेवाला रोगी और जिस के नेत्र सफेद हो गये हों ऐसा मनुष्य, खाँसी और क्षय रोगवाला रोगी निश्चयही आराम होते हैं।

मृगाङ्क रस।

शुद्ध पारा १ तोले, सोनाभस्म ३ तोलेऔर सुहागे की खील २ माशे—इन सब को काँजी में पीस कर और गोला बना कर सुखा लो। फिर

उसे मूष में रख कर वन्द कर दो। इस के वाद, एक हाँडी में नमक भर कर, उस के वीच में दवाओं के गोले वाली मूष रख कर, हाँडी पर ढकना देकर, हाँडी की सन्धें और मुख वन्द कर दो। फिर आग पर चढ़ाकर ४ पहर तक पकाओ। पीछे उतार कर शीतल कर लो। इस की मात्रा २ से ४ रत्ती तक है। एक मात्रा रस को शहत में मिला-कर, उस में १० कालीमिर्चे या १० पीपर पीस कर मिला दो और चाटो। इस रस से राजयक्ष्मा और उस के उपद्रव नाश होते हैं।

महामृगाङ्क रस।

सोनाभस्म १ भाग, पाराभस्म २ भाग, मोती-भस्म ३ भाग, शुद्ध गंधक ४ भाग, सोनामक्खी की भस्म ४ भाग, मूँगा भस्म ७ भाग और सुहागे की खील ४ भाग,—इन सब को शर्वती नीबू के रस में ३ दिन तक खरल करो और गोला वना कर तेज़ धूप में सुखा लो। सूखने पर उस गोले को मूष में रख कर वन्द करो। फिर एक हाँडी में नमक भर कर, उस के वीच में मूष को रख कर, हाँडी का मुख अच्छी तरह वन्द कर दो और हाँडी को चूल्हे पर चढ़ा १२ घन्टों तक वरावर आग लगने दो। इस के वाद उतार कर शीतल कर लो। इस की मात्रा २ रत्ती की है। अनुपान गोल मिर्चे और घी अथवा पीपलों का चूर्ण और घी। इस के सेवन करने से राजयक्ष्मा, ज्वर, अरुचि, वमन, स्वरभंग और खाँसी प्रभृति रोग आराम होते हैं।
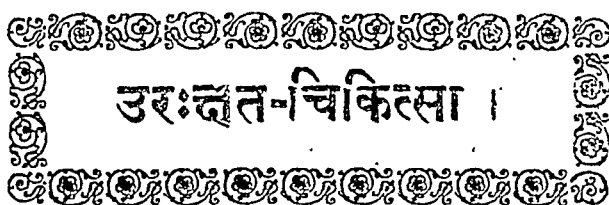
उरःक्षत-चिकित्सा।

१ एलादि गुटिका।

छोटी इलायचीके वीज, तेजपात, दालचीनी, मुनक्का और पीपर दो-दो

तोले तथा मिश्री, मुलेठी, खजूर और दाख—चार-चार तोले लेकर सब को महीन पीस-छानकर, खरल में डाल कर और ऊपर से शहद दे-देकर घोटो। जब घुटजाय, एक-एक तोले की गोलियाँ बनालो। इन में से अपने बलाबल अनुसार एक या आधी गोली नित्य खाने से खाँसी, श्वास, ज्वर, हिचकी, वमन, मूर्च्छा, नशा सा बना रहना, भौंर आना, खून थूकना, प्यास, पसली का दर्द, अरुचि, तिल्ली, आमवात, स्वर-भंग, क्षय और राजरोग आराम हो जाते हैं। ये गोलियाँ वीर्य बढ़ानेवाली और रक्तपित्त नाश करनेवाली हैं। परीक्षित हैं। उरःक्षत वाले इन्हें जरूर सेवन करें।

नोट—हम इन गोलियों को छै-छै माशे की बनाते हैं और उरःक्षत वाले को दोनों समय खिला कर ऊपर से बकरी का ताजा दूध मिश्री मिलाकर पिलाते हैं।

२ दूसरी एलादि गुटिका

इलायची के बीज ६ माशे, तेजपात ६ माशे, दालचीनी ६ माशे, पीपर २ तोले, मिश्री ४ तोले, मुलेठी ४ तोले, खजूर या छुहारे ४ तोले और दाख ४ तोले,—इन सबको महीन पीस-छानकर, शहद मिलाकर, एक-एक तोले की गोलियाँ बनालो। इन में से एक गोली नित्य खाने से पहली एलादि गुटिका में लिखे हुए सब रोग नाश होते हैं। यह वटी उरःक्षत पर प्रधान है। कामी पुरुषों के लिए परम हितकारी है।

नोट—राजयक्ष्मा को हिकमत में तपेदिक या दिक कहते हैं और उरःक्षत को सिल कहते हैं। इनमें बहुत थोड़ा फर्क है। उरःक्षत में हृदय के भीतर जख्म हो जाता है, जिससे खखार के साथ खून या मवाद आता है, ज्वर चढ़ा रहता है, खाँसी आती रहती है और रोगी को ऐसा मालूम होता है, मानों कोई उसकी छाती को चीरे डालता है।

३ बलादि चूर्ण।

खिरेंटी, असगन्ध, कुम्भेर के फल, शतावर और पुनर्नवा—इन को दूध में पीसकर नित्य पीनेसे उरःक्षत-शोष नाश हो जाता है।

४ द्राक्षादि घृत।

बड़ी-बड़ी काली दाख ६४ तोले और मुलहठी ३२ तोले,—इन को साफ पानी में पकाओ। जब पकते-पकते चौथाई पानी रहजाय, उस में मुलहटी का चूर्ण ४ तोले, पिसी हुई दाख ४ तोले, पीपरों का चूर्ण ८ तोले और घी ६४ तोले—डाल दो और चूल्हे पर चढ़ाकर मन्दाग्नि से पकाओ। ऊपर से चौगुना गायका दूध डालते जाओ। जब दूध और पानी जलकर घी मात्र रह जाय, उतार कर छान लो। फिर शीतल होने पर, इसमें ३२ तोले सफेद चीनी मिला दो। यही "द्राक्षादि घृत" है। इस घी के पीने से उरःक्षत रोग निश्चय ही नाश होजाता है। इससे ज्वर, श्वास, प्रदर रोग-हलीमक रोग और रक्तपित्त भी नाश हो जाते हैं।

नोट—हम यक्ष्मा-चिकित्सामें भी "द्राक्षादिघृत" लिख आये हैं। दोनों एक ही हैं। सिर्फ बनाने के ढँग में फर्क है। यह शास्त्रोक्त विधि है। वह हमारी अपनी परीक्षित विधि है।

उरःक्षत पर ग़रीबी नुसख़े।
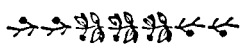
(५) धान की खील ६ माशे लेकर, गायके आधपाव कच्चे दूध और ६ माशे शहद में मिलाकर पीओ और दो घण्टे बाद फिर गायका कच्चा दूध एक पाव मिश्री मिलाकर पीओ। इस नुसखे से उरःक्षत या सिल रोग में लाभ होता है। परीक्षित है।

(६) पोस्ते के दाने ३ तोले और ईसबगोल १ तोले,—दोनों को मिला कर आध सेर पानी में काढ़ा बनाओ। जब पाव-भर काढ़ा रह जाय, छान लो और क़लईदार बर्तन में डाल दो। ऊपर से मिश्री आध सेर, ख़सख़स ६ माशे, और बबूल का गोंद ६ माशे पीसकर मिला दो। शेष में, इसे आग पर थोड़ी देर पकाओ और उतार कर बोतल में भर कर काग लगा दो। इसमें से एक तोले भर दवा नित्य खाने से

उरःक्षत या सिल का रोग अवश्य नाश हो जाता है। परीक्षित है।

(७) ६।७ माशे मुलतानी मिट्टी महीन पीस कर सवेरे ही पानी के साथ कुछ दिन खाने से उरःक्षत या सिल रोग जाता रहता है। परीक्षित है।

(८) पीपर की लाख ३ या ६ माशे महीन पीस कर, शहद में मिला कर, खाने से उरःक्षत रोग नाश हो जाता है। कई बार का परीक्षित नुसख़ा है।

(९) एक माशे लाल फिटकरी महीन पीस-छान कर ठण्डे पानी के साथ फाँकने से उरःक्षत और मुँह से खखार के साथ खून आना बन्द हो जाता है। मुँह से खून आना बन्द करनेकी यह आज़मूदा दवा है।

नोट—अगर खखारके साथ मुँह से खून आवे, तो हृदय की गरमी से समझो। अगर बिना खखार के अकेला ही मुख से खून आवे, तो मस्तिष्क या भेजे के विकार से समझो। अगर खाँसी के साथ खून आवे, तो कलेजे में विकार समझो।

(१०) अगर उरःक्षत रोगी को खून की कय होती हों और खून आना बन्द न होता हो, तो दो तोले फिटकिरी को महीन पीसकर, एक सेर पानीमें घोल लो और ऊपरसे पानी की बर्फ भी मिला दो। इस पानीमें एक कपड़ा भिगो-भिगोकर रोगी की छाती पर रखो। जब पहला कपड़ा सूख जाय, दूसरा भिगोकर रखो। साथ ही बिहीदाने के लुआब में मिश्री मिलाकर, उसमें से थोड़ा-थोड़ा यही लुआब रोगी को पिलाते रहो। जब तक खून आना बन्द न हो, यह क्रिया करते रहो। बदन पर "नारायण तेल" या "माषादि तैल" की मालिश भी कराते रहो। तेल की मालिश से सरदी पहुँचने का खटका न रहेगा। एक काम और भी करते रहो, रोगी के सिर पर "चमेली का तेल" लगवाकर सिर को गुलाब-जलसे धो दो और सिर पर ख़स या कपड़े के पंखे की हवा करते रहो, ताकि रोगी बेहोश न हो। इस उपाय से अनेक बार उरःक्षत वालों का मुँह से खून आना बन्द किया है। परीक्षित है।

(११)अगर ऊपर की दव का भिगोया कपड़ा छाती पर रखने से लाभ न हो—खून बन्द न हो, तो सफ़ेद चन्दन, लालचन्दन, धनिया, खस, कमलगट्टे की गरी, शीतल मिर्च (कबावचीनी), सेलखड़ी, कपूर, कलमी-शोरा और फिटकरी—इन दसों को महीन पीस कर,सेर डेढ़ सेर पानी में घोल दो और उसी में कपड़ा भिगो-भिगो कर छाती पर रखो। बीच-बीच में दूध और मिश्री मिलाकर पिलाते रहो। अगर इस दवा से भी लाभ न हो, तो "इलाजुल गुर्बा" की नीचेकी दवा से काम लो।

(१२)बबूलकी कोंपल १ तोले, अनार की पत्तियाँ १तोले, आमले १ तोले और धनिया ६ माशे—इन सबको रातके समय शीतल जल में भिगो दो। सवेरे ही मल छान कर, इस में थोड़ी सी मिश्री मिला दो। इस में से थोड़ा-थोड़ा पानी दिन में तीन चार बार पिलाने से अवश्य मुँह से खून आना बन्द हो जायगा। परीक्षित है।

(१३)अगर ऊपर की दवा से भी लाभ न हो,तो "गुल ख़ैरु" एक तोले भर, रातके समय, थोड़े से पानी में भिगो दो और सवेरे ही मल-छान कर रोगी को पिला दो। इस नुसख़े से अन्तमें ज़रूर फायदा होता है।

(१४)गिलोय एक तोले और अडूसे की पत्तियाँ १ तोले—इन दोनों को औटाकर छानलो और फिर समग़ अरबी ८ माशे पीस कर मिला दो और पिलाओ। इस नुसखे से भी खून थूकना बन्द हो जाता है।

(१५)८० माशे चूके के बीज, पुराना धनिया ८ माशे,कतीरा ४ माशे, समग अरबी ४ माशे, सहँजना ४ माशे और माजूफल ४ माशे—इनको पीस-कूट कर टिकिया बनालो। इस में से आठ माशे खाने से खून थूकना बन्द हो जाता है।

नोट—अगर रोगी को दस्त भी लगते हों और दस्त बन्द करने की जरूरत हो, तो इस नुसखे में अढ़ाई रत्ती 'शुद्ध अफीम' और मिला देनी चाहिये।

(१६)समग़ अरबी, मुलतानी मिट्टी और कतीरा—बराबर-बराबर लेकर महीन पीस लो। फिर इस में से सात माशे चूर्ण ख़शख़ाश और

अदरख के रस में मिला कर पीओ। इस उपाय से भी खून थूकना आराम हो जाता है।

(१७) अड़ूसे की सूखी पत्ती ६ माशे महीन पीस कर और शहद में मिला कर खाने से मुँह से खून थूकना अवश्य आराम होता है। परीक्षित है।

नोट—अगर अड़ूसे की पत्तियाँ गीली हों, तो १ तोले लेनी चाहियें।

(१८) पानी में पीसी हुई गोभी चार माशे खाने से खून थूकना आराम होता है। इस से खूनकी कय भी बन्द हो जाती हैं।

(१९) थोड़ी-थोड़ी अफीम खाने से भी खून थूकना बन्द हो जाता है।

नोट—तोरई, कद्दू, पालक का साग, खुरफा, लाल साग, छिले हुए मसूर, कचनार और उसकी कोंपलें—ये सब खून थूकने को बन्द करते हैं।

(२०) संग ज़राहत, ज़हर मुहरा, सफेद कत्था, कतीरा, समग़ अरबी, निशास्ता, सफेद ख़शख़ाश, ख़तमी के बीज और गेरू—प्रत्येक चार-चार माशे और अफीम १ माशे—इन दसों दवाओं को कूट-छान कर गोलियाँ बनालो। इन गोलियों से सिल या उरःक्षत रोग आराम हो जाता है। दो तीन बार परीक्षा की है।

नोट—अगर ज्वर तेज हो, तो इस नुसखे में रोगी के मिजाज को देखकर थोड़ा सा कपूर भी मिलाना चाहिये। कपूर के मिलाने से ज्वर जल्दी घटता है। अगर रोगी के मरने का भय हो, तो वासलीककी फस्त खोल देनी चाहिये। फिर उसके बाद ज्वर और खाँसी की दवा करनी चाहिये। अगर मुँह से ख़ून आता हो, तो छाती पर दवा के पानी में भीगे कपड़े रखकर या गुलखैरू आदि पिलाकर पहले ख़ून बन्द कर देना चाहिये। जब तक ख़ून बन्द न हो जाय "ऐलाद्रिनटी" वग़ैरः कोई मुख्य दवा न देनी चाहिये और खाने को भी दूध मिश्री, दूध का सा दाना या दूध भात के सिवाय और कुछ न देना चाहिये। ज्योंही ख़ून बन्द हो जाय, जो दवा उचित समझी जाय देनी चाहिये।

(२१) गेंगटे या केंकड़े की राख ४० माशे, निशास्ता ८ माशे, सफेद ख़शख़ाश ८ माशे, काली ख़शख़ाश ८ माशे, साफ किये हुये खुरफे के बीज १२ माशे, छिली हुई मुलहटी १२ माशे, छिले हुए ख़तमी के बीज १२

व्रणशोष की चिकित्सा

इस रोगी को चिकने, अग्नि को दीपन करनेवाले, मीठे, शीतल, ज़रा-ज़रा खट्टे यूष और मांस-रस आदि खिला-पिलाकर चिकित्सा करनी चाहिये ।

उरःक्षत में पथ्यापथ्य ।

उरःक्षत रोगी के पथ्यापथ्य ठीक व्यायाम शोष की चिकित्सा में लिखे अनुसार हैं ।

यक्ष्मा रोग में पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

मदिरा—शराब, जंगली जानवरों का सूखा मांस, मूँग, साँठी-चाँवल, गेहूँ, जौ, शालि चाँवल, लाल चाँवल, बकरे का मांस, मक्खन, दूध, घी, कच्चा मांस खानेवाले पक्षियों का मांस, सूर्य की तेज़ किरणों और चन्द्रमा की किरणों से तपे हुए और शीतल लेह्य—चाटने के पदार्थ, विना पके मांसका चूरा, गरम मसाला, चन्द्रमा की किरण, मीठे रस, केले की पकी गहर, पका हुआ कटहल, पका आम, आमले, खजूर, छुहारे, पुहकरमूल, फालसे, नारियल, सहँजना, ताड़के ताज़ा फल, दाख, सौंफ, सेंधानोन, गाय और भैंस का घी, मिश्री, शिखरन, कपूर, कस्तूरी, सफेद चन्दन, उबटन, सुगन्धित वस्तुओं का लेप, स्नान, उत्तम गहने, जलक्रीड़ा, मनोहर स्थान में रहना, फूलों की माला, कोमल सुगन्धित हवा, नाच, गाना, चन्द्रमा की शीतल किरणों में विहार, वीणा आदि वाजों की आवाज़, हिरन के जैसी आँखों वाली स्त्रियों को देखना, सोने, मोती और जवाहिरात के गहने पहनना, दान-पुण्य करना और दिल खुश रखना—ये सब क्षय रोगी को हितकारी हैं ।

(२४) अगर सूजन गरमी से हो, तो तेजपात ३ माशे, कपूर ३ माशे, रूमी मस्तगी ३ माशे, गेरू ६ माशे, गुलाबके फूल ६ माशे, गुलब-नफ़शा ६ माशे, सफेद चन्दन ६ माशे और सूखा धनिया ६ माशे—इन सबको खूब महीन पीसकर, दिन में चार-पाँच बार यकृत पर लेप करो।

छहों प्रकार के शोष रोगों की चिकित्सा-विधि ।

व्यवाय शोष की चिकित्सा

ऐसे रोगी का मांसरस, मांस और घी मिले भोजन तथा मधुर और अनुकूल पदार्थों से उपचार करना चाहिये ।

शोक शोष की चिकित्सा

शोक शोष वाले का हर्ष बढ़ाने वाले और शोक मिटाने वाले पदार्थों, से उपचार करो । उसे धीरज बँधाओ, दूध-मिश्री पिलाओ तथा चिकने, मीठे, शीतल, अग्निदीपक और हलके भोजन दो ।

व्यायाम शोष की चिकित्सा

व्यायाम शोष वाले को चिकने, शीतल, दाह-रहित, हितकारक, हल्के पदार्थ देने चाहियें । शोक, क्रोध, मैथुन, पर-निन्दा, द्वेषबुद्धि आदिको त्याग देने और शान्ति तथा सन्तोष धारण करने की सलाह देनी चाहिये । इस रोगी को शीतल और कफ बढ़ानेवाले बृंहण पदार्थों से चिकित्सा करनी चाहिये ।

अध्वशोष की चिकित्सा

ऐसे मनुष्य को उत्तम मुलायम आसन, गद्दी या पलँग पर बिठाना चाहिये, दिन में सुलाना चाहिये, शीतल, मीठे और पुष्टिकारक अन्न और मांसरस खाने को देने चाहियें ।
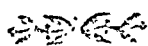
व्यायामशोष की चिकित्सा

इस रोगी को चिकने, अग्नि को दीपन करनेवाले, मीठे, शीतल, ज़रा-ज़रा खट्टे यूष और मांस-रस आदि खिला-पिलाकर चिकित्सा करनी चाहिये ।

उरःक्षत में पथ्यापथ्य ।

उरःक्षत रोगी के पथ्यापथ्य ठीक व्यायाम शोष की चिकित्सा में लिखे अनुसार हैं ।

यक्ष्मा रोग में पथ्यापथ्य ।

पथ्य ।

मदिरा—शराब, जंगली जानवरों का सूखा मांस, मूँग, साँठी-चाँवल, गेहूँ, जौ, शालि चाँवल, लाल चाँवल, बकरे का मांस, मक्खन, दूध, घी, कच्चा मांस खानेवाले पक्षियों का मांस, सूर्य की तेज़ किरणों और चन्द्रमा की किरणों से तपे हुए और शीतल लेह्य—चाटने के पदार्थ, बिना पके मांसका चूरा, गरम मसाला, चन्द्रमा की किरण, मीठे रस, केले की पकी गहर, पका हुआ कटहल, पका आम, आमले, खजूर, छुहारे, पुहकरमूल, फालसे, नारियल, सहँजना, ताड़के ताज़ा फल, दाख, सौंफ, सेंधानोन, गाय और भैंस का घी, मिश्री, शिखरन, कपूर, कस्तूरी, सफ़ेद चन्दन, उबटन, सुगन्धित वस्तुओं का लेप, स्नान, उत्तम गहने, जलक्रीड़ा, मनोहर स्थान में रहना, फूलों की माला, कोमल सुगन्धित हवा, नाच, गाना, चन्द्रमा की शीतल किरणों में विहार, वीणा आदि बाजों की आवाज़, हिरन के जैसी आँखों वाली स्त्रियों को देखना, सोने, मोती और जवाहिरात के गहने पहनना, दान-पुण्य करना और दिल खुश रखना—ये सब क्षय रोगी को हितकारी हैं।

जो रोगी अधिक दोषों वाला पर बलवान हो, उसे हलका जुलाब देकर दवा सेवन करानी चाहिये ।

जिस क्षय वाले का मांस सूखा जाता हो, उसे केवल मांस खाने वाले जानवरों का मांस ज़ीरे के साथ खिलाना चाहिये । शाम-सवेरे हवा खिलानी चाहिये । दवाओं के बने हुए "चन्दनादि तैल" या "लाक्षादि तैल" वगैरः में से किसी की मालिश करवा कर शीतकालमें गरम जल से और गरमी में शीतल जल से स्नान करना चाहिये । गरमी की ऋतु में छत पर, जाड़े में पटे हुए मकान में और वर्षाकाल में हवादार कमरे में सोना चाहिये, फूलमाला पहननी चाहिएँ और रूपवती स्त्रियों से मन प्रसन्न करना चाहिये ; पर मैथुन न करना चाहिये ।

अपथ्य

ज़ियादा दस्तावर दवा खाना, मलमूत्र आदि वेग रोकना, मैथुन करना, पसीना निकालना, नित्य सुर्मा लगाना, बहुत जागना, अधिक मिहनत करना; बाजरा, ज्वार, चना, अरहर आदि रूखे अन्न खाना; एक खाना पचे बिना दूसरा खाना खाना, अधिक पान खाना, लहसन, सेम, ककड़ी, उड़द, हींग, लाल मिर्च, खटाई, अचार, पत्तों का साग, तेल के पदार्थ, रायता, सिरका, बहुत कड़वे पदार्थ, क्षार पदार्थ, स्वभाव-विरुद्ध भोजन, कुंदरु और दाहकारी पदार्थ—ये सब पदार्थ भी अपथ्य हैं ।
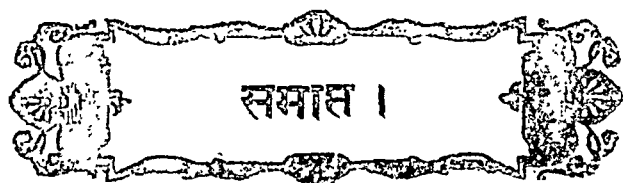
स्वास्थ्यरक्षा और चिकित्सा चन्द्रोदय आदि ग्रन्थोंके लेखक, वयोवृद्ध बाबू हरिदासजीकी तीस बरस की हजारों बार आजमाई हुई, कभी भी फेल न होनेवाली औषधियाँ।

(सिर्फ गरमी के मौसममें मिलता है।)

इस चूर्णके सेवनसे तत्कालही जो विचित्र तरी आती है, उसे यह बेचारी जड़ क़लम लिखकर बता नहीं सकती। यह अनेक शीतल, खुशबूदार और दिलदिमाग़में तरी लानेवाली दवाओंसे बनाया गया है। इसको नियमसे पीनेवाले को लूह लगने या हैज़ा होनेका डर तो सुपने में भी नहीं रहता। इससे धातुपर तरी पहुँचती है। यह गर्म मिज़ाज यानी पित्त प्रकृतिके लोगों को दस्त साफ लाता और भाँग पीनेवालोंको उष्ण वात (गरम वायु) की बीमारी नहीं होने देता। औरतोंको इसके पिलानेसे उनका मासिक धर्म ठीक महीनेमें होने लगता है। यह खूनकी कमीवेशीको ठीक करता और जिनका मासिक धर्म गर्मीसे बन्द हो गया है, उनका मासिक धर्म खोल देता है। भाँगपीने वाले इसे भाँगमें मिला कर पी सकते है, क्योंकि इसमें नमकीन चीज़ें नहीं हैं। रोगी इसे यदि घोटकर पिये, तो बिना परहेज़ रहने से भी आँखों की जलन, माथेकी घुमरी, चक्कर आना, आँखोंके सामने अँधेरा रहना, हाथपैरके तलवे जलना, दस्त-पेशाब जलकर होना, बदनका बिना बुखार गर्म रहना, नाक या मुँहसे खून जाना वगैरः गर्मी और ऊष्णवातकी ऊपर लिखी

सारी शिकायतें रफ़ा हो जाती हैं। इसके समान शीतल दवा और कहीं नहीं है। ग़रीब अमीर सब पी सकें और अपनी गृहलक्ष्मियोंको भी पिला सकें, इस कारण हमने इसका दाम घटाकर केवल १) लागत मात्र कर दिया है।

क्षुधासागर चूर्ण।

यह चूर्ण इतना तेज़ है, कि पेटमें पहुँचतेही अजीर्णकी तो गिन्तीही नहीं, पत्थरको भी भस्म कर देता है। भूख लगाने, खाना हज़म करने, और दस्तको क़ायदे से लानेमें यह चूर्ण अपना सानी नहीं रखता; औरतें इसे ख़ूब पसन्द करती हैं। इतने गुणकारक स्वादिष्ट चूर्ण की एक शीशीका दाम हमने केवल १) रक्खा है। एक शीशीमें ३० ख़ूराक चूर्ण है। घरमें लेजाकर रखनेसे समय पर यह वैद्यका काम देता है।

हिंगाष्टक चूर्ण।

इस चूर्णके खानेसे भोजन पर रुचि होती है, भूख बढ़ती है, खाना हज़म होता और पेट हलका रहता रहता है। भूख बढ़ानेमें तो यह चूर्ण रामबाण ही है। सुस्वादु भी ख़ूब है। दाम १ शीशीका ॥।) आना।

क्षारादि चूर्ण।

इसके सेवन से अजीर्ण तो तत्कालही भस्म हो जाता है। अम्ल-पित्त, खट्टी डकार आना, वमन या कय होना, जी मिचलाना, गलेमें कफ़ सूखकर लिपट जाना, गला और छाती जलना आदि रोग आराम करनेमें यह अक्सीर का काम करता है। कई प्रकारके स्वदेशी क्षारोंसे यह चूर्ण बनता है। खानेकी तरकीब डिब्बी पर छपी है। दाम १ शीशीका ॥।) आना।

उदरशोधन चूर्ण।

आजकल कलकत्ता-बम्बईमें क़रीब-क़रीब १०० में से ९० आदमि-

योंको दस्त साफ़ न होने की शिकायत बनी रहती है। इसके लिये लोग मारे-मारे फिरते हैं। ज़रासी बातको विदेशी दवा लेकर अपने धन-धर्म्मको जलाञ्जलि दे बैठते हैं।

यह चूर्ण रातको फाँक कर सोजाने से सवेरे एक दस्त ख़ूब साफ हो जाता और भूख खुलती है। दस्त साफ़ रहनेसे कोई और रोग भी नहीं होता। खानेमें दिक़्क़त नहीं। परहेज़ की ज़रूरत नहीं। दाम १० खुराक की शीशी का ॥≈) आना मात्र है।

प्रदरान्तक चूर्ण।

अजीर्ण, गर्भपात, अतिमैथुन, अत्यन्त भोजन, दिनमें सोने और सोच करनेसे स्त्रियोंको चार प्रकारका प्रदर रोग होता है। इसमें गुप्त स्थान से लाल, पीला, काला, मांसके धोवनके समान जल बहता है। इसका इलाज न होनेसे औरतोंको बहुमूत्र रोग हो जाता है। फिर वे बेचारी शर्म-ही-शर्ममें अपने प्यारे माँ बाप, भाई-बन्धु व पतिको रोता-कलपता छोड़ यमसदन को सिधार जाती हैं। इसवास्ते इस रोगके इलाजमें ढिलाई करना नादानी है। हमारा आज़मूदा प्रदरान्तक चूर्ण, पथ्यसहित कुछ दिन सेवन करनेसे, चारों प्रकारके प्रदरोंको इस तरह नाश करता है; जैसे सूर्य्य भगवान् अन्धकारका नाश करते हैं। दाम १ शीशीका १॥)

सर्वसोज़ाकनाशक चूर्ण।

यह चूर्ण पेशाबके समस्त रोगों पर रामबाण का काम करता है। इसको विधानपत्रानुसार सेवन करनेसे पेशाब की जलन, पेशाबका बूँद बूँद होना, पेशाबके साथ खून या पीप आना, धोती में पीला-पीला दाग़ लगना, पेड़ूका भारी रहना, बालकोंका पेशाब चूनासा जम जाना, पेशाब बन्द हो जाना, पेशाब मट-मैला, गदला या तेल सा होना अथवा गर्म होना आदि समस्त पेशाब की बीमारियाँ इस चूर्णसे निस्सन्देह नाश हो जाती है। जिनका सोज़ाक पुराना पड़ गया हो—कभी-कभी पेशाब बन्द हो जाता हो—मूत्रमार्ग सकड़ा हो जानेसे सलाई फिराने

की ज़रूरत पड़ती हो, वह घबरावें नहीं और लगातार इस चूर्ण को सेवन करें ; निस्सन्देह उनकी इच्छा पूरी होगी। इस चूर्णके सेवनसे अधिक प्यासका लगना भी मिट जाता है। पेशाबके रोगियोंको यह चूर्ण दूसरा अमृत है। एक शीशी सेवन करते-करते ही लोग खुद तारीफ़के दरिया बहाने लगते हैं। दाम १ शीशी ३)

अकबरी चूर्ण।

यह अमृत-समान चूर्ण दिल्लीके बादशाह अकबर के लिये उस ज़मानेके हकीमोंने बनाया था। क़लममें ताक़त नहीं जो इस चूर्ण के पूरे गुण लिख सके। यह चूर्ण खानेमें दिल-खुश और सुस्वाद है, अग्नि को जगाता और भोजनको पचाता है। कैसाही अधिक खाना खा लीजिये, फिर पेट ख़ाली का ख़ाली हो जायगा। अजीर्ण (बदहज़मी) को पेटमें जातेही भस्म कर देता है। खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, उल्टी होना, पेट भारी रहना, पेट की हवा न खुलना, पेट या पेड़ूका कड़ा रहना, पेटमें गोला सा बना रहना, पाखाना साफ न होना आदि पेटके सारे रोगोंके नाश करनेमें रामबाण या विष्णु भगवान्‌का सुदर्शन चक्र है। दाम छोटी शीशीका ॥) बड़ीका १) है।

नवाबी दन्तमञ्जन।

इस मञ्जनको रोज़ दाँतोंमें मलनेसे दाँतोंसे खून आना, मसूड़े फूलना, मुँहमें बदबू आना, दाँतोंमें दर्द होना या कीड़ा लगना आदि समस्त दन्तरोग आराम हो जाते हैं। हिलते हुए दाँत वज्रके समान मज़बूत होकर मोतीकी लड़ी के समान चमकने लगते हैं। बादशाही ज़मानेमें नवाब और बादशाह इसे लगाया करते थे, इसीसे इसका नाम नवाबी दन्तमञ्जन है। दाम १ शी० ॥)

भोजन सुधाकर मसाला।

यह मसाला खानेमें निहायत मज़ेदार है। जो एक बार इसे चख

लेता है, उसे इसकी चाट पड़ जाती है। दाल साग में ज़रासा मिलानेसे वह खूब ज़ायकेदार बन जाते हैं। पत्थर या काँच की कटोरीमें ज़रा देर भिगो कर, ज़रासी चीनी मिलाकर, खानेसे सुन्दर चटनी बन जाती है। मुसाफिरी या परदेशमें जहाँ अच्छा साग तरकारी या अचार नहीं मिलता, यह बड़ाही काम देता है। बालक, बूढ़े, स्त्री-पुरुष सब इसे खूब पसन्द करते हैं। दाम १ डि० ॥≠) आना।

लवणभास्कर चूर्ण।

यह चूर्ण हमने बहुत अच्छी विधिसे तैयार कराया है। हमने खूब जाँचकर देखा है, कि पेटकी पुरानी से पुरानी बीमारी इसके १ हफ्ते सेवन करनेसे ही आराम होनेका विश्वास हो जाता है। "शार्ङ्गधर संहिता"में इसे संग्रहणी रोग पर अच्छा लिखा है, मगर हमने इससे अपने कल्पित किये अनुपानोंके साथ संग्रहणी, आमवात, मन्दाग्नि, वायुगोला, दस्तक़ब्ज, तिल्ली और शरीर की सूजन वगैरः आराम किये हैं। विधि-पत्र चूर्ण के साथ है। दाम १ डि० १)

नमक सुलेमानी।

यह नमक आजकल बहुत जगह मिलता है; परन्तु लोग ठीक विधि से नहीं बनाते और एक एकके दश-दश करते हैं। हम इसे असली तौर पर तैयार कराते हैं और बहुत कम मूल्य पर बेचते हैं। इसके सेवनसे अजीर्ण, बदहज़मी, भूख न लगना, पेट भारी रहना, खट्टी डकारें आना, जी मिचलाना, वमन या क़य होना आदि समस्त शिकायतें रफा हो जाती हैं। चूर्ण खानेमें खूब ज़ायकेदार है। दाम अढ़ाई तोलेका ॥|) है।

बालरोग नाशक चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करने से बालकोंका ज्वरातिसार, ज्वर और पतले दस्त, खाँसी, श्वास और वमन—कय होना—ये सब आराम हो

जाते हैं। इस नुसखे को चढ़े हुए ज्वरमें भी देनेसे कोई हानि नहीं। यह शहदमें मिलाकर चटाया जाता है। बालकको ज्वर या अतिसार अथवा दोनों एक साथ हों तथा खाँसी वगेरः भी हों, आप इसे चटावें, फौरन आराम होगा। हर गृहस्थको इसे घरमें रखना चाहिये। दाम १ शीशीका ॥)

सितोपलादि चूर्ण।

इस चूर्ण के सेवन से जीर्ण ज्वर या पुराना ज्वर निश्चय ही आराम होता है। इससे अनेक रोगी आराम हुए हैं। जो रोगी इससे आराम नहीं हुए, वे फिर शायद ही आराम हुए। जीर्ण ज्वरके सिवा इससे श्वास, खाँसी, हाथ पैरोंकी जलन, मन्दाग्नि, जीभका सूखना, पसलीका दर्द, अरुचि, मन्दाग्नि, भोजन पर मन न चलना और पित्तविकार प्रभृति रोग भी आराम हो जाते हैं। मतलब यह कि जीर्णज्वरी रोगी को ज्वर के सिवा उपरोक्त शिकायतें हों, तो वह भी आराम हो जाती हैं। अगर किसीको पुराना ज्वर हो, तो आप इसे मँगाकर अवश्य खिलावें, ज़रूर लाभ होगा। यह चूर्ण शहद, शर्बत बनफ़शा, शर्बत अनार या मक्खन में चटाया जाता है। दवा चटाते ही गायके थनों से निकला गरमागर्म दूध (आगपर गरम न करके) पिला[illegible] [illegible]ता है। हाँ, अगर जीर्ण ज्वरी को पतले दस्त भी होते हों, तो यह चूर्ण शहदमें न चटा-कर, शर्बत अनार में चटाते हैं और ऊपर से दू[illegible] नहीं पिलाते। अगर दस्त बहुत होते हों, तो हमारे यहाँसे "अतिसारगजकेशरी चूर्ण" या "बिल्वादि चूर्ण" मँगाकर बीच-बीचमें यथाविधि खिलाना चाहिये। साथ ही "लाक्षादि तैल" की मालिश करानी चाहिये; क्योंकि जीर्ण-ज्वरीका बदन बहुत ही रूखा हो जाता है। यह तेल रूखेपन को नाश करके ज्वरको नाश करता है। दाम १ शीशी का १॥)

अतिसारगजकेशरी चूर्ण।

इस चूर्ण के सेवन से आँव-खूनके दस्त, पतले दस्त यानी हर तरह

का घोर अतिसार भी बात की बातमें आराम हो जाता है। आज़मूदा दवा है। हर गृहस्थ को एक शीशी पास रखनी चाहिये। दाम १ शीशीका १)

कामदेव चूर्ण।

इस चूर्णके लगातार २ महीने खाने से धातुक्षीणता और नई नमार्दी आराम होती है। स्त्री-प्रसंगमें अपूर्व आनन्द आता है। जिनकी स्त्री-इच्छा घट गई हो, स्त्री-प्रसंगको मन न चाहता हो, वे इस चूर्ण को चुपचाप मन लगाकर २ मास तक खावें। इसके सेवन से उन्हें संसारका आनन्द फिरसे मिल जायगा। आजकल लोगोंने जो विज्ञापन दे रखे हैं, उनके धोखेमें न फँसिये। वह कोरी धोखेबाज़ी है। जिन्हें एक अक्षर भी वैद्यकका नहीं आता, उन्होंने भोले लोगोंको ठगनेके लिये खूब चमकीले भड़कीले विज्ञापन दे दिये है और आदमी को शेरसे कुश्ती करता दिखा दिया है। उनसे कहिये कि पहले आप शेरसे लड़कर हमें तमाशा दिखा दें, तब हम आपकी दवाके १०० गुने दाम देंगे। हमें धर्मका भय है, अतः मिथ्या लिखना बुरा समझते हैं। कोई भी धातु-पुष्टिकी दवा बिना ६० दिनके फायदा नहीं कर सकती, क्योंकि आजकी खाई दवाकी धातु ४० दिनमें बनती है। फिर दस पाँच दिनमें धातु-रोग कैसे चला जायगा? आप इस चूर्णको मँगाकर प्रेमसे खाइये; मनोरथ पूरा होगा। दाम १ शीशीका ३॥) रु०।

धातुपुष्टिकर चूर्ण।

इस चूर्णके सेवन करनेसे पानीजैसी पतली धातु कपूरके समान सफेद और खूब गाढ़ी हो जायगी। पेशाबके आगे या पीछे धातुका गिरना या सूतसा निकलना बन्द हो जायगा। साथ ही स्त्री-प्रसंगकी खूब इच्छा होगी। अगर आप स्त्री प्रसंग न करें और १२ महीने इसे खालें तो निस्सन्देह आप सिंह से दोदो हाथ कर सकेंगे। आपकी उम्र पूरे १०० या १२० सालकी हो जायगी तथा आपका पुत्र सिंहके समान

पराक्रमी होगा। आप इसे मँगाकर, और नहीं तो चार महीने तो सेवन करें। इन चूर्णोंके सेवन करनेमें जाड़ेकी कैद नहीं, हर मौसममें ये खाये जा सकते हैं। हम फिर कहते है, आप ठगोंके धोखेमें न आकर, इन दोनों चूर्णको सेवन करें। भगवान् कृष्णकी दयासे आपकी मनोवाञ्छा पूरी होगी। दाम १ शीशीका २॥) रु०।

हरिवटी।

इन गोलियोंके सेवन करनेसे सब तरहकी संग्रहणी, अतिसार, ज्वरातिसार, रक्तातिसार, निश्चय ही, आराम होते हैं। इन्हें हर गृहस्थ और मुसाफिर को सदा पास रखना चाहिये। समय पर बड़ा काम देती हैं। हज़ारों बार आज़माइश हो चुकी है। दाम १ शीशीका ॥|)

नोट—अभी हालही में इन गोलियोंने एक पुराने ज्वर और आमातिसार से मरणासन्न रोगिणी की जान बचाई है, जिसे नामी-नामी डाक्टर त्याग चुके थे। इन गोलियोंसे दस्त तो आराम हुए ही, पर किसी भी दवा से न उतरने वाला, हर समय बना रहने वाला ज्वर भी साफ जाता रहा। इन्हें केवल ज्वरमें न देना चाहिये। अगर ज्वर और दस्तोंका रोग दोनों साथहों तब देकर चमत्कार देखना चाहिये।

नपुंसक संजीवन बटी।

क़लममें ताक़त नहीं, जो इन गोलियोंकी तारीफ कर सके। इनके सेवनसे नामर्द भी मर्द हो जाता है तथा प्रसंगमें खूब स्तम्भन होता है। शामको दो या चार गोलियाँ खालेनेसे अपूर्व्व स्वर्गीय आनन्द आता है। बदनमें दूनी ताक़त उसी समय मालूम होती है। स्त्री-प्रसंगमें दूनी तेज़ी और डबल रुकावट होती है। साथ ही प्रमेह, शरीरका दर्द, जकड़न, गठिया, लकवा, बहुमूत्र, खाँसी और श्वासको भी ये गोलियाँ आराम कर देती हैं। जिन लोगोंको प्रमेह, बहुमूत्र, खाँसी और श्वास की शिकायत हो, उन्हें ये गोलियाँ सवेरे-शाम दोनों समय खाकर मिश्री मिला गरम दूध पीना चाहिये। भगवत्की दयासे अद्भुत चम-

टकार दीखेगी। दाम फी शीशी २) या ४) गरम मिज़ाज वालों को ये गोलियाँ कम फायदा करती हैं।

कासगजकेसरी बटी।

ये गोलियाँ तर व ख़ुश्क यानी सूखी और गीली दोनों प्रकार की खाँसियोंमें रामवाण का काम करती हैं। एक दिन-रात सेवन करने सेही भयंकर खाँसीमें लाभ नज़र आने लगता है। इनके चूसनेसे मुँह के छाले भी आराम हो जाते हैं। १०० गोली की शी० का दाम ॥≈)

शीतज्वरान्तक गोलियाँ।

ये गोलियाँ बहुत तेज़ हैं। इनके २।३ पारी सेवन करनेसे सब तरहके शीतपूर्व्वक ज्वर यानी पहिले ठण्ड लग कर आने वाले बुख़ार निस्सन्देह उड़ जाते हैं। रोज़ रोज़ आनेवाले, दिनमें दो वार चढ़ने उतरने वाले, इकतरा, तिजारी चौथैया आदि कष्टसाध्य ज्वरोंको अक्सर हमने इन्हीं "शीतज्वरान्तक गोलियों"से एक ही दो पारीमें उड़ा दिया है। सिये तापों या जूडी ज्वर पर यह गोलियाँ कुनैन से हज़ार दरजे अच्छी हैं। दाम ४० गोलीकी शी० का १)

नेत्रपीड़ा-नाशक गोली।

ये गोलियाँ आँख दुखने पर अक्सीरका काम करती हैं। कैसी ही आँखें दुखती हों, लाल हो गई हों, कड़क मारती हो, रात-दिन चैन न आता हो, एक गोली साफ़ चिकने पत्थरपर बासी जलमें घिसकर आँजनेसे फौरन आराम होता है। बच्चे और स्त्रियोंकी आँखें अक्सर दुखा करती हैं; इस वास्ते हर गृहस्थको एक शीशी पास रखनी चाहिये। दाम ५ गोली की शी० का ॥≈)

असली नारायण तेल।

(वायुरोगोंका दुश्मन)

इस जगत्प्रसिद्ध "नारायण तेल" को कौन नहीं जानता? वैद्यक-

शास्त्रमें इसकी खूबही तारीफ लिखी है। आज़मानेसे हमने भी इसे अनेक अङ्गरेज़ी दवाओंसे अच्छा पाया है। लेकिन आजकल यह तेल असली कम मिलता है; क्योंकि अव्वल तो इसकी बहुतसी जड़ी-बूटियाँ बड़ी मुश्किल और भारी ख़र्चसे मिलती हैं; दूसरे, इसके तैयार करनेमें भी बड़ी मिहनत करनी पड़ती है; इसी वजहसे कलकतिये कविराज इसे बहुत महँगा बेचते हैं। हमारे यहाँ यह तेल बड़ी सफ़ाई और शास्त्रोक्त विधिसे तैयार किया जाता है। यही कारण है, कि अनेक देशी वैद्य लोग इसे हमारे यहाँ से लेजाकर अपने रोगियोंको देते और धन तथा यश कमाते हैं। यह तेल हमारा अनेक बारका आज़माया हुआ है। हज़ारों रोगी इससे आराम हुए हैं।

हम विश्वास दिलाते हैं कि, इसकी लगातार मालिश करानेसे शरीर का दर्द, कमरका दर्द, पैरोंमें फूटनी होना, शरीरका दुबलापन या रूखापन, शरीरकी सूजन, अर्द्धाङ्ग वायु, लकवा मारजाना, शरीरका हिलना, काँपना, मुखका खुला रह जाना या बन्द होजाना, शरीर डण्डे के समान तिरछा हो जाना, अङ्गका सूनापन, झनझनाहट, चूतड़से टखने तकका दर्द, आदि समस्त वायुरोग निस्सन्देह आराम हो जाते हैं। यह तेल भीतरी नसों को सुधारता, सुकड़ी नसों को फ़ैलाता और हड्डी तक को नर्म कर देता है; तब बादी या वायु के नाश करनेमें क्या सन्देह है? गठिया और शरीर का दर्द आदि आराम करनेमें तो इसे नारायणका सुदर्शन चक्रही समझिये। दाम आधपाव की १ शीशी का १॥) मात्र है।

मस्तकशूलनाशक तेल।

(सिरदर्द नाशक अद्भुत तेल)

इस तेलको स्नान करनेसे पहिले रोज़ सिरमें लगाने से सिरके सारे रोग नाश हो जाते हैं। इसकी तरीकी तारीफ नहीं हो सकती। यह तेल बालोंको काले रसीले और चिकने रखता है। आँख नाक से

ला पानी निकालकर मगज़ और आँखों को ठण्डा कर देता है। पढ़ने-लिखने में चित्त लगाता और माथे की थकानको दूर कर देता है। गरमी, सर्दी, जुकाम या बादीसे कैसा ही घोर सिरदर्द हो; लगते ही ५ मिनटों में छूमन्तर होजाता है। सिरदर्द की इसके समान जल्दी आराम करने वाली दवा और नहीं है। आप कामसे छुट्टी पाकर इसे लगाकर शीतल पानीसे सिर धो लीजिये। फिर देखिये; कि यह स्वदेशी पवित्र तेल कैसा स्वर्गका आनन्द दिखाता है। वकील, माष्टर, मुनीम, विद्यार्थी, दलाल, दूकानदार सबको इस अद्भुत तेल को ख़रीदकर परीक्षा करनी चाहिये। सुन्दर सुडौल २ औन्सकी शीशीका दाम भी हमने केवल १) रुपया ही रक्खा है। वङ्ग देशमें इसका खूब प्रचार है। कोई गृहस्थ इससे ख़ाली न रहना चाहिये।

कृष्णविजय तैल।

(चर्मरोग का शत्रु)

अगर आपको या आपके मित्र पड़ोसियों को ख़ून-फ़िसादका रोग है, अगर बदनमें लाल २ या काले २ चकत्ते हो जाते हैं, अगर दाद, खाज, खुजली, फोड़े, फुन्सियों से शरीर ख़राब हो रहा है या शरीरमें घाव हैं, तो आप हमारा मशहूर "कृष्णविजय तेल" क्यों नहीं लगाते?

हमारे तीस बरस के परीक्षित कृष्णविजय तेलसे सूखी गीली खाज, खुजली, फोड़े फुन्सी या गरमीकी सूजन, अपरस, सेंहुआ, सफेद दाग, भभूत आदि चमड़ेके ऊपर होनेवाले समस्त रोग जादूकी तरह आराम होते हैं। जिनका बिगड़ा खून अंगरेज़ी सालसे की शीशियों-पर-शीशियाँ पीनेसे न आराम हुआ हो, जिनके शरीरके घाव अंगरेजी नामी दवा "कारबोलिक आयल" या "आयडोफर्म" से न आराम हुए हों, वे एक बार इस नामी "कृष्णविजय तेल" की परीक्षा ज़रूर करें। यह तेल कभी निष्फल नहीं होता। गये ३० बरसमें इसने लाखों रोगियोंको सड़नेसे बचाया है। जिसके नाखून गल कर गिर गये हों,

यदि वह शख्स भी इस अमृत-समान "कृष्णविजय तेल" को कुछ दिन बराबर लगाता जावे, तो निस्सन्देह उसके फिर नये नाखून निकल आवेंगे। यदि यह "कृष्णविजय तेल" किसी अँगरेज़ी दवाखानेमें होता तो अच्छे लेबल, चमकदार शीशी और दवाखाने के अनाप-शनाप खर्च के कारण २) रुपये शीशीसे कम में न बिकता। परन्तु हमने स्वदेशी दवा का प्रचार करने और ग़रीब-अमीर सबको फायदा पहुँचानेकी ग़रज़से इसकी दश तोलेकी शीशीका दाम सिर्फ लागत मात्र १) रक्खा है।

कर्णरोगान्तक तैल।

इस तेलको कानमें डालनेसे कान बहना, कानमेंदर्द होना, सनसनाहट होना आदि कानके सारे रोग अवश्य आराम हो जाते हैं। ४।६ महीनेका बहरापन भी जाता रहता है। दाम १ शीशीका १) एक रुपया।

तिला नामर्दी।

यह तिला नामर्दके लिये दूसरा अमृत है। इसके लगातार ४० दिन लगानेसे हर प्रकारकी नामर्दी आराम हो जाती है। नसोंमें नीलापन, टेढ़ापन, सुस्ती और पतलापन आदि दोष जो लड़कपनकी बुरी आदतोंसे पैदा हो जाते हैं, अवश्य ठीक हो जाते हैं। इस तिलेके लगानेसे छाले आबले भी नहीं पड़ते और न जलनही होती है। चीज़ अमीरोंके लायक़ है। बाज़ारू तिलोंके लिये ठगाना बेवकूफ़ी है। यह आज़माई हुई चीज़ है; जिसे दिया वही आराम हुआ। धातु-दोष तिलेसे आराम न होगा। अगर धातु कमज़ोर हो तो हमारी "नपुंसक संजीवन बटी" या "धातु पुष्टिकर चूर्ण" या "कामदेव चूर्ण" भी सेवन करना उचित है। दाम १ शीशी तिलेका ५)

विषगर्भ तैल।

यह तेल अत्यन्त गर्म है। शीतप्रधान वायु रोगोंमें इससे बहुत

उपकार होता है। सन्निपात या हैज़े में जब शरीर शीतल और नाड़ी गति-हीन हो जाती है, तब इस तेलमें एक और तेल मिलाकर मालिश करनेसे शरीर गर्म हो जाता और नाड़ी चलने लगती है। गृहस्थ और वैद्य लोगोंको इसे अवश्य पास रखना चाहिये। दाम आध पावका २)

चन्दनादि तैल।

यह तैल तासीरमें शीतल है। इसकी मालिश करनेसे सिरकी गर्मी, हाथ-पैरों और आँखोंकी जलन आदि निश्चयही आराम हो जाती हैं। बदनमें तरी व ताक़त आती है। धातुक्षीणवाले यदि इसे खानेकी दवाके साथ शरीरमें मालिश कराकर स्नान किया करें तो अठगुणा फ़ायदा हो। दाम आध पावका २)

कामिनीरञ्जन तैल।

इस तैलका नाम "कामिनीरञ्जन तेल" इस वास्ते रखखा गया है, कि यह तेल दिल्लीके बादशाह जहाँगीरका मन चुराने वाली—अलौकिक सुन्दरी—नूरजहाँ बेगमको बहुत ही प्यारा था।

चार वर्ष तक इसके गुणोंकी परीक्षा करके हमने इस अपूर्व तेलको प्रकाशित किया है। कामिनी रञ्जन तेल मस्तिष्क (Brain) शीतल करनेवाली औषधियोंके योगसे तैयार होता है। इसकी मीठी सुगन्ध से दिमाग़ मवत्तर हो जाता है। इसकी हलकी खुशबू चटपट नहीं उड़ जाती, बल्कि कई दिनों तक ठहरती है। सदा इस तेलके व्यवहार करनेसे बाल भौंरेके समान काले और चिकने बने रहते हैं; असमयमेंही नहीं पकते। औरतोंके बाल कमर तक फरांने लगते हैं और उनकी असली सुन्दरताको दूना करते है। बालोंको बढ़ाने, चिकना और काला करनेके सिवा, इस तेलके लगातार लगानेसे शिरकी कमज़ोरी, आँखोंके सामने अँधेरा आना, चक्कर आना, माथा घूमना, सिर दर्द, आँखोंकी कमज़ोरी, बातोंका याद न रहना आदि

दिमाग-सम्बन्धी समस्त सिरके रोग आराम हो जाते हैं। इस तेलकी जिस क़द्र तारीफ़ की जाय थोड़ी है। लेकिन अब स्थानाभावसे इसकी प्रशंसा यहीं ख़तम करते हैं। इस तेलको राजा-महाराजा, सेठ-साहूकारोंके सिवा औसत दरजेके सज्जन भी व्यवहार कर सकें, इसलिये इसकी क़ीमत फी शीशी ॥) रखी है।

महासुगन्ध तैल।

इस तेलके लगानेवाला कैसा ही बेढंगा मोटा क्यों न हो, धीरे-धीरे सुन्दर और सुडौल होजाता है। इसके सिवाय इसके लगानेवालेका रूप खिल उठता है तथा शरीर सुन्दर और खूबसूरत हो जाता है। इसके लगानेसे धातु बढ़ती है तथा खाज, खुजली प्रभृति चमड़ेके रोग नाश हो जाते हैं। यह तेल अमीरों और राजा महाराजाओंको सदा लगाना चाहिये। इसके समान धातुको पुष्ट करनेवाला, ताक़तको बढ़ाने वाला, शरीरको सुडौल और खूबसूरत बनानेवाला और तेल नहीं है। जिनको मुटाई कम करनी हो, वे अगर हमारा "खून-सफा अर्क" भी शहद मिलाकर पीवें, तो औरभी जल्दी मुटाई कम होगी। दाम १ शीशी का २॥)

माषादि तैल।

यह तेल निहायत गरम है। इसके लगानेसे गठिया, बदनका दर्द, जकड़न, लकवा, पक्षाघात प्रभृति शीतवायुके रोग निश्चय ही आराम हो जाते हैं। जिनके रोगमें शीत या सरदी अधिक हो, वे इसे ही लगावें। दाम १ शीशीका २)

दादनाशक अर्क।

इस अर्कके रुईके फाहे द्वारा लगानेसे दाद साफ उड़ जाते हैं। खूबी यह कि, यह अर्क न लगता है और न जलता है। सबसे बड़ी बात यह है, कि आप बढ़ियासे बढ़िया कपड़े पहने हुए इसे लगावें;

कपड़े ख़राब न होंगे। आज तक ऐसी चीज कहीं नहीं निकली। अगर आपके दाद हों तो इस अर्कको मँगाइये और लगाकर दादोंसे निजात पाइये। दाम १ शीशीका ।।) आना।

स्तम्भन बटी।

यथा नाम तथा गुण है। सन्ध्या समय १ या २ गोली खाकर उपरसे दूध मिश्री पी लीजिये। फिर देखिये कितना आनन्द आता है। इसकी अधिक तारीफ यहाँ लिख नहीं सकते। अगर आप कामिनीके प्यारे बनना चाहते हैं, तो १ शीशी पास रखिये और आनन्द लूटिये। दाम १ शीशीका ।।)

लिंग स्थूलकारक बटी।

अगर फोतोंकी सूजन; नसोंकी कमजोरी या धातुकी कमी से लिंगेन्द्रिय दुबली हो—ठीक मोटी न हो, तो इस गोलीके १ मास या २ मास लगाते रहनेसे लिंगेन्द्रिय अवश्य मोटी हो जाती है। अनेक अदमियोंको लाभ हुआ है। दाम १ शीशीका २)

अर्क खून सफ़ा।

इस अर्ककी जितनी तारीफ करें थोड़ी समझिये। आज १८ वर्षसे हम इस अर्ककी परीक्षा कर रहे हैं। इस अर्कके सेवनसे १०० में १०० रोगियोंको फायदा हुआ है। अधिक क्या कहें, जिनके शरीरमें खून ख़राब होने या पारेके दोषसे चलनीके से छेद हो गये थे, जिनके शरीरमें अनगिन्ती काले-काले दाग और चकत्ते हो गये थे, जिनके पास बैठने से लोग नाक-भौं सकोड़ते थे, जिनको कितनीही शीशियाँ सालसेकी पिलाकर डाक्टरोंने असाध्य कहकर त्याग दिया था, इस सालसे अर्थात् अर्क खून सफ़ाके लगातार नियमपूर्वक पीनेसे वही रोगी बिल्कुल चंगे होगये।

अधिक प्रशंसा करने से लोग बनावटी समझेंगे, मगर इस अमृत-

समान अर्क के पूरे गुण लिखे बिना भी नहीं रह सकते। इसके पीने से १८ प्रकार के कोढ़, सफेद दाग, बनरफ या भमूल, सुन्नबहरी, आतशक या गर्मी रोग, पारे का दोष, हाथीपाँव, अर्धाङ्गवायु, लकवा, शरीर की बेढङ्गी मुटाई, खाज खुजली, दाफड़ या चकत्ते आदि सारे चर्मरोग निस्सन्देह नाश हो जाते हैं। लेकिन ध्यान रखिये, कि नया खून और नयी धातु पैदा करना छोकरों का खेल नहीं है। जन्म-भर का कोढ़ एक आदित्य बार में आराम नहीं हो जाता। खून साफ करने वाली और धातुपुष्ट करने वाली दवाएँ लगातार कुछ दिन सेवन करने से फ़ायदा होता है। इन दोनों रोगों में जल्दबाज़ी करने से कार्य सिद्धि नहीं होती। साधारण रोग में ४ बोतल और पुराने या असाध्य रोग में १ दरजन बोतल पीना चाहिये। अगर इस अर्क़ के साथ हमारा "कृष्णविजय" तेल भी मालिश कराया जाय, तब तो सोने में सुगन्धि ही हो जाय। यह अर्क़ रेलवे द्वारा मँगाना ठीक है। दाम एक बड़ी बोतल का २)

नोट—यह अर्क कमसे-कम तीन बोतल मंगाना चाहिये। अव्वल तो बिना तीन बोतल पिये साफ तौरसे फायदा नजर नहीं आता; दूसरे, एक और तीन बोतल का रेलभाड़ा एक ही लगता है। मंगाने वालेको कमसे कम आधेदाम पहले भेजने चाहियें और अपने नजदीकी रेलवे स्टेशनका नाम लिखना चाहिये।

गरमी रोगकी मलहम।

इस मलहमके लगाने से गर्मीके घाव, टाँचियाँ, जलन और दर्द फौरन आराम होते हैं। मलहम लगाते ही ठण्डक पड़ जाती है। अगर इन्द्री पर सूजन हो, मुख न खुलता हो तो मलहम लगाकर ऊपर से हमारे "कृष्णविजय तेल" की तराई करने से सूजन और घाव सब आराम हो जाते हैं। साथ ही "अर्क खून सफा" भी पीना ज़रूरी है। दाम १ शीशी का ॥)

गर्मीका बुर्का।

यह सूखा बुरका है। इसके घावों पर बुरकने से घाव जल्दी

हमारा बङ्गेश्वर सेवन करने से २० प्रकार के प्रमेह नाश होते हैं और इसके सेवन करने वालों का वीर्य्य सुपने में भी नहीं गिर सकता। ज़ियादा क्या लिखें, स्त्री वश करने वाली और कामिनियों का घमण्ड नाश करनेवाली इसके समान दूसरी चीज़ नहीं है। इसे बेखटके सेवन कीजिये। यह हमने स्वयं सेवन किया है और अनेक धनी-मानी लोगों को खिलाया है। इसीलिये इतने ज़ोर से लिखा है। दाम ८) रुपया तोला।

शिरशूलान्तक चूर्ण

बहुत लिखना व्यर्थ है, आपने आजतक सिर का दर्द नाश करने वाली ऐसी जादू के समान चमत्कारी दवा देखी न होगी। आप के सिर में दर्द हो, आप एक पुड़िया फाँक कर घड़ी देखलें, ठीक पन्द्रह मिनट में आप का दर्द-सिर काफूर हो जायगा। आप ८ मात्रा की एक शीशी अवश्य पास रखिये, न जाने किस समय सिर में दर्द उठ खड़ा हो। इस दवा में एक और भी गुण है, वह यह कि आप के बदन में दर्द हो या हलका सा ज्वर हो, आप एक मात्रा खाकर सोजावें, फौरन पसीने आकर शरीर हलका हो जावेगा। दाम ८ मात्रा की शीशी का १) और चार मात्रा का ॥)

कामिनी मद धूनक रस।

इस रस में से १ रत्ती रस मिश्री में मिलाकर लगातार २१ या ४० दिन खाने से बीसों तरह के प्रमेह नाश होते, वीर्य बढ़ता और स्त्री-द्रावण की सामर्थ्य होती है। बड़ी ही उत्तम दवा है। २१ मात्रा का दाम २॥) जिन्हें स्त्री को वश में करना हो, उसका दिल खुश करना हो, उसे स्खलित करना हो, इसे अवश्य सेवन करें। स्तम्भन-शक्ति बढ़ाने में यह अव्वल दर्जे की चीज़ है।

शिलाजतु बटी।

इस गोली को मक्खन या मलाई में रखकर सवेरे-शाम खाने से

लवंगादि चूर्ण

इस चूर्ण के सेवन करने से राजयक्ष्मा तो नाश होता ही है, उस के सिवाय तमक श्वास—सर्दी से होने वाला श्वास, खाँसी, हिचकी, क्षय, धातुक्षय, छाती का दर्द, दिल की घबराहट, गलेके रोग, हिचकी जुकाम, कफक्षयी, कफ के साथ खून आना, अरुचि और प्रमेह आदि अनेक रोग नाश होते हैं। यह दवा कभी नहीं चूकती। दाम १ शीशी का १॥)

लक्ष्मी विलास रस

इस रस के सेवन करने से सन्निपात के घोर रोग, वायुरोग, १८ प्रकार के कोढ़, गुदा के रोग, नासूर, भगन्दर, कफ और वादी के रोग, हाथ पाँव और गलेकी सूजन, आँत बढ़ना, अतिसार, खाँसी, पीनस, क्षय, ववासीर, मुटापा, शरीर में बदबू आना, आमवात, जिह्वास्तंभ, गलगण्ड वातरक्त, शरीर का दर्द, कान, नाक और नेत्रों के रोग, सिर दर्द और स्त्रियों के रोग नाश होते हैं। इस रस से बूढ़ा भी जवान और कामदेव के समान हो जाता है। उसका वीर्य कभी क्षय नहीं होता, और वह मस्त हाथी की तरह १०० स्त्रियों से भोग कर सकता है। एक खूबी और है, कि इसके खाने वाले को पथ्य-परहेज की ज़रूरत नहीं। अगर इसके खाने वाला दूध, दही, जल, मांस, माठे से बने पदार्थ और शराब सेवन करे तोभी पूरा लाभ होगा। यह प्रयोग महात्मा नारद ने श्रीकृष्ण को बताया था। वे इसी के प्रभाव से लाखों स्त्रियों के प्यारे हुए थे। दाम १०) रुपया तोले

धातु-भस्म और रस

हमारे यहाँ नीचे लिखे हुए रस और धातु-भस्म आदि तैयार रहते हैं। इनकी असलियत की हम गारण्टी करते हैं। बाबू हरिदास जी और वैद्यों की तरह नौकरों पर विश्वास नहीं करते। इनके तैयार होने

के समय वे स्वयं सामने बैठे रहते हैं, इसी से आप समझ सकते हैं, कि हमारे यहाँके रस और भस्म आदि कैसे होंगे। और तारीफ करना फिजूल है। ३ माशे से कम कोई भस्म भेजी नहीं जायगी। जिन ग्राहकों या वैद्यों को हमारी "चिकित्सा-चन्द्रोदय" में लिखे हुए नुसखे तैयार कराने हों, वे हम से पहले दाम दर तय करलें और पीछे आधा मूल्य पेशगी भेज दें। उनको उनकी इच्छित दवा ठीक विधि से तैयार करके भेज दी जायगी।

अभ्रक भस्म हजार पुटी	३०) तोले,	कौड़ी की भस्म ...	॥।) तोले
अभ्रक भस्म पाँचसौ पुटी	६) तोले,	शंखभस्म ...	॥) तोले
अभ्रक भस्म २५ पुटी	२) तोले	मोती की सीप की भस्म	२) तोले
लोहभस्म दरद योगसे	४) तोले	नागभस्म ...	३) तोले
लोहभस्म वनौषधि से	२) तोले	पित्तलभस्म ...	१॥) तोले
हरताल भस्म (तपकी)	१२) तोले	कांसी की भस्म...	१॥) तोले
गोदन्ती हरताल भस्म	१) तोले	रससिन्दूर ...	७) तोले
ताम्बा भस्म ...	२) तोले	मकरध्वज (चन्द्रोदय)	३०) तोले
राँगाभस्म (बंग)	२) तोले	लघु मालिनी वसन्त	४) तोले
बंगेश्वर ...	८) तोले	स्वर्ण मालिनी वसन्त	२४) तोले
सोनामक्खी की भस्म	४) तोले	मृत्युञ्जय रस ...	३) तोले
जस्ते की भस्म ...	२) तोले	संजीवनी रस ...	३) तोले
रौप्य भस्म ...	८) तोले	आनन्द भैरव रस	३) तोले
कान्त लोह भस्म ...	१२) तोले	महाज्वरांकुश रस	३) तोले
मण्डूर भस्म (लाल रंग)	१॥) तोले	वृहत कस्तूरी भैरव	७ मात्रा २)
सोनाभस्म ...	६०) तोले	कस्तूरी भैरव रस	७ मात्रा १।)
मूँगाभस्म (शाखकी)	१) तोले	कस्तूरी भूषण रस	७ मात्रा १॥)
मूँगाभस्म असली	८) तोले	स्वर्ण पर्पटी ...	७ मात्रा २)
मोती की भस्म ...	४०) तोले	रस पर्पटी ...	७ मात्रा १)
		लोह पर्पटी ...	७ मात्रा

शोधी हुई चीज़ें

शुद्ध हिंगलू ...	१) तोले	पुराना गुड़	१ सेर ८)
शुद्ध गंधक ...	।) तोले	भीमसेनी कपूर	५) तोला
शुद्ध पारा (हिंगुलोत्थ)	॥।) तोले	केशर असली	५) तोला
शुद्ध जयपाल ...	१।) तोले	गोरोचन	२५) तोला
शुद्ध गोदन्ती हरताल	॥) तोले	शुद्ध गूगल (भैंसा)	॥=) तोला
शुद्ध वच्छनाग विष	॥) तोले	शुद्ध तूतिया	॥=) तोला
शुद्ध शिलाजीत ...	१॥) तोले		
हिंगुलोत्थ पारेकी कज्जली	॥।) तोले		
कस्तूरी अव्वल दर्जा	६०) तोले		
बादामका तेल	५ तोला १)		
शहद असली	१ सेर ३)		
गिलोयका सत्त	।) तोला		

नोट—इन सब चीज़ों की उत्तमता की हम गारण्टी करते हैं। इन चीज़ों को अवैद्य-विज्ञापनवाज़ों से मँगाना अपनी मृत्यु बुलाना है। आप को जो दरकार हो, हमारे यहाँ से मँगालें।

एजेन्सी के क़ायदे।

जो सज्जन एक बार २५) की दवा मँगायेंगे,उनको चार आना रुपया कमीशन सदा मिलेगा। पीछे चाहे वे ५) की चीज़ ही क्यों न मँगावें।

सूचना—इस सूची में लिखी चीज़ों के सिवा, सुदर्शन चूर्ण, गंगाधर चूर्ण आदि सभी शास्त्रोक्त दवाएँ हम रखते हैं। जिन वैद्यों को जो चीज़ दरकार हो मँगालें। अगर कोइ चीज़ तैयार न होगी, तो फौरन तैयार करके भेजी जायगी; पर खराब या पुरानी न भेजी जायगी। वैद्यों को हमारे यहाँ से बढ़ कर सुभीता न होगा। जो सज्जन अँगरेजी दवाएँ मँगाएँगे, उन्हें हम ख़रीद कर भेज देंगे, पर अँगरेज़ी चीज़ों पर चार आना रुपया कमीशन लेंगे। ऐसी चीज़ें मँगाने वालों को कुछ रुपया पहले भेजना होगा।

भेजी हुई दवा वापस न ली जायगी और न बदली जायगी। २५) की दवा मँगानेवाले को १ साइनबोर्ड मुफ्त भेजा जायगा।

रोगियों को सुभीता।

जिन रोगियों का कोई रोग आराम न होता हो या रोग का पता न लगता हो, वे हमारे यहाँसे "प्रश्न पत्र" मँगालें। प्रश्नपत्र पहुँचने पर उन्हें साफ हिन्दी में भर कर भेज दें और साथ ही ॥) का टिकट क्लर्क या पत्र-लेखक की उजरत का साथ रखदें। उनके रोग का निदान, कारण और किस दवासे आराम होगा, यह लिख कर भेज दिया जायगा। जिन वैद्यों की समझ में रोग न आता हो, वे भी अपने रोगी का फार्म भर कर भेज सकते हैं। आठ आने हर हालत में आने चाहिएँ। कलकत्ते में फालतू समय नहीं। यहाँ पाँच मिनट का भी दाम लगता है।

मैनेजर—हरिदास एण्ड कम्पनी

२०१, हरिसन रोड

कलकत्ता।